

—ॐ कृपया ॐ—

एक खानाका टिकट भेजकर हमारा संस्कृत पुस्तकघर सूची मंगवाकर देगिए ।

—> एवं <—

दो खानाके टिकट भेजकर हमारा छपा हुआ केवल हिन्दी पुस्तकघर सूची मंगवाकर देगिएगा ।

—ॐ नोट ॐ—

हमारे यहाँ भारत वर्ष, तथा अन्यसर्व प्रदेशोंके छपे हुये सर्वप्रकारके और सर्वविषयोंके संस्कृत तथा हिन्दी ग्रन्थोंका एक बृहद्संग्रह हरसमय विक्रयार्थ तयार रहता है इस लिये जब कमी आपको किसी संस्कृत या हिन्दी पुस्तककी आवश्यकता हो तो हमें सरण कीजिये ।

भवदीय—मेहरचन्द लक्ष्मणदास,

संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिठ्ठा बाजार, लाहौर.

(Registered for Copy-right under Act XXV of 1867.)

Published by Lala Meharchand Lachmandass, Sanscrit Pustakalaya, Lahore,

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press,
26-28, Kolhat Lane, Bombay.

निवेदन.

यद्यपि इस पद्याचन्द्रकोपमें साम्प्रतिक शिक्षाके अतुच्छ आवश्यक शब्द प्रथमही पर्याप्त थे तो भी प्रत्येक आवृत्तिमें अधिकाधिक शब्दविन्यास कोपरो अलंकरण करता है। इसी आशयको पूर्ण करनेके लिये इस आवृत्तिमें पद्यमहद्यसे भी अधिक नये २ शब्द मन्निवेदिन किये गये हैं और प्रथम और द्वितीयावृत्तिके अनुसार उन शब्दोंका प्रकृति प्रत्ययालोचनपूर्वक यथावत् अर्थका प्रकाश भी किया गया है। यह कोप माग्भूत शब्दोंसे पूर्ण होनेके कारण प्रथमही शिक्षित जनता द्वारा अत्यन्त प्रशंसित हुआ। इसी हेतुसे प्रथम दो आवृत्तिओंमें हाथों हाथ विक्रय गया और जहाँ जहाँसे इसकी तृतीयावृत्तिके लिये इच्छा प्रकट कीगई। इस कोपकी बहुतही उपयोगिता समझ कर हमने निर्माताको सविशेष प्रार्थना करके मित्र २ विषयगर्भित शब्दावली गविक्रिष्ट करा दी है। अन्त में किः सर्व साधारण विद्वानों और छात्र आदिके लिये यह पद्यमहद्यसे भी अधिक शब्द पूर्ण सम्बन्ध-पत्र होंगे जिससे अनेक दूसरे कोपोंके देखनेका कष्ट निवृत्त होजायगा।

इस बार हमने इस कोपके आदिमें निर्माताका भी मनोहर चोटो लगा दिया है जिससे बोल की शोभा और भी अधिक बढ़ गई है।

यद्यपि इस समय कागज और मुद्रणका द्यय उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है तो भी हमने एहिने की तरह वसी बर्षमें सुप्रसिद्ध निर्णयसागरयन्त्रालयद्वारा सर्वोत्तम कागज पर मुद्रण कराया है। जिसके देखनेही से विल आकर्षित होता है। यथा-शक्ति प्रत्येक शब्दके संश्लेषन करनेके पूर्ण प्रयत्न किया गया है। इस बार नवीन उपयोगी शब्दोंका प्रवेश इस बोलके दिने सुबर्णमें सुगन्धिके समान होगया है। तीस हजारके लगभग आषड्भेक शब्दोंका बोल प्रत्येक पाठ्यशाला, महाविद्यालय और पुस्तकालयमें संस्थापन किया जाना चाहिये। स्वयं संस्कृतभाषाकी उन्नति करनेके लिये सर्व साधारणका मित्र होजाना चाहिये। इस बार हमने अत्यन्त परिश्रम करके इसे प्रस्तुत कराया है। यदि यह शिक्षितमण्डलका मनोहारी हुआ तो हम अपना परिश्रम सर्वत्र सम्झके सुरन्व ही अनुपूर्णावृत्तिमें प्रकाश करनेके लिये कृत्य होंगे। संस्कृतभाषाकी निरन्तर उन्नति ही से अन्तम-स्थानकी उत्तरोत्तर उन्नतिही सम्भावना है, इस लिये संस्कृतभाषाको बोलकरही है, अगस्त्य चर-पदार्थनिर्घणनस्वरूप बोलकी समीपता भारतसन्तानके हृदयमें प्रकल्पित करे किन्तुकि दिन ३ संस्कृतोन्नति होकर भारतके कुलदीपक प्रकट हों और हमारा उच्चार ही सफल हो। इत् ।

धरमपुराकाश, }
 १८-१०-१५ }

मैत्रेयचन्द्र हरमलदास.

भूमिका

सर्वरत्नासुन्दरं कोशः प्रमाणं शास्त्रमालिनाम् । विशेषकारपर्याप्तिसिर्षत्कोशे सुप्रतिष्ठिता ॥

यह बात सब जानते और मानते हैं कि किमीभी भाषामें पूरी २ स्पष्टपत्ति लाभ करनेके लिये व्याकरण और कोशसे परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है. विशेषतः कोशसे किसी शब्दका परिचय तो मानों राजाकी आज्ञाके समान हट और अटल है. यदि हम किसीभी शब्दके अर्थका निश्चय करनेके लिये प्रवृत्त होकर प्रामाणिक कोशका लाभ करें, जिसके द्वारा हमें इसबातका पूरा २ विश्वास होजाय कि अमुक शब्दके अर्थकी अवधि यदाहीतक है. चाहे प्रकृति प्रत्ययके बलसे औरभी अनेक अर्थ होसकें, परन्तु प्रचलित अर्थकी शेषसीमा हो, तो निस्सन्देह उक्तकोश सफल जनोपकार करनेमें तनिकभी मुटि न करेगा । यही कारण है कि, हमारे पूर्वजतन ऋषिमुहूर्तियों और अमरसिंह आदि विद्वानोंनेभी अपनी मातृभाषातक संस्कृत भाषाके स्पष्ट लिखने, और यथार्थ पठनके लिये असीम परिश्रम और विद्वत्ताके साथ जनेक, सर्वथा परिपूर्ण, सुघटित, सुललित और महोपकारक व्याकरण और कोशोंकी रचना की, जिन्हें देख बड़े २ दश विद्वान् विस्मित हो अद्यापि प्रशंसा करते चले आते हैं । परन्तु मुझको १६ वर्ष पर्यन्त अध्यापक होकर छोटी और बड़ी शिक्षा प्रणालीसे मलीमांति अनुभव होगया है कि, ऐसे समय जब कि आंग्ल पाठशालाओंमें विद्यार्थियोंको अनेक विषयों (अंग्रेजी-संस्कृत-गणित-इतिहास-पदार्थविद्या-भूगोल-हिन्दी-उर्दू-अरबी-फारसी-आदि) का अभ्यास करना पड़ता-है, यदातक कि, दो ही धर्ममें बहुतेसे विषयोंमें परीक्षा देकर उत्तीर्ण होना है, तो उक्त ऋष्यादि प्रणीत बड़े-बड़े ग्रन्थोंका अभ्यास उनके लिये सर्वथा उपकारी नहीं हो सका-क्योंकि अंग्रेजी-आदि इतर भाषाके कोशोंकी भाँति उक्त प्राचीन कोशोंकी परिपाटी देशकालानुसार सरल नहीं-प्रस्तुत इनका रचनाक्रम इस प्रकारका डुरूद है कि, मुक्तके निकट चिरकालतक पढ़ने और कष्टसे करनेके बिना किञ्चिभी सहायक नहीं होते ।

इस आवश्यकताको पूर्ण करनेके लिये यद्यपि कई एक धीमान् मान्यपर मानिअर विद्वान्-

आदि अंग्रेजी जातीय विद्वानोंनेभी व्याकरण और कोशोंकी पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और उनसे विशेषतः संस्कृत भाषाकी इच्छा करनेवाले यूरोपीय महापुरुषोंको अत्यन्त सहायतामी मिली है, परन्तु यह सहायता भारतयासिओंके लिये उपयुक्त नहीं. क्योंकि प्रथम तो ये सब अंग्रेजीमें लिखे गये हैं, दूसरे उनका अधिक मूल्य होनेसे लाभ करना बहुत कठिन है । और जो "शब्दार्थ-मानु" नामक कोश हिंदुस्तानी अर्थसहित है उससेभी यथार्थ उपकार नहीं हो सका, क्योंकि उसमें प्रकृति प्रत्यय बिन शब्द मात्र हैं; जिसमें बहुत यत्न करनेपरभी बुद्धिमान् शिष्यके मनमें सन्तोष नहीं होता । मैंने प्रायः महाविद्यालयादिमें विद्यार्थियोंको परस्पर आलाप करते सुना है कि भलाजो अमुक शब्दका अर्थ जो कोशमें है, यह क्योंकर हुआ-उस अर्थको बोधन करनेवाला कौनसा धातु है ? और है उसके आगे कौनसा प्रत्यय लगा कि उसका विशेष अर्थ हो-गया. यथा कोशमें "नृनांस" इस शब्दका अर्थ लिखा है. घातक-नृ-परश्रोदी-शरीर । मेहरम । ईजारत्न । अथ कहिये इस प्रकार शब्दके अर्थका ज्ञान क्योंकर काव्यसाधक होसका है, जब कि विद्यार्थियोंके मनमें इसबातके जाधेकी इच्छा निरन्तर लगी है कि, उक्त शब्दका अर्थ क्योंकर "घातक" हुआ । इसी शब्दका अर्थ यदि इस कोशमें देखो तो तनिकभी सन्देह न रहेगा । हाँ ऐसे कोशसे छोटे २ विद्यार्थियोंका तो कुछ उपकार होसका है. जिनके लिये इतनाही परिचय पयांत है कि "न" "ट" नर (पुं०) अर्थ "मनुष्य" ठीक अंग्रेजी आदिके सामान्य कोशोंकी भाँति जैसे वेगम पपन्न-मैत-"मैत" मीने "आत्मी" निश्चय जानियें. इस प्रकारका शब्दपरिचय सर्वथा झ्रान्तिके साथ मिला रहता है, कदापि छात्रका हृदय कतिपय शब्दपरिचयसे विरह नहीं होसका । इस यही भारी ग्यूनताको पूर्ण करनेके उद्देशसे लाला मेहरचन्द्र, लक्ष्मणदास प्रोमार्ड्टर संस्कृत पुस्तकालय, सद्मिह्रा वाजराजे विद्वान् अनुरोधसे यह पत्रचन्द्रकोश, जो यद्यपि अंग्रेजी कोशोंकी अपेक्षा बहुत छोटा है, परन्तु काङ्क-

द्विक० (द्विकर्मक) ।
द्विय० (द्विवचनान्त) ।

दाप् (आ) ।

डीप् (ई) ।

ऊङ् (ऊ) ।

अण् (अ) ।

फ (आयन्) ।

ढ (ण्य) ।

ख (ईन्) ।

छ (ईप्) ।

घ (इय) ।

ष्यञ्—(य) ।

कन्—(क) ।

टन्—(इक) ।

यक्
यत्
यञ्
ण्य } (य) ।

क्त (त) ।

क्तवत् (त्वत्) ।

क्त्या (त्या) ।

क्तिन्
क्ति } (ति) ।

ण्यत्
यत्
क्यप् } (य) ।

णमुल् (अम्) ।

कन्
ण्वुल्
ण्वुन्
वुञ्
वुन् } (अक) ।

न्यु }—(अन) ।

अच्

अण

आप्

क

कञ्

गच्

खश्

खल्

घ

घञ्

ट

टक्

ड-ण-दा

(अ) ।

पाकन् (आक) ।

इनि

घिनुण्

लिनि

(इन्) ।

इष्णुच्

खिष्णुच्

(इष्णु) ।

उण

ड

(उ) ।

उकञ् (उक) ।

नङ्

नन्

(न) ।

किप्

किन्

चिद्य

(यह साराही उड़ जाता है और धातु हलन्तही रहता है) ।

कतिप् (वन्) ।

करप् (घर) ।





स्वर्गीय श्री मन्महासागरा पद सद्गुरु श्रीमद्विद्वान् महाशय श्रीमन्महासागरा
 पुण्डरीक (शिवलाल) जिनकी स्मृतिसे यह कोश विद्यमान हुआ ।





ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ
ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ
ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ ਸਿਰਫ਼ ਤੇ



पद्मचन्द्रकोषके रचयिता

धीमान् पं० गणेशदासजी शास्त्री,

भूतपूर्व प्रो०सर. ऑरियंटल कॉलेज, बल्लारान् प्रो०सर. मद्रास विश्वविद्यालय, तमिऴ.



शास्त्ररूपत्वम्—(धीतरानाम् तर्कवाचरहितम्) ब्रह्मविधानम्) अस्मिन् कोषे वेद, ब्राह्मण, छन्दो, Rs. A. P.
 व्याकरण, साहित्य, काव्य, नाटक, चिकित्सा, ज्योतिषादिसकलशास्त्रसंज्ञानामकाराधिकमेगार्थस्युप-
 लब्धयः सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते. सजिल्द. कलकत्ता 230-0-0

शाब्दार्थचिन्तामणि—यह कोषग्रन्थ बहुतही उत्तम और बृहत् है, इसमें अकारादिक्रमसे शब्द
 लिखे हैं व पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग विखनेके उत्तर शब्दोंकी ध्युत्पत्ति व सिद्धिके लिये पारिनि-
 व्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके अर्थ व उनकेलिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक
 ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दिये गये हैं, यह ग्रंथ ४ जिल्द व ३१९३ पृष्ठोंमें है उदयपुर 25-0-0

उपनिषद्भाष्यकोष—(और भगवद्गीताकोष) A concordance to the Principal
 Upanishads and Bhagwat Gita. मुम्बई 6-0-0

अमरकोष—अमरसिंहविरचितः धीमदोजिदिसितात्मजश्रीभानुजीरीक्षितहृतया श्याम्बासुषया
 एवामयीक्षया सहितः) पंथित सिवदत्तजीहृत टिप्पणीसहित अतिसुन्दरपिलावली विन्द मुम्बई
 Amara-kośa with the commentary (Vyākhyāsudhā or Rāmās'rāmi)
 of Bhānuji Dikshita, son of Bhattoji Dikshita. Bombay. In Press.

शब्दसागर—[संस्कृत श्रमेजी अभिधान] (अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानां अर्थो. स्युत्पत्तयश्च
 इंसंश्लेषभाषया व्याख्याताः विद्यन्ते) Shabda Sagar—a comprehensive Sanscrit
 English Lexicon chiefly based on Professors Horance Hayman Wilson's
 Sanscrit English Dictionary & compiled from various recent authori-
 ties for the use of Schools & Colleges by Pandit Jiba Nanda Vidya
 Sagar B. A. Calcutta 10-0-0

अमरकोश नामलिङ्गानुशासनम्—भक्षीरव्याम्युल्लेखितेनामरकोशोत्पादनेन सहितः
 Amarakosha—(Namalinganushasana with the Commentary) Amarakosh-
 odghatana of Kahirasvamin. Poona 3-8-0

अमरसार—संस्कृतसे अंग्रेजी वा अंग्रेजीसे संस्कृत कोष जेवी गुटका. मुम्बई 0-12-0

शरस्वतीकोश—इसमें कठिन भाषाके शब्दोंका सुगम भाषामें अर्थ लिखे हैं वं जीवातमप्रणीत
 शर्ष. सुरदाबाद 1-0-0

शाब्दार्थभानुकोश—(वं. भानुदत्तजीसहित) संस्कृत शब्द उद्भाषामें अर्थ. मुम्बई 2-0-0

मङ्गलकोश—यत्रलीप्रसादहृत इसमें संस्कृत वा भाषाके अकारादि शब्दोंके अर्थ भाषामें
 लिखे हैं. लखनऊ 2-0-0

शाब्दस्तोत्रमहाविधिः—(संस्कृतभिधानम्) [अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानामर्थो ध्युत्पत्त-
 यश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते] वं, तातवावसहितः शर्ष. कलकत्ता 11-4-0

अंग्रेजी और संस्कृत डिक्शनरी—(अंग्रेजी शब्द संज्ञामें अर्थ) श्री वामन शिवरामहृत
 The Practical English Sanscrit Dictionary by Vamsa Shivaram Apte
 M. A. पूना 6-0-0

The Students Practical Dictionary containing

Rs. A. P.

(1) English words with English & Hindi meanings

(2) Hindi words with Hindi & English meanings

... ..	Allahabad	6-0-0
अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष—अर्थात् अंग्रेजी शब्दोंका हिन्दी भाषामें उच्चारण और अर्थ— सजिस्त.	मुम्बई	1-8-0
गुटका हिन्दीकोष—कठिन हिन्दी शब्दोंका अर्थ सरल हिन्दी भाषामें. ...	इलाहाबाद	1-8-0
हिन्दीविश्वकोष—ब्रह्म विश्वकोषके सम्पादक—श्रीनगेन्द्रनाथ षण्णु प्राच्यविद्या महाविद्यालय मद्रासके प्रिन्सिपल M. R. A. S. तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा संकलित। यह कोष हिन्दीके महान् शब्दोंकाभी अभ्यास करनेवाले लोगोंके लिये अत्यन्तही उपयोगी है। इसके ६ भाग छप चुके हैं। बाकी छप रहा है.	कलकत्ता	90-0-0
हिन्दीशब्दसागर—हिन्दीभाषाका एक बृहत् कोष यह एक ऐसा अलैंगिक हिन्दीकोष है त्रिपदी महिमा केरनीसे बाहर है टाईप बनारस २८ भाग छपकर तैयार हैं. बाकी छप रहा है. दाम प्रत्येक भाग.		1-0-0
सचित्र अर्थ-मागधीकोष—सम्पादक—पूज्यपाद श्रीगुलाबचन्द्रजी स्वामीके शिष्य रातावधानी श्रीनमुनि श्रीरामचन्द्रजी महाराज (सीम्बडी सम्प्रदाय) भाग १ छपचुका है और छप रहा है। दाम प्रथम भाग सजिस्तका.		18-0-0
विश्वलोचनकोष—आचार्यधरसेनकृत मूल और पं० नन्दलालजी शर्माकृत भाषाटीका। अनेकार्थ कोष है, कविता करनेवालोंके बड़े कामका है। छपाई लाहौर सुन्दर है। पृष्ठसंख्या ४३२, रुपयेकी जिल्द बंधी है। मूल्य तिफें.		1-12-0
धनंजय-नाममाला—द्विगुणान-महाकाव्यके रचयिता महाकवि धनंजयकृत मूल, और पं० धनदयाम दासजीकृत भा० टी०। पुस्तकान्तमें अनेकार्थ नाममाला भी है। मूल्य.		0-10-0

सब प्रकारकी पुस्तकें मिलनेका पता.

मेहरचंद लक्ष्मण दास.

संस्कृत-पुस्तकालय, लाहौर.

Apply to—

MEHR CHAND LACHMAN DASS.

Sanskrit Book Depot, Said Mitha Bazar.

LAHORE.



उपरोक्त शीर्षपर नियमानुसार कमीशनभी दिया जाता है. आर्डर देते समय कृपया कुछ पैसेकी
अवश्य भेजें और अपना पता स्पष्ट लिखें। पत्रोंतरके लिये जबाबी काट्टे भेजना आदिपु अन्यथा
उत्तरके लिये प्रतीक्षा नही करिएगा।

बला गया है। यह धर्म ग्रंथके समान पढ़ने लायक ग्रन्थ है। मू० ३)

सरल मनोविमान। इसमें मनोविज्ञान जैसे कठिन विषयको बहुत ही सरलतासे सुगम भाषामें अच्छी तरह उदाहरण आदि देकर समझाया है और प्रत्येक अध्यायके अन्तमें एक रोचक प्रश्नावली भी है। मू० १॥)

फाल्गुनाम और भवभूति। संस्कृतके दो सुप्रसिद्ध कवियोंके धर्मिज्ञान साङ्गन्तल और उत्तररामचरित इन दो नाटकोंने पुनर्दोषनिवेदिनी, मर्मस्वार्थिनी और तुलनात्मक समालोचना। यह समालोचना कितनी बढ़िया होगी, यह बतलानेके लिए इनका ही बतला देना काफी होगा कि इसके लेखक सुप्रसिद्ध नाटककार म० द्विजेन्द्रलाल राय हैं। मू० १॥)

नाट्यदर्शनमीमांसा। यह भी एक समालोचना-ग्रन्थ है। इसमें पहले और पहिलेके साहित्यकी—यूरोपियन और आर्यनाट्यकी—तुलनात्मक समालोचना की गई है और इन दोनोंके साहित्यकी सब तरहसे आदर्शगीय, उत्कृष्ट और महान् विद्वत् विचार हैं। मू० १॥)

शास्त्र प्रत्यागमिह। गणेश द्विजेन्द्ररायके दुर्लभ नाटकका अन्वय। इसमें महाकाव्य प्रान्त, वनके भाई शक्यविह, राजकी वृषभगज, उनकी धी प्रोलीवारी, अक्षरकी कन्या देवदेवता और अन्तर्गतः संतुष्टिगा आदि पात्रोंके परिचय एक अच्छे और आदर्शपूर्ण रूपमें मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

उत्तररामचरित। इसमें भी पुनर्दोष निवेदि, तुलनात्मक, हृदय, श्रेय, प्रिया, अर्थात्, पूजा, प्यार, लज्जा, अर्थात् आदि अनेक आदर्शोंके विस्तृत ही मनोमग्न संग्रह मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

अभिनेतृकी सन्देश। मू० लेखक धर्मपुत्र पाठ रिकर्त और मू० लेखक म० द्विजेन्द्ररायके भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर। इसमें अनेक आदर्शोंके संग्रह मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

संस्कृत साहित्य। संस्कृत साहित्यके अनेक अर्थोंके संग्रह मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

संस्कृत साहित्य। मू० लेखक म० द्विजेन्द्ररायके भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर। इसमें अनेक आदर्शोंके संग्रह मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

संस्कृत साहित्य। मू० लेखक म० द्विजेन्द्ररायके भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर। इसमें अनेक आदर्शोंके संग्रह मिलित किये गये हैं। मू० १॥)

पद, ३ कुमारसंभव और शकुंतला, ४ शकुंतला, ६ कादम्बरी चित्र, ७ काव्यकी उपेक्षिता ये सा और इनमें एक प्राचीन ग्रन्थोंकी अपूर्व और मूलोचना की गई है। योद्धों बहुत कष्ट डालना खास सुग है। मू० १॥)

समाज। मू० नाथ बदरीनाथ वर्मा ए० तीर्थ। यह भी रवीन्द्रनाथकी एक निबन्धावली है। इसमें आठ निबन्ध हैं—१ आचारका अलोक्य दयाप्रा, २ विलासकी फौसी, ४ नकलका ५ प्राच्य और प्रतीच्य, ६ अयोग्य मक्ति, ७ पूर्व ८ चित्रोपनी। 'प्रमा'के सम्पादक लिखते हैं—'बाबूकी लेखनीसे जो कुछ निकलता है वह विचारोंके चित्ताकर्षक और अद्भुत होता है। इस प्रकार विचार पूर्ण उपदेशोंसे भरा है मूल्य ॥१॥)

अज्ञान। लेखक—श्रीयुक्त सुदर्शन। एक कथाके आधारसे लिखा हुआ मौलिक नाटक। सिद्धहस्त कहानी लेखक है। उनका यह पहला है और इसमें भी वे अपनी स्वाभाविक प्रतिभाके रूप में मूल्य १॥)

मुक्तधारा। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर नाटकका अनुवाद। इसमें व्यक्तिगत, सामाजिक, और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंपर एक नये ही बतलाया गया है। प्रारंभमें श्री० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कचिरोमणि की एक विस्तृत भूमिका है जिससे अभिप्राय विस्तृत स्पष्ट हो जाता है। नाटकका विद्वेगण भी किया गया है। मू० १॥)

सुहृदाय दस्तम। सर्गाय द्विजेन्द्रलाल राय नाटकका अनुवाद। अनुवादक—श्रीमान् सुंघी। लगभग तीन घण्टीय भाग पसका है। कहानताने योग्य नाटिका है। मू० १॥)

रवीन्द्रनाथ। बंगालके इस समयके सर्वश्रेष्ठ कवि श्रीगोपाध्यायके सामाजिक उपन्यासका अनुवाद। मूल लेखक भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर हैं। मू० बारह भागों में अस्तोद्य और स्वयंसेवक। मू० १॥)

सुधाभीको उपदेश। अंग्रेजीके सुप्रसिद्ध लेखक 'मैक'के द्वारा लिखित अनुवाद मू० १॥)

भारत-समाज। द्विजेन्द्र नाथका सामाजिक उपन्यास। अंग्रेजीका पत्र समाजसेवाके मू० १॥)

पद्मचन्द्रकोश ।

ॐ चिदात्मने नमः ।

अ,]

[अक्षरम्पत,

अ

अ, (पु०) अक्षर । विष्णु । न होना । संस्कृत वर्णमालाका पहिला अक्षर, अभाव ।

अ, (अव्य०) अक्षरप्रयोग करणा आदि+र-स्रोतके आदिमें पाठ होनेसे अव्यय है । अभाव (न होना) । प्रतिषेध (रोकना) । स्वल्प (बोधाय) । सम्बोधन । अपिज्ञेय (विस्कार करना) । निषेधार्थक "नम्" वा प्रतिनिधि है । स्रोतके पहिले अन् और व्यन्त्रोंके पहिले "अ" ही रहना है । "न" के छ अर्थ होते हैं—साध्य (मिलना-जुटना) जैसे "अनाक्य" भाष्य (यज्ञोपवीत आदि होनेसे) के समान-अग्निदादि । अभाव (न होना) जैसे "अज्ञानम्" ज्ञानका न होना । मूत्रमेद (फरक)—"अपटः" रूपका नहीं, कोई भीरु बन्तु । अत्यन्त (बोधाय)-छोटापन जैसे "अनुदण" पनती वा छोटी बमरवाती । विरोध (विरुद्ध वा बहिर्दाक) जैसे "अनीति" (नीति वा न्यायके विरुद्ध) । लर् लर् और लर् लकारोंके पहिले भी लगाया जाता है ।

अक्षरमिन्, (त्रि०) नास्ति ऋणं यस्य । ऋणरहित । जिसने किसीका ऋण-करां नहीं देना । बेकरां । "ऋ" को व्यञ्जन मान लेनेसे ऋणके पहिले "अन्" नहीं हुवा । दृग्गी अर्थमें "अनृणी" भी होता है ।

अंदा, (पु०) अक्षर+आंवेडन् । विभाग । रातीका तीसवां हिस्सा ।

अंशक, (त्रि०) अंश+शुल् (अक) । विभाजक (बांटेने-हार) । प्रियाम्-अंशिका । दागद (रातीक-हिस्सेदार) (पु०) अक्षर+आंवे बन् । अक्षर, हिस्सा, टुकड़ा । मेघ आदि रातिका तीसवां भाग । "द्विभ्रंवा मेघनाभांवेके स्यात्" ।

अंशयिद्, (पु०) अक्षर+यिद् । अंशयति । बांटेनेद्वारा भागी ।

अंशाल, (त्रि०) अक्षर+अल् । बलवान् ।

अंशहर, (त्रि०) अंश हरति-हृ+अच् । अंशहरति । हिस्सा लेनेद्वारा । "अक्षरतोऽर्षेदरो वा पुत्रवित्तजनेनत् पिते"ति सृष्टि ।

अंशाक्षररथ, (न०) ६ त० । अंशस्य अक्षररथम् । देवता-ओंके अपने २ भागसे मिलकर वासुदेव आदि रूपसे सृष्टि-वीर्य प्रकट हुआ नरदेह भगवान् भक्तार ।

अंशान्, (त्रि०) अक्षर+मिन् । भाग करनेद्वारा । शरीक ।

अंशु, (पु०) अक्षर+कु । प्रभा । किरण । वेग ।

अंशुक, (न०) अंशु+क । वस्त्र-महीन कपडा ।

अंशुधर, (पु०) अंशु+धृ+अच् ६ त० । सूर्य । वेगवान् ।

अंशुपति, (पु०) अंशु+पति ६ त० । सूर्य ।

अंशुमत्फला, (स्त्री०) अंशुमत्-फलं यस्याः ६ त० । केलेका वृक्ष ।

अंशुमाला, (स्त्री०) अंशु+माला ६ त० । किरणोंका समूह ।

अंशुमालिन्, (पु०) अंशु+माला+इनि । सूर्य ।

अंस, (पु०) अक्षर+स । कंधा । हिस्सा ।

अंसफूट, (पु०) अंस+फूट ६ त० । बिलका अंग-हुद्द ।

अंहस्, (न०) अह+अति । पाप ।

अंहि, (पु०) अह+कि । पापों । वृक्षा मूल ।

अंहिप, (पु०) अहिणा (मूलेन) पिबति विकृतोयम् ।

अंहिपा+क । सींचे गये जलको जड़से पीताहै । वृक्ष ।

अक्, भ्या० प० गतौ (अकति) । जाना । सांपकी भाति सरकना ।

अक, (त्रि०) सरकनेद्वारा ।

अकम्, (न०) न कं-सुगम् । सुगका न होना । दुःख । (जैसा कि "दाक" न अकं दुःखं यत्) जहाँ दुःख न हो ।

अकच, (त्रि०) न० ब० । गजा-चः । केतु प्रदक्ष नाम है । जो घड़के स्वरूपमें है ।

अकधित, (त्रि०) न० ब० । न बड़ा गया । गौण कर्म ।

अकनिष्ठ, (त्रि०) न० ब० । न छोटा अर्थात् बड़ा वा मध्यम-कृ- (पु०) बहुवचन (अके-वेदनिन्दालो पापे निष्ठा यस्य स) । बुद्धगौणमहा एक नाम है ।

अकनिष्ठप, (पु०) (अकनिष्ठान् बुद्धान् पाति-या-क) बुद्धका नाम । बुद्धदेव ।

अकन्या, (स्त्री०) न० त० । जो कुमारी नहीं । अकान औरत ।

अकम्पन, (त्रि०) न० त० । न कांपना । -न । एक राक्षसका नाम ।

अकम्पित, (त्रि०) न० त० । जो कांपना नहीं । स्थिर ।

अर् (पु०) जैनका नाम । बुद्धपत्न । अन्तिम तीर्थ-हरण एक स्थि ।

अकम्पित, (त्रि०) न० ब० । न बड़ा गया । गौण कर्म ।

अकरपि, (स्त्री०) न-कृ-अनि । शाय । समाप्त न होना ।
 फिरी कामसे हार हो जाना । निरुत्साह होना ।
 अकरा, (स्त्री०) न+कृ+अच् । आवलेका वृक्ष, त्रिनहाय ।
 अकरण, (वि०) नास्ति करणा यस्य यत्र वा । जिसे वा
 जहाँ दया नहीं । दयाहित । निर्दय ।
 अकरंदा, (वि०) न कर्त्ताः न० त० । कोमल ।
 अकर्ण, (वि०) न-कर्णः । बज्रु । त्रिनदान । बहिरा । डोरा ।
 अकर्तन, (वि०) (इत्+भुच्) न० त० । उच्चर्था फलं
 न कर्त्तुं शीलं अल्प । जो उंचे फलको ले नहीं सक्ता ।
 उर्व । डेगला । बीना । कामन । इत् मावे ल्युट् । न० व० ।
 कारनेहार ।
 अकर्तु, (पु०) न० त० । जो करनेहार (कर्ता) नहीं ।
 "पुरोऽहं भोवा" वाक्य ।
 अकर्मेक, (वि०) (नास्ति कर्म यस्य न० कर्) । फलव्या-
 पारोक्तिरितिज्ञान् । जिसे (किया) का फल (मतीजा)
 हीर स्मार (इरकन-किया) एकी (व्यक्ति)में रहे
 ह्ये अकर्मेक किया (Intransitivo) कहतेहैं ।
 अकर्मण्य, (वि०) कर्मन्+य+न०+न० । काम न करमक-
 न्तात् ।
 अकर्मन्, (वि०) न+कर्मन् बजु० । जो काम न करसके ।
 अकल, (पु०) नास्ति कल (अथवा) अल्प । अंगरहित
 पाकान्ना । (वि०) अथवा (भाग) रहित ।
 अकलकन, (वि०) कलकं दग्मः न० व० । दग्गरहित ।
 जो पकाने नहीं । शिगडा पक नहीं हुआ । जो मनी
 नहीं बना नहीं ।
 अकलका, (स्त्री०) न+कलका बजु० कर्दनी । पाकान-
 र्ति० ।
 अकलर, (वि०) न० व० । अथवा । जो वा (कर्त्)
 के नहीं रहता । अकलर । निर्दय (कर्मयोग) ।
 अकल्पित, (वि०) न० त० । जो कल्पित (बनपटी)
 नहीं । अकल्पित (कुराणे) । ना-अपि ।
 अकल्प, (वि०) कल्पन्तु कल्प कल्पन्तु न० त० । डेगी ।
 अकल्पना, (वि०) व० त० । अकल्पित । दुर्मेव ।
 अकल्पना अल्प नो अल्प-अल्प न होना । बुरा ।
 अकल्प । दुर्मेव । दुःख ।
 अकल्प, (वि०) (न कल्पते कर्त्ते-) कर्त्तव्य । न०
 त० । शिगडा कर्त्ते नहीं किरा कल्पना ।
 अकल्प, (पु०) कल्पना अर्थात् दग्म । व० त० ।
 अकल्प कर्त्ते कर्त्ते ।
 अकल्प, (पु०) व० त० । कल्पन । दुर्मेव । जो दग्म नहीं ।
 न कल्प कल्पनेको कल्प नो कल्प ।

अकस्मात्, (अव्यय) एकवारणी । अघातक ।
 अकाण्ड, (पु०) न+काण्ड न० त० । अघमविदा ।
 बाणविना ।
 अकाम, (पु०) कम्+धम् न० त० । इच्छाविन ।
 अकाय, (पु०) न+काय व० । देहविना-रह ।
 अकार, (वि०) (करोतीति कारः-कृ+धन्-अण्वा न० त० ।
 जो कुछमी काम नहीं करता । कियारहित । -रः (पु०)
 "अ" अक्षर (वर्णमालका पहिला) । "अस्यण्णन्-
 रोऽस्मि" (म० गी० १०-३३) ।
 अकारण, (न०) न+कारण न० त० । हेतुविना । वि-
 मतल्प । प्रयोजनविन ।
 अकार्पण्य, (वि०) न० व० । नास्ति कर्पण्यं (दानं)
 यस्मिन् । जो दानता (आजिजी)के बिना मिलको ।
 "अकार्पण्यमैन्देयम्" ।
 अकार्य, (न०) कृ+ण्यन् न० त० । जूआ कोरी क-
 दि बुरा काम । व० विनकाम ।
 अकाल, (पु०) न+काल न० त० । बुरा समय । मतारि न
 करनेका समय ।
 अकालजलदोदय, (पु०) अकाले जलदानां उदयः ।
 तद्यु० । समयविन बादलोका होना ।
 अकिञ्चन, (वि०) न+किञ्चन व० । निर्धन गरीब ।
 अकिञ्चिज्ज, (वि०) न+किञ्चित्+ज्ञ+क । योग मी न जान
 नेहारा-मूर्ख ।
 अकिञ्चिकर, (वि०) न+किञ्चित्+कृ+अच् । काम न
 करनेहार ।
 अकीर्ति, (स्त्री०) न० व० । अप्रसस्ता कीर्तिः । अकीर्ति
 न होना । अयसा । बुरी विख्याति ।
 अकुण्ड, (वि०) न+कुण्डा व० । न करनेहार । कामने
 बजु ।
 अकुनीमय, (वि०) न+कुन+मयं । न करनेहार ।
 अकुण्य, (न०) गुण+यन् कल्प वाः न० त० । लोग-
 बांरी ।
 अकुल, (वि०) (अल्पान्ते कुं अर्थ) शिगडा कुल (की-
 य) अया नहीं । नारबांदा । दुष्कृतीन ।
 अकुला, (वि०) न० व० । न कुल । जो कुल
 नहीं । दुर्मेव । जो बजु नहीं । अमहा । बुरा । बाकिमा ।
 अकुल, (वि०) न० व० । जो टग नहीं । नारदवर् ।
 दिवन्तद्वर आदमी ।
 अकुल्य, (वि०) कलि कुल-अयम् दग्म । शिगडी कर्त्ते
 न हो । कल्पित ।
 अकुला, (पु०) न+कुल+क+अण । बजु न कल्पना ।

अक्षुब्ध, (वि०) न० ब० । दुःखरहित । सुखी ।-अम्, (न०) दुःखका न होना । आराम । सुख ।
 अक्षुब्ध, (वि०) (हृ+क्ष+भ्रमेति) न० ब० । न विदागदा । न निद्रा दुःखा । न क्लेशागता ।
 अक्षुब्ध, (वि०) न० ब० । जो निपुण (चतुर) नरो । जो बुझी कर नहीं पाता । ज्ञानमदम् ।
 अक्षुब्ध, (वि०) (अ+क्षुब्ध+ल) । न० ब० । न क्लेशागता । जिसका बुझनी सुखान नही हुआ ।
 अक्षुब्ध, (न०) हृ+भयप् न० त० । धोती आदि पुण कप । बिनकाय ।
 अक्षुब्धपच्य, (वि०) (पच+पदप्-ल) न० त० । अक्षुब्धे क्षेत्रे नये पच्यते । न हल चलते हुए क्षेत्रमें पचना है । निती-आदिके बिना अग्नेआय पके हुए धान (चबल) आदि अक्षुब्धकर्मन्, (वि०) अक्षुब्ध-शब्दं कर्म यस्य । जिसका काम शुद्ध हो । शराकारी । पुष्पाना ।
 अक्षुब्धाल, (न०) बुझालम् भाव बुझाल+अम् न० त० । बिनचतुरार्थ ।
 अक्षुब्ध, (स्त्री०) अक्षुब्धन् । शाल ।
 अक्षुब्ध, (वि०) अक्षुब्ध+क । शराहुआ । पिण्डहुआ । फलहुआ ।
 अक्षुब्ध, (वि०) न+कमः ब० । जिसका नियम न हो । पाद-द्वय ।
 अक्षुब्ध, (पु०) न+क्षुः न० त० । यदुत्सुक राजा इच्छति (वि०) ।
 अक्षुब्ध, (पु०) कुप्+पम् न० त० । कौपका न होना । कौपश्ल्य (वि०) ।
 अक्षुब्ध, (न०) अक्षुब्धम् । इन्द्रिय । सोलह मासे सोल । पाया । पहिया । रावणका एक पुत्र । न्यइहार ।
 अक्षुब्ध, (वि०) क्षण+क न० त० । न हटाहुआ (न०) न्युत्सुक । वाकल-जं- (स्त्री०) बह्वर्तनीरुश ।
 अक्षुब्धशोक, (पु०) अक्षुब्ध+शु+अनुत् । मुनिक । जुआरिआ ।
 अक्षुब्धेयिन्, (वि०) अक्षुब्धेयिन्+गिनि । जुआरिआ ।
 अक्षुब्धुदा, (स्त्री०) अक्षुब्ध+यु+अम् न० त० । पहियेके आगेका भाग ।
 अक्षुब्धपाद, (पु०) अक्षुब्ध+पद्मः पाद ब० । गौतममुनि । ६ त० । चक्रर ।
 अक्षुब्ध, (वि०) क्षुब्ध+अम् न० त० । सामर्थ्यहीन । शमारहित ।
 अक्षुब्ध, (स्त्री०) क्षुब्ध+अम् न० त० । न शहारना । ईपांकरना ।
 अक्षुब्धमात्रा, (स्त्री०) अक्षुब्ध+मात्रा ६ त० । जपमात्रा ।
 अक्षुब्ध, (पु० न०) क्षि+अम् । न० त० जिसका नारा न हो ।
 अक्षुब्ध, (स्त्री०) (नास्ति क्षयः क्षान्नादेः यस्यां त्रिषी) बहु० । जिस निधिमें क्षयका क्षय नहीं होता । बहुत पुण्य बढ़ने-वाली निधि । मोमवती अमावास्या । रविवारकी रामनी । शुभकारी चतुर्थी । वैशाखके शुद्धपक्षकी तृतीया ।

अक्षुब्ध, (न०) न क्षेपुं शक्यम् । क्षि+यत्-नि० न० त० । जो क्षय नहीं होगा । धातुकी समाप्तिमें देने योग्य घृता (पी) मधु (रात) युक्त जल । अक्षुब्धपय ।
 अक्षुब्ध, (पु०) शर+अम् न० त० । अक्षुब्धविवर्ण । नाश-घन्य-मग्न ।
 अक्षुब्धषण, (न०) अक्षुब्ध+षण । छेराक, छिन्ननेहार ।
 अक्षुब्धदा, (वि०-वि०) अक्षुब्धे अक्षुब्धे इति वीषतायां क्षुप् । एक एक अक्षुब्ध । अक्षुब्धके अनुपात ।
 अक्षुब्धजीवक, (वि०) अक्षुब्धेण जीवति । अक्षुब्ध+जीव+णुत् । अक्षुब्ध छिन्नकर जीनेहार छेराक ।
 अक्षुब्धजीविन्, (वि०) अक्षुब्धेण तद्विषयारिक्त्येण जीवतीति । अक्षुब्ध+जीव+गिनि- (इत्) । अक्षुब्धके छिन्न-कर जीविक करनेहार ।
 अक्षुब्धस्तंभस्थान, (न०) अक्षुब्धराणां संस्थानम् ६ त० । अक्षु-रोंका स्थान । अक्षुब्धी रचना करना । बहु०-तिपि । अक्षुब्धवली ।
 अक्षुब्धी, (स्त्री०) अक्षुब्धे गगनाभोगं मेघैः । अक्षुब्ध+अम्+धीप् । बादलोंद्वारा आकाशमें स्थान होतीहै । वर्षाक्षुब्धी । मौसिम । बरसान ।
 अक्षुब्धपती, (स्त्री०) अक्षुब्ध-पादाद्य विद्यन्ते अत्र । जहाँ खेलनेके पाससे पड़े हों । अक्षुब्ध+पत्नी (मत्) कत्वम् । अक्षुब्धी । पासांकी खेल ।
 अक्षुब्धिन्, (वि०) अक्षुब्ध-पादाकीभो वेति । पासांकी खेल-को जांचेहारा । अक्षुब्धि+क्षिप् । जूलेको जांचेवाला । जु-आरिआ ।
 अक्षुब्धीण्ड, (पु०) अक्षुब्ध+शीण्ड ७ त० । पक्षा जुआरिआ ।
 अक्षुब्धम्, (न०) अक्षुब्ध-जपमात्रायाः सूत्रम् । ६ त० जप-मात्रावर सूत्र । जनेक ।
 अक्षुब्धान्ति, (स्त्री०) न० त० । न शहारना । क्षमा न करना । ईपां करना । मोष करना । बेसबर होना ।
 अक्षुब्ध, (वि०) नास्ति क्षारे अत्र । जहाँ रार न हो । जो कृत्रिम (बनावटी) छल नहीं ।
 अक्षुब्ध, (न०) अक्षुब्ध+त्वि । नेत्र । आंख ।
 अक्षुब्धगत, (वि०) अक्षुब्धेयिपयं गतः ६ त० । विरोधी । शत्रु-अक्षुब्ध, (वि०) न० त० । क्षि+यत् । न क्षय होनेवाला । अक्षुब्धनाशी । निल्य रखनेहार । एकरस रखनेहार ।
 अक्षुब्धतरम्, अक्षुब्ध तरति- न० त० । तु+अम् । आंखके समान तैरताहै । जल निर्मल होनेसे नेत्रके समान जान परताहै ।
 अक्षुब्ध, (पु०) अक्षि वाति-प्रीणति अक्षुब्धेन । (वा+क) । अक्षुब्धना जो आंखको निर्मल करता है । मुहांसनेका हल । -बम्-समुद्रक लोचन ।

मिजिहा, (स्त्री०) अमे: जिहा इव शिखा यस्या: । बहु० । अमिनी जीमकी भांति जिगरी शिखा हो । इत० आगरी जीम । आगरी शिखा (लाट) । अमि: जिहा येदाम् (घ०) जिनकी जीम अमि है । देवता.

मिदेयता, (स्त्री०) अमि: देवता यस्या: । जितकी देवता अमि है । कृषिक नाम नद्यत्र (तारा) । इसकी देवता अमि है.

मिनिपांस, (पु०) अमिन्त् उरीपक: निपांस: (नि-
प्यन्द्) यस् । बहु० । जितकी गीद् अमिके समान
उरीपक (भूतको धमचनेहारी) है । उपचारसे (उससे
उपजा) अमिमारुह । सर्प । (न०) .

मिप्रस्तार, (पु०) अमि+स्तृ+अच् । आगको उठाने-
वाला पत्थर । चकमकी.

मियाह, (पु०) धूम.

मिम, (न०) भा+क । सर्प-आगकी तरह धमचनेहारा.

मिभू, (पु०) अमे: भवति-भू क्विप् । अमिसे होताहै ।
(चार्निकेय) देवताओंका घेनानी । सर्प (सोना) (न०)
कोईनी अमिसे उपजाहो (वि०)

मिमणि, (पु०) अमे: उन्पायक: मणि: । अमिको नि-
काठनेहारा मणि । अमिका पापन आतसी धीसा (बच) ।
सूर्यबान्मणि.

मिमप्य, (पु०) अमये मप्यते अती । मन्थ+अच् ।
अमिके द्विये मंधन किया जाताहै । मणिकारी वा मणि-
कारी नामसे प्रसिद्ध वृक्ष । इसकी लकड़ियोंको रगड़ने-
पर हाट भाग भटक उठती है.

मिमाराती, (पु०) अमिमारत+इम् । अगलमुनि.

मिमिगुल, (पु०) देवता । माझण.

मिमिगुदी, (स्त्री०) अमि: इव गुदां (अयं) अस्या: ।
दीप् । जिगघ मुग् अमिके समान है । मेख । भट्टक
वृक्ष । बहेड़ा । पाषाण । रगोईराना । गायत्रीमन्त्र

मिमिरहण, (न०) अमि: रश्मते अनेन । रश्+स्युद् (अ-
न) । राशम आदिसे अमिकी रशा बरनेवा एक मन्त्र ।
अमिहोत्र.

मिमिष्टोम, (पु०) एउ+ मन् वचम् । वधविशेष.

मिमिष्यात्, (पु०) घ० घ० । अमिन्-धाडीवधिविहरण-
नन्तर युग् आत् (महत्) येवी ले । धडके उरलोकी
ब्रह्मके हाथकी अमिसे पढ़े जाते हैं । विष्णुय ।
मरीचिके बंधमें हुए शिर । मनुष्यजन्ममें अतिशय
आदि वह न बरके स्वर्गमेंनेत्र होकर मरकर शिर
होते हैं । देवता और ब्रह्मदेवोंके शिर । शिरगोरी गुह्यजन्म.

मिमिस्वात्, (अय०) अमि+मिस्व । अमिके अतीव
होकरना । वाय होकरना । उज्ज्वल.

अमिहित, (पु०) विन्दु+किर् । अमिहोत्री.

अमिहोत्रम्, (न०) अमये ह्यते अत्र । हु+त्र । घ०
त० । मन्त्रके साथ अमि स्थापन करके किया गया होम ।
अमिहोत्रवा सम्बन्धी होनेसे अमि.

अमिहोत्रिन्, (वि०) अमिहोत्रे अमि अयम् । अमिहोत्र+
इनि । अमिको स्थापन करके सार्वजन: होम करनेवाण
साधिक.

अमीध, (पु०) अमि+इम्ध्+रक् । पुरोहितविशेष ब्रह्म
अमि+ध्+क । आगका कर्म होमादि.

अमीधोमीय, (वि०) अमीधोमी देवने यस्+ छ (ईय) ।
अमि और सोम देवताओंके निमित्त वाग.

अद्र्याहित, (पु०) अमि+आ+पा+क वा परनिपात: । अमि-
होत्री.

अद्र्युत्पात, (पु०) उद्+पत्+पच् ३ त० । धूमकेतु । आ-
काशसे आग आदिका नीचे गिरना.

अद्र्युत्पस्थान, (वि०) अमि: उरस्थीवत्तदनेन, अमि+
उप+स्था+स्युद् (अन) ६ त० । अमिको निवटगनेवा मन्त्र.

अद्र, (न०) अद्र+रक् मलोः । उरवा भाग । होत्रभाग ।
तहारा । पूर्वभाग । गमू । १६ मारवा मय । प्रथम ।
अधिक । प्रथम (वि०) .

अद्रकाय, (अर्ध०) अद्र: कय: । देवका पूर्वभाग.

अद्रग, (वि०) अमे गच्छतीति, अद्र+गम्+ इ ७ त० ।
आगे जानेहारा.

अद्रगण्य, (वि०) अमे गण्यते, अद्र+गण्+च् ७ त० ।
आगे गिनाया, प्रथम.

अद्रगामिन्, (वि०) अमे गच्छतीति, अद्र+गम्+मिनि
७ त० । आगे जानेहारा

अद्रजहा, (स्त्री०) अद्रा जहा । अद्रका अण्ड भाग.

अद्रजन्मन्, (पु०) अमे जन्म वस्य, अद्र+जन्+मिन्
अपि+बहु० । ब्रह्मभ्राह्मण । पारिवे उरवा हुवा (वि०) .

अद्रजाति, (पु०) अद्रा धेत्वा जतिरस्य, अद्र+जन्+
क्तिन् (ती) ब्राह्मण.

अद्रजिहा, (स्त्री०) अद्रा जिहा । जीमकी जीव.

अद्रणी, (वि०) अमे नीरतेडगं, अद्र+नी+किन् कर्त्तं ।
खानी, धेत्.

अद्रतम्, (अय०) अद्र+तनिन् । पूर्वभाग । अने । अनेक

अद्रतान्तर, (वि०) अद्रतं सारि, अद्रत+स्तु+ट ७ त० ।
अगुम, आगे जानेहारा.

अद्रवानिन्, (पु०) एते एवं वस्य, अद्र+वा+निन् ।
मेके मित्रेण एवं वेदेत्वा ब्राह्मण.

अद्रवन्, (अय०) अद्र+वन् । अय (णि) ही । अने

अद्रवारिवा, (न०) अद्र+वारिवा । अद्र+वारिवा । अने ।

अद्, (पु०) अद्+अन् । मादबचा एक भग्न । पर्वत । विन्द ।
 रैवा । मुद्रया भूयय । तमीप । मोद् (अन्वी०) ।
 अद्भुत, (पि०) अद्+भुत् । विन्द विन्द्वरनेत्र गाधन मोहर ।
 अद्भुत्पालि-ली, (स्त्री०) अद्+पा अलि ६ त० वा हीप् ।
 मोद्बरा गिरा, अद्भेन पत्तयति । अद्+पति+इ । उपमाता-
 (बया) अद्भय पतिरिष त० । अलिङ्गन-गले मिलना ।
 अद्भुत्पालिषा, (स्त्री०) अद्भुत्पालि+क-दाई । वेरी । मोद्के पाय
 लो मिलना ।
 अद्भुत्लोप, (पु०) अद्भाना लोपः । संन्यास व्यरकलन
 (पठान्)
 अद्भुत्पिचा, (स्त्री०) अद्भाना पिचा । अर्कोदी पिचा । मलिन-
 दात्र ।
 अद्भुत्, (न०) अद्भुत्+अणु बुन्वम् । विन्द । शरीर ।
 अद्भुत्, (पि०) अद्+भुत् । विद्रुहियामया । विप्रक्रियामा-
 या । मिनयमा ।
 अद्भुत्, (अत्रो०) अद्+उत् । शीतरो जो नया उत्पन्न
 हो । महीको जो पाइ कर दिक्के मिलना । वृत् । जग । शीघ्र
 उत्पन्न होनेकी समानतासे छोद्-त्येन ।
 अद्भुत्क, (पु०) अद्भुत्+कृत् ततः कः । जिनको बटे
 यत्रवे इषा कियाजाय । पक्षी आदिवा वासस्थान । पुरा ।
 अद्भुत्कित, (पि०) अद्भुत्क अस् गत्राना । तारक० इत् ।
 जिनके अद्भुत् (बुनजी) निकल आवेहो ।
 अद्भुत्ता, (अत्री०) अद्+उत् । हाथीको चलनेके लिये
 आंगेसे देहा लोहेका एक प्रहरका अन्ध-अन्ध ।
 अद्भुत्तामहा, (पु०) अद्भुत् महाति । अद्भुत् (अन्ध) को
 पक्षका है । हाथीको चलनेहाका महात्तन ।
 अद्भुत्तादुधं, (पु०) दुग्+पाति+उत् हृत् ३ त० । दुग्-
 ग्नाह्नी-जिग हाथीको बरामे लाना कठिन हो । मतवारा
 हाथी ।
 अद्भुत्ताधारिन्, (पु०) अद्भुत् धारयति । हाथी रखनेवाला ।
 अद्भुत्तामुद्रा, (स्त्री०) अद्भुत्तामुद्रा मुद्रा । अद्भुत्के स्वर-
 पक्षी मोहर ।
 अद्भुत्तित, (पि०) अद्भुत्+इत् । अद्भुत्तानी ।
 अद्भुत्तिल, ट, ट, (पु०) अद्भुत् लक्षणे कीलाकरकष्टः, अद्+
 ओट, ट, (ल) आकोडनामी वृत् (जिसके फूल पीले
 औ सुगन्धिपुष्प, लम्बे लम्बे बाँटोकवा । एवं फल जिनके
 लालरंगके होतेहैं) ।
 अद्भुत्तिलसार, (पु०) अद्भुत्तिल्य सार । ६ त० । अद्भुत्-
 तिलकी विष ।
 अद्भुत्तिका, (स्त्री०) अद्+भुत्+अच् सम्प्रसारणे, अद्भु-
 क्त+क (यह शब्द अद्भुत्तिकावा अपभ्रंस प्रतीत हो-
 ताहै) आलिङ्गन करना । गलेमिलना ।

अद्भुत्, (पु०) अद्+अन् । मोदमें रराकर भजानेवा
 बाजा शृङ्ग (तबले) आदि ।
 अद्भुत्, पुग० प० । विमदना । साथ लग जाना
 अद्भुत्, (न०) अद्+अन् । देहायव । जोष । एकदेता ।
 मित्र । उपाय । मन ।
 अद्भुत्, भ्या० प० (अत्रिपि । आशीत्) । जाना । रौर करना ।
 अद्भुत्, (अन्ध०) अन्ध । महाभाग । ठीक ठीक तालवीकर ।
 अद्भुत्कर्मन्, (न०) अद्भुत् (देहस्य) यम् (संस्कार)
 सुगन्धिकले द्रव्योंसे शरीरपर लेप करना । सुखादार पदा-
 थोंसे शरीरको लगना
 अद्भुत्मह, (पु०) अद्भुत्+मह ६ त० । देहकी पीडा ।
 अद्भुत्, (न०) अद्भुत् जोयने, अद्भुत्+अन्+उ । हथिर ।
 पुत्र । बेना-जो कुछ देखे निकले (पि०) ।
 अद्भुत्, (न०) अग्नि-गर्ता-अद्भुत्+स्युद् वा गन्वम् । आद्भुत्-
 वेदा ।
 अद्भुत्ति, (पु०) अनफि मालनेन करणेन, अद्भुत्+अति बु-
 त्वम् । लवारी । अत्यन्ते पूज्यते वर्मणि+अति । प्रक्ष । अग्नि ।
 अग्निरोमी ।
 अद्भुत्, (न०) अद्भुत् दायति घोषयति दै+क । बान्-मुहटा,
 बाहुभूयण, वादीच पुत्र बानर (पु०) अद्भुत्तान करने-
 हाका (पि०) । दक्षिण दिशाके हाथीकी हथिनी (स्त्री०) ।
 अद्भुत्ता, (स्त्री०) प्रवाल अद्भुत् अलि मस्या, अद्भुत्+न । अन्धे
 अद्भुत्ताली स्त्री । स्त्रीमाय । उत्तर दिशाके हाथीकी हथिनी ।
 अद्भुत्ताप्रिय, (पु०) प्री+क, अद्भुत्ता+प्रिय ६ त० । अयो-
 पान्ध (उसके फूलमें श्रीलोक अपने अद्भुत्ताको भूयित
 कर्ती है) जो कुछ विद्योसे विव हो (पि०) ।
 अद्भुत्ताप्रिय, (पु०) अद्भुत्तायाः प्रियः । स्त्रीच प्यारा वृद्ध ।
 अद्भुत्तापलिका, (स्त्री०) अद्भुत् देहं पालयति, अद्भुत्तापलि+
 क्युत् । दाई नामसे प्रसिद्ध उपमाता । अद्भुत्पालन करनेहाथी ।
 अद्भुत्प्रदामनम्, (न०) अद्भुत्ता प्रदामनम् । शरीरकी व्याधि-
 का शान्त होना ।
 अद्भुत्प्रायश्चित्त, (न०) अद्भुत्स शुभ्यर्थं प्रायश्चित्तम् । शरीर-
 रिक शुद्धिके लिये प्रायश्चित्त । (जैसे किष्ठी सबन्धीकी
 मृत्युपर शान्तिह) ।
 अद्भुत्भूः, (पि०) अद्भुत् मननो वा भवति । भू+किप् ।
 शरीर वा मनसे उपजता है । पुत्र । बेडा । बरमदेव
 अद्भुत्मन्त्र, (पु०) (अद्भुत्ता मन्त्रः । एक मन्त्र । अद्भुत्ताया-
 का मन्त्र
 अद्भुत्मर्द, (पु०) अद्भुत् मर्दयति, अद्भुत्+मर्द+विच्+अच् ६
 त० । शरीर दबायेहाका सेवक । मुत्तीचापी करनेहाका ।
 अद्भुत्ताको मलनेहाका (पि०) ।

व, (पु०) अच् अन्वे वच् व० । त्रिषु अक्षरके
नमै स्वर हो । मरणम् ।

व, (न०) संदिग्धहेतुमिने जन्मवे; न+अच्+विच्
। दुर्भाग्यमद्ये मूलन करनेहाय देवहन मूलक आदि
इव ।

व, (पु०) अद्यत् जगति विन्दन्मै नच्, जच्+अच् । जो
विमन्त्रि न पद सके । मरुव किताबके पदनेहाय ।
वि पाति रक्षति, अत्र+या+क । बहगीपालनेहाय (वि०) ।

व, (श्री०) प्रदमेन जपितुं अयस्या अयशोकारिणा
अन्व । हंशगनी मन्त्रका नाम । जो आरही आय-
यके अनेजनेने निकट्कारहता है । (हंशगनी
अन्मन्त्रकामे म्निट होहा है) ।

वच्-द, (पु०) अक्षय पाद इव पादोऽयम् । (मरुद-
मिने एका नाम । पूर्वमन्त्ररत्नानी नक्षत्र काग) ।

वया, (श्री०) अक्षयं विना । कुत्र इय मममे
पद वेद्य इव ।

व्युः, (पु०) अक्षय व्युः इव मूर्धावच् । बहरेके
दीर्घा म्निट म्निट होनेके मूर्धा । वेद्यका ।

व्यु, (पु०) अक्षयव्युः, अक्ष+पय ६ म० ।
व्युः) वरीगुणम् । (इगके पद बहरे प्रथम होकर
है)

व्यु, (पु०) अक्षय अक्षयि विद्यार्थे म्निट-अच् ।
मिने विदे बहरे अक्षयि म्निट है । वृषत् । अक्षयि,
विद्यु, (पु०) अक्षयि विद्युः बहरे विद्युः मय व० । अक्ष-
ययि देव । उच देवहा इय, अच् । अक्षयि-
अक्षय

व्यु, (वि०) अक्षय म्निटि म्निट वय (वदु०) ।
मय कुल बहरेके इत्य है ।-म (पु०) अक्षय-
अक्षय

व्यु, (श्री०) अक्षय म्निट इव म्निट म्निट वय,
मो म्निटि का, अक्ष+पय ६ म० (म्निट-अक्षय का । बहरे
अक्षयि अक्षय)

व्यु, (पु०) अक्षय अक्षयि म्निट वय ६ म० । म्निट
अक्षय वय म्निट होने) अक्षयि (वि०)

व्यु, (पु०) अक्षय अक्षयि म्निट वय ६ म० । म्निट
अक्षय वय म्निट होने) अक्षयि (वि०)

व्यु, (पु०) अक्षय अक्षयि म्निट वय ६ म० । म्निट
अक्षय वय म्निट होने) अक्षयि (वि०)

व्यु, (पु०) अक्षय अक्षयि म्निट वय ६ म० । म्निट
अक्षय वय म्निट होने) अक्षयि (वि०)

अजरा, (श्री०) ज्+अर्, न० त० । घृणुनामी नामी वृ
जयद्यत् । पुडापेका न होना । अजरमम् (अय्य०)

अजय, (न०) न जीयति, ज्+अच्, न० त० । मिय

अजलोमन्, (पु०) अजम् लोमेव लोम (मन्त्री) र
उपमान (व०) शुद्धिम्बीनानी वृष (त्रिपदी मा
बहरीके रोमकी नाई होवी है) ।

अजयस्ति, (पु०) अजम् वनि इव वनिः वच्
बहरेकी वनिके ममान वनिपत्तम् । एक क्रियका न
वा उगने उगम हुआ एक समूह ।

अजयीधी, (श्री०) अजेन प्रथमा निर्मिता वीची पदं
त० । आक्षयमे पुत्रकी नाई यमनायनाममे प्रजाइ ।
याय (जहमे लेख अक्षयके स्थानपद वितरं
मार्ग है) ।

अजयुद्धी, (श्री०) अक्षय मेपय म्निटि पदं अक्ष
व० म्निटम्निटानी वृष, त्रिपके पद मेदेके मीम
मिनि होवे है ।

अजय, (न०) न+अच्+अर् । निरतर दूतनेके विना । न
रहनेहायी वृषमाय ।

अजयव्याप्य, (श्री०) न अच् व्याप्यो वा, न+हा+अच्
व० । अपने अर्षको न छोडकर दूसरे अर्षको जतनेहा
लक्षणा नमसक्ति । जैसे "भेती धारति" म्निट है
गुणको छोडेविना येनगुणालेमे लक्षणा है ।

अजयविद्यु, (पु०) न अच् विद्युं वी, हा+अच् ३ व०
त्रिपका विद्यु निपल हो । विद्येपका बहरे और विद्यु
रहे वरुं अपने विद्युको न छोडनेहाय । म्निट विद्येप का
होता है । यद्यपि और अक्षयमे वृष निपल है कि विद्येप
विद्येपका विद्युप्रका बहरे वरुं बही नही जैसे "वि-
द्युविधी प्रथमम्"

अज्ञान, (पु०) अच्+अवि+अच्, न अक्षयमे यमात्
व० । अज्ञानमन्त्री अज्ञान (इगके म्निट करनेके मी
नही अक्षय) (अक्षयके विद्ये वद अक्षयि वच्
इसीका नाम "अज्ञान" मी विद्या है) ।

अज्ञानी, (श्री०) अजेन एतेन अज्ञो विद्येते वा विद्ये
मय म्निट वयः अक्ष+अच् वीनयभाव व० । जी
ममान म्निट म्निटवय

अज्ञानवृद्ध, (पु०) न अच् वृद्धो अक्षयुं वय, अक्ष
व० । विद्येप वृद्ध अक्षी म्निटमिती मी अक्षय मे
बोटी अक्षय, मी अक्षय वृद्ध (वय)

अज्ञानवृद्ध, (वि०) न अक्षय वय, अक्षय
वयि व० । विद्येप वृद्ध मी अक्षय वृद्ध अक्षय
(इय) विद्येप वृद्ध मी वृद्ध । विद्येप वृद्ध
अक्षय वय अक्षय मी अक्षय ।

अज्ञातव्यजन, (प्रि०) न जानं व्यजनं (पुरुषविधं) यम् ।
जितकी जाती नहीं।

अज्ञानशत्रु, (पु०) जातम्य जन्तुमाश्रय न शत्रुः, अगमयै-
समागः । राजा सुषिष्ठिर । जिनका कोई शत्रु उत्पन्न नहीं
हुना । जानिश्च्य । जन्मश्च्य (प्रि०) ।

अज्ञाति, (स्त्री०) जन-किन्, न० त० । उत्पन्न न होना
अज्ञादनी, (स्त्री०) अज्ञेयकापते, अज्ञ+कर्मणि ल्युट् । छद्मने-
हेमी दुःख देनेहास विचरीनामी वृषः ।

अज्ञानि, (पु०) नामि जाया यस्य व० । जायाया निशदेसः ।
हीरदितः ।

अज्ञानेय, (पु०) अज्ञेयि भिक्षेपेपि आनेयो यथास्थानं
प्रारणाय शारोशो देन, अज्ञ+अप्+आ+नी+कर्मणि यत् ।
ततः व० । बहुतसे शत्रोही चोटें रणकरमी जो न डरता
हुआ अपने शत्रुकी पहुंचनेयोग्य स्थानपर पहुंचावै
ऐसा घोडा । उत्तम घोडा ।

अज्ञापकम्, (न०) अज्ञादुग्धादिभ्यः जातम् । बकरीके
दूध आदिसे उत्पन्न । एक प्रकारका ची जो औषधिसे बना-
मा जाना और खांसी अथवा दमा आदिसे प्रयोग किया
जाता है ।

अज्ञापक, (प्रि०) अज्ञान् आपालयति । आपा विष्+
धुलु । (उप० त०) । बकरियोंको पालने वा उनपर
औषधि करनेहाल ।

अज्ञामि, (प्रि०) न० त० । Ved जो संकल्पी नहीं ।
जो टीक नहीं ।

अज्ञाविकम्, (न०) (अज्ञाय अवयव सेवां समाहारः
द्वन्द्वः) । बकरियों और भेड़ें ।

अज्ञाभ्यम्, (न०) अज्ञाय अवयव । छं. द्वंद्वः । बकरे
और भेड़े ।

अज्ञि, (पु०) अज्ञ+इत् । तेज चलनेहास (प्रि०) ।

अज्ञित, (प्रि०) न जितः (न० त०) । न जीता
गया शत्रु ।

अज्ञिन, (न०) अज्ञिनि क्षिपति राजभादि, अज्ञ+इत्नि ।
बमदा ।

अज्ञिनपत्रा-विष, (स्त्री०) अज्ञिनं घर्मैश्च सुक्षिप्तं
पत्रं पशो मत्स्याः व० । बमविष वा बमिषिद्धं नमने
प्रथिद्ध पक्षिभेदः ।

अज्ञिनफाला, (स्त्री०) अज्ञिनं (घर्मैश्चिह्नान् अज्ञं)
इव पत्रं मत्स्यः । देवनी नमने प्रथिद्ध वृक्षकीके
अकारका वृषः ।

अज्ञिनयोनि, (स्त्री०) अज्ञिनस्य बर्मैश्च । शोचि. बर्मैश्च
त० । हरिषन्त्र । हाएक विषमका शिष्यः ।

अजिर, (न०) अज्ञ+किरत् । उद्यान नमने प्रथिद्ध ।
चांतडा वेन ।

अजिरदोचिस, (प्रि०) अजिरं शोचि (तेजः) यम् ।
बमकदार तेज (रोशनी) बाळा ।

अजिराधिराज, (पु०) Ved वेगवान् राजा । बमराजः ।

अजिरीय, (प्रि०) (अजिरं छद्म्य) । शान्तके खापका ।
चांतडेके साथ मिला हुना ।

अजिद, (प्रि०) हा+मत् न० त० । एतल छीपा, जो
कुटिल न हो ।

अजिदग, (पु०) अजिदं एतलं गच्छति गम्+इ । बण ।
छीपा जानेवाला (प्रि०) ।

अजिद, (पु०) जि+मत्+इत् । जिद्धा एतलं एा नमि
यम् व० । भेदकः । जीमसे दिना (प्रि०) ।

अजीकयम्, (न०) अज्ञा पारक्षेण वं ब्रह्मणं बहि
प्रीणामि, वा-कः । हीर वेकपर मद्रको बपका है । धीर-
वरका धनुष ।

अजीगतं, (पु०) अज्ञेयं समनाय गर्तं अम् । जिउके
जानेके सिधे छिद्र (गुहाय) है । गर्तं (गार) । मृ-
वंशसे एक ब्राह्मणका नाम । जो छान-रोषका विना है ।

अजीतिः, (स्त्री०) न जीयते । न जीयतः । मन्दता ।
न शय होला ।

अजीर्ण, (न०) ज+अवे क, न० त० । देही कान्हे
धीमा होजानेसे खाये गये अन्न आदिका न पचना । एक
प्रकारका रोग । बर्मैश्च व० त० । जो पुराना न हो
(प्रि०) बरहजगी ।

अजीय, (प्रि०) जीय+भावे इत् व० । जीयन्ति ।
मरदुआ । मुरदा ।

अजीयन, (प्रि०) न० व० । न जीयत इत्य । अजिः
हरिद । शिगरी कोई शोरी नतो । म् (न०) । न
होना । शत्रु । मीनः ।

अजीयनि, (स्त्री०) न जीयन्, न+अवे आपते+अनि ।
शत्रु-मीन बट न जीए इस प्रकार कापकवट ।

अजुर्ध, (प्रि०) अज्ञ् इत् व Ved । अज्ञेयरी । नर न
होनेहास । बदा वेगवान् ।

अजेय, (प्रि०) न-वि+कर्मणि इत् । जिउके जीय न इत्
अजेकपाह-र, (पु०) अज्ञाय एतल एव वट इव
पत्तो म्य उतम व० व एतलका-बहालेव । एतलका ।
पुर्नकरदरनी एक मरत । (किण्ठ वेला ए-
सिन्धु है)

अजेयम्, (न०) (अज्ञाय एतल) । एतल० । बारी
और भेड़े ।

अजोय, (प्रि०) न० त० । न जोयः (प्रीतिः) । जो प्रथम वा संवृत नहीं हुआ।
 अज्युक्ता, (स्त्री०) अर्जयति या सा, अर्जि+अञ् रकारस्य जलं । वेद्या कंचनी (इसका नाटकहीमें प्रयोग होता है)।
 अज्ञ, (त्रि०) न जानाति, न+ज्ञा+क । ज्ञानशून्य-मूर्ख । मोटा जानेहार।
 अज्ञाका, (स्त्री०) अज्ञेयं क्व (स्त्री०) अज्ञ एव । भूयं स्त्री । वेवकूफ औरत।
 अज्ञात, (त्रि०) न० त० । न ज्ञातः । न जाना गया । न धागा किया गया।
 अज्ञातकुलदील, (त्रि०) न० ब० । न ज्ञातं कुलसोलं यस्य । जिसका कुल वा स्वभाव न जाना गया हो।
 अज्ञातचर्या-वाद्यः, (त्रि०) अज्ञानः वाद्यः यस्य । त्रियच्च निवास नहीं जाना गया । (जैसा की पाण्डवोंका ऐसा वाद्य हुआ था)।
 अज्ञाति, (स्त्री०) न ज्ञातिः न० त० । सम्बन्धी (रिश्तेदार) न होना।
 अज्ञान, (न०) ज्ञा+भावे ल्युट न० त० । ज्ञानका विरोधी ज्ञानसे नाश हो जानेहार अविद्या नामी वेदांतमें प्रसिद्ध जगत्का कारण ज्ञान विरोधी पदार्थ । ज्ञानशून्य (त्रि०)।
 अज्ञानिन्, (पु०) न ज्ञातं गिति । जो ज्ञानी (समझदार) न हो । अज्ञ।
 अज्मन्, (स्त्री०) अजति गच्छति दानेन अनया, अज् करणे मनिन् न वीभावः । जिसके दान करनेसे स्वर्गको जाता है । गौं । न० । मार्ग । युद्ध । घर।
 अज्येष्ठ, (त्रि०) न ज्येष्ठः । न० त० । जो बहुत बड़ा वा बहुत अच्छा न हो । बड़े भाइँके पिता।
 अज्येष्ठवृत्तिः, (पु०) नास्ति ज्येष्ठवत् वृत्तिः व्यवहारः यस्य । जिसका बनाव बड़े भाइँकी भाँति नहीं।
 अज्ज, (त्रि०) अज्ज जानार । Ved नुरंत जानेहार । -अः (पु०) क्षेत्र । मैदान।
 अज्ज, (पु०) भ्वा० उभ० । अज्जति-न्ते, जानय-न्ते, अधिदं, अप्यान् न अज्जात्, अज्ज अधित । छुटना । इच्छा करना । बरा करना । जाना।
 अज्जति, (पु०) अज्ज+अति । वायु-द्वय।
 अज्जल, (पु०) अजयति अन्नं अज्ज+अञ् । कोनका भाग । कपड़ेका कोना । पत्ता।
 अज्जित, (त्रि०) अज्ज+अत् । पूजा किया गया । धारद किया गया । सिद्धोत्त किया गया "अजितपत्थरादं" इति भट्टि ।
 अज्जितपत्र, (न०) अजितानि वकीभूतानि पत्राणि यस्य । (ब०) । डेटे पत्तोंका समूह।

अज्जितमू, (स्त्री०) अजितं मूत्रं कर्तुं कर्तुं मूत्रं स्त्री । बड़ स्त्री त्रियया भौ देवा विद्या करतं।
 अज्ज, (नृन्) मित्रान्-जन-प्रणामं करतु इति प्रकृतं गच्छेत् अज्जिन् । अज्जिन् । अज्जिन्-अज्जन् । "अज्जिन् कालप्रियेणैव योग्यताम्" इति भाष्यः..
 अज्जन, (न०) अज्जनेनेन कर्णे ल्युट । कर्तव्य । मुक्त । भावे ल्युट । मित्रान् । जना । मैत्राकरणा । प्रणयकम् । कर्तारि ल्युट । उभर त्रियया इति नी । नी । इत्युत्तरी ल्युट (स्त्री०) गिति युन् । अज्जिन् नीर लज्जाने निज्जन् लक्ष्मणे इतर अर्जो जानेहार शब्दकार, (स्त्री०) "अज्जोर्जोर्ज्जन्ना इति शब्देति" वाच्यप्रमाण।
 अज्जनेदी, (स्त्री०) अज्जने इव केना यन् । केनोत्त संस्कार करनेहार इति शब्दानी नाम गंधद्रव्य । जिसे लज्जानेके केन कच्चे हो जायं।
 अज्जनेदालाका, (स्त्री०) अज्जनेन शब्दका । ब० त० । कवलके जिये निकरै । मुरमय।
 अज्जना, (स्त्री०) अज्जने अनया । अज्जन्-ल्युट-का उत्तर दिशाई इति नीच नम । इत्युत्तरी मादक नम । मादकी माला।
 अज्जनादि-गिरि, (पु०) अज्जने इव कृष्ण गिरेः । इज्जने समान काला पर्वत । नीलगिरि।
 अज्जनाधिका, (स्त्री०) अज्जनाधिका कृष्णवत् । अनाई नामके प्रसिद्ध कीटनेर।
 अज्जनाम्मः, (न०) अज्जने अम्मः । प० त० । इज्ज पानी । नेत्रजल । आंसुका पानी।
 अज्जनायती, (स्त्री०) अज्जने विपतेऽम्नाः, अज्जिन् वगन्वात् । अज्जने+अज्जन् वत् वीपथ । ईशानकीकी इति अज्जनी, (स्त्री०) अज्जने चन्दनकुसुमादिभिरसौ, अज्ज कर्मणि ल्युट कीर् । केसर आदि सुगंध द्रव्योंसे डिपती स्त्री । करणे ल्युट । कट्वा वृक्ष । कालाज्जनेनां दारु ।
 अज्जलि, (पु०) अज्ज+अलि । हाथ जोड़ना । जुड़दुर देवं हाथ । बुक । पावभरका मार।
 अज्जलिकर्मन्, (न०) अज्जलेः कर्म । प० त० । देवं हाथ जोड़ना । छारद प्रणाम।
 अज्जलिका, (स्त्री०) अज्जलित्वे कायति प्रकाशते । अज्जिन्+कै+यात् । छोटी चूनी । धुन मूषिका । अज्जलेके वागका नाम।
 अज्जलिकारिका, (स्त्री०) अज्जलेः कारिका करणं, इत्युत्तरी निदेशे ल्युट । हाथोंका जोड़ना । इत्तं मुर ६ त० । लज्जाने वा लज्जानेती नामके प्रसिद्ध लवा इत्ये हाथ लता । इस लताका स्वभाव है कि छूनेवाले काले पत्तोंको सिधोइती जाती है मानों हाथ जोड़ रही है।

अञ्जलिपुट-स्य, (अस्त्री०) पोत्रे हाथोंका जोड़ना । हथेलीका पोहा रचना ।

अञ्जस्य, (न०) अञ्ज+अच् । वेग । शक्ति ; सरल । सीधा । अञ्जसा, (अम्प०) अञ्ज+भावे अच् । अञ्ज गति विजम्बे वा स्यति सो+किप् । सीमा । जमी । ठीकठीक ।

अञ्जसाहृत, (प्रि०) हृ० अञ्ज् । ठीक किया गया । व्यात्यर्थक मिया हुआ ।

अञ्जसीम, (प्रि०) अञ्ज् स । Ved सीधा आने पला जना ।

अञ्जिः, (प्रि०) अञ् इत् । Ved कमकदार । रोपन । -प्रि० पु० चन्दन आदिका चिह्न मिलक अष्टाञ्जिक ।

अञ्जिष्ठः-शु, (पु०) अन्कि स्वकिरणैः विभम् । अञ् इष्ट्-इष्ट् । अपनी किरणोंसे जगत्को प्रकाशित करना है । सूर्य । सूरज ।

अट्ट, जाना भ्वादि सक पर० सेट् । अट्टि । आटीर ।

अट्टनि-नी, (स्त्री०) अट्टि मौर्धा, अट्ट+अनि वा बीप् । धनुषके भागे चिन्ना चदानेका स्थान । बमानपर चिन्ना बांधनेकी जगह । धनुषकोटि ।

अट्टरूप, (पु०) अट्टि भ्रमति, अट्ट्+अच्, तं रोपति हिन-सि हृत्+क, अट्टिर्त्वा न ह्यन्ते न+हृत्+क । वासक्यास ।

अट्टल, (प्रि०) न० त० । स्थिर (पक्का) । निश्चल । न टलनेहारा । कठिन । सरल ।

अट्टयि-वी, (स्त्री०) अट्टनि चरमे वयसि यत्र, अट्ट्+अयि, वा वीपि वीपंता । पिछनी अवस्थामें जहां धूमते हैं । बम । बज्रल । थिकारके दिने जहां धुंसे ।

अट्टयिकाः, (प्रि०) अट्ट्यां चरति । अंगलमें फिरने (घूमने) वाला ।

अट्टा, (स्त्री०) अट्ट वा अट्ट् । इधर उधर फिरनेका स्वभाव (जैसा सन्यासी) । “अट्ट्या” “अट्टाट्ट्या” इसी अर्थमें होते हैं ।

अट्टाट्ट्या, (स्त्री०) अट्ट्+अट्ट्+भावे अ स्त्रीत्वात् टाप् । घूमना । घुषा गमन । (इसी अर्थमें अट्टा और अट्ट्या भी हैं)

अट्ट, छोपना मारना । भ्वादि आत्म. सक०सेट् । अट्टते । आशिश्र

अट्ट, अनादर करना मुगादि-उभ-सक०सेट् । अट्टयति-त्वे आ-ट्टि-त्-त्-त् ।

अट्ट, (पु०) अट्टयति अनाश्रियतेऽन्यद् वय । अट्ट+पन् । महलके ऊपरका पर (अट्टारी) हट (दुकान) सूबा अनाज अतिराव (ज्यादाती) दुष्ण्ड (नाचीज) मारना अनादर पसीलके ऊपर सेनाका पर (वहां स्थित होकर नर औरोंकी नीचे होनेसे कुछ पराह नहीं करते)

अट्टबन्धः, (पु०) ए० त० । राजनिरिके काममें सिद्धी मरुनकी नीह भरनेवाला ।

अट्टदाल, (पु०) आं आं दालं विनेयं यस्य । बहु० । अम पेचनेहारा ।

अट्टस्थली, (स्त्री०) अट्टप्रधाना स्थली । शाक० त० । बहुत प्रासाद (महल) वाला नगर-आड ।

अट्टहास, (पु०) अट्टेन अतिरावेण हासः । हृत्+पम् ३ त० । बरी हंसी । जोरसे हसना ।

अट्टहासक, (पु०) अट्टहास इव वायते, कै+क । जोरसे हसनेके समय हात बाहिर निकलनेसे बड़े सफेद (श्वेत) होते हैं । दालोंके सामान श्वेत कुंदहस ।

अट्टालक, (पु०) अट्ट इव प्रासादोपरि पृथग्विच अलति पर्याप्तो भरति अल्+ण्युच् । महलके ऊपर ईंटोंआदिने बना पर । बरसाती । मुयात ।

अट्टालिका, (स्त्री०) अट्टाल+कार्ये क । ईंट चूने आदिसे बना राजाका घर । महल । ऊंचा मंदिर । एक नगरका नाम ।

अट्टालिकाकार, (पु०) अट्टालिकं करोति । उप० त० । अट्टारी वा महल बनाता है । राज ईंटें रचता है ।

अट्ट, जाना । भ्वादि, पर० सक० सेट् । अट्टति । आटीर ।

अट्ट, जाना । आत्म० भ्वा० सक० सेट् । अट्टते ।

अट्ट्, उद्यम करना । भ्वा० पर० सक०सेट् । अट्टति । आशीर ।

अट्ट्, व्याप्ति फैलाना । स्वादि० पर० सक० सेट् (इच्छा प्रयोग वेदरीमें होता है) अट्ट्णोति । आशीर ।

अट्ट्, अभिवोग (हमला करना) समाधान (धावित करना) अनुमान करना । भ्वादि० पर० सक० सेट् । अट्ट्ति । आशीर ।

अट्ट्चलः, (पु०) हृत्० त० । हलवा एक भाग ।

अण्, दान्य करना । सासधेना । भ्वा० प० अ० सेट् । अण-ति । आणीत् ।

अण, जीना । दिवादि-आत्म० अक० सेट् । अण्यते । आणित् ।

अण, (न) क (प्रि०) अणति यदेच्छे नदति । अण्+अच्, ततः कुन्वायो क । नीच । निर्दिष्ट । बहुत छोटा (कः) पक्षिविशेष ।

अणव्य, (प्रि०) अण्, उन् । अणोः सूत्रमणस्य भवनं क्षेत्रं । छोटी खेतीका खेत (जिस खेतमें छोटा २ अनाज पैदा हो) । अणु+व्यत् । सर्वप (सरसों) आदिकी उपति-बाल खेत ।

अणि, (पु० स्त्री०) अणति घन्नायते । अण्+इत् । अण-सारी रखके बकमें आगे रहनेहारा कीटक (रखके पहिले-का कीट) । गृहकी नोक । शकम (हृदियारकी नोक) । सीना (हृत्)

अणिमन्, (पु०) अणोर्भाक् । अणु+इमनिच् । छोटापन । छोटापन । अट्ट हिन्दिसोंनेसे एक सिद्धि । जिसमें जीव छोटीकी मूर्ति बन सब स्थानमें जागके । “अणिना संपिना प्राप्तिः प्रकथयं महिमा तथा । ईदित्त्वं च बन्दित्रं च तथा कथमावगमिता” ।

अणीयस्, (त्रि०) अणु+ईयस् । बहुत छोटा । बहुत थोडा ।
“अणोरणीयान् महतो महीयान्” इति श्रुतिः.

अणु, (त्रि०) अण+उन् । छोटा । थोड़े मापवाला द्रव्य ।
(स्त्रियां) अण्वी । छोटे २ घान, चीना, कतनी, श्यामा
आदि.

अणुक, (त्रि०) (स्त्रियै कन्) बहुत छोटा । बहुत थोडा.

अणुभा, (स्त्री०) अण्वी सूक्ष्मा भा दीप्तिशय्याः व० ।
। विजली-विजुली.

अणुमात्रिक, (त्रि०) अणु परिमाणं यस्य ध० । अतिक्षुद्र ।
बहुत छोटा.

अणुरेणु, (पु०) धूलिकणा । प्रसरेणु । जर्ह.

अणुरेवती, (स्त्री०) अणुः सूक्ष्मा रेवती तारेव । रेवती
नक्षत्रकी मांति सूक्ष्म (महीन) । एक वृक्ष (दन्ती) का
भाग.

अणुवादः, (पु०) प० त० । परमाणुवादः । (संपूर्ण
दृश्य परमाणुओंसे बनता है और परमाणु नियत है).

अणुवीक्षणम्, (न०) प० त० । बहुत दूरतक देख-
ना या विचरना । अणुः सूक्ष्मः वीक्ष्यते अनेन करणे र्युद् ।
जिसे सूक्ष्म वस्तु देख पडती है । दूरवीन.

अण्ड, (न०) अणन्ति सम्प्रयोगं यान्ति अनेन । अम्+
ड । पताल (पेशी) । कस्तूरी । पक्षीका अण्डा । वीर्य.

अण्डकम्, (न०) अल्पार्थे कन् । छोटा अण्डा.

अण्डकटाहः-हम्, (अस्त्री०) अण्डं व्रद्धान्डं कटाह इव ।
व्रद्धान्ड (जगन्) मानो कटाह (कटाहे) की मांति.

अण्डकोटरपुष्पी, (स्त्री०) अण्डं इव कोटरे मध्ये पुष्पं
यस्याः । बहु० । जिसके कोटर (खोदल) में अण्डेके
समान फूल हो । एक प्रकारका वृक्ष । अजात्री.

अण्डकोदाय-यकः, (पु०) प० त० । अण्डस्य कोदाः ।
अण्डेका मय । कृष्णः । पनाब्.

अण्डज, (पु०) अण्डात् डिम्बान् जायते । जन्+ड ।
अण्डेसे निकला पक्षी, साँप । मच्छी । बांकलायाँ नामसे
प्रसिद्ध । कृच्छराण (दिरा) । जो कोई अण्डेसे निकला
हो (त्रि०) । कम्पू (स्त्री०).

अण्डयर्धनम्, (न०) प० त० । अण्डेका बडना । पना-
स्य वृद्धयना.

अण्डाकार अट्टि, (त्रि०) । अण्डस्य आकार इव ।
अण्डेकी अट्टि (धबल) वाला । बहु०.

अण्डायु, (पु०) अण्ड+आयु । मन्व्य-मच्छती.

अण्डार, (पु०) अण्डः पुनरवधेदः यस्य अरत्नीति ।
अण्ड+ईरन् । पुरव । समर्थ । शक्ति । लक्षण.

अण्डान्, (पु०) । अण्डानाम्
त्रिपे अण्डान्.

अत, बांधना । इदित् । भ्वादि० पर० सक० सेद । अन्ति ।
आन्तीत्.

अत, बांधना । भ्वादि० पर० सक० सेद । अन्ति । आन्ति,
अत, पहुंचाना, निरन्तर चलना । भ्वादि० पर० सक० सेद ।
अतति । आतीन् । कर्म अतितः.

अतपय, (अभ्य०) अतः कारणात् । इयत्त्रिये.

अतकाः, (पु०) अतति सततं गच्छति । अत् कन् । निर-
न्तर चलता है । निरन्तर (लगतार) फिरनेवाला पथिक ।
मुसाफिर.

अतज्ज्ञ, (त्रि०) न तत् जानाति । नहीं उस (प्रश्न)
को जानता है । परमाणुको न जाननेहारा.

अतट, (पु०) तत्राप्ये आह्वयतेऽम्भसा इति तटं जलवात-
स्थानं तत्रापि यस्य व० । जिसका किनारा न हो ।
आडरी नामसे प्रसिद्ध आश्रयस्थानसे शून्य । पर्वतआदि
ऊँचा स्थान । पृथिवीका नीचला भाग.

अतथा, (अभ्य०) वैसा नहीं.

अतथ्य, (त्रि०) न तथा भवति । मिथ्या । झूठ.

अतदर्ह, (अभ्य०) जो सधार्थ रीतिसे न हो । अन्यायसे ।
अव्याय रीतिसे.

अतद्गुण, (पु०) अन्तर्+गुण० न० त० । जो दूसरेसे
न उठया जाय । एक प्रकारका बचन जिसमें दूसरेका
गुणग्रहण न कियाजाय.

अतद्गुणसंविज्ञान, (पु०) जिसमें किसीका गुण न
समझा जाय । जैसे “दृष्टसमुद्रं आनय” “जिसने समुद्र
देला हो उसे ला” इस वाक्यमें गुणीभूत समुद्रका लानेमें
अन्वय नहीं (एक प्रकारका समास) । “लम्बे कानवालेको
ला” इस वाक्यमें गुणीभूत कानका लानेमें अन्वय है,
इस लिये इसे “तद्गुणसंविज्ञान” समास कहते हैं.

अतनम्, (न०) अत्-स्युद् । जाना फिरना ।-नः (पु०) ।
सदा फिरता रहता है.

अतन्त्र, (त्रि०) न० व० । वह बाजा की जिसकी तारें
न हों । जो आधीन न हो । जो नियमके आधीन न हो
“हस्तप्रहणमन्त्रम्”.

अतन्द्र, (त्रि०) न तन्द्रा यस्य । कामकरनेवाला चालाक.

अतन्द्रित, (त्रि०) न तन्द्रा जाता भस्य । निरलस ।
उत्थमी । दिम्पती.

अतप, (त्रि०) न तापयति । न० व० । जो तप हुआ
न हो । क्षीतत्र । छत्र । सारद ।-याः (बहुव०) ।
बीडमतके कई एक देवनाओंका नाम.

अतपरम्पट, (पु०) न० व० । धर्मगण्यप्री कल्पेन विम-
रण (भूल) करनेहारा । “इदंते नातरकाय” (म० गी०).

अतप्रतनु, (त्रि०) जिसके शरीरपर लाल मुद्राका चिह्न
न हो । तपसे रहित शरीरकला.

अतमस्, (त्रि०) न उमः यत्र य० । वीतिविष्टि ।
 चमकदार ।
 अतरुण, (त्रि०) न तरुण न० त० । पुरातन । पुराणा । बूढा ।
 अतर्क, (त्रि०) न० य० । नास्ति तर्कः यस्मिन् । तर्क-
 (दलील) के विना । जिसमें कोई युक्ति नहीं की
 जायगी १-कः (पु०) तर्कना न होना । घुरा न्याय ।
 अतर्कित, (त्रि०) न० त० । न सोचा गया । अस्मत्प्र-
 होमया । अचानक हुआ ।
 अतर्कितम्, कि० त्रि० । न विचारे गयेकी भाँति । जैसा कि
 न सोचा हो ।
 अतर्कौपगत-उपनन, (त्रि०) अचानक आपटान होगया ।
 तबैया अस्मत्प्र हुआ ।
 अतर्क्य, (त्रि०) न तर्कितुं योग्यः । न तर्कयन् । जो
 विचार (यथाल) दलीलमें नहीं आयाका ।
 अतल, (न०) अन्व भूखण्डस्य तलम् । छात पातालमें
 पहिला पाताल । तलदाल्य (त्रि०) ।
 अतलरूपर्ष, (त्रि०) न तलस्य अपोभागस्य एषोऽयं यत्र
 य० । जिसका नीचला भाग हुआ न जाय । अपाह ।
 गंभीर ।
 अतम्, (अन्व०) इषीन्द्रिये । इत्थे परे । यदांशे । इय
 कारणसे । अक्षय । जम्भ ।
 अतम्, (पु०) अन् गतो+अतच् । पवन । आत्मा । शत्रु ।
 अतमीश्वर । अलक्षीय बना कपडा (न०)
 अतमिः, (पु०) Ved (अन्-अभिच्) । धूमनेशाल
 धन्वायी ।
 अतमी-रि, (स्त्री०) इषमिषेय । उन ।
 अति, (अन्व०) बहुत प्रयोग । लोपना । ऊपर ।
 अतिवाय, (त्रि०) अतिक्रान्त कथाम् । न बढ़नेयोग्य ।
 न विभाव्य चरनेग्यक । मध्यमै ।
 अतिवाया, (स्त्री०) अतिक्रान्त कथाम् । बहुत बढ़ाकर
 बरी गई कथा (बढ़ाणी) । निप्रसोजन (वेमत्तलक) जय ।
 अतिवन्द्य, (पु०) अतिरिक्त बन्धः यस्य य० । इति-
 बन्धक इत् ।
 अतिवर्षण, (न०) त्रि० त० । अत्यं दत्र (बोधित)
 अतिवशा, (त्रि०) अतिक्रान्त कथाम् । बहुतबो डूठ
 माननेवाय (घोडा आदि) ।
 अतिवाय, (त्रि०) अतुच्छः कथं यस्य । बडेभी
 विज्ञेय वीरि (वर) जय ।
 अतिवृष्ट, (त्रि०) त्रि० य० । बहुत बरिष्ण । -यत्-यत्
 (अतिक्रान्त इत्यर्थे प्रत्ययस्य) । बहुत बरिष्ण (मन्त्र) ।
 बारद दिनेमें तमस होनेवायी बहुत बरिष्ण तपस्य ।
 अतिवृत्तम्, (अन्व०) इत्थे बरिष्ण किये गया ।
 अतिवृत्ता, (पु०) बहुत बमसोर । विवैत ।

अतिक्रान्त, (पु०) अतिरिक्तानि केवलान्य य० ।
 बुज्जकद्वार ।
 अतिक्रान्त, (पु०) अति+क्रम्+घञ् ह्रस्वः । लोपयना ।
 अतिक्रान्त-कर्म प्रादि स० । नियमको लोपयना । अपने
 कर्तव्यको भूलजाना (त्रि०) ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अति+क्रम्+क । लोपयना । अपने
 कामको भूल गया ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अति+क्रुप्+क । बडा बोधी । बडे
 क्रोधमें आगया । तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्रका नाम है ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) बहुत निर्दय (बेरहम) । -न (प्र०)
 एक (तन्त्रमें) मन्त्र जो तीय वा वेणीय अक्षरोंवा होनेके
 बहुत क्रूर है ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) परे पेचा गया ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अतिक्रान्त घटन् । घटके रिता ।
 जियकेपाय खाट नहीं ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अति+गम्+क । लोपयना । बरिष्णनेका
 (यह गमावमें प्रायः पीठे रहना है)
 अतिक्रान्त, अन्व० य० । स्थगित होना । गुज्जक ।
 अतिक्रान्त, (पु०) अति+गदि+अव । उधेविचरकमें एक
 योगका नाम । बरी गाढ । बरी बरी गयोकाका । कर्णोत्पन्न ।
 अतिक्रान्त, (पु०) अतिरिक्तानि गन्धो यस्य य० । बन्ध-
 वृक्ष । बरी गुणविशेषका (त्रि०)
 अतिक्रान्तानु, (पु०) पुष्यदानी नाम इत् ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अतिक्रान्त लोपयन् । बरिष्णने बरिष्ण
 होगया । बडा मूर्ख । पूरा बेरहम । अपोनीय । जो बर-
 जमें नहीं आगया ।
 अतिक्रान्त-गदर, (त्रि०) बडा गदर ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) उच्छ्र (उंता) पुष्पकाका । कर्णोत्पन्न ।
 निरुण । (पुष्प अतिरिक्त) प्र० स० । अतुष्णम्
 अतिक्रान्त, (त्रि०) बहुतभी १-र (पु०) अत्यन्त
 अदरणीय व्यक्ति, जैसा कि "रिक्त" "मन्त्र" "अक्षरं" ।
 अतिक्रान्त, (स्त्री०) प्रसन्ना है । अरुणी है ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) अतिक्रान्त प्राम् । जो घटन (मन्त्र)-
 में नहीं आगया । इतना बरिष्णनेका । -र-र-र ।
 इनके विषय वारी, एव आदि ।
 अतिक्रान्त, (त्रि०) बर (कर्ण) बरने योग्य इत्
 (पु०) उधेविचरके दाने विषे जने योग्य एक इच्छक
 उच्छ्रान्त (तर्पण) ।
 अतिव्य, (पु०) अतिक्रान्त इति, इत् । बहुत बडा है ।
 एक लक्ष वा अक्ष ।
 अतिव्य, (त्रि०) अतिक्रान्त इति-पुष्पं, इत् इव । त्रि-
 क्रान्त अत्यन्त-व्य ।
 अतिव्यम्, (त्रि०) अतिक्रान्त- । लोपको लोप इत् ।
 इत्-अक्षर निकर ।

अतिप्रभृति, (स्त्री०) अतिक्रान्ता प्रृति अथवादाधरपरिभ्रं
प्रृति प्रा० स० । उभयैश्च अशरौकेः प्रत्येकपादवाच्य एक
छन्दः । जिसका धर्म वा संतोष जाता रहा हो (प्रि०) ।

अतिनिद्रा, (स्त्री०) बहुत नींद ।-द्रः (पु०) बहुत
सोनेवाला । नींदरहित ।-द्रम् (अन्व०) । नींदका समय
भीत जाना ।

अतिमु-भा, (प्रि०) अतिक्रान्तो नावं प्रा० स० । प्रीवे
हृत्तः । बेसीसे उतरा हुआ । पुंनि रिखां च अनिनौः

अतिपञ्चा, (स्त्री०) पंचवर्ष अतिक्रान्ता । पांच वर्षको
सांप गई । पांच वर्षकी कन्या ।

अतिपद्, भ्वा० प० । सांपजाना । भूलजाना ।

अतिपतन, (न०) अति+पद+स्तुप् । अत्यन्त-जात-बरावारी ।

अतिपत्ति, (स्त्री०) अति+पद+क्तिन् । न सिद्ध होना ।
पौत्रमेंसे गुजरा हुआ ।

अतिपत्र, (प्रि०) अति+पद+प्र अत्वा० स० । अतिरिक्त
घृह पत्रं यन्म वा ब० । पत्तये लोपगया । षडे २ पत्तौंवाला
हानिकंद वृक्ष ।

अतिपयिन्, (पु०) अतिशयित्-सुन्दरः पन्थाः प्रा० स० ।
अते-पूजार्थंवात् न समाधानतः । अच्छा रास्ता । उत्तम

अतिपर, (प्रि०) अतिक्रान्तः परान् । शत्रुओंपर विजय
प्राप्त करनेहार ।-रः (पु०) । दाना दुस्मन ।

अतिपरिचय, (पु०) बहुत परिचय (वा कफरीयत) ।

अतिपरोक्ष, (प्रि०) अतिक्रान्तः परोक्षे (अन्व०) ।
नेत्रोंसे बहुत दूर । बहुत छिपा हुआ ।

अतिपातक, (न०) अतिक्रान्तोऽपत्यन्तदुष्कृत्येनात्यन्तपातकं
प्रा० स० । बडा पातक (बडा पाप) जैसे पुराणोंका आता-
नूं (बहु) और कन्याके साथ गमन करनेसे उपजा एवं
द्वियोंका पुत्र, पिता, और शत्रु (सीरा) के साथ संभो-
ग करनेसे उत्पन्न हुआ पातक विशेष बहुरूपता है । पाप-
को लांपनेहार पुण्यशील पुरपादि (प्रि०) ।

अतिपातिन्, (प्रि०) अति-पर-निच्-मिति । शीघ्र भागने-
हार । लांप जानेवाला ।

अतिप्रगे, (अन्व०) अति प्रणीयतेऽस्मिन् षाडे, गं के ।
बहुतही धरेरफ समय ।

अतिप्रबन्ध, (पु०) अतिशयित्-प्रबन्धः । लगातार ।

अतिप्रवृद्ध, (प्रि०) अतिशयेन प्रवृद्धः । प्रा० स० ।
जीता हुआ । बहुत बढ गया । बहुत बडा हुआ ।

अतिप्रश्न, (पु०) अति+प्रश्न+भ्र् । अतिक्रम्य मयांदां
प्रश्नं । इस प्रकारका प्रश्न विशेषज्ञता कि जिसका
उत्तर मिलसुका हो । दूसरेको जिज्ञाने (प्रिज्ञाने) के लिये
प्रश्न करना । जैसा वृहदारण्यकोषनिषधमें बालाकी ब्राह्मणने
योगिराज वासुदेवकीको किया है । उत्तर न होनेवाला प्रश्न ।

अतिप्रमत्ति, (स्त्री०) अति+प्र+मात्र+क्तिन् । अत्यन्त
आराफि । किसी काममें बहुत लगजाना । प्रसंगको
छोड़ निगमा सम्बन्ध दूसरेके साथ रहे । लक्ष्यमें जो
लक्षणा सम्बन्ध होताहै उसे प्रसंग कहतेहैं जो इसके
विपरीत हो वह अतिप्रसंग है । प्रसंगको छोड़
देनेहार (प्रि०)

अतिप्रोढा, (स्त्री०) विवाहके योग्य अवस्थावाली कन्या ।
उमरमें बडी हुई लक्ष्मी ।

अतियल, (प्रि०) अतिशयितं बलं यस्य य० । बड़े बल-
वाला । अतिशयितं बलं यस्याः ५ व० । बड़े बलको उत्पन्न
करनेहारी पीले रंगकी वेदियाला नामी बेल (लता) ।
वह अश्रयिया जो विश्वामित्रने कृशाभ मुनिसे सीसी
और रामचन्द्रजीको समर्पण की (स्त्री०) बडा बल । बडी
सेना । बडी शक्ति ।

अतियालक, (प्रि०) अतिशयित्-बालकः । प्रा० स० ।
बहुत बालक । बचवनवाला ।-क (पु०) बडा ।

अतियाला, (स्त्री०) अतिक्रान्ता मात्यावध्याम् । मात्या-
वध्याको साध गई । दोबपैकी गौ ।

अतिप्रह्वचर्यम्, (न०) अतिशयितं ब्रह्मचर्यम् । बहुत देर-
तक ब्रह्मचारी रहना ।-र्यः । (अतिक्रान्तः ब्रह्मचर्यम्) ।
जिसने लीसंग करके ब्रह्मचर्य तोड़ डाला हो ।

अतिभ(मा)रः, (पु०) अतिशयित्-भरः वा भारः ।
प्रा० स० । बडा भार (बडा बोझ) ।

अतिभवः, (पु०) अतिशयेन भवति प्रा० स० । लांप-
नेवाला । जीतनेहार ।

अतिभीः, (स्त्री०) अति श्रेष्ठेति अस्या दर्शनात् । मी शिष् ।
जिसके देरनेसे बहुत डरना है । बिजनी ।

अतिभूमि, (स्त्री०) अतिशयिता भूमिर्मयांदा प्रा० स० ।
बडी मयांदा अपिकाई । अतिशयेऽप्यसीमावः । मयां-
दाना तोड़ना । मयांदाको तोड़नेवाला । पृथिवीलांपनेहा-
र (प्रि०)

अतिमङ्गल्य, (पु०) अतिमङ्गल्य हितं, अतिमङ्गल+यत् ।
शिवारत । बहुत मंगलसे पूर्ण । बहुत शुभको उत्पन्न
करनेहार (प्रि०) ।

अतिमतिः, (स्त्री०) मान् अतिशयिता मतिः (मात्रम्) ।
बडा अहंकार । औदार्य ।

अतिमर्त्य-अनुप, (प्रि०) अतिक्रान्तो मर्त्यं मनुष्यं ।
मनुष्यको लांप गया । देवीशक्तिवाला ।

अतिमर्याद, (प्रि०) अतिक्रान्तो मर्यादां । अत्यन्त-य० ।
बहुत पोरोंको लांपनेहार (अतिक्रम करनेहार)

अनिमान, (प्रि०) मानं अतिक्रान्तः । परिकल्पने
होगया । जो मया नहीं जगया ।

अतिचर, भ्वा० प० । अतिक्रम करना । जुग करना ।
अपराध करना ।

अतिचरा, (स्त्री०) अतिक्रम्य चरति अति+चर्+अच् ।
पद्मचारी वृक्ष (यह उत्तरदेशमें होता है) । इसीका द्रुम
नाम पद्मभ भी है । यहाँयाने इसीको खलपद्मिनी,
पद्मिनी और पद्मचारिणीलता नामसे निर्दिष्ट किया है ।
बहुत बढ़नेवाली ।

अतिचार, (पु०) अतिशयेन चारः, अतिक्रम्य वा चारः ।
अति+चर्+पञ् । बहुत चलनेहारा । बहुत चलना ।
ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध मन्त्र आदि पाँच ब्रह्माँका मूर्त्यके
विशेष संवन्धने वैजयो न सहन करनेके कारण टेढ़ी
और झीम्र आदि गतिसे अपने भोगने योग्य गमयको
छापकर और और राशिओंमें जाना ।

अतिचारिन्, (पु०) अति+चर्+गिन् । अपने गमयको
भोगेयिन दूसरी राशीमें जानेहारे मंगलादि पाँच ब्रह्
छापकर जानेहारा । बहुत जानेहारा (त्रि०) ।

अतिचिरम्, (कि० वि०) बहुत देर (विलम्ब) ।

अतिच्छत्र, (पु०) अतिक्रान्तः छत्रं प्रादि स० । छानिया
नामसे प्रसिद्ध एक लृगविशेष (जो बलपर होता है) ।
तालमखाना नामसे प्रसिद्ध एक लृगभेद जो जलमें रहना
है । सुल्फा नामी एक प्रकारका शाक जिसके पत्र और
फूल छातेकी शकलके होते हैं । शीरम्बामीके मतमें "छत्रा"
इतनाही नाम है । छातेको छापनेहारा (त्रि०) ।

अतिच्छन्दः-दम्, (त्रि०) अतिक्रान्तं छन्दः छन्दं वा ।
सांगारिक इच्छाओंसे रहित । वैदिक आचारको तोड़नेहारा ।

अतिजगती-नि, (स्त्री०) अतिक्रान्ता जगती प्रबोधसा-
धरपादावृत्ति प्रा० स० । एक छन्द जिकके प्रत्येक पादमें
११ अक्षर होते हैं । जगतको छापनेहारा (त्रि०) ।

अतिजन, (त्रि०) अतिशान्तो जनम् । बड़ देश कि जहा
कोई मनुष्य नहीं । निर्जन ।

अतिजय, (त्रि०) अतिशयिनो जयो यस्य व० । बड़े वेग-
वाला । जल्टी चलनेहारा ।

अतिजागर, (पु०) अतिशयिनो जागरो निद्राराहित्यं यस्य
व० । नीलकण्ठशी । (यह सदा जागताही रहता है)
जिगको नींद नहीं (त्रि०) ।

अतिजान, (त्रि०) अतिक्रान्तो जानं जानि जनकं वा ।
जो अपनी जानि वा पिताय भी अरन्त धेठ हो ।

अतिहीन, (न०) अतिक्रान्त हीनं पक्षिगतिभेदं प्रा० स० ।
पक्षियोंका बहुत संभा जाना ।

अतिवपाम्, (अथ०) अति+वर्+ततः धामु । बहुतही
बहुत ।

अतितीक्ष्ण, (त्रि०) अतिशयेन तीक्ष्णः कट्टः रसो यस्य
व० । मरिच अदि । मिरवाँ । सत्रना नामसे प्रसिद्ध
लोमजन् (पु०) ।

अतितीक्ष्ण, (स्त्री०) अतिशयेन तीक्ष्णं वासुं दूरं गन्तुं
प्रा० स० । गाँडागी (गाँडगाँ) दूराँ (दुशा) को
वेजगुणवाला (त्रि०) ।

अतिवृ, भ्वा० प० लोपना । गुजरना । चरना ।

अतिवृष्णा, (स्त्री०) बहुत लृष्णा (सत्य) । अति
भ्वा० प० लोपना । गुजरना । चरना ।

अतिथि, (पु०) अतिशयि गच्छति न निवृत्ति, अर्+इथि
मागं कृत्वा २ परमें आगया मुगादि । "गच्छन्ते
निवृत्तप्रतिवृत्तान्द्रुमः सृष्टः । अतिथं हि स्थितो मन्त्र
सम्पादनियच्छव्यते" मनु । कुन और पुमुदनीके पुत्र
नाम । रामचन्द्रजीका पोता ।

अतिथिदेव, (त्रि०) अतिथि. देव इव पूज्यो यस्य । अति-
थिको ईश्वरवृद्धिसे पूजनेहारा 1-वः (पु०) गवसे बड़
देवता शिवजी ।

अतिथिसपर्या, (स्त्री०) अतिथीनां सपर्यां पूजन्
सपर्यातुः कण्ठादिः यद् ततो अर् । गृहस्थके प्रतिदिन
करनेयोग्य पाँच यज्ञोंमें मनुष्ययज्ञविषयक अतिथिपूजा
आदि । (इसी अर्थमें अतिथिपूजा भी) ।

अतिदग्ध, (त्रि०) बुरी तरहसे जल गया ।

अतिदानम्, (न०) बहुत देना । उदारता । किशोरी ।

अतिदिश, पु० प० । जलाना । बढ़लना ।

अतिदिष्ट, (त्रि०) अति+दिश्+क् । और घनंघ्र और्ध्व
आरोप करना । जैसे "प्रकृतिके सन्मान विवृति करनी
चाहिये" इस वाक्यसे प्रकृतिसम्बन्ध अभावस्थायिपदिके
अङ्कायें प्रज्ञा आदि विवृतिसम्बन्ध पश्चादियागमें अति-
दिष्ट (आरोपित) कियेगये हैं । "इतरधर्मस्य इतरम्बन्ध
प्रयोगाय आदेशः आदेशो नाम" इति मीमांसा । यह
अतिदेश ५ प्रकारका है, शास्त्र, कार्य, निमित्त, स्वार्थ, और
हय । करणव्युत्पत्त्या मीमांसाशास्त्रका उपदेशवाच्य ।
अतिदेश इव यद् आदिशब्दोंसे पहिचाना जाना है ।

अतिदीप्य, (पु०) अतिशयेन दीप्यते अति+दीप कर्त्ति
यत् । रफचिन्नक । अलक्षिता नामी वृक्ष ।

अतिदूर, (त्रि०) बहुत दूर 1-दे, -राट्, -रेण । (प्रायः
इसके पहिले "न" रहना है) । पृथीके साप । यहाँसे
दूर नहीं । "तपोवनस्य नातिदूरेण" ।

अतिदेश, (पु०) अति+दिश्+पञ् । व्याख्यानरूपार्थ ।
अन्यधर्मको दूसरेमें लगाकर दिनादेना ।

अतिद्वय, (त्रि०) द्वयं अतिक्रान्तः, नाति द्वयं यस्य वा ।
दोनोंको छाप गया अथवा जिसके पान दोनों नहीं । अ-
मारहित । अत्रयम् ।

अतिधन्य, (पु०) अतिशयं धन्यं यस्य व० । धन्योऽत्र ।
अच्छे धन्यवाला योधा । मरुभूमिको छापनेहारा (त्रि०) ।

अतिपृथि, (स्त्री०) अतिवन्ता वा अत्यन्तपारपरिका
वृत्ति प्रा० स० । उभय अक्षरोंके प्रत्येकपादवाला एक
छन्द । जिसका धर्म वा संगोप जाता रहा हो (प्रि०) ।

अतिनिद्रा, (स्त्री०) बहुत नींद ।-द्रः (पु०) बहुत
सोनेवाला । नींदरहित ।-द्रम् (अन्व०) । नींदका समय
हीत जाना ।

अतिनुर्भ, (प्रि०) अतिवन्तो नावं प्रा० स० । हीने
हवा । बेधीसे उतरा हुआ । पुंसि शिवो व अनिनी-

अतिपञ्चा, (स्त्री०) पञ्चवर्ष अतिवन्ता । पांच वर्षको
छाप गई । पांच बर्षकी बच्चा ।

अतिपत्, (स्त्री०) लंपटाना । भूलजाना ।

अतिपतन, (न०) अति+पत्+त्तुट् । अल्प-नाश-करवादी ।

अतिपत्ति, (स्त्री०) अति+पत्+क्तिन् । न सिद्ध होना ।
फौजमेंसे गुजर हुआ ।

अतिपत्र, (प्रि०) अति+पद्+प्र अत्सा० स० । अतिरिक्त
बहुत धर्म रस वा ब० । पसंसे लंपटगदा । बटे २ पसोंवाला
हानिकंद इश ।

अतिपथिन्, (पु०) अतिपथिनः सुन्दरः पन्थाः प्रा० स० ।
अतिः पूजार्थेनात् न समाधानतः । अथ्य राग्या । सारथ

अतिपर, (प्रि०) अतिवन्तः परन् । शत्रुओंपर विजय
प्राप्त करनेहार ।-रः (पु०) । दाना दुस्मन ।

अतिपरिचय, (पु०) बहुत परिचय (वा कश्चित्त) ।

अतिपरोक्ष, (प्रि०) अतिक्रान्तः परोक्षं (अन्व०) ।
नेत्रोंसे बहुत दूर । बहुत छिपा हुआ ।

अतिपातक, (न०) अतिक्रान्तोऽत्यन्तदुष्टत्वेनान्यत्पातकं
प्रा० स० । बडा पातक (बडा पाप) जैसे पुण्योंका माता-
रू (बहु) और कन्याके साथ गमन करनेमें उपजा एवं
द्विपोंका पुत्र, पिता, और शत्रु (सौर) के साथ सभो-
ग करनेसे उत्पन्न हुआ पातक विशेष कहलता है । पाप-
को लंपटनेहार पुण्यहीन पुण्यारि (प्रि०) ।

अतिपातिन्, (प्रि०) अति+पत्+त्तिन्-मिणि । क्षीम भागने-
हार । लप करनेवाला ।

अतिप्रगो, (अन्व०) अति प्रगीयतेऽस्मिन् काळे, गं के ।
बहुनही सबेरका समय

अतिप्रयत्न, (पु०) अतिशयितः प्रयत्नः । लगातार ।

अतिप्रयुक्त, (प्रि०) अतिशयेन प्रयुक्तः । प्रा० स० ।
जीता हुआ । बहुत बड गया । बहुत बडा हुआ ।

अतिप्रथ, (पु०) अति+प्रथ+प्रत् । अतिक्रम्य मयांशो
प्रथः । इस प्रकारका प्रथ शिवेजाना कि जिसका
उत्तर मिलसुका हो । धरारेको विधाने (गिराने) के लिये
प्रथ बनना । जैसा बृहदारण्यकोपनिषद्में बाल्यकी ब्रह्मपने
योगिराट् वा ब्रह्मचर्यमीको किया है । उत्तर न होनेवाला प्रथ ।

अतिप्रसक्ति, (स्त्री०) अति+प्र+सज्+क्तिन् । अत्यन्त
आगण्णि । किसी काममें बहुत लगजाना । प्रसंगको
छोड़ जिसका सम्बन्ध धरारेके साथ रहे । लक्ष्यमें जो
लक्षणका सम्बन्ध होताहै उसे प्रसंग कहतेहैं जो इसके
विपरीत हो वह अतिप्रसंग है । प्रसंगको छोड़
देनेहार (प्रि०)

अतिप्रोदा, (स्त्री०) विवाहके योग्य अवस्थावाली कन्या ।
जन्ममें बडी हुई लडकी ।

अतिपल, (प्रि०) अतिशयितं बलं यस्य य० । बडे बल-
वाला । अतिशयितं बलं यस्याः ५ य० । बडे बलकी उत्पन्न
करनेहारि पीठे रंगकी चेष्टिवाला नाभी बेल (लता) ।
वह अश्वविद्या जो विधामित्रने कृपाश मुनिसे सीखी
और रामचन्द्रजीको समर्पण की (स्त्री०) बडा बल । बडी
सेना । बडी शक्ति ।

अतिपालक, (प्रि०) अतिशयितः बालकः । प्रा० स० ।
बहुत बालक । बचवनवाला । -कः (पु०) बचा ।

अतियाला, (स्त्री०) अतिक्रान्ता बाल्यावस्थाम् । बाल्या-
वस्थाको लंप गई । दोषपूर्ण गौ ।

अतिब्रह्मचर्य, (न०) अतिशयितं ब्रह्मचर्यम् । बहुत देर-
तक ब्रह्मचारी रहना ।-र्यं । (अतिक्रान्तः ब्रह्मचर्यम्) ।
जिगमें स्त्रीसंग करके ब्रह्मचर्य तोड़ डाला हो ।

अतिभ(भा)रः, (पु०) अतिशयितः भरः वा भारः ।
प्रा० स० । बडा भार (बडा बोझ) ।

अतिभयः, (पु०) अतिशयेन भवति प्रा० स० । ल्यप-
नेवाला । जीतनेहार ।

अतिभीः, (स्त्री०) अति विभेति अन्ना दर्शनात् । भी भिष् ।
जितके देतनेसे बहुत डरता है । विजयी ।

अतिभूमि, (स्त्री०) अतिशयिना भूमिर्मयांदा प्रा० स० ।
बडी मयांदा अपिकाई । अतिक्रान्तोऽन्यथाभावः । मयां-
दाका तोड़ना । मयांदाको तोड़नेवाला । पृथिवीलापनेहा-
र (प्रि०) ।

अतिमङ्गल्य, (पु०) अतिमङ्गल्यं दितं, अतिमङ्गल्यं चत् ।
विषवाह । बहुत मंगलसे पूर्ण । बहुत दुभकी उत्पन्न
करनेहार (प्रि०) ।

अतिमतिः, (स्त्री०) मानः अतिशयिता मतिः (मानम्) ।
बडा अहंकार । औंइल ।

अतिमर्त्य-माशुप, (प्रि०) अतिक्रान्तो मर्त्यं माशुपं ।
मनुष्यको लंप गया । देवीराक्षिकवाला ।

अतिमयांदा, (प्रि०) अतिक्रान्तो मयांदात् । उचित निय-
मको लंपनेहार । रीति तोड़नेवाला ।

अतिमात्र, (प्रि०) अतिक्रान्तो मात्रो अल्पं । अला-स० ।
बहुन बोझको लंपनेहार (अतिक्रम करनेहार) ।

अतिमान, (प्रि०) मानं अतिक्रान्तं । परिमाणसे बाहिर
होगया । जो भाया नहीं जलसा ।

पमर्ण, (त्रि०) अक्षर्य देयं कर्णं तत् अयमं शीघ्रं यस्य
ब० । कर्णं लेनेहारा । कर्णो उटनेहारा । कर्जारे ।

पमर्ण, (न०) अपमं अर्णं कर्म० । बरण । पर्व । पाद ।

पमर, (पु०) न प्रियते, पूरु+अच् न० त० । ऊपर वा
नीचेका ओठ (होठ) । पृथिवीके साथ न मिला हुआ ।
नीचे । तल (त्रि०) ।

पमरात्, (अव्य०) अपमरु+प्रथमायाः पद्यभ्याः सप्तम्या
वा आति अन्वलोपः । नीचेका भाग । नीचेसे ।

पमरेण, (अव्य०) अपमरस्मिन् देसे, काले, दिशि वा
अपर+एण् नीचे । पश्चिम दिशा ।

पमरेणुस्, (अव्य०) अपमरस्मिन्प्रति, अपमर+एणुम् ।
परदिन । परसो जो आवेगा ।

पमरोत्तर, (दि०) अपमर+उत्तरत् । स० द्वं० । उत्कृष्ट
और निरुष्ट । नीचे और ऊपर । छोटा बड़ा । बुरा और
अच्छा । अधरे च तत् उत्तरम् । बर्न० । दुष्ट (बुरा)
उत्तर ।

पमरोष्ठ, (पु०) अपमर ओष्ठः । कर्म० । नीचेका होठ ।

पमर्मे, (पु०) प्रियतेऽनेन, धृ+मविन्, विरोधे न० न० ।
धर्मका विरोधी वेदद्वारा निषेध किये गये कर्मसे उत्पन्न
हुआ पाप । जीवोंको मारना । पुण्यरूप धर्मसे शत्रुत्व
(त्रि०) गुण किंवा धर्मसे रहित परमज्ञ (न०)

पमःशय्या, (स्त्री०) शीरु+शय्यप् शय्या ७ त० । पृथि-
वीपर होटना, भूमिस्थान ।

पमशरः, (पु०) अप कर्मणि लोकादीं चरतीति चर्+ट ।
चोर । नीचस्थानमें जानेहारा (त्रि०) श्रिवां शीघ्र ।

पमसु, (अव्य०) अपमर+अलि, अपमरस्यभ्यान् अपा-
देशात् । पाताल । बोरें स्थान जो नीचे हो । अर्धवरासे
प्रथमा पद्यमी और सप्तमी विभक्तिके अर्धमी अनुमान
किये जाते हैं ।

पमस्तात्, (अव्य०) अपमर+अस्ताति । अप सत्यकी भांति
नीचेका अर्थ ।

पमि, (अव्य०) न+धा+पि । अधिकार । ऐश्वर्यं । दृक् ।
ज्यादही । आधीयते दु समनेनेति आ+धा+किवा हल ।
मनकी पीडा (पु०) ।

पमिक, (त्रि०) अधि+क । ज्यादा । अनेक । अर्थात्-
कारमेद ।

पमिकरण, (न०) अधि+क+रन्पुट् । आश्रय (जैसे
न्यायपिकरण) व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्धकर्ता और कर्म-
द्वारा क्रियाका आश्रय अधिकरण नाम कारक (अर्थात्
सप्तमी विभक्ति) जैसे "मेहे स्थल्यममं पचति" इत्यदि
उदाहरणमें धर कर्ताद्वारा, और कडी कर्मद्वारा, पर-
मरससे पचनारूप क्रियाका आश्रय है । "अधिकरयते
निर्णयार्थं विचारोऽस्मिन्" । पूर्वोत्तरमीमांसाशास्त्रमें प्रसिद्ध

एक अर्थको । प्रतिपादन करनेहारा न्यायसमूह विप-
य, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धांत, निर्णयस्वरूप पांच अंगोंको
बोधन करनेहारा वाक्यसमुदाय । तत्र विचारनेके योग्य
वाक्यको विषय, क्या यह है वा नहीं इस प्रकार
विषयीभूत वाक्यार्थमें संशय करना विकल्प, संशयासद्
दोनों पक्षोंके बीच अतत् (झूठे) पक्षमें युक्ति-
दान वाक्य पूर्वपक्ष, पूर्वपक्षको युक्तिको खण्डन कर
एत् (सच्चे) पक्षमें युक्तिको दिखानेहारा वाक्य सि-
द्धान्त, अनन्तर सिद्धान्तमें सिद्ध हुए अर्थका उपसंहार
(समाप्त) करनेहारा वाक्य निर्णायकवाक्य कहाजाता
है । (इसका विस्तार वाचसल्यविभाषामें बहुत पाया
जाता है) ।

अधिकरणविचार, (पु०) अधिकरणस्य विचार । अ-
न्यथाकरणं, वि+वल्+पन् १ त० । इच्छाकी दशाके भेदसे
संख्याका भेद करना । एकको अनेक बनाना वा अने-
कको एक करना इति भाष्यम् । एक राशिके पांच भाग
करने किंवा पचसस्वरूपको इष्टम् करनेला (पांचोंका एक
करना) । यह अधिकरणकी संख्याका विचार समझना ।

अधिकरणिकाः, (पु०) (अधिकरणं आश्रयतया अस्ति
शस्य टन्) विषया आश्रय अधिकरण (कचद्वीका
स्थान) है । न्याय करनेहारा । मजिस्ट्रेट । राजपुरव ।

अधिकर्दि, (त्रि०) अधिका ऋदिः यस्य । जितकी बहुत
सम्पदा हो ।

अधिकर्मन्, (न०) (अधिकं कर्म) उत्कृष्ट वा मुख्य
काम । तारचही । तिरपर निरीक्षण ।

अधिकर्मिक, (पु०) (न०) अधिकृत्य दृष्टं कर्मणोऽन्ते
अधि+कर्मण्+ट । दुश्चानना मांडिक । दृक् स्वामी ।
दुश्चनदारोंसे निरुध्या लेनेहारा ।

अधिकयाश्रयोक्ति, (स्त्री०) अधिकवाक्यस्य उक्तिः । बहुत
वाक्यका बटना । किसी बातको बहुत बड़ाकर बटना ।

अधिकपाटिक-सातुडिक, (त्रि०) सातु वा सातरसे
अधिक मोलवाला ।

अधिकाज्ञ, (पु०) अधिकोऽज्ञात् । कचबको पारण करने-
हारे बोधाभेदे कचबकी दृढताकेरिये बांधीयद् परिष्ठा
आदि ब० । जितका अज्ञ अधिक हो । बटे हुए वा
जियादा अज्ञवाला (त्रि०) ।

अधिकाधिक, (त्रि०) अधिकात् अधिकः । अधिक
(बहुत) से अधिक ।

अधिकाम, (त्रि०) अधिकः कामः यस्य । बहुत इच्छा-
बला । बड़ा स्वामी ।

अधिकाद, (पु०) अधि+ह+पच् । अरम्भ । लम्बित
(इच्छापूर्वक कर्मिकपद्यो सम्पन्न करनेहारा) पैदुका-
पिघार । सत (दृक्) । विनिवेत्तपुरवचा सम्पन्नी

जैसे विहित कर्ममें ब्राह्मणादिका अधिकार है । राजाओंका राजविहादिधारणमें अधिकार है । जैसे इन व्यक्तिको छाता पकड़नेका अधिकार है । प्रकरण । व्याकरणशास्त्रमें प्रथम-सूत्रमें ग्रहण क्रियेगये पदादिही उत्तरसूत्रमें अनुरक्ति करनी (अधिकारसूत्र) .

अधिकारविधि, (पु०) अधिकारे फलस्त्राम्ये विधिर्विधानं, वि+धा+क्वि ७ त० कर्मसे राजा फल भोगनेवालेको जतनेहारी विधि (नियम) जैसे "मजेत" इस्से यहसे राजे फलको भोगनेवाला स्वाम्य अधिन्यायी बोधन किया है.

अधिकारित्त्व, अधिकारत्व (त्रि०) (अस्तुर्धे-इति-मनुष्य वा) अधिकारवाला । प्रामाणिक । उचितवाला । हृद्धार.

अधिकार्यवचन, (न०) अधिकार्यस्य स्तुतिनिन्दाम्यां धारोपितस्य वस्तुपमांश्च अतिरिक्तस्य वचनम्, वच्+लुट् ६ त० स्तुति वा निन्दाये धारोप क्रियेगये वस्तुके धर्मसे भिन्नका कथन करण । सुल्यवाद । निन्दार्यवाद.

अधिष्ठ, (दना० उभ०) किसी काम करनेमें व्यक्त होना । अधिकार होना । किसी कामके लिये मुखिया नियत करना.

अधिष्ठन, (पु०) अधि+ष्ठ+ण् । आमदनी औ खर्चको देनेहार । माण्डिक । कर्मजन्य फलका सम्बन्धी । जिसको किसी कामका अधिकार दिया गया हो (त्रि०).

अधिष्ठत्य, (ध्वज०) उभरी वचन । विषय.

अधिष्ठित्, पु० प० गाड़ी देना । निन्दा करना.

अधिष्ठित, (त्रि०) अधि+धिष्ठ+ण् । रक्षायग्या । निन्दा-दिया गया । तिरस्कार कियागया.

अधिशेष, (पु०) अधि+धिष्ठ+ण् । तिरस्कार.

अधिगत, (पु०) अधि+गम्+ण् । ज्ञानगया । पादागया । हकीकर कियागया.

अधिगन्तु, (त्रि०) गम्-वृच् । काम करनेवाला । पानेवाला.

अधिगम, (पु०) अधि+गम्+ण् । ज्ञाना । पना । मात्रा.

अधीनः, (त्रि०) अधिगतः इत् । स्वामीके बच (कर्त्तृ) में शय्य हुआ.

अधिगय, (त्रि०) न हि० वि० गति इति अधिगयम् (ध्वज० घ०) । गीमें पदा वा दिया गया । माँका.

अधिगुण, (त्रि०) अधिधा गुण दय्य । अचछे वा अधि-ध सुन्दर । देण्ड । ध्यद्व.

अधिग्रहः, (पु०) अधि+ग्रह विद्वा दय्य । अधिध वा विधि इति अधिग्रह इति (ल्य) .

अधिप, (त्रि०) अधि+पि क्त क्त, अधिपत्तं ज्ञां वा । त्रिपत्तं विद्वा क्त क्त । विद्वा क्तये क्त.

अधिपन्था, (छ०) अधि+पन्थ । पर्वतके ऊपरकी भूमि.

अधिदन्तः, (पु०) अध्यादन्तः (दन्तस्य उपरिगतः दन्तः) दांतके ऊपर बजा हुआ दांत.

अधिदेवता, (छ०) देव एव देवता, अधिधा देवता देवताया अपि ईश्वरत्वात् । मूर्त्त आदि प्रथमस्य देवो ईश्वर इव आदि (त्रिसुधा आश्रय ले मूर्त्त आदि बनाय काम कर रहेहैं).

अधिदेवनं, (न०) अधि-उपरि दीज्यते यत्र । त्रिसुधा ऊपर घृत (ज्ञा) खेला जाता है । ज्ञा खेलेनकं मेज वा पटल.

अधिद्वयत, (न०) देवतैव स्वार्थे षण् । हिरण्यमनं अन्तर्धाम्नी पुरय (पु०) बह चतुष्टयि इन्द्रिवोके अग्नि-शाना (आश्रय) । सूर्यादि देवताओंको अपने २ कर्म-व्यगकर चतुष्टयि इन्द्रियोंपर अनुग्रह कर्ता है इन्हीं के समूहमें देवताओंका ईश्वर कहते हैं.

अधिनाथ, (पु०) (अधिष्ठः नाथः) परमेश्वर.

अधिनाय, (पु०) (ना-पन् अधि नीपते कतुना वयुसे ऊपर खया जाता है । मुग्गय.

अधिप, (त्रि०) अधि+धा+ण् । राजा । प्रभु । स्वामी.

अधिपति, (पु०) अधि+धा+ण् । प्रभु । स्वामी.

अधिपाः, (पु०) अधिकाति-वा-किन् । Ved बहुत रक्ष करता है । राजा । ईश्वर । स्वामी.

अधिपु(पू)यः, (पु०) अधिष्ठः पु (पू)यः । क पुरय । परमेश्वर.

अधिप्रज, (त्रि०) अधिका प्रजा दय्य । बरी प्रजवाला बहुत सन्तानवाला (पुरय).

अधिभू, (पु०) अधिमवति स्वामीवति । स्वाम्यर्थे अग्नि, मू+किन् । प्रभु । नायक । माण्डिक.

अधिभूत, (न०) भूतं प्राग्निनाथं अधिभूतवर्तमानम् । क प्राग्निओंमें रहनेवाला । परमन्मा परब्रह्म । सर्वज्यामी पुरय

अधिभोजनम्, (न०) अधिर्धे भोजनम् । अधिष्ठ (त्रिसुधा) भोजन (खाना) अधिष्ठे भोजने (मूर्त्त वा) दय्य (त्रि०) । बहुत मोलवाला (कीमती).

अधिभग्यने, (न०) भग्य भावे करणे वा लुट् । अधि-निष्कारनेके लिये बहुत रगटना.

अधिमात्र, (त्रि०) अधिका मात्रा दय्य । बहुत मात्रावाला । अधीम । बेहद.

अधिमाण, (पु०) अधिधो रथिमाणम् अतिरिक्तः इत्-प्रथितरिदरिदरान्तवन्तो मयः प्रा० घ० । मन्मथः अधिमयः । मूर्त्तकी मन्मथलिये मित्र मयः । त्रियमहीनेको अधिमय हो । सोँदका महीना.

अधिमांसक, (पु०) अधिधो मांसो यत्र व० क्त । एष प्रथमका मांसका रोग । "हृदये पथिने दन्ते महतोयो-दरः" । कर्त्तृकी कर्त्तृको विद्वायः सोधिमांसकः" वैदक.

अधियस, (पु०) अधिहृतः स्नामितया यज्ञो यस्य ष० ।
विष्णुः ।
अधियोग, (पु०) अधि+युञ्+धम् । अधिको योगः प्रा०
स० । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध यात्राके लिये शुभ योग ।
यह यह है कि गमनसमयके लग्नमें, किंवा लग्ने शौचे,
पांचवें, सातवें, नववें वा द्वादशवें स्थानमें बुध बृहस्पति
गुरुके मध्यमें दोनोका एकस्थानपर होना । ऐसे योगमें
यात्रा करनेवालेका बलवान् और सज्जमानि यह फल है ।
अधियोध, (पु०) अधिक्त्वेन युष्यते, युष्+अच् । युद्धमें
लक्ष्मे बडा योद्धा (बहादुर) ।
अधिरथ, (त्रि०) (अध्याह्नो रथं रथिनं वा) रथपर
बडा हुआ ।-यः (पु०) रथवाही । गाड़ी चलानेवाला ।
अग्नेदेवाका राजा ।
अधिराज्-जः, (पु०) अधिराजते राज+ङिप् । राजन्
टच् वा । महाराजा चक्रवर्ती ।
अधिराज, (पु०) अधिको राजा प्र० स० टच् । सर्वभौम
चक्रवर्ती । राजाओंका राजा । बारह मण्डलका राजा ।
अधिराज्यं-द्रं, (न०) (अधिहृतं राज्यं वा राष्ट्रं अत्र) ।
पूरा राज्य । पूरी पातिशाहत ।
अधिरथम, (त्रि०) अधिगतं रथमं आभरणं येन । भूयुषं
(सोनेके) गहने वा जेवर वाला ।
अधिरद्, (न०) ऊपर उठना । चटना ।
अधिरुट, (त्रि०) अधिरट्-फ । परगया । बढगया ।
अधिरौहणी, (न०) (अधि+रह्+अन-चडना ।-श्री
(श्री०) अधिरौहः साधनत्वेन अग्नि अस्याः । पौरी ।
विदी । षोड । तांग ।
अधिरौहिणी, (श्री०) अधिरघ्नतेऽनया । अधि+ रह्+
करणे ल्युट् "हीही" इत्य नामने प्रसिद्ध लक्ष्मी आरिते
बना ऊंचे स्थानपर बढनेका साधन । पौडिआ ।
अधियच्यनं, (न०) (अधिहं बचनं पधरातेन कथनं बचनं)
किसी बातपर अनीमति बातचीत करना । किसीके पक्षमें
बोलना ।
अधियस्, स्मा० ष० । निवास करना । अपना स्थान बना-
ना । रहना ।
अधियस, (त्रि०) अध्याहृतं वर्षं देन । जिसने बपडे
पहिन लिये हों । पटना किये ।
अधियास, (पु०) अधि+अप्+पम् । निवास । चढन
माला आरिते संस्कार । अधि+अप्+अप्ति देवता अनेन ।
अधि+अप्+अप्+अप्+अप्+अप् । यहके कारण होनेसे
प्रथम रिशव जिसमें देवतास्थापन आदि कर्म किया
जाना है ।
अधियास, पुण० ष० । गुणनिधन (सज्जमान) करना ।

अधियासन, (न०) अधि+अप्+अप्+अप् अधिकरणे ल्युट् ।
यहकारण होनेसे पहिला दिन, जिसमें देवताका स्थानारि
कर्म किया जाता है । भावे ल्युट् । गन्धमात्यारिते पूजा-
रिवा संस्कार करना ।
अधिविद, तुदा० उभ० । पहिली स्त्रीके जीवित रहनेपरगी
विशेष आरतिमें दूसरा विवाह करना ।
अधिविधा, (श्री०) विद्+भावे क । अधि उपरि विद्
विवाहोऽन्याः । प्रथम विवाहिता स्त्री । जिसपर सौति न
आई हो । "आधिविप्रश्रिये देवम्" इति स्पृष्टिः ।
अधिवेष्टु, (पु०) (विद्+अन्तरी टच्) दूसरा विवाह करने-
वाला पति (पहिलीके जीनेपर भी) ।
अधिद्री, अदा० आत्म० । डटना । गोजाना । विध्राम
करना । गिबि । सुखाना ।
अधिधयः, (पु०) धि भावे-अच् । आशय । आधार ।
(धी+अच्) । उचालना । गरम करना ।
अधिधयण, (न०) अधि उपरि धयणं पात्रार्थं स्थापनं,
धीम् भावे+ल्युट् । बुझाके ऊपर टिकाना । बुझाके ऊपर
रखकर पकाना । अधिकरणे ल्युट् । पाक करनेका स्थान ।
करणे ल्युट् टित्वाट् षीप् । बुझो बूझ (प्रविद्ध) ।
अधिधि, स्मा० उभ० । गोजाना । चटना । आशयलेना ।
("अधिधी" भी होना है) अभिर चडाना । गरम करना ।
अधिधी, (त्रि०) अधिका धीर्धंस । बडे पर (दरजे-
वाला । बडी सोमावाला) बडा धनी । चक्रवर्ती राजा ।
अधिधयण, (न०) (अधि+अच्+अन-अप् अधि मु
आधारे ल्युट्) सोमरस निकालनेका पात्र (पात्र) ।
(भावे ल्युट्) सोमरस निकालना ।
अधिघ्रा, स्मा० पर० । किसीके ऊपर डटना । अधिघार
(कबजा) करना । आशय लेना ।
अधिघ्रात्, (त्रि०) अधि+स्था+अच् चन् । अशय ।
मांसिक । जो हरएक कामके लिये न होनेको देवना है ।
प्रबंध करनेवाला । मुन्तजिन ।
अधिघ्नान, (न०) अधि+स्था+ल्युट् । वेदमन्त्रात्रमें
प्रसिद्ध आरौहका अधिकरण "अधिघ्नानवसो हि म-
याः इतिनवस्तुन" अधिकरणे ल्युटि । नगर । बरने
पटना (न०) ल्युटि । पहिया । प्रभाव ।
अधिरि, (त्रि० अधिहृत् कर्त्ते) । श्री वा हिही
आंतली कापत्र (बरने) । (श्री) अधिका श्री ।
विशेष श्री ।
अधिरान्, (अन्व०) अधि+अन्वो वेगो ददा स्नातवः ।
अतिशीघ्र । बहुत जल्दीसे ।
अधिरि, (अन्व०) इति इति (अभि+अन्वो) इति ।
अधी, अधि-इ । अद्-वाच्य० । आशयन करना । पटना ।
कौटना । कट्ट करना ।

अधीत, (त्रि०) अधि+इत्+क् । पढाहुवा । मावे क । पटना (न०)

अधीतविद्य, (पु०) अधीना विद्या येन । बहुव्री० । जिसने विद्या समाप्त करली हो । वेदोंको पढ़ बुझा ।

अधीति, (स्त्री०) अधि+इत्+क्त्वि । पढना ।

अधीतिन्, (त्रि०) अधीन् अनेक । अधी+इति । जो पढ़बुझा हो ।

अधीन, (त्रि०) अधिगतं इत् प्रभुं, गति० स० । आय- (त्) अर्धेन आगया । अधि+ख ।

अधीर, (त्रि०) धीरः धैर्यान्वितः न० त० । चञ्चल । जो अपनेको कायूने नहि रत सञ्चल ।

अधीरा, (त्रि०) अधिरु ईशः प्रा० स० । अधिकप्रभु । सर्वभूमि । चक्रवर्ती । शाहानसाह ।

अधीर्यर, (त्रि०) अधिरु ईश्वरः प्रा० स० । चक्रवर्ती । त्रियां वीर् । अधीर्यरी ।

अधीर्य, (न०) अधि+इत्+भावे क् । आदरके साथ किसी बानके विवे शान देना । कर्मणि क् । आदरसे नियोग किया गया ।

अधुना, (शब्द०) अधिनन् काले । इदंशब्दस्य नि० । इस समय । अब ।

अधुनातन, (त्रि०) भाषे अधुना+टयल् । अब होने- बाल । अद्यत् ।

अधृष्ट, (त्रि०) धृ निरुत्साहे+ष्ट न० त० । लज्जाशील ।

अधृष्ट्य, (त्रि०) धृ-शर्षेण+भृत् न० त० । जिसे नि- गदर बरना वा दबना उचित नहीं ।

अधोराज, (पु०) अधर इन्द्रियात् जयते अक्षरं प्र- स्तरात्, जन्+ट ५ त० । अधरे अग्रहृत्कार् हीने त- दस्य व० । जिसका लक्षण इन्द्रियोंके प्रसङ्ग नहीं होता । जिन्नु । “अधो न शीघ्रते वस्यटीरगन्धार्धोऽधुरा” इति ।

अधोत्रिद्विधा, (स्त्री०) अध्या त्रिधा त्रिद्विधा अर्थात् त्रि । अधोऽपरा त्रिद्विधा कर्म० । आलत्रिम इस नामसे इन्द्रिय तन्त्रोंके रावेद्वि जीम । तटुष्यत्रिद्विधा ।

अधोमुख, (न०) अधोऽपरं मुखं लोकः कर्म० । मू- लोर्ध नीचेका स्थान । एतच्छब्दः ।

अधोमुख, (त्रि०) अधो मुखं सम्यक् व० । जिसका मुख नीचेकी ओर हो । अधोविद्यार्थके प्रतिष्ठे तदुत्तर (कर्त्त- व्य ही) । इस “मूलोर्धेन इन्द्रियात् विचारया अधो- र्धत् । अत्र पूर्ववत् वैद अधोऽधोमुखः । इत्यतः” । मीमा- ण्यनेन ३३ (अ०) टप् ।

अधोऽधो, (पु०) अधोऽपरी लोहः कर्म० । मूलोर्धे- र्धत् । एतच्छब्दः ।

अधोऽधो, (न०) अधोऽधोर्धे अधिः अधोऽधो अधो- र्धत् । कर्मणोः कर्मणः । नीचेका कर्म ।

अध्यक्ष, (त्रि०) अधिगतोऽर्थं व्यवहारं यत्ना० स० । राजाके छाते पकड़ने आदिका काम जिसे दिय गया हो । आमदनी और खर्चका हिसाब रखनेहारा । अध- क्षणेति व्याप्तेति अधि+अक्ष+अन् । व्यापक । चारोंओर फैलाहुआ । अधिगतं मूल्यया अर्थं इन्द्रियं गति० स० । प्रत्यक्षज्ञान । अर्थआदिभाव अधि । प्रत्यक्षज्ञानका विवर । जो सामने दीखसके ।

अध्यग्नि, (अव्य०) अग्नी अग्निसर्मापे वा । विभक्त्यर्थे लानी- प्येर्धे वा अध्ययी० । आगमं वा आगके पाव । अग्नि- साक्षीमें विवाहके समय त्रियोंके तई दियगया पत् आदि (न०) । धर्मशास्त्रमें इसी अर्थका नियम दियग- या है । यथा-“विवाहकाले यन् स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्नि- त्रिषी । तदध्यग्निसृष्टं सद्भिः स्त्रीयन् परिकीर्तनम्” इति ।

अध्यधीन, (त्रि०) अधिकोऽधीनः प्रा० स० । जो बहुत अधीन हो । दास ।

अध्ययन, (न०) अधि+इत्+ल्युट् । पटना । शुद्धे उ- रासे बोलनेके अनुसार बोलना । केवल अक्षरोंका पढ़ करना “अध्ययन” है, यह वैदिकमत है । धर्मशास्त्र अक्षरोंका प्रहण करना “अध्ययन” है यह मीमांसकोंके मत समझना चाहिये ।

अध्यर्थ, (त्रि०) अधिकं अर्थं यस्य व० । कोई चीज जो अपने आधिके माय हो ।

अध्ययसाय, (पु०) अधि+अव+सो+पन् । “यद् दे- वेहीदे” इस प्रकार किसी विषयके विचारमें विचन कर्- ना । “आगमका यह धर्म है” यह नैययिक कहते हैं । “बुद्धिका धर्म है” यह साह्यादिका मत समझना । सी- स्यनत्त्वकौमुदीमें इसका लक्षण यं उिगाई कि जिस स- मय इन्द्रिये विषयोंको प्रहण कर्ता है तो प्रत्येक विषय- की भिन्न वृत्तिये उत्पत्तीहै ऐसे समयमें रत्नमोगुणको विस्मय कर बुद्धिचित्तका जो सत्वगुणको प्रहण करती उसीका नाम अध्ययसाय किंवा अत्रा काम करनेकी इच्छा कहतेहैं । अधया चित् गात्रियगे प्राप्तचित्तव्या बुद्धि- कर्त्तव्य “करना चाहिये” यह नियमके परिणाम अध्ययसाय है । उगाद् । दिष्टेरी । शीक ।

अध्यात्म, (अव्य०) आत्मनि देहे मननि वा । विचारार्थे अध्ययी० । आत्म, देह, किंवा चित्तका अधिधार (अधव) । यह विद्या त्रिमें आत्मत्वका विचार ही । “स्वमकोऽध्यात्ममुच्यते” इति मीमांसकान् । एतन्न । अन्वयः स्वयम् । आत्मत्वेनैव परब्रह्म । इषी अध्या- म् विद्या अपि प्रादोहा वेदशास्त्रिमें यही अर्थ प्रहण है ।

अध्यायक, (त्रि०) अधि+इत्+क्त्वि+भ्युत् । छात्र वी- र्धे अध्ययनको कर्त्तव्य । पढनेहारा । एतच्छब्दः ।

अनन्तप्रत, (न०) अनन्तप्रतं उपासनाप्रतत् ६ व० ।
भद्रोंके पुत्रपथकी घटुईसीके दिन करने योग्य अपने
नामसे प्रतिष्ठा एक प्रत.

अनन्ता, (स्त्री०) नास्ति अन्तोऽस्याः ६ व० । जिसका अन्त
न हो । विश्वनामी आपथ । एक प्रकारकी जड़
जिसका नाम अनन्तमूल है । रावेती । वृषिणी । कुश ।
हरीन्दी (हरीन्) । आमलकी (आबल) । गुह्वी ।
अभिन्नप वृक्ष । अभिभिरा वृक्ष । द्यामलता । पिप्पली.

अनन्तामन्, (पु०) अनन्त आत्मा । परमात्मा.

अनन्द, (वि०) (न भन्दयति नन्दन्विष्+भञ्च्) आनन्द-
रहित । नयुता । अग्रतम.

अनन्द्यगतिक, (वि०) नास्ति अन्या गतिः दम्प न०
ब० । जिसके लिये और कोई उपाय नहीं.

अनन्द्यज, (पु०) नास्ति अन्या वस्वात् तस्मात् जामते
जन्+ञ ५ त० । जिसने भिन्न और कुछ नहीं अर्थात्
सम्पूर्ण बलुओंका मेद उसीका स्वरूप है, तापयं, विष्णु कि
उससे उपाज अर्थात् वामदेव.

अनन्द्यता, (स्त्री०) अनन्द्य भाव । वही अनेद । वही-
पन । अभिप्रता.

अनन्द्यपूर्व, (पु०) नास्ति अन्या पूर्वो दम्प । जिसकी
दुगरी और कोई स्त्री नहीं ।-नो (स्त्री०) न अन्यः पूर्वो
दम्पाः । जो किसी दूसरेकी पहिले नहीं । वह स्त्री जिसका
कोई दूसरा पति नहीं.

अनन्द्यमान्, (वि०) न अन्यं अन्यां वा भक्तते किसी
दुगरी व्यक्तिके साथ प्रीति न करनेवाला.

अनन्द्यवृत्ति, (वि०) न अन्यसिन्नु ध्येयमित्ते इतिर्यम्य ब० ।
जिसकी ध्येयके विना दूसरेमें वृत्ति न हो । एकान्तचित्त.

अनन्द्यशासन, (वि०) नास्ति अन्यस्य शासनं यस्मिन् ।
जिसपर दूसरेकी आज्ञा नहीं चलती । स्वतन्त्र

अनन्द्यसदृश, (वि०) नास्ति अन्यः सदृशः यस्य ६ ब० ।
आशधारण । जिसके समान दूसरा न हो । निरुपम.

अनन्द्यसामान्य, सामान्य (वि०) न अन्यस्यां सामा-
न्यः । जो दूसरी स्त्रीमें एक जैसा नहीं । एकहीमें अधिक
प्रीति करनेवाला.

अनन्द्यादृश, (वि०) न अन्य इव दृश्यते । जो दूसरे-
के समान न हो । एकही.

अनन्द्यय, (वि०) नास्ति अन्ययो यत्र ब० । अन्यवद्भ्य
साम्बन्धरहित । अर्थात्आरभ्य एक मेद.

अनप, (वि०) न सन्ति आधिक्येन आपः यत्र । जहाँ
अधिक जल न हो (टापड).

अनपकरणम्, कर्मन् किना (न० स्त्री०) न अपकियते ।
न दानि (शुक्लान) पट्टुवाना । (धर्मशास्त्रमें) लिये हुये
धनसे न पुत्रका.

अनपत्य, (वि०) नास्ति अपत्यं यस्य । सन्तानरहित ।
पुत्रहीन । बारिश बगर.

अनपत्रप, (वि०) नास्ति अपत्रपरा कन्या यस्य ६ व० ।
जिसे कन्या (पारम) नहीं । निरैत्र (बैधरम).

अनपर, (वि०) नास्ति अपरः यस्य ब० । जिसके पास
दूसरा कोई नहीं । अकेला.

अनपाय, (वि०) नास्ति अपायः नायाः यस्य ६ व० ।
जिसका नाश न हो । अक्षय । अपिनाशी.

अनपायुत, (वि०) न० ब० । न छौटनेवाला.

अनपेक्ष-विन्, (वि०) न० त० । बेधयाल । बेपर-
बाह । उदासीन । असेषद । स्वतन्त्र.

अनपेत, (वि०) न अपेतः गतः न० त० । जो बला
नहीं गया । जो व्यतीत नहीं हुआ

अनप्रसू, (वि०) नास्ति अप्रः रूपं यस्य । Ved.
रूपरहित । बेसकल । कर्महीन.

अनप्सरस-रा, (स्त्री०) न अप्सरा न० त० । जो अपरा
(सर्गकी देवता) नहीं । अप्सराके अयोग्य.

अनभिज्ञ, (वि०) न अभिज्ञः न० त० । न जाननेवाला ।
अज्ञ । अज्ञानी । बेचबर.

अनभिम्बलान, (वि०) न अभिम्बलानः न० त० । न
कुम्बलमा हुआ.

अनभिदास्त, (वि०) Ved. निर्दोष । बे ऐन । निरपराप.

अनभिसम्पान, (न) विनसेकल्प । विनद्रादा.

अनभ्यायुक्ति, (स्त्री०) पुनराक्ति न करना । हुबार न कहना.

अनभ्याम्-रा, (वि०) नास्ति अभ्यास्तः नैकृत्यं यस्य । जो
निकट न हो । जो दूर हो.

अनघ्न, (वि०) न अधः मेघः न० त० । मेघ (बादल)-
रहित । कुछ अकस्मात् होगया.

अनघ्न, (पु०) न नमति अन्यान् । ब्राह्मण । (जो दूसरोंके
शुक्नेपर नहीं शुक्ता करने आशीर्वाद देता है).

अनमित्र, (वि०) नास्ति अनिमित्रं यस्य ६ व० । जिसका
कोई शत्रु नहीं । दुश्मन बगर.

अनमीय, (वि०) Ved. नास्ति अनीयः रोगः यस्य
न० ब० । रोगरहित । संदुष्टक । बेना भला । प्रसन्न ।
आराममें रहा हुआ.

अनघ्न, (वि०) न गघः न० त० । न गघ (शुक्नेवाला)
हलीम नहीं.

अनय, (पु०) अयः शुभः श्रो निधिः सदन्यः न० त० ।
अनुमर्दक । दानोय (कुरी धितनय) । जूआ सेठनेश-
सोके दहिनी ओर जाना । नवो नीति. नी-अय ब० त० ।
नीतिघ्न न होना ब० । वह जो नीतिसे शून्य व्यवहार
करे (वि०).

अनरण्य, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा।
 अनर्गल, (त्रि०) अर्गल द्वारापकृतम्भः व० । द्वाजिके
 रोकनेवाले बम्बेके विना (होठके विना) । प्रतियन्त्र-
 कक्ष्य । विन रोक।
 अनर्थ, (त्रि०) अर्थो मूर्खं न० व० । अमूल्य । जितरा
 मोल न हो।
 अनर्थ, (पु०) अर्थः प्रयोजनं विरोधे न० त० । प्रयोजन-
 विरुद्ध । अनिट (न चाहगया) व० । अनीटरहित
 विष्णु (पु०) आप्तकाम होनेसे । अर्थोऽभिधेयः प्रयोजनं
 वा नास्ति यस्य व० । जिघसा अर्थं न हो । जिसका
 प्रयोजन न हो । अर्थरहित मात्र (त्रि०) ।
 अनर्थक, (न०) अर्थोऽभिधेयोऽप्राप्तस्ये नना व० । उर-
 प्रवृत्ति० कर्त्तव्यमाप्तान्तः । समुदायार्थंशून्य प्रदाय । अर्थसे
 विना बचन । सम्बन्धरहित वाक्य । अर्थ (त्रि०) ।
 अनर्थान्तरम्, (न०) अर्थोऽर्थः अर्थान्तरं मयूर० त० ।
 ततः न० त० । दूसरे अर्थके विना । अमेद । जिसका
 एकही अर्थ हो।
 अनर्थ, (त्रि०) Ved. जो शिविल न हो।
 अनर्थन्, (त्रि०) अर्धं हिंसायां कनिन्, अर्धा सपन्नः, न०
 त० । दाबुररहित । जो द्वेष करनेके योग्य नहीं।
 अनल, (पु०) नास्ति अलः पर्याप्तियस्य बहुदायदहनेऽपि
 सुमेरभावात् व० । बहुत वस्तुओंको जलानेपरमी जिते
 तृप्ति नहीं होती । अग्नि । आठ वस्तुओंमेंसे पचवा वस्तु ।
 कृत्स्नानामी नक्षत्र जिघकी देवता अग्नि है । चिता नामसे
 विख्यात चित्रक वृक्ष (पु०) । मेला नामसे प्रसिद्ध
 भद्रतकटुषः देहमें म्रियत, आयुको कारण करनेहारा
 पित्तनामी धातु । अव्ययी० । नलनिन्न । तुण आदिसे
 भिन्न । अन्+कलच् । साठ वर्षोंमें पचासवा वर्ष।
 अनलप्रमा, (स्त्री०) अनलस्य प्रमेव प्रमा यस्य व० ।
 ज्योतिष्मतीनामी वेद।
 अनलि, (पु०) अनितीत्तन्, अन्+किप् अन् अन्वित्र
 व० । बचनानी वृक्ष (इस वृक्षके मधु अर्थात् पुष्परसोसे
 भौरे जीवन धारण करते हैं) ।
 अनयच्छिन्न, (त्रि०) न अव+च्छिद्+क् । निरन्तर । न
 बटा हुआ । लगातार।
 अनयघनता, (स्त्री०) अवधीयते, मनः संयुज्यते कर्त्त-
 व्यकर्मणि यथास्थितं प्रवर्त्यतेऽनेन, अव+घा+करणे ल्युट् ।
 अवधानं चित्तज्ञानमेदः तत्रास्ति यस्य तस्य भावः । जितसे
 कर्त्तव्यकर्ममें मन ठीक न लगा सके । प्रमाद । भूल ।
 कर्त्तव्यको अकर्त्तव्य जान न करना । अकर्त्तव्यको कर्त्तव्य
 जान करना।
 अनयनामित, (त्रि०) अय+नम्+पिच् क् । न हुकाया
 गतः । न नांचे किया गया।

अनयप्रव, (त्रि०) अनाय् अय अवगतः । अनाय-
 धातु । निन्दारहित । कल्पेऽर्गवित् ।
 अनयम्, (त्रि०) न आश्रयंति । आश्रयंशून्य । न देने
 वाला । न नाम होनेवाला।
 अनयम्, (त्रि०) न आश्रयः । न छोडा । फंरा।
 अनयम्, (त्रि०) अय+म्+भावे क् । अयम् अयम्
 यम् व० । लगातार । निरन्तर । उच्छृत् । उच्छा।
 अनयम्, (त्रि०) अयम् अयम् अयं भाः क्व न
 त० । उच्छृत् । बडा । उगम । उन्ना।
 अनयम्, (त्रि०) न० व० । निराश्रय । जिनके
 आधार कोई नहीं । पराधीन।
 अनयम्, (न०) पुंगवनेके अनन्तर चौथे मन्त्र
 कर्त्तव्य गमेश संस्कारविशेष इय नामसे प्रसिद्ध।
 अनयम्, (त्रि०) अवगमति अय, अय+म्+अन्, अ-
 मरः उचितः कालः न नास्ति यस्य व० । जिनका ईश
 समय नहीं न० त० । ठीक गमयना न होना । वेनेके
 अनयम्, (त्रि०) नास्ति अयम् अयम् न० व० ।
 जिनका अन्त नहीं । अमर । स्थितिरहित।
 अनयम्, (त्रि०) न० त० । न समाप्त हुआ । न पू-
 र्ण हुआ । अनिश्चित।
 अनयम्, (त्रि०) अवस्करणे शोष्यते, अव+क्+न्
 तुनामः । अवस्करो मल स नास्ति यस्य व० । नष्ट
 रहित । साफ़ । निर्मल । विमल।
 अनयम्, (स्त्री०) अव+स्था+अच् अवस्थितिः न० त० ।
 अवस्थाका अभाव । दुर्दिता । तर्कका दोषविशेष । उ-
 पायको सिद्ध करनेके लिये उपायदृक्का अनुसरण कर
 तर्क है । जिस तर्कमें उपाय और उपायदृक्की विधि
 नहीं वह तर्क अनवस्था दोषसे दूषित है।
 अनयम्, (न०) अव+स्था+स्त्युट् न० त० । अवस्थ-
 भाव न टहरना । व० । वायु (पु०) चञ्चलम्
 (त्रि०) ।
 अनयम्, (अन्व०) अयानः श्रासोच्छ्वासः स यथा
 स्यात्तथा । पीचमें श्वास लिये विन । एकही सासके साथ
 विन टहराव (यति) ।
 अनयम्, (त्रि०) अव इ घञ् अवायः=अवयवः न० व० ।
 निरवयव । अवयव (भाग) के जो विना हो।
 अनयम्, (न०) अव+ईध्+स्त्युट् । न० त० । न पाये
 परना । न खयाल करना।
 अनयम्, (त्रि०) न० व० । न पत्रिक (बहोता) अ-
 हिंसाविरगा न देनेका अधिकारी।
 अनयम्, (न०) अय+स्त्युट् न० त० । अयनाभाव ।
 खाना । उपवास । भोजनशून्य (त्रि०) ।

अनाथ, (प्रि०) नाभि अधः यन् न० व० । अधः-
रहित । अत्रिके पाद घोडा न हो।

अनाथर, (प्रि०)-री (री०) अविनायी । निर.

अनर, (न०) अनिनि शब्दायते, अनु+अनुन् । गदट ।
गद्वा । छट्टा । बरणे ल्युट् । ओदन । भान । चापल ।
मत्ता (री०) ।

अनरूपा, (री०) अनु+अनु+रित्वात् यद्+अद् न० म० ।
गुणान् संय आशेष करना आत्मा ही उतका न होना ।
गुणोको गुण कहना । अत्रिगुणित्वात् री० ।

अनरुच-शिक, (पु०) (म० व०) शक्ति (री०)-
रहित ।-(र्यः ।) अन्वित् रित् शब्द.

अनरुच, (म०) शब्द=अनरुचं शब्द । युग दिन ।
अभागी दिन.

अनरुच, (प्रि०) शब्द शक्तिर्ये, अच् न० व० । न देवा ।
रीया.

अनाकाल, न० व० । कुलस्य । वैश्या । न० व० ।
या सध्यन् आचारिणामत्रः काल=आकालः । आकाला
अकाल । बहगवागी.

अनाकुल, (प्रि०) न आकुलः न० व० । न चबलया
हृत्ता । अक्षय । एषाम । शिर । अरिबीषे शब्द । न
मिजकुशा वचन । शाक वचन.

अनाकालता, (री०) अचमिन् आशेषया सर्वतः कष्टबाध-
तायात् आनन्वयः न० व० । पारोभोर वादोमे विराट्वा
होमेके शाल ओ रबाया मर्दि आ शया । कष्टबाधित्वा ।
ओ आकमण मर्दि शिया गया (प्रि०) ।

अनागत, (प्रि०) आनन्वयः, शयन, न० व० ।
आयी । आगे होनेकाल । न आगमया । ओ बीमन
मर्दि । आनेकाले निर.

अनागतार्थता, (री०) कालोः क्विपुत्रयेर्दं विज्ञानं
अर्नदं कपुत्रयम् न आगतं आर्नदं कालः व० । अर्थहीने
(ओ अर्थोको प्रथितय वज आता है) शब्द। अर्थिता कल्प.

अनागच्छिष, (प्रि०) गच्छ+इष न शेष गया । न
हृत्ता गया । शिष्यः अत्र हृत्तेयत गरी वर.

अनागच्छिन्, (प्रि०) अत्रि अक्षय अत्र गच्छिन् ।
न अक्षयत् । न हृत्तेयत्.

अनागच्छ, (प्रि०) अत्रि अत्र यत् न० व० । शि-
ष्यात् । देहृत्त्वात्

अनाचार, (पु०) अनु+अच् न० व० । अनु+अच् न० व० ।
न० व० । युग आचर । आचरका न होना व० ।
आचरतीक (प्रि०)

अनाचय, (पु०) अनु+अच् न० व० । अनु+अच् न० व० ।
होना । अनु+अच् न० व० । अनु+अच् (प्रि०)

अनाचय, (प्रि०) न आचयः । न० व० । न उपचितः ।
न हृत्तु इच्छयत् । अनु+अच्.

अनाचयक, (प्रि०) अत्रि अनाचयि यत् । अत्रो
अनाचय न हो । शिष्या । अत्रि

अनाचयक-वेदिन्, (प्रि०) न आचयते अत्रि । न
वेदि आचयत्+अच् । न० व० । आचयत्+अच् ।
अने आचयते न उपनेकाल । गृह

अनाचयन्, (पु०) अत्रि आचयते शिष्ये, अनु+अच्
अचयते वेदिने य म० न० । आचयते शिष्य आचय
आना देहारि । "अत्राय आचयते वेदिनायान् आचयते-
इषया । अनाचयन्नाचयन्ते कुलान् कपुत्रयिष्यन्"

अनाचयनीन, (प्रि०) न आचयते शिष्य आचयः ।
न० व० । ओ आचयते शिष्ये शिष्य गरी

अनाचययन्, (प्रि०) आचय आचयते अत्रि अनाचयः ।
अत्रि अनाचय आचयते अत्रि अत्रि । ओ हृत्तेयत्+अच्
गरी अनाचय

अनाचय्य, (प्रि०) आचय हृत्ते आचयते अत्रि न० व० ।
शिष्याः अत्रि गरी । अत्रि

अनाचय्यमिष, (प्रि०) न आचयते अत्रि अनाचयः ।
ओ गदा गरी । अत्रि । अत्रि गरी

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्र यत् न० व० । शिष्याः
अत्रि गरी । अनु शिष्ये शिष्ये । अत्रि

अनाच्यया, (री०) आचय न अत्रि न० व० । अत्रि
(शिष्याः) अत्रि अत्र । अत्रि

अनाच्य, (पु०) अनु+अच् न० व० । अनु+अच् न० व० ।
न० व० । शिष्ये अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाचि, (पु०) अत्रि अत्र अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

अनाच्य, (प्रि०) अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि
अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि अत्रि

शनाभू, (प्रि०) आभिमुख्येन भवति इति आभू=भोवा
न० त० । न मुनि करनेवाला । न गम्मुग होनेवाला ।
Ved.

अनामन्, (न०) अमन्+अन्, अमन् जीवनं,
धमयति, दृजति, अमन्+अनि । जीवनको विगाडनेहारा ।
धवासीरका रोग । जियरा नाम न हो ऐया मयमय
(पु०) इस मागमें वैदिककर्म नहि होते इगटिये नाम-
रहित है । नामशून्य (प्रि०) ।

अनामय, (पु०) अमन्+अन्, अमन् तापं यानि अनेन, मा+
क । आमयो रोगः न० त० । रोगका न होना । आरोग्य
धाराम न० व० । रोगशून्य (प्रि०) ।

अनामा, (स्त्री०) अनामः अिच्छेदनाघनतया प्रदगाधो-
ग्यत्वात् नान्ति नाम अहणयोग्यं यस्याः व० । मयन्त्यात्
टाप् । इम नामसे प्रसिद्ध मयमा थीर कनिष्ठा अहृन्तीके
बीचकी अहृन्ती । स्वार्थे कः । इमे अनामिकामी कहते हैं,
इसी अहृन्तीसे महादेवने अनामिके अिच्छेदो कटाया था, यह
पुराणमें प्रसिद्ध है । इहीलिये इस अहृन्तीको पवित्र करनेके
आशयसे इसमें पवित्रनामक कुछ धारण किया जाता है

अनायत्त, (प्रि०) न आयत्तः । स्वाधीन । दूसरेके
आधीन नहीं । सुदमुख्यार.

अनायन, (प्रि०) न आयनं चालन यत्र । न हिचने-
वाला । एकान्त । निश्चित । पक्का.

अनायास, (पु०) आ+अन्+अन् । अल्पार्थे न० त० ।
प्रयत्नका न होना । अल्प यत्न । थोड़ी मीहनत । बिना
ह्रस । व० । जो प्रयत्न नहि करता (प्रि०) ।

अनायासकृत, (न०) अनायासेन अल्पप्रयत्नेन कृतं न०
त० । थोड़ेही परिश्रमसे सिद्ध होने योग्य काथ आदि ।
थोड़ी मीहनतसे किया गया.

अनायुष्य, (प्रि०) आयुषे न हिनं न० त० । जो आयुके
दिये हिनकर नहीं । दीर्घ जीवनको नाश करनेवाला
(अधिक भोजन आदि) ।

अनारत, (प्रि०) न आरतः न० त० । न टहरनेवाला ।
न रुदनेवाला । निरन्तर । लगातार.

अनारत, (न०) आ+अन्+अन्, आरतं विरतिः, अत्यन्तामावे
न० त० । कमी न टहरना । सन्तन । अविरत । अवि-
च्छेद । लगातार व० । कमी न टहरनेहाए (प्रि०) ।

अनारम्भ्य, (प्रि०) न० आरम्भ्युं योग्यः । न प्रारम्भ
करने लायक.

अनारम्भण, (प्रि०) न आरम्भणं आश्रयः । आश्रय-
रहित । निराधार.

अनारोग्य, (प्रि०) नान्ति आरोग्यं दम्भान् न० व० ।
स्वास्थ्य (तन्दुरन्ती) को विगाडनेवाला.

अनाज्ञेय, (पु०) अज्ञोर्भात् अज्ञेयं गण्यम् अज्ञेयं यत्
७ व० । अज्ञेयः । गेग । गण्यता न होना । अज्ञेय
(प्रि०) ।

अनार्जय, (प्रि०) प्रि० स्त्री० । न क्लो माः । अज्ञेय
न हुआ । बे मीगमी (कृत्र आदि)

अनार्थ, (प्रि०) न आर्थः । न० त० । जो आर्थ (अर्थ)
पुरन) नहीं । जो अर्थका प्राप्त नहीं । कृत्र.

अनार्थक, (ज०) न० अनार्थको आर्थान्तरित्वे ईति
न्यायदी भवः । अनार्थकः । अनुपकार । न कि-
पने सम्मिन् जायने कृत्र+इ । अनार्थकमें कृत्र
हुआ (प्रि०)

अनार्थनिक, (पु०) अनार्थप्रितानिकः आरः क० त० ।
निगता नममें प्रसिद्ध भूमिश्च कृत्र.

अनानुचित, (प्रि०) न अनुचितः । न देगा क
न बियाग गया । न परीक्षा किया गया.

अनावातिन्, (प्रि०) इ+अति न० त० । न अतिदेव
अनाविद्ध, (प्रि०) आ+अन्+अन् न० त० । न अति
गया । न हानि पहुंचाया गया.

अनाविल, (प्रि०) न आविलः मलिनः न० त० ।
नीचा । न बीचउपका । शुद्ध । साफ.

अनावृत्ति, (स्त्री०) आ+अन्+अन् न० त० । अन्-
घका न होना । आगमनका न होना । बहु । अन्-
(प्रि०) न अभ्यास करनेवाला । न दुहरनेहाए.

अनावृष्टि, (स्त्री०) आ+अन्+अन्+अन् न० त० ।
भोईसी वर्षाका न होना । खेतीको नाश करनेके
उपद्रव । इति आरंभे एव.

अनाश, (प्रि०) नान्ति आशा यम् न० व० । शिन्-
आशा नहीं । निराश । बेदम्मीद.

अनाशक, (पु०) आ अन्त्यक् यथेच्छ आशः अशने, अ-
अन्+अन् न० त० । यथेच्छ भोगामात्र । अपनी इच्छा
अनुसार भोगका न होना । "तमेतं वेदानुबचनेन अ-
विविदिपान्ति यत्नेन दातेन तपसाऽनाशकैवेति" इति

अनाशकायन, (न०) न नश्यति अनशकः अन्त्या
अयने प्राप्नुयायः । आम्नाके पानेका उपाय । अन्त्या
न निवाह हुआ । प्यानपर.

अनाशिन, (पु०) न नश्यति, नृन्+अति न० त० ।
अश्राति कर्मफले अन्+अति न० त० । वा नश्यति
कर्मफलेक न भोगनेहाए । परमेधर.

अनाश्रिन्, (पु०) नान्ति आश्रमः अश्र । श्रम
आश्रमरहित । किसी आश्रममें नहीं.

अनाश्रय, (प्रि०) न+आ+अन्+अन् । न आश्रय
मुनेवाला । कान्ते यधिर (बहिर) ।

अनीश्वरवाद, (पु०) नाभि ईश्वर इति वादं वर्तते । पर-
 मेश्वरको न स्वीकार करनेवाला । नास्तिक ।
 अनीह, (वि०) ईह+अह् न० ब० । जिगरी बोई इच्छा
 न हो । जिसे बोई चेष्टा (व्यापार) न हो ।
 अनु, (अनु०) अनु+उ । उपगमविशेष । गद् । पीठे ।
 निवृत्त । गारद्वय । लक्षण । वीण्या । इष्यन्मान । भाग ।
 दिन । आयाम । समीप आदि अर्थोंमें आता है ।
 अनुक, (वि०) अनुकामयते अनु+कम्+ङ् । कामनावाला ।
 बानी । जिसको शिष्यही इच्छा बहुत हो ।
 अनुकथ, युग० पर० अनु+कथ+अन्वादिना=कथयामके पीठे
 दुर्गा खानका बयान करना । अगनी बालका प्रगट करना
 अनुकाम, (अन्व०) अनुकामयते अनु+कम्+कियु । शिष्य
 स्वीक ।
 अनुकाम्य, भ्या० शा० । दया करना (रहम करना) । तारा
 करना । सहायुगी शिष्याता
 अनुकाम्या, (स्त्री०) अनु+काम्य+अ । दया । धोखा
 दिवना ।
 अनुकारण, (न०) गारद्वे अनु+ङ्+णुद् । अनुकरण ।
 मरल (यह देना, भाषा, आशयिण मराल कर दिवना) ।
 अनुक्रियतेऽनेनेति वरणे स्तुद् । मरल करनेवा साधन ।
 अनुकर्य-ण, (पु०) अनुकर्यते मरलपठेन वरणे, अनु+
 कृ+णम् । इसके नीचे रहनेवाही पहिलेके ऊपर बंधीदुई
 लक्षरी । प्रथम मन्त्रमें प्रथम शिष्ये मने पद आदिको
 आगे मन्त्रमें आनवक शिष्ये होवना ।
 अनुकल्प, (पु०) कल्पयते शिष्ययते इति कृ+कल्प+
 अच् । बानी विदितः अनु हीना बानी सुप्रदकल्पदधमा,
 प्रा० म० । मीणकल्प । प्रतिनिधि । एकके लक्षणमें दूसरी
 वस्तुही बनना करना । जैसे "यदि वरुण न हो तो
 मुझे काम बलना" यह अनुकल्प है ।
 अनुकाम, (वि०) कामय गारदाः अनुकामो वा । इच्छानुवा
 यद्वे सुभाषिक । मरलीसुनविष । अनुकामयते काम+
 अच् । इच्छामे पूर्ण । बानी । इच्छणी ।
 अनुकामीन, (वि०) कामय अर्थप्रयत्न कर्तुं
 कर्म । गारद्वेऽभ्यसी० । तन० लक्ष्मणलक्ष्मणे वर । अर्पणी
 इच्छापूर्वक मरल बानेद्वारा ।
 अनुकार, (पु०) अनु+ङ्+णम् । देना, अर्पण, अर्पणे
 गारा करना ।
 अनुकार, (वि०) कल्पय कोट । मरद्वर । मरद्वरुणात् ।
 टिक कल्पय हुक ।
 अनुकृत, (वि०) कृते कल्पयं कोटैककल्पयति इत्यच् ।
 अनुकरण अर्पण० क० । इच्छा । इच्छा कल्पेद्वारा ।

गदाय । अगना पशवानी । अद्वारकायमे प्रसिद्ध इह
 प्रशारका नादक । म० ३ पठि०
 अनुकृ, मना० उम० । पीठे करना । पीठे होकर । अनु-
 रण । नकल करना
 अनुकम्, भ्या० पर० । पीठे विवना । इच्छा कर
 देना ।
 अनुकाम, भ्या० उम०, शिष्य० प० । पीठे करना । अनुकाम
 करना । इच्छा करना । विद्या । शिष्याकृतार ईश्वरी
 निबन्धना । मरालना ।
 अनुकाम, (पु०) अनु+काम+अच् न इति । दृष्टिगती ।
 काम । अनुकर्म्येऽभ्यसी० । शिष्याकृतार
 अनुकाममिषा, (स्त्री०) अनुकामने कल्पेने दृष्टिगती
 अर्पणयतेऽनया अनु+कम् करणे स्तुद् अर्पण इव क
 यं के लयः । पश्यादीको अर्पणी । अर्पणः (ईश्वर)
 मन्त्रं कर्तव्ये । अनुकामणी । (इच्छा) शिष्ये शिष्य
 कल्पना विषय कल्पने दिवना अर्पण ।
 अनुकामो, (पु०) अनुकामेति अनेन । पुन० पुनः कृत्वा इति
 रोमानवय । दया । अनुकाम को इति म० । अर्पण
 कोलपर पठुंका ही (वि०) ।
 अनुकाम्या, कदा० प० । नानि (इच्छा कल्पेने) कृते
 देवना । बानी देवना । गारद्वे देन
 अनुक, (वि०) अनुकाम+ङ् । पीठे कल्पेना । मरद्वर ।
 मरली । मरद्वर ।
 अनुगत, (वि०) अनु+गत्+ङ् । मरद्वर । अर्पण ।
 पीठे कल्पेना । कर्पण कल्पेना । मरद्वर कल्पेना कल्पेना
 को मरली शिष्यपरीक्षा इत्येक विद्वत्
 अनुगतार्थ, (वि०) अनुगत+अर्पण कर्तुं अर्थ क० ।
 मरद्वर ईश्वरीय कल्पेना कल्पेना कल्पेना
 अनुगत, अर्पण० प० । शिष्ये पीठे कल्पेना । अनुकाम
 शिष्ये कल्पेना
 अनुगत, (पु०) अनु+गत्+अर्पण कल्पेना । पीठे कल्पेना ।
 मरद्वर कल्पेना । मरली कल्पेना । मरद्वर कल्पेना कल्पेना
 शिष्यपरीक्षा इत्येक विद्वत्
 अनुगदीन, (पु०) अनु+गत्+अर्पण कल्पेना । पीठे कल्पेना ।
 मरद्वर कल्पेना । मरली कल्पेना । मरद्वर कल्पेना कल्पेना
 शिष्यपरीक्षा इत्येक विद्वत्
 अनुगिरम्, (अन्व०) शिष्याकृतार । मरद्वर कल्पेना
 अनुकृत, (वि०) अनु+कृते कृते कल्पेना । मरद्वर कल्पेना ।
 मरली कल्पेना । मरद्वर कल्पेना कल्पेना शिष्यपरीक्षा इत्येक
 विद्वत्
 अनुदी, अर्पण० प० । शिष्ये पीठे कल्पेना । मरद्वर कल्पेना ।

अनुपूरण, (पु०) अनुगतः अन्यं पुरणम् । किमी पुरणके पीछे २ बल्नेवाला । अनुगारी ।

अनुपूर्व, (पु०) अनुगतं पूर्वं परिपाटी । गतिग० । यथाक्रम । लिखिलियार ।

अनुम, (त्रि०) वृत्+फ न० । न वचन किया, न बोधा गया थीन ।

अनुप्रिम, (त्रि०) वृत्+प्रिमच् (न०) बीजारोपण (बी०) विना ही बढ गया ।

अनुप्राप्, स्था० प० । पाना । लाभ करना । पहुँचना । पकड़टना ।

अनुप्रास, (पु०) अनु+प्र+आप्+भञ् । शरद्वेषम् (खरमेद) होने परमी तुल्यवर्णोद्धी रचनावाला अक्षर । काव्यालक्षारविशेष । तुल्यवर्णोद्धी रचना ।

अनुपूर्य, (पु०) अनु+पूर+अच् । सहाय करनेहार । अनुचर । दास ।

अनुपु, स्था० जा० । पीछे भागना ।

अनुपन्ध, (पु०) अनु+बन्ध+यथायथं भावादी भञ् । बोधना । इच्छापूर्वक दोष करना । वातपित्तादि दोषोपेक्षे धप्रधान, धातु, प्रत्यय, आगम, बीर आदेशमें गुण, श्रुति आदि धार्यविशेषके लिये लगाया गया कोई वर्ण, जो कि पदकी लिखिछलमें इन होकर लोप हो जाता है । मुख्यको अनुपूरण करनेहार धप्रधान । कथन किये गयेको अनुपूरण करनेहार संवन्ध । पीछे होनेवाला द्रुम परिणाम । शास्त्रके प्रारम्भमें कथन करनेके उचित लक्षिकारी, विषय, प्रयोगन और सम्बन्धकी रचना । फलदा साधन । पुत्र वा शिष्य जो धरने माता पिता वा आचार्यका अनुपूरण करना है । निरन्तर बचका होना ।

अनुपन्धिन्, (त्रि०) अनुपन्धि, अनु+बन्ध+णिनि । सहचर । अनुचर । व्यापक । दास । फंछाहुआ । प्रिया बीप ।

अनुपन्धी, (स्त्री०) अनुबन्धतेऽतिश्रायेण व्याप्रियतेऽनया अनु+बन्ध+पञ्गीय० दीप् । हिंसा रोग । हिंसरी । लूणा ।

अनुपन्धय, (त्रि०) कथार्यं बन्धोऽनुपन्धयः प्वन् । यद्में मारनेके लिये बापीगरे गी आदि ।

अनुपदल, (न०) अनु+पदाल् स्थिनं बलम् । पीछे टहरी हुई रेंगा । सहायक रेंगा ।

अनुपौष, (पु०) अनु+पुष+णिच् भञ् । पहिले लेप किये गये चन्दन आदिके कण्ठको उदीपन करनेके लिये फिर नदन् करता । पीछे जाता ।

अनुप्राप्तम्, (न०) प्राप्नोत्यर्थो मन्थः । प्राप्नोत्ये सरदा मन्थ ।

अनुपूर्य, (पु०) अनु+पूर+अच् । बढ जाना का मरणके निश्च हो । हठसे पहिले जान (जो दिवी संस्कारके विन हो) ।

अनुमाय, (पु०) अनुमाययी उद्गोषयनेन, अनु+मिन् करणे भञ् । गुदाजोडा गिनेप त्रेत्र जेडा दण्ड आदिसे लग्न होना है । गामर्थ्य । कर्तरे बप । अलक्षारनाक्रममें प्रसिद्ध रगको प्रष्ट करनेहार । "ये मनोगत भाग्यो गान्धर्व प्रष्ट करे वे अनुभव से जाते हैं" इग प्रकारके उक्तयनाला मीडा बढना आदि ।

अनुमृति, (स्त्री०) अनुमृयते अनु+मृ+क्तिन् । इन । दीवान । समम न्यायमें प्रयदादि लज्ज ज्ञान ।

अनुप्राप्त, (पु०) अनुगतो प्राप्तम् । मारनेके पीछे हुन । कविपुत्रा । छोटा भाई ।

अनुमन, (त्रि०) अनु+मन्+फ । आपकी किमी करने लगनेपर " हाँ यह कीजिये " ऐसे प्रोत्साहनके लिये मानागया । सम्मत । मन्तु ।

अनुमति, (स्त्री०) अनु+मन्+क्तिन् । मान लेना । क गुत्र करना । गुलाह । अनुमन्यते कलादीनत्वेऽपि पूर्णविहितयागादिहरणायानुगतवैदेश्यां, लक्षिकरणे निन् । कलाये हीन चन्द्रमावादी द्रुम चतुर्दशीयुक् पूर्णमा सिद्धे ।

अनुमत्, (त्रि०) अनु+मद्+फ । हर्षमें मनका हुन ।

अनुमन्, रिवा० आ० । मान लेना । स्वीकार करना ।

अनुमन्तु, (त्रि०) अनु+मन्+मृन् । आप उदाहीन से कर कायमें प्राप्तहुए दूसरेका उन्माह बढानेके लिये बल करनेहार । मानेहार ।

अनुमन्त्र, युग० आ० । पवित्र मन्त्रसे द्रुम करना ।

अनुमरण, (न०) अनु+मृद्+भ्युट् । मर्ता मरणका निश्च देह न मिला तो उसकी मज्जाभाँ आदि ले प्रथम निदान चर्द त्रिवेका शरीर छोडना । पीछे मरना ।

अनुमान, (न०) अनु+मि+मा वा+भावादी ल्युट् । मन (पीछे देशमें रहनेहार) का निश्च करना । जेते की धूमका व्यापक है तो धूम उतका व्याप्त हुआ इस प्रकार दोनोका कईवार पाकस्थान आदिमें सहचार (समा रहना) देख पीछे कमी पवने आदिमें उठही लिखेवाले धूमका दर्शन कर बहा (पवने आदिमें) "अग है यह निश्च होता है । करणे ल्युट् । अनुमानका कण धूम आदि । श्रुतिहीको स्वत प्रमाथ्य है, जहाँ साधन श्रुति नहीं सुनीजाती वहाँ स्पृतिवाचकसे श्रुतिवाचक का अनुमान करना । इयप्रकार श्रुतिवच अनुमान करने हार स्पृतिवाचकमी अनुमानपदसे कहाजाता है देश भीमासक करवे हैं ।

अनुमिति, (स्त्री०) अनु+मि+मा वा क्तिन् । हेतु वा लक्षे किमी चीनको जाना ।

अनुमित्या, (स्त्री०) अनुमातुं इच्छा+अनु+मा+भ्यन् । अनुमान करनेकी इच्छा ।

अनुमासः, (पु०) अनुगतो मासः । अगला महीना ।-सम् (अव्य०) प्रत्येक मास महीनेबाद महीना।
 अनुमोद, (पु०) अनु+मुद्+पम् । सुने ओ धिया वह मुसको अच्य ल्या। इत प्रकार बोलना । मोरके सुससे सुयी । आनेद । सुयी।
 अनुमु, वृदा० आ० । वियते । मषे । पीछे मरना।
 अनुया, अदा० प० । अनुसरण करना । पीछे जाना।
 अनुयाज, (पु०) अनु+यज्+पम् कृत्वाभावः । धर्मासासा और पीर्णमासीके अग प्रयाज आदि पांच याग।
 अनुयात्रिक, (पु०) अनुयात्रा=अनुगमनं अर्था अस्-
 ट्ठ । अनुयात्री । अनुयात्र । नौकर।
 अनुयायिन, (त्रि०) अनु+या+गिनि । सरस । अनुयात्र । पीछे जानेहार । दास आदि । त्रियां वीप्।
 अनुयुज्, हृषा० आ० । पूजना । प्रसन्न करना।
 अनुयोग, (पु०) अनुयुज्यते कथनाय नियुज्यते अनु+
 युज्+पम् । प्रथ । प्रप्र होनेपर पूजागमा करनेको प्रथत होता है।
 अनुरध्या, (स्त्री०) रध्या अन्वायते स्थिता । पदमागे ।
 पावका रासा । पगम्भी।
 अनुराग, (पु०) अनु+रग+पम् । अस्वन्तप्रीतिः । प्रेम ।
 अनुस्पो रागः प्रा० स० । बहुत प्रीति करनेहार (त्रि०)।
 अनुरात्र, (त्रि०) रात्रि अनुगतः प्रा० स० । रातोरत ।
 -त्रं-अव्य० । रात्रने । प्रत्येक रात्रि । रात पीछे रात।
 अनुराधा, (स्त्री०) २७ नक्षत्रोंमें १७ वां नक्षत्र । अनु-
 गता राधा विशाखा । अला० स०।
 अनुसंध, हृषा० उभ० । निरोध करना । रोकना । बन्द
 करना ।
 अनुसूय, (अव्य०) हृष्य सादये योग्यत्वे वा अव्ययी० ।
 समानता । एह देगा । मानिन्द । योग्यता । "अर्ध-
 आपत्ति" सादश । योग्य (त्रि०)।
 अनुसूय, (पु०) अनु+सूय+पम् । रक्षावट । अनुसरण ।
 पीछे करना । शेष करने योग्य सासी आदिही अभि-
 शासको पूरा करनेकी इच्छा।
 अनुसूय, (पु०) अनु सूयं करे लप्यते लृप्+पम् । कर-
 कार करना।
 अनुसूय, (पु०) अनु+सूय+भावे षम् । करद्व आदिवा
 मलना । "हर्मिण षम्" । मद्ययथा बन्दतारि।
 अनुसूय, (पु०) अनु+सूयन् यथाक्रमे अव्ययी० अच् ।
 बधाक्रम । क्रमानुसार सिद्धिदिशेत्।
 अनुसूय, (पु०) अनुसूयन् यथाक्रमे षम् । अनु-
 सूय । विवाहस्य शयिवा आदि शिष्योर्षि ब्रह्मण आदि
 उक्त्यवर्णोष्ठे उभय वृक्षा मूर्धनिष्ठिक आदि छंदीयै
 (मित्तदुभा) बर्षे।

अनुसूय, (पु०) अनुगतो वनेनमासाध्यादेरिष्ट
 अला० स० । अनु+सूय+प्युद् । खासी आदिही ।
 पूरा करना । अनुसूय । छिदाज । रक्षावट । पीछे
 अनुसूय, (पु०) वं अनुगतो दूतान्तः । परम्पराय
 न्त । सान्दानते मिलता सुकता हाल।
 अनुयाक, (पु०) अनु+उच्यते+वच्+धन् । कुर्वं ।
 ऋग्भिरौष । ऋग् बी मनुसम्ह । वैदका
 वैदका भाग । शास्त्रनामने प्रसिद्ध।
 अनुयाय्या, (स्त्री०) अनु+वच्+प्यत् कुर्वं ।
 नामी ऋत्विग्भेदेष्टे पदानि योग्य देवताके सुलनेक
 वैदिकतोत्र । वैदिकविधि।
 अनुयाय, (पु०) अनु+वच्+पम् । जानेगये अर्थको
 करना । सिद्ध (बनादुभा) की रचना । द्यारै ।
 जानेदुए अर्थको पावते करना । बहेदुएको
 भाषामें करना । तर्जुमा।
 अनुयासन, (न०) अनु+वच्+प्युद् । पूरा करिं
 निष्पुत्र करना । सिद्धुत्र करना।
 अनुविधा, लु० उभ० । नियम बधाना । बाधा
 बहेदुएके पीछे चलना।
 अनुविधायिन, (त्रि०) अनु+वि+धा+दन् । आद
 पर्यावरैर । हुकम माननेवाल।
 अनुवृत्त, (त्रि०) अनु+वृत्+क् । फैलादुभा । पल
 पीछे गया । प्रीतिवाल । पीछे करनेहार।
 अनुवृत्ति, (स्त्री०) अनु+वृत्+क्तिन् । प्रवृत्तपणे
 बलत् । अनुसूय । सेवा । द्यारैही इच्छार बलत् ।
 हृष्य । व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्ध पहिले सुचोमें न
 दिवेगो पर आदिओ अगले सूचोमें देवतारूप अ
 अनुवृत्तम्, (अव्य०) फैला फैला । हारक । मिल
 अनुवृत्तम्, दि० प० । मारना । टकरान । पेशन।
 अनुवृत्तम्, (स्त्री०) अनु+वृत्+क्त् । अनुसरण
 रूप सेवन । सेवा । पीछे करना।
 अनुवृत्त, (त्रि०) अनुवृत्तं वर्त=वर्त इत्य ब० ।
 बारी । धर्मन्वा । मक्।
 अनुवृत्त, (त्रि०) एतेन कीन्- एत+उत् । ए
 छरीया मदा।
 अनुवृत्त, (पु०) अनु+वृत्+क्त् । अलन हेव । अनु-
 वृत्तपण, पहिला वैर । सोप्रने योग्य बलु
 अनुवृत्त, अनु+वृत्+दन् । वर्तके एत हे
 बलत्के अर्थको एतार एतान्तनुक्त सूचोके
 क्षेत्रके विवे करनेको ज्ञान हुआ एत । एत
 (त्रि०)।

अनुदासन, (न०) अनु+दास+ल्युट् । शयन । आसन ।
 हुषम । उपदेश । हुषम करना । "शिवने क्षणतानं
 स्थानादिना" इति करणे ल्युट् । शायभूता (जो उपदेश
 करनेके योग्य नहीं) शब्दोंमेंसे चुक कर उपदेश करने
 योग्य शब्दोंका समताना । जैसे व्याकरणमें अणुनासनों-
 मेंसे मायुशब्दोंकी विवेचना कर बोधन किया जाता है ।

अनुरी, अदा० आ० । छेड़ना । छिप्रीके साथ गो जना ।
 पठाना ।

अनुशीलन, (न०) अनु+शु० शील+ल्युट् । बार बार
 विचारना । बार बार अभ्यास करना ।

अनुशोचन, (न०) अनु+शुच+ल्युट् । शोक । "स्वर्गं
 शिवि मुचि" शोक करना (दही अर्थमें) "अनुशोच-
 ना" (श्री०) ।

अनुश्रव, (पु०) अनुश्रुयते गुह्यरम्परया उधारणा अनु
 अभ्यसते, श्रुयते एव न तु केनापि श्रियते वा अनु+शु+
 अच् । गुह्यरम्परये उधारणके अनन्तर जियका अभ्यास
 किया जाता है, अथवा सुनाही जाता है छिपीमें किया
 नहीं जाता । वेद । (श्रुका सुना जानाही श्रवणे माना
 है) बुद्धिमान्, Vad. ।

अनुपद्म, (पु०) अनु+पद्म+पञ्चुक्त्वं । दसा । शायक
 (छिपी वस्तुमें रग जाना) । एक स्थानमें सुने गये
 पदको दूसरे स्थानमें अन्वयके लिये खंचना । सम्बन्ध ।
 प्रथाम् ।

अनुष्टुप्, (श्री०) अनु+श्लुम्+किच् पञ्च । सरयती ।
 आठ आठ अक्षरके पादका छन्द (अष्टाक्षरछन्द) ।

अनुष्ठान, (न०) अनु+स्था+भावे ल्युट् पञ्च । वेदशास्त्रमें
 विधान श्रिये गये कर्मका करना ।

अनुष्ण, (त्रि०) उष्णः दसः न० त० । आलसी । उष्णमें
 शिर (शीत) । कमल (न०) । आलसी जीव शीतकी
 पीनाके न होनेपरमी शीतपीनाका अभिनय (अवस्था-
 नुकरण=कडक) करदाहृशा करने योग्य काममें जड
 (मूर्ख) की नार्ई होता है परन्तु बचुर, शीत होनेपरमी
 उसे कुछ न मानकर कर्तव्य करनेको (अत्रट् बुद्धि-
 मान्) हुआ रग जाता है, इस प्रकार उन (मूर्खबुद्धि-
 मान्) को उष्ण और अनुष्ण कहा जाता है । (एक
 काम करनेके लिये गरम और दूसरा अर्थात् मूर्ख शीतकी
 नार्ई होता है) । (यहां करनेकालके अर्थमें कन् प्रत्यय
 दाहर) "अनुष्णक" शब्दमी सिद्ध होता है ।

अनुष्णचक्षुषिका, (श्री०) अनुष्णा शीतज्य बर्हीव, इवापे
 क, दापि, अत्र । जो वेदकी नार्ई शीतल हो । "सापे क"
 शीतल चेत ।

अनुप्राय, (त्रि०) प्रायं ल्यु शारत्तर्त्तम् । ल
 गते । प्रायं शि० शि० । लोकरके ली । शब्दका
 प्रयोग करने की । शिरीकी शब्दप्रयोग ।

अनुपमनन, अन्० उन्० । मन शीत शब्दम् ।

अनुपमन्या, पु० उन्० । शोचन । शयन करना ।
 पाठ करना । शारत्तर्त्तम् । शयन करना

अनुपमन्यान, (न०) अनु+मन्+भवा+ल्युट् । शोचन
 (शयन करना=शुचन) । शिन्ना करना (शोचन) ।

अनुपमन, (न०) अनु+मन्+ल्युट् । पीने जल । पी
 करना । एक जगह बनना । "मो पत्" । कन्
 (इगी) अर्थमें ।

अनुपमूर, अन्० प० । पीला करना ।

अनुपम्यं, (अन्०) म्यं अनुपाम् । मन्की पीट ।

अनुमरणं, अनु+मृ+ल्युट् । शिष्टनेना । शि कने ल्यु ।
 शब्दप्रदान । पश्चात् समवेत्तरिषा । श्री जो मृदुके दस
 दान बीमर्द पारोक्षमें वैतरनी नदीके त्रैलोक्ये हर
 देनी है ।

अनुस्यूत, (त्रि०) अनु+स्यू+ल्युट् । प्रदित । (उन्-
 हुआ) निरन्तर मिश्रणका (जैसे अक्षत कटपत्तई) ।

अनुस्वार, (पु०) अनु+स्व+पञ्च । उदात्तादि मन्वर
 मन्वरणा एव मन्वाः अनुस्वाः मन्वात् अन्० प० ।
 उदात्तादि मन्वरके होनेसे शस्वर्णही मन्वर है उन्
 पीला करनेहार (मन्वरके आश्रयसे उच्चारण कितने
 विन्दुमात्रसे प्रथाम् श्रियगया) सुगममिन् नलिहने
 बोलगया (अनुनासिक) वर्णका एक नेद "अनुस्वा
 और विगम" इस प्रकार प्रारम्भ कर "वे अण
 स्थानके भागी होते हैं" रिया करनेसे अनुस्वाके
 तयन्व (ऊपर कहा गया उदात्त)हो गया है । विन्दु(-)

अनुहरण, (पु०) अनु+हृ+ल्युट् । देख, मन्वर, वेद
 आदिसे एक जैसा करना वा दिखाना । समान वर्णों
 आविष्कार करना ।

अनुह, अन्० प० । अनुकरण । नकल करना ।

अनुक, (पु०) अनु+उक्+मन्वाये+क+उत्वं नि० । निज
 जन्म । उल । समाव (न०) ।

अनुचान, (पु०) अनु+वच्+कान नि० । शिक्षा आदि
 वात्रोपदिष्ट वेदको पढनेहार । वेदके अर्थको अनुचान
 (वर्णन) करनेमें समर्थ ।

अनुन, (त्रि०) ऊन+क न० त० । न बोहा । पारि
 (मरुद्गया) । सार । बहीन (नक्षत्र) । नूनं (शिथिल)
 न० त० । अनिश्चित । जिसका निश्चय न हो ।

अनूप, (प्रि०) अनुगुणा आगे यत्र ७ ब० । अच् स० । आत उत्तम् । जलप्राय देश (ऐसा स्थान कि जहाँ जलही जल हो) । उग स्थानमें सदा वास करनेहार महिष (भैया) । "बढ़ देश कि जहाँ बहुत जल, वृष, वात, श्लेष्म, रोग हों उसे अनूप कहते हैं" । एक देशभिषोय (पु०) । अनूपचार नामसे प्रसिद्ध एक देश.

अनूपज, (न०) अनूपे (जलप्रायदेशे) जायते जन्म+उ ७ त० । धारा वा अक्षरक इम नामसे प्रसिद्ध । आर्यक । बढ़ प्रायः जलमें उत्पन्न होता है । जो कुछ राजल देशमें उत्पन्न हो (प्रि०) .

अनूप्य, (पु०) न हा ऊरु यस्य ब० । सूर्यका सारथि अरण । धिनताका सबसे बड़ा पुत्र । अनी गर्भ पूर्ण नहीं हुआ और मालाने अण्डेको फोड़ डाला इतने ऊरु आदि अंगोंमें विकलता होगई ऐसा पुराणमें प्रसिद्ध है.

अनूपसारथि, (पु०) अनूप सारथिः (रथनिधन्ता) यस्य ब० । जिसके रथको अनूप हाँवता है । सूर्य.

अनुच, (पु०) नास्ति अभ्यस्तया ऋक् यस्य अच् स० । जिसने ऋक् अर्थात् ऋगादि वेदोंका अभ्यास नहीं किया । ऋक्षस्य अनुपनीत (जिसका यज्ञोपवीत नहीं हुआ) बालक.

अनुत्, (न०) ऋत्नं (सत्यं) न० त० । सत्यमें निष्ठ, अथवाप्यं (शूद्र) । लोकमें प्रायः इन्द्रा स्ववहार कथनमें ही देखाजाता है, वही बस्तुमेंही जैसे रत्न (राक्ष-धातु-मेद) में चाँदी आदि । बढ़ चाँदी ऐसा हानमी होता है (बढ़ मिथ्याज्ञान है) । तद्रति (प्रि०) ७ ब० । कागिज्य (व्यापार) (न०) इसमें शूद्र बहुत होता है.

अनुत्, (पु०) न ऋत्नं न० त० । बेमोलिम । बेवहार । अथवाप्यं सनय.

अनेक, (प्रि०) इक न० त० । एकसे निष्ठ बहुत । "पत-न्वनेके अल्पेऽपिबोर्मयः" इति माया.

अनेकधा, (अन्व०) अनेकधा । कई प्रकारसे.

अनेकप, (पु०) अनेकान्यां (सुखसुखान्यां) द्वाभ्यां विभक्ति पाठक । जो सुख और सुखसे पीता है । हादी.

अनेकरूप, (प्रि०) अनेकानि बहूनि रूपानि अस्य ब० । जिसके बहुत रूप हों । विचरण (जिसके रूप माना-प्रकारके हों) .

अनेकदा, (अन्व०) बीप्यार्थे कारके स्यात् । बहुत बार बार प्रकार । अक्षर.

अनेकान्त, (प्रि०) न एक एक अन्त परिच्छेदो वाच्य ब० । जो एक रूपसे नहीं भाषा वा विचार किया जाता । जिसके रूपका कुछ निदम न हो । जिससे अधिक और कोई न हो.

अनेकान्तयादिन्, (पु०) अस्ति नास्ति वा इति एवान्तं न वदति । वद्+णिनि २ त० । है, वा नहीं है, इस प्रकार निदममें जो नहीं बोलता । बौद्धमेद.

अनेजत्, (प्रि०) न एजत् । न कानेबाद्य । सदा एक प्रकारका । सर्वदेवस्वय प्रद्व.

अनेडः, (पु०) न एडः न० त० । मूर्ख । बदमाश । बेवहक.

अनेडमूक, (प्रि०) एषो बहिरो मूको बचनशक्तिरहितः नास्ति यस्मात् ५ ब० । (बाल, बोवा) इस प्रकार प्रसिद्ध सुभे और बोलनेकी शक्तिसे रहित । (दोरा, गुप्ता) । घट । धूर्त.

अनेहस्, (पु०) न ह्यन्वे, हन्+अति (धातुको "एह" आदेश हो जाता है) । जिसे मार नहीं जाता । बाल.

अनेकान्तिक, (पु०) एकान्तं निवर्तं प्राप्नोति, एकान्त+ठक् न० त० । व्यतीचारी (हेतु और साध्यका साहचर्या-भाव अर्थात् इच्छा न रहना) दुष्ट हेतु । जैसे धूनको मिट्ट करनेके लिये अधिको हेतु कहना । जिसकी व्याप्ति (साहचर्यानिवर्त) निवर्त नहीं । "अनेकान्त" गी इय अर्थमें हो स्यात् है.

अनेक्यं, (न०) (न ऐत्र्यं एकस्य भावः सत्) बहुलका होना । एक न होना । बहुतायत.

अनो, (अन्व०) न नो । नहीं.

अनोक्त्यादिन्, (पु०) अनोक्ते=अण्डे सेते स्त्री+निनि । घरमें न सोनेवाला । अशुक्.

अनोक्तह, (पु०) अनस्य पाठस्तस्य अकं गति इति-हन्+ह । जो गरीकी गतिको रोकता है । वृक्ष.

अनोक्त, (प्रि०) अनोक्तः-न० त० । अण्डे इस समिप्र अक्षरसे न सेवा किया.

अनोक्तस्य, (न०) न औदयं न० त० । अक्षरकारका न होना । निनय । हीनता.

अनोरस, (प्रि०) उरयु+अच् न० त० । एही छानेसे न उत्पन्न हुआ । जो सग्य नहीं । जो किसीका अपना नहीं । बदबदी । दस्तक (जैसे पुत्र) .

अन्त, (न०) अन्+तन् । सत्य स्वमथ । दोरे पु० । न० नरा । बोवा । हीमा (हर) । निधय । अक्षर(अंग) । (पु०) निकट । मनोहर

अन्तान्तरण, (न०) ह्+करणे लुट् । अन्तरान्तरणं तद्वृत्तारण्यर्थां इनादीनां वा करणं बर्मे ६ त० । अन्तरण कापन । अक्षरका मीर रहनेहरे इन अक्षरका कापन । अक्षरका इन, मुख आदिवा कापन अक्षरका इतिव जो मन, बुद्धि, चित्त आदि पदोंसे बोला स्यात् है.

अन्तःकुटिल, (पु०) अन्तर्मध्ये कुटिलः । जो बीचमें कुटिल (टेढ़ा) हो । बीचमें टेढ़े आकारके अक्षरोंवाला संज्ञा । जिसका मन (अन्तःकरण) टेढ़ा हो ।

अन्तःपथ, (त्रि०) अन्तः समागतः पन्थाः । भीतर आसपास मार्ग । रास्ता ।

अन्तःपदवी, (स्त्री०) सुपुण्यामध्यगतः पन्थाः । सुपुण्यानां-कीके बीचका मार्ग ।

अन्तःपुरम्, (न०) अन्तः=अभ्यन्तरे पुरं=एहं । पुरम् अन्तः स्थितम् । भीतरका घर । अपना शहरके भीतर । जनानखाना ।

अन्तःपुर, (न०) अन्तरभ्यन्तरे पुरं एहं, कर्म० । (अन्दर) इस प्रकार प्रसिद्ध राजाओंकी त्रियोंके निवास-योग्य घर । वहाँ रहनेमें "राजाकी छी" यह भी अर्थ बनता है । इसी अर्थमें "अन्तःपुरी" यह भी होता है ।

अन्तःपुरिक, (पु०) अन्तःपुरे नियुक्तः टन् । अन्तःपुरमें नियत किया गया । अन्तःपुरका ।

अन्तःप्रज्ञ, (त्रि०) अन्तः प्रज्ञा यस्य व० । भीतरके ज्ञान-वाला । आत्माके जागृताला । चमका हुआ अपना आप ।

अन्तःसंज्ञ, (त्रि०) अन्तः संज्ञा यस्य व० । अन्तः भीतर-की संज्ञा चेतना । होशवाला ।

अन्तःसत्त्वा, (स्त्री०) अन्तरभ्यन्तरे गर्भे सत्त्वं प्राणी यस्याः व० । जिसके गर्भमें प्राणी रहे । गर्भिणी स्त्री ।

अन्तःसत्त्वा, (स्त्री०) अन्तः सत्त्वं जीवः यस्याः व० । जिसके भीतर जीव प्राणी हो गर्भवती स्त्री । गायन औरत ।

अन्तःसलिल, (त्रि०) अन्तः सलिलं यस्य व० । पृथिवीके नीचे जलवाला । भीतर सरल वृक्षवाला ।

अन्तःसार, (त्रि०) अन्तः सारः यस्य व० । भीतरकी ताकत चलावाला । भीतरके कोरवाला ।

अन्तःस्थ, (त्रि०) अन्तः स्थिति । मध्य । दर्मियानमें होना । बीचमें होना । "य-र-ज-न" के त्रिये व्याकरणकी संज्ञा । येमी स्वर और व्यञ्जनों मध्यमें ठरहते हैं और ताड़ आदिके बोझाया छूट्टर बोले जाते हैं ।

अन्तःस्वेद, (पु०) अन्तः स्वेदो मदस्वन्दं परमजठं यस्य व० । जिसके भीतर मद बहे अथवा पसीनेका जठ बहे । मद बहानेहाय हाथी । मसल हाथी ।

अन्तःक, (पु०) अन्तं करोति, अन्त+कृ करोतीत्यर्थे नि+ञ्जुल् । अन्त करनेहाय । सम । नाश करनेहाय (त्रि०) ।

अन्तःकट, (त्रि०) अन्तं नाशं करोति कृ+ट, उ० । घात करनेहाय ।

अन्तःग, (त्रि०) अन्तं अवधानं गच्छति, गम्+ङ् । पार जानेहाय । किसी कर्मके अवधानक पहुँच गया । क अन्त गत कर रही अर्थमें ।

अन्तःज, (त्रि०) अन्तं जगते जन्म+ङ् । अपने हीतरा हुआ ।

अन्तःपाल, (पु०) अन्तं पालयति । भीमा इष्टी इष्टं पालेहास । गमान् ।

अन्तः, (शब्द०) अन्तः पुत्रागतः । मध्य । बीच । मां स्त्रीकार । विना ।

अन्तर, (न०) अन्तं शक्ती दृशती, गम्+ङ् । अन्तः अवधि । इष्ट । परिनेसा काग । जिनः । मेद । ई आगमें विवक्षण हो । सिमेय । उपसन्न अर्थ । जि । अपना । विना । बाहिर । कर्क । बीच=पार्श्व । (इत्यन्तं त्रिये प्रत्येका उदाहरण हे) ।

अन्तरभि, (पु०) अन्तः=मध्यगतः अभिः । अन्तं अभि । अन्तको पचानेवाला जठरगुह्य ।

अन्तरङ्ग, (त्रि०) अन्तर्मध्येऽन्तानि यस्य । अन्तः । कर्णशाश्रुमें प्रवृत्ति (पात्रु) और प्रयत्नके करने प्रवृत्तिके आश्रय कर्म ।

अन्तरतम, (त्रि०) अन्तिसयेन अन्तरः । बहुत नीचे पहुंचती निक्षट । पहुंचती अंदर ।

अन्तरा, (अव्य०) अन्तरेति इगु+श । निक्षट । अन्तः विना ।

अन्तरात्मा, (पु०) अन्तर्वर्ती आत्मा । भीतर की आत्मा । अन्तःकरण (मन) । सगन्तवर्ती परलोक अन्तःकरणका अस्मिन्मानी जीव ।

अन्तराय, (पु०) अन्तः=मध्यवधानं अवरो, अङ्+अरं विघ्न । इकावट । फरक बलनेहाय (त्रि०) ।

अन्तराल, (न०) अन्तरे मध्यस्थानं आपृति छ आ+शु+ङ्, रस्य ल्यङ् । मध्य । बीच । हाथे । "आन्तराल" भी होता है ।

अन्तरि, अदा० प० । अन्तरु+इ । दोनके बीचमें कर किसीके रखनेमें खडे होजाना ।

अन्तरिक्ष, (न०) अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईश्वरे, । कर्मणि पम् । अन्तः श्रुत्यानि वा यस्य पृथो० । पहले ईश्वरकास्य स्थितं वा । जो स्वर्ग और पृथिवीके बीच में जाता है । अथवा जहाँ नक्षत्र हो । पृथी और वेद संधारयोग्य । पृथिवी और सूर्यके मध्यमें रहनेहाय आशका स्थान । मदी "अन्तरीक्ष" ऐना शब्दभी होता ।

अन्तरित, (त्रि०) अन्तरु+इत् कर्त्तरि क् २ त० । अन्तः अवधानं करोतीति किति कर्मणि क् वा । बीचमें आश विस्कार किया गया ।

अन्तरीप, (पु०) अन्तर्मध्ये गता आपोऽस्य व० । घात आश ईदं । जिसके मध्यमें आस ही । दीप । अर्थ

अन्तरीय, (न०) अन्तरे भवं+उ । पहिरनेका बख । मागीपर धारण किया गया और दोनों ओरके बिन कटा जो कपडा जातुओं (घुटनों) को आच्छादन करके "उसे अन्तरीय कहते हैं" होती.

अन्तराय, अन्ते+भवं+उ । भीतरका । अन्दरकी पीचाक । "अतिशिक्षितानांशुक्रान्तरीयम्".

अन्तरे, (अव्य०) अन्तरेति इण्+विच् । मध्य । बीच.

अन्तरेण, (अव्य०) अन्तरेति, इण्+ण । बिना । मध्य.

अन्तर्गद्गु, (वि०) अन्तर्मध्ये गद्गुविभ निरर्थकः । ग्रीवा (गर्दन) प्रदेशमें उत्पन्न हुए गलेके मांसपिण्डको जेठे निष्प्रयोजनता है उसी प्रकार निरर्थक । बाह्यके मध्यमें जो गद्गुके समान है वह अलङ्कार तो नहीं परन्तु उसे प्रदेश-लिङ्गा अथवा मुहारात करते हैं.

अन्तर्गृह, (न०) अन्तर्गृहस्य । घरके मध्यमें । बाड़ीमें सतबरणवाला (सान पदोंका) स्थानविशेष.

अन्तर्जट, (न०) अन्तर्जटस्य । जट (पेट) के बीच । कुशिके बीच एक कोटा.

अन्तर्जम्भ, (पु०) सादनस्थानं जम्भः, दन्तर्ग्वलोरन्त-उ-स्य् । मुँहे भीतर जबड़ोंका स्थान.

अन्तर्जल, (न०) अन्तर्जलस्य (अव्य०) । जलके बीच । जलके मध्यमें करने योग्य अपमर्षण मन्त्रका उप । (ऋत्वं च सर्वं चामीदा० यह मन्त्र है).

अन्तर्जात, (वि०) अन्तः जातः । भीतर उत्पन्न हुआ.

अन्तर्ज्योतिः, (न०) अन्तः ज्योतिरिव प्रकाशके । भीतर ज्योतिर्की तरह प्रकाश करनेवाला । अन्तर्ज्योतिः.

अन्तर्दाह, (पु०) अन्तर्मध्ये दाहः दह्+पञ् । देहके भीतर सन्नाप । बोटे (पेट) का सन्नाप.

अन्तर्दृष्टिः, (स्त्री०) भीतरकी नजर । आत्माकी परीक्षा करनेवाली दृष्टि । अपने आपमें देखना.

अन्तर्द्वार, (पु०) अन्तर्मध्ये द्वारः । घरके बीचका पुनर्द्वार.

अन्तर्द्वान, (न०) अन्तर्द्वान्+स्तुट् । छिपना । देखने योग्य पदार्थके न देख सकनेवाले स्थानमें टहरना । मुनि आदिशैशव तीरथ छोड़ना.

अन्तर्दि, (पु०) अन्तर्+धा+कि । आच्छादन (ढकना) । व्यवधान । (बीचमें आना) छिपना.

अन्तर्निहित, (वि०) अन्तर्+नि+धा+क् । भीतर रखना गया.

अन्तर्भूत, (वि०) अन्तर्मध्ये भूतः, भू+क् । बीचमें रहा । बीचमें गया.

अन्तर्भेद, (पु०) अन्तः भेदः दन्तिच्+० । भीतर । घरका भेदभूत । "अन्तर्भेदात्तुलं गेहं नभित्तिरिच्छति".

अन्तर्मादायस्थ, (वि०) अन्तः मदस्य अयस्था यस्य । जिय हाथीका मद भीतर छिपा हो । भीतरके मदवाला.

अन्तर्मानस, (वि०) अन्तर्गतं बाह्यव्यापाराद्यमतया अन्तरेवासितं मनो यस्य । बाहिरके व्यापारको न सहन करनेके कारण जितका मन भीतरही स्थित हो रहा है । जितका मन एकाग्र हो । व्यापुलचित्त.

अन्तर्मातृका, (स्त्री०) अन्तः स्यात् पदेष्वस्य मातृका अकारादिषणोः । भीतर धारीके छ चकोकी अक्षरावली । भीतरकी मां.

अन्तर्मुख, (वि०)-धी । अन्तः मुखं यम्-यस्या धा-ब० । भीतर मुखाल-वादी । मुखमें जानेवाला । भीतरको दिखानेवाला । भीतरका रास्ता खुलजाना । वह चित्त जो बाहिरकी वस्तुका परित्याग करके परमात्माने परमात्मा-हीकी शुकतादे.

अन्तर्मुद्र, (वि०) अन्तः मुद्रा यस्य । जितके भीतर मोहर लग चुकी है । भीतरके विज्ञानवाला न० । एक प्रकारकी भाँक.

अन्तर्पामिन्, (पु०) अन्तर्मध्येऽपुत्रविद्य यमयति सस-कर्मणि इन्द्रियादीनि जीवं वा व्यापारयति, यम्+मिच्+णिनि । जो भीतर प्रवेश करके इन्द्रियारि किया जीवको अपने अपने काममें लगाता है । बायु । "जो भीतर आवेशकर आत्मवेष्टु (निब्रव्यापार अर्थात् प्राणादिगुण)-ओसे जीवोंको धारण किया पोषण करता है" ऐसे लक्षण-वाला ईश्वर । "अन्तरेण यमयती"त्यादि बृहदारण्यकान्त-र्कामिन्नाद्यणोक्तः । भीतरकी बातको जानेवाला (वि०).

अन्तर्प्रेमिन्-मिः, (पु०) अन्तः स्थित एव उद्गारात्वं कारयति यण्+इन् । भीतर रह करही उद्गार=उद्धारके शब्दको सता है । अर्थात् । अनपच.

अन्तर्प्रेक्षिक, (वि०) अन्तर्प्रेक्षे सहाभाव्यन्तररुहे निमुक्तः निमुक्तापेठ । राजाओके परीमें रसने लिये लगावापदा बुझना जानन आदि.

अन्तर्प्रेक्षिक-वर्तिकः, (पु०) अन्तर्प्रेक्षे-वत्ते निमुक्तः टच् । अन्तः पुरका अभ्यस्य । जनानरानेका टाटिम पूरी रखवाली करनेवाला.

अन्तर्प्रेक्षे-बाध, (न०) अन्तः स्थितं बध्न् । भीतरकी पीचाक.

अन्तर्प्रेक्षी, (स्त्री०) अन्तरस्य अस्ति मनेः । अन्तर्+मनुप्+नि० । गर्भवर्ती स्त्री.

अन्तर्धो, (वि०) अन्तः अन्तरह्मभवं अन्तः हरणं वरि-गच्छती किञ्चनेन, धा+विच् । अन्तः पार होनेसे मनके पीठे बन्देवाला । अपने बच्चों का पटुओंके सन्त-दिशनेवाला.

अन्तर्वीणा, (वि०) अन्तर्गता अन्तःकरणे स्थिता शास्त्र-
वाक्यान्विता वाणी यस्य व० । न क्व हृद्य । यन्तसे
शास्त्रिके वाक्योक्तौ जनेहारा पण्डित.

अन्तर्वेदी, (श्री०) पृथिव्या मन्थस्थित्वात् अन्तर्वेदीय ।
हरिद्वारसे छे प्रयाग (अथाहाबाद) तक शशास्त्री और
ब्रह्मवर्त नामसे प्रसिद्ध देश.

अन्तर्हस्तिन्, (वि०) हस्तस्य अन्तःभवः+हस्त+न् ।
हाथमें छिपा हुआ । जहाँ हाथ पहुँच सके.

अन्तर्हास, (पु०) अन्तः हासः यस्य व० । नीतर हसना
ओठ न फुरे । गुप्तहास.

अन्तर्हित, (वि०) अन्तर्+धा+क् । गुप्त । छिपाहुआ.

अन्तर्हृदयं, (न०) हृदयस्य अन्तः । हृदयका मध्य.

अ(न्तर्)वासिन्, (पु०) अन्ते समीपे वस्तुं शीलं अस्य वग्+
निन् । गमन्या वा तुम् । जिघृक्षा पायही रहनेका स्वभाव
हो । छिन्न । चला । श्रियां टीप् । पाग रहनेहारा (वि०).

अन्तर्जाय्या, (श्री०) दायनं शय्या शीर्ष+जयप् । अन्तस्य
जानयं शय्या, वस्तुस्थिति १२० । मरनेके छिये पृथिवीपर
छेटना । मसान (क्योंकि यहाँ भूमिदायन कराया जाता
है) मरना.

अन्तर्गद्, (पु०) अन्ते=गुप्तसमीपे सीदति=गच्छति । गुप्तके
वग जगद् । छिन्न.

अन्तर्गतायिन्, (पु०) नगरेतानी अन्तं धरमस्तुं
छेत्तु इति अन्त, अन्तर्गतायिन्+युक् । नय केन
कटनेहारा । नदो । "अन्ते शूद्रे वर्णाद्य अवस्थाति निशि-
न्तः शूद्रः" । जो बुद्धिसे तत्वका निरास करे । एक मुनि ।
"अन्तर्गतं अन्तेवर्तते अन्तर्गताय अवस्थाति" । जो अपनी
इच्छासे छिये जीवोक्तो जगद् करती है । जीवोक्ति द्वारा
बादेहारा कण्ठ अर्द्ध.

अन्तर्गत, (वि०) अन्तर्गते संशब्दे समीपेन-अन्तर्गताय
संशब्देनैविक सकार्यव टन् । जो वग रहे । स्वयं टनि ।
वग । (पु०) वग (न०) एक प्रकारकी धी वग (दारो).

अन्तर्गत, (श्री०) अन्तर्गते संशब्दे अन्तर्गताय
संशब्देनैविक सकार्यव टन् । जो वग रहे । स्वयं टनि ।
वग । (पु०) वग (न०) एक प्रकारकी धी वग (दारो).

अन्तर्गताय, (पु०) अन्तर्गते समीपे अवस्थिते अन्त-
र्गताय । वग रहनेहारा । अन्तर्गताय । वग.

अन्तर्गत, (वि०) अन्ते जग, अन्तर्गताय । अन्तर्गते
छेत्तु । अन्तर्गताय.

अन्तर्गताय, अन्ते वग । अन्तर्गते वग रहनेहारा । वग
रहनेहारा (पु०) । अन्ते अन्तर्गताय वग रहनेहारा । वग
रहनेहारा । अन्तर्गताय । वग रहनेहारा । वग ।
अन्तर्गताय । वग रहनेहारा । वग रहनेहारा । वग ।

अन्त्य, (पु०) अन्ते पर्यन्ते वनतीति । अन्तर्गत
सयमे पीछे रहे । चाण्डाल । मोया (श्री०) ।
वस्तु (वि०) जैसे नक्षत्रोंमें रेवती, छिये
अक्षरोंमें इकार इत्यादि । एक प्रकारकी वस्तु
१.....

अन्त्यज, (पु०) अन्तोऽपमः सन् जायते
शूद्र । क्योंकि वह ब्राह्मणादि चारोंवर्गोंमें नीच
हुआ । "रजक (कपडारंगनेहारा) बनेहारा (श्री०) ।
नद, वदन् (नीचमेद) कवने (मच्छीपकने)
मेद (नीचमेद) भिन्न" ये सात अन्त्यज कहे
इय प्रकार स्थितिमें कहेगये रजक आदि जो कहे
उपन हुआ हो (वि०).

अन्त्यजन्मन्, (पु०) अन्त्यं जन्म यस्य । दू-
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यके उत्पन्न होनेके अन्त्यज
पात्रोंसे उपजा.

अन्त्यधनं, (न०) अन्त्यं धनम् । व्याजरी आशीर्षी
आशीर्षी धन.

अन्त्यलोपः, (पु०) अन्त्यः लोपः । आशीर्षी अन्त्य-
ना । आशीर्षी नस्य.

अन्त्यायमायिन्, (पु०) "निपादरी श्री व
अन्त्यायमायी पुत्रको उत्पन्न करती है वह मयाने
है" इस प्रकार मनुष्य कहा गया मुरदाकरण
प्रसिद्ध संकीर्णार्ण । "चाण्डाल, मृगच, शम्भ
वैदेह, मागध, अयोगव" ये सात अन्त्यायमाय
इय प्रकार आश्रितसे स्मरण किये चाण्डालदि.

अन्त्येष्टि, (श्री०) इष्टियांगः यज्ञ+किन् । अन्त्य-
यज्ञका दाहादिभ्य अग्निम सन्धार । मुदो जन्ते
पातकान् दिवगतक ट्यादे विनिम जो सि
होना है.

अन्त्य, (न०) अन्त्यने देहो कथ्यतेऽनेन अति कथ-
देहा संबंध । आश्वीनी पुगीानी नारी.

अन्त्युक, (पु०) अन्त्यने कथ्यतेऽनेन अर्द्ध कथनेक
हस्य । हाकीदे पादका वपन (जरीर) । पशो.

अन्त्यु, (श्री०) अन्त्यने कथ्यतेऽनेन अर्द्ध+क
(जरीर) । श्रियोक्त पात्रोका मृग । वगजैव.

अन्त्यु, न शीतल-पु० टन० अर्द्ध मेद-अन्त्यु
अन्त्युप-न.

अन्त्यु, (वि०) अन्त्यवर्ति कान्ता न पर्यन्ति+अन्त्यु
आश्वीने वग । अन्त्यवर्तेन इति वगने पर्यन्ति
(अर्द्ध) । पशो (न०).

अन्धम्, (न०) अन्धयति । अन्धेरा । हल्की भूल । आत्मासी
अधिगता ।-ध (पु०) । अन्धयति-निर्वाणं गच्छति ।
इन्द्रियोपर पूरी आत्मा बलनेवाला संन्यासी । नष्ट इन्द्रियके
मिलने न मिलनेका उपसोगी शब्दभेद । मे० ध० मि० शब्दके
समन्, भोर मि० क० क० दिनके समय अन्धे होते हैं ।

अन्धक, (द्वि०) अन्ध+कृत् । अन्धा ।-कः (पु०) एक दैल-
का नाम जो बरपन और दिनिका पुत्र है । धीरहरने इसे
मारया । इसकी एक सहाय भुजा और दो सहाय नेत्र
थे । अर्घुनी समकदार आँखें रखकरभी अन्धके समान
चिरता था ।

अन्धक, (पु०) अन्धयति-अन्ध+शुल् । देवानेद । मुनि-
भेद । यदुंसीयोमिसे एक राजा । हिरण्यासका पुत्र ।
दैत्यभेद । अंधेरा (न०) ।

अन्धकरिपु, (पु०) अन्धकामरुस रिपुः । अंधकरैलके
शत्रु । शिव । "अन्धकस्य तमसो रिपौ" । अंधेरेका शत्रु ।
एवं । चन्द्र । अग्नि ।

अन्धकार, (पु० न०) अन्धं करोति-कृ+अन् उप० स० ।
तेजोभावे तमसि । प्रकाशका न होना । अंधेरा ।

अन्धकूप, (पु०) अन्धयतील्लम्बः स चासी कूप । अंधेरा
खूभा । "अन्ध कूपो यत्र" ७ ब० । जहाँ अंधेरा खूभा हो
एगा नरकभेद । "अन्धस्य दृष्टमवावस्य कूप इव" । दृष्टिके
नारा होनेका मानो खूभा है अर्थात् मोह (वह सम्पूर्ण
दृष्टिके नाशही कान है) ।

अन्धतमस, (न०) अन्धयति, अन्ध+अच्, ताम्भ्यति अनेनेति,
तम्+करणे लृटि कर्म० । बड़ा अंधेरा । "अन्धं अंधकार-
रके तामिले यत्र" ७ ब० । नरकविशेष । सांख्यशास्त्रमें
प्रसिद्ध भयविशेषका विषयअभिनिवेश ।

अन्धतामिस्रः-सं, (पु० न०) एरा कान । गाइ अंधेरा ।
विशेषतः आत्माका । देहके नष्ट होनेपर "मि ही नष्ट
हुआ" इस प्रकारका अहान । भारी अंधकारके पक्षेवाला ।
२१ नरकोंमिसे युगल जो परश्रामिओं का हत्यारोंको
मिलता है ।

अन्धमूर्धिका, (स्त्री०) अन्धं दृष्टभावं मुष्णाति । मुष्+
शुल् शीर्षः । देवताका कृश (इसका शेषन करनेसे अर्धो-
कीती आँखें खुल जाती हैं, वह बंधनाशमें प्रसिद्ध है) ।

अन्धमूर्धिका, (स्त्री०) अन्धं-दृष्टभावं मुष्णाति, मुष्-
शुल् । एक प्रकारका कृश वा कृश पान जिसका नाम
"देवनाथ" है इसके शेषनसे अंधेरी आँखें खुलजाती हैं ।

अन्धचरमन्, (पु०) अन्धं-सूर्यप्रकाशप्राप्तियत् कर्म
यत्र । बायुका सातवो पक्ष वा लोक जहाँ सूर्यका प्रकाश
नहीं होता ।

अन्धस्त, (न०) अद्यते, अद्+अस्तुर् युष् धय । अक्ष ।
भात । चावल ।

अन्धादिः-अहिक, (पु०) अन्धः अहिः । अंधा साप ।
विपरहित ।

अन्धिका, (स्त्री०) अन्धयति, अन्ध+शुल् । रात । जूएरा भेद ।
विद्या नाम औषधी । आन्दुवी नामी नेत्रका रोगभेद ।

अन्धु, (पु०) अन्ध+कृ । कूप । खूभा ।

अन्धुल, (पु०) अन्ध+उलच् । शिपिका कृश ।

अन्ध्र, (पु०) अन्ध+र । देवानेद । वहाँके लोग । जातिभेद ।

अप्र, (न०) अनिति अनेन-अन्+तन्-अद्यते इति वा-अद्+
कः जिसके द्वारा जीता है वा जो खाया जाता है ।
भात । गीठा अप्र+कचा अप्र । चावल जो आदि कचा
अप्र । पृथिवी (क्योकि वहाँ अप्र उपजता है इसलिये
उसे अप्र कहते हैं) ।

अप्रकोष्ठक, (पु०) अप्रस्य मीषादेः स्तन्यं कोष्ठमिव,
अल्पार्थे कन् । चावल आदिका छोटा कोठा । अप्रका
कोठा (कुटी)

अप्रगन्धि, (पु०) अप्रस्य गन्ध इव गन्धो यस्य च० । इत्-
भासान्त । अप्रके गन्धके समान जिसका गन्ध हो । अति-
सार । पेटका रोग । "अप्रस्य गन्धो लेशो यत्र" ७ ब० ।
थोडे अप्रके भोजनवाला (द्वि०) ।

अप्रजलं, (न०) अप्रं जलं च । स० इ० । अप्र और जल ।
खान पान ।

अप्रदासः, (पु०) अप्रेन फालिगो दासः । शाक० त० । अप्र-
मात्रपर काम करनेवाला नौकर ।

अप्रदान, (न०) प्रकृतं विधानेन प्रथममाशनं प्रादानं
६ त० । छंटे वा आठवें महीनेके आदिमें शाश्रुतिथिसे
बावट आदिको पहिले अप्र खिलाना ।

अप्रमय, (पु०) अप्रस्य विकार, अप्र+विकारार्थे मयद् ।
रथल शरीर (यह अप्रहीका विकार है) । अप्रका विकार
(द्वि०) । "अप्रमये हि सौम्य । मनः" इति मुनिः ।

अप्रविकार, (पु०) पि+कृ+पच् ६ त० । अप्रका विकार ।
छोह और मांस आदिके पकनेसे उपजा अन्तिम धानु ।
सुक ।

अप्राद्, (द्वि०) अप्रं अति । अप्र खानेकाल । शीतमि ।
भटकीनी अउरामिकाल ।

अप्रादान, (न०) अप्रस्य विधानेनादानम् । निषिधे अप्रका
खिलना अप्रदानके अर्थमें ।

अन्ध, (द्वि०) अन्-अन्धा० अः । निप्र । समान । यह
सर्वनाम है ।

व्ययव्यतिरेकिन्, (वि०) अन्वयव्यतिरेकी कोऽयम् ।
 साधुको निन्द करनेवाला हेतुविशेष । (जिसमें अन्वय
 और व्यतिरेक दोनों बन सके) " जंग बहिको निन्द
 करनेमें धूम हेतु है, यह बहिको महानम (पाकशास्त्र)
 आदिमें, और बहिके अभववाले जल आदिमें भागभङ्ग-
 रूपमें बहिके साथ अन्वयव्यय और व्यतिरेकव्यय है"
 इस प्रकार व्यायनमें प्रसिद्ध है-

व्ययव्याप्ति, (स्त्री०) अन्वयेन व्याप्तिर्भाषने नियतया
 स्थितिः ३ स० । अन्वयके साथ नियममें रहना । जहाँ
 धूम होगा वहाँ बहि भी होगा इस प्रकारकी व्याप्ति।

व्ययार्थः, (द्वि०) अनुगत-अर्थ-प्र-स० । जिसका अर्थ
 स्पष्ट हो । यथार्थ । अर्थानुसारी।

व्ययपदसंग, (पु०) अनु+अव+यत्+पम् । " जैसा चाहते
 हो करो " इस प्रकारकी आशा।

व्ययप्राय, (पु०) अन्वयव्यते स्वरपदान्तसंबन्धते-अनु+
 अव+अय्+पम् । इन्+कर्त्तरि अच् वा । वंसा । सन्तान।

व्ययपट्टा, (स्त्री०) अनुपपन्न अष्टकांशला० स० । पौप-
 माप-म-ल्युन-और आशिनके कृष्णवर्षाकी नवमीकी सामिक
 लोकिका धाद।

व्ययह, (अव्य०) अहि अहि । क्षीणार्थेऽव्ययीभावः अन् ।
 प्रतिदिन।

व्ययव्यायानं, (न०) आरव्याने अनुगतम् । पहिले बड़े-
 हुएका समिस्तर बर्णन।

व्ययाचय, (पु०) एकस्य प्राधान्यात् अन्य आनीयते
 बोधते य-अनु+आ+वि+आधारे अन् । एकही प्रधान-
 ताके जहाँ द्वारा जनलया जाता है । उद्देश्यकी सिद्धिसे
 जहाँ अनुद्देश्यकी सिद्धिभी समझी जाय । जैसे मिधाके
 छिपे जा यदि गौको देखो तो उसे ले आना, यहाँ मिधा-
 हीमें उद्देश (सात्त्विक) है समझमें नहीं, उगदी सिद्धिके
 अनन्तर गौका जाना अनुद्दिमी साधकहृत्तमें निर्दिष्ट
 हुआ है । सयुक्त । मिळानुआ । जहाँ मुरयके साथ गौगमी
 मिळारहे।

व्ययाज, (अव्य०) अन्वाजयति अनेन । अनु+आ+जि+ङे ।
 दुबैलकी सहायता करना।

व्ययादेश, (पु०) अनु+आ+दिग्+पम् । पूर्वोपास्य
 मिथित कार्यान्तरं विधातुं पुनरपदेशे । पहिले एक काम
 करनेपर कुछ द्वारा काम करनेका फिर उपदेश करना ।
 जैसा इधने व्याकरण तो पढ़लिया अब इसे व्याय पढाये
 इस प्रकार व्यायपठके छिपे फिर उपदेश है । बहेगवयो
 फिर बहना । अनुवाद।

व्ययाधिः, (पु०) अनु+पधात्+आपीयते+धा+कि । जमा-
 नत । " मेरे बहनेपर ए फलनेकी फलनी बन्तु देदे"
 इस प्रकार जमानत देनेवाला।

अन्याधेय, (न०) अनु+आ+धात्+यत् । त्रीधनविशेष ।
 विक्रहे पीछे मानापितासे तथा भर्तृकुलसे एवं बंधुकुलसे
 श्रीको जो कुछ मिळारहे । पीछे बीगई वस्तु (त्रि०)।
 अन्याारम्भ, (त्रि०) अनु+आ+अरम्भ+फ । पीछे पृथकी
 और हर्षा किया गया।

अन्याारम्भ, भ्वा०आ० प्रारम्भ करना । शुरू करना । पूना-
 अन्याारह, भ्वा० प० साथ चटना । विशेषतः चितापर।

अन्यारोहणं, (न०) अनु+आ+रह+अन । लोका पतिके
 शरीरके साथ चितापर चटना।

अन्यार, अदा० आ० । पाय वा पीछे बैठना।

अन्यास्मन्, (न०) अनु+आम्+ल्युट् । पीछे बैठकर सेवा
 करना । दु च । पीछे सोचना । " आधारे ल्युटि" सिल-
 एह (बाररताला)।

अन्याहार्यं, (न०) अनु श्वासी, मासि मासि आहियते
 अनु+आ+हृ+कर्मणि ष्यत् । प्रतिमास करनेयोग्य अमा-
 वासाके दिन विधान कियागया धाद । " पितृणां
 मानिके धाद अन्वाहार्यं विद्वुंधाः" इति स्मृतिः ।
 मासिक धाद । यहकी दक्षिणा।

अन्याहार्यपचन, (पु०) अन्वाहार्यं धादप्र पच्यते-
 ऽनेन-यच्+करणे ल्युट् । जिसके द्वारा धादका अप पकाया
 जाता है । दक्षिणासि । कावेदकी विधिमें स्थापित अग्नि-
 अनु-र्=अग्नि, अदा० प० । अनुकरण करना । पीछे जाना ।
 आना । प्राप्त करना।

अन्यिष्, तुदा० प० । चाहना । तालास करना।

अन्यीश, (स्त्री०) अनु धवणात् अनु ईशा धुतार्थस्य
 युक्तायुक्तार्थलेखना-अनु+ईश् भावे अ । मुनेगये
 अर्थका युक्तायुक्त विचार करना । वेदवाक्य मुनेके धन-
 न्तर उसके अर्थका विचार करना । इत्थीतिमे इस कामकी
 पूरा करनेहारी विद्याका नाम जन्वीक्षिणी कहा जाता है।

अन्यीप, (द्वि०) अनुगता+आपो यत् । पानीके पास ।
 जलके पास रहनाहुआ।

अन्यृचम्, (अव्य०) अचं अनुगतम् । एक मन्त्र वा श्लो-
 कके धनन्तर दूसरा।

अन्येषण, (न०) अनु+श्+भावे ल्युट् । अनुगन्धान । गवे-
 षण । तरहीकान । इंधना । यहाँ अनुगन्धान शब्दसे यह
 समझना कि कोई वस्तु व्यवधान आदिसे न दिखती हो
 उसके जोफेफ मल करना । वाग्द । चह । अन्येषण
 (स्त्री०) हगो अर्थमें।

अप, (स्त्री०) अनु+आप्+श्रिप् हलः । जल । पानी ।
 (यदा बहुवचन होता है)।

अप, (अव्य०) न पति-वा+ङ । विशेष । विचार । उ-
 हटा । निन्दित । आनन्द । बर्षन । चोरी करना।

अपक्रमन्, (न०) अपकृतकर्म प्रा० । दुष्ट आचरण ।
पुरा अमल करना ब० । दुष्ट आचरण करनेहार (प्रि०) ।

अपकर्ष, (पु०) अप+कृ+भावे घञ् । विगाडना । अपने
कर्तव्यकालमें पहिलेही करना ।

अपकरणम्, (न०) अप+कृ+अन । पुरा व्यवहार हाल
करना । हानि नुकसान पहुंचाना ।

अपकामः, (पु०) अपगतः कामः-कामस्य अभावो वा ।
सुपुष्पा । विद्वेष । घृणा । वैर । किसी प्यारी वस्तुका न
होना । निरिच्छ ।

अपकार, (पु०) अप+कृ+धञ् । अनिष्टोत्पादन । बुराई
करना । वैर । दुःखनी ।

अपकारगिर, (स्त्री०) अपकारेण द्वेषेण गीर्षते-गृ+गिप् ।
भयंजनवाक्य । निरस्कारका वचन । मिडकना ।

अपकृ, तना० अ० । बुराई करना । खंचना । उठा छे जाना ।
घसीटना ।

अपकृ, पु० १० । निरकरना । पानीको उछरना ।

अपकृष्ट, (प्रि०) अप+कृ+क् । अयम । नीच । हीन ।
अपने समयमें प्रथम किया गया ।

अपक्रम, (पु०) अपमृत्त क्रमो गतिः-कम्+पञ्-अवृद्धिः ।
पञ्चन । भागना ।

अपक्रिया, (स्त्री०) अप+कृ+भावे श । द्रोह । वैर । अपकार ।

अपक्रोध, (पु०) अप+कृ+पञ् । निन्दा करना ।
“ अपक्रोध ” इसी अर्थमें ।

अपक्ष, (प्रि०) नाम्नि पक्षो यस्य य० । पक्षहीन । विन-
पर । जो उर नहीं सखा ।

अपक्षेपण, (न०) अप+क्षिप्+भ्युद । नीचे फेंकना । नीचे
स्थानके साथ संयोग होनेका कारण भिद्यविशेष ।
“ अपक्षेपण ” इसी अर्थमें ।

अपगत, (प्रि०) अप+गम्+क् । मरणया । भागगया ।
गया बह गया ।

अपगम्, भ्वा० १० । चले जाना । भाग जाना ।

अपगमः, (पु०) अत-निन्दार्थं गृ- भावे अप् । निन्दा ।

अपघन, (पु०) अप+हन+अप् घनादेशः । देह । घरीरका
मर ।

अपघात, (पु०) अप+हन+पञ् । घुरीतरहमें मारना ।
दुष्टमें मरना ।

अपचः, (पु०) पण्डु अपचः । न पद्म गच्छनेकाल । जो
अपने छिपे नहीं पकता । बुरा रभीइया । निन्दाअर्थमें ।

अपचय, (पु०) अत+वि+अञ् । हानि । नुकसान ।
बुटय । खर्च ।

अपचय, भ्वा० १० । प्रयत्न करना । दृश्य होना । निरद-
रुण । अपरुच बनना । खर्च । खचार । अचारीत,

अपचायित, (प्रि०) अप+चय+वि+अभे सिक्+इत् ।
पूजागया ।

अपचार, (पु०) अप+चर्+पञ् । अहित कर्तव्य ।
बुराई करना प्रा० ब० । बुरा आचार । बुरा कर्तव्य ।
दुष्टके बिना न हो (प्रि०) ।

अपचिन, (प्रि०) अप+चाय+क् । कावः विन् ।
पूजागया । वि+क् । हीन ।

अपचिति, (स्त्री०) अत+चाय+क्त्-प्रहृतेविन् ।
पूजा । वि+क्त् । हानि । नुकसान । अपघन ।

अपची, (पु०) अपकृतं पच्यते अगौ, पच-कर्मणि
अच्-गौर० ङीप् । एक व्याधि जिसमें गलेका मसूरका
फूट जाता है ।

अपच्यु, भ्वा० आ० । गिर जाना । चले जाना । खेत-
नाश होना । मरना ।

अपच्छाय, (प्रि०) अपगता छाया यस्मात् । छहईर ।
विनछायेकाल । घुरीछायाकाल ।

अपजातः, (पु०) अपकृतः जातः । गुणोंमें कमीके
निष्ठ पुत्र ।

अपजि, भ्वा० १० । हराना । जीनना ।

अपजा, क्वा० आ० । मुकर जाना । शिपेन हार-
छिगाना ।

अपञ्चीकृतम्, (न०) अपच पच कृतम् न० त० ।
साधारण मौखिक पदार्थ जो पांच २ स्थूल पदार्थों में
बनाया गया अर्थात् जो पांचमें पचीस नहीं किया वह
पांच सूक्ष्मम् । पंचनन्मात्रा छन्ददि ।

अपटान्तर, (प्रि०) पटनं तिरिन्दारिण्या अन्तरं अ० ।
न० त० । जहाँ पटकेका फायला नहीं । अन्तरादि ।
बीचरहित । मुझहुआ । अत्यक्त । संसक्त । फटहुआ ।
छगाहुआ । “ अपटान्तर ” इसी अर्थमें होना है ।

अपटी, (स्त्री०) अल्पः पटः पटी । न० त० । कलाकरने
प्रतिद कपडेका पददा ।

अपट्ट, (प्रि०) पट्टदेशः । न० त० । रोगी । बगुटईदि ।
काम न करपकनेहार ।

अपपद्य, (प्रि०) न पगनीयः अविक्रेय । न बेचने कर्तव्य
अपतर्पण, (न०) अप+तृप्+भ्युद । रोग होतेही दुष्ट
माना । तृप्त न होना ।

अपत्य (न०) न पगन्नि पितरोऽनेन पद+करणे वर ।
त० । पुत्र वा कन्याभ्य संतान ।

अपत्यदा, (स्त्री०) अपत्यं तदेतुं गर्भं ददाति । गर्भ देने
हारी औषध । रोगके सेवन करनेके गर्भ हो जाता है ।
गर्भ देनेहारि भिया धादि ।

अपत्यदा, (पु०) अपत्यस्य शत्रुः ६ त० । दुष्टी ।
दंष्ट ।

न, (पु०) न विद्यते पत्रमस्य । अक्षर (इत्का पत्र
ही होता)

अप, (प्रि०) अपगता प्रया सञ्जा सञ्जात् ५ व० ।
स्वाहीन । बैराम.

अप, भ्या० आ० । लक्षित होना । लञ्जासे शिर मीचे
लना हुवाके साथ.

अपिष्णु, (प्रि०) अप+प्रप+इ+णुच् । स्वभावसे
प्रभावता.

अ, (न०) न पन्था न०त० । वा अच् । कुषप । पुरा-
ज्ञा । "अत्र वा अघोऽभावे अपयिन् इत्यपि" व० ।

अयम्य (प्रि०) "वघोऽभाव." । मार्गका न होना
नव्य०)

अय, (प्रि०) दधि (रोषिभोजने) हितं, पयिन्+अच्
न०त०।रोगीको भोजन न करने योग्य । बीमार करनेहारी.

अपाद, (प्रि०)-पदी-त्री० न पयते-क्षयने-पद+
अच्-न० त०.

अदान, (न०) अप+दच्+स्तुद् । शोधन । साफ करना ।
करने स्तुद्"अच्छाकाम । "अवदान"इसी अर्थमें होताहै.

अदेह, वृदा० प० । निर्देश करना । सूचन करना ।
बतलना । बढाना करना । दिशानि । दिदेश । अदिशत्.

अदेहा, (न०) दिशयोर्मध्ये-अप+दिशा । अन्वयीभाव ।
दशाओंका बीच । बीचनामसे प्रथिद.

अदिशाम्, (अन्व०) दिशयोः मध्ये-अन्वय । दो दिशा-
ओंके बीचमें । मध्य लोक.

अदेहा, (पु०) अप+दिशु+अच् । लक्ष्य । निशान । रु-
को आच्छादन करना । छल । बढाना । निमित्त । स्थान.

अदेहिन्, (प्रि०) अप+दिशति-कर्मणि । वयक टग ।
अपनेको बाजारमें छिपा कर बतलनेकला.

अप्ये, भ्या० प० । प्यायति । दायी । किसी हुए सामाल
करना । किसीको मनसे छाप देना.

अर्धस्रज, (पु०) अपयस्यतेऽनेन अपर्धस्यः वर्णानां
मिश्ररूपतासम्पादक सः संकरलम्भात् आपते-जन्+इ
त् १० । मिश्रकर्मिके संयमसे उत्पन्न हुआ संवीर्य कर्ष ।

अर्धेगदे हुए अक्षरोंसे बना एक अक्षर सिगक कर निकला.

अर्धस्त, (प्रि०) अप+र्धस्त+क । निन्दित । छोड दि-
नामया । नास किनामया.

अनयन, (न०) अप+नी+भावे स्तुद् । दूर करना ।
उठान करना.

अनस, (प्रि०) अपगता-दूरीभूता नाशिका यम् । नलादेय
जिह्वस्य नाक उड गया । नाक बिना.

अनोदन, (न०) अप+नुद्+भावे स्तुद् । दूर लेजाना ।
नोडालना.

अपभासू, भ्या० आ० । भावते । अभाषित । बभापे । शाली
निकालना । पुरा कहना.

अपभ्रंदा, (न०) अपभ्रन्श्+अच् । गिरना । "अपभ्रन्द-
ते अपभ्रंहेतुतया पत्यतेऽनेन" कश्चे पच् । जिसके द्वारा
गिरजाताहै । साधुसन्देहे भिन्न अपभ्रन्द । यद्दार्मिं उसके
बहनेसे पाप उत्पन्न होताहै.

अपम, (प्रि०) अपकृष्टं मीयते मा-बाहुलकात्-क । अपकर्म
पुत्राईपनने माया जाताहै । Vcl. बहुत दूरका वा बहुत
पुराना.

अपमान, (न०) अप+मि-मा+का भावे स्तुद् । अवज्ञा ।
निरादर । बेदखली.

अपमित्यक, (न०) अपमितिरपमानः तेन अकं दुःखं
यत्र । जहाँ अपमानसे दुःख होताहै । अपमानका कारण
दुःखादेनेद्वारा ऋण (उधार) (कर्जा) । उसके लेनेमें
निधय उत्तमर्ण (जिसे उधार लियाजाताहै) के समीप
विद्यारसे दुःरा होताहै.

अपमृत्यु, (पु०) अपकृष्टो मृत्युः प्रा० स० । मरनेके
कारण रोग आदिके बिनाही आपसी शस्त्र चलाकर वा
दुसरेके द्वारा मरना.

अपयान, (न०) अप+या+भावे स्तुद् । निकलजाना ।
भागना.

अपर, (न०) न पूर्वते यत्, प्र-अपादाने+अच् न० त० ।
हाथीका पिछला भाग । "न पृष्ठाणि सन्तोषयति-प्र+अच्
न०त०" । रात्रु । मिश्र (प्रि०) पश्चिम दिशा । ऋग्वे-
दादि प्रिया (स्त्री०).

अपरक्त, (प्रि०) अप+रश्च+कनेरे क । विरक्त । जो
अनुकूल न हो.

अपरति, (स्त्री०) अप+रम्+भावे क्तिन् । विराग । हटजाना.

अपरप्र, (अद्य०) अपर+प्रल् । परलोकमें । पीछे ।
दूसरे समय.

अपरत्य, (न०) अपरत्य भावे+त्व । अपरतामी म्वाय-
मतमें सामान्यका भेद (जो थोडे देतामें रहे) । वह
दो प्रकारकाहै काटिक, और दैयिक, जैसे "मापसे पीय
अपरा है" यह काटिक, और "पठनासे काशी अपरा है"
यह दैयिक अपरत्य है । रोप.

अपरपद, (पु०) अपरः शेषः कर्म० । वृक्षपद ।
बालीरुते.

अपरप्रा, (पु०) अपरं उद्रे. एक० त० टच् । रात्रि-
शेष । रातका बाकी हिस्सा । रातका पिछला पहर.

अपरस्पर, (न०) अपरं च परं च-इ० पूर्वपदे श्रुय ।
बिनाबातल । किन्तैरन्तर्वं । बदनका जारी रहना ।
लगभगतार काम करना । वह और वह । आपसमें.

अपराजित, (पु०) परा+जि+क्-न० त० । गिर । विष्णु । एक ऋषि । न जीताहुआ (त्रि०) दुर्गा । एक लनाका नाम । दुर्गा । गौकान्तिका (सुहृजना) । जयन्ती-वृक्ष । अतनयश्च । शक्तिनीवृक्ष (स्त्री०) ।

अपराद्धपृष्णक, (पु०) अपराद्धो (लक्ष्यात् घ्युनः) पृष्णको (बाणो) यस्य अप+राध्+क् ष० । जिगडा बाण लक्ष्य (निधाने) से गिरगया हो । निधाना न करनेहारा घनुषधारी ।

अपराध, (पु०) अप+राध्+भावे घञ् । अकार्यादि । करणरूपदोष । पातक । पाप । गुनाह । चूक । भूद ।

अपरान्त, (पु०) अपरम्या अन्तः । वाय्वालयकैसमेद । पश्चिमदेशी । पश्चिमदेशका वासी (त्रि०) ।

अपराह, (पु०) अपरं अहः । एक० त० टच् । अहदिगः शलं च । त्रिधाविभक्तदिनस्य तृतीये भागे । दिनका तीसरा भाग । दिनका योगभाग ।

अपरिग्रह, (पु०) परि+ग्रह+अप-अभावार्थे न० त० । असंग्रह । पास कुछ न रखना । स्वीकार न करना । "नास्ति कन्याकापीनासतिरिक्तः परिग्रहो यम्" । व० गोइदी और संगोटी आदिके बिना जिनके पास और कुछ नहीं । संन्यासी । जो कुछ भी स्वीकार नहीं करता (त्रि०) ।

अपरिच्छिन्न, (त्रि०) परि+च्छिद्+क् न० त० । इयत्तरहित । असीम । जो मापा न जाय । वेहद ।

अपरिहार्य, (त्रि०) परि+हृ+ण्यत् न० त० । अलजनीय ।

अपरेशुस, (अव्य०) अपरस्मिप्रहति । अप+एशुम् । दूसरा दिन । परसों ।

अपरोक्ष, (न०) परतः (अतीतः) अक्ष्णा (इन्द्रियाणां) न भवति पर+अक्षि+अ+समर्थस० टच्-नि०-मुट् । विषयीन्द्रियसमिक्रमंजन्ये प्रत्यक्षरूपे ज्ञाने । विषय और इन्द्रियके व्यापारसे उपजा प्रत्यक्षरूप ज्ञान । सामने । "अच्छावचि तद्विरये" (त्रि०) जो सामनेहो ।

अपर्णा, (स्त्री०) न पर्णान्यपि भोजनं यस्या । पत्तेरानामी जिसने छोइदिथा । हिमालयकी कन्या । ("जय यह तपस्यामें निरत थी तो इसने पत्तोंक खानेका परिष्माण किया, इसीसे यह नाम प्रचिद हुआ") । पावती । पत्तोंके घन्य (त्रि०) ।

अपयान, (त्रि०) परि+आप्+क् न० त० । असमर्थ । असम्पूर्ण । शक्तिरहित । जो पूरा न हो ।

अपयत्, (त्रि०) नास्ति पयं यस्मिन् दिने । जिस दिन सूर्य और चन्द्रमाका मेल न हो । विनमेल । पयंके बिना दिन अर्थात् जो यमार्थ समय नहीं । कुछ बक् का घुई बहार ।

अपटप्, भ्वा० ष० । छट्ति । छटाप । अटपीत् । निषेध करना । नमंइर करना ।

अपत्याप, (पु०) अप+त्या+क् ष० । अपत्येनोप इत्यने अत्यो । मातृगोत्री इड कत्यस्य कृत्वा । अपत्ये छिताना । प्रेम । स्वीकार न करना ।

अपयद्, भ्वा० ष० उभ० । गती देना । जिग छटा । विशेष करना । विज्ञाना । अप पयति+भ्वा+एत्+आ-उदे ।

अपयद्, भ्वा० ष० । छेजना । उडादेजना । बरति । अपा अराधीर ।

अपयस्क, (न०) अप+य्+क् न० संज्ञां युट् । इयद् । कमरा । रक्षेना घर ।

अपयर्ग, (पु०) अप+यर्ग+भावे घञ् । दन । मुक्ति । यूपान ।

अपयर्जन, (न०) अप+यर्ज+भावे ल्युट् । दान । लक्ष मोक्ष । निर्वन । अपने छिटा द्यरेषा न होना ।

अपयर्जन, (न०) अप+यर्ज+णिव+भावे ल्युट् । छेड देना करना । अट्टगात्र (दिवाय) में प्रसिद न मात्र दोनोंको किसी एक तुल्याय अपर्ण वंछ संज्ञित करना । अप करना ।

अपवाद, अप+वद्+भावे घञ् । निन्दा । अज्ञा । विभाग । विद्येयविशिष्य वाचक । रिद्धेन जिन वेदान्तयात्रामें प्रसिद सीपीमें प्रतीनहुदें बारीक पीरीके स्वरूपमें लाम करना । (आन्तिप्रनके होजानेपर जेसीही तैसी बलुका ज्ञान) । नेद । निवि विशेष । माम कायदद ।

अपवारण, (न०) अप+वृ+णिव+ल्युट् । अन्तर् छिताना । व्यवधान । पटडा ।

अपविग्र, (त्रि०) अपगना विग्रा यस्मिन् यथा न निविग्र । विनरकावट । न छेरा गया ।

अपविद्ध, (त्रि०) अप+व्यध्+क् । लक । छेडाईरन प्रत्याख्यात । निरम्कार कियागया । प्रसिद्धि (हुआ) । "माना पिना दोनोंने किम्बा दोनोंने । एकेने जिसे छोट दिवा, और कोंदें दूसरा उके क बनाले ऐसा पुन अपविद्ध कहा जाता है" । बारह प्र पुत्रोंमेंसे एक । सुनवप्रद ।

अपविषा, (स्त्री०) अपयनं विषं यस्याः व० । जिसे पूर हो जाय । विषहारिणी (विषनिवारनेहारी) ।

अपवृ, स्था० उभ० । वृणोति । ते । बवार । बने । छे ।

अपवृम्, रथा० धा० । अपवृडे हटाना । नस का रोक देना । फाट देना । खेंचना । छेजना । छतन क

अपवृत्, भ्वा० धा० । पीछे छीटना । छेजना । छ करना । चठ देना । जुडा होना । अपवर्तते । बरते । निष्ट ।

अभ्याकाङ्क्षित, (न०) अभि+आ+काङ्क्ष+त् । इच्छा
 सकल । इच्छा दावा । गेषे प्रगट करना । " अभ्याख्यान "
 भी इसी अर्थमें होता है ।

अभ्यागत, (पु०) अभि+आ+गम्+त् । घरमें आया-
 हुआ अतिथि । जो पहिले नहीं देखा गया । सामने आया
 कोई हो (वि०) ।

अभ्यागम, (पु०) अभि+आ+गम्+भावे षन् अङ्गिः ।
 विशेष । पास । सामने जाना । भोग । स्वीकार । फलका
 संघ । " आपारे षन् " उदाहरें । समर ।

अभ्यागारिक, (पु०) अभ्यागारे तत्रकर्मणि आट्टः
 ट् । परके आगार पुनारिके पालन करनेमें आउल
 (परराषलुका) ।

अभ्यादा-आनि-आ-दा, जु० आ० । देना । पकटना ।
 पहिरना+माका अदि । एकके घोट चुकनेपर बोलना ।

अभ्यादान, (न०) अभि+आ+दा भावे ल्युट् । सामने
 होकर देना । धारम् (दृग्) करना ।

अभ्यामर्द्, (पु०) अभि+आ+मृद्+आधारे षन् । सद्गाम ।
 जंग " मने षन् " निबोधना ।

अभ्यासा, (पु०) अभि+अभ्+व्याप्ति+करणे षन् । अव-
 र्णनी । समीप ।

अभ्यास, (पु०) अभि+अभ्+क्षेपे+कर्मणि षन् । बार बार
 मन्त्र उच्चारण । पुरसे सुना । पुरके कड़ेदार अर्थमें
 दोन-दोन विकार करना । बार बार कहना । निष्ठ
 (ण्य) । निरन्तर इनमें जो अनरित (टिग)
 बरी, बेरत गन्तव्य इन । प्रवाहम्प ध्यानारिका बार
 बार करना । एकही बातमें बार बार लगना । दूसरी ओर
 कसों न जाने देना ।

अभ्यासादन, (न०) अभि+आ+मृद्+शिव्+ल्युट् । छत्र
 ऊपरसे कपुडों से षण्डित करनेका । कपुडके सामने जाना ।

अभ्यासाहार, (पु०) अभि+आ+हृ+षन् । आहार । भोजन ।
 देनके देगते सुकलेका ।

अभ्युद्यय, (पु०) अभि+उद्+वि+अव् । अभ्युदय ।
 उदय । उत्थान । उदय । उत्थान ।

अभ्युद्ययन, (न०) अभि+उद्+वि+अव् । आरर दि-
 कनेके दिने उद्यय अर्थमें उदय । आररने उदयर
 अर्थमें उदय । (अण्प्रति) । उदय । उदय ।

अभ्युद्यय, अभि+उद्+अव्, ज्य० ष० । उत्थानके दिने उ-
 दय । उत्थानके दिने उदय । उत्थानके दिने उदय ।
 उत्थानके दिने उदय । उत्थानके दिने उदय ।

अभ्युद्यय, अभि+उद्+अव्, ज्य० ष० । उत्थानके दिने उ-
 दय । उत्थानके दिने उदय । उत्थानके दिने उदय ।
 उत्थानके दिने उदय । उत्थानके दिने उदय ।

अभ्युदय, अभि+उद्+अव्+अव् । मने
 प्रगट होना । उदय । उदय । उदय ।
 संस्कारके निमित्त धियागया अर्थ
 जाना है । उदयके दिने अर्थ ।

अभ्युदिन, (पु०) अभि+उद्+अव् ।
 विहित कर्म सम्पत् । त्रिमे
 हुआ हो । सूर्योदयकालमें निराके कामके
 के उचित कार्य नहीं किया ऐसा अर्थ ।

अभ्युद्गम्, अभि+उद्+अव् ज्य० ष० ।
 पलना । गच्छति । जगाम । अगम ।

अभ्युद्यत, (त्रि०) अभि+उद्+अव् ।
 आउनुका फल आदि । उदय । समुदय ।

अभ्युपगम, (पु०) अभि+उद्+अव् ।
 देना । पास आगया । समीप आना ।
 युक्ति । दृशील ।

अभ्युपपत्ति, (स्त्री०) अभि+उद्+अव् ।
 निवारण कर अमीयको पूरा करनेका अर्थ ।
 देवरसे सम्मानका उन्मत्त करना । उदय ।

अभ्युपाय, (पु०) अभि+उद्+अव् ।
 मन्त्र । अच्चा । उपाय ।

अभ्युद्, (त्रि०) अभि+उद्+अव् । निष्ठ
 अभ्युद्, (पु०) अभि+उद्+अव् । उदय ।
 अभ्युद्, ज्य० ष० । ऊपरसे उदय ।
 अमुमान करना । उदय-ते । उदय-
 धीही । अङ्गिः ।

अभ्र, जाना । अभादि० पर० मक० भेद् । कर्त्त
 आनत्र ।

अभ्रंकर, (त्रि०) अभ्रं कर्त्त पीडने-
 मुनागमय । बादलको छुनेकाल । बहुत
 अभ्रंदिद्, (त्रि०) अभ्रं लेटि-रुट् । कर्त्त
 मेषको चटनेकाल । बादलको छुनेकाल ।

अभ्रि, (स्त्री०) अभ्रति मने दम्पत् । " अ-
 इत् " । बेसीके मलको छान करनेके
 बनहुआ उदात्त । (अभ्रि इसी अर्थमें)

अभ्रय, (पु०) अभ्र-अव्+अव् न० ष० ।
 अन्वय । मुकति । चलनेके अन्वय (वि०)

अभ्र, रोगी होना (मुग्) उदय० अ-
 देना गच्छ० । आमवर्ति-अमपते । अ-
 अभ्र, (पु०) अभ्र+अव् आदि । उदय ।
 अर्त्त (त्रि०) ।

अभ्रद्वय, (पु०) अभ्रि मन्त्रं प्रवेष्टं
 इत् । इत् । इत् । इत् । इत् । इत् ।

(प्रि०) पु-मिवाभा और व मिलाभा+क। न० त०।
 मिलाहुआ। मिलाहुआ (न०) दससहस्रसंख्या १०००००।
 (अभ्य०) ह्य+एच्। कोष। गुस्ता। विपाद। सम्भ्रम।
 अथर्वमें दूसरेको पुल्लिङ्गे लिखे शब्दके प्रथम जोड़जा-
 ता है। संशोधन
 योग्य, (५०) अथ इव कठिना गौरांगी दस्य। नि० अच्।
 जानिविरोध। शब्दके बीचसे वैदयकन्यामें उत्पन्न सन्तान।
 वर्णसंकर
 योग्याह, (५०) अनुस्वार और विसर्ग। अक्षर-
 समुदायमें इनका पाठ न होनेपर भी पल्लवलादि का-
 र्य निश्च करतें हैं। "बाह+अच् कर्म०"
 अयोग्य, (५०) अयोग्यि ह्यन्तेऽनेन। ह्य+अप्+पना-
 देशब्-नि०। ह्योरी नामसे प्रसिद्ध लोहेका मुद्र।
 अयोग्या, (स्त्री०) युष्+भ्यत्+न० त०। सरयूके तीरपर
 एक नगरी। उत्तरकोराला। धीरमजीची पुत्री। जिससे
 लडाईं न कीजाय (प्रि०)
 अयोग्यि, (प्रि०) नास्ति योगिः-कारणं यस्य। निष्कारण।
 बिना कारण। जिसका उत्पादक और कोई नहीं। निष्क।
 योग्यि, (५०) योगी उपकाराद् भावति न जायते।
 परमेस्वर। धीरामजीची स्त्री सीता (स्त्री०)। जो योगिसे
 नहीं उपजा (प्रि०)।
 र, (न) ऋ+अच्। चक्षस नामिनेम्योर्गन्धस्ये काष्ठे। प-
 हिल्येरी नामि और नेमिके बीचका काष्ठ। धीम्र। जल्दी।
 जो जल्दी बळताहै (प्रि०)। जैनमतमें कालबकका अंग
 "स्वायें-क" संवाह। पाप (५०)
 अर, अङ्+अम्+वा लस्य रत्नम्। बस। पयांस। जल्दी।
 अरघट्ट-क, (५०) अरं धीम्रं घट्यते बाष्पतेऽनो। घट+
 कर्मणि अच्। महाकूप। पानीके उठानेकी कला। टिण्णा-
 बाका वशा।
 अरजस, (प्रि०) रज्+अनुत्+नलोपः। न० त०। रजोगु-
 ँके कार्ये। बामकोपादिसे रहित। (स्त्री०) डुमारी कन्या
 प्रि०) विनयू
 गि, (५०) ऋ+अभि। मूर्धं। गणिवारीनामी वृक्ष। "ऋ-
 षट्ति प्रायवलाभि"। आग निकालनेकी ककरी (परमें
 इरीसे आग निकालते थे)। शिवां जीपु।
 (एष्य, (५०) ऋ+आपारे अन्त्य। अर्धसे दोसे बढस्य। जहां
 पिछली उमरमें जाय करतें हैं। बन। जंगल।
 अरण्यानी, (स्त्री०) महादरव्यं। नि० दीर्घ-आनुश्च। वषा
 बन।
 अरति, ऋ+अति। कोष। रम्+क्तिन्+न० त०। विलका
 विषय न होना। प्रीति न होना। परवाहट। हटके विरो-
 धसे मनका ब्याकुल होना (स्त्री०)।

अरति, (५०) ऋ+अति=रति बद्धमुष्टिकः स नास्ति यज।
 बीचो अहुतिको फैलाकर मुष्टी बांधाहुवा हाथ।
 अरथिन्, (प्रि०) नास्ति रथः यस्य। जिसके पास रथ-
 गादी नहीं। जो रथमें स्थित होकर युद्ध नहीं करता।
 अरत्, (प्रि०) न रत्ः यस्य। जिसका दांत नहीं। विनदांत
 जैसा कि बच्चा। जिसके दांत टट गयेहों।
 अरत्, (प्रि०) ऋ+अरत्। किवाह। कवाट। द्वार।
 दवांजा। दकना
 अरथिन्द, (न०) अरान् चक्राहारीष पत्राग्रामि विन्दते।
 विद+श। एष। कमल। सारस पक्षी। बगला। नीला क-
 मल। लालकमल। नीलोफर। ताम्र। धामां। तांबा।
 अराजक, (प्रि०) नास्ति राजा यत्र-न+राज्+कनिन्-क।
 जहां कोई राजा नहीं। राजहीन देश।
 अरति, (५०) न रति-ददाति सुखं। र+क्तिन्। न०
 त०। शत्रु। दुश्मन।
 अराल, (५०) ऋ+विच्-अर। अरं आद्यति। आ+ञ्ज
 +क। अरंका रस। मतपारा हाथी। राठ (प्रि०)। देवा।
 देवा हाथ। (स्त्री०) वैश्या। कंजरी।
 अरि, (५०) ऋ+इन्। शत्रु। रथाङ्ग। पहिया। सारिप-
 त्रिका। छत्री संख्या। ज्योति शालमें लामसे छटा स्थान।
 अरिन्, (न०) ऋच्छलनेन। ऋ+इन्। हातिनामसे प्रसिद्ध
 बेरीके चलनेका काठ। नौकाचालनकाष्ठ। बणा।
 अरिन्दम्, (प्रि०) अरिन् दाम्यति-दमयति श+ अच् मुम्ब।
 शत्रुजेता। दुश्मनोंपर जोरबर। शत्रुओंको दबानेहाण।
 अरिमर्द, (५०) अरिं रोगरूपं शत्रुं धृशति। शूद्र+अम्+उ-
 ष+। रांसीको दूड करनेहाण इश (प्रि०)। शत्रुओंको
 दबानेहाण।
 अरिमेद, (५०) अरोविंदरित्तयेव मेदः शारोऽय्य। जिसका
 शार विदरितरी नाई हो। एकाग्र। विदरितरि।
 अरिपडक, (न०) पद् व अटी व ततः परिमार्ग्ये कन्।
 पशुके अरिखामिकं पशुके-पाक० त०। विदरने बनेनीय
 योगविरोध। बरकन्याकी सपत्नी २ एरिसे छटा और का-
 ट्यां पर बरि शत्रु हो तो अन्नम है।
 अरिपहयगं, (५०) यस्यां बर्गः समुदायः पर्युगं।
 चीनां कायकोपादीनां पर्युगं (कन, कोष, डोम, मोड, म-
 मालाईरूप अन्त करणके छ शत्रुओंका समूह)। कन
 नीलके छ शत्रु।
 अरिप, (५०) रिष्+सारन+कर्त्तरि ऋ न० त०। एष
 स्वप्न। नीम। एरिपारह। जिस परमें बी, पुत्र वा
 जनती है। एष। (न०) मद्यविरोध। शैला।
 नाची शमकला इश। अन्नम। वैश्या पत्नी।
 अरिपनाति, (५०) अरि+अति+ना। नामसंज्ञक।
 बरना (प्रि०)। दुश्मनर।

गम, (पु०) अर्थस्य आगमः । आ+गम्+पञ् अङ्ङिः ।
 यनका आना । धनागम । आमदनी ।
 यान्तरन्यास, (पु०) प्रहृतायैतिदये अन्वयायस्य न्यासः ।
 प्रहृत (वर्तमान) अर्थकी निद्रिके त्रिये दूतरे अर्थकोले-
 आना । अर्थालङ्कारका भेद
 अर्थापत्ति, (स्त्री०) अर्थस्य अनुकार्यस्य आपत्ति-सिद्धिः-
 था+पद्+क्तिन् । न कहे गए अर्थका समझना । जैसे देव-
 दत्त जीताहै परन्तु परमै नहीं तो समझगकेहै कि बा-
 दिर अवश्य होगा । मौसामक अनुमानसे भिन्न कहतेहै ।
 नैमायिक व्यतिरेक व्यसिज्ञानसे उपजा अनुमानही सम-
 झतेहै
 अर्थिक, (पु०) अर्थयते इत्यर्थी याचक +इतितायै क्व ।
 तोयेहुये राजा बाहुको जमानेके लिये खुनि करनेहार । नै-
 तातिक । मिथु । माट । मिहारी ।
 अर्थिन्, (त्रि०) अर्थ+अस्त्यर्थे इति । याचक । मिथुक ।
 सेवक । सहाय । घनी । बायी । धनरहित
 अर्थ्य, (त्रि०) अर्थात् प्रयोजनादनयेतः । अर्थ+यत् ।
 न्याय्य । उचित । न्यायने कमाया "कर्मणि यत्" । प्रार्थ-
 नीय । पवित्र । धनवान् । (न०) जिलाजयु ।
 अर्द्ध, मारना-भ्या-उभ-एक-सेद । अर्द्धति-ने । अर्द्धि-ट्-
 अर्द्धन, (न०) अर्द्ध+स्त्युट् । पीडा पहुँचाना । मारना । ना-
 गना । जाना ।
 अर्द्धित, (त्रि०) अर्द्ध+क । डु ली हुआ । लाचार किया
 गया । प्रार्थना करनेवाला
 अर्ध, (पु०) ऋध+बद्धना-भावारी घम् । खण्ड । टुकड़ा
 (न०) समानांश । एक जेगा भाग । (त्रि०) दोहिसे
 कियागया ।
 अर्धगङ्गा, (स्त्री०) अर्धं गङ्गायाः । एकदे-ए० । गंगाला-
 नारिते आधा देनेहारी कावेरी नदी ।
 अर्धचन्द्र, (पु०) अर्धं चन्द्रस्य । एक० त० । चन्द्रार्ध । अ-
 ष्टमीका चंद्र । चांदकी शकलवाला नगलूठा जतम । ग-
 कल्प । गलहरया । सानुनातिक - चिन्ह ।
 अर्धनारीश्वर, (पु०) अर्धंश्रे या नारी तस्या ईश्वर ।
 महादेव । शिवपार्वतीकी मूर्तिविशेष । हस्तौरीरुप शिव
 अर्धपारायत, (पु०) अर्धेन अश्रेन पारायत इव । जिसका
 आधा अंग बभूराकी नाई हो । शिवरुण्ड । बपोन । त्रि-
 तिरपारी ।
 अर्धपारायतः, (पु०) अर्धः पारायत इव, अर्धेन अश्रेन
 पारायत इव । आधे शरीरसे बभूराकी भांति एक प्रकारका
 बभूरा ।
 अर्धरथः, (पु०) अर्धः अश्वमूणः रथः रथी । पूरा रथी
 नहीं । रथमें बेट बर हारके साथ युद्ध करनेवाला जो
 रथीके समान चरु नहीं ।

अर्धरात्रः, (पु०) अर्धं रात्रेः । रातका आधा । मध्यरात्रि ।
 आधीरात ।
 अर्धरात्र, (पु०) अर्धं रात्रेः एक० त० । अन् । आधीरात ।
 अर्धर्चः-चर्म, (न०) अर्धं ऋक् । आधा मन्त्र वा श्लोक ।
 अर्धपीक्षण, (न०) अर्धं क्षरामूर्णं पीक्षणं । पि+ईक्ष्+स्त्यु-
 ट् । पूरा न देरना । कटाक्षसे देखना ।
 अर्धशतम्, (न०) अर्धेन सहस्रं शतम् । आधेसहित
 एकती अर्थात् एकसौ पचास १५० ।
 अर्धयभेदक, (पु०) अर्धं अथ निनीत-अर्ध+अव+भिद् ।
 एक आधेको फाड़नेवाला । आधेतिरकी पीडा ।
 अर्धाशनम्, (न०) अर्धं अशनस्य । भोजनका आधा ।
 आधा भोजन ।
 अर्धासन, (न०) अर्धं आसनस्य । एक० त० । आसनका
 आधा भाग । ब्रेह्मो प्रकार करनेहार सम्मान ।
 अर्थिक, (त्रि०)-धी-(स्त्री०) । अर्धं अर्ही टन् । आधा
 भाग देनेवाला ।
 अर्थिन्, (त्रि०) अर्धं अस्त्यर्थे इति । आधा भाग देनेवाला ।
 आधेका हितेहार ।
 अर्धोद्य, (पु०) अर्धस्य सद्यस्य पुण्यस्य उदयो यत्र ।
 मायका महीना, अमावासा तिथि, धवगनस्यत्र और
 व्यतीपात होनेसे एक योग होताहै ।
 अर्धोत्क, (न०) अर्धं उत्करो अर्धोत्क तत्र कायते बाष्प+
 ट् । पठोके नीचेतक अज्ञोको टाँकनेहार कटा । उल-
 मयिकोके पहिरनेका बन्न जो बोलीके ससुरका होताहै ।
 राठी । पागर ।
 अर्पण, (न०) ऋ+पिच्+स्त्युट् पुक्व । सम्प्रदान । देना ।
 नम्र करना । सौंपना ।
 अर्पित, (त्रि०) ऋ+पिच्+पुक् । क । दिकागयाआदि ।
 अर्पित, (पु०) ऋ+पिच्+पुक् च इयन् । हदय । दिल
 छाली ।
 अर्पितः, (पु०) ऋ+पिच्+स्त्युट्+इदय । हदयका नांग
 अर्ध-वै, मारना । भ्या-पर-एक-सेद । अर्धेति । आर्-
 अर्धुद, (न०) अर्धु+विद्+उभ+एण+ट् । अर्धु नामी से
 दासरोहकी संख्या १००००००००० । (पु०) पूर्वतमि
 अर्भक, (पु०) अर्भं एव स्वार्थे क । बालक । मूर्धं ।
 बमजोर । बोज ।
 अर्भः-मं, (पु० न०) ऋ-उण-नेद्वस्यपि । क
 पीमापी । पहुँचने योग्य देण । यन्त्रस्य देण ।
 अर्च, (त्रि०) ऋ+चट् । खनी । वेद्य (पु०)
 टाप् अर्चो । अर्वा ।
 अर्चमन्, (पु०) अर्चं भेष्टं निनीते ऋ+चटिन्
 निनीतका यज्ञ ।

अवधारण, (न०) अव+धृ+निच्+स्युट् । निश्चयकरण ।
तद्वहिक करना । पत्रा निश्चय ।

अवधि, (पु०) अव+धा+क्ति । सीमा । हद् । बाल ।
गर्त । गटा । अवसान । अन्त "आधारेदी" विळ ।

अवधीर, न माथा । अवज्ञा करना । चुण० उभ०मक०वेड् ।
अवधीर्यति, ते । आवधीरत्-त् ।

अवधून, (वि०) अव+धू+क् । राक । तजाहुआ ।
तिरस्कर । रोकाहुआ । कांवाहुआ । (पु०) वर्गाधमवर्मको
छोटनेदारा संन्यासी । केवल आत्माराम ।

अवध्य, (वि०) न+वच्+यत् । न मारनेयोग्य । पवित्र ।

अवधन, (न०) अव+स्युट् । प्रीणन । तसर्वा । रक्षण ।
हिंसाजत करना । प्रीति ।

अवधनम्, भ्या० प० । झुटना । प्रणाम करना । नीचे उट-
काना । ननति । अर्नसीत् ।

अवधनत, (वि०) अव+नम्+क् । नत्र । झुकाहुआ ।

अवधनद्ध, (वि०) अव+नह्+कर्मणि क् । बंधाहुआ ।
मृदभादि बाजा (न०) वस्त्र और मृणमत्रा पहिरना ।

अवधनद्, दि० उ० । बांधना । गांठ लगाना । नयति-ते ।
अनदीयन् । अनद्ध । अवनद्ध ।

अवघनाट, (वि०) नत् नतिक्वायाः अव+नाटच् । चरदी
नाकवाला ।

अवघनि-नी, (स्त्री०) अव्+अनि । भूमि । जमीन ।

अवघनिन्, पु० उ० । प्रकटाउन करना । घोना । साक
करना । पोछना । नेनेदि-के । निनेज-विदिजे । अविजन्-
अनर्शात् । अघिच्छ ।

अवघनेजन, (वि०) अव+विज्+अन । प्रकटाउन करना ।
घोना । आदमें बुघारर पानी छिटकना ।

अवघ्निका, (स्त्री०) अवघ्नित्यु कापति प्रकाशते । मा-
लवदेघमी उत्रपानी छडघिनी ।

अवघपत्, भ्या० प० । नीचे गिरना । नीचे कूटना । उट-
रना । पति । अघटीयत् ।

अवघपान, (पु०) अव+घन्-आधारे घन् । विळ । "मा-
ये घन्" । नीचे गिरना । निघान । गिरना ।

अवघपात्र, अवरं भोजनयोग्यं पात्रं यम् । त्रिभुजा पात्र
भोजनयोग्य न हो । म्ळेच्छ पात्र, त्रिभुजे दूसरे नहीं
चायते ।

अवघपात्रित, (वि०) अवघपात्र । इतरों निच् । जो अघनी
जाति को बेडा है । त्रिभुजे सम्बन्धी उभे एहदी पात्रमें
भोजन करनेकी आज्ञा न दे । अत्रिभुजे छेद दिवायवा ।

अवघपाशित, (वि०) अवघपाशः समन्तान् पशुः जतः
अस्य इत्-इत्च् । बरों धीर पशु (कारों) में बंधा हुआ ।
उठने बंधा हुआ ।

अवघपीर, पु० प० । दबना जग । पीरदति । अघिरीदत् ।

अवघुन, (वि०) अव+घु+क् । नागों और मन्त्र
उतराहुआ । गीटाहुआ ।

अवघुनु, दि० आ० । जागना । पहिवाया । बरा
पना । बुयने । अघोधि ।

अवघप्रयः, (पु०) कुमिनतः प्रयः । सुनी मार ।

अवघमञ्ज, द्या० प० । तोटटटना । दुकडे र दगाने
अमाहीन् ।

अवघमाम, (पु०) अव+माग्-भावे पत् । प्रकृप ।
रंघनी । सासन्कार । छड ।

अवघभृथ, (पु०) अव+भृ+क्यन् । प्ररत दइते
विक्रान्तिके अर्थ करनेशरीर । यइते अन्तेने कर ।

अवघम, (वि०) अव+अनच् । पानी । मुन्दा
मात्र । दुष्ट । कनीना ।

अवघमत, (वि०) अव+मन्+क् । अनादत । वेदना के
अवघमन्, दि० आ० । तिरस्कार करना । मन्नेने
अवघमन्तु, (वि०) अव+मन्+तृच् । तिरस्कार करने
अभिमाना ।

अवघमर्द, (पु०) अव+मृद्+घन् । पीटन । छं
घुके नगरको विनाश करना । मारना । छडाने ।

अवघमर्श, (पु०) अव+मृग+घन् । आलेबना ।
अवघमानना, (स्त्री०) अव+घुण०-अन्+भावे पुं
मान करना ।

अवघमानित, (वि०) अव+घुण०-अन्+कर्मणि क् ।
मान कियायवा ।

अवघमाजेनम्, (न०) अव घन् अन् । प्रकटा
घोना । पोछना । टारु करना । मर्दि । मनार्ने ।

अवघमुच्, पु० प० । खुला छोटा देना । खोल
घोना आदि उतार देना-जैसे पौराक ।

अवघमूर्धन्, (वि०) अवघनतः मूर्धा अस्या । हुं
कवाज ।

अवघमूर्त्, अदा० प० । पिपना । रगटना ।

अवघमृद्, द्या० प० । पीसना । मल-
अनर्दीन् ।

अवघयध, (पु०) अव+धु+अच् । अह । इ
उत्करण । साधन । न्यायमतमें प्रतिष्ठा, हे
दानय और निगमन पांच वाक्य ।

अघर, (वि०) अव+घ+क् । चरम । अ
नीच (न०) हाथीकी जापका पिछला अ
दंघकाठ (पु०) पीछेके दंघकाठमें होनेवा

अघरज, (पु०) अघरसिन् काठे जातः । छ
अघरति, (स्त्री०) अव+रम्-भावे णिच्
रना । अन् । हटना ।

अघरपथे, (पु०) अघरणिना हुआ अह ।

या० प० । निरोध करना । रोक्ना । टहराना ।
एरोध । अरोहणी ।

(प्रि०) अव+रु+कर्मणि क् । आच्छादित ।
। बांधा हुआ । अन्त पुरकी भोगनेयोग्य दाही ।
मी (धी०) ।

या० प० । नीचे उतरना । रोहति । एरोह । अरुहात् ।

(प्रि०) अव+रह+कर्त्तरि क् । अवतीर्ण । उत-
रापने स्थानछे उठा

(पु०) अव+रु+भावे घम् । निरोध । रोक् ।
घम् । राजश्रीष्ट । रनकाग । राजकी धी ।

(प्रि०) अव+रह+णिक्+पुङ्+कर्मणि क् ।
। उगाडा गया ।

(पु०) अव+रह+भावे घम् । अवतरण । उतरना ।
बचना "अपादाने घम्" । मर्म । (बहाधे भोग-
र वाक नीचे उतरने हैं) ।

(प्रि०) अव+रु+घम् । भेगवर्ण । विहारण ।
ल । मूर्ध । "वध" ह्री अर्थमें ।

(पु०) अव+रु+क । इन्द्रभावः । देवता कल्प-
मर । उगाड्या (प्रि०) ।

(पु०) अव+रु+भावे घम् । आधव ।
"करणे घम्" । पकडनेका साधन दण्ड आदि ।
वन ।

अवा० वा० । लटवना । लम्बते । लम्बते ।

(प्रि०) अव+रि+कर्मणि क् । अक्षिप । वा क ।
। म्बतर । वेपित । विघडा हुआ ।

वादा० उभ० । वाटना । वेदि-तीरे । गिरेह-
अतिशब्द-अक्षिप ।

(प्रि०) अव+रि+कर्मणि क् । अक्षिप । वा-
। आक्षिपित । इनाबलेह । वाटा हुआ ।

(धी०) अवरा लीला । अकाशया । अकाशर ।
छेत् । आकाशी ।

पु० उ० । विही दरजा दरजा । जी अरुधरपु-
पुद्ग) अपने विरुधरप दरजा है । राजा ।
उत्तरी-दरपने । एरोध-उरोधे । अरुधर-अरुध-
र । (म०) अव+रु+अन । अकाश मी टीपर
का ।

(पु०) अव+रि+भावे घम् । घई । अरुधर ।
दण्ड । रोहध ।

(पु०) अव+रि+भावे घम् । अरुध । रोहध ।
रुद्ध । वादक आदि ।

पद० १०

अयलेह, (पु०) अव+रि+भावे घम् । जीने बटना ।
बटनी ।

अयलोवन, (म०) अव+रु+भावे घम् । हर्षित । देग-
ना । अनुसंधान । टाडना करना । "बगदे लुद्ध" ।
आलोक । वेध ।

अयलोप, (पु०) अव+रु+अ । वाटाडना । नाउ ।
दगना । शूना ।

अयलोम, (प्रि०) अवन्दे छेम वातुहूनं । जो शिर्से
अनुहूत हो ।

अयना (प्रि०) नाति वगं वादनं दम् । उरुदीन । पग-
पीन । वेध ।

अयनाय, (प्रि०) अयन्यं गन् । ईने-ई+अव । ईने
मन्वह (मन्वो) बरके मोनेवाक ।

अयनाष्ट, (प्रि०) अव+रि+क । अक्षिप । विघ ।
जुटा । परिशु । कपी । अक्षिप । विघना ।

अयदाय, (अन्०) गर्वा उभय । (प्रि०) वेदनाद ह ।

अयदाय, (पु०) अव+रि+अ । विघ । पग । पुर् ।
अक्षिपान ।

अयधयण, (म०) अव+धी+अन । अक्षिपाने विर-
बलुषो उतरना । "अक्षिपय" अक्षिपय बटन ।

अयद्युध, (प्रि०) अव+रु+अ+कर्मणि क् । अयन्य ।
निघट । विघट्टा । अंघट्टा । हवाट्टा ।

अयद्युध, (पु०) अव+रु+अ+अ+कर्मणि क् । अयन्य ।
तोता । लम्बा । लम्बा । लम्बा । लम्बा । लम्बा ।

अयद्विघवा, (कौ०) अवहृदे हृदये हृदयमन्वह ।
विगने घम् अक्षिपु हो । अक्षिपु का अर्थ ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
पुन । अयन्य । अयन्य । अयन्य ।

अयदाय, (पु०) वग+अयन्य+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (म०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (प्रि०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अयदा, (पु०) अव+रु+अ । अयन्य । अयन्य ।
अयन्य । अयन्य ।

अवस्कन्दन, (न०) अव+स्कन्द+भावे ल्युट् । तोडना । छीनना । गुजरना । उतरना ।
 अवस्कर, (पु०) अव+कृ+कर्मणि अप्-सुट् । झाड़ने उड़े हुए कंकर मट्टी आदि । विष्टा । गूँड़ । गुब्ब । फिन्न ।
 अवस्तात्, (अव्य०) अवरम्बिन् अवरम्बान् अवर्त् द्रव्येषु धन्याति+अव् आदेशः । नीचे । नीचेसे ।
 अवस्तार, (पु०) अव+स्तृ+कारणे घञ् । जवनिका । कनात । दूरी । पट्टा ।
 अवस्तु, (त्रि०) कुरिसतार्थे नञ् । एक निकम्मी चीज ।
 अवस्था, (स्त्री०) अव+स्था+अङ् । दगा । धातु । हा-
 ल्त । उमर ।
 अवस्थान, (न०) अव+स्था+भावे ल्युट् । स्थिति । रिहा-
 यन । जगह ।
 अवस्यन्दन, (न०) अव+स्यन्द+भावे ल्युट् । हिंसन ।
 मारना ।
 अवस्यु, (त्रि०) अवः रक्षणं तदिच्छति क्यच् इन् Ved-
 अनुग्रहद्वी द्रच्छावाला । रक्षा चाहनेवाला ।
 अवस्यंसन, (न०) अव+स्यन्+भावे ल्युट् । अधःपतन ।
 नीचे गीरना ।
 अवहार, (पु०) अव+हृ+कर्त्तरि ण । चोर । पानीका
 हारी । तन्दुआ । निमग्नित ब्राह्मणोंका धन चुराना ।
 अवहित, (त्रि०) अव+धा+क । स्थापन किया गया । सा-
 वधान । हुशियार ।
 अवहेल, (न० स्त्री०) अव+हेल्+अ । घमसे त वा । अना-
 दर । बेअदबी ।
 अयाकूशिरसु, (त्रि०) अयाक् शिरोऽस्य व० । नीचे
 मुख । अधोमुख ।
 अयाध, (त्रि०) अवनतानि अधाणि इन्द्रियानि यस्य ।
 त्रिसद्वी इन्द्रिये शुभ गदे हैं । सराधक । रक्षकार ।
 अयाह्युर, (त्रि०) अयाक् मुखं अयम् । अधोमुख ।
 नीचे मुख ।
 अयाध्र, (त्रि०) अवननं अधं अयम् । त्रिसुधा आगा
 सुकरो । फिर सुकसे हुए । प्रभाव करनेवाला ।
 अयाच्, (त्रि०) अव+यति । अव+अच्+किञ् । नीचेकी
 ओर छोटा देण । (स्त्री०) दक्षिणदिशा । ६ व० । जो बोल
 नहीं सक्ता । मुँग । पिछडा समय (अव्य०) ।
 अयाच्य, (न०) अव+च्यन्-न कृञ्-न०-त० । अनिन्दित ।
 जो निन्दके योग्य नहीं । बचनवर्द । जो कहनेके
 योग्य नहीं ।
 अयात, (त्रि०) अव+थत्+थञ् । मूका हुआ । मूका ।
 अयातन्व, (त्रि०) अव+तन् अन्तरं मध्यं अन्ता० त० ।
 अन्तर-तन्नि अन्तरि । मीटरी दरमियानी । बीचका ।

अयाप्, स्था० उ० । पाना । लभ करना । अन्नोति-कृत्ये
 . आप-आपे । आपन्-आपिपत् ।
 अवारपार, (पु०) अवारं पारं च न्नां यम् । अर्धवत्
 दोनों किनारेवाला समुद्र । समुद्रबन्दर ।
 अवारपारीण, (त्रि०) अवारपारे गच्छति-ञ ।
 पार जानेवाला ।
 अवाससु, (त्रि०) न वागोऽस्य । वधरहित ।
 धिना । नंगा । रजस्रज ।
 अवि, (पु०) अव+इन् । मूर्ख । नेट । बकग । पतं
 खामी ।
 अवितथ, (न०) न विनयं भिव्या । न० त० । अन् ।
 अविद्या, (स्त्री) विद्+व्यप्-न० त० । विद्याभ्रत । विद्
 न होना । अहंकारका कारण अज्ञान । विद्याकी विरति
 अवधार्यबुद्धि । वेदान्तमनमें भाव किया अनको
 कही जानेवाली अचेतन (जट) माया (परममन्त्री कही
 अविनाभाव, (पु०) विना (व्यापकं कृते) न
 (स्थितिः) व्यापकस्थित्युत्प्रेषि सत्तास्या व्याप्ति ।
 व्यापक (कारण) के बिना न रहसके । जैसे अग्निके
 ना धून नहीं रह सक्ता अर्थात् जहाँ धूम होगा वहाँ
 अवश्य होनी चाहिये । व्याप्ति ।
 अविनीत, अव+नी+कर्त्तरि क् । उद्धृत । अविज्ञित । र
 खादुआ । नाकरमावरदार । (स्त्री०) कुट्टा । बर
 औरत ।
 अविमक, (त्रि०) अट्टयक् । नाडदा (पुं०) वि+म
 क-न० त० । समृद्ध । विभागरहित द्रव्य । खानो ।
 अविमुक्त, (न०) वि+मुच्+क्-न० त० । जिने पतं
 और महादेव नहीं छोडते । काशीक्षेत्र । मुक्तनिप ।
 मुक्त नहीं (त्रि०) ।
 अचिरत, (त्रि०) वि+रम्+भावे क् । न० व० । विर
 द्रव्य । छगानार ।
 अचिरत्, (त्रि०) न विरलः न० त० । घन । विर
 मिलाहुआ । संघना ।
 अचिवेक, (पु०) वि+विच्+धञ्-न०-त० । सदसदितो
 भाव । मते बुरेका न विचारना । वेवहृद्वी । अदन्त ।
 अविधान्त, (त्रि०) वि+ध्रम्+क्-न०-त० । विर
 द्रव्य । छगानार ।
 अचिरपट, (न०) वि+रम्+क्-न०-त० । शरत् बन्ना
 जो शरत् न हो ।
 अचीचि, (पु०) कामि वीचिः (सुप्तं) अत्र । नार
 संघ । विनयंग (न०) ।
 अचीर, (त्रि०) वीरः (पुत्रादि) नास्ति यम् । र
 रहित । बटहीन ।

अधे, शब्द+अश- प० । जामा । रामरामा । सीपना । पहिचाना । एनि । इयाय । अगत् ।

अधेक्षण, (न०) अध+ईश+भावे ल्युट् । दंतन । देराना । मनक लगाना । सोचना । "अधेरा" इगी अर्थमें ।

अधोक्षण, (न०) अध+उक्ष+भावे ल्युट् । Ved. घोडेसे हुके हुए हाथसे सीचना ।

अधोद्, (प्रि०) अध+उद् भावे घञ् निपातः नलोपः । आर्द्र । मीला ।

अध्य, (प्रि०) अधि+अधायं क्त । भेदमें आया वा भेदका सम्बन्धी ।

अध्यस, (पु०) वि+अप्र+क-न०-त० । विष्णु । चमदेव । शिव । मूर्धं । प्रधान । आत्मा । परमात्मा । सुमनसरीर ।

अध्यत्तराग, (पु०) न व्योयो रागोऽहनिमा दस्य । योग काल । अदणवर्षं ।

अध्यजन, (पु०) नास्ति व्यजनं (शुभलक्षणं मृतं) मय्य । शीगके बिना पशु । धच्छे लक्षणसे शून्य । चिह्नद्वय (प्रि०) ।

अध्यय, (पु०) न व्ययने (पत्रां न चलति) व्यप् । करना और चलना-अच् । सार्पं । सांप पीमके बिना (प्रि०) ।

अध्ययिन्, (पु०) बहुचलनेऽपि न व्ययते । व्यप्-इनि । अध । घोडा ।

अध्यामिचारिन्, (प्रि०) वि+अभि+चर्+गिनि-न०-त० । किसीकी प्रतिबुद्ध कारणसे न हटायाजानेकारण । न हटने-वाला । म्यायमतमें शुद्ध हेतु (पु०) ।

अध्यय, (न०) वि+इन्+अच्-न०-त० । सब विभक्तिओं और ध्वनेमें एकरूप शब्दमें रहनेकारण धर्मविशेष । जैसे सर्वत्र एकरूप होनेसे खरादि अव्यय हैं । शिव । विष्णु (पु०) आपन्तरहित । विचारग्रन्थ (प्रि०) ।

अध्ययीमाय, (पु०) अनभ्ययं अभ्ययं भवति अनेन । अभ्यय+चि+भू+करणे घञ् । अकारणमें प्रसिद्ध एक रामास । जैसे "उपभृम्भे" मद्ये अनभ्यय मी बुम्भादिपद अभ्यय बन गया है ।

अध्ययस्था, (स्त्री०) वि+अव+स्था अह-न०-त० । अधि-दान् । अधिधि । शास्त्रके विरुद्ध उपदेश । नियमना न होना ।

अध्ययहार्य, (प्रि०) वि+अव+हृ+भ्यत्-न०-त० । जिकके साथ धावन वा भोजन उचित नहीं । जो व्यवहारके योग्य नहीं । जो अपने धर्मसे गिरगया हो । परित ।

अध्ययहित, (प्रि०) वि+अव+धा+कर्मणि-क-न०-त० । व्यवधानशून्य । साथ । लगानुआ । बिना परक ।

अध्याहृत, (प्रि०) वि+आ+हृ+कर्मणि-क-न०-त० । वेदान्तमें बीकरूप जगत्का कारण अज्ञान । साध्यमें प्रधान ।

अध्याप्यवृत्ति, (प्रि०) व्याप्य (साधिकरणं देशादिकं ता-वन्नेन संबध्य) न वृत्तिः (स्थितिर्मय्य) । जो अपने आश्रयके सम्पूर्ण देशमें न रहे । जैसे घट पृथिवीके एकदेशमें ही रहताही इत्यादि व्याप्यवृत्ति है । व्याप्यवृत्ति तो जातिआदि है जो घट आदिमें सम्पूर्ण रूपसे संयुक्त हुआ ही स्थित है यह न्यायमतमें प्रसिद्ध है ।

अध्व्युत्पन्न, (प्रि०) वि+उत्+पद्+क-न०-त० । सम्पूर्ण शब्दसंबंधी प्रत्येक अङ्गको जामेकी शक्तिका नाम ध्व्युत्पत्ति है उससे अर्थात् अवयवार्थसे शून्य शब्द " वह शब्दकी जो धातु प्रत्ययसे सिद्ध नहीं होसका " । शब्दके अर्थको न जानेकारण मूर्धं आदि ।

अशु, फेल्ना-क्षा०आ+शक०वेट् । अशुते । आशिष्ठ-आट । आनसे

अशु, खाना-शश+पर+शक०सेट् । अश्राति । आशीत् । आरा ।

अशान, (पु०) अशुते (व्याप्नोति) अशु+ल्यु । पीतसाल-वृक्ष । पीपा । भावे ल्युट् । व्याप्ति । फेल्ना । भोजन (न०) । अप्र ।

अशानाया, (स्त्री०) अतिलोभेन अशानं इच्छति । अशान+क्यच् श्रियां भावे अच् । बहुत लोभसे खाना चाहताहै । भूख ।

अशानायित, (प्रि०) अशान+क्यच्+कर्त्तरि क । श्रुपित । भूखा ।

अशानि, (पु०) अशुते (सहति) अशु+अभि । मज्ज । विजुनी । बर्क ।

अशाब्द, (प्रि०) नास्ति शब्दो, वेदादी वाचकशब्दो वा यत् । शब्दहीन । वाचकशब्दरहित । प्रधान " ईशतेनीशब्दं " इति मूर्धं ।

अशारीर, (प्रि०) नास्ति शरीरे तदनिमानो वा यत् । शकल निषेधरूप देहशून्य परमात्मा । शरीरके अभिमानसे रहित जीवन्मुक्त । " अशारीरे वाच सन्तं प्रियाश्रिये न हृदयत । " ।

अशास्त्र, (न०) शास्त्र+वरणे ध्रुव-न०-त० । वैदादि विरुद्ध नास्तिकका शास्त्र ।

अशित, (प्रि०) अश्+कर्मणि क । भक्षित । पायाहुआ । रजाहुआ

अशितहृषीन, (प्रि०) अशितास्तुता गावोऽत्र । जहां गाएँ रजती हैं । वह स्थान कि जहां गाएँ बरती हैं ।

अशितम्भय, (प्रि०) अशितस्तुतो भवत्सनेन । रा मुम्भय । तृणिका साधन अप्रादि । गणद्वय । खानेकी चीज

अशिश्री, (स्त्री०) नास्ति सिन्धुवंसाः शीष् । सिन्धुतीना स्त्री । बेभीलाद औरत " स्वार्थे के हत्ये " " अशिशिका " इती अर्थमें होताहै ।

अशीति, (स्त्री०) दशानां अवयवं दशति, दशकं अष्टगुणित्वा दशतिः प्रि० । अशीत्-देशः । संख्याश्रितेषु । ८० अश्वी ।

अश्रुम, (न०) नाभि शुभं यस्मान् ५ व० । पाप । अम-
 क्त । पानी (वि०)
 अशोष, (वि०) नाभि शोषो यस्य । शोषहीन । तमाम ।
 उदन्तिहा ।
 अशोक, (पु०) नाभि शोको मस्मान् ५ व० । अशोक-
 वृक्ष । बड़ढरु । पारा । कड़कड़ल (स्त्री०) । शोक-
 रहित (वि०) ।
 अशोच्य, (न०) शुचि+कर्मणि ष्यत् न० त० । अशोच-
 नीय । जो शोक करनेके लायक नहीं ।
 अशीच, (न०) शुचि+चः शीचं न० त० । शुचितामाव ।
 नाही । विहित कर्मके अनधिकारको सम्पादन करनेद्वारा
 अचनै । "शायं ष्यम्" "आशीच्य" इती अर्थमें है ।
 अश्व, (वि०) अश्वते व्याप्नोति अश्राति वा अश्व+नन् ।
 नाम । गड स्वनर फेटा हुआ । खानेवाला ।
 अश्वीनपियता, (स्त्री०) अश्वीन पियत इत्युच्यते यस्यां
 शिवेणकिरायां मयू० ध्वं० स० । साने पीनेके दिव्य निम-
 ष्नन ।
 अश्वक, (पु०) अश्व इव श्विरः, इत्यर्थे क्व् । पत्थरकी
 भाँति श्विर । एक ऋषिक नाम । दक्षिण रिशामें एक
 नगर ।
 अश्वगम, (पु०) अश्वेव गमोऽयम् । मरकतमणि । पत्रा ।
 मरिचिरेव ।
 अश्वग, (पु०) अश्वगं हन्ति (भिनति) हन्+उ । पा-
 वकनेदक वृक्ष ।
 अश्वान, (पु०) अश्वाने व्याप्नोति मरुत्पत्तनेन वा । कर्तारि
 वारणे वा नदित् । पर्वत । मेघ । पाषाण (न०) षोडश ।
 अश्वान्म, (पु० न०) अश्वानं श्वानवति । गुण । नृग-
 विरेच । अश्वेष्ट वृक्ष ।
 अश्वान्माल, (न०) अश्वेव अश्ववति कूर्मिनें करोति ।
 अश्व+विश+क्य कृती० यत्न कथन् । इत्यको कूर्मि कानेश-
 र्वा हन्मन्मन् (क्व्) नामने प्रसिद्ध कोहेका पत्र ।
 अश्वनी, (स्त्री०) अश्वानं हन्ति+क्य कृती० कृती० ।
 मूत्रहृत् । मूत्र । मूत्रहृत्तमें पत्थरकी भाँति कठिन मांस
 वधन है । रोमिरेव । पर्वतीकी बीमारी ।
 अश्वनीप्र, (पु०) अश्वनी (मूत्रहृत्) हन्ति+हृत्+उ ।
 को पर्वतीकी बीमारीको हृत् कर्त्तुं है । बरुणवृक्ष ।
 अश्वनार, (पु० न०) अश्वानं पार इव । षोडश । ६ व० ।
 जो कोहेके कथन कर्त्तुं है ।
 अश्व-उ, (न०) अश्वते वेपे कर्त्तुं वा । अश्व+उ ।
 जो अश्व वा अश्वते वेपे कर्त्तुं है । वेपकण । अश्वक
 वती । षोडश । अश्व

अश्रान्त, (वि०) अश्व+भावे क्त-न० त० ।
 स्तर । उगातार । "कर्तारि कः" न यद्य ह्यु
 अश्रि-श्री, (स्त्री०) अश्व+क्रि । अश्रिदिका
 पराश्रिदिका कोण । कोण । पार । अश्रि
 रहित (स्त्री०) ।
 अशु-सु, (पु०) अशुते व्याप्नोति नेत्रमन्
 (अम्) कुन् । जो आंखमें मरजतादे
 रीमता नहीं । नशुर्जल । आंखका पानी ।
 अशुत, (वि०) शु+क्त-न० त० । अनाकर्तव्य
 जो सुता नहीं गया ।
 अश्वरील, (न०) शिवं सति युद्धाति-व्याप्त
 क्तव्यम्प्रादिका प्राथ्यमाया । उवा देनेद्वारा
 घृता । देहानी जवान । गाड़ी । मछीन ।
 अश्वेपा, (स्त्री०) अश्व+घृन्-न० त० । नसप्रति
 तारा । इसके ५ तारे होतेहैं न० व० । न मि
 अश्व, (पु०) अश्व+कन् । घोटक । घोडा ।
 अश्वकर्ण, (पु०) अश्वस्य कर्ण इव पत्रं
 पत्ता घोटके कानकी तरह हो । सालवृक्ष ।
 जिसका कान घोटके कानकी तरह हो ।
 अश्वरज, (पु०) अश्व मगी च, अश्वी
 ताभ्यो जायते पुंरुद्रावः । सचरा । घोटका
 धर" ।
 अश्वरुत, (पु०) अश्वस्य सुरमेव सुरे मूर्ते
 पत्ता घोटके सुरके समान है । अश्वरुति
 अश्वर, (पु०) अश्वे हन्ति+हृत्+उ-उ-म
 इत् । इसके कानमें घोटका नाग होजाता
 अश्वतर, (पु०) तनुश्वः । अश्व+तनुवे हृत्
 वा । जो गर्भमें घोडीमें उत्पन्न हो । सचरा
 अश्वत्थ, न श्विरं शाकमिदृशकारिकम् शिवा
 नि० । शाकमी इश्वरिरे समान देवक न
 इश्वरिरेव । पीपल । गर्भमात्रका वृक्ष
 इत्येते) देवक न इत्येके कारण मण
 "कथंमूलमथ शाकमथयं प्ररुद्रवयम्" इति
 अश्वत्थामन्, (पु०) अश्वस्य इव श्वस्य कर्त्तुं
 म० । घोटके समान बड़वाला । बीरबोका
 मी इतीका वृक्ष
 अश्वत्थ, (पु०) अश्वन् पालयति । पा
 घोटकरुद्र । घोडीको पालनेद्वारा । मूत्र
 अश्वत्थ, (पु०) अश्वस्य कर्त्तुं, ६ त० न
 केका वृक्ष ।

अभ्यमुक्त, (पु०) अभ्यस्य मुक्तमित्युक्तम् । जित्वा मु-
मुक्त्यो देहेके समान हो । विप्र देवताविशेष.

अभ्यमेध, (पु०) अथो मेधव्ये (इहानं) अत्र । मेधु-
पम् । जित्वा मे घोडा माग जाणाई । एक दह । (इत्ये
एक प्रकारके अन्ते घोडेको मन्त्रोमे घाल करना पत्र बो-
ध, एक वर्षके दिवे घूमनेको छोट देते हैं; जब वर्षपगा-
नमें दह घोडा परबोली छोट आणाई उमे बोई मदि पत्र-
दना, तब उमे मारकर जिसकी बराबो होममें डालते हैं,
उदीका नाम अभ्यमेध होगा) .

अभ्यमेधपीप, (पु०) अभ्यमेधम दिनः । छत्ररायः । अ-
भ्यमेधका पीप.

अभ्ययुज्, (गी०) अभ्येन (इयमुपाकारेण) युज्जने ।
युज्ज+प्रिप् । जित्वा न्य घोडेकी गई हो । आशुर्वा प्र-
क्रिया । "मलधीयेऽपि अभ्ययुज्" इती अर्थमें.

अभ्ययोषक, (पु०) अर्थ योषि । यम+युज् । बरवीर-
वृक्ष । घोडेको रोषनेहारा.

अभ्ययारह (पु०) अर्थ आरयति युगा० १५अणु उर०
रा० । घोडेको रोषनेहारा वा बन्धु करनेहारा । अध्या-
रोही । घोडेपर बइनेहारा । युज्जना.

अभ्ययान्त, (प्रि०) न भोमवः । भयु+यु-उदय । युगरे
दिनके दिवे न रहनेहारा । एक दिनके निबंहरके रोष
आरति.

अभ्याभिधानी, (धी०) अभोऽभिधीयतेऽभिधानीहेड-
नया । अभिधा+भ्युद । जित्वा घोडा पकरा जाता है ।
घोडेके बोधनेकी राती । "अभ्याभिधानीयदने" भुति .

अभ्यारि, (पु०) अभ्यारिः ६ त० । मदिप । भैया.

अभ्यारोह, (पु०) अर्थ आरोहति । रह+अणु । घोडेपर
बइनेहारा । युज्जनेके लार्ह करनेहारा । "आधर्षण".

अभियन्, (पु०) प्रि० अधा गतिं यथे । इति । जि-
मके घोडे ती । स्वर्गे ईष (इकीम) अधिनीडमार ।
गर्दके बीर्ये अधिनीमे उगत हुए जोडे पुत्र.

अभियन्ती, (की०) अध ह्योनस्यभ्योऽप्यस्य । जित्वा
गिर घोडेकी गई हो । "दीप्" १० लोमे ३ म
बिजरी । इहाम गुरेकी की.

अभिनीडुमार, (पु०) प्रि० । कधीभूया गेहान्ती ए-
रुपनी तानी अध्यायेन युजेन जनी डुमारो । घोडेपर घु-
रेंदी लोमे (जित्वा कम इह देकी का) घोडेपर घुंरेंदी
वपक हुए ही डुमार । मनेके ईष (इकीम)

अधीय, (न०) अधानी गन्तुंउभेयो दि० क छ (ईर)
अधस्यद । अधिन (प्रि०) घोडेका टिणकारी.

अधोरा, (न०) अधरा रा ह्य (ह्यर्द) अध द० ।
दुख अध । अधरा राह.

आरू, चनकना-अद० जना, देना ध्या० उम० हृद० वेद् ।
अनलिने । आपीय.

अपइशीण, (प्रि०) न मन्ति पद् अर्थादि (श्रीदेविक-
वि) यत्र । रा (ईन) लीगरे जनके बन्नेके न दुःखपदा ।
दोनोंतिमे क्रिया गया मन्त्रदि (सगइ बंगार) दोनोप
मनकरह.

आपाह-व, (पु०) बीतामये लीसरा मय । इर.

आपाहा-वा, (धी०) उतागारा की पूर्वाका देने
मसत्र (सोरे).

अष्टक, (न०) अष्टौ अष्टायाः परिमाणं अष्ट । अष्ट०
बन् । पणिनीका अष्टाध्यायी मय । ६ अष्टादीका अठे-
दवा अष्टके अंश (भाग) (इग विदमने कालेदे ६
भाग हैं)

अष्टवा, (धी०) अष्टानि विगतोऽष्टा प्रि० अष्टा+अष्टव् ।
सप्तमी आदि सौत दिन । पंच, षष्, सप्तमकी दूना
हमी । "अष्टाविन्दवदे" इग विदमने दही इग मदी दे-
अष्टव्, (प्रि०) अष्ट० । गेहपविशेष । अष्ट

अष्टधा, (अथ०) अष्ट प्रकार । आठ तरहके

अष्टधानु, (म०) अष्टौ धानवः । अष्टकने । लोका । का-
की । सोका । सीतल । बांटी । शिवा । बनी । अष्ट.

अष्टपाद-द, (पु०) अष्टौ पादा अथ ८००० आठपैरा ।
दीपि पदावे गोपनी बन्धुकर । जित्वा अष्ट पैर हो ।
मुगविशेष । एक शिवाका दिन । अष्टपैरा अठ । दण

अष्टमङ्गल, (पु०) अष्टम अष्टमयु दण्डं अथ । जित्वा
आठे लामो (छीं, काँ, दा, पुत्र, पुत्र, लीं दीरै
काँ) पर अष्टमङ्गलकर (विरान) दण्ड हो लीं अष्ट
मङ्गल पैरा । अष्ट अष्टमङ्गलका लकार (लोप) डेन
वि इग गोपामें अष्ट अष्टमङ्गल है, अष्टम, लीं अष्ट,
सोक, दी, मर्द, अठ लीं अठ । (अष्टमं ६ दण्डे) दे
२, देल, हाकी, बसल, दल, दल, देरी लीं दील

अष्टमान, (न०) अष्टौ मृद दव (दैवदव) अथ ।
जित्वा मय अठ मुंमि हो । युज्जना (११ लोमे ७)
अठ मुंमि

अष्टमी, (धी०) अष्टमी दृष्टी । अष्टोमे दृष्ट करेदुनी ।
१० दण्डके अष्टमकी मदी बलकी क्रिया । अठे क-
की विदि

अष्टसुवि, (पु०) अष्टौ सुवित्तो सुर्वेऽष्टव । सुर्वे
अष्ट जितकी अष्ट सुर्वे है । इति, अष्ट, लोप, वदु
अष्टव, अष्ट (पर अठेहारा दण्डक) सुर्वे लीं ०
दण, इष्टव अठ सुर्वेके विदुष्ट (विदि)

अष्टलौह, (न०) अष्टल अष्टल (अष्टल) दण
दण । अष्ट दण्डके दण्ड । अष्ट करी अठ लीं
अष्ट, लोप, लीं लोप लोप, दीनक दण अठ दण है

आग्नीध्र, (न०) अग्नि इत्ये अग्नीन् तस्य आगम । होम करनेवालेका घर । मनुवंशमें त्रियम्बरका ज्येष्ठ पुत्र ।

आग्नेय, (न०) अग्निदेवताम्यस्य अण् । त्रिसङ्की देवता अग्नि हो । सुवर्ण । गोना । घी । लालरंग । वसिष्ठगण (महापुरुष) । आगवाला । एक नगर । अगस्त्यमुनि । (पु०) । "आग्नेयी" (स्त्री०) पूर्वे धीर दक्षिणाके मन्व- की दिशा । अग्निही स्त्री स्वाहा । प्रतिपदा । अग्निदेवता- का मन्त्र ।

आध्याधानिकी, (स्त्री०) अध्याधानस्य यद्रम्य दक्षिणा+ठन् । ब्राह्मणोंको देने योग्य धन । यज्ञी दक्षिणा ।

आप्रभोजनिक, (पु०) अप्रभोजनं नियतं दीयते अस्त्रै+ठन् । वह ब्राह्मण जिसे सन्धे पहिले भोजन दिया जाता है । सन्धे आगे बटनेवाला ब्राह्मण ।

आप्रयण, (न०) अप्रे अयनं भोजनं शय्यादेयं कर्म- णा पु० इन्द्रदीपेभ्यस्तयः । नये फलदिका भोजन करनेसे पहिले एक प्रकारका यज्ञ । एक अग्निहा मन्त्र- प । नया अन्न ।

आप्रहायणिक, (पु०) आप्रहायणी पांशमासी दमिन् मावे+ठक् । मार्गशिर (मार्गशिर) का महिना । पूर्वमा- वाला मास । "आप्रहायण" इसी अर्थमें होता है ।

आप्रहायणी, (स्त्री०) आप्रहायणा मृगशिरसा नक्षत्रे- न दुक्षा पांशमासी-अण्-वीर् । मृगशिर नक्षत्रवासी पूर्वमा । मार्गशीर्षे (मार्गशिर) मासकी पांशमासी ।

आप्रहारिक, (पु०) अप्रहाउप्रभागो नियतं दीयते- प्रमं ठक् । नियमसे जिसे पहिल्या भाग दिया जाय । पहिले भाग देने योग्य ब्राह्मण । श्रेष्ठ ब्राह्मण । उत्तम- ब्राह्मण ।

आघट्ट, (पु०) आघट्टति रोषान्-ठुल् । लालरंग । अस्- मंगेषुष्ठ ।

आघान, (पु०) आ+हन्+घञ् । आहनन । चोट । "आघारे पन्" बचस्थान । मारनेकी जगह । कटलघर । कथाईखाना ।

आघान, (पु०) आ+हन्+घञ् । चोट । परस्पर चोट करना ।

आघार, (पु०) आ+हृ+घर्मणि घञ् । घी । "मावे घञ्" होम आदि । मन्त्रविशेषसे देवताविशेषको घी देना ।

आघृषित, (त्रि०) आ+घृ+क । चाटित । छिटाया- गया । अस्मिन् । पुनाकागया ।

आघृषि, (त्रि०) अघृणते पृथुर्शानिरम्य । मेत्रये चम- क्नेहाय । प्रहस्यमान । बहुतसे घनवाला । मूर्धे (पु०) ।

आघ्राण, (न०) आ+घ्रा+ण् । गन्धग्रहण । गन्धका देना । संघृणा । रबना ।

आघ्राण-ण, (त्रि०) आ+घ्रा+ण् । गन्धग्रहण । गन्धका देना । संघृणा । रबना ।

आघ्राणम्, (न०) अघ्राणती गन्धं गन्धं । यद्गन्धे जडनेदृक् कोटिने ।

आघ्निक, (त्रि०) अघ्नते अन्नं यत्नेन श्रेष्ठं को प्रकाशकनेकरने "अग्नेमि निद हु- ना आदि । अंगोमे उवाजा । यज्ञ । अग्नि- मिनय । "अघ्नितोऽभिनयः" ।

आघ्निरम, (पु०) अघ्नितो मुनेरानं य- पुत्र । यद्गन्धी ।

आह्वय, (पु०) अह्वय-नाथे अण् । अन्ते वैदिक गीत । गीत ।

आचर्य, अ० वा० । बोधना । प्रतिदहान- बन्धना । वर्णन करना । आचर्ये । बन्धने ।

आचतुर्गम्, (अव्य०) चतुर्पन्तं+अर्+ पीठोत्तरक । चारतक ।

आचम्, म्वा० प० । आचमन करना । बन्ध- जड पीना । आचमन्ति । चमन । बन्धने ।

आचमन, (न०) आ+चम्+भावे लुट् । पीना । मुख आदिका पीना । खनेके जल डालना । मिहित कर्म करनेके प्र- के दिने तीनवार हाथपर जलदान करना पहिले जल पीना ।

आचमनक, (न०) आचमनस्य मुच्यते अन्न- अन्न । जहाँ मुह धोनेका पानी पड़े । पी- पीकहन ।

आचमनीय, (न०) आचमनान् मुच्यते अन्न- इच्छन् छ । आ+चम्+करणे अनीयत् वा । पानी ।

आचान्त, (त्रि०) आ+चम्+उ । आचन- जल पीनागना ।

आचाम्, (पु०) चम्+भावे घञ् । आचन- च्यना ।

आचार, (पु०) आ+चर्+भावे घञ् । खे- खन । मनु आदिसे कहागया अन्न आचन ।

आचार्य, (पु०) आ+चर्+ध्वञ् । जो "अ- पवीत कर कण और उपनिषद्ग्रन्थिन वे- का पढनेहाय । मनसंस्थान करने- आदि । "धियां टाण्" आचार्या । आचार्यानी ।

र्यक, (पु०) शाखायाम् कर्म भवो वा-भुम् ।
 पयस्य वा म । आकाशयना । आकाशके करनेका-
 क काम ।
 वेत, (त्रि०) आ+वि+क् । संवृणोति । इत्यत्र विना-
 या । वाचन । वचन । पर्याहुआ । एक रथका भार
 ५ मन ।
 छन्द, (त्रि०) आ+छन्द+क् । आह । दक्षाहुआ ।
 पर्याहुआ ।
 छान्द, (पु०) आच्छान्दोऽनेन । छान्द+विष्+करणे
 क । वच । वचन ।
 छान्दन, (न०) आ+छान्द+विष्+स्तुर । वच । वचन ।
 गि । पत्रदा ।
 छेत्प्र, (त्रि०) आ+छिन्+कल+इहने क् । बलते
 वजागया । बाटागया । ओरसे सोयाहुआ ।
 छुरित, (न०) आ+सुर+क् । सम्बन्धित इत्यना ।
 सोरो पिपता । विन्दसिमाकर इत्यान । नख्तोका शब्द ।
 छ, (न०) आञ्जतेऽनेन । आ+ञ्ज+क्+पमर्थे क ।
 ५ । "अञ्जतेर्दं अण्" । बकरेका मांस आदि ।
 छक, (न०) अञ्जानां सम्प्रः सुप् । छागवमुद् ।
 करोका सुप् ।
 जे, (स्त्री०) अञ्जति अस्यां । अञ्+इन्+न बीजिनः ।
 मरुभूमि । संमामभूमि । लडाईकी जगह । माली ।
 शब्दक ।
 जीय, (पु०) आजीव्यतेऽनेन । आजीव्+करणे यम् ।
 आजीविका । जीनेका निर्वाह । "आजीविका" इसी
 अर्थमें ।
 जु, (स्त्री०) आजवति । आ+जु+किन्+वीर्यः । तन-
 डादिना वान करनेहार ।
 ज्ञा, (स्त्री०) आ+ज्ञा+अर् । निदेश । ऐसा करते ऐसा
 ज्ञान । हुकम । ज्योतिषप्रतिद समसे १० वां स्थान ।
 ज्य, (न०) आ अज्यते । अन्+अयप्+नञ् ।
 इत् । पी ।
 ज्यभाग, (पु०) आज्यस्य भागः । होम । आहुतिवि-
 शेप । पी ।
 ज्ञनेय, (पु०) अज्ञनाया अपत्यं-इक् । इतुमान् ।
 ज्यिक, (न०) अट्ठ्यां चरति, भरो वा ठक् । जंगली
 वेना । जंगली ।
 जोय, (पु०) आ+जु+अयप्+शुपो० । टलम् । अहंकार ।
 वेग । जोर । वायुये उत्पन्नहुई पेटकी बीमारी ।
 जम्बर, (पु०) आ+जम्भि-अरु+म्भिकता । हर्ष । सुखी ।
 अहंकार । बाजेरी आवान । आरम्भ । वेग । आंगके
 रोप । बादलका गवेना । बाबा । प्रस्ता । हाथीका शब्द

आटक, (पु० न०) आट्टिकते-आ+वाक्+अयम्-शुपो० ।
 चरों ओरते इस अंगुलका माप । चापस्थ परिमाण ।
 चासोर । पशोपा । अनात्र विननेका पात्र ।
 आट्टकी, (स्त्री०) आट्टिकते अय्-शुपो० । अहतरामी शामी-
 का धान ।
 आट्ट्य, (त्रि०) आ+अय्+क्+शुपो० । युक्त । गिलाहुआ ।
 बना धनी ।
 आणक, (त्रि०) अणक एव स्वार्थे अण् । दीच । छोटा ।-कं ।
 स्त्रीपुरुषकी स्त्रीका ।
 आणि, (पु०) अण्-इण्-श्रियं वा षीप् । रथचक्के आगे-
 का हील । नोक । हू । बोना ।
 आरतङ्ग, (पु०) आ+रत्कि+अयम् । रोग । घन्ताप । सन्देह ।
 दोलका शब्द । भय । डर ।
 आतञ्जन, (न०) आ+अम्+ल्युट् । वेग । हाक करना ।
 जलाना । नास । फेंकना । उपद्रव । सुधीबत ।
 आतत, (त्रि०) आ+तन्+क् । फेंका दिया गया । रिखर
 दिया गया ।
 आततायिन्, (त्रि०) आततेन विलीनेन एकारिना
 अग्निं शीतं अह्य । अय्+गिनि । हाथ उठाकर जित-
 का मारनेका स्वभाव है । मारनेको तयाहुआ । महा-
 पापी । छ प्रकारके महापराधी-आम सगानेहारा, विप-
 केनेहार, दाखपाला, धनका चोर, सेतका चोर, और
 श्रीका चोर ।
 आतन्, तना०उ० । फेंकना । पिछाना । हांकना । तनोनि-
 तनुते । ततान-नेने । अतानीत् । अतनुन-अतत ।
 आत्तप, (पु०) आ+तप्+अयम् । पीशना कारण ।
 तूरज वा आगदी गरमी । धूर । प्रकाश । सूर्यका
 प्रकाश ।
 आत्तपथ, (न०) आतपात् प्रायते । नै+क् । छाता ।
 ओ धूरते बचावा है ।
 आतर, (पु०) आतरत्यनेन । तु+शप् । नदीआदिके
 करनेकेलिये भाङ्ग ।
 आतर-आतर, (पु०) आतरति अनेन-तु+अय्+अयम् वा ।
 नदीके पार जानेका किराया । मजल ।
 आतापि, (पु०) आ+तप्+इप् । एक देसका नाम जिसे
 अगल्यने निगका ।
 आतापिन्, (त्रि०) आ+तप्+मिन् । राबरा (पु०)
 कीलपशी ।
 आतायिन्, (पु०) आ+ताय्+मिन् । शीत नापके श-
 सिद्ध पत्नी ।
 आतिथेय, (न०) अतिथये इदम्-इक् । अतिथिके लिये
 भोजनारि । "तम् वायुः इक्" । अतिथिकी पूजा । अतुर ।
 इयात् (त्रि०)

आतिथ्य, (न०) अतिथेरिदं-व्यः । अतिथि । अतिथितेवा ।
आतिथाहिक, (त्रि०) अतिवाहे इहलोकात् परलोक-
 प्रापणे नियुक्तः-उक् । इस लोकसे परलोकमें पहुंचानेका
 काम करनेहारा । मरेहुएकी सूत्रदेहको दूसरे लोक-
 में पहुंचानेके लिये ईश्वरसे नियत कियागया आंचि-
 रादिस्थानमें निवास करनेहारा देवविशेष । “आतिगाहि-
 कस्तस्त्रिहाव” वे० सू०
आतिशय्यं, (न०) अतिशय-स्वायं ध्यम् । बहुत ही ।
 बहुतायत । महाराशि ।
आतिष्ठम्, (न०) अतिष्ठस्य भावः अण् । सबके ऊपर
 आज्ञा चलानेवाला ।
आतुजि, (त्रि०) आ+तृज्+इत् । किसीपर आक्रमण कर-
 नेवाला । हानि पहुंचानेवाला । लेजानेवाला । हिंसा कर-
 नेवाला ।
आतुर, (त्रि०) ईषदधे-आ+श्वत्+उरच् । पीडित । रोग-
 युक्त । रोगी । दुःखिया ।
आतृद्, रुधा० प० । वदजाना । दुःख पहुंचाना । धकेलना ।
 खोलना । हिंसा करना । तृणति । ततर्दं । अतर्दति । तृण्य ।
आतृष्ण, (त्रि०) आ+तृद्+कृः । खी किया गया । वैधा
 गया । काटा गया ।
आतोद्य, (न०) आसमन्तात् तुद्यते-आ+तृद्+ण्यत् ।
 बीणाआदि चार तरहका बाजा । सब प्रकारका बाजा ।
आत्तगन्धा, (त्रि०) आत्तो गृहीनोऽरिणा गन्धो गर्वा यस्य ।
 प्रभुने जिसके अहंकारको दबा लिया । प्रभुसे दबाया
 गया । काम ।
आत्मगुणा, (त्रि०) आत्मनः गुणः स्वराज्यैव रक्षितः ।
 आत्मरक्षीनामी लता ।
आत्मवातिन्, (त्रि०) आत्मानं देहं हन्ति । हन्+णिनि ।
 जो वृथाही आग वा पानीआदिके द्वारा अपने देह-
 का नाश करे । अपनी हत्या करनेहारा । खुदकशी ।
आत्मघोष, (पु०) आत्मानं घोषयति स्वराज्यैः । आप-
 ही अपनेको बुलानेहारा । बाँवा । बुद्ध । (वा का)
 (कृ कृ) इस ध्वनिसे अपनेही नामका एकदेश लेते हैं ।
आत्मज, (पु०) आत्मनो जायते, आत्मा वा जायते । जन्
 +इ । अपनेसे उत्पन्न होता है । वा आपही उत्पन्न
 है । पुत्र । “आत्मा वै जायते पुत्रः” इति धुनिः ।
 “आत्मजन्मा” इसीअर्थमें होता है । कन्या । लडकी ।
 मनमें उत्पन्न हुई बुद्धि (स्त्री०) ।
आत्मदर्श, (पु०) आत्मा देहः दृश्यतेऽत्र । दृश्+आपारे
 षच् । जहाँ शरीर देखा जाता है । दर्पण । शीसा ।
 आरधी ।
आत्मन्, (पु०) अन्+मनिन् । स्वप्न । यत्न । देह ।
 मन । इति । बुद्धि । स्वयं । अग्नि । वायु । जीव । प्रस्य ।

आत्मनीन, (त्रि०) आत्मने दिन+न् । किसीका ब्रह्म
 पुत्र । गाल । (नाटकमें) विपुलक । अपना हित बर्-
 नेहारा । मन्दिनशरी ।

आत्मनेपद्, (न०) आत्मने आत्मार्थकप्रयोगेनाप पद्
 अत्रक ग० । अपनेलिये पद् । दो परमिमें एक विस्ने
 गंष्टन धातुओंका उच्चारण होनाहै ।

आत्मयान्धय, (पु०) आत्मनः बान्धयः । अपने बान्धव ।
 मातापी बहिनके लडके । पिताकी बहिनके लडके ।
 मामके पुत्र ये सब अपने बन्तु गमनने चाहिये ।

आत्मभू, (पु०) आत्मनो मनगो देहात् वा भवति । भू+
 क्तिप् । जो मनमें वा देहमें उत्पन्न है । चारमुच्यते
 विधाता । कामदेव ।

आत्मम्मरि, (त्रि०) आत्मानं विमर्दि-य-सुम्ब । अपनेही
 पेट भरनेहारा स्थायी । लालची । अपनेहीसे पाबलेहण ।

आत्मयोनि, (पु०) आत्मा योनिः अस्य । विश्व । मर्
 देव । प्रसा । कामदेव ।

आत्मरक्षा, (स्त्री०) आत्मन एव रक्षा यस्याः । रक्ष्ने-
 द । अपनी रक्षा

आत्मसात्, (अव्य०) अपने वाच्यमें । किसीका अपने ।
 अपने आधीन ।

आत्महन्, (पु०) आत्मानं हतवान् । हन्+क्तिप् । जिसे
 अपनेको मारा । जो अहंता अमोक्षा स्वयंभु आत्मसे
 कर्ता भोक्ता आदि मानताहै । जो अपनेको बचाने नई
 जानता । मूर्ख । जागृचाही । अपनेको मारनेहारा जन

आत्माधीन, (पु०) आत्मनोऽधीनः । अपने आधीन ।
 पुत्र । साहा । प्राणका आश्रय ।

आत्माश्रय, (पु०) आत्मानं आश्रयति । आ+श्रि+अच् ।
 त० । जो अपना आश्रय लेताहै । जिसे अपनी अपने
 आपही हो ऐसा तर्कका एक दोष ।

आत्मीय, (त्रि०) आत्मनोऽयं-छ । ये अपना है । अपना ।
 अपना संबंधी ।

आत्मोद्भवा, (स्त्री०) आत्मनैवोद्भवति । भू+अच् । जो
 अपनेसे उपजे । मापवर्णी वृक्ष । “आत्मा उद्भवो यस्याः”
 कन्या । पुत्र (पु०) ।

आत्यन्तिक, (त्रि०) अत्यन्त-मारायं उक् । बहुत होना ।
 अतिशयजन ।

आत्ययिक, (त्रि०) अत्ययः नाशः प्रयोजन अस्य उक् ।
 नाश । तत्कालीक देनेहारा । बदकियमन ।

आश्रेय, (पु०) अश्रेयपर्यं-उक् । अश्रियुनिद्धा पुत्र ।
 शरीरका रग धातु । अत्रिके बंधामें हुआ । शिवजीका मन ।
 एक नदीका नाम । जो बंगालकी उत्तरदिशामें है (स्त्री०)

आग्नेयी, (स्त्री०) अ हन्ति त्रिदिनानि कर्मयोग्यानि यस्याः ।
दृग् दृ० वा अग्र । क्षायं दृग् । जिसके तीन दिन काम
करने योग्य नहीं । ऋजुमती स्त्री । एक नदीका नाम ।
“ पुन क्षायं क्षति हृत्वे ” आग्नेयिका मी.

आधर्षण, (पु०) अधर्षणा मुनिना दृष्टो वेदः -अण्-त्
अधीते- वेति वा-पुन- अण् । तत्र विहितं वा-पुनः अण् ।
अधर्षणमुनिसे देनागया वेद । अधर्ववेदको जो पढ़ता
वा जानता है । अधर्ववेदमें विधान कियागया । अधर्ववेद-
को पढ़ानेहारा ब्राह्मण । अधर्ववेदमें बहागया अभिचार
(हाथुमारण) आदि काम । अधर्ववेदके अनुगार किया
करनेहारा ब्राह्मण (पुरोहित).

आदत्त-आत, (त्रि०) आ+दा+क्त । किया गया । स्वी-
कार किया गया.

आदत्, (पु०) आ+द+क्त । प्रतिष्ठा । समादर । सम्मान ।
आरम्भ । इञ्जत.

आदत्त, (पु०) आदत्तवेदज । दत्त+आपारे घम् । जिसमें
स्वरूप देता जाय । दंपण । दीक्षा । आदना । दीक्षा ।
प्रतिरूप । पुष्टक.

आदहन, (न०) आ+दह+अन+आदहतते अहिमन् । जलना
हानिपहुंचाना । मारना । समान (मघान) । वह स्थान
जहाँ कोई पदार्थ जलना जाय.

आदा, पु० आ० । आदत्ते । देना । स्वीकार करना । आभय
देना । आगेसे लेने जाना.

आदान, (न०) आ+दा+भावे ल्युट । ग्रहण । लेना । पो-
केका लेकर

आदि, (पु०) आ प्रथमं वीयते एष्यते । आ+दा+क्ति ।
प्रथम । पहिले होना । कारण निकट । प्रकार । हिस्सा ।
मुख.

आदिकवि, (पु०) अग्रदेव । और वात्मीविमुनि.

आदित्य, (पु०) अदित्या अपार्य-दद् । अदिति की सन्तान
न । देवता.

आदित्य, (पु०) अदितेरत्यम्-स्य । सूर्य । देवता ।
सूर्यमेंबलमें रहनेहारा सुवर्णस्वरूप पिप्पु । आकाश वृक्ष ।
बाह्य सूर्य । “आदित्या द्वादश प्रोक्ताः” । पुनर्वसुनामय.

आदित्यसु, (पु०) सुमीव । यमराज । शनि । साव-
र्णिनामा मनु । वैवस्वत मनु । कर्णेनामी राजा.

आदित्यसु, (त्रि०) आ+दा+सु+उत् । लेनेकी इच्छा करने-
वाला.

आदिन्, (त्रि०) अति इति अद्+मिति । रानेकाल.

आदिदेश, (पु०) आदीं धीमन्ति-स्वयं राजते । दिव्+अच्
७ त० । जो प्रथमही शीघ्र करता है । आपही चमकता
है । नारायण । शिवजी महाराज । आदिकारण ब्रह्मा.

आदिपु (पू) द्य, (पु०) आदी पुति देहे वरति ।
बग्+उपन् । हवेन आत्मना दूरयति जगत् । पूर+उपन्
वा-उ० वा ह्रस्वः । जो पहिले धारीमें रहता है । जो आपही
घारे जगत्को पूर्ण करता है । पहिला जीव क्षिरण्यगर्भ ।
नारायण.

आदिम, (त्रि०) आदी भवः । आदि+दिमच् । पहिले
हुआ । आदिका । पहिला.

आदियराट, (पु०) आदिभक्तो वराहः । विष्णु । (वह
सबसे पहिले ब्राह्मणसे अवतार ग्रहण कर्ता भया).

आदिष्ट, (न०) आ+दिश्+भावे क् । आका । हुकम ।
आदेश । “ कर्मणि क्तः ” । हुकम दियागया । आदेश
कियागया । व्याकरणप्रसिद्ध स्थानज्ञात जैसे इहके स्थानमें
यण् आदेश कियागया है तो आदिष्ट यण् हुआ । कहा-
गया । पहिले बहागया । प्रतिनिधी हुआ.

आदीनय, (पु०) आ+दी+भावे क् । आदीनस्य वानं
प्राप्ति-वाक । सोप । ऐव । हेस । दु रा । दुर्दम । जिसे
बसमें खाना कठिन है.

आद, पु० आदित्यते । आदर करना । प्रतिष्ठा करना ।
इञ्जत करना.

आदत्त, (त्रि०) आ+द+कर्त्तरि क् । पूजागया । आदरवा-
ला । आदर कियागया.

आदद्, भ्या० प० । पश्यति । अदर्शत् । अदर्शीत् । देरना ।
तालाश करना । (क्विप्) दिखाना । सूचन करना.

आदेश, (पु०) आदिश्+भावे घम् । आज्ञा हुकम । उप-
देश । शिक्षा । विधि नियम । शासन । इतिहा.

आदिष्ट, (त्रि०) (पु०) आ+दिश्+भावे क् । वह यत्रमान कि
जो पुरोहितको “ मेरे इष्ट सम्पादनके लिये कर्म कीजिये ”
ऐसे बहता है । यह करानेहारा । हुकम करनेहारा । उप-
देश करनेहारा.

आद्य, (त्रि०) आद्यं भवः । दिगा० यत् । पहिले हुआ ।
प्रथम । “ अद्+भ्यत् ” रानेलायक कोई बसु । घान्य (न०).

आद्या, (स्त्री०) आद्यो भवा । घक्ति । सब देखिये । दुर्गा ।
काली । षष्ठिका आदि.

आपून, (त्रि०) आदिना जनः । आदिशब्द । जिसका मूल
नही । “ आ+दि+क्त-क-र-नाञ्चि ” । अथवा अद्-खाना
इस धातुसे बनसजा है । सब काम छोड़के केवल जिसे
पेट भरनेहीकी इच्छा लगी रहे । पेटु । भृगा.

आधमन, (न०) अधीयते । आ+धा+क्त मनन् । कथञ्च
(हुकी) पर देनाआदि । निक्षेप । अमानत । गिरवी.

आधमर्ण्य, अधमर्णस्य भावः कर्म वा-प्यम् । कर्त्तार होना.

आधर्मिक, (त्रि०) अधर्मं वरति ठन् । अन्यायी वेद-
भ्रष्ट करनेहारा । जो धर्म नहीं कर्ता.

आधारित, (त्रि०) आ+धृ+क् । अन्वयसे आक्रमण क्रियागदा । जिसका अन्वय देनागदा । वेदन्तादीसे द-
 बदा गया । "मागेण धरितः परः" इति स्मृतिः ।
 आधार, (न०) आ+धा+न्तुद् । अमानत । मन्त्रादिसे
 अमि रखना । "आधने मोनाने च" इति स्मृतिः । गर्माधान ।
 आधार, (पु०) आ+धृ+धम् । अधिवरण । अधय । आ-
 सर । व्याकरणप्रतिद औरसेपिठ, वैयक्तिक, अभिव्या-
 पकनानी अधिवरणकारक । यत्तनी कारकमें पै, पर ।
 आठ (सेटीकी) । अथवाल (वृत्तका) । पुठ ।
 आधि, (पु०) आधीयते अमितिबेधते प्रतीकारण मनो-
 ज्ञेन । आ+धा+क् । मनकी पीडा । बरी आधा । आध-
 य । अमानत । स्पन्दन ।
 आधिकारनिक, (पु०) अधिकरणे नियुक्तः टक् । कवह-
 रीसे उगा हुआ । उक्क । म्याय करनेवाला ।
 आधिक्य, (न०) अधिक्य भावः धम् । अधिकार ।
 विपदही । बहुतावत ।
 आधिप, (त्रि०) अधि+ह+क् । देडा । तटवीक
 दिग्गता । पीन जायेहा ।
 आधिदेविक, (त्रि०) देवन् अमित्प्यतीरन् अमित्य
 शिंणन् । अधिदेव+ठम्+दिग्दहादिः । बहुत वायुआदिसे
 देगा दुष ।
 आधिपत्य, (न०) अधिपतेर्मां-धम् । मानीका होना ।
 मन्त्रिपत्त ।
 आधिभौतिक, (त्रि०) भूनि स्वप्नगर्वादीनि अविहृण-
 ज्जन् । अधिभू+ठम्+दिग्दहादिः । स्वप्न और आदिसे
 टाक दुष ।
 आधिपत्यम्, (न०) अधिपत्यम् भावः कर्म व+धम् ।
 पत्तलपत्त । बरतपित्तन ।
 आधिदेविक, (न०) अधिदेवत्य धिवहोत्रे विरहय
 द्विं-टक् । टर कडे टले टल क । हुरी धिवहकी
 इच्छते पुरमे र्हीकी अंको दिग्गता धन । द्वितीय
 विरहके उतर र्हीकी अंको दिग्गता पत्रिदेविक
 (इत्यन्त) ।
 आधु, म्० ट० हाज । छिठक होना । पुनेति-मुमुने ।
 पुष-मुने । अहरीट । अर्षिह-अर्षेह ।
 आधुनिक, (त्रि०) अधुनः मव-ठम् । इरनीजन ।
 अरक । म् ।
 आधेय, (त्रि०) आ+धृ+न्तुद् । अधेय । एक वस्तुके
 हाजट सुपी वस्तु । ("नेहाय विरुच " वहा विरुच
 अयेर है) ।
 आधोप, (पु०) आ+धृ+कर्मकी वस्तु+न्तुद् ।
 एकीके कर्मकी वस्तुकेके अर्थका । इत्यन्त ।
 एहीरव ।

आध्मात, (त्रि०) आ+ध्मा+क् । मधिन । फून् ।
 अवान । मराहुआ । मजाहुआ । वायुरोगसे पैरक हु
 आध्मान, (पु०) आ+ध्मा+न्त्युद् । वायुका रोग । इत
 बाईकी बीमारी । रोहाकी फूकनी । पटना ।
 आध्यात्मिक, (त्रि०) अध्मानं मनःशरीरार्थिं ०-
 ल मवः-ठम् । शोक, मोह, ज्वरदिसे उन्मुक्त
 आध्यान, (न०) आ+ध्म+न्त्युद् । चिन्ता । सोच । नि
 उन्मुक्तपूर्वक स्मरण । बडे चावसे याद काद ।
 शोकके साथ स्मरण करना ।
 आध्यापकः, (पु०) अध्यापक एव, साथे म् ।
 आत्मविद्याकी शिक्षा करनेवाला ।
 आध्यायिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) अध्याय ट् ।
 मनमें उगा हुआ । वेद पटा हुआ । अशीतवेद ।
 आध्यासिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) अध्यासेन
 टक् । अध्यास (एक वस्तुमें दूसरीको चडावेन
 उरप्र हुआ ।
 आध्वनिक, (त्रि०) अध्वनि व्याहृत-कुणले-
 यात्रामें गयाहुआ । मकर करनेहा । बज
 कुन ।
 आध्वरिक, (त्रि०) अध्वर+ठक् । जो मद्र कले
 तहै । पुरोहित । सोमयज्ञका विधान करनेहा म
 आध्यय्य, (न०)-वी (स्त्री०) अध्ययः यतुं-
 अम् । यतुवेदमें कङ्गया आवयुंका काम । कर्ष
 अध्ययुंका यतुवेद जपेहा ।
 आन, (पु०) आनिलनेन । आ+अन्+कारणे हि ।
 स्थित प्राणवायुका नासिकामे बाहिर आना । मुठ ।
 मांग लेना । फून्ना ।
 आनक, (पु०) अनयति गोमाहान् करोति ।
 गिव+न्त्युद् । काग । उगावेका बग काग ।
 चपदकारनेहा बादल । उगादकारनेहा (त्रि०)
 आनकदुग्दुग्निः, (पु०) आनकः प्राणहृद्ये ई
 देवकपयिठेयो मय । यतुदेवका नाम । इत
 पिना । (ह्वाज्जनेके उगावमें ऐगारी काग हने
 कर्षयगा) । बगडोल (स्त्री०)
 आनकुह, (त्रि०)-ही (स्त्री०) अनकुह ई-
 हान (बेड) का अघरा बेडने उरप्र हुआ ।
 आनत, (त्रि०) आ+नम्+क् । हानत्तम् । उर
 हा । नीधेमुन । शिवसे सुहाहुआ । टोना
 आनति, (स्त्री०) अनमति प्रवर्षीमवरी बर
 न्म+कामे पित् । शिवसे सुहा है । हम्प ।
 "अने पित्" सुहा । नीधे होना । उरप्र
 करवा । इतप करवा ।

आनन्द, (न०) आनन्द+क । अनन्दे कदापि न भवति ।
दोष । सुख । कामा कालोको यज्ञता । पुष्यदुष्ठा ।
पैतृदुष्ठा । बंधदुष्ठा (त्रि०) पौशाक परिष्ठा ।
काशीपर जेशरीका दालना ।

आनन, (न०) अनिधि अनेन । आ+अनृ+करणे स्तुद ।
जिसे गांन देना है । गुण ।

आनन्दय, (न०) आनन्द एव अनुवर्णोपनिषत् स्वार्थे ध्यम् ।
आनन्दर । ताम्बिष्य । नजरीवी । विनारक । पासां

आनन्द, (न०) आनन्द+आये गार्थे वा इय । अनुभावण ।
गिनतीविना । देवा और कण्ठआदि न मायागदा ।
अनन्दगुण । बघीगुणी ।

आनन्द, (पु०) आ+अनृ+पम । इयं । गुण । दुःखं वा
न होना । ब्रह्म । आनन्दवाञ्छा (त्रि०) । "सायं ज्ञानमनन्दं
ब्रह्म" धुति ।

आनन्द, (न०) आनन्दयलनेन । आ+अनृदिगिष+
कारे स्तुद । जिसे प्रणम करता है । जानेआनेके समय
बुद्धलप्रसंगे आनन्द उपजाना । जानेआनेके समय
विश्रोभी मिलना ।

आनन्दमय, (पु०) आनन्द प्रपुण्ड्रप्र-अनुयं मयद ।
जिसे बहुत आनन्द हो । पीब । वैद्वन्तीक सुगुणवा
गाणी । प्राह

आनन्दार्थ, (पु०) आनन्द-अर्थ इव आदीमन्त्र ।
आदीम होनेसे जिसका आनन्द समुदयी मीरे है । परम
शर । उपोषिषोक्त वाश्राकाजका ल्हाविरोध । ६ स० ।
आयतानन्द

आनन्दि, (पु०) आ+अनृ+इत् । इयं । शीघ्र । सुधी ।

आनन्दी, (पु०) आनृ+आदी । आ+अनृ+आधी यत् ।
दुःखाला । माचपर । इय । अत । द्वारवाधे पासका
देता । लज्जी । आनरीदेवासी ।

आनन्दाय, (पु०) आनीयते मन्थोऽनेन । आ+नी+अयं
यत् । अत । "आये अयं" । कामा । दशोपवीतरीयत् ।
अयेऽ परिष्ठा ।

आनन्दा, (पु०) आ+अनृ+पम । बघी लज्जी । अत
और गुणको रोचनेद्वारा सागरीय । बघी । दिष्टी ।

आनन्दित, (ली०) आनी+अनृ । यत् । अत

आनन्दय, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
अनुभावण । अयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनन्दुष, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
दुःख । अन्वय । बघी । इयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनन्दुर्दी-र्द-र्द, (ली० न०) दुर्दुष्कर अतुर्दुर्द
अथ इयम् लो इ इयं दशोप । इयंमि मिलकर
रहना । अयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनुमानिक, (त्रि०) अनुमानयणः इत् । जिसे शीघ्र ।
बैरद अनुमान प्रमाणसे सिद्धहोनेद्वारा अनुमानके
बहागया प्रयत्न । "अनुमानिक" इति अनुमानम् ।

आनुधरिका, (त्रि०) अनुभावणदुष्करे अनुवर्णे देवमय
विष्ठा । इत् । वेदसे विधान सिद्धगदा । अन्वित अयत्न
होनेसे वेदसे सिद्धगदा बर्हिगुण । "अनुधरिका" इति
गो० वा०

आनुयुक्त, (त्रि०)-दी (ली०) अनुभावण अन्व-
इत् जिसे शीघ्र । सिद्धीका शीघरी इत्के अन्व इत्का
मिला हुआ । अन्वित शीघ्र ।

आनुय, (त्रि०)-दी (ली०) अनुवर्णे इत् । अन्व ।
अन्वय । गीता । गीते अन्वय उपलब्ध हुआ ।

आनुयय, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
अन्व (वाञ्छ) वा न होना । वैरद होना ।

आनुय, (त्रि०) अनुवर्णे इत् । अन्व । जिसे
अन्वय प्राप्त हो । जिसे अन्वय प्राप्त हो है

आनुयं, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
दया । इयम् । अन्वय ।

आनन्दार्थ, (न०) अन्वयार्थ अथ अन्व । इयम् ।
(सामर्थ) वा न होना । अन्वयार्थ

आनन्द, (ली०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
पीब । अन्वय

आनन्दमय, (न०) आनन्दमया अन्वयार्थ अथ
अन्व । इयम् । अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दोदित, (त्रि०)-दी (ली०) अनुभावण अन्व-
अथ अन्व । अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दित, (ली०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्द, (न०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दित, (ली०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दय, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
अनुभावण । अयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनन्दुष, (न०) अनुभावण अथ बर्हि वा इयम् ।
दुःख । अन्वय । बघी । इयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनन्दुर्दी-र्द-र्द, (ली० न०) दुर्दुष्कर अतुर्दुर्द
अथ इयम् लो इ इयं दशोप । इयंमि मिलकर
रहना । अयंमि मिलकर रहना । अयंमि इय
अत बरती ।

आनन्दित, (त्रि०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दित, (त्रि०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

आनन्दित, (त्रि०) अन्वयार्थ अथ अन्व । अन्वय ।
अन्वयार्थ अन्वयार्थ अथ अन्व ।

Handwritten marks and scribbles at the bottom right of the page.

आहुत, (त्रि०) आ+हृ+क । नहायाहुआ । "भावे क" महाना (न०) ।

आहुतमत्, (पु०) आहुं वेदाध्ययनानन्तरं शानं प्रतम-
त्वस्य । वेदपठनेके अनन्तरं नहानेहाप । वेद पठा हु-
आ । गृहस्थाश्रम न करनेहारा मद्राचारिभेद । कानिक ।
मद्राचर्यको समाप्त कर परमें आधा प्राप्ति । गृहस्थविशेष ।

आचरु, (न०) आ+चरु+कृ+क । कर्णु+भावे क । हृद
कर्णु । पत्रा बंधाहुआ "आधारे क" प्रेम । सुहृत् ।
"कर्मणि क" भूषण । जेवर । गहना । "करणे क"
योष । जला (पु०) । बंधाहुआ । रक्षाहुका (त्रि०) ।

आचिड, (त्रि०) आ+चिड्+कान्ना+क । कडिप । काड ।
नायाक ।

आचुत्त, (पुं०) आचं आचु+क्रिप्, आपमुगानोति । उद्+
चनु+क । नाञ्जोरिकमें भगिनीपति (बदनोई) की संज्ञा है ।

आचरण, (न०) आ+चु+कर्मणि ल्युट् । भूषण । जेवर ।
सजावट ।

आभा, (श्री०) आ+भा+अद् । शीति । नमक । शोभा ।
शान्ति । सुन्दरता । उपमान । बायुका एकप्रकारका रोग ।

आभाषण, (न०) आ+भा+अल्युट् । आलाप । बातपिा ।
पारस्परकचर्चा ।

आभास, (पु०) आ+भा+अच् । प्रतीति । प्रतिबिम्ब ।
शीति । नमक । प्रभाविके आरम्भमें संगति दिखानेका
प्रकार । अवरतनिका । भूमिका । शहर । समान ।

आभास्वर, (पु०) आ+भा+अवरच् १४ वा १२ देवगण ।

आभिजन, (पु०) अभिजन+अच् । जन्मसम्बन्धी । कुल-
सम्बन्धी । जन्मकालसे कियागया । सम्बन्धी । रिशतद्वारा ।

आभिजात्य, (न०) अभिजात्यस्य भावः प्यम् । अर्पणं
कुलमें होना । बौर्धन्य । पाण्डित्य । चातुर्य । जटुपार ।
अच्छी सहाय ।

अभीक्ष्ण्य, (न०) अभीक्ष्ण्य भावः प्यम् । वीनःपुन्य ।
बारबार होना ।

अभीष्ट, (पु०) आ+अप्+क्रिप् निर्वं शति । श+क । अक्षीर
वर्णसेकभेद । गोप । गवाण । देगभेद । (श्री०) गोपी ।
अक्षीरी ।

अभीष्टवृत्तिः, (श्री०) अभीष्टवर्णं वृत्तिः । शालोकं पर ।
गोपोंके गाव । एक पद्यमें शीर्ष होताहै ।

अभीष्ट, (न०) आ+अप्+क्रिप् भवं कर्त्ति । आ+भी+अप्
+क । कृत् । शकतीक । कथापना । रोपी (त्रि०) ।

आभोग, (पु०) आ+भु+भावे आचरे वा चम् । बाणका
कला । परिपूर्णता । पूरापन । कोटिया । शीतकी समाप्ति ।

आभुषणिक, (त्रि०) आभुषणं प्रयोजनं कस्यङ्क् ।
पूराभादि कर्म । सुभक्तमें हीदने शिने करने कदक
भाद । बन देनेहारा । सम्पदा देनेहारा । सुधीका अवरत ।

आम, (त्रि०) आ+इप्+अभ्यते-पच्यते । आ+अभ्+कर्मणि
पच् । अपक्र । जो पका रहि । कचा । लक्ष्मीक नानी
रोग । अनपच (पु०) ।

आमगन्धि, (न०) आमस्य अपक्रम्य गन्ध इव गन्धो यत्र ।
द्वयाम० । कचे मांग आदिके समान गन्धकाज । जलते
हुए मांसकी गन्ध । वितार्के घूमकी गन्ध ।

आमनस्य, (न०) अग्रशर्त्तं मनो यस्य तस्य भावः प्यम् ।
अच्छे मनका न होना । दुःख । दरद । शोक ।

आमन्त्रण, (न०) आ+अन्+अनुट् । अभिनन्दन । प्रशंसा
करना । बुलाना । अवयवकर्तव्य (धादादि) में बुलाना ।
निमन्त्रण । शक्त करवा ।

आमय, (पु०) आमं रोगं मालनेन+भा । कचे पद्यमें क ।
आ+भी+मारणा+करणे अच्+भा । जित्ने रोगी होनाहै रोग ।

आमयायिन्, (त्रि०) आमयोऽन्नातीति विभिः शीपंच ।
रोगयुक्त । रोगी ।

आमर्द्दिन्, (त्रि०) आ+अर्द्+अच् । मलनेकला । शीतनेवाला ।
दवानेवाला ।

आमर्दन, (त्रि०) आ+अर्द्+अनुट् । शर्त्तं । पुना । विचारण्य ।

आमर्ष, (पु०) न+अर्ष+अच् शीपंच । शोष । मुगल ।

आमलक-पी, (पु०) आ+मल+अच् । कागच्छुप । शीर्ष ।
काबला । आगलेका पेठ । आमलेका फल ।

आमादाय, (पु०) आमस्य आदायः । नमि और शनोके
बीचका मांग । अपाकम्पान । न पचनेकी जगद । कचो
जगद ।

आमिहा, (श्री०) आमिह्यते-गिच्यते । मि+अच् । हो-
हुए शुभमें रहि हाउनेतो जो विकार होगद । कन्दुका
रुप । छाना ।

आमिय, (न० पु०) आ+मि+शीरता-कालक+क । काग ।
चने पीने और पक्षिनेकी बीज । टकोष । बूँ ।
रिचन । सुन्दरकप । बहुत होम । लज । कचनेहारा पुत्र ।
भोजन विषय । मङ्गल । अम्भी।पुत्रका फल ।

आमियादिन्, (त्रि०) आमिषं अधिति, अच्-इद् ।
मांश खानेकला ।

आमुत्त, (त्रि०) आ+अच्+क । छोसण । हदरे-
हुए । अजेनुए । "कनीर क" । बह जन कि जितने बरब
(शिर) रहिनहै ।

आमुष, (न०) आ+अच्+अरुदे अच् । प्रशंसा । (क-
कमें) प्रशंसा (परा कर्त्ति, मित्रक, क तराकके
सुचकारके साथ ऐसी शीति मित्रिक अन्वेष करे कि
जिगने कारकीय कचा की संज्ञिक होकर) ।

आमुष्मिक, (त्रि०) अमुष्मन् पारतेके अन् । उच् क-
म्मा अन्वेष जितनेय । पारतेके होनेकी कडा । हुने
कचने होनेकी कणु । "शिन शीर्ष" ।

आमुप्यायण, (त्रि०) अमुप्य ख्यानस्य अपत्यं-नडा० फट्-अलृत् । अच्छे वंश वा अच्छे चरित्रे प्रसिद्ध पुत्रपत्नी सन्तान । अच्छे वंशमें उत्पन्न हुआ इयका वेडा ।

आमृद्, क्वा० प० । मलजलना । दधाना । मृडाति । ममर्द । अमर्दात् ।

आमृश, तु० प० । सशंहरना । छुना । हाय फेरना । मृशति । ममशं । अमर्शात् ।

आमोद, (पु०) आ समनान् मोदयति । आ+मुञ्च+ निञ्+अच् । बहुत दूर फेला हुआ गन्ध । गन्ध मात्र । “भावे घञ्” ह्यं । चुशी ।

आमोदिन्, (त्रि०) आमोदयति सुरमीकरोति-आमोद+ कृत्वायै षिच्+मिनि । सुखपर सुखपूर्व पैदा करनेहाण कर्षू वगैरह । हर्षवन् । चुशी । सुखवृद्धार । सुगन्ध । सुगन्धु ।

आम्ना, भ्वा० प० । परम्परसे अभ्यास करना । मनति । मन्तौ । अम्नायीत् ।

आम्नात, (त्रि०) आ+म्ना+क्त । अभ्यास । विचार किया गया । खयाल किया गया । कहा गया ।

आम्नाय, (पु०) आम्नायते-अभ्यासते-आ+म्ना+घञ् । जो परंपरसे अभ्यास किया जाताहै । वेद । आगम । निगम । गुरपरम्परसे आयाहुआ सचा उपदेश । वंशकुलके क्रमसे कहना । “भावे घञ्” अभ्यास । आदत् । खान्दानी । तरीकह । नसल । हिदायत ।

आम्न, (पु०) अम्-जाना रोगीहोना आदि+रन्-रीषंघ । आम । आमका वृत्त । आमका फल ।

आम्नातक, (पु०) आम्नं तद्रघं आ ईपन् अतति याति । आ+अन्+अणुश्च । आमदानामी वृत्त । मित्वात् ।

आम्नेडित, (त्रि०) आ+म्नेड्+उन्माद होना । पागल होना । अच् । आम्नेडेन उन्मत्तेनेवाचयंत । आम्नेड-आचारि त्रिप्+क्त । पागलकी नौई कहेहुए वचनकी दुबारा त्रिबाण चटना । बारबार कहगया । ब्याकरणमें एक संज्ञा ।

आम्ना, (स्त्री०) आ सम्यक् अम्भे रसो यस्याः । त्रिपुष्पा बहुत खटा रस हो । त्रिन्तिवीक्ष वृश् । खटा खाद । हमजोका वृश् ।

आय, (पु०) आ+इत्+अच् । अय्+घञ् । उम । दानिष्ठ । आमदनी । प्राप्ति । घनका धना । त्रिषोके परका रखबार ।

आयत, (त्रि०) आयम्+क्त रीषं । उंचा । खेकागया । आ+यत्+अच् । अतिपत्रकारी । बहुत कोशिश करने-हाण । शंदा ।

आयतच्छद, (स्त्री०) आयतः रीषंः छदोऽध्याः । त्रिगुणा वन्ध कांता हो । बरही । केला ।

आयतन, (न०) आयतनोऽयम् । अय्+अफरे श्चुद । जहा बहुत दूर कहेंहै । देवदिरंदनमयन । मन्दिर । आयतन । देव । मिथामयन । आयतनकी जगह । दक्षी जगह ।

आयति-ती, (स्त्री०) आ+या+टति वा क्त् । लम्-हाल । आनेगया गमय । प्रभाव । फल देनेका हवा । आ+यम्+किञ् । भेट । उंचाई । प्राण । पड़वट ।

आयतीगयम्, (अञ्ज०) (आयानि वाक् ईद-गुयये) । गांत्रोमा घरमें लीटनेका समय ।

आयत्त, (त्रि०) आ+यत्+कर्त्तरि क् । शरीर । मन-वरीमूल । हातुमें आया ।

आयत्ति, (स्त्री०) आ+यत्+किञ् । छेद । लीन-यामर्थ्यं । ताकन । सीमा । हर् । मयांदा । लीट-दिन । शयन । विमरा वा सोना । लंबाई ।

आयःशूलिक, (त्रि०)-धी (स्त्री०) अयःशूल-चतुर । चाकर । तीक्ष्ण उपायसे कार्यं छिद्र करनेका ।

आयस, (न०) अयसा निमित्तं तद्विकारो क-अच् । का पात्र आदि । लोहा । लोहेमें बनाहुआ (त्रि०) ।

आयस, (त्रि०) आयम्+क्त । क्षिप्त । फेंकगया । दिया गया । हत । मारा गया । तीक्ष्णीकृत । तेज मीनः ।

आयाम, (पु०) आ+यम्+घञ् । दैर्घ्यं । उंचाई । टेप-देरलक ।

आयास, (पु०) आ+यस+घञ् । परिश्रम । निहट । कोशिश । दुःख । दरद । मनकी पीडा । उदन । ई ।

आयु, (पु० न०) इय्+अण् । जीवनकाल । उम । “भावधिया जटायुं मां” मतिः ।

आयुध, (न०) आ+युच्+करणे फयचै क् । प्रहल-हयियार । अस्त्र ।

आयुचेंद, (पु०) आयुर्विद्यते उन्मत्तेऽनेन । विद्वन्-रना+करणे घञ् । आयुर्वेत्त अनेन विद्वन्प्रनेन । -जाना+करणे घञ् वा । जिससे उमर जानी जाय । (निगान) जनाकर जिसे आयु जानता है । ते-वगह । विक्रिन्नासात्र ।

आयुष्मत्, (त्रि०) आयुर्विद्यतेऽयम् मत्पु । लिन उमर विद्यमान है । रीषंजीवी । देवक जंतेव (पु०) । विद्वन्म आदि योगोनेने तीमण योग ।

आयुष्य, (त्रि०) आयुः प्रयोजनं अस्य । मरने-यत् । आयुका हितकारी बनी उमर देनेहाण । हितकारी । अच्चा ।

आयोग, (पु०) आ+युञ्+घञ् । काम । फनन-हार । पूरक बन्दन आदि भेट । तट । किण्ण ।

आयोगव, (पु०) अयोगव एव सार्येऽन् । छतेके-रीमें उन्नत हुआ सन्तान । प्रतिदोम । वर्णवर्तते-प्र-जातिभेद ।

आयोजन, (न०) आ+युञ्+अणुद । उद्योग । आ-हाण । इच्छा करना वा देना । उमाना । बोट ।

आपजंन, (न०) आ+पृ+अन । नीचे की ओर झुकना । देना । जीवना ।

आघरण, (त्रि०) आ+घृ+अन । टिपानेवाला । बंद करनेवाला ।-णम् (न०) टिपाना । रोफना ।

आघरणशक्ति, (स्त्री०) आघरणस्य शक्तिः । मानसिक अधिष्ठा जो वास्तविक पदार्थके स्वरूपपर पददा टाल देती है ।

आघाजिन, (त्रि०) आ+घृ+पिच्+क् । आङ्ग । लपामया । झुकाया गया । फेंका गया । रियागया । नीचे कियागया ।

आघर्ष, (पु०) आ+घृ+आवादी घृ । चक्के स्वरूपसे जलदा भापही घूमना । मुंजर । देसविशेष । गोललौटना । घोड़ेका चित्र (पीछेकी ओर रोमसमूह) । चिन्ता । मेघराजविशेष । मासिक घात । मस्त्रिजोद्य घात ।

आघर्षक, (त्रि०) आघर्ष एव सार्थं कन् । बार १ घूमनेवाला ।-कः (पु०) एक प्रकारका बादलमेद ।

आघर्षन, (न०) आ+घृ+निच्+स्तुट् । दूध आदिका बालोदन (रिकटना-मथना) । औठाना । बिलोना । गालना ।

आघर्षित, (त्रि०) आ+घृ+णिच्+क् । छोटायगया । अभ्यास कियागया । गुणाकीयागया । जियादा कियागया ।

आघर्षयत्, (त्रि०) अघर्षयं भव्यः । पुम् । निपनहल्य । जम्हीयाम ।

आघमन्थ, (पु०) आवसति अत्र । घग्+अघम् । निवारस्थान । रहनेकी जगह । पर कुटिया । विप्रामस्थान । आगमकी जगह । ब्रतविशेष ।

आघ्राप, (पु०) आ+घृ+आर्णैषि घृ+संज्ञायां वन् । आठवाक । दूध पालनेके लिये जलका कुण्ड । पायविशेष । फेंकना । सोना । शकुपी चिन्ता । इचरेके राजकी चिन्ता । नीचे ऊपर भूमि । निपमस्थान । प्रयाजहोम । बना होम ।

आघ्राक, (त्रि०) आ+घृ+अक । आच्छादन करनेवाला । टिपानेवाला । निरोध करनेवाला+शौचनेवाला ।

आघ्राणि, (पु०) आ+घृ+र्ण् । आपन । डुकान । चनेला ।

आघ्राप्त, (पु०) आ+घृ+आघ्राणे घृम् । कामस्थान । घर आदि ।

आघ्राहन, (न०) आ+घृ+निच्+स्तुट् । समीप आनेके लिये देवताओंको बुलाना । नजदीक खाना । बुलाना ।

आघ्रिक, (न०) अधिष्ठा सहोष्ठा निर्मितं टह् । मेढके बालोंसे बना कम्बल । उनका । मेघसंबन्धी (त्रि०) ।

आघ्रिप्र, (पु०) आ+घृ+अर्तरी क् । उडिप्र । घबराहटुआ । दृष्टविशेष ।

आघ्रिद, (त्रि०) आ+घृ+क् । विद्व । वैयागया । टेडा । सिक्का रियागया । फेंकागया । दबायागया । मूर्ते ।

आघ्रिष्करणं-भारः, (न० पु०) आघ्रिस्+अन । प्रकट करना । जाहिर करना । रियाना ।

आघ्रिष्ट, (त्रि०) आ+घृ+क् । भूतादिसे दबायागया । आवेगयुक्त । दबाहुआ । दाखिलहुआ । मराहुआ ।

आघ्रिस्, (भव्य०) प्रकाश । जाहिर । (आभिर्भाव (आधिभार) ।

आघ्री, (स्त्री०) अवीः एव-सार्थं अण् । गर्भवती स्त्री ।

आघ्रीन, (त्रि०) आ+घृ+क् । धारित । पहिराहुआ । प्रगिट हुआ । बला गया । व्यतीत हुआ ।

आघ्रीतिन्, (पु०) आघ्रीत इति । दक्षिण दहिने कंधे-पर यज्ञोपवीत धारण करनेवाला ब्राह्मण ।

आघ्रुक, (पु०) अघ्रि पालयति ण् संज्ञायाम् कन् । (नाशोक्तिर्मे) जनक । पिता ।

आघृ, स्त्री० भया० पु० टम० । आच्छादन करना । टांकना । टिपाना । कृपोति । कृणाति । वरयति ।

आघृन्, भ्वा० धा० । देना । बकशाना । (ved) किसीकी ओर लौटना । पुत्रा । निधि झुकना । आवर्जयति ।

आघृत्, भ्वा० धा० । लौटना । घूमना । आवर्तते । वृत्ते । शवर्तिट ।

आघृत्, (त्रि०) आ+घृ+क् । टकाहुआ । आच्छादन रियागया ।

आघृत्त, (त्रि०) आ+घृ+क् । हटाहुआ । निवृण । छोटोहुआ । अभ्यस्त । गुमित ।

आघृत्ति, (स्त्री०) आ+घृ+क्तिन् । अभ्यास । बारबार गुणना । लौटना ।

आवेग, (पु०) आ+घृ+घम् । पबराहट । चिन्ता । वैआरामी । शोक । दुःख । भय । जल्दी । बन्दार-कका दृष्ट ।

आवेदा, (पु०) आ+घृ+घम् । अदरार । तटका । संरम्भ । कोप । गुस्सा । अभिनिवेश । हठ । अनुग्रह । दाखिल होना । जैसे भूतका दाखिल होना । प्ररोध दर । भूतादिसे रोग ।

आवेदिक, (त्रि०) आवेदे दृष्टे मन् आगतो वा टम् । परका । परमें आगया । अघाधारण सन्धीयबन्धनदि । राय अयना रिदेदार बगरह । अर्निधि । मरुतान । आदरवाला ।

आवेष्टक, (पु०) आवेष्टयति-शुक् । अवरणकटक । टांकनेहार प्रचीर (सर्पिल) बगरह (देता)

आवादा, (स्त्री०) आ+वादि+अ । नाम । उर । मन्त्रेव । संवाय ।

आपाठ, (पु०) आषटो पूर्णमासमिन् मासे षण् । आ-
पाठ । (हाठ) महीना ।

आपठे, (म०) अन् व्यसौ+पठ् । आषाढ । अन्तरिक्ष ।
अपषाढ ।

आपठमः, आषटो भाग, अष्टम-ञ्च । आषटो भाग । द्विगुण ।

आपठ्, अ० आ० । आषे । आषाढके । आषिष्ट । आषिष्ठुं ।
आषित । आषीन । बैठना । विश्राम करना । निषाग
करना ।

आपठ्, बैठना-अदा० आषय० षट्० ऐट् । आषते । आषिष्ट ।
आपठ्, (अन्व०) आषण । बूट करना । बीर । मन्नाप ।
अईकारणे सिद्धता ।

आषका, (त्रि०) आ+आष्+क । पशुशुभा । निरत । उष
काम छोड़कर एकहीमें रुकावट । निरन्तर । भिल (म०)

आषक, (म०) आ+आष्+कम् । आशिमिषेत् । एषकामका
दृष्ट । भोगही अमिषया करनेका आशिमाम् । बषामा । धंग ।

आषसि, (स्त्री०) आ+आष्+सिन् । धंगमें । रोड । काम ।
निष्ठ । व्यादमर्षे अन्वययोग्य दोनों पदार्थोंके बिना
परक होटना ।

आषसद्, (पु०) आषीदति अभिम् प्रत्ययाडे । निषालः ।
प्रत्ययकार्ये शेषार जिसमें समाजाता है । निष्णु । बागु-
देव । स्त्री०) आषयने आषयम् । बैठाना है जिष-
पर । छोटा बंग । भीषी । आषामपुरी ।

आषय, (म०) आष्+ल्युट् । उपवेशन । बैठना ।
"आषारे ल्युट्" । पीठ आदि कीकी बगैर । हाथीका
रथपदया । राशि आदि रामके ६ शुभोंमेंसे एक
(राघुके शिषे आदिबो रोड पर टहरना) । आषय
करना । आठ भोगके अंगोंमेंसे चौथरा (पद्यागादि) ।
जीरका रस (पु०) ।

आषय, (त्रि०) आ+आष्+क । निषउष्य । बजरीक
उपस्थित ।

आषय, (पु०) आष्पने । आ+आष्+कर्मणि अष् । अष्-
कम् । टारक टारही टारक । गलेका रस जो पका गदि ।

आषयान्, (म०) आ+आष्+णिच्+ल्युट् । शशिपयन ।
हँसनेका । हसना करना । भित्ता । काममें लगना ।
पना । बूरा करना ।

आषाढ, (पु०) आ+आष्+पम् । बरणापण । जोरही
बर्षण । उपस्थित करना । जोरही बर्षे । बैठना । देन-
ओका चरों ओर बैठना । "बड़े बर्ष" । शिष्टका बर

आषाढिका, (पु०) कतिः आषट् अष्ट-द्वम् । आष षि-
षक दश है । लक्षरकरी

आषाढिका, (स्त्री०) एट्+देव अन्वय, आष-ल्युट् । बैठनेका
निरत । निरतमान् बैठकाम् ।

आषिच्, पु० प० । पनीका पिटीर वा पिटीमें बालन ।
शीवना । पीव करना । भरनेका ।

आषित, (त्रि०) आष्+क । बैठना । आषण पिना हुआ ।
आषिषाट्, (न०) अषिषया इष अंश अष्ट-कम् । हर-
कारही आषय करनेकी भांति एक प्रकार कठिन प्रा ।

आषुति, (स्त्री०) आ+आष्+क्तिन् । मरुभित्तन । टटव
निकाटना ।

आषुत, (पु०) अशुभम्बन्धी । देवका । दृष्ट न करने-
हार । आठ प्रकारके शिबटोंमेंसे एक । शिबमें बर,
कम्पा, पिना, वा इनके अन्वयिषयोही पन देकर बपू
लेना है । जैसे भोलेवर बपु गयीदने है ।

आषेचन, (त्रि०) न पिचने कृपने मन्वेचन । आषट्
ल्युट् । जहाँ मन मदि रुका । बपुट आषट् दशन ।
उत्तरका । शीवना ।

आषेघ, (पु०) आ+आष्+घम् । दमकी आषणे दुगरे
प्याममें कपेकी रोड । बैठ ।

आषेया, (स्त्री०) आ+आष्+यम् । अशुभपूरक वा अशु-
प्रति । एक कामको बारबार करना । बारबार अशु-
ताट् ऐसा करना ।

आषकान्दन, (म०) अशुभमन्वेचन । आ+आष्+कान्दने
ल्युट् । निषट् करना । शूलन । अशुभ । टटव
करना । आषारे घम् । लुट्

आषण, (पु०) आ+आष्+नर्गणे षण् । शिष्टेण । टट्टीकी
पीठका बरकत । लुट् । "आषणल्युट्" इति अट्टे होट्टे ।

आषणापः, (पु०) आ+आष्+पम् । दामे अशुभः वा-
नेका स्थान । लुट् । बैठनेका

आषिक, (त्रि०) अशु पारनेक इति अशुभेय एष ।
परलोड है देही शिष्टकी लुट् हो । आषेयक लम्बेका
अशुभता । अशुभ सुनिहा बैठ । जो देर, टाक, भी
हैपको शीवर बरे । "आषिक" इति अट्टे होट्टे

आषिकीर्षी, (त्रि०) आ+आष्+क । बैठकाम् । शिष्टे
आषिका, (स्त्री०) आ+आष्+क । अशु । अशुभ ।
कर्म । आषट् । अशु । अशु । अशु । शिष्ट ।
अशु । शिष्ट । अशु । अशु । अशु । अशु ।
अशु । अशु । अशु ।

आषुतान्, (म०) अशुभमन्वेचन करना । आषट् ल्युट् ।
अशु बैठनेहै । अशु । अशु । अशु । अशु । अशु ।
शिष्टमन्वेचन । अशुभकी अशु । अशुभकी अशु

आषुतिय, (त्रि०) आ+आष्+यम् । अशुभ शिष्ट । अशु
पट् । लुट् । अशु । अशु । अशु । अशु । अशु ।
अशु । अशु । अशु ।

आषुत, (म०) अशुभ-मन्वेचन । अशुभ । अशु । अशु ।
अशु । अशु । अशु । अशु । अशु । अशु ।

आषुत, (म०) अशुभ-मन्वेचन । अशुभ । अशु । अशु ।
अशु । अशु । अशु । अशु । अशु । अशु ।

आस्त्रालन, (न०) आ+स्त्रल्-चलना-रणडना-निच् ल्युट् ।
 चलन । चलना । घसना । पछाडना । रणडना । छेदमारना ।
 आस्त्रोद्, (पु०) आ+स्त्रुद्+अच् । अर्कंश । पहिल्या-
 नोंका मुजाओपर हाथसे टोकना । तालटोकना । (पुनरी-
 कर्नेके समय स्वम टोकतेहैं) । कापना । नयमलिखाय ।
 आस्त्राक, (त्रि०)-की (स्त्री०) आस्त्राकीन । अस्त्र-
 धण्-अन् अस्त्राकदेशः । हमार । हम लोगोंका ।
 आस्त्र, (न०) अस्त्रवे प्राणोऽत्र । अस्त्र+आपारे ष्यत् ।
 जहाँ प्राय हाता जाताहै । मुख । मुँहा मध्यभाग ।
 मुखका (त्रि०) ।
 आस्त्रपत्र, (न०) आस्त्रमेव पत्रं अस्त्र । त्रिषका मुखही
 पत्र हो । पत्र । कमल ।
 आस्त्रा, (स्त्री०) आस्त्र+भावे ष्यप् । स्थिति । आसन ।
 टहरना । निवाह ।
 आस्त्रासिद्ध, (पु०) आस्त्रस्य आभवः प्रपञ्चः १ त० । मुं-
 का मद् । लडा । युधु । लार ।
 आस्त्रव, (पु०) आस्त्रवति मनोऽनेन । करने अच् । जिस्से
 मन बह जाताहै । डेरा । दुःख । तकलीफ । “भावे अच्” ।
 निरन्तर बहना ।
 आस्त्रनित, आस्त्रान्त (त्रि०) आस्त्रन्+क्त । शब्दित ।
 शब्द किया गया । बुलाया गया ।
 आस्त्राद्, (पु०) आ+स्त्रद्+कर्मणि धन् । रत्त । मुआद् ।
 “भावे ष्य” । खाद खेना ।
 आस्त्रक, (पु०) आ+स्त्रन्+ट-कन् । एक प्रकारकी नाक-
 की श्यामि ।
 आस्त्रत, (त्रि०) आ+स्त्रन्+क्त । ताडन कियागया । चोट
 दियागया । हात । जानाहुआ । दफा । बाना (पु०) ।
 पुपना वा नया काटा (न०) ।
 आस्त्रन्, अ० व० । ताडन करना । मारना । अपने शरी-
 रका छोड़े थंग कर्म होनेसे धात्मनेपद् होजाता है । जैसे
 आस्त्रते शिरः । हन्ति । जयान । अबधीत् । हतः ।
 आस्त्रय, (न०) आस्त्रयन्तेऽत्रयोऽत्र । आ+स्त्रे+अप्-सम्प्रसार-
 णे पुगः । जहाँ धनु बुलये जातेहैं । युद्ध । लडाई ।
 आस्त्रयन्तेऽत्र “आ+स्त्रु+अच्” । जहाँ देवताओंको रिया-
 जताहै । बन् । होम ।
 आस्त्रयनीय, (पु०) आस्त्रयन् अर्हन्ति-छ । गृहस्थीके अमिसे
 देकर होमके श्रिये संस्कार कियागया अमि । “आ+स्त्रु+अ-
 नीय” । हवनीय । हवनके योग्य । होमके अयक ।
 आस्त्रार, (पु०) आ+स्त्रे+अच् । आस्त्ररण । धना । पिपी
 कौरव गडेके नीचे करना । भोजन । खाना । “कर्मणि
 ष्य” आदि ।

आहार्य, (त्रि०) आ+हृ+अच् । आहार्य ।
 खावक । सन्निवोग । आगन्तुक । अतिथि । दे
 मासेही जगद् । इतिम । बनारसी । अर्हतेः
 रनेहारे जेपर बनेतर ।
 आहाय, (पु०) आ+हृ+अच्+प्रकारणेर्नुद् ।
 गी आदिके पानी पीनेके श्रिये पत्थर आदि
 जडका स्थान । पुषका । कडाई । बुधन । बर
 आहित, (त्रि०) आ+पा+क्त । मन्त्र । मन्त्र
 पिन । टिडियागया । हाताहुआ । पिन्नु
 कियागया ।
 अहितुषिडक, (त्रि०) अहितुषेन ईक्षीत-
 मुंसे अत्ताहै । सौं पकनेहारा । मरगी ।
 आहुति, (स्त्री०) आ+हु+धिन् । देवताके दे-
 पदपर अमिसे धी बालना । देवताके श्रिये ई-
 दान करना ।
 आहुतिः, (स्त्री०) आ+हृ+क्तिन् । बुलना । पुत्र
 आह्वय, (न०) अह्वेरिदं दक् । सौंपकी कुत्र । नि ।
 आदि ।
 आहो, (अव्य०) प्रथ । सवाल । विख्या । ई
 सन्देह ।
 आहोपुरुषिका, (स्त्री०) अहमेव पुरयः आ-
 तस्य भावः कन्-स्त्रीत्वात् टाप् । अहंकारके
 अनी बडाईका सवाल । दुर्जन्य आत्मोत्कर्ष ।
 आहोस्वित्, (अव्य०) विकल्प । सन्देह । प्रथ ।
 जायकी इच्छा ।
 आहिक, (त्रि०) अहा साध्यं टप् । दिनका
 सन्या तपण आदि । भोजन (न०) सद् । ई
 दिस्मा । सदाकी क्रिया ।
 आह्लाद, (पु०) आ+ह्लाद्+अच् । आनन्द । प्र
 आह्वय, (पु०) आ+हृ+अच् । नाम । आ ।
 आह्वान, (न०) आ+हृ+अच्+पुद् । आह्वान । वा
 बुलना ।
 आह्वे, भ्वा० प० । पुकारना । बुलना । आनन्दन
 अहंकारसे बुलना । इति । जुहाव । अह्व । अ
 ह्
 ह, (पु०) अन्व विष्णोरपत्यम् । अ+अच् । विष्णो
 न्तान । कामदेव । अस्त्रेदम् । अ+अच् । ने ।
 कदाहुआ बचन । निरस्कार । दया । श्रेद । मिला
 रानी । निन्ता । सन्वोधन ।
 ह, आना । भ्वा० पर० सक० अनिद् । अयति । तं
 ह(हण), अ० प० । जाना । पाय आना । ऐही । त
 अगार । एत् । ह ।

शेदपायतन, (न०) १ स० । इन्द्रियोग विधामग्नान ।
 शेदपार्थिवप्रिकल्प, (पु०) इन्द्रियार्थ शर्षे (सन्ध-
 यियये. शह) मधिकर्ष सम्बन्ध । इन्द्रियोका अपने
 अपने विषयोंके साथ सम्बन्ध (रिता) । प्रत्यक्ष ज्ञानका
 कारण इन्द्रिय और विषयका संयोग (मेल).
 शू-यमकना, भ्यादि० आ० अक० सेद । इत्यते । ऐन्द्रियट.
 धन, (न०) इत्यतेऽभिरनेन । इन्ध-करोणे ल्युट ।
 जिसते आग जलनींद । काष्ठ । लकड़ी । बाहन.
 न, (पु०) इन्ध+भ-निष् । हली । हाथी । आठवीं करवा ।
 पील
 मकपा, (स्त्री०) इमोपरदा कणा । साक० स० । यत्रपि-
 प्यत्री । पीपल.
 मनिमीलिका, (स्त्री०) इमं हस्तिनं अपि निमीलयति
 (सेषनात् रिडापयति) । जिसका सेबन करनेमे हाथीको-
 भी मींद आनाय । महा । भांग । भिजया । भांगशुद्धी.
 मयालक, (पु०) इमं पालयति । जो हाथीको पालताई ।
 हस्तिारक । महंत.
 म्य, (वि०) इमं हस्तिनं अर्हति-वत् । बरे धनवाला ।
 आश्रय । राजा.
 म्या, (स्त्री०) इम+यत्+आप् । हस्तिनी । हथिनी.
 म्यत्, (वि०) इदं परिमाणं मस्य । इदम्+यत् । एतावत् ।
 इतना.
 म्या, (स्त्री०) इत्यतो मावः सत् । इतनेका होना । सीमा ।
 हर । परिमाण । माप । सख्या । गिनती.
 म्यद्, (पु०) इत्या अयेन भाषयति कथंते । इण+मद्+
 क्वाप् इत्यः मुम्ब । जो पानीमे बटे । बत्रासि । निरन्ती ।
 बाटवानल । समुद्री प्राय (जो थोटीही शकठमें है).
 म्या, (स्त्री०) इण्+रक् । ई-कामं रति । रा+क वा । भूमि ।
 पृथ्वी । बाणी । गुण । मय । साय । जल । अम ।
 कयपदी स्त्री.
 म्यावती, (स्त्री०) इतं भूमिं अवति । अव+दाट्+वीप् ।
 वटप्रप्रक्ष । एक नदीका नाम जो संजाकमें है, जिसे रा-
 वीमी कहते हैं । यह पारसोसैमी फाटकर जमीनपर
 जाती है.
 म्यिण, (न०) क्+दन्+किञ् । ऊपरभूमि (जहां बीज-
 बोसागया नहीं उषजता) । आसरेके विना । छान्य । गुना.
 म्येद, (पु०) ६ स० । वरण । कुरसति । राजा । विष्णु.
 म्येद, (स्त्री०) उर्वे+आह-ट्यो० । काकुड ।
 कडकी । कर्कटी । काठ.
 म्येद, घोना अक० । जाना-फेरना सक० । मुदा० पर०.
 ल, फेरना पुण-वम०+क०+सेद् । एत्यति-से । ऐतिह्य-उ-
 लचिला, (स्त्री०) पुनस्त्यमुनिनी स्त्री । कुबेरी माता ।
 इषी संघसे कुबेरीका नाम ऐतिह्य है.

इला, (स्त्री०) इन्ध+क । भूमि । पृथिवी । गी । बाणी ।
 जम्बुद्वीपके ९ बयोंमेंसे एक । वैवस्वतजम्बुदी कन्या सुधडी
 स्त्री (यह पिण्डुके वरमे सुधय होकर महादेवके साथसे
 ही होगई । बुधने उसे विवाह कर पुत्ररत्नाको उत्पन्न किया ।
 यह चरित्र पुराणमें प्रसिद्ध है).
 इलावृत, (न०) इत्या पृथिवी वृता येन । जो पृथिवीको
 घेरे हुए है । जम्बुद्वीपके नौ बयोंमेंसे एक । चारों सीमावाला
 देश । "यथान्मात्यवतः प्राच्यां गन्धमादनसौहतः । इलावृतं
 नीलनिरेद्याम्बतो नियथादुदक्" । अत्यन्त ९ भागोंमेंसे एक.
 इली, (स्त्री०) इन्ध+दन्-वीप् । हाथलुठी । करवाठिका ।
 छोटी तरवार.
 इल्वल, (पु०) इन्ध+लन्+नि० गुणाभाव । अत्यन्त चयल
 मत्स्यविशेष । एकप्रकारका मछल । दैत्यनेद (जिसे
 बलिष्ठने नाश किया । मृगशिरके पाँच तारे (स्त्री०).
 इव, फेरना । इति । भ्या० पर०+सक०+सेद् । इवति । ऐन्वीत्.
 इय, (अन्ध०) सादय । बराबरी । उद्येक्षा । मानों ।
 घोना । वाक्यालङ्कार.
 इय, जाना-सारकना । दिवा० पर०+सक०+सेद् । इयति । ऐपीत्.
 इय, चाहना । मुदा० पर०+सक०+सेद् । इच्छति । ऐपीत् ।
 एषिता-एषा.
 इय, (पु०) इय्+आना+किप् । जिसमें जयकी इच्छा करने-
 वारे यात्रा कर्ते हैं । आशिनमास । अशुका महिना.
 इयु, (पु०) इत्यते हिंस्रतेऽनेन । जिससे मारते हैं (स्त्री०)
 इय्+उक्ति ह्रस्वथ । बाण । तीर । पाँचकी संख्या.
 इयुधि, (पु०) (स्त्री०) इयवो धीमन्तेऽन । धा+कि ।
 बाणाधारतृण । बाणका आश्रय तृण । संकष्ट । जहां बाण
 रह्ये जाँय.
 इय, (वि०) इय्+क् । पूजित । आदर दियागया ।
 अमिलविन । आहागया । पियाता । "यन्+क्" (यहादि-
 का काम) एण्टका इय (पु०) । संस्कार (न०) ।
 चाह । धर्मका कार्य.
 इयका, (स्त्री०) इय्+तकन् । मती आदिवा बनहुआ
 एक प्रकारका महीका दुकम । ईट.
 इया, (स्त्री०) इय्+तेऽजया । यज्-करणे क । शमीइत ।
 जमीका करहन.
 इयापूर्त, (न०) इयं च पूर्तं च द्वयोः सम्यक्त्वं पूर्तपूर्तयं ।
 अमिहोय, तप, उल, यज्ञ, दान, वेदशा, आदिभ्य,
 देशदेव और ध्यान आदि धर्मकार्य (इट), और
 बाबली, शूभा, तात्विक, देशमन्दिर, अमदान और बगवा
 छाना आदि पूर्तं कदाकताई । बहुतांसी मन्त्रोंका काम.
 इटि, (स्त्री०) यन्+किन् । यज्ञ । दसवींमासकडनेद ।
 "इय्+किन्" अमिलव । इच्छा । चाह । स्वाहित.

इष्म, (त्रि०) इष् इच्छायां-कर्मणि मङ् । इच्छा करने-वाला । चाहनेवाला ।-ष्मः (पु०) कामदेव । वनन्त ।

इष्यः,-व्यं (पु० न०) इष्+व्यप् । वनन्त । बहार ।

इष्यसन, (पु०) इषुः आस्यते क्षिप्यतेऽनेन । अस+स्त्युद् । ६ त० । घञुप् ।

इष्यास, (पु०) इषवः असन्तेऽनेन । अस+वञ् । ६ त० । जिसे तीर फेंकते हैं । चाप । घञुप् । "इषून् अस्सति अण्" । बाण चलानेवाला (त्रि०) ।

इह, (अव्य०) अस्मिन् काले । इससमय । इसदेशमें । इसदिशामें ।

इहत्य, (त्रि०) इह+त्यप् । यहाँका । इस स्थानका । इस संसारका ।

(ई)

ई, (स्त्री०) अस्य विष्णोः पत्नी वीष् । विष्णुकी स्त्री । उष्नी । (पु०) कामदेवका नाम । (अव्य०) दिवका दटना । दत् । जोक । शुक्ला । अनुकम्भा । मिहवांती । प्रलस । पुष्पना ।

ई, चाटना-अक० । जाना और फेंकना-सक० अदा० पर० अनिद् । एति । ऐपीत् ।

ई, जाना-दिवा० आत्म० सक० अनिद् । ईयते । ऐष्ट ।

ईत्, देखना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ईसते । ऐसिष्ट ।

ईक्षण, (न०) ईक्ष्+भावे स्तुद् । दर्शन । देखना । "करणे स्तुद्" । जेय । आर्ष ।

ईक्षणिक, (त्रि०) ईक्षणं शुभाशुभदर्शनं मिल्यं अस्य टन् । खिदां टाप् । जिसका जीवन अच्छे वा बुरे फल करनेसे चलता है । हाथकी देखापर फल करनेवाला । देवद । ज्योतिषी ।

ईक्ष्ता, (स्त्री०) ईक्ष्+अ । दर्शन । देखना ।

ईक्षित, (त्रि०) (ईक्ष्+क) देखा हुआ । ध्यान किया गया । सं० न० देखना ।

ईक्षित्, (त्रि०) ईक्ष्-वृत् । देखनेवाला । खयाल करनेवाला ।

ईक्ष्, स्तुति करना । लारिष्ट करना । बुता० उभ० सक० सेट् । ईक्षति-ने । ऐदिष्ट-न् ।

ईक्ष्, स्तुति करना । मारटना । अदा० आत्म० सक० सेट् । ई । ईक्षि । ईक्षि । ऐदिष्ट ।

ईक्षा, (स्त्री०) ईक्ष्+अ । स्तुति । दर्शना । लारिष्ट ।

ईक्षित्, (त्रि०) ईक्ष्+क । स्तुति किया गया । कृतस्त्व ।

ईक्षि, (स्त्री०) ईक्ष्+अ । ई+क्षिच् । अंगीके छ प्रकारके उत्पन्न होने बहुत बराने न होना, मरुदि, मृगा, लोहा, लकड़का बरुटीक अन्न । मरुद करना । कष्ट ।

ईक्ष्ता, (त्रि०) अयमेव दर्शनं अस्मि । इदम्+लृ+इत् । दर्शनं स्त्री० । जो इसकी नीचे देखते हैं । देखा । इत् कर्त्तव्य ।

ईक्ष्ता, (त्रि०) अयमेव दर्शनं अस्मि । इदम्+लृ+इत् । इनादेशे स्त्रीः । गुणाद्यन् । जो देखनेमें देखा है । "ट्" ईक्ष्ताः । इसी अर्थमें । त्रियां वीष् । ईक्ष्ते ।

ईप्सा, (स्त्री०) आमुं इच्छा, आप्+मन्+भ्रा । ईप्सा ।

ईप्सित, (त्रि०) आप्+मन्+क । आप्+मिष्ट । लें चाहगया । इष्ट । अपेक्षित । जन्नी ।

ईप्सु, (त्रि०) आप्+मन्+उ । पानेकी इच्छा करनेवाला ।

ईर्, जाना । बुता० उभ० । पक्षे-भ्वा० पर० सक० सेट् । ईरयति-ते । ईरति । ऐरिर्त्त । ऐरीत् ।

ईरिण, (त्रि०) ईर्+इन्+न् । जंगली । वह सार की चीज बोझा गया नहीं लगता ।

ईरित, (त्रि०) ईर्+क । नेत्रा गया । प्रेरणा किया गया । चलाया गया । कहागया ।

ईर्म, (न०) ईर्+मङ् । व्रण । घाव । फोटा । अर्थ "ईर्म" भी होता है ।

ईर्ष्य, ईर्षा करना । इष्ट करने । भ्वा० पर० सक० सेट् । ईर्ष्यति ।

ईर्ष्या-यां, (स्त्री०) ईर्ष्यं+अ । परोक्षार्थक्षिप्त । दूसरेकी बढाईको न सहारना । वैर । इष्ट । ईर्ष्या ।

ईर्षात्, (त्रि०) ईर्षां क्ति । लान्ठ । ईर्षात् । ईर्षात् । ईर्षात् । ईर्षात् । ईर्षात् । ईर्षात् ।

ईत्ता, (स्त्री०) ईट्+क कस्य ललम् । शयिनी । शयनी । स्तुति ।

ईत्तित, (त्रि०) ईट्+क कस्य ललम् । स्तुत् । ईत्तित । ईत्तित । ईत्तित ।

ईत्, (पु०) ऐश्वर्यं होना । हुकमन करना । अदा० सक० सेट् । ईटे । ईत्तिने । ईत्तिने । ऐदिष्ट ।

ईदा, (त्रि०) ईर्+क । आज्ञा चलानेवाला । आप्+मन्+भ्रा । ईदा । ईदा । ईदा । ईदा । ईदा ।

ईदानम्, (न०) ईर्+स्त्युद् । आज्ञा चलाना । ईदानम् । ईदानम् । ईदानम् ।

ईदान, (पु०) ईर्+दानम् । महादेव । पारमेष्ठि । जोकी आठ मूर्तिओंमेंसे सर्वकी मूर्ति । ईदानम् । ईदानम् ।

ईदानि, (स्त्री०) ईदानो भावः तन् । अस्मिन् । ईदानि । ईदानि । ईदानि ।

ईदान्, (त्रि०) ईदानो भावः तन् । अस्मिन् । ईदान् । ईदान् । ईदान् ।

ईदान्, (त्रि०) ईदानो भावः तन् । अस्मिन् । ईदान् । ईदान् । ईदान् ।

[१०१]

ईश्वर, (पु०) ईश्वरत् । महादेव । कामदेव । पातञ्जलके अतुषार श्रेय-कर्मविपाकारायेति न ह्यङ्गुष्ठा उपलक्षितोप । पितृव्यात्मा । सर्वं सामर्थ्यंवाला परमेश्वर । प्रभवार्थिके मन्थमें एक शरीरका नाम । पहिला । स्वामी (त्रि०) "श्रियां षीप्" ईश्वरी । दुर्गा । क्लामेद-ईप्, (भ्या० उ०) भाग जाना । उच्चाना । बचाना । शिला चुगना । सालास करना । देना । आक्रमण करना । भारना । ईपति-से । ऐपीत् । ईपितुः । ईपित ।

ईय, (पु०) ईय्+क । (त्रि०) स्वामी । मारिक । महादेव । परमेश्वर ।

ईयत्, (अत्य०) अत्य । बोधा । कथित् । इष्ट । ईपत्कर, (पु०) ईपत्+कृ० सत् । देस । अत्य । बोधाया । अल्पप्रयाससाध्य (त्रि०) शीघ्रे यत्ते शिद्व होनेहार ।

ईपदुष्ण, (पु०) 'ईपदहता' इति-त् । अत्यतस्त । मन्दोद्य । बोधा तपाहुआ (गरम) ।

ईपा, (स्त्री०) ईप+क । हलदण्ड । हलच्चा इण्डा (फल) ।

ईपिका, (स्त्री०) ईपेव "इने प्रतिहृती" इति कन् । हस्तिनेत्रगोलक । हाथीकी आँखका गोलक (डेला) ।

इषिका । मूल त्रिषनेवालेकी कलम । अन्नमेद । इषि(पी)का, (स्त्री०) इष्-गत्यादौ हुन् अत इत्वम् । बाला । पासका तिनका ।

ईह, चेष्टाकरना-दकंठ करना । भ्या० आ० अक० सेद् । ईहते । ऐहिष्ट ।

ईहा, (स्त्री०) ईह+अ । चेष्टा । उपम । वाञ्छा । कोशिश । ईहित, (त्रि०) ईह+क मृणित । खोजगया । धूँडा-गया । चाहगया । प्रार्थना कियागया । "भावे क" इच्छा । चाह ।

(उ)

उ, शब्द करना । आवाजकरना-भ्या-आत्म० सक० अनिद् । अवते । औष्ट ।

उ, (अम्प०) सम्बोधन । बुझना । बोधका बचन । गुस्से-से बोलना । दया । हुकम । विसय । टैरानी । "अद्+ट्" शिवनी ।

उक्त, (त्रि०) वच्+क । कथित । कहागया । एक शहरके पादका छन्द (स्त्री०) "भावे क" कथन । करना (न०) ।

उक्ति, (स्त्री०) वच्+क्तिन् । कथन । करना ।

उच्य, (न०) वच्+यक । जो प्रश्नके सामवेदका एक भाग । सामवेदका प्रधान अङ्ग । महात्मसाध्य यज्ञ । प्रण ।

उच्यदास्त, (पु०) उच्ययानि सामावरवचरामि शंसति शंस+विप्-नि० । जो सामभागकी प्रशंसा करता है । यजमन । उद्यु, शीचना (भ्या० पर० सक० सेद्) । उद्यति । औशीत् । उसांभवत् ।

उद्गणं, (न०) उद्गन्त्युद् । शीचना । शीचनेद्वारा राजति-लक देना ।

उद्गत, (पु०) तनुहारा, उद्गन्० तनुनेपे हरत् । तीसरी भवत्याको पहुँचा हुआ बैल । बडा बैल । महापथम ।

उद्गन्, (त्रि०) उद्ग+कनिन् । बडा । शीचनेवाला (धा० पु०) इत्भ=बैल । सूर्य ।

उद्गित, (त्रि०) उद्ग+क । शीचागया । गीला किया गया । उद्ग किया गया । मुग्निपत किया गया ।

उद्ग, -जाना । भ्या० पर० सक० सेद् । ओसति । औशीत् । उचोत् ।

उद्ग, (स्त्री०) उद्ग+क । पाकपात्र । पकानेकेलिये पात्र । देसका । हाँडी ।

उग्र, उच्+रह् । गम्भान्तादेशः । महादेव । वायुकी मूर्ति धारण करनेहार शिवजी । शत्रियसे विवाही गई इन्द्रमें उग्रप्र ।

उद्गीर्णं (दोगला) बर्ण । सुदाजना । उलट (त्रि०) जोरका । बडा । सख्त । बचा । बचानी । कोपी । गुस्ता-कनेहार । नक्षत्रसमूह । एक प्रकारका विप (स्त्री० षीप्) उग्र । निर्दय (बेरहम) भी ।

उग्रकाण्ड, (पु०) उग्र । काण्डोऽस्य । करेत् । कारवे-महासमेद ।

उग्रगन्ध, (पु०) उग्रः गन्धः पुष्पोऽस्य । जिसके फूलमें बड़ी गन्ध हो । चम्पक । चमेली । चम्बा । कटफल । अर्जकपत्र । लज्जुन । ससन । हीग (न०) तेजगन्ध-बाल (त्रि०) ।

उग्रता-त्यं, (स्त्री० न०) उग्र+तल् मत्व । नीरगला । उग्र-बनापन । तेजपना । शोध ।

उग्रधन्वन्, (पु०) उग्रं धनुर्वस ब० अनरत्स० । जि-सका धनुस् बडा तेज हो । शिव । इन्द्र । तेज धनुस्-बाला (त्रि०) ।

उग्रमपदय, (त्रि०) उग्रं पश्यति, उग्रदृग्+स्यत्+मुन् । बरा-बनी हटियाला । भयानक । इष्ट । बदमाश ।

उग्रधवस्, (पु०) उग्रं उत्कटं धवः कर्णो यस्य । जिसका बान तेज हो अर्थात् उपदेशको हाट्टी प्रहण करके । रोमहर्षणका पुत्र पौराणिक (पुराणकालेदार) ।

उग्रसेन, (पु०) उग्रा सेना अस्य । जिसकी सेना खोरावर हो । यदुवंशमें हुआ आहुक नाम हंसका पिता । राजा । मधुरा नगरीका राजा । वृतराष्ट्रका पुत्र ।

उग्र, इष्टा करना । लयक होना । रि० पर० सक० सेद् । उच्यति । औचत् । औचीत् ।

उच्यं, (न०) उच्यते=लक्षणे अनेन, वच्+कथन् । जिसे स्तुति कीजाती है । स्तुति करनेका मन्त्र । लोच

उच्यथ्य, (त्रि०) उच्य+थद् । स्तुति करनेयोग्य । लक्ष-के लयक ।

३. (त्रि०) उड़नें मनीउला । उद्+क+नि० । उन्म-
 तक । जिरका मन भीर जहम बरगया । उपादेमनबला.
 ण्ट, (पु०) आतीब । उद्+कडप् । बहुत । सेज ।
 अलगमा । बाण दारपीनी (न०) । मखदापी (पु०) ।
 ण्टा, (स्त्री०) उद्+कडि+भ । इष्ट एतके पूरा
 हनेके क्रिये मनी बिन्ता । पिच्छर । बाहीगई बसु-
 में देरको न गहारना । दु रा । बेआरामी । किसी पियारी
 बीजकी बकाहिस । घोक.
 कन्धर, (त्रि०) उपाता कन्धरा अस्य । कंची मदन
 (कथ) बाला.
 कम्प, उवा० आ० । कंचपना । धरधराना । कम्पते ।
 बकम्पे । अकम्पित.
 क, (पु०) उद्+क+अप् । धान आदिका इबडा
 करना । हाथ पांव आदिका फैलाना । पाखका फैलाना.
 क्यं, (पु०) उद्+कृप्+पन् । अनियम । बिबाधा.
 क्य, (पु०) अग्रपक्षके पाखका देस । उरीसा उक्क,
 "उत्तः सन् लति ल्य+क" । न्याय । विकारी । भार-
 बाहक । बोला उठनेहार.
 कलिका, (स्त्री०) उद्+कल+पुन् । उक्कया । काम आदिते
 याद करना.
 कद, (पु०) उद्+कृ+पन् । धानोकी हरडा करना ।
 भीर ऊपर उठलना । फैलना.
 किर्यं, (त्रि०) उद्+कृ+क । फैलागया । फैलायगया ।
 रिलया गया । उक्तिपिन । इतवेध । बेपागया । पचागया.
 कुण, (पु०) उद्+कुण्+क । जूं । कालोरा बीज.
 कुच, (पु०) उद्+कुच+पन् । अन्यायका काम करनेके
 क्रिये कापी (मुरर) किम्बा प्रतिकारी (मुराह) में
 धन लेना । पुस । रिचकन । बड़ी.
 काम, (पु०) उद्+काम्+पन् अङ्घ्रिः । म्मुलम । उलटा ।
 उलटाकम । उठलना । नियमविहद । गिलविड छोडकर.
 कान्त, (त्रि०) उद्+कम्+क । बला गया । बाहिर
 गया । निकड गया.
 क्रोदा, (पु०) उद्+क्रुप्+अप् । क्रुरीपशी । कूंज ।
 बिकना.
 केश्प, पु० १० । फैकना । उठाना । जगहपर धर देना ।
 गाहना । क्षिपति । बिस्रोप । अक्षिप्तीत्.
 केशम, (त्रि०) ऊपरको फैकदिया । पकड क्रिया गया ।
 लादन दिया गया.
 केषेण, (न०) उद्+क्षिप्+ल्युट । ऊर्ध्वेषेण । ऊपर
 फैकना । "कर्मणि ल्युट" संया । "करणे ल्युट" धान
 मनेदी लकडी.
 खन्, उवा० १० । छोदना । छोड बालना । खनति । खरान ।
 अखानीत् । खनः.
 पम० १४

उत्तरात्, (त्रि०) उद्+रान्+क । उपादित । उपागगया.
 उत्तंस, (पु०) उद्+तसि+अन् । कर्णभरण । कानका
 भूषण । शिरोभूषण । शिरका जेवर.
 उत्तस, (त्रि०) उद्+तप्+क । सन्तस । तपहुआ । गरम ।
 झल । नहायाहुआ । शुष्य मोन । सूखाहुआ मोन (न०) ।
 उत्तमर्ण, (पु०) उत्तमं श्रणं अस्य । जिरका कर्ना अच्चा
 हो । कर्न देनेहार । महानन । कणदाता.
 उत्तमसाहस, (न०) दाम्भेद । बरी शजा । १००० वा
 कईओंके मतमें ५००० हजार पणकी राजा । बरी रि-
 लेरी.
 उत्तमाह, (न०) कर्म० मलक । माथा । गिर । शरीरका
 सबसे अच्चा अंग.
 उत्तम, (पु०) उद्+साम्+पन् । उठरना । पकडना ।
 रोकना । आरता देना । बुराईसे इठजाना । आराम करना.
 उत्तर, (न०) उत्तीयेते प्रकृताभिभोगेऽनेन । उद्+तृ+अप् ।
 जिसके द्वारा क्रियेगये सवालको तरमके । राज के निबड
 वादीसे क्रिये हुए सवालको साफ करना । उत्तर नाम
 व्यवहारका अङ्ग । दोषके तोडनेका बचन । विर टटाजाक
 पुत्र (पु०) । उरीची (उत्तर) दिला । विरटटाजाकी
 कन्या (स्त्री०) । अच्चा । कंधा । लयक । पीठे.
 उत्तरकोशला, (स्त्री०) अयोध्या नाम नगरी । रामचन्द्र-
 जीकी जन्मभूमि.
 उत्तरङ्ग, (न०) उत्तरं अङ्गं । कर्म० । शङ्खवादि० ।
 द्वारोर्ध्वस्थदाह । द्वांजेके ऊपरकी लकडी । कंची तर्ङ्गो-
 बाल (त्रि०)
 उत्तरच्छद, (पु०) कर्म० । शशोपयांस्तरणवन्न । छत्रके
 ऊपर बिलानेका कपडा । पिछेना । ऊपरका कपडा.
 उत्तरपक्ष, (पु०) बाद (मुराहिता) में पूर्वपक्ष । पहिले
 उदायागया सवाल । मउदेने योग्य । सिद्धान्तपक्ष (फैस-
 लेका जबाब) ।
 उत्तर्मीमांसा, (स्त्री०) कर्म० । अगला विचार । फैसलेकी
 बात । मद्रमीमांसा (मद्रासा विचार) । विद्वान्तदर्शन.
 उत्तरा, (स्त्री०) प्रेनकी पितृववाति होनेपर लपिडीकरणके
 पीठेकी धाडकियायें । उत्तररिया, बाउ, वेग (अन्व०) ।
 उत्तरार्य, (अन्व०) उत्तररिया । उत्तरकी ओर । उत्तर-
 काल.
 उत्तराधिकारिन्, (त्रि०) उत्तरं अपिद्यतेति । अर्थ+
 कृ+णिनि । पहिले स्थानीका मूल्य (कच्चा) समप्त होने-
 पर उठी सम्बंधसे कच्चा कादम करनेहारे अधिकारको
 पाये पुत्र पौर आदि दायाद । बारिम । एतक.
 उत्तरामास, (पु०) उत्तरमिषाभासते । भा+भृ+अच् ।
 जो उत्तरकी नाई प्रदीत हो । दुधोत्तर । धाराब जकाब ।
 पुत्र जकाब.

उद्वर, (न०) उद्+उर+अप् । उद्वर । पेट । नामि और मा-
नोंका बीच । "आपदि अप्" युद्ध । लडाईं । "उद्+र
+अप्-उदो हलोपश्च" पेटका रोग ।

उद्वरम्भरि, (त्रि०) उद्वे विभक्ति । भृ+गि+मुमुच । पांच
यज्ञ क्रिये बिन अपना पेटही भरनेहार । क्षुधिन । पेट ।

उद्वरायत्त, (पु०) उद्वरे धावन् इव गम्भीरस्वात् । गद्गी
होनेसे पेटपर मानो पानीका भर (चक) है । नामि ।
नाक । धुनी ।

उद्वरिणी, (स्त्री०) उद्वरे गर्भोऽस्तव्याः इति । जिनके
पेटमें गर्भे हो । गर्भवती । गर्भवती । अन्तर्वेशी । हमन्-
वाली ।

उद्वकं, (पु०) उद्+अकं-अर्थे वा षच् । उत्तरकालमें होने-
वाले फलवाला शुभ वा अशुभ कर्म । नवीना । परिणाम ।
फल ।

उद्वचिस्त, (पु०) उद् ऊर्ध्वं आचिः रश्मिः अम्प । ऊंची
छाटवाला । ऊंची शिखावाली आग । अधिक कान्ति होनेसे
कामदेव । ऊर्ध्वरेता । वीर्यका ऊपर जाना होनेसे शि-
वनी । ऊंची छाट ।

उद्वचसित, (न०) उद्+उव+सि+क् । गृह । घर

उद्वत्त, (पु०) उ+आ+दा+क् । ऊंचे स्तरसे उधारण कि-
यागया वर्ष (अक्षर) । मनोहर । बड़ा । दाता (त्रि०)
अलक्षारभेद । ऊंची आवाज । ऊंचा । अच्छा । चमकने-
वाला बजावाजा ।

उद्वान, (पु०) उद्+अन्+पश् । गलेकी हवा । नामि ।
सांपका भेद ।

उद्वार, (त्रि०) उद्+आ+रा+क् । दाता । बड़ा । सीधा ।
चतुर । गम्भीर । धराधारण (रास) । सुखादिल ।

उद्वामीन, (त्रि०) उद्+आग्+शानच् । रागद्वेषरहित । म-
न्यस्थ । दो जीतनेवालोंमें किसीकामी पक्ष (निद्राज) न-
करनेहार । उपेक्षक । बेपबोह । किसीसे सम्बन्ध न
रखनेहार ।

उद्वारहरण, (न०) उद्+आ+ह+भावे ल्युट् । किसी वा-
तको एक जगह दिखाकर सम्पूर्ण स्थानपर निधन करना ।
इतिवृत्तिके लिये कहागया इत्यन्त । प्रकृतकी सिद्धिके लिये
निदर्शनरूप उपोद्धान । सिवाल ।

उद्वान्त, (त्रि०) उद्+आ+ह+क् । छान्तान्तरगसे उपन्दास
क्रियागया । सिवालके तौरपर दिखाया गया । कहागया ।

उद्वित, (त्रि०) उद्+क् । कहागया । उद्+इण+क् । उठा ।
निचला । बड़ा ।

उद्वीच्य, (त्रि०) उद्विषि उत्तरकाव्यती भवः यत् । उत्तर-
काल (अनेकला षक्) में होनेवाली चीज । धरावती
(सरस्वती) नदीके उत्तर पश्चिमका भाग । उत्तरका ।
बहनामी गन्धद्वय ।

उद्वीच्य, (न०) उद्+ईर+ल्युट् । बरन् ।
बोगना ।

उद्वीर्ण, (त्रि०) उद्+उर+क् । उद्वर । गम्भीर
बड़ा । बगदुआ ।

उद्वृट्, (त्रि०) उद्+उर+क् । विरररर
धारणक्रिये । उठायेहू ।

उद्वृत्त, (त्रि०) उद्+उर+क् । उद्वृत्त
ऊंचे गया । निरःकाहुआ ।

उद्वृत्तनीय, (न०) उद्+उर+अनीयर् ।
दो भाग करे ।

उद्व्राट्, (न०) उद्+वाट्+क् । अतिगम
आगना । बहुतरी ।

उद्व्रात्, (पु०) उद्वेगांयति गाम् । उद्+मै-
रके गानेहाग ।

उद्व्राट्, (पु०) उद्+यु+पश् । उद्वृत्त, के । उद्
उद्वीय, (पु०) उद्+यि+पश् । एक समयदेख म

उद्वृणं, (त्रि०) उद्+गृी । उद्वृत्त करान्+क् । उ

उद्वः, (पु०) उद्+हन्-नि० । श्रेष्ठ । बहुत
में पीठ रहता है जैसे "ब्रह्मगोद" प्रथम

उद्वपंण, (न०) उद्+पृष+ल्युट् । पिना ।
गोडी रगट । सुत्रये करना ।

उद्वट्क, (पु० न०) उद्+षट्+निच् लुट् ।
निफलनेके लिये एक प्रकारकी कल्प । अरण
"करणे ल्युट्" उद्वट्कम् (न०) इसीअर्थमें है
ल्युट्" प्रतिबंधनिराम । रकावटका दुखरान
बमुक्ता बंधन मोलना । कुर्मी । चाबी

उद्वान, (पु०) उद्+हन्+पश् । आरम्भ ।
पिचटना । प्राणायामके अन्न कुम्भका मे
मुद्र । दात्र । किसी प्रत्येका मागविशेष

उद्वान, (न०) उद्+दो+ल्युट् । बांधना । पुर्ण ।

उद्वामन, (त्रि०) उद्वन्तं दात्रः । जो रस्तीमें
लगयाहो । बंधनसे रहित । मुला । बिनको
सुदमुद्वार । बजासक । "उद्वृट् श्रेष्ठं
अश्रं यम्" । जिनका पाचनानी अर्थ बहुत
वरण (पु०) ।

उद्वित, (त्रि०) उद्+वि+क् । बाधा हुआ ।

उद्विष्ट, पु० उ० । सूचन करना । इशारा क
करना । जनलाना । विख्यात करना । बगलान
ते । दिदेश-दिदिने । अदिधात्- अदिशान् ।

उद्विष्ट, (त्रि०) उद्+दिष्+क् । उपदिष्ट । उ
गया । बाधागया । उद्+दात्रमें प्रसारके नि
गाथन (न०) ।

पेपन, (न०) उद्+पीप्+णिच्+भ्युद् । प्रसादन । री-
रानी । पनफानेहाहा । अलङ्काराद्यर्थे बहुवचने रस आदिषु
बनफानेहारे बन्धना आदि विभाव । भन्धना।

प्या, (पु०) उद्+पिच्+पन् । अनुपन्धान । इन्द्रा । त-
लका करना । योजना । अभिलाष । इच्छा । चाह । गिज्ञान ।
चित्ते नामरर संक्षेप बन्धुता नाम लेना।

प्राय, (पु०) उद्+प्र+पम् । पलायन । भागना । दौडना।
प्रायैत, (पु०) उद्+प्रा+पम् । प्रकाय । रीरानी । धूर ।
धमक।

प्रत, (पु०) उद्+प्र+क । रात्रमड । रात्राओंका पहिल-
बान । (त्रि०) बोलनेमें बडा चयल । विनाविचारे बोल-
नेवाला । अविनीत । न सीयाहुआ । बहरी । अहंकारी ।
मग्नर । ऊपरको उदावेहुये । उदाहुआ । बडा सस्त जो-
दावाला।

प्ररण, (न०) उद्+प्र+भावे ल्युट् । सुटकारा । ई ।
कर्मउतारना । उदाउना "कर्मणि ल्युट्" । बमन क्रियागया
अथ आदि।

प्रर्ष, (न०-पु०) उद्+प्र+णिच्+पम् । उभाव । सुसी
(विवाह आदि) । लांहार । बरीखुसी (विशेषकरके
धर्मसम्बन्धी) घरदोस्तवादि।

प्रर्षण, (न०) उद्+प्र+णिच्+भ्युद् । रोमाश । शरीरके
रोमका खडा होना

प्रष, (पु०) उद्+प्र+भृत् । यद्य अमि । वृष्णदेवका
पियारा मादबविशेष (यह वृष्णगीका बडाभक्त हुआई) ।
उत्सव।

प्रसर, (पु०) उद्भिद्यते । उद्+प्र+कर्मणि धम् । जो
उडाया जाताई । त्रिमे शोधन करना पडताई । कण ।
कर्म । "भावे घम्" । मुक्ति । सुटकारा । बचाना । बाहिर
निकालना । सम्पदा।

प्रुट, (त्रि०) उट्ना धू अम्मात् । भार निकड गया ई
त्रिमे । बोरोसे खतत्र हुआ । बेरोक होगया । स्वप्न

प्रुत्, (त्रि०) उद्+धृ+क । उरिखत । उडायागया । फेंकागया।

प्रुनन, (न०) उद्+धृ+णिच्+भ्युद् । उन्क्षेपण । ऊपर
फेंकना । उडालना

प्रुत्, (त्रि०) उद्+हृ+षा क । उडायागया । उडालागया ।
सुडायागया । उदा क्रियागया । नाश क्रियागया । खानेसे
धोनागया । रक्षा क्रियागया।

प्रुन्धन, (न०) उद्+धृ+भ्युद् । गठेमें रखी लगाकर
अपनेको बांधना । पाठाबंधन । फांसीलगाना । अपनेको
खटकरदेना।

उभुद्, (त्रि०) उद्+भृ+क । विक्रित । खिलानुआ ।
जागानुआ । जानीहुई बलुके सम्बन्धी झानसे जागानुआ
बलुका संस्कार । जैसे हाथीको देकर अगुभव कियेहुए
इस्तिफक (महापन) का खयाल होजाना (ये न्यायदि
मतमें स्वीकार क्रियागयाई)।

उद्दृहण, (न०) उद्+भृ+अन । बुद्धि । बडना । उत्पत्ति ।
तरदी।

उद्दोष, (पु०) उद्+भृ+घम् । घोसी समस्त । पहिचान ।
साहास।

उद्भट, (पु०) उद्+भट्+अच् । कच्छु । उज (चावल आदिके
छांटनेका कामदेताई) । अच्छे आशयवाला । महादान । प्र-
वर । बहुतअच्छा । प्रन्थसे साहिरका श्लोक आदि । कुद-
कल । सुयं । प्रथिद । महाहूर।

उद्भय, (पु०) उद्+भृ+अच् । उत्पत्ति । जन्म । पैदाइश ।
निकलना।

उद्भिज्ज, (त्रि०) उद्+भिनत्ति-किप्-उद्भिज्ज तथा सत् जा-
यते-जन्+उ । पृथिवी फाडकर उत्पन्नहुआ वृक्ष । मासी
आदि । भाजी । नका तात । सब स्थावर।

उद्भिद्, (त्रि०) भूमि उद्भिन्नति-उद्+भिद्+ किप् । वृक्ष,
वृण, मासी, वाली और लताएष पांच प्रकारका स्थावर । यह
(पु०)।

उद्भूत, (त्रि०) उद्+भृ+क । उन्नत । प्रगटहुआ । न्याय-
मतमें प्रलक्ष योग्य । त्रिमे आरसे देत सकें।

उद्भेद, (पु०) उद्भिद्यतेऽर्थां अत्र घम् । जिससे शरीर ऊपर-
रको उडताई । रोमाश । शरीरपर रोमका खडा होना ।
जन्म । पैदाइश । "भावे घम्" कुरना।

उद्भ्रम, (पु०) उद्भ्रम्यलनेन । उद्+भ्रम्+घम्-अधि ।
जिससे चित्त बहुत घूमताई । उद्वेग । म्माडलता । चबरा-
हट । सन्देहहोना । भूल । फिरर । घूमना।

उद्घत, (त्रि०) उद्+घम्+क । तयारहुआ । ऊंचेक्रियागया ।
घन्थका अभ्यास।

उद्घम, (पु०) उद्+घम्+घम्-अधि । उद्योग । हिम्मत ।
दिलेरी । परिधम । मिहलत । कोशिश । तयारी।

उद्घान, (न०) उद्+घा+भाषारे ल्युट् । जाना संरकरना ।
भाग । बांक । आसीडन । विलासकरनेका भाग । इटादा ।
आशय।

उद्घायः, (पु०) उद्+घु+घम् । मिलाया । इकडा करना।

उद्घासः, (पु०) उद्+घम्+घम् । प्रयत्न । कोशिश । Ved.

उद्घोग, (पु०) उद्+घु+घम् । दज । घेष्ट । उचन ।
उत्साह । कोशिश।

उद्घिक, (त्रि०) उद्+घिच्+क । अतिघमिन । त्रिवादा ।
अधिद । बडाहुआ।

उद्दिच्, द्या० ष० प्रायः कर्मवाच्यमें प्रयुक्त होता है ।
अतिक्रमण करना । उांपना । (पंचमीके साथ आता है)
“ममेवोद्दिच्यते तव जन्मनः” रिणकि । रिरेच ।
अरिचत् । रिफः ।
उद्देक, (पु०) उद्+रिच्+पम् । इदिः । बडना । उपक्रम ।
प्रारम्भ । नीमका पेड.
उद्देर्तन, (न०) उद्+र्यते+नेन । उद्+र्यत्+निच्+ल्युट् ।
जिसे शरीर अच्छा बनायाजाय । शरीरके रोग करनेका
द्रव्यआदि । “भावे ल्युट्” निडेपन । चन्दन छगाना ।
घसना । टछटना.
उद्देर्तनं, (न०) उद्+र्यत्+अन । ऊपर जाना । उद्य होना ।
बाहिर निकलना । सम्पत्ति । उन्नति । इधर उधर छौटना ।
चन्दन आदि छगाना । शरीरको सुगन्धित द्रव्योंसे
मलना । कदाचार.
उद्दाहु, (वि०) उद्गतो बाहुयंस्य । त्रिषुकी मुना ऊंचे
हो । मुना ऊपरको उठाये.
उद्दह, (पु०) उद्दहति कर्षं नयति पितृन् । वह+अच् । जो
पितरोंको ऊपर (स्वर्गादि लोकमें) उठाताहै । पुत्र ।
कर्षं वहति+अच् “प्रवहवायुके ऊपरकी हवा” ।
उद्दान्त, (पु०) उद्गतं वातं अन्तर्जलं अस्मान् । प्रा०
ब० । जिसे भीतरका जल बाहिर निकलाहै । मंदरहित
हाथी । उद्+वम्+फ् । उद्गीर्णं । बाहिर निकाला । कैकीया.
उद्दासन, उद्+उ०+वम्+ल्युट् । मारण । मारना । “उद्+वम्
+निच्+ल्युट्” । विघनेन । विदाकरवाना । छोडना.
उद्दाह, (पु०) उद्+वह+पम् । विवाह । शादी । परिणय.
उद्दिप्र, (वि०) उद्+विच्+फ् । उद्देगयुक्त । पचण्या
हुआ । दुग्ध दूध करनेकी राफि न होनेसे पचणयें हुए
दिल । विखा हुआ.
उद्दीप्त, म्या० आ० । देखना । विचारना । मयाल करना ।
पहिकामा । ईशते । ईशानके । ऐशित्य । ऐशितः ।
उद्दीर्घाणं, (न०) उद्+वि+ईस्+अन । ऊपर देखना ।
दंगल । नेत्र.
उद्दीप्त, पु० प० । पंखा करना । किसी पर वा सामने
। पंचना । उद्दीर्घयति.
उद्दृच्, म्या० आ० । ऊपरको जाना । बडना । फूट निक-
लना । बनेते । अर्चयित्.
उद्दृक्, (वि०) उद्दृशो इन्द्र । नति० । अच्छी कालमें
उत्पन्न गया । दुर्गेण । दुर्गकी । त्रिगुणाकालकल्प अच्छा
गते । “उद्+र्यत्+फ् । उद्दिप्त । कैकानका (ऊपरको) .
उद्दृत्, (वि०) उद्+दृश्+फ् । उभय । उठा हुआ मन,
हृत्, नेचअदि । बहना । फूलगवा । निद्र होगवा ।
हृत् । अन्त । अग्निमयी । उद्दत् । दुर्गकी । शुच्य.

उद्देम, (पु०) उद्+विच्+अन । निद्रा मनुज
विग्द (निछोडा) से दुःख उत्पन्ना । हा ।
“वेगोऽस्मान्” निघण्टु । जो डिके नहीं । बली से
उद्देजन, (वि०) उद्+विच्+अन । मन्त्रों के
ब्याकुल करनेवाला । किसीके विपक्षे दुःखनेत्र
ना शोभ । उक्कल० । दुःखदेना । मोह.
उद्देजयित्, (वि०) उद्+विच्+ल्युट् । मन्त्रका ।
उद्देजि(गि)न्-त्रक, (वि०) उद्+विच्+निच्+ल्युट् ।
पचणनेकाल । मास करनेवाला । दुःख पहुंचानेवाला
गिज । नाशुज । वैआरुम.
उद्देदि, (वि०) उद्गतः वेदिः यत्र । ऊंचे निद्रपन
उद्देद, (वि०) उद्गतो वेदं । दिनारोमे बहिर
मर्वादा तोडनेहाय.
उद्देह, म्या० प० । कांपना । उद्दरता । इधर उधर
वेडति.
उद्देहित, (वि०) उद्+वेल्+फ् । कांप गया ।
लगा ।-तं (न०) कांपना । कंप.
उद्देधन, (न०) उद्+वेद्+ल्युट् । हाथ से
कंधन । जुआंवां । दृष्टान । पगरी । “ उद्
नाच् ” (वि०) मुखादुआ (बंधनसे) .
उद्द, गीला करना-दधा० पर० अक० उद् ।
आंवीत्.
उद्दह, (पु०) उद्द+अह । मूर्च्छि । बुरा ।
“ उद्दुर ” उद्दुह “ तथा ” .
उद्द, (वि०) उद्द+फ् । आर्द्र । गीला । नी
दधाकाल.
उद्दप्र, (वि०) उद्द+नम्+फ् । उच । ऊंचा । मन्त्र
उद्दप्रति, (लो०) उद्द+नम्+फिन् । इदि ।
उद्य । गडकी ली.
उद्दप्र, (वि०) उद्द+नह+फ् । अच्छीतरहसे
बडाहुआ.
उद्दप्रित, (वि०) उद्द+नम्+निच्+फ् । उद्दप्रिया
क्रियागवा.
उद्दप्रय, (न०) उद्द+नी+ल्युट् । धिनकं । बली ।
उद्दप्रय, (वि०) ऊपरको उठायेहुए नैत्रोवाला ।
उद्दना । ऊंचे करना । जल सेवना । रस नि
संकाद करना । अनुमान करना.
उद्दप्र, (न०) उद्दना नाया यच्च । नपःके
नाहकाल.
उद्दप्रि, (वि०) उद्दना निद्रा मुद्रा यच्च । त्रिषण
अया रहा । छिजहुआ । जागाहुआ.
उद्दी, म्या० प० । ऊपरको उठाना । उद्दना । नि
उक्कलना । नयति । अग्नीत् । आत्म० । उद्दने

उभेत्, (त्रि०) उद्+नी+भृच् । उदनेवाल । अनुमान कर-
नेवाला ।
उभमञ्जक, (पु०) उद्+मञ्ज+भृच् । गलेतरु पानीमें
राखे होकर तपस्या करनेहारा तपस्वी । पानीपर
संरनेहारा (त्रि०)
उभमत्, (पु०) उद्+मद्+करणे क्त । पदुरा । सुपहुन्द
रुथ । "कर्त्तव्ये क्त" उभमाद्वाला । पागल । मरुके भाये-
वावाला (त्रि०)
उभमद्, (त्रि०) उद्गमो मदी ह्योऽभ्य । जिसे मद् बढ-
गया । पागल । "कारणे भव्" मादक इत्य । नगेदी पीज ।
उभमनर, (त्रि०) उद्गमन् मनोऽभ्य । उचछे हुए रिह-
वाला । जिसका मन और जगह गया हो । जिसका रिह
कायम मरि ।
उभमनर-नर, (त्रि०) उद्गमन् मनः भस्य । व्याकुल
मनवाला । धुण् । बेआशान । जगछे हुए मनवाला ।
उभमथ, (पु०) उद्+मथ्+पथम् । बथ । मारना । कल
करना ।
उभमाथ, (पु०) उभमथवेऽनेन । उद्+मथ्+करणे पच् ।
मांग देकर श्रृंग आदिके फगानेके लिये लगाया गया
बूटयन्त्र (पंदा) । "भाये पच्" । मारना । तबाह
करना । लाचार करना ।
उभमाद्, (पु०) उद्+मद्+पथम् । वितविभ्रम । रिहक
बहुत घूमना । भूगर्भ प्रवेश करनेके वितरा बादम न
रटना । यिहुदेहुभोदी कमदेवले बीगई एक प्रकारकी
बसा । सिरी सरीके रोगमे बुद्धिवा स्थिर न रटना ।
पागलपना । पागल ।
उभमाद्म, (पु०) उद्+मद्+भिव्+भृच् । उभमत करनेहारा
कामदेवका एक बाण ।
उभमान, (म०) उद्+मा+भरणे ल्युट् । परिमाणवा साधन
तोला मापा आदि । साधना ।
उभमार्ग, (त्रि०) उद्गमन्तः मार्गश्च । मार्गके लोप गया ।
बुधित मार्गपर चलनेवाला ।-यं (पु०) बुधितमार्गं ।
पुराचार ।-गं (अभ्य०) बुधितम मार्गंये ।
उभिमपित, (त्रि०) उद्+भिव्+क्त । प्रपुट । पूलदुभा ।
खिल दुभा । बोटागा बमकादुभा ।
उभमीलन, (म०) उद्+मील्+भृच् । उभमेव । नेवका
सिमका । खिलना ।
उभमुर, (त्रि०) उद्+उभं सुभं भस्य । जिसका सुभ
उंचेहो । जो उंचे देलपट्टे । उदगदुभा । सिरी काममे
भगदुभा ।
उभमुद्, (त्रि०) उद्गम सुभ वल्लम् । जिसे भीरुका
क करता । लल मुद् । खिल दुभा

उभमूलन, (म०) उभमूल+भिव्+भृच् । उगादन । उगा-
इना । जइसे निवाटना ।
उभमेव, (पु०) उद्+भिव्+पथम् । नेव आदिवा मोतना ।
बोडा प्रकाश ।
उभ, (अभ्य०) गमीपता । पगहोना । अधिक । अथम् ।
साधन । आरम्भ ।
उभकपट, (त्रि०) उभगन कपटं । अग० म० । कछे
पाथ पट्टया । निहट गलेनेपाम । गांधका पीठा । धोरोदी
उपलनेकी बाल ।
उभकरण, (न०) उभकियतेऽनेन । उभ+ह्+भृच् ।
जिसने उपकार विजागाहारे । प्रपात साधन । उंचे
भोजनादिमें व्यजन (गधना-नाहर) । सोनेका गणन
परीग आदि । गहानेका गणन उचटन आदि । दूजमें पुन
मादि । राजा आदिके लिये उगा, र्थी करैर गणन ।
उभकार, (पु०) उभ+ह्+पथम् । उभहृति । मरग । र्थीके-
हुए पुण्यमादि । अनुकृता । मोहरी । निरबंजी ।
उभकारक, (त्रि०) उभ+ह्+भृच् । उभकार करनेहारा
'श्रीये टापि अत्र इत्ये उभ-रिका" । राजका घर । का-
हेका बनदुभा राजका घर । भेला । लम्बू । पटअवर ।
उभकार्य, (त्रि०) उभ+ह्+भृच् । उभक रर । उभकरके
लयाक राजपूर । राजका घर (बपदेका बनदुभा) । ट-
जमवन (श्री०) ।
उभकूप, (पु०) उभगन कूपं-कूप० ल० । कपडे बन
गया । कपडे पतवा लोटा दुभा जलपय (जमका रटा) ।
उभकम, उभ+कम्+पथम् । उभकमनवर आरम्भ करना । व-
दिला । आरम्भ । इलाज । पुन । रिहकन । अथम् । बक ।
उभकरोरा, (पु०) उभ+कुरा कुराक+पथम् । निर । केंके
निहट । केंसभर (त्रि०) लनेन । निरकन ।
उभकोष्ट, (पु०) उभ+कृष्ट+पथम् । ररंन । रक । निरक ।
निरककरनेहारा (त्रि०) केंके निरकन ।
उभक(बा)णं, (म०) उभ+कृष्ट रने-कृष्ट-कथ क ।
कीकका रार । कीरकी अथम् ।
उभकिसू, इ० प० । वेकन । सिरीकी बो का कता । का
लगात । विपयि । विहरे । केंपीट्टे । केंदिय । निर-
करना । लल उदक ।
उभकीण, (त्रि०) उभ+कि+ण । कट कटा । जि कटा ।
कपटपट ।
उभकोद्, (त्रि०) उभ+कि+भृच् । कन । कन
रनेकरना । कन कपटपट ।
उभकोक्, (पु०) उभ+कि+पथम् । कन । कन
कन । केंके उदक ।

उपगतं, (त्रि०) उप+गम्+क । स्वीकृत । माना गया ।
 पहुँचा । जाना गया ।
 उपगम, (पु०) उप+गम्+पञ्-अङ्गिदिः । पृथक्जाना । अन्वी-
 कार । जात्रा ।
 उपगीति, (श्री०) उप+गि+चिन् । आशोऽन्वका भेद ।
 गाना ।
 उपगृह, (त्रि०) उप+गृह्+घञ् । आच्छिन्नकरनेयोग्य ।
 मिलनेलायक "भावे घञ्" मिलना ।
 उपगृहन, (न०) उप+गृह्+न्युट् । आच्छिन्न । मिलना ।
 ग्रहण । पकटना ।
 उपग्रह, (पु०) उप+ग्रह्+अप् । काराबन्धन । जेलखाना ।
 जेलमें डालना । मिहबांनहोना । "कर्मणि घञ्" कैरी ।
 घुनकेत्र आदि ग्रह ।
 उपग्राह, (न०) उप+ग्रह्+घञ् । उपवीकृत । भेड़ा ।
 नवताना मिहबांनके लयक ।
 उपघात, (पु०) उप+हन+पष् । अपकार । नाश । रोग । चोट ।
 उपग्रः, (पु०) उप+हन+क । संनिहृष्ट । आशय । पासका
 आशय स्थान । आशय । महारा । स्थिति । रक्षा । जो
 किसीपर वा किसीसे हो ।
 उपचक्रः, (पु०) उपगमः चक्रं=चक्रवाकं । एक प्रकारका
 चक्रवा पथी ।
 उपचक्षुस्, (न०) उपगमं चक्षुः इव । नेत्रके समान लगा
 हुआ । ऐनक ।
 उपचय, (पु०) उप+चि+अच् । वृद्धि । बढना । उत्पत्ति ।
 उत्पत्तिपथे उत्पत्ते १ रा १ टा १० वां और ११ वां स्थान ।
 उपचरित, (त्रि०) उप+चर्+क । उपगमिन । भेड़ा किया-
 गया । प्रयायागया ।
 उपचर्म-र्म, (ध्वज) चर्म चर्मके पर वा चर्मकेके निवृत्त ।
 उपचयं, (श्री०) उप+चर्+चदप् । चित्तित्या । हृदिमत । भेड़ा ।
 उपचाप्य, (पु०) उपचीयने संरिहृष्टवेऽगौ नि० । त्रिगुणा
 संस्कार कियाजानाई । यद्यपि संस्कारकीगद्वे थाप ।
 उपचार, (पु०) उप+चर्+पष् । चित्तित्या । हृदिमत । भेड़ा ।
 व्यवहार । प्रियत । अतीवनीय कीकीको मुक्त करना ।
 उपचित, (त्रि०) उप+चि+प् । दम्प । मज्जाहुआ । बग-
 हुआ । १६४ हिय हुआ । तयार कियागया ।
 उपच्छन्द, वृण० १० । उपच्छरी करना । प्रेरणा करना ।
 प्रथम करना । देना । उपचरति । अविच्छन्दम् ।
 उपचरम्, (ध्वज०) वृणोरेके सम्पुन । वृणोरेभे ।
 उपचरन्, ध्व० १० । बोलना । बतलाना करना (बच-
 क्त करना । उपचरत ।
 उपचरति, (श्री०) बर्षाऽन्वदेनेद । उपचरताका उपर ।
 उपजाय, (पु०) उप+ज+अप् । भेड़ा । पक । उत्प-
 होना । दीर्घ दीर्घे उा बना ।

उपजापक, (त्रि०) उप+जप्+भ्युत् ।
 बना । मूचक । विरोध बढानेवा । बढा ।
 उपजीविका, (श्री०) उपजीवर्ति ।
 टाप । रोजी । जीनेका साधन । वृत्ति । जीविके
 उपजीविन्, (त्रि०) उप+जीव्+मिन् ।
 आगरेमें पडाहुआ नाकर ।
 उपजीव्य, (त्रि०) उप+जीव्+भ्यन् । आशय
 उपजुष्ट, (त्रि०) उप+जुप्+क । प्राप्त । पूर्ण
 लया गया वा स्वीकार किया गया । आशय
 भेड़ा किया गया । प्यार किया गया ।
 उपजा, (श्री०) उप+जा+कर्मणि अर् ।
 विना आगरी समझलेना । "भावे घञ्" ।
 उपजीक, निजन्त -भेड़ा करना । सादर भेड़ा
 कीकयति ।
 उपजीकन, (न०) उप+जीव्+कर्मणि लृट् ।
 उपहार । उपायन ।
 उपतापः, (पु०) उप+तप्+पष् । उष्णता ।
 विपत्ति । व्यथा । शोक ।
 उपत्यका, (श्री०) उप+त्यक् । पर्वतके नि
 उपदंश, (पु०) उप+दन्श+पष् । मज्जा
 शराब पीनेके माय अच्छा लगनेवासी सने
 चटनी । उपच्यरोगनेद । एक प्रकारकी हंक्का
 टिडकी बीमारी । दंशन । हंक्कलगाया ।
 उपदंशक, (पु०) उप+दन्श+विच्+भ्युत् ।
 दरवान । दिखलानेहारा (त्रि०) ।
 उपदंशक, (त्रि०) उप+दन्श+भ्युत् । दिखने
 (पु०) मगदंशक । द्वारवाले । शशी ।
 उपदा, (श्री०) उप+दा । अर् । उपोच
 बगो । भेड़ा ।
 उपदशु, ध्वा० १० । देवता । तापक करना
 कर्मवाच्य । दिनाई देना निवि । दिखना ।
 जनप्रिया । परिस्थित करना । किसी व्यक्तिके
 पथे लगाना । बर्षान करना । परगति ।
 शीर् । अदंशु । दंशयति । दंशने । अर्धि
 उपदेना, (पु०) उप+दिग+पष् । गुणकर्म
 पीहूई बतला करना । मन्दीकी बत
 लना । प्रश्न करनेहारा बचन ।
 उपदेष्टु, (त्रि०) उप+दिग+भ्युत् । जिना देना
 पु०) दिष्टक । गुद । विशेषतः वाच्यनि
 आकाशे ।
 उपद्वय, (पु०) उप+द्व+अप् । उभात ।
 उप । एत वा अमुकको मूरन करने
 (मूरत) मति । मन्त्री ।

हु, भ्वा० प० । पाग ही भागना । विहीके सामने भागना ।
आक्रमण करना । उपद्रवति । दुदाव । अद्भुतवद् । हुन ।

हुत, (प्रि०) उप+हु+क । आहुत । पबरायाहुआ ।
मुलीबतमें पदाहुआ ।

इषा, (स्वी०) उप+षा+अच् । धर्म अर्थात्विही रचना-
में मन्त्रिओंकी परीक्षा करना । उल । आचरणमें पिछटे
। अक्षरका पहिठा ।

इषा, जु० उभ० । स्थापन करना । रचना । विहीमें वा
विहीके नीचे रचना । दधाति । धते । दधी । दधे ।
अपन् । अधिन ।

उपधातु, (पु०) उपधाति । धानुमिः । सर्वे आदि अणन
धातुओंके सारण मान इय (स्वर्णमासिक, तारमासिक,
सुव, वीस, वीति, मन्द, सिलाजनु) । धारीकी
मान धतु (सगरे दुग्ध, लोहमे रज, मांसमे बर्ष,
मेदमे गर्मी, अधिशोमे दान, मज्जामे बाल, वीर्यमे ओजम्) ।

उपधान, (न०) उपधीयते शिरोऽत्र । जहाँ रसि रचना
जाय । शिरोधान । विधाना । कथिता । प्रणय । विचार ।
वि । एक प्रकारका मत ।

उपधि, (पु०) उप+धा+कि । विही वस्तुओं कीही
प्रकारमें प्रकाश करना । कपट । छप । रपका पहिठा ।

उपधुपित, (दि०) उप+धु+प+क । आणमरण । रि-
सर्षी भोज नजदीक हो । सन्तानपते मुक्त । दु धर्म पदाहुआ ।

उपमा, भ्वा० प० । तुलना । चलना । धमति । दधी ।
अपमीत् ।

उपमत, (दि०) उप+मा+क । उपविमत । दक्षिण विप-
गया । पतुंका । अप्त ।

उपमत्, भ्वा० प० । आना । पतुंघना । विहीहीभी ओर
हलना ।

उपमय, (पु०) उप+मी+अच् । उपमय । एत लेख-
कण्डा । सितने सिधे शुरूके एत पतुंघना । अक-
मयमे ओ ओ धूमकाय है बट बट बहिष्क भी है ।
यद (पर्यंत) भी बंगाली (धूमकाय) है, इत्यदि
बहवन्त अपमया एव अवयव (प्रीतिरि पलाय-
होमिने) । इत्यन्तकमे उपमय हुआ हुआ येद ।

उपमयस, (न०) उप+मी+सुद । इत्यदि इत्यन्त
एव विवर । उपमय । अनेक भाग बना

उपमाह, (पु०) उप+मा+ह+क । हीयमे लगेके अक
देही उपह । अ । अक । ओर अरिही लगीये हीये
लेद कादेही अह । अति । अह । हीय कहेके अह ।

उपविधि, (पु०) उप+वि+धि+क । अक । अकण्डा ।
विधामे लगी वृ अह

उपविपद्, (स्वी०) उपविहीही प्रतीति इत्यन्तकमे-
मया । उप+वि+पद्+विद् । सितके इत अक इत्यन्तक
हो जानते । अकविधा । अकविधकी प्रतीतिरुत कहे-
हारा येदका गिरोमय । वेदान्त । एत सित । अक-
वहीना । धर्म जाना । एत पतुंघना । अक-
विधी विधा ।

उपनी, भ्वा० प० । एत एतना । पतुंघना । अति । रि-
नाय । अनेहीद् । अतिद ।

उपनेत्र, (न०) उपनां नेत्रम् । नेत्रमे एत अणत् ।
आंशके एत एतना मदा । अक अनेमे अकण्डा एत
नेत्रका उपकार करेहका इत । अणत् । एतक

उपन्यास, (पु०) उप+नि+उप+अच् । उपनयेतक ।
बचनबना । पाग एतना । अकण्डा । विवर । एत ।
बहला । भुमिका

उपपत्ति, (पु०) उपपत्ति एत । एतमे अकण्डा अकण्ड
विधमया । उप । एतक एति । अकण्डा ।

उपपत्ति, (स्वी०) उप+पत्+ति+क । दुग्ध । एत ।
विधि । धमति । अकण्डा

उपपाद्, (न०) उपेकादिमें एतम् । अ० ए० । अक
बोला गया एत । अकके हीउ इत्यन्तक विधा एत ही
बहिष्किय एत । अकण्डा ही उपह अने विवर का-
हारा ही अकण्डा एतमे हीउ विध अकण्डा । अ०
"बहीयम्" इत्यदि लगेमे हीउ एत अकण्डा एत
ही "अन्" इत्यन्तके विवरमे अणत् है । अ० अकण्डा
एतमे बोला अक

उपपाह, (वि०) उप+पा+क । दुग्धक । इत्यदि
आणुका । एतकक एत

उपपातक, (न०) उप+पा+क+क । एतकमे एतक
दा मदा एतकककक एत । एतके एतक कक एत ।
एतके देके एत

उपपातक, (न०) एत+पा+क+क+क । दुग्धक एतक
काक । एतके एतक काक । अकण्डा एतक काक

उपपुत्र, (न०) उप कपडे पुत्र । अकण्डा एतक । अक-
ण्डा । एतक एत ।

उपपुत्राह, (न०) उप+पु० । पुत्रकक एतक
अकण्डा अकण्डे अने एतके अकण्डा एत । अकण्डा
अकण्डे अकण्डा विध अकण्डा एतक अकण्डा
अकण्डा एतक, अकण्डा एतक, अकण्डा एतक
अकण्डा, अकण्डा, अकण्डा, एत

उपपुत्र, (पु०) एत+पु+क । अकण्डा उपपुत्र
(एतके अकण्डे विधकक देके एतक) अक
अकण्डा एतक । अकण्डा ही एतक एतक

उपसूर्यक, (न०) उपगतं सूर्यं सूर्यमित्थं चन्द्रं वा । संज्ञायाम् । चन्द्रमा वा सूर्यंके पास मण्डलाकार (गोलाकृति) परिध (घेरा) । सूर्यंके पास पहुंचगया ।

उपसू, श्वा० प० । सम्मुख जाना । पहुंचना । निकट खेचना । सरति । घसर । अगर्षति । छुट ।

उपसून्, दु० प० । मुख बड़ा देना । देना । मिलना । जुटना । किसीके साथ मिलना । उत्पन्न होना । नाश होना । मृजति । समने । असाधीत् । मृष्ट ।

उपसूट, (न०) उप+सूट्+क । मिलानुआ । दवाया हुआ । मेषुन । भोग । “ प्र ” आदि उपसर्गवाला । “प्रभाव” “ निगूट ” (वि०) ।

उपसेक, (पु०) उप+सिच्+पश् । सींचकर कोमठ करना ।

उपस्कार, (पु०) उप+कृ+श्चप्+सुच् । व्यञ्जनादिको शुद्ध करनेका साधन । मसाला । परमें रहनेका साधन । गृह्णी वस्तु । साधन । सामग्री । भूषण । निन्दा । कटह । दोष ।

उपस्कारः, (पु०) उप+कृ+पश् । परिशिष्ट । छोड़े वस्तु शेष रह गईं । एक बान भूषण करनेके लिये दूसरीका जोड़ देना ।

उपसृ, श्वा० उभ० । तयार करना । भूषित करना । घजाना । पढ़ना । करोति । डरते । चकार । चक्रे । अक्षरपीत् । अह्य । ह्य ।

उपस्य, (त्रि०) उप+स्थ+क । निघटनी । पास रहने-काम । एष पु० अट (गोद) । मध्यमाग । स्थ-स्थं प्र न । टन्तिभिन् । डिया वा सोति ।

उपस्या, श्वा० उभ० । निकट टहरना । अपना माग लेना । पास आना । पहुंचना । भेरा करना । निघृति । उपविष्टवे । अस्यात् । अस्थित ।

उपस्यात्, (त्रि०) उप+स्था+तृच् । सेरक । नौकर । पहुंचगया । दुगोहितनेद ।

उपस्थान, (न०) उप+स्था+पुद् । उपेय स्थितिः । पहुंचकर टहरना । निकट होना । नरहीही । नमस्कार । प्रदत्तः । प्राने । बहुत डोण ।

उपस्थित, (त्रि०) उप+स्था+क । गर्भास्थित । हाजिर । प्रान । पहुंचतथा । आपदुआ । एद धिमदुआ । उगा-कृत विरगदा ।

उपसृष्टी, (पु०) उप+सूट्+पश् । शयं । छुना । नहाना “उपसूट्+सूर्ये इन्द्रियेण अत्र” । त्रिममें इन्द्रियोंको छुने है । किसीके पेटके कठको पीकर मुख आदिसे शयं करना । किसीके अचानक करना । “उपसूट्+सूर्ये” इति श्पु० ।

उपसूट्, दु० प० । शयं करना । नरहो छुना । अचानक करना ।

उपसूट्, (त्रि०) उप+सूट्+क । अचानक करना । छुना गया । अचानक विरगदा । कथ शयं विरगदा ।

उपहस्तिका, (त्री०) उपगता हस्तं वा । गुथली । संदूक । पान गुणारीआदि रखनेका

उपहार, (पु०) उप+हृ+पश् । उपासीकन । “ अथ० ए० ” (गर्मीपायं) हारके पत्त

उपहार, (पु०) उप+हृ+श्चप् । युद्ध । टप एकान्त । निकट । नरहीक ।

उपहित, (त्रि०) उप+धा+क । स्थान रथया गया । किसीपर या किसीमें स्थापना । रक्षित गया ।

उपहृ, (श्वा० प०) खाना । पास खाना हति । जहार । अहापीत् ।

उपाकरण, (न०) उप+आ+कृ+पुद् । पनेत्र डालकर वेदको पढ़ना । सावन महीने रिन करनेकायक वैचकमें । संस्कार करनेका मारना । प्रारम्भ ।

उपाहृ, श्वा० उ० । खाना । पहुंचाना । अखुलाना । देना । पाना । किसी विभिन्न सम

उपांगु, (अथ०) उप+अनगु+उ । निर्वन वप्रकान । छिगादुआ । विनाजने । दुपताममें मनको लगकर अपनेही सुभेलायक श्रोत घोडाका हिले ऐसा जब उपांगु कहे उपसंवेदनाके मन्त्रादिका जप करना (म्याच्छतपुत्र ” इति मनुः-)

उपाख्यान, (न०) उप+आ+ख्या+पुद् । प्राचीन कृष्ण कहना । पुषाना हाल बराने “उमोपाख्यानमर्थन” इति महाभारतम्-

उपागम, (पु०) उप+आ+गम्+पश् । शीर्षी गर्मीपागमन । पास आना । पहुंचना ।

उपाद्, (न०) उपमितं अत्रेन । गति० । प्रवानका गहायक । “घाटीरके हाथ पांव अनुजीयें उपाद् हुये ।” “साश्रोपाद्रेरेही

उपाजे, (अथ०) दुर्बलको सहायता करना

उपात्त, (त्रि०) उप+आ+दा+क । हरीन प्रान । शरीर । पकडागया । बह शरीर प्रगट नई हुआ ।

उपादान, (न०) उप+आ+दा+पुद् । मरना । अपने २ शिष्योंके इन्द्रियोंका हाथ कायें उपदानके लिये प्रदान दिया गया अदुआ कारण । जेमे मर्ता आदि पडे अर्थात् अर्धकार (जेवर) आदिके हनन करनेके जाता है, सो बट गया कायोंमें मिल गया आदि है) । निषमये कायेंके पडि

ऊर्ण, ढांकना । अदा० उभ० सक० सेद् । ऊर्णांति-ऊर्णम् ।
 आर्णवीत्-आर्णवीत्-आर्णवीत् । आर्णयिष् ।
 ऊर्ष, (त्रि०) वद्+हाद्+उ शृषो० वरादेशः । ऊंचा । ऊपर ।
 ऊर्षकण्ठी, (स्त्री०) ऊर्षः कण्ठः मुखं अस्याः । व० । गौरा०
 शीष् । जिसका मुख ऊंचे हो । महासातावरीलता । बैल ।
 ऊर्षेजानु, (त्रि०) ऊर्षे जानुनी यस्य । जिमके घुटने
 ऊंचे हो । मोटे घुटनो (गोशुं) बाला ।
 ऊर्षेभु, (त्रि०) ऊर्षे जानुनी यस्य । (जानुसन्दको
 विकलसे जु आदेश होता है) । ऊपरका भाग । मोटे
 घुटनोवाला ।
 ऊर्षेपाद् (पु०) ऊर्षाः शृष्टस्याः पादा अस्य । जिसके
 चारों पाव पीठपर हो । सरम नाम हाथीका शत्रु-एक
 प्रकारका पशु । आठ पांववाला जीव ।
 ऊर्षेपुण्ड्र, (पु०) ऊर्षेः ऊर्षेमुखः पुण्ड्रः इधुयतिरिव ।
 ऊंचे मुखवाला गणेशकी दोरीकी नाई । माथेपर ऊंचे
 मुखवाला । पाँडे गणेशी तरह तीन रेखाओंके स्वरूपका
 तिलकमेद । एक प्रकारका ऊंचा टीका । प्रायः वैष्णव
 लोक माथेपर लगाते हैं ।
 ऊर्षेम्, (अव्य०) ऊंचा ।
 ऊर्षेरेतस्, (पु०) ऊर्षे न पतात् रेतो यस्य । जिसका
 बीच ऊंचेको जाता है अर्थात् नहीं गिरता । महादेवनी ।
 सनधादि । संन्यासी । भीष्मपितामह ।
 ऊर्षेन्दिग्, (पु०) ऊर्षे उरुष्टे लिङ्गं चिह्नं अस्य । जिसका
 निशान उत्तम है । महादेव । “ऊर्षेलिङ्गं विरूपाक्षं”
 शम्पातमन्त्रः ।
 ऊर्षेलोक, (पु०) कर्म० । ऊंचा लोक । स्वर्ग । बहिरत् ।
 ऊर्मि, (पु०) (स्त्री०) ऋ+मि-अतरेच । तरङ्ग । लहर ।
 प्रक्षार । वेग । जोर । तेजी । पीडा । चाह । बुझा
 (भूष्) आदि छे । (“जैसे भूष् पियास प्राणकी,
 सोह मोह मनकी, जरा (बुझना) मृत्यु (मौत) शरीर-
 की ये छे ऊर्मिसे है”) । एकप्रकारकी थोड़ेकी बाल ।
 ऊर्मिका, (स्त्री०) ऊर्मिरिव कामति । कै+क । लहरकी
 तरह कमलनेहादी । अंगुठी । “स्पर्शे कन्” लहर आदि ।
 ऊर्मिमादिन्, (पु०) ऊर्मिमाद्य अस्तस्य इति । जिमकी
 तराँधी बनार हो । समुद्र । समुंदर ।
 ऊर्मिला, (स्त्री०) उर्मणकीकी स्त्री ।
 ऊर्ण, (पु०) ऊर्ण+ञ् । खरी नहीं । प्रमान । सुबह ।
 कन्दन आदि ।
 ऊर्ण, (त्रि०) ऊर्ण+म्पु । पशिय । पिन्नीमूल । चीना ।
 नय । धार ।
 ऊर्ण, (त्रि०) ऊर्ण+मतर्दो रः । खरी नहींवनी जग-
 ह । बह देण जहाँ बोया गया बीज नहीं उगना ।

ऊर्णयन्, (त्रि०) ऊर्ण+मनु-मन् कः ।
 कहरवारी जमीन ।
 ऊर्णम्, (पु०) ऊर्ण+मनिन् । शीघ्र । गरम । गरम
 व्याकरणमें कहे गये गरम वायुमयिन त
 गये श-य-य-ह-य चार अक्षर ।
 ऊर्ण, विनक करना । दृगल करना । म्+
 सेद् । ऊँहते । आँहिट ।
 ऊर्ण, (पु०) ऊर्ण+धम् । धितकं । दलित ।
 नतीना निकालना । अध्याहार । छूट्ट
 लगाकर वाक्य पूरा करना । किसी पदको
 दृशाको पूर्ण करना । अन्वयके योग वि
 की कल्पना करना । जैसे “पावने गौम्य
 यह वचन टीक है परन्तु एकीदिमें ए
 नहीं बनता इत्यलिये “सौम्यः” ए
 कल्पना करनी पडी ।
 ऊर्ण, (स्त्री०) ऊर्ण+ञ् । स्त्रीतात् टार् ।
 अर्थ पूरा न होनेके कारण दूसरे शब्द
 बीचमें टालना ।
 ऊर्णिनी, (स्त्री०) ऊर्ण+इन्+र्धाप् । सेना । ए
 ऋ
 ऊर्ण, जाना-भ्या० पर० सक० अनिद् । ऋच्छति । अ
 ऊर्ण, जाना-भ्रूलादि० पर० सक० अनिद् । इति ।
 ऊर्ण, हिंसाकरना-मारना स्वा० पर० सक० अनिद् ।
 आर्षित् ।
 ऊर्णय, (न०) ऊर्ण+यच् । धन । दौलत । स
 धर्मशास्त्रमें प्रसिद्ध दायस्व धन । बटोरा वि
 जो तफसीम करनेलायक है । बटोरा इन
 करनेके योग्य है ।
 ऊर्ण, (पु०) ऊर्ण+स-ठिच् । मजूक । रीउ नस
 मेपआदि राधि (पु० न०) ।
 ऊर्णगन्धा, (स्त्री०) ऊर्णात् गन्धति हिनति
 ऋषिनात्रि षत् । महाधेता । शीरविदादी ।
 ऊर्णगिरि, (पु०) कर्म० । पर्वतोंका मेद । ऊर्ण
 ऊर्णराज, (पु०) ऊर्णाणां राजात्-त० टच् । री
 जाम्बवान् । बाद ।
 ऊर्णवेद, (पु०) ऊर्णप्रधानो वेदः । जिसमें वि
 बर्णित है । जिसमें परमात्माकी महिमा वर्णन
 देवता) वेदोंमेंसे एक । उद्योतिर्मय परमात्मा
 गण जिसके देवता हैं अर्थात् जिसमें सवि
 श्वर अथवा देवस्वरूप श्रीपरमात्माको बुझ
 मनोशुद्धी मानविय अनिलावाओंका वर्णन
 वेदमेद । सबसे पुराना वेद । हिन्दुओंका
 (निवन्ध) पुस्तक ।

प्रति, (पु०) कृ+इत्-क्ति । वेदमन्त्र देयनेहारा मुनि ।
अनुग्रह करनेयोग्य कर्मको जतानेहारा सूत्रोंका कर्ता ।
आचार्य । गोत्र और प्रवरको चलानेहारा मुनि । तपस्वी ।
मन्त्रविशेष.

प्रतियोग, (पु०) कृ+यि+क्ये लिये यत्र । प्रतियोग । वेदका
पढ़ना.

प्रति, (श्री०) कृ+करणे क्त्विन् । दोनोंओर धारावाला
राह (तलवार).

प्रप्य, (पु०) कृ+प्र+यप् । सूगमेद् । एक प्रकारका हरिण.

प्रप्यमूक, (पु०) कृ+प्र+यप् । सूगमेद् । एक प्रकारका हरिण.
पाम कृष्टेद्रुए शूशोकला एक पर्वत (रामायणमें प्रतिद
है) जहाँ रामचन्द्रजी सुग्रीवके पास कुछकालके लिये रहे.

प्रप्यशृङ्ग, (पु०) कृ+प्र+यप् । सूगमेद् । एक प्रकारका हरिण.
एक हरिणके सींगकी नाँदे जिसके सींग हैं । विमानक
कृषिआ पुत्र । लोमराद नाम राजाकी कन्या (जो राजा
दशरथने इसे दी थी) । शान्ताका पति । मुनिविशेष.

प्रप्य, (त्रि०) कृ+प्र+यप् । सूगमेद् । एक प्रकारका हरिण.
देवनेलायक । इन्द्र और अग्निका नाम.

प्र

प्र, जन । उरो० पर० गच्छ० घेद् । धारति । धारित् ।
धार । धारण्.

प्र, (अन्०) देवता । रथा । निन्दा । डरना । छाती
(न०) देव और देवताओंकी मता (श्री०) वादनिरी ।
जाना । भय (पु०) देव । दया.

र

र, (अन्०) देवता और देवोंकी मता । पृथिवी । पहाड.

र

र, (अन्०) देवताओंकी मता । देवता । महादेव (पु०)
देवोंकी मा (श्री०) विष्णु (पु०).

र

र, (अन्०) इ+रि+क्त्वि । दया । याद करना । पिन करना ।
कुशल । विष्णु (पु०).

र, (त्रि०) इ+रि+क्त्वि । एककी संख्या । मुख्य । केवल
निरह । और एक । एकही । समान । अन्व । घोडा.

र, (त्रि०) इ+रि+क्त्वि । अगहन । अकेला.

र, (त्रि०) इ+रि+क्त्वि । एक कर्त्त प्रतीकमें अन्व । जिसका एकही
कारण है । एक तरहका काम करनेहारा । अगममें कर्त्त
करनेहारा विन्दु.

र, (पु०) एकके लिये मुख्य । जिसका एकही कारण
है । जिसका अन्वय (अगममें) एकही है । मनीष्य.

र, (न०) एक कर्त्त देव । जहाँ एकही कर्त्त (अ-
न्वय) है । एक ही कर्त्त । एक ही कर्त्त (पु०) । एक
पुत्री (श्री०) जहाँ एकही कर्त्त करके देव कर्त्त है.

एकचर, (त्रि०) एकः गन् वरति ।
चिचरनेहारा । अकेला घूमनेवाला । गाँव

एकजाति, (पु०) एका प्रातिजननं वन ।
बार जन्म होताहै । शूद्र (इगका वनमें)
“एकजन्मा”.

एकजातीय, (त्रि०) एकः प्रकारो विदुः
जातीयः । तुल्यप्रकार । एक

एकतम, (त्रि०) एक+तमम् । बहुत्रोके
रिसे निश्चय कियागया एक । बहुत्रोके

एकतर, (त्रि०) एक+तरत् । दोनोंके बीच
निश्चय कियागया एक । दोनोंमेंसे एक ।

एकनस्, (अन्व०) एक ओरसे.

एकतान, (त्रि०) एकं तानयति । पु० हृ
मरोसा करना-अन्व । जो एकतर विदुः
विचरति । जिसका सबका एकही और
धर्म लगे हुए चित्तवाला.

एकत्र, (अन्व०) एक+त्रत् । एकान्तरने
नमें-पर.

एकत्व, (न०) एक+त्वं । ऐसव । एकता
ही । साम्य । बराबर । सायुज्य मुक्ति
लियेसे अनेक हो जाता है.

एकदण्डिन्, (पु०) एकः केशुः सिद्धि
रालो दण्डोऽस्मात्ति । जो केवल दण्ड
कर्ताहै । सिद्धावज्ञोपवीत धारि नहीं

एकदन्त, (पु०) एकः दन्तोऽप्य । विदुः
हो । गोपय । (एकदंष्ट्र) इसी अर्थमें हो

एकदा, (अन्व०) एक+काले दान् । एक
दिहाविक.

एकदृक्, (त्रि०) एका दृक् दम् । जिसकी
एक नेत्रमाला । धाना । एक-दृक्
सर्वं अनिष्टं पश्यति । दृग्+दृक् । जो
देखताहै अर्थात् जिसे मित्रभाव नहीं । मित्र

एकधा, (अन्व०) एक+प्रकारे धान् ।
एकतरह.

एकपशु, (त्रि०) एकः पशुः वप्य । जिसका
महाविक.

एकपत्नी, (श्री०) एकः समानः अन्वयो
की सुख । जिसका एक देवा या वही वी
मौलिन । पतिव्रता । (पतिविन हारा पुत्र
केहरी । मणी भोग.

एकपद, (न०) एकं पदं पदार्थयोग्यने
वाक्ये कश्चेत्येवमव गमय । एक वाक्य ।
शब्दाभेद.

पदी, (स्त्री०) एकः पादोऽयम् । शीघ्रं । पदमात्रः ।
 र्मे । शला । पयः ।
 पदे, (अन्व०) एक+पद+के । शकस्मात् । अचालक ।
 लकी धार । "बन्धनेकपदे निरागमम्" इति कुमारः ।
 पिङ्ग, (पु०) एकं नेत्रं पिङ्गं शय्य । जिगदी एक आंश
 ली है । कुबेर । वह पावैतीको दोपरशिमे देवता भया ।
 उसके पापसे इसका नेत्र जाता रहा फिर महादेवजीकी
 प्रसन्नतासे उसकी आंखमें पीलापन होगया (परागणवा) ।
 पञ्चमत्त, (पु० न०) आधा दिन भीतजानेपर जो निय-
 मसे खाना है रात्रिको कुछ नहीं भोजन कर्ता, उसे एक-
 मत्त कहते हैं ऐसा मत अर्थात् भिद्यम ।
 प्यथिका, (स्त्री०) एका यथिरिव आकृती यस्याः क०
 क्त् । काठीकेतमान जिगदी एवही लकी हो । एकलता ।
 एकावलीदार ।
 प्यथि, (पु०) एको राजते किप् । चार्वमीम । एकरी
 शक्य रहते । एकवर्ती । १२ मण्डलका राजा ।
 प्यथिति, (स्त्री०) एकपिका विराति । एक ऊपर चीम ।
 इतीग संख्या ।
 प्यथि, (पु०) एको वीरः । कर्म० । एक बहादुर ।
 बडा भीर । एक बल ।
 प्यथि, (पु०) एकः क्षोडय । जिगका एवही मुर
 हो । एक मुरकाले गया आदि घोडा-गधर । गत्य ।
 प्यथि, (पु०) एकः घोषो यत्र । जहां एक बाघी रहे ।
 आचरणमें प्रसिद्ध हुनरमानका भेद । जैसे पुत्र और पुत्री
 (दोनोंका एवरोप) "पुत्री" होक है ।
 प्यथिति, (स्त्री०) एका अतिमा उदात्तादिश्या धुतिः
 उदात्तम् । उदात्तादिसे श्लेष एक एवरी स्वरका उच्चारण
 करना । प्रतिसारणमें प्रसिद्ध उदात्त, अनुदात्त, और इति-
 तका विभाग नियेचिन बोलना ।
 प्यथि, (वि०) एवमित्त् सार्थो निययो यत्र । जहां
 एकरी बातका नियय हो । एक और मनवान्य । एकम-
 वित ।
 प्यथि, (वि०) एक+आपिन् । अवहाव । जितकी
 मदत कोई न हो । अकेला ।
 प्यथि, (पु०) एकं अक्षि यस्याः क्त् म० । जितकी एक
 शक्ति हो । कोआ । कणा (वि०) ।
 प्यथि, (वि०) एकं अर्थं निययो यस्याः । जितका नियय
 एक हो । और निययको छोडकर एवरी और मनवान्य ।
 विशेषरहित जान । एवमव । "सर्वे सन्" । ऐकाव ही
 अर्थमें होजते ।
 प्यथि, (वि०) एकद्वान्+प्राये इत् । मरनेको मरने-
 हारा । मरवा । मरवी विधि (स्त्री०) बनरामके
 हुएक परामर्शकी मरवी विधि (विशुद्धा कथित दिन) ।

एकाद्वान्, (वि०) एकव दश च आलम् । एक और
 दश । ११ संख्या ।
 एकाद्वान्, (न०) एकादश द्वापि यत्र । जहां मरवा
 दर्शाजे हैं । धीररामागी नगर (वहां नाथिका, धोत्र, नेत्र
 दो ३ छ मुखके हुए, एक मुख, नाभिगहित नीचेके तीन,
 और ब्रह्मरूप द्वातरह ११ दर्शाजे हैं) ।
 एकाद्वान्, (स्त्री०) एकादशानां पूरणी । ११ हर्षो पूर-
 कालेदापि । दोनो पक्षोंमें प्रतिपक्षसे लेकर ११ हर्षो पूरा
 करनेवाणी विधि । जहां हरिवासरव्य होना है ।
 एकाद्वान्, (वि०) एकः अन्तो निययो यत्र । जहां एकही
 नियय हो । अलम्न । जहरी । बहुगती । अकेला । ए० ।
 एकाद्वान्, (अन्व०) एकाद्वान्+आपिन् । अन्वयिकती ।
 न दफनेहारा । जम्न होनेहारा । केवलमात्र । गिरफ ।
 ज्याद ।
 एकाद्वान्, (वि०) एककालमेवार्थं भावं यत्र । जहां एकवही
 भोजन नियोजना है । इवता गानेहारा । एकमन्वय ।
 एकवार गानेका मत ।
 एकाद्वान्, (स्त्री०) एकेन न विराति । एक+न+आपि
 दसा वा न, एकवीय । उर्ध्वगदी संख्या ।
 एकाद्वान्, (स्त्री०) एकः अन्तो कर्मोत्तमं यस्याः । जिगदी
 अकथा (उमर) एक बरिग हो । एक बरिबी गी ।
 एकाद्वान्, (वि०) एकं अदत्तं निययो यस्याः । जो एवरी
 निययमें लगा है । और निययोंमें निययो इत्यनेहारा ।
 एकाद्वान् ।
 एकाद्वान्, (स्त्री०) एका आकृती कर्मिणः । एक कर्मि-
 ओकी लकी । एक लतादार । अर्थात् पुत्रका भेद ।
 एकाद्वान्, (वि०) एक संप्रत्ये दम् । जितका एवरी
 आधय हो । अन्वयगति ।
 एकाद्वान्, (पु०) एकं अदत्तं । दिगु० अक्त् । "अद्वान्-
 पुंती"ति पुनरप्य् । एवद्वान् ।
 एकाद्वान्, (पु०) एवमित्त् दिग्धे एव अहानो अत्रम् ।
 एकदिनमें एकवार भोजन करना । दिग्धे एववर अत्रव
 करनेहारा (वि०) ।
 एकाद्वान्, (पु०) अनेकस्य एवम्य अन्दा । ए०+वि+अ-
 क्त् । बहुलोच एक होना । एकव । एकव ।
 एकाद्वान्, (वि०) एक+य (ईय) । एक पक्षध । एकका
 मरद्वार ।
 एकाद्वान्, (न०) एक लीले यत्र । जितसे एवरीक दान
 हो । एकलेखिये किलका यत् । वेगदके एकव किति-
 कका कर्षित अन्दा ।
 एकाद्वान्, कर्मका । अ० अ० अ० अ० अ० । ए० । ए० ।
 एकाद्वान्, कर्मका । अ० अ० अ० अ० अ० । ए० । ए० ।

एङ्, (पु०) इल्-सोना-अच् । मेघ । मेडा । बधिर । बहिरा ।
 होत (त्रि०) ।

एङ्क, (पु०) इल्+ङ्कुल् । मेढ । बनका बकरा । बडे
 सींगीवाला मेढा । हरएक मेढा । ग्योलात्तुय् । एङ्कडा ।
 मेढ ।

एङ्कुक, (त्रि०) धुतिरहित एङो बधिरधारी मूकः । गुंण
 ओं बहिरा पुष्टय ।

एण, (पु०) इ-ण । कृष्णवर्णमृग । कालेरंगका हरिण । गिर्यां
 एणी ।

एणतिलक, (पु०) एणतिलक इव चिह्नं । त्रिगका निदान
 हरिण हो । मृगाह् । चन्द्र । चन्द्रमा । माहताय ।

एणाजिन, (न०) एणय्य अजिनम् । हरिणका चमडा ।

एत, (त्रि०) (पु०) इण्+तन् । हरिण (पु०) थाया ।
 कबुरवर्णं । चितकवरा रंग । चितकवरे रंगवाला । श्रियां
 एती । रंगवर्णी । चमकनेवाडी ।

एतद्, (त) , (त्रि०) इण्-आदि-तुक्य । पुरोवर्ती ।
 सामने । यह ।

एध्, बटना । आ० था० अक० सेट् । एधते । ऐषिष्ट ।

एधस्, (न०) द्यपतेऽभिनेनेन । इण्+अधि । त्रिस्ते अण
 भङ्कती है । नि० नलोप । गुणध । काठ । काट । लट्की ।

एधित, (त्रि०) एध्+क । वृद्धियुक्त । बढाहुआ । बढगया ।

एनस्, (न०) इण्+अनुत्-सुट्च । पाप । अपराध । दोष ।
 गुनाह ।

एरका, (स्त्री०) इण्+रक् । गांठरहित तृण । एर । घासविशेष ।

एरण्ट, (पु०) ईरयति बाणुं मलं वा । ईरु+अण्टच् । नि०
 गुणध । जो हवा वा मेलको दूर करी है । एक पेठ ।

एला, (स्त्री०) इल्+अच् । एलानामी लता । इलायिची ।

एव, (अव्य०) सादस्य । सरावरी । अवधारण । तहकीकात ।
 परिभव । निरम्कार । हिकारन । घोटापन । निधय । ही ।

एवम्, (अव्य०) सादस्य । सुगाबहन । इष्टप्रकार । ऐसा
 निधय । मींकार । मात्रा । प्रश्न । मन्नाल ।

एव्, जना । अण्म० उक० सेट् । एवते । ऐषिष्ट ।

एवण, (पु०) एण्+स्यु । लोहेका बाण । युच् । इष्ठा ।
 पुत्र, लोक और धनकी कामना (स्त्री०) ल्युट् । सुनारका
 कांटा । "स्वायं कण्" "एवणिका" इसी अर्थमें होता है ।

ॐ

ऐ, (अव्य०) स्मरण । बुझना । शिव (पु०) ।

ऐकमत्य, (न०) ऐकमन्य भावः । नत् । एकरहका
 आशय । एकाशय ।

ऐकामारिक, (त्रि०) ऐकं अमहायं अगारं प्रयोजनं अस्य
 टक् । अकेले स्थानपर त्रिगद्य प्रयोजन सिद्ध होता है ।
 चौर । चोर ।

ऐकाम, (त्रि०) एकाय । नयें अण् । अण्-
 ऐकाम्य, (न०) एक था-मा नयें नय नय
 थय् । एकरहका होना । एका हात् ।
 आमाका होना ।

ऐकाम्निग, (त्रि०) ऐकान् अमोषी टक् । नि
 नेहाय । अणानितारी । न रहनेहाय ।
 एउ । मजकूत ।

ऐकाम्ठिक, (त्रि०) ऐकाहे भवः । इन्द्र
 दिनमें होनेवाला । एक दिनको लोपकर होने
 दिनको छोडकर होनेवाला जर । तदर्थेका टा ।
 एरुगमवार होनेवाला जर (तात-मुग्ग) (पु०)

ऐकय, (न०) ऐक्य भावः । एक+अय् । होने
 बनाना । मेल । जोड़ ।

ऐक्य, (त्रि०) इतोर्विकारः इधु+अय् । संघ
 पुत्रादि ।

ऐस्वाक, (पु०) इशवाद्योर्गात्रात्तम्-अण्, नि०
 वंशमें लग्नर हुआ । मूयेंवकी राजा ।

ऐहृद, (न०) इहृदाः फलं-फले अण् तन्म न टक् ।
 वृक्षका फल । ईगोटका फल । तपविशेष अण्-
 ऐण, (त्रि०) एणय्य कृष्णमृगस्य इदम् अण् । इने
 का चमडा आदि ।

ऐणय, (त्रि०) ऐण्या इदं टक् । कानी हरिण
 आदि ।

ऐतिहा, (न०) इतिहा पारम्पर्योपदेशः स्तयें अण् ।
 मरु । नलाजाता सिलसिलेवार उपदेश । ईने
 वृक्षपर यक्ष रहता है " इत्यादि कापदासोने कथन
 उपदेश । किमीने जानकर नहिं कहा । इतिहासी ।
 तारीखी ।

ऐन्द्य, (न०) इन्दुदेवतास्य । जिसका देवता बन्द
 मृगशिरानक्षत्र चन्द्रमाका (त्रि०) । मोने
 (स्त्री०) दीप् ।

ऐन्द्र, (त्रि०) इन्द्रस्येदम् । इन्द्र+अण् । इन्द्रका
 नक्षत्र (न०) श्रियां दीप् । ऐन्दी ।

ऐन्द्रजालिक, (त्रि०) इन्द्रजालेन वरति । इन्द्र
 विचरता है । मायाकरनेवाला । छलिया (बाजीवा) ।

ऐन्द्रि, (पु०) इन्द्रस्य अपत्यं इम् । इन्द्रका पुत्र । नत्
 अर्धेन । सुभीव वानर । काक । कौआ ।

ऐरायत, (पु०) इण् जलानि सन्त्यस्य । इण्+अण्+तन्
 इणवान् । समुद्रः तत्रभवः अण् । जलोकाके स्थान
 में होनेवाला । समुद्रके निकला इन्द्रका हाथी ।

ऐरिण, (न०) ऐरिणे ऊपर भवा । नै-चकलव । नत्
 धन (निमक) ।

; (न०) इय अयं तयमव इह । अयमं होनेवाला ।
य । अयव ।

(पु०) इत्याया अययं । इत्याया येदा । पुपया पुप ।
रया रया ।

येह, (पु०) इहविलाया अययम् । इहविलाया येदा ।
येह ।

यी, (स्त्री०) ईशानी देवता अयाः । महादेव त्रिगता
या है । उतय औ पूर्वके अन्दरकी दिशा ।

ई, (न०) ईशरस्य भावः । ईशरपना । अगिमा आदि
18 प्रकारकी विभूतियों के अगिमा, महिमा, लजिमा,
रेमा, प्राप्ति, प्रावाण्य, ईशिय, वसिय ।

ई, (अन्त्य०) अगिमन् कायरे । नि० । सर्वमानवर्ष ।
उवा वसिय ।

ईशिव, (वि०) इहलोक अयः कायान् उभ । इयिह-
ये । इयालोकवा ।

ई, (वि०) इह मयः कायान् उभ । इहलोकमें होने-
वा । महापवित्रेणये वारीके शिवे माया कन्दन आदि
यवा अनुभव आदि । इयालोकवा ।

ओ

(अन्त्य०) दाहयिषी । मारण । मारकोवन । पुत्राका । दया ।
(न०) जगत्के परि । मया ।

(पु०) उच+क+नि० काय व । पगी । वृत्त । इह ।

ए, (न०) उच+अनुत् । वृत्तम् । एह । पर ।
अवसाय । पनाद ।

एनी, (स्त्री०) ओष आधनः सूर्यस्य अर्दन अयं
माः । ओ मलयवती ओषन वगीहै । वेपारीट । जे ।
।

; मुषाना-सामना-इत्याना । एव० । सामार्थरजना ।
ह० अवा० पर० सेह । ओमति । ओलीह ।

(पु०) उच+पम । साहृ । कनवा धेव । अन्त्ये
कना-नाम-वक्रवा । इयइत्यादि ।

ए, (पु०) अच+मन् । उह-मुण ओम्-नवः सव-
कर । प्रणव । तिमकी वेदवाच्यमें सबसे अधिक लुगी
परी है । अयकी दया वगीहै ।

; यम वाका । ओरवाका । पुह० उम० अह० सेह ।
अपि-ये । ओडिजना ।

ए, (न०) उच+अनुत्-वर्तये मुक् । ऐयि ।
क । रोव । प्रणवव वव । प्रकत । सावधं । जे-
अनुत्तर १ ली ३ ली ५ ली ७ ली इत्यादि विधवादि ।

अविना वीरव । वेदवाच्यके अनुत्तर अनुत्तरको
वायेदवा वसुदेव । "ओष" की इली अर्द्ध है ।

ए, (वि०) अविन्देव ओषली ओषमित इयम्
नेह । वृण देवकका । वदे वानका । तिमका
वक

ओण, अयमारण करण । विवकला । इहना । अह० पर० गह०
सेह । ओमति-ओलीह ।

ओन, (वि०) आ+वेम+ण । अन्तर्भाव । नील वैन-
हुमा । वरदा । ली ३ ली ५ ।

ओनु, (वि०) अह+नुत्+उह-मुण । तिम । नि ।

ओदन, (पु०) अह+पुव+नोपो मुणव । अण । अण ।
अनव । तिमअण । उहोपुव अणव । अण ।

ओम्, (अन्त्य०) अच+मन् अन्त्येणो । मुक् । प्रणव ।
अ उ और म् इन तीनोंके वस्तुका एक अणव । अणवम ।
लीकार । अण । इहना । मंदव । इह । अणवकव ।
विवकला ।

ओप, (पु०) उच+पम । इह । अणव ।

ओपधि-पी, (स्त्री०) ओपो पीदनेउव । ओप+ध+
धी । जो इहको पारण वी । अह वृण जो वन वने
गवती रहतेहैं । पान । ओमदि । अणवकण वृण ।
श्रीदियवादि ।

ओपधिमण्य, (पु० न०) ओपधिमण्य अणव । अणव० ।
अह तिमवि लुगी वान वनेअह रहतेहो वलदि है ।
विमालवपुत्र ।

ओष्ट, (पु०) उच+अर्द्धि हन । हो । ली ५ वरदा ।
इसमण्य ।

ओष्टुपुत्र, (पु०) ओष्टुपुत्रम् मुण वल । तिमव-पुन
होहके सामन काण है । अणवकण ।

ओषी, (स्त्री०) ओष इव आवापि । ओष+पि । ल०
अच । ली ५ ली ७ । विवकलापी वृण । ली ५ व

ओष्य, (पु०) ओष+वृत् । ओषेव वीरव । व वरदा नि
विनवा उचवय होनेमें होने ।

ओष्टोपमपण्य, (स्त्री०) ओष उवादिउवेव । ओषेव
वर्त इत्या । तिमका वन होवे वानव हो । विवकला
लन (वी०)

औ

और, (न०) उरवा इवका इहव अण तिमव । अणव ।
हेनेका साहृ मुक् । "औरव" इह अर्द्ध है ।

औम्य, (वि०) उरवायं वय अयम । अणव । अणव ।
अणव । अणव । अणव ।

औमिती, [(स्त्री०)] उरवम अण अणव । अणव० ।
औमिय, [(न०)] अणव । अणव । अणव ।
अणव । अणव ।

औम्य, (वि०) उह-अण । अणवकण । अणव ।
अणव । अणव ।

औम्यकण, (पु०) उच+अणव अणव । अणव । अणव ।
इह । अणव । अणव ।

कङ्कमुख, (पु०) कङ्कस मुखं इव मुखं अस्य । जिसका मुख
कङ्कशीके मुखकी भाँति हो । सन्दर्भ । संज्ञासी.

कङ्काल, (पु०) कं मुखं शिरो वा कालयति क्षिपति ।
कङ्क+अच् । लृट् (चमत्) मोसरहित शरीरके आरम्भ
करनेवाला अस्थिभ्रंश समूह । इष्टिभ्रंश विनया । हृष्टी.

कङ्कालमालिन्, (पु०) कङ्कालानां माला अस्ति अस्य इन् ।
जिसकी माला अस्थिभ्रंशकी है । हृद । शिव । महादेव.

कङ्क-क, (पु०) कङ्क+ङ । कङ्कनी । धान्यमेद । पुषो०
कङ्कंग.

कच्, कच् करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कचति । अक-
चन्-शाकान्तीन्.

कच्, कौपिन-बन्ध करना । भ्वा० पर० इदित् सक० सेट् । कचति ।
कचन्तीन्.

कच्, कौपिन-सक० चमकना-अक० भ्वा० आ० सेट् । कचते ।
कचन्ति.

कच्, (पु०) कच्+अच् । केश । बृहस्पतिरा पुत्र ।
गृह्य सप्त । मेघ । कादल । ह्यमिनी (श्री०) । "भावे"
कौपिन । सञ्जरट.

कण्ठाकशि, (भ्वा०) परापरं कर्तुः सह प्रहृत्य प्रशंसं यु-
क्तम् । अन्वयमें एक दूसरेके बलोंको पकड़कर किया
हुआ युद्ध.

कण्ठ, (श्री०) कण्ठ+ङ । एक वृक्ष । कण्ठ । हन्ती.

कण्ठ, (वि०) कुर्वन् कर्ति । कु+वर्+अच्-कदादेशः ।
कण्ठिन् । मेघ । उच्छ (न०).

कण्ठिन्, (भ्वा०) कण्ठयते इति कम् । पीयते निधीयते
अर्द्धे कण्ठिन् । कम्+विभक्ति-पुषो० मस्य दः अपनी
इच्छा करनेकेलिये प्रथ । हर्ष । मन्त्रल । इष्टप्रथ ।
कण्ठिन् कण्ठदेशे कण्ठिन.

कण्ठ, (वि०) कण्ठ-कौपिन+ङ । केन जलेन कृष्णाति
कण्ठे । कण्ठ वा । जलप्रवाहके वह स्थान कि जहाँ
कण्ठिन् कण्ठिन् । कण्ठी । कण्ठ । पुत्रागण्डुम । केशरक्षा
रस । कण्ठी का अर्थ (पु०) । कण्ठीनी.

कण्ठ, (पु०) कण्ठे विवर्ति या+ङ । कूर्म । कण्ठ ।
कण्ठेण कण्ठेण । कण्ठे विवर्तनेति कला । एक प्रकार-
का इन्द्र । कण्ठकण्ठेति कण्ठे

कण्ठ, (वि०) कुर्वन् कर्ति । कु+वर्+अच्-कदादेशः ।
कण्ठे कण्ठे कण्ठे कर्तव्ये । अन्तिक्रमिणी । कर्तव्य
कण्ठे (क०)

कण्ठ, (पु०) कण्ठे विवर्ति या+ङ । कूर्म । कण्ठ ।
कण्ठेण कण्ठेण । कण्ठे विवर्तनेति कला । एक प्रकार-
का इन्द्र । कण्ठकण्ठेति कण्ठे

कण्ठ, (न०) कुर्वन् कर्ति । कु+वर्+अच्-कदादेशः ।
कण्ठे कण्ठे कण्ठे कर्तव्ये । अन्तिक्रमिणी । कर्तव्य
कण्ठे (क०)

कण्ठ, (पु०) कण्ठे विवर्ति या+ङ । कूर्म । कण्ठ ।
कण्ठेण कण्ठेण । कण्ठे विवर्तनेति कला । एक प्रकार-
का इन्द्र । कण्ठकण्ठेति कण्ठे

कञ्जलरोचक, (न०) (पु०) कञ्जलं रोचते
शिचु+अच् । शीपकका आधार । कान्त
को चमकता है.

कञ्जुक, (पु०) कञ्जि+उकञ् । कञ्जुक
लोहेका बर्तन । चोला । अंगरत्ना । केंतुली । रोच

कञ्जुकालुः, (पु०) कञ्जुक+आलुः । सर्प । कञ्जुक
कञ्जुकिन्, (पु०) कञ्जुक+इन् । राजाओंके
अधिकारी । दवाँन । द्वारपाल । हस्त ।

कञ्जुकिन्, (पु०) कञ्जुक+इन् । राजाओंके
अधिकारी । दवाँन । द्वारपाल । हस्त ।
जिखण्डिरे हुए (वि०) रत्नवासी रत्न
वणकनाम मुनि । जिसने अंगरत्ना पहिरेहुए

कञ्जुक, (पु०) कञ्जुः केश इव कचति । केश
पक्षी । उसका काला रंग धोनेसे बालोंकी रंग
कोयल.

कञ्जार, (पु०) कं जलं जारयति । कुम्भ
महा । उदर । पेट (न०) अन्वि "कञ्ज"
अर्थमें होता है.

कट, जाना बरचना (भ्वा० पर० सक० सेट्)
अकटीत् । अकटीत्.

कट, (पु०) कट्+अच्-कर्मणि य वा । हर्षो
स्थान । कमरका पासा । हस्तिगण्डस्थल ।
बहुत । काल । दृण । मुँदका रथ । तरगा ।
रमयान । मरौन काही आदिका रसवा । चटो-

कटक, (अश्री०) कट+कृन् । मेघला नाम
भाग । पर्वतका नितम्बस्थान । पर्वतके बने
भूषण । कडा । हाथीदांत । पहिया । राजकी
खल । शीधानोन । दावरा । जमीन । सेना.

कटम्, (पु०) कटं प्रत्ये । सु+क्ति-श्रीपत् ।
विद्याधर । अपनी इच्छासे कर्मको करने
राशुग । पासा गेहनेकाल । एक बीज । पुत्र

कटम्, (पु०) कट्+कृन् । मेघला नाम
भाग । पर्वतका नितम्बस्थान । पर्वतके बने
भूषण । कडा । हाथीदांत । पहिया । राजकी
खल । शीधानोन । दावरा । जमीन । सेना.

कटम्, (पु०) कटं प्रत्ये । सु+क्ति-श्रीपत् ।
विद्याधर । अपनी इच्छासे कर्मको करने
राशुग । पासा गेहनेकाल । एक बीज । पुत्र

कटम्, (पु०) कट्+कृन् । मेघला नाम
भाग । पर्वतका नितम्बस्थान । पर्वतके बने
भूषण । कडा । हाथीदांत । पहिया । राजकी
खल । शीधानोन । दावरा । जमीन । सेना.

कटार, (पु०) कटं कण्ठे अशानि आशोरी-
शिरैर्मे देवता । अशारप्रसून । शिरसी मन्त्र
कटायन, (न०) कटयन् कृष्णामनस्य अश्वे
शिरसि कटारं बन्तीति । कारणमूला राग.

कटार, (पु०) कटं आशुनित । आ+हृन्+ङ ।
भेदका कला । तैलविद्याकलाधनकला । तैल
कण्ठ । कटार । मरक । मण्यर.

कटि-री, (श्री०) कट+इन् । अशुभेष्ट ।
"वा शीत्".
कटि-क, (न०) कटिः कर्तव्ये । कर्तव्य
कटिनी । कटिपथ.

प्रोद्+अच् । कटस कच्चा वा प्रोपो
कटिदेराका मांसपिण्ड । कटी । बमर ।

) कट्+हल् । कारवेड । करेला ।

(०) कटौ धार्यं सूत्रं-साक० । कमरपर धारण
वापांस (कृपा) वा (सोना चांदी) वा बना-
तमागी । मेनला । काधी । पुनगी । मोट ।

द्व+उ । दृण । दुष्ट धार्यं । रसभेद । कडवा ।
द्व । गुणव् । कटुपी लता (स्त्री०) चम्पक ।
पटोल । नीम ।

(०) कटुः कन्दो मूलं यस्य । जिसकी जड़
सिपुसूत्र (मजजा) । अदरक । लज्जुन । लस्सन ।

(पु०) कटुः कीटः सार्ये बन् । मसक । मण्टर ।
(०) कटुनीक्ष्ण । छापो यस्य । जिसकी आवाज
वित्तिर) टिटिम पशी । टिटहरा परिदा ।

(पु० न०) कटुः प्रथिः वास्य । जिसकी गांठ
पिप्पलीमूल । वीरग्रीकी जड़ । गुण्ठीमूल ।

(पु०) कटुः एदः परं यस्य । जिसका पत्ता
तगरवृक्ष । टगर ।

(०) कटुनां शयं । कटुशिक । तीन कटनी चीजें ।
उ, काली मिरच ।

(स्त्री०) कटु दलं यस्याः । कटुवे पत्तोवाही ।
दियाती बूटी ।

(स्त्री०) कटु बीजं यस्याः । जिसका बीज कटुबा
सी ।

) कटुं विपाके कटुरसं राति । राम् । पकनेपर
रसको देती है । लक । छाछ । खरसी ।

(०) कटुनीक्ष्णो रमो ध्वनिर्यस्य । जिसका शब्द
भेक । भेंडक ।

) कटु+स्वरत् । लक । छाछ । व्यञ्जन । चटनी ।

काहसे स्मरण करना) पुण० उम० पक्षे भ्वा०
सेद् इदित् । कण्टपति-त्ते । अचकण्टत्-त्ते ।

ल करना वा बरी हृद्यसे वाद करना) इदित्
सेद् सेद् । (प्रायः-वाद धनु उद उपसर्गके
का है) । उक्कण्टत्ते । उदकण्टित् ।

) कटु+अच् । मुनिभेद । अग्नेदकी शाखा । उम
मडनेहार ।

(०) कठ+हन्त् । कूर । बेहरम । कठोर ।
उपन । सव्य । रोक्कटुआ । स्थानी (स्त्री०)

कापी ।
पप० १०

कठिनी, (स्त्री०) कठिन+धीर् । अक्षर विरानेना साधन ।
एक इत्य । चाकमठी । राडियामठी ।

कठोर, (त्रि०) कठ+ओरन् । कठिन । सख्त । पूर्ण ।
भराहुआ ।

कठोरता, (स्त्री०) कठोर-सलगत=कठोरत्वं-न० । कठोर-
पना । सख्तपन ।

कठोरीभूत, (त्रि०) कठोर+वि+भू+त । कठोर सख्त-
तेज । होण्या । "कठोरीभूतः रियमः" मध्याह्नसमय । दुप-
हिरवा समय ।

कट्ट, हर्ष करना-सुख होना । भ्वा० इदित् । उम० राक० सेद् ।
कण्टि-त्ते । अकण्टीत्-अकण्टित् ।

कट्ट, भेदन करना-भाडना और रसा करना-बचाना । नुरा०
इदित् । कण्टमनि-त्ते, अचकण्टत्-त्त ।

कट्ट, खाना । दुदा० पर० राक० सेद् । कण्टि । अकण्टीत्-
अकण्टीत् ।

कट्टहर, (न०) कट्टं गिरति-गुणाति वा अच्-नि० सुम् ।
झों और मूंग आदिकी जड़ । पुस । घास । तूरी ।

कट्टहरीय, (त्रि०) कट्टहरं अर्हति । मुस भक्षण करनेवाले
गो आदि । तूरी खानेवाले पशु । खंगर ।

कट्टार, (पु०) गट्ट-नीचना+आरच् । गरो क होमाता है ।
पिण्ड वणं । पील्य रंग । पीले रंगकी बोई चीज (त्रि०)
दास । नाकर । गुलाम ।

कट्ट, कंकडा होना । सख्त होना । भ्वा० पर० अक० सेद् ।
कण्टि । अकण्टीत् ।

कण्, जाना । भ्वा० पर० राक० सेद् । कण्टि । अकण्टीत्-
अकण्टीत् ।

कण्, भ्वा० प० । कण्टि । कणित । शब्द करना । वि-
खाना । विपत्तिमें जंहे । छोटा होना । जाना । पटुंचना ।

कण, (पु०) कण्+अच् । धान्य आदिका अति सुस्म अंश ।
कनियां । लेस । बहुत पौध । बनजीरक । बनवा जीरा
(स्त्री०) ।

कणजीरक, (न०) कर्म० शुद्धजीरक । छोटा जीरा ।

कणभक्ष, (पु०) भक्ष+अच् । उर० । कानी विडिया ।
कणाद मुनि । "कणभक्षक" वही अर्थ ।

कणिक, (पु०) कणो विपत्तेऽप्य । अस्वर्षे टन् । गोभूम-
पूर्ण (आश) । मयरा । मंदा । बहुत छोटा हिल्ला ।
अग्निमन्थवृक्ष (स्त्री०) ।

कणेर, (पु०) कण्+एर । कर्षिकार वृक्ष । कनेरका वृक्ष ।
वेरवा । हायिनी (स्त्री०) ।

कण्टक, (पु०) (न०) कटि+भृत् । बर्फी नोक । कांठा ।
शुद्धपु । रोमाच । शरीरके रोमोंका सारा होक । मण्टरी
हो । समवे ४ था, १० वां और ७ वां स्थान

क. (पु०) कं विरः लने वा रूपनि भण् । कः मया
 र्थो वत । कर्तुयुक् ।
 क. (पु०) कृ+अण् । मज्जणन् । हाथीकी कण ।
 क. भा । कुम्भभास । कर् मी जो दुगने सोल कीमाय
 की०) टाप्
 किन्, (पु०) कर्त्त मज्जणन्ः । ततः आरुपे इति ।
 क्पी । हाथी ।
 क. (म०) कृ+क्युट् । किकची कितिमें कालान् (ति-
 ता परावर्त्ते) गणन । क्यवरुमें कहागदा कारकका भेद ।
 लं । हेतु । क्षेत्र । इन्द्रिय । शरीर । "भावे क्युट्"
 क्त्वा । केशये इत्यामें उच्यते विद्यया जातिभेद । क-
 य । कःपथ (पु०)
 काथिय, (पु०) कर्णनां इन्द्रियाणां अधिपः । इन्द्रि-
 याणां स्वामी । जीव । आत्मा ।
 कट, (पु०) कृ+अण् । मधुबद्ध । मधुमिवराओंका
 क्त्वा । कट । तलवार । कःपथ कर्णः । कौगजकारिका
 कटुभा प्रयोग का पत्र । कर्णः । कटु । कटुकी । कठो-
 क्रेवी बीमरी । दहतरोग (की०) टाप् ।
 कल, (पु०) कल० । हलकल । हाथीकी कली । हाथ-
 काल, (न०) उत्-प्रतिष्ठा करना । आदर करना । उद-
 रना घम् । करे तात्वे कम् । जिम्मा का ताल हाथपर हो ।
 कायभेद । (कःताल) यह हाथपर रखकरही कजा-
 का जाताई । शांत्र । मंत्रीरा । केली ।
 काली, (की०) कर्षी काल्येते यत्र । घम् । ताड+घम्
 क म० वाप् । क कोल । जहाँ हाथ बजाये जाते हैं । करतल-
 खनि । खडताल ।
 जोषा, (की०) कर्म गोवीरिवाहकाने सिक्करम्
 तोषान् (सप्तदशकारित) सम्भूतं तोषं यस्याः । पार्व-
 सीके विवाहमय महादेवके हाथसे बहेहुए पत्नीनेके
 पानीसे जिगका जल उपभ्र होगया । कामरूपदेवमें
 अपने नामसे प्रसिद्ध एक नदी ।
 कपत्र, (न०) कर्त्त पतवि । पद+कृन् । हाथसे गिर-
 ताई । कर्त्त । कचक । कर्कीको काटनेहाथ । अरा ।
 "करी एष पत्रं कान्ते यत्र" । हाथी जहाँ सकारी है ।
 जलबीहा । पानीकी मेल ।
 कपत्रपद्, (पु०) कर्णमें हथ पदप्रन्तोऽक्ष्यस्य मनुप् ।
 जिसके पतेकी जड़ भारिके समान हो । कालपद् । ताड-
 करान ।
 कर्ण, (पु०) करः हल हल पणं यस्य । जिसका
 पना हाथकी मार है हो । भ्येट । जिग्गानकवृद्ध । रक एर-
 ष्ट । लाल हिर ।
 कर्णय, (पु०) कर्म्य हस्यम् पथ इव । हाथके
 पतेकी मार है । अंगुली ।

करपात्र, (न०) कर एव पात्रं जपविशेषजन यत्र ।
 जहाँ हाथी जप पेटनेका पात्र है । हाथमें उठाकर
 भागमें पानी देने का उठा देनेकी खेत । कर्म० । हस-
 ष्य पात्र । हाथका पात्र ।
 करपात्र, (पु०) करे पात्रयति । पात्र+अण् । हाथको
 बकाताई । कर्त्त । तलवार । "सहायो कन् टाप् अत
 इयं" । हाथकी लकी । गोटा ।
 करपीडन, (न०) कर्म्य क्यूकरम् करेण पीडनं प्रहणेन
 मर्दनं यत्र । क्यूके हाथका करके हाथसे पकड़ कर
 मलना जहाँ हो । रिवाह ।
 करपाल, (पु०) कर्म्य कालः सिगुरिव । हाथका मानो
 बका है । मत्त । मत्तन । नी । "करे कालो गतिर्यस्य" ।
 हाथमें जिगकी गति है । राड । तलवार ।
 करभ, (पु०) कृ+अम्वच् । करे भाति । भा+क वा । मणि-
 बंधसे ले कनिष्ठक हाथका बाधदेश । कोहनीके पीची-
 र्गगीतक हाथस्य बाहिरला भाग । हाथीका कवा । कंठ-
 ध कवा । नवीनाम गन्धद्रव्य । कंठ । "करभकण्टक-
 दारं" इति मापः ।
 करमर्दन (पु०) करे मृशति । मृदू+क्यु । कर्मका हथ ।
 कर्त्वा । हाथमलना ।
 करमाहा, (की०) करः क्राहुत्पिपवं मात्वे जपसंख्या-
 हेतुनात् । अंगुलिओंकी गांठे जपकी गिनतीका कारण
 होनेसे मानो मातायी मार है । अनामिकाके माथसे लेकर
 दहिनीओर तर्जनीके मूकपर्यन्त करमाहा है । अंगुलिओं-
 में दल गांठोकी माथ जो जपसंख्याके लिये है ।
 करम्प, (पि०) कृ+अम्वच् । मिथित । मिलाहुआ ।
 मिथण । मितना (पु०) ।
 करम्पित, (पि०) कर्मणे मिथ्रणं जातोऽस्य इत्तच् ।
 जिगका मेल हुआई । मिथित । मिलाहुआ । जुगहुआ ।
 "मधुकरनिवरम्पित" जयदेव ।
 करम्भ, (पु०) केन जलेन रम्भते विच्यते । रम्भ+धन्-
 मुम्ब । दहीसे मिलेहुए सण् । जलोसे सींचा जाता है ।
 करम्ह, (पु०) करे रोहति । र्ह+क । हाथमें उगताई ।
 मत्त । मत्तन । नी ।
 करपाल, (पु०) करे कालयति रक्षति (पु०) कल-पाल-
 नवर्त्ना+अण् । हाथको बकाताई । कृपाण । तरवार ।
 करपीर, (पु०) करे वीरयति । पुरा० । वीर-विक्रमक-
 र्त्ना-कल दिखलाना+अच् । हाथको बल देताई । कृपाण ।
 तरवार । कृपाण । मूम । कंजूस । एक बृश । रमशान ।
 मसान । एक देशका नाम । "सायं कन्" । अर्जुन इश ।
 कणेरका वृश ।
 करदारता, (की०) कर्म्य काग्नेव । मानो हाथकी कान्नी ट ।

करशीकर, (पु०) करस्य हसिहसस्य शीकरः । हाथीके संज्ञकी वृद्धे । हाथीकी संज्ञके निकलाहुआ पानीका कपा (कतरा) ।

करशक, (पु०) करस्य शकः सूचीव । मानो हाथकी सूई है । नख । नाँ ।

करसूत्र, (न०) ६ त० । विवाहआदिके समय हाथमें मंगलके लिये बांधागया सूत । कंगन ।

करहाट, (पु०) करं हाटयति रीपयति । हट्-प्रकाशकरना+णिच्+अण् । किरणको चमकाताहै । पत्र आदिका मूल (जड) । मदनवृक्ष । पिण्डीवृक्ष । देसाका भेद ।

करहाटक, (पु०) करं हाटयति । हट्-चमकना+णिच्+ण्वल् । हाथको प्रकार काताहै । मदनवृक्ष । ६ त० । हलका भूषण । सुवर्ण । हाथका जेवर । सोत्रा ।

कराल, (त्रि०) कृ+अप् । करो विशेषेण । तस्मै अलति पर्याप्नोति । अल्-पूरा-होना+अच् । जो विशेष (भय आदि)के लिये पूरा है । विकट । ममानक । तेलका भेद (गजनेतल) । सर्जरसवाला तेल । तैलधुना (न०) । दन्तुर । नतीप्रत । कंचानीचा । कंचा (त्रि०) । अनन्त-मूलनानी वृक्षका भेद ।

करास्फोट, (पु०) करेण आस्फोटः शब्दो यत्र । जहा हाथकी आवाज होतीहै । वध-स्थल । छातीकी जगह । त्रिबोटकर रथलीगई एक भुजा । दुबारे हाथकी चोटसे शब्द करना । ताल टोकना ३ त० । भुजाका टोकना ।

करिणी, (स्त्री०) करिण्+टीप् । हस्तिनी । हयिनी । गी । देवताभेद ।

करिदारक, (पु०) करिणं दृणाति हिनभिः । ६+ण्वुल् । हाथीको फाटनाहै । सिंह । शेर ।

करिन्, (पु०) करः शृणादन्तः अस्ति इत्यर्थे इनिः । जिगन्धा मुंडका टंटा हो । हत्ती । हाथी ।

करिद, (पु०) कृ+ईद । घट । पत्रा । बंगारपुर । वांगकी घुट । सिरी । करिदका वृक्ष । हस्तिदन्तमूल । हाथीके दाँतकी जड (स्त्री०) ।

करिप, (पु० न०) कृ+ईप् । कृ+गोमय । सूया गोया । सूया गोबर ।

करण, (पु०) कृ+अन् । करणनामी रसका भेद । करणनामी वृक्षा भेद । दैन । अनय । दु-मिन् । करणावला । (दन्त) (त्रि०) दवा (स्त्री०) टाप् ।

करणविप्रलम्बन, (पु०) करणरसाग्निनी विप्रलम्बन । करणरसवाला सिद्धिना । अर्धकरणादि शब्दरसमें विप्रलम्बनभेद । सिद्धि केने प्रेयका अनुभव करना ।

करणान्वय, (त्रि०) करणान्वयै अन्वय । बनी दवा-कण । करणान्वयी (स्त्री०)

करूप, (पु०) कृ+अप । देसभेद ।

करेणु, (पु०) कृ+एणु । गज । हाथी । हस्तिनी । हयिनी (स्त्री०) ।

करोट, (पु० न०) के शिरसि रोटते । हट्+चमकना । अच् । शिरपर चमकती है । सिरकी हड्डी । लोढ़ी । "करोटी" यही अर्थ ।

कर्क, हसना । पर० अक० सेट् । कर्कसि । अकर्कौव ।

कर्क, (पु०) करोति कृणोति कियते वा । कृ+क । ल्य न इत्वम् । वहि । आग । चिदा घोटा । दर्पण । शीटा । कुलीर । केकडा । कर्कटवृक्ष । कण्टक । मेघ आदिसे चैरी राशि । घट । घडा । (पु० स्त्री०) वा टीप् ।

कर्कट, (पु०) कर्क+अटन् । छोटा आवला । बड़का । कर्करेडपक्षी । जलजन्तुका भेद । कुलीर । केकडा । चैरी राशि । शाल्मलीवृक्ष । सिम्बलका पेड । "सायें करं कर्कटक । यही अर्थ ।

कर्कटशृङ्गी, (स्त्री०) कर्कट इव शृङ्गं यस्याः । जिसमें शृंग केकडेकी नाँई हो (कर्कटसिंह) वृक्षभेद । "सायें करं कर्कटशृङ्गिका ।

कर्कन्धू, (स्त्री०) कर्कं कण्टकं दधाति । धा+क् । नि० मुम् (जो काँटेको धारण कताहै) । बदरीफल । बे । वृक्षविशेष । उनाव ।

कर्कटा, (पु०) करे कराति । कश्-आवाज करना । अर् । शृपो० । कर्कः काटिन्यं अस्त्वर्थे वा । कृ+कृना+किर् । कर् । कश्-भारना +अच्+कर्म० वा कर्त्त (करमा) । साँसीको दूरकरनेहारा । इधु गन्ना तरवार । सारसंगे तेजघुना । कठोर । साहसी । कूर । निर्दय । बैरल । सारसंगेवाला (त्रि०) ।

कर्कसार, (न०) कर्कं हाथं धेतना सारति गच्छति । ६+अण् । करम्भ । दधिसकु । दहीसे मिलाहुआ आटा । मास ।

कर्कोट, (पु०) कर्कं हाथं धेतनां कच्छति । कृ+अर् । कृष्णाण्ड । पेडा ।

कर्कोट, (पु०) कर्क+ओट । सांपका भेद । नागएट । "सायें करं" कर्कोटकनाम साँप जिसे हस्तिनि (देवते) हीमे जिगधी जरू बट-जानीहै) कहतेहैं । विषका हड्डी काटनेवाली दरस्त ।

कर्कुर, (पु०) कर्प्+ऊर । शृपो० । (कर्ष) गन्धर्व । हरिताल ।

कर्कुर, पीडाकरना । अन्वा । पर० गफ् । भेद । इन्दि । अटनीन् ।

कर्पी, काटना । पुरा० टभ० गड् । घेद । कर्पीति । अचकर्मैत् "आ उगमगंठे काय इगडा अर्थे पुरा हरेत् ।" आ कर्पीति । आ कर्पीते ।

कर्ण, (पु०) कर्णम् । कर्णपत्रिका । अण् । कर्णप्रदम् ।
कर्णनेत्रिये जो कर्णाजालादे । कर्णम् । वा । धोत्रेन्द्रिय ।
कर्णकी इन्द्रिय । अंगदेवता राजा । कुर्णीका पुत्र ।
कर्णका बेडा । तीन भुजावाला क्षेत्र । आरित्र । बेदीके
कर्णनेत्री लक्ष्मी । कर्णा ।

कर्णकीटी, (श्री०) कर्ण नाम्य कीटः । आर्षाये दीप् ।
छोटाकीटा । कर्णराज् ।

कर्णमूत्र, (म०) १ त० कर्णमूल । कानकी मूल ।

कर्णजल्लुका, (श्री०) कर्णे जल्लुकेव । कानपरी । कर्णराज्-
रट । “कर्णजल्लुकम्” ।

कर्णजाट, (म०) कर्णम्य मूलं । कर्ण+जाट । कर्णमूल ।
कानकी जट ।

कर्णघार, (पु०) कर्णं मांकावात्मनदण्डं धारयति । पृ+
निष्+अण् । जो बेदी धरनेके दण्ड (कप्पा वा हाल) को
पकड़ताहै । नाथिक । मत्तर ।

कर्णपाली, (श्री०) कर्णे पात्यति । पात्+अण् । कानका
वाला । एक प्रकारका कानका भूषण । कानी । कान्य ।

कर्णपूर, (पु०) कर्णे पूरयति । पूर+अण् । जो कानको
भरताहै । कर्णाभरण । कानका भूषण । नीलोज्ज्वल । नीला-
कमल । सिरीषका वृक्ष । असोक वृक्ष । इनके फूलोंसे
धीरे कान भूषित किये जातेहैं । “कर्णपूरक” ।

कर्णयज्ञित, (त्रि०) ३ त० । कथिर । बहिरा । त्रिषको
कान भरि । सोप (पु०) ।

कर्णवेध, (पु०) विष्+अण् । १ त० । बह संस्कार त्रि-
षमें कानको वेधन करते हैं ।

कर्णवेष्ट, (पु०) कर्णी वेष्टते अनेन । त्रिषसे कान धरे
जाते हैं । कुण्डल । बाटा । “शुल्” कर्णवेष्टक । हृषी
अर्थमें । “भावे ल्युट्” कर्णावरण (कानका पकड़ा) (न०) ।

कर्णदाण्डुली, (श्री०) कर्णम्य दण्डुलीव । कर्णगोलक ।
कानके बीचका आकार । कानका छेद जो पतनी सिरीषसे
बन्ना हुआ होता है, त्रिषपर बायुके लगनेसे राघ्य सुनाई
देताहै ।

कर्णाट, (पु०) रामनाथसे छेके धीरेगतक देश । काव्यकी
रीति (श्री०) दीप् ।

कर्णिक, (पु०) कर्ण+इत् । वारमेद । सीर । कण्टकारिका ।

कर्णिका, (श्री०) कर्ण+अणुल् । हरिद्वलाम । हाथीके
सुंझकी मोठ । हाथके बीचकी अंगुली (मध्यमा) । कानका
भूषण । पद्मशीतकोप । छेरानी । कुडिनी । कमला ।
अग्निमन्त्र वृक्ष । अन्नपत्रकी वृक्ष ।

कर्णिकान, (पु०) कर्णिकां मृच्छति । मृ+अण् । उप०
(नगिन्यासी) वृक्षमेद । कनेरका दरहन । कनेरका फूल ।
छोटा मन्दूक ।

कर्णिरथ, (पु०) कर्णेः तामीयेन धमिन् अथ कर्णा ।
त्रिषके पाग बान रहे । रक्षन्धः । तत्र ई शोभा यम् ।
त्रिषकी शोभा कम्पेपर हो । न कर्णी ह्यो रथजुयं
बाहून् कर्मी० । ऐसी रथके समान सवारी । कम्पेपर उठार्ई
जावेवाणी सवारी । पालरी । सोठी आरि ।

कर्णिसुत, (पु०) कर्णाः संतमानुः सुतः । संतकी माया
बेडा । संतापुर । संतरासुत ।

कर्णोजप, (पु०) कर्णे जपति । जप्+अण् । राम्या अष्टक ।
कानमें पीरेगे बोलता है । रूपाक । पुगलरोर । पिनुन ।
गल । नीच । पुरीतल्लद् देनेवाटा ।

कर्ण, विधिल होमा-वीला होना । पुता० उभ० अठ० ऐद ।
कर्णयति-ने । अचवतंत-त ।

कर्तन, (न०) कृती-काटना । कृत+रयुट् । छेदन । काट-
ना । हईके देखे एत निकालनेका व्यापार । काटना ।

कर्तरी, (श्री०) कृत+अण् । कर्तं राति । रा+क-डीप् ।
कृतापी । बरठी । कटारी । केरा आरिके काटनेका साधन ।
कैषी । अत्र ।

कर्तव्य, (त्रि०) इत्+तव्य । काटनेके लायक । “पुनः
पता वा धाता वा पिला वा यदि वा पुठ् । रिपुस्थानेषु
कर्तव्यं कर्तव्या भूमिभिच्छता” ।

कर्त, (त्रि०) कृ+अण् । कारक । करनेहार । व्याकरणमें
कहागया ह्यारे कारकोंका प्रेरक । क्रियाका आश्रय । स्वप्नश्च
(उदमुल्लार) । चतुपानन । मग्ना (पु०) ।

कर्तुका, (श्री०) कृत+अणु-इश्भावः । संज्ञायो कन् । छोटी
तखार । पाण्डु ।

कर्द, इग्गित राघ्य करना । पुरी आवाज करना । पेटकी
आवाज करना । भ्वा० पर० अठ० सेट् । कर्दति । अठ-
दीप् ।

कर्द, कर्द+अण् । कर्दम । धीचट ।

कर्दम, कर्द+अण् । पट्ट । धीचट । पाप । मग्नासे छायामें
उत्पन्नहुआ प्रकाशविशिष्ट । मांस (न०) बीचबवाला
(त्रि०) “कर्दमक” । एक प्रकारके धान ।

कर्पट (पु० न०) कृ+कर्मणि मिच् । कर्पटः । पुतना
कपडा । धीपडा । मैला कपडा । “कर्म्य पटः” शक० ।
गरी आदि पोछनेके लिये हाथमें रक्ताहुआ कपडेका
टुकड़ा । गेरीरगका कपडा । रमास । जगो ।

कर्पट, (पु०) कृ+अण् । कपाल । रोपरी । कटाह । एक
प्रकारका हाथ । अजीरका वृक्ष । कजरी । त्रिषी
रोपरी ।

कर्परीश, (पु०) कर्परम्य अंशः । कर्परका अंश ।
खापरा । कर्करा । वेता । कंकर ।

कर्पार, (पु० न०) कृ+णाल । कर्परवोधि । कपरेका
बाल । कणग । कपा । वृक्षमेद । “कर्पाशी” ।

कर्मणमि, (पु०) कर्मणो मणिः । कर्मके रंगका मणि ।
एव मणिश्चि । उच्यते । "कर्मणाम्" ।

कर्मकर, (पु०) कर्म करोति । कृतः । मूल । मीर ।
मोक्षी कर्मकरः (वि०) ।

कर्मकाण्ड, (पु०) कर्मणा कर्तुः । कर्मणः । कर्मसमूहः ।
कर्मको प्रतिपादन करनेहारा वेदका भाग ।

कर्मकार, (पु०) कर्म+कृ+अच् । योहकारक । योहार ।
पुकार । कर्मकारके विना काम करनेवला । वेणु ।
वेणुवृक्ष ।

कर्मक्षेत्र, (न०) कर्मनां परिषेवनाय उचितं क्षेत्रम् । काम
करनेका योग्य स्थान । अरण्यम् । विन्दुस्थान ।

कर्मेट, (वि०) कर्मणि कुम्भः । कर्मेटः । किरणुगतः ।
काम करनेमें लक्षक ।

कर्मण्य, (वि०) कर्मणि कर्तुः । कर्मेट+अच् । काममें
योग्य । काममें कर्तु । कामके लक्षक । वेणु । हनगाह
(कर्म०) ।

कर्मदेशना, (क०) कर्मना कर्मणिना देवता । काम
करने देवता होनेका । कर्मके कृत देवताको प्राप्त हुआ ।
इस काममें अर्पणके भाँति कर्मकरके पद परकी पाप जो
देवताको दूरे करनेके वे कर्मदेशना करनेको है ।

कर्मधारय, (पु०) कर्मधारयम् । कर्मणा अर्पणानाम्
कर्मण्यर्पणक कर्मके लक्ष कर्मण्यर्पण समानार्थिण्य ।
विशेषण के विहितका समान्य । जैसे "मीशेवर्ष" ।

कर्मि, (क०) कर्म+अच् । कर्मणा कर्मण्यर्पणम् । कर्मणा
कर्मके लक्षक । कर्म शिवाका अथवा
पुरुषका कर्म ।

कर्मिण्य, (न०) कर्मणा कर्मि । कर्मणा कर्मि । कर्मके
करनेके लक्षणका मूल पुन कर्मि ।

कर्मिन्, (क०) कर्म करोति । कर्मिण्य, कर्मणा कर्मि क
कर्मि । कर्मिण्य । कर्मिण्ये कर्मिण्य । कर्मि कर्मिण्य-
का कर्म । कर्मिण्ये । कर्मिण्ये । कर्मि कर्मिण्ये कर्मि
कर्मि कर्मि कर्मिण्ये । कर्मि कर्मिण्ये ।

कर्मिण्यम्, (क०) कर्मणा कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (न०) कर्मणा कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मणा कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मणा कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्यतिहार, (पु०) मि+अति+हृ+अच् । कर्मिण्य
हारः ३ त० । आराममें एकजातिका काम कर ।
कामका बदलना । जैसे आराममें ताडन छोड़ें ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मणि धारः काममें बहादुर । सो लक्ष
प्रारम्भकियेगये कामको समाप्त करनेहाय । कर्मिण्य
कामकरनेहाय ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मणि धारः आरामः । मधु+अच् ।
मैं कर्मों हूँ, इसमें यह फल भोगूँगा इसप्रकार करने
वेत । काममें लगना ।

कर्मिण्यसिन्, (पु०) जो वेदमिहित कर्मोंके विना
लाग करताहै । सम्+नि+अच्+अनि । मत् कर्मोंके
नेहाय मति ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मणा पदरति । १ त० । कर्मिण्य
पदर । यम । काल । सुविधी । वेत । उत । कर्मिण्य
आकाश । ये जो सुभ और अशुभ कर्मोंके समी (प्राणी)
कर्मिण्य, (यो०) १ त० । इष्ट और अनिष्टके लक्ष
प्राणि ।

कर्मिण्य, (पु०) ७ त० । कर्मिण्यारी । कर्मके लक्ष
हाय । किये और न कियेको समनेका ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मि कर्मिण्य । कर्मिण्य । कर्मिण्य
कोहार । तरफान आदि जति । एकप्रकारका हा । कर्मिण्य
मेद ।

कर्मिण्य, (वि०) कर्मिण्येन कर्मि । कर्मिण्येन कर्मि
कामकरनेका । कियेका जन । काममें कर्तु । कर्मिण्य
लगनाका ।

कर्मिण्य, (न०) कर्मणा कियेका साधनमूर्त इन्द्रिय
कियेको सिद्ध करनेका ही इन्द्रिय । इस लक्ष
इसमें पदरता कर्मणा कर्मि किये सिद्ध होती है ।

कर्मि, अर्थात् कर्मणा । कर्मिण्य । कर्मिण्य । कर्मिण्य
कर्मिण्य ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (पु०) कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कर्मिण्य, (वि०) कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।
कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् । कर्मिण्यम् ।

कार्यफल, (पु०) कार्य तन्मात्रं फलं अस्य । जिसका फल सोलहमागेका हो । पिपितक वृक्ष । बहेरा । आमलकी ।
 (श्री०) टाप् ।
 कार्पिणी, (स्त्री०) कृत्+गिनि । क्षीरिणीशृङ्गा । रामनी ।
 क्विष्ठा । घोडेनी लगामका लोहा ।
 कार्द्वि, (अव्य०) कस्मिन् काले । रिम्+र्द्विद् वादेदाः ।
 रिगतमय । कव ।
 कार्द्विचिन्, (अव्य०) कर्द्वि+चित् । रिचीरामय ।
 कल्, गिनती करना । एक० आवाजकरना । अक० ध्या०
 आत्म० सेद् । बलते । अवलिष्ट ।
 कल्, गति-जाना-गिनना । पुरा० उभ० सक्० सेद् । कलयति-
 से । अचीकलन्त ।
 कल्, प्रेरण करना । पुरा० उभ० सक्० सेद् । कलयति-ने ।
 अचीकलन्त ।
 कल, (पु०) कल्+सम्+करना-पम्+अङ्गिः । मधुरव्यक्तस्य ।
 मीठी और पीसी आवाज । साठरास । अजीर्ण । बर्ह-
 जमी ।
 कलकण्ठ, (पु०) कलः कलान्वितः कण्ठोऽस्य । जिसके
 गलेमें मीठी आवाज हो । कौकिल । कोइल । हंग । पारा-
 वत । कपूतर । "खियां वीप्" कलकण्ठी ।
 कलकल, (पु०) कलप्रकारः प्रकारे द्रित्यम् । कोलाहल ।
 रोला । होरा ।
 कलघोष, (पु०) कलो घोषो यस्य । जिसकी आवाज
 मीठी हो । कोइल ।
 कलङ्क, (पु०) कलयति किप् । कल् घावी अहृयेति । विह ।
 निदान । अपवाद । ताम्राभादि धातुओंकी मल (कल-
 पन) अपयस । बेहजती । दाग ।
 कलङ्क, (पु०) केनिसाब्दं लज्जति भावते । विपसे रिपटेदुष्प
 अर्थसे मारगया मृग (हरिन वा पशुविशेष) । पशु ।
 ताम्रकूट । दसरथयोका माप ।
 कलत्र, (न०) गह+द्रुत् । गम्य कः दस्य छः । निगम्य ।
 पूतक । अपनी स्त्री । भार्या ।
 कलघ्नोत्, (न०) कलः मलः घातः अस्य । जिसका मल
 घोसगया । सोसा । घांठी । "कलघ्नम्" ।
 कलघ्नपनि, (पु०) ६ व० । कौकिल । कोइल । कपूतर ।
 मोर । मीठा और पीमादाब्द ।
 कलन, (पु०) कल्+भ्यु । वेतसशृङ्गा । वेतसा वृक्ष ।
 "भावे स्युद" विह । दाग । एक महीनेका गर्भ । पटना ।
 गिष्ठा । "कलनात् सार्यभूतानाम्" इति स्पृष्टिः ।
 कलभ, (पु०) कल्+अभच् । पीव वर्षका हाथीका बच्चा ।
 धतूरेका पेड ।
 कलभ, (पु०) कल्+अभ । हेरादी । चोर । धम्मका भेद ।

कलम्य, (पु०) कल्+अभच् । दस्य छः । नाखिया दाक ।
 कलमीसाक । चार । तीर ।
 कलरथ, (पु०) कल्+अप्+रथः । कलो रथोऽस्य । मीठी
 आवाजवाला । कोइल । कपूतर । मीठा और पीमादाब्द ।
 कलल, (पु० न०) कल्+अलप् जरायु नामक गर्भके दाह-
 नेद्वारा बमना ।
 कलपिद्म-क, (पु०) फलं वर(ह)ते । वक्ति (वणि)
 जाना । अन् शृपो० अतइलाम् । बटक । विदिया । पशी ।
 धेतचामर । इन्द्रयव । इन्द्रजी ।
 कलश, (पु०) कलं दास्यं पावति । शु+जाना+ट । पट ।
 पडा । पागर । शौचीग सेरका भाग ।
 कलह, (पु०) (न०) कल दन्ति । हन्+ट । पिवाद ।
 दागडा । युद्ध । लडाई । अतिकोप । तलवारका मियान ।
 कलहंस, (पु०) कलप्रधानो हंसः । मीठी आवाजवाला हंस ।
 राजहंस । कदम्बहंस । राजाओंमें उत्तम । परमात्मा ।
 सेरह अधरोंके पादवाला छन्दोभेद ।
 कला, (स्त्री०) कल्+अच् । चन्द्रमाके मण्डलका १६ वां
 भाग । दिनेयवे धनका लाभ होने योग्य अंश । राट् ।
 समयका परिमाण । ज्योतिष्के अनुगार राशीके सीग
 भागका साठवां भाग । नौका । बेटी । कण्ट । विभूति ।
 सामर्थ्य । संहरा । गिनती । मरीचिदी स्त्री । चौलड
 प्रकारका गाना बजाना आदि ।
 कलाद्, (पु०) कलां अर्त्त आदत्ते । आ+दा+क । अराको
 देताई । स्वर्णकार । सुनार (वह भूयण बनानेके लिये
 दिनेयवे धनमेंसे अवरय कोई न कोई अंश छेटी
 देताई) ।
 कलानिधि, (पु०) कला निधीकन्तेऽय । कला+नि+धा+
 कि । चन्द्रमा ।
 कलानुनादिन्, (पु०) कलं अनुनदति । गिति । जो
 चार २ शब्द करताई । प्रमर । भीरा । बटक । विदिया ।
 कलाप, (पु०) कलां अप्रोति । कल्+आप्+अप् ।
 समूह । मोरकी पूंछ । शलकार । मेराज्य । तईस ।
 पाँद । व्याकरणविशेष । एष्योच ।
 कलापक, (पु०) कलाप+क । साथे बन् । कलापके अर्थमें ।
 चार लोकेका एक शासन ।
 कलापिन्, (पु०) कलापो बहोऽस्यास्तीति । इति । मयूर ।
 मोर । मोरपंखके धनान दायाकला बट (बोट) ।
 कल्+आप्+गिति । कौकिल । कोइल ।
 कलाभृत्, (पु०) कलां विभर्ति । कल्+भृ+किप् । चन्द्र ।
 पाँद ।
 कलापत्, (पु०) कल्+आप्+पे मयूर मय्य व । चन्द्र ।
 कलावाज (नि०) ।

कयलित, (प्रि०) कबलं प्राप्तं करोति । क्विच्+क् । प्राप्तं विना गमा । रायागमा । फेलाहुआ । म्यास ।

कपाट, (न०) कं वातं बधति । कप-पेटनकरना । पेटलेना । अण् । दबाजिको रोकनेवाला काठका टुकड़ा । किबाड । "कपाटी" ।

कवि, (पु०) कु+इ । कुक् । काल्मीकिमुनि । भास्कर । काव्यकर्ता । मद्रा । पिछला अगला सब जगमेहारा । सुसम अर्थके देखनेहारा । पण्डित (प्रि०) । खलीन । लगाम कवी वा कवि (स्त्री०) ।

कविका, (स्त्री०) कु+इ । संज्ञायां क्व् । खलीन । जो खोटेका बनाहुआ घोड़ेके मूँसे लगाम जोड़नेके लिये दिया-जताहै ।

कघोष्ण, (न०) ईषदुष्णं । कघे कघादेराः । ईषदुष्णस्यो । घोडा गर्महूना ।

कट्य, (न०) कु+यच् । पितरोंके उदरेसे दियागया अंगारि । कश्-यन्त्रकरना । भ्या० अड० पर० सेद् । कथति । अकटीत-अकटीत ।

कशा, (स्त्री०) कश्+अच् । घोड़े आदिको बलानेके लिये बोटका साधनपदार्थ । क्रीडा । चाबुक ।

कशिपु, (पु०) कश्+कु । नि० । भक् । अन्न । वन्न । कपडा । भोजनाच्छादन । द्रव्या । शिष्टोना । "सत्तां शिती कि कश्चिो प्रयासे" भागवतम् ।

कदोय, (पु० न०) कं ग्राणति । कृ हिंसाकरना । उ एरदा-देस । पीठकी हड्डी । मेरुदण्ड । मद्रदण्ड । जलमें उपजा मूलमेद ।

कदमल, (न०) कश्+कल-मुद्ब । मूष्णं । मोह । पाप । मेल (स्त्री०) ।

कदमीर, (पु०) कश्+ईरन्-मुद्ब । कदमीरनामी देस ।

कदमीरज, (पु०) कदमीरे जायते । जन्+इ । कुडुय । केसर । "कदमीरजन्मा" ।

कद्वय, (पु०) कद्वं मयं विबधि । क्व+क् । मरीचिनामये प्रसिद्ध मझाके पुत्रका बेटा । कद्व (मय) के पान करनेसे कद्वय प्रसिद्ध हुआ । मुनिमेद । मृगमेद । मात्स्यमेद ।

कद्, -भारना । भ्या० पर० सक्० सेद् । कथति । अकपीत-अकपीत ।

कप, (न०) कप्+अच् । कठो । कठौटी । पाथरका मेद ।

कपण, (पु०) कप्+ल्यु । अणक् । कषा । "भावे ल्युट्" पित्तना । लुत्रकी करना (न०) ।

कपाय, (पु०) कपति कठं । कप+आय । खोनाकृष्ट । राग । कौष । अन्त-करणका दोष । धनहृष्ट । रसमेद । कषेला । खल पील मिलाहुआ रंग । कृष्ण । कशा (पु०) ।

कपायित, (प्रि०) कपायो रक्षापीतवर्णो जातोऽस्य इत्यच् । जिसका खल पीला रंग होगावै । कतेलखाल ।

कपायिन्, (प्रि०) कप्-अलि धर्मे, इनि । कपायवाला । कषेला । खल रंगसे रंगाहुआ । संसारमें मन लगानेवाला पुरुष आदि (पु०) कई एक कृशोंका नाम । राजूर आदि ।

कप, (न०) कप्+क् । पीडा । व्यथा । एद् । पीडावाला । जंगल (प्रि०) ।

कस्-वैजकरना-ओरजाना । अदा० इतिद आत्म० सक्० सेद् । कंस्ते । अकंशिष्ट ।

कसनोत्पादन, (पु०) कसनं कासरोगं उत्पादयति । ल्यु । वासककृष्ट । "वासकः कासनाशकः" यह वैद्यकी उक्ति है । कसेर, कस+इ एरनागमः । शकका पियारा जलकन्दभेद । एक प्रकारका घास । जिसका मूल सुगर खातेहैं ।

कस्तीर, (पु० न०) कं जलं तीर्यति । अच् । नि० मुद् । रश् । एह् धातु ।

कस्तूरिका, (स्त्री०) कस्+ऊर-मुद्ब । ङीप् । कस्तूरी । स्त्रायं क ह्रस्वे अत एत्वं । मृगमद । मृगनाभि ।

कल्हार, (न०) के जले हारते । हाद्+अच् । पृषो० दस्य रः । विशाकमल ।

कांस्य, (न०) कंसेन निष्पादितं । कंस+अय् । एकप्रकारका बाजा । पानपात्र । पीनेका पात्र । साम्ये और राक्के मेलका बनाहुआ उपधातु । "स्त्रायं कन्" कांस्य (वही अर्थ) । कांस्यकार, (पु०) कांस्य+कृ+अण् । उप० । कचेरा । जातिमेद ।

काक, (पु०) कै-वाक्करना । कन् तस्य नेलम् । अपने नामसे प्रसिद्ध वक्षी । कौआ । राज । लंगडा ।

काकचिञ्जा, (स्त्री०) जिसके फलका तिरा कौएके रंगका हो । पुष्पा । रती । पृषो० "काकचिन्वि" "काकचिर्षी" "काकचया" यही अर्थ ।

काकच्छद, (पु०) काकस्य छदः पक्ष इव छदो मस्य । कौएके परके समान जिसका पर हो । खन्नखण । ममोद्य ।

काकताटीय, (न०) काक (कौए) के गमनसमय अथानकही तालकलका गिरना । एक प्रकारका न्याय । अचानक होजानेवाली बात । अतर्कितसम्भव व्यापार । छ (ईय) प्रत्ययः ।

काकतिन्दुक, (पु०) काकवर्णः तिन्दुकः । काकपीतुष्टा । कुचला ।

काकपक्ष, (पु०) काकस्य पक्ष इव । कौएके परके समान मस्यके दोनों भागमें एक प्रकारकी चेरकरना । बालछोटी सिलावसे काकपक्ष बहतेहैं । कांबोदिर्गो । पटे ।

काकपुष्ट, (पु०) काचने पुष्टः । कौएसे पालागया । कोठिला । कोहल । कोहल । कौएके बिलसे कौएके बचेको दूरकर उणके स्थानमें अपने बचेको रखदेतीहै, भीत बाकी अपने बचेकी बुद्धिसे उसे पाळती है, यह प्रसिद्ध है ।

काकमीर, (पु०) काकत् मीरः । पेचक । उष्णः ।
 काकली, (स्त्री०) ककुत् । ईपत् कली । कादेयः वा रीप् ।
 सूक्ष्म मधुरराज्य । पीनी मीठी भावाज ।
 काकलीरय, (पु०) काकली मधुराव्यञ्जो रवो यस्य । मीठे
 धीमे शब्दवाची । क्रीड । क्रीडिल ।
 काकाक्षिगोलकन्याय, (पु०) जेते कौएस एक नेत्र दोनो
 गोलकमें घूमजाताहै, वैसे जहां एकपदार्थका दोनोमें मेल हो
 वह दृश्यन्त । उभयसम्बन्ध दृश्यन्त ।
 काकार, (त्रि०) कं-जलं आकिरति । जल सितारनेवाला ।
 पानी सींचनेवाला ।
 काकिपी, (स्त्री०) ककुचयल होना, तं अगति अणु पृथो० ।
 पणका चौथा अंश वीस कौडी । एक दमरी । एकमास्त्रेका
 चौथा भाग । “काकिनी” वही अर्थ ।
 काकी, (स्त्री०) काक+कीप् । कौएकी स्त्री । कौएका रंग
 होनेसे बायसीलता । एक प्रकारकी मेल । कौनी ।
 काकु, (स्त्री०) काक+कण् । शोक और भय आदिसे शब्दका
 बदलना । अलंकारमें प्रसिद्ध विपद अर्थकी कल्पना करने-
 दारा नञ्आदि शब्द । वक्रोक्ति ।
 काकुत्स्थ, (पु०) काकुत्स्थः सूर्यवंशीयः वृषभेदः । तस्या-
 पत्यं अणु । सूर्यवंशी राजा । इक्काकु राजा । धीरमचन्द्र ।
 काकुद, (न०) काकु ध्वनिनेदं ददाति । घते । दा+क ।
 ताल । जिह्वा इन्द्रियका आश्रयस्थान । तालया ।
 काकोष्ठ, (पु०) काकानं इष्टः । कौओंका पियाण । निम्ब ।
 नीम । इसका फल कौओंको पियाण लगताहै ।
 काकोदर, (पु०) कुत्सितं अकृति । अकू+अच् । कोः
 कादेयः । काक ईपद् गतिमत् उदरं यस्य । जिसका पेट
 पीरे चलताहै । सर्प । सांप ।
 काकोल, (पु०) ककुचयलहोना-साधे शिच्-ओल ।
 शोणकाक । पहारीकौला । सांप । एक प्रकारका सूअर ।
 नरकभेद । विषभेद (पु० न०) । बायसी । कौनी ।
 अर्धगया (स्त्री०) ।
 काक, (बाहना) म्या० उम० इति-सक० सेट् । काकुति ।
 काहूतं । अकाहूतं । अकाहित् ।
 काक, (त्रि०) ईपत् कुत्सितं अस्ति यस्य कोः कादेयः ।
 त्रिपदी आंश बोलीसी बुरी हो । बुरी आंशवाला जन ।
 बोराया आंशके बोनेमें देखना (न०) ।
 काकशीय, (पु०) ईपत् शीबन्ति अस्मान् । शीप्+यम् ।
 कादेयः । त्रिगुण बोराया मध्य होजाताहै । शोभाप्रवृत्त ।
 मुहांजना ।
 काह्या, (स्त्री०) काश्+अ । इच्छा । बाह ।
 काह्या, (स्त्री०) काश्+अ । इच्छा । बाह । अस्मिप्राय ।
 इराता । भूष ।

काहित, (त्रि०) काश्+अ इट् । नष्ट
 किया गया । (तं० न०) इच्छा ।
 काहित्, (त्रि०)-र्ग- (स्त्री०) ककुत्+ति
 वेधी इच्छा करनेवाला । काहित्मंद ।
 काय, (पु०) कल्पनेदनेन । कल्प-सांग-ना-
 एक प्रकारकी मति । रोग और एक प्र
 कल्प पदार्थ । मोम । दूध । मिठा । म
 कायक, (पु०) वान ए-मार्थे क अण
 कपर । मार ।
 कायन, कायनं- (न०) काच्+अन पमंउ क
 नेका कीना वा रम्यी ।
 कायनकिन्, (पु०) कायनक-दन् । इत्य
 हायका जिग्माहुआ ।
 कायन्ययण, (न०) कायम्य ल्यणम् । शोण
 काचित, (त्रि०) काचे विक्रमे विनं पूर्तं पुं
 श्वतदार्थं । जिनेपर रम्यी हुई वस्तु ।
 काचूक, (पु०) काच्+ऊक । पावक । रस
 पत्री ।
 काञ्चन, (पु०) कान्चि-चमकना+ञ्चु । एक
 चंवा । नागकेसर । तदुच्चर । घणुण । मो
 निरी । काचन आदि फुट । कृषि । वनक (क
 काञ्चनक, (पु०) काचनं इव कपति प्रकाशने
 ओ सोनेके समान चमकताहै । पक्षिभेद । कौ
 कचनालका दरख । हरिताल (न०) ।
 काञ्चनदली, (स्त्री०) काचनं इव दलं चम
 पते सोनेकी नाई हो । स्रणकदली सोनेकी दर
 काञ्चनशीरी, (स्त्री०) काचनं इव शीरं चम
 जिसका दूध सोनेकी नाई हो । शीरिपीलवा ।
 काञ्चनाल, (पु०) कचानाय रीसी अली
 अल्+अच् । कौबिदाररुज । कचनालके दरख ।
 काञ्चि-शो, (स्त्री०) । काचि-दन् वा रीप् । क
 रका भूषण । एकलज हार । गुप्ता । रती । क
 तवागी ।
 काञ्चु, -भ्या० आ० कांचने । काचिन । चमकना ।
 काञ्जलं, (न०) ईपत् (का) जलं । शोणमा र
 कुत्सितं जलं । अशुद्ध (भुय) जल ।
 काण, (पु०) कण-चन्दकरना । घन् । काक
 एक आंशवाला (त्रि०) काणा ।
 काणेयः-रः, (पु०) काण+एय+शोका रशिका पुं
 आंशवादी कांका वेदा ।
 काणेली, (स्त्री०) काण+एल+ई । व्यभिचारे
 दुष्टा गती । नृ पिवाही हुई स्त्री ।

कार्य, (न०) कृतस्य भावः प्यम् । कृतका होना । कर्म-
जोती निर्बलना । सालवृत्त । लघुचतुष्टय (पु०) । कार्यं
प्यम्
कार्योपपत्त, (पु० न०) कार्यसायं अण् । आ+पण्+पम् ।
कार्यस्य आपण्यः । सोलह पण । सोलह पैसा । पण ।
पैसा । कृपक (पु०) सोना । रुपया.
कार्यिक, (पु०) कार्यसायं टम् । पणका चौथा भाग ।
एकदशवैका माप । एक तोलाभर.
कार्यी, (त्रि०) -र्णी (स्त्री०) कृष्ण-अण् कृष्णमन्वन्धी ।
कृष्णवाला । ब्यागवाला । काले हरिणवाला । बाला.
कार्यिन्, (पु०) कृष्णस्य अपत्यं इम् । कृष्णकी सन्तान ।
कामदेवका एक नाम है.
काल, (पु०) कुलितं भवति । अल्+अच् बोः कादेशः ।
काला रोग । काले रोगवाला (त्रि०) लोहा । कपोलक
(न०) कालयति सर्वं (पुरा०) कल्+अच् । यम ।
महाकाल । शिवजी । राक्षस । कोइल । रक्षत्रिक ।
कायमर्द । क्षण, घडी आदि समय (पु०) । ये सम्पूर्ण
कार्यमें निमित्तकारण हैं । वह सूर्यकी क्रियासे पहि-
चाना जाता है.
कालकण्ठ, (पु०) कालः कण्ठो यस्य । जिसका गला
काला है । नीलकण्ठ । शिवजी । मोर । राजान । दान्यूह ।
कलविह्व । चिकिया।
कालकूट, (न०) कालं अपि कूटयति, दहति । कूट्+अण् ।
जो कालको भी जला देता है । शिव । जहर । सुरबुका
मानो समूह है । देवता और देवोंकी सजाईमें देवताओं-
से मारेगये घृणुमात्री देवके छोड़के उल्लसद्रुआ अश्वत्थ-
वाम्बि (बोजके वृक्ष समान) वृक्षकी गोद (निर्वासको
मुनिओंने कालकूट कहा है । एक किसमका जहर.
कालधर्म, (पु०) इ त० । मृत्यु । मौत । समयसम्भाव ।
बचकी वसलत.
कालनियोग, (पु०) कालेन कृत्वा नियोगः कालस्य वा
नियोगः । नि+युञ्+पम् । देवादा । ईश्वरका हुक्म ।
कालने क्रियाका नियम.
कालनेमि, (पु०) राक्षसका भेद । हिरण्यवह्निपुत्रा पुत्र ।
देव.
कालपर्ण, (पु०) कालं कृष्णं पर्णं अस्य । जिसका पत्ता
काला हो । लगरास.
कालपुच्छ, (पु०) कालः पुच्छोऽस्य । जिसकी पूछ
काली हो । सुगन्धेश । कारह सिंह.
कालपृष्ठ, (पु०) कालं पृष्ठं अस्य । जिसकी पीठ काली
है । सुगमेद । कृ पक्षी । काप । धनुर् । काले दम
इव पृष्ठं अस्य । जिसकी पीठ दमके समान हो ।
कर्णका धनुर्.

कालमूल, (पु०) कालं मूलं अस्य । रक्षत्रिकवृक्ष.
कालरात्रि, (स्त्री०) कालस्य रात्रिः नाशिका । कालको
नाश करनेवाली । सम्पूर्ण जीवोंका नाश करनेवाली मृत्यु-
देवी । यमकी बहिन । कल्पान्तरात्रि । जिसने दीपावली
कहते हैं । उगेही कालरात्रि कहते हैं । कार्तिककी
अनावारुकी रात्रिका समय । शीतानी.
काललौह, (न०) कर्म० । कृष्णायस । काललोहा.
कालदाक, (न०) कर्म० । भाद्रीय शाकभेद । भादमें
काम आनेवाला साग.
कालसर्प, (पु०) कृष्णसर्प । काला साप । बडी मियसाल
साप । (केउडा साप).
कालसूत्र, (न०) कालस्य यमस्य सूत्र इव । कुलकवक ।
सूत्रच्छेदनरूप नरकभेद । इसीस नरकोंमें एक.
कालस्कन्ध, (पु०) कालः स्कन्धो यस्य । जिसकी
शाखा काली हो । लमालवृक्ष । तिन्दुकवृक्ष । उदुम्बर ।
जैरकवृक्ष.
काला, (स्त्री०) काल+अर्थोऽप्यच् । कृष्णशक्ति । काली
शक्ति । अश्वगन्धा । मञ्जिष्ठा । मन्जिठ । कृष्णशिरक ।
काला जीरा । नीशिका । नील.
कालागुद, (न०) प्राग्ज्योतिष देशमें लपका काला अगुरपरदन.
कालाग्नि, (पु०) कालकार मृत्युकारी अग्नि । मृत्युको
देनेवाली भाग । प्राग्ज्योती भाग । कालजल इसी अर्थमें
कालिक, (पु०) काले वर्षाकाले वरति । टक् । जो वर्षा-
के समय बिरता है । बहलतन । बगला वर्षा । " कालं
कृष्णवर्णं अनुगति " टक् । कृष्णवन्दन । कालागुद ।
" प्रष्टः शीघ्रं कालोऽस्य प्रष्टे टक् " हैर । " कालेन
निर्गते कालवेदं वा टक् " । कालमें होवेकाला । काल-
लमन्वन्धी (त्रि०) " कालो वर्णोऽस्यः टक् " ।
देवीभेद । कृषिकवपुत्र । नदा काल । पटोतकी
शाखा । काशी । कांशी । सिद्धी । इतीनकी । हट्ट
(स्त्री०) । काला सदल । कपकी चीज.
कालिङ्ग, (पु०) कुलितं इन्द्र अस्य । हन्नी । इन्दी ।
सर्प । साप । लोहभेद । कलिङ्गानो रज्ज् अण् । कलिङ्गदे-
सका पति । कलिङ्गदेशका राजा । राजकर्षणी (स्त्री०).
कालिन्दी, (स्त्री०) कलिन्दी महा अण् । कलिन्दी पर्व-
तकी । यमुननदी । जमना.
कालिन्दीभेदन, (पु०) भिवति ह्येताभ्यंभेदेन कलिङ्ग-
दिना अन्वयपश्चोति । मिद्+भ्यु इ त० । जो हलके ल-
की रोक्कप है । कलभ्य । भीष्मकेदेवका कला कर्ण ।
(इणकी कला हरिचरणों है) .
कालिमन्, (पु०) कालस्य मन् इत्यभिवा । कलपव ।
कृष्णा । कलतन.

कार्त्त, (श्री०) कार्त्त वगैः प्रत्ययाः । अच् । ङीप् ।
 त्रियुक्ता कार्त्ता रंग हो । केवीमिनेय । मन्सगन्या । व्याग-
 देवकी माता । मलवती । नये बादलोंकी माता । परीकाद ।
 गली गलीत्र । रात्रि । कातात्रनी । आगकी बीम ।
 कालेय, (पु०) कनेरत्नं दक् । दैत्यविशेष । काठच-
 न्दन (न०) । कुमा । हृष्टी (पु०) ।
 काल्य, (त्रि०) (कल्प-अच्) विहित । नियम स्थिर
 कानेराय । कल्पगन्धर्वी । मिय मन्त्रसे क्या करना
 बहिये इस नियमको बतानेवाला ।
 काल्यनिक, (त्रि०) कल्पनाया आगतः ठक् । कल्पनासे
 बना । कल्पित । बनावटी । कल्पनासे टपत्रा । आरोपित ।
 काल्या, (श्री०) कालः गर्भेऽपारणयोर्ममयः प्रसोऽप्य यच् ।
 वह भी कि त्रियुक्ता गर्भेऽपारण करनेका समय आरुंका ।
 कावचिक (त्रि०) -की (श्री०) कवच टप् । कवच्
 (कन्वरत्रिह, संज्ञोभा) पहिना हुआ ।
 कावेरी, (श्री०) कश्य जठम्य वेरे शरीरे । तम्येदं अच् ।
 नृदिभिरेण । "कुम्भिनं अश्विनिरं वेरे यम्याः "भाद्रान्
 रीन्" । वेदात् । ५ व० । हृष्टी ।
 काव्य, (पु०) कविरेव मायै प्यम । कुक् । कविका कान ।
 कव्यमेद । कविपन त्रिगर्भे कवि वा कविके गुण रहे ।
 देवेत् पुत्र ।
 काव्यत्रिह, (न०) अर्धद्वारविशेष । गा० १० परि० ।
 काव्य, कवयत् । न्य० भा० घञ् । सेच् । कावते । अक-
 त्तिह । कवयन्त । कवयते । त्रिक् । अक्कावन्-न ।
 कावा, ईनि-वमवत् । त्रिक्० आ० अञ्० सेच् । कावते ।
 कावा, (पु०) कव्य+अच् । रोगमेद । कांसी । कृणमेद ।
 कृणंते पुत्र ।
 काविराज, (पु०) ६८० २५ व० । एक राजका मेद ।
 त्रिरेद्वत् । कव्यन्त्रि । कृणमेद । एक राजा ।
 काशी, (श्री०) कश्य+अव+शीच् । धाने नामकी नगरी ।
 कावर्त्तार, (न०) कावर्त्तारैणु अक् अच् । कुट्टुम ।
 कवर्त्तारि वत् । सेदत्तः । कावर्त्तारिमे लेहा कुट्टुम
 न्वर वीर्यव पक्वम सेवनेसे कावर्त्तार देग कहते ।
 "नेत्र एव अन्" कावर्त्तारका राज । काशीका कशी ।
 कावत्त, कवत्तम सेवनेसे अक् । सुत्रिभिरेण । मृग-
 मेद । कव्येहा कवत्त । सेवनेद । कवत्तपुत्र (कादे
 सेवने) ।
 कावत्तारि, (पु०) कवत्तम्य अत्तम् । इत् । कवत्तम्य वत्
 अदे । कवत्त ।
 कावत्तारि, (श्री०) कवत्तमेवं अक् । ङीप् । कृष्टी ।
 कावत्त, (पु०) कव-अव । मत् । ई-अच् ।
 कावत्त, (त्रि०) कवत्तमेव अक् अक् कत् । कवत्त मये
 का कृष् १-२ (२०) कवत्त कावत्त । सेक् मयी वीर्यवत् ।

काष्ट, (न०) कम्+क्यच् । इत्यन । दृष्ट । क
 काष्टकदली, (श्री०) काष्टमिव कठिना कष्ट
 बनका केला ।
 काष्टकीट, (पु०) ६ न० । काष्टका बीजा । ३-
 काष्टकुहाल, (पु०) कुं उदात्तयति । इन्-अच् ।
 शक० कुहालः । ६ त० । वेदी आदिके मन्त्रे
 टिये काष्टका बनाहुआ फौडा ।
 काष्टतन्तू, (पु०) काष्टं तजति । क्विप् । तज् ।
 संकर । तरसान । "काष्टतन्तू" इमी अर्त्तने ले
 काष्टलेखक, (पु०) काष्टं लिखति । श्वुच् । पुत्र-
 काष्टा, (श्री०) काल्+क्यच् । दिवा । पौन-
 सीमा । आगिरी ह् । अन्तउक् । त्रिक् ।
 मयका परिमाण=३ कला । जल । पानी ।
 काम्, म्या० आ० । कावते । कानित । बन-
 करना ।
 काम्-कुत्सित, (पुत्र) मय्दकरना । न्य० न-
 सेच् । कवते । अकलिट । कामासा । क्विप् ।
 काम्, (पु०) कम्+अच् । रोगमेद । कांसी
 काही ।
 कामशी, (श्री०) कामं रोमं हन्ति टक् ।
 कंठयारी ।
 कामार, (पु०) केन जलेनामम्यक् सरोवम् ।
 काल्पाव ।
 कामीम, (न०) धुद्रः कामः काशी वा ली ।
 हीराकम उपशुभुविशेष ।
 काम्, (श्री०) कम्+अच् । त्रिक् । त्रिहत्त-
 टीका आवात्र । वीमि । बनक । बुद्धि । ले
 कावृत्तिः, (श्री०) कुम्भिना वा गुणा एवि-
 वा टिगा हुआ मागं । सायका टन्म ।
 काहल, (न०) कुम्भिनं हलनि शिर्षति । अच् ।
 वेग । कुहत् । शिवा । आवात्र । वत् ।
 मेद । वही आवात्र । मूका । कृष्ण । नैव ।
 कि-भाषा, नुदो० पर० मञ्० अर्त्तित । त्रिरेण ।
 किर्कीदिपि, (पु०) किर्कीति ईर्त्तति कल्पते ।
 त्रिभन्-त्रि० । जो किर्की लेग मार कहते ।
 किङ्कर, (त्रि०) किञ्चिन् कुम्भिनं वा वारं ।
 संकर । शिवा ङीप् ।
 किङ्कणी, (श्री०) किञ्चिन् किञ्च वशीति
 वीप् । कुठ मय्द कहते । कंठमय ।
 धुद्रकटिका । शीर्षिणी । त्रिहत्त-
 किङ्कर, (पु०) त्रिभन्+अच् । कोट । मीट ।
 किङ्करान, (पु०) किङ्कणी मय्दने कनी
 इत्त अच् । शिवा कृष्ण कत्त सेवने ।
 लेग । कवत्तम्यत्त । कवत्तम्यत्त ।

केन्द्र, (अव्य०) आत्मन् । समुपय । कुष्ठ और ।
 केन्द्रन, (अव्य०) किम्+चन । न पूरा । घोडा ।
 केन्द्रक, (पु०) विशिन् जलनि । जल-छिपाना । क ।
 केदार बहुत महीन तिरिये । फूलकी धूरी । नागकेसर ।
 केद, जाना । सक० । डरना । अक० भ्या० पर० सेद् ।
 केतनि । अकेटीन् ।
 केद, (न०) किट्+क-दद् । नहिं होता । धानुओका
 मल । गृह् ।
 केण, (पु०) कण्-जाना-अच् । एणो० अचो इ होना
 है । (चेटा) सूखा पाव । मांसकी गांठ, पसइका दाग
 केत्, शन्देह करना रोगरा दूहोना । भ्या० पर० सक०
 सेद् । विकिम्पति । अविक्लिटीर । रहना । अक० नाहना ।
 गक० । केतनि । अकेटीन् ।
 केत्, जामा । जुहो० पर० घट० सेद् । विकेति । अकेटीत् ।
 केतय, (पु०) किन्भावे क् । कितेन वाति । वा+क् ।
 जुआरिआ । टय । नीच । चोरनामक गन्धद्रव्य । धपूरा ।
 केन्तनु, (पु०) विभिन्मात्रा तनुर्णम् । जिमका शरीर
 बहुत छोटा हो । आठ पांवका बीडा । मन्दी ।
 केन्तु, (अव्य०) पूर्वकावके संश्लेषको जतानेहारा ।
 पहिले बहुगणेशे विरुद्ध अर्थ । फिर क्या । लेकिन ।
 केसर, (पु०) कुतिलो नरः । घोडेका मुरा और मगुन्का
 शरीर । अथवा नरका मुरा और घोडेका शरीर देव-
 योनिसेद् । देवताओंका गर्वया ।
 केसरेदा, (पु०) ६ त० । किररोंका खामी । कुबेर ।
 धनका दाता ।
 केसु, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । सादर्य । स्थान । क्या ।
 केम्, (अव्य०) प्रश्न । निषेध । वितर्क । निग्दा । क्या ।
 केमु, (अव्य०) विमर्श । सम्भाषना । घाट ।
 केमुत्, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । शब्द । विवक्ष्य । अ-
 तिपाय । फिर क्या ।
 केम्पय, (त्रि०) कि पचति । अच् । गुप्त । कृण ।
 वह अपने पेट भरनेकोही पकाला है, आगनुक का
 अतिपिओके लिये नहिं ।
 केपु (पु) दय, (पु०) कुम्पितः पु (पु) दय । देवयो-
 निसेद् । देवताओंका गर्वया । हिमालय और हेमकूटके
 बीच नववर्षनामी जम्बुद्वीपका एक बर्ष ।
 केपत्, (त्रि०) किम्+परिमणं कपुत्, किम्: कादेत्.,
 कस्य च, शितना परिमाण । किनका ।
 केद, (पु०) क्+क । छहर । सुअर ।
 केरण, (पु०) क्+कपु । सूर्य । किरण । रत्न ।
 केरणमास्तिन्, (पु०) किरणानी माला अस्ति अस्य इति ।
 विशिष्ट किरणोंकी माला हो । सूर्य । सूर्य ।

किरात, (पु०) कीर्यन्तेजस्करा अत्र । क्+कः पर्यन्तदेस-
 मं भवति अण् । म्तेच्छजातिविशेष । मील । छोटे हाती-
 रवाल । "तप्तपुण्ड्रे लेखर रामकेश्यतक किरातदेस है ।"
 किरि, (पु०) क्+इक् । छहर । सुअर ।
 किरिड, (पु० न०) क्+कीटन् । मुण्ड । शिरका पेरा ।
 पगरी ।
 किरिडिन्, (पु०) किरिड+इनि । अर्जुन । मुकुटवाल ।
 कोनतामी किरिडधारी (त्रि०) ।
 किमी, (स्त्री०) किरति क्प् । किरं मानि मा+क कीप् ।
 पलासवृक्ष । पर । सोनेकी पुतली । सोहेकी पुतली ।
 किमीर, (पु०) क्+इरन्-मुद् आगम । नारत्रवृक्ष ।
 राक्षसविशेष । विनरण । रंगबर्गी ।
 किल, (अव्य०) निधय । बात । पठनावा । प्रसिद्ध ।
 प्रमाणका प्रकाश करनेवाला । सत्य । वारण । सूड ।
 किलकिञ्चित्, (न०) "हर्षणे रोकर गान्" । त्रिओंछ
 विलासभेद ।
 किलकिटा, (स्त्री०) किलकिटैनि वीण्यायां द्वित्वं ततः
 क्यच् तल क्प् । हर्षणी आवाज । शेरकी आवाज ।
 वानरोंके शब्दकी नकल करना ।
 किलाटक, (पु०) पकेहुए कृषका पिण्ड । कृषक विकार ।
 मलाई । खोया । माषा ।
 किलिदय, (न०) किल्+टिपच् बुक् । अराप । पाव ।
 रोग । धर्म और आपसका कल । अतिष्ट । संगार ।
 कियदन्ति-ती, (स्त्री०) किम्+वद्+शन्+वा वीप् ।
 जनधुनि । अकयाद् । गथा वा श्वा शोकका अरकाद् ।
 (हार) ।
 किया, (अव्य०) विद्वय । अपका । या । वा ।
 किनाठ, (पु०) कुम्पितं शृणोति । किम्+शृ+मुम् ।
 धानके बाल । धाण । तीर । कइपरी । मारीखोर ।
 किनालय, (पु० न०) किधिन् शकति बतति क्यन्-पृ० ।
 पहर । पत्र । पत्ता ।
 किनीर, (पु०) क्य्+ओरन् । नि० । हादीका बचा ।
 सूर्य । जवान । दगबर्से पीछे पन्द्रहवर्षका ।
 किफ, मरना । वुरा० आम-सक० सेद् । मिष्यये ।
 अविशिष्यन् ।
 किफिकन्ध-भ्या, (पु०) । और्देसका एक पर्वत ।
 बरांकी गुफा (स्त्री०) ।
 किफु, (पु० स्त्री०) किफ्+उ । बारह अंगुलीका मास ।
 आठवीका स्थान । हाथका परिमाण ।
 किमलय, (पु० न०) किधिन् मली । सल्+जना
 कान्-पृ० । पहर । पत्र । पत्ता ।
 कीकट, (पु०) किधिन् कुम्पितं कटिपृ० । घोरा । मय-
 पदेस । "कीकटेषु मया पुष्पः" इति पुराणम् । सय ।
 निषेध । शीक ।

कुचर, (त्रि०) कुम्भितं वरति चर+अच् । दूतरेके दोष-
को बरनेहार।

कुज्, पुराना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कौञ्चि ।
अकोचीन् ।

कुज्, (पु०) कौ श्रुयिभ्यां जायते । जन्+ङ् । मन्त्रप्रह ।
नरबासुर । इक्षमाय । सीता । कालायनी (स्त्री०) ।

कुज्जटि-टी. (स्त्री०) । कु+किप् कृत । शब्द-दृक्ता होना ।
द्व् वा दीप् । नीहार । कुमागा । सुरार । पाला ।

कुञ्चन, (न०) कुञ्+ञ्चुट् । इटिल्ला । अनादर । आर-
का रोग ।

कुञ्चि, (पु०) कुञ्, कुटिल होना । इन् । आठ सुरीका
न्यावहारिकमाप ।

कुञ्चिक, (पु०) कुञ्+ञ्चुल्+ट्यप् । कायाबीरा । मच्छी-
का भेद । कुञ्ची । चापी । बांगपी शाखा । रत्ती ।

कुञ्चित, (न०) कुञ्+फ । तगरका फूल । टेडा । निजु-
दाहुआ (त्रि०) ।

कुञ्ज, (पु०) कौ श्रुयिभ्यां जायते । जन्+ङ् (पु०) ।
हृषी । डोही । चारोंओर छनाओते दृक्काहुआ बीचसेश्य
(गुला) पर्वत आदिका स्थानविशेष । छताग्रह ।
हाथीका दांत ।

कुञ्जर, (पु०) कुञ्ज+अन्त्यरै र । हाथी । हस्ती ।

कुञ्जरच्छाय, (पु०) त्रयोदशी ओर मपानक्षत्रका मेल
होना ।

कुञ्जरादान, (पु०) कुञ्जरैः अरयते अच् छाना+ञ्चुट् ।
बटका दरशन ।

कुट्, -कुटिल होना । कुरा० पर० सक० सेट् । कुटति ।
अडुटीर । कुकोट ।

कुट, (पु०) कुट्+अच् । कुपं । किला । गड । पर्वत ।
वृक्ष । घमा (पु०) (न०) पर (स्त्री०) दीप् । सिलाजुह
अन्न । हथौडा (पु०) "कुह" ।

कुटङ्क, (पु०) कुट्+ङ्कं कपति । ड । (पु०) । परका पट्टा ।
सताग्रह ।

कुटज, (पु०) कुटे पर्वते जायते । जन्+ङ् (कृष्णी)
वृक्षभेद (जितका फल इन्द्रिय दे) । कुटे (घटे) जायते
"अगस्त्यमुनि" । क्षोणफार्म ।

कुटप, (पु०) कुट्+कपन् । मुनि । घरके पासका छोटा
वन । ३३ सोलेभर । कमल (न०) ।

कुटि(टी)र, (पु०) अल्पा कुटी ईरन् । पत्तोकी कुटिया ।

कुटिल, (त्रि०) कुट्+इलच् । बक । टेडा । अडर ।
मुसुरा । तगरका फूल ।

कुटि(टी)वर, (पु०) कुट्यां कुटी वा वरति । संन्या-
सीका भेद । "कुटी जले वरति" चर० अच् । जलमें
विचरनेवाला वृषभ ।

कुटुम्ब, धारण करना । कुटा० आत्म० अक० सेट् ।
कुटुम्बयते ।

कुटुम्ब, (पु० न०) कुटुम्ब+अच् । पोष्यवर्ग । सम्बंधी ।
नातेदार । सन्तान ।

कुटुम्बिनी, (स्त्री०) कुटुम्ब+इनि । पति ओर पुत्रवाली ।
साराहीगई स्त्री । बालबधेवाली स्त्री ।

कुट्, काटन-गिन्दारकरना । कुरा० उभ० सक० सेट् ।
कुटयति-ते ।

कुट्टक, (पु०) कुट्+ञ्चुल् । लीलावलीमें प्रसिद्ध मणिलका
अङ्गभेद ।

कुट्टनी, (स्त्री०) कुट्+ञ्चुट्+कीप् । (कुट्टनी) दूतरे
पुरुषके साथ दूतरेकी स्त्रीको मिलानेवाली स्त्री ।

कुट्टमित्त, (न०) मित्रके साथ मिलनेकी इच्छा होनेपरमी
न माँगके लिये हातका हिलाना । पिलासभेद ।

कुट्टमल, (पु० न०) कुट्+कुट्टमल्च् । शिलनेपर आई
कली । एक नरक जहां ररिगओंते नारकिओको पीया
पहुंनआई जातीहै ।

कुट्ट, धवराना-आलस्य करना । अक० । कुट्टाना । सक०
इरित् भ्वा० पर० सेट् । कुण्डति । अडुण्डीर ।

कुट्, (पु०) कुट्+अच् । वरा । दरशन ।

कुट्टार, (पु० स्त्री०) कुट्+कारट् । अल्पभेद । कुट्टाग ।
रुध (पु०)

कुट्टार, (पु०) कुट्+कारट् । वानर । वृक्ष । शत्रु बना-
नेवाला ।

कुट्ट, धवराना । भ्वा० इरित् । पर० अक० सेट् । कुण्डति ।

कुट्ट, जलाना । भ्वा० इरित् । आत्म० सक० सेट् ।
कुण्डते ।

कुट्ट, क्वाना । कुरा० इरित् । उभ० सक० सेट् । कुण्ड-
यति-ते ।

कुट्ट, खाना-बालक होना अक० कुरा० पर० सेट् कुट्टि ।

कुट्टप (न०) (पु०) कुट्ट+कपन् (क्वन्) वा सेरका
बाँया भाग । एक फलभर

कुट्टमल, (पु०) (न०) कुट्ट+कुट्टमल्च् । शिलनेपर आई
कली । नरकविशेष (न०) ।

कुट्टप, (न०) कुट्ट+कपन् । लीवार । सेवन । कौरुल । शंफ ।

कुणाय, (पु०) कुण्+अपन् । प्राणरहित । मृतदेह । छर ।
मुरदा । बदबूदार ।

कुण्डल सं- (पु० न०) कुण्ड+अन्त्यरै ल । काजीकी काली
वा सुंदरी । कुण्डल ।

कुण्डलिन्, (पु०) कुण्डल+अन्त्यरै इनि० । देवदेवेहाण
सर्व । साँप ।

कुण्डलिनी, (स्त्री०) कुण्डलं अत्य इनि० । साँपके लस-
पते लीन देवदेवौ तन्त्रमें प्रसिद्ध कृषि । साँपनी ।

कुण्डिका, (स्त्री०) कुण्ड+संज्ञायां कन् । कमण्डलु । यात्री ।
 छोटा । कुंभी.
 कुण्डिन, (पु०) कुण्डि+इत् । सुनिविशेष । विद्वान्तमर ।
 देशभेद.
 कुतप, (पु०) कुतिसन् तपति । तप+अच् । मूर्ध् । अग्नि ।
 ब्राह्मण । अतिथि । गौ । भागिनेय । बहिनका पुत्र ।
 दौहता । पात्रा । नेपालका कम्बल । कुशाके मृग ।
 दिनके दूमेरे पहिरकी पिछरी परीमे तीमरे पहिरकी
 पहिरी परीतक समय.
 कुतस, (अन्त्य०) प्रश्न । सवाल । छियाता । कहाँमे ।
 क्योंकर.
 कुतुप, (पु०) कुत+उपच् । छोटासा चमडेका कुप्या ।
 पीछा पात्र.
 कुतूहल, (न०) कुतुं चममसं श्रेष्ठपात्रं हलति लिखति ।
 हल+अच् । अपूर्वे (अतीव) वस्तुके देखनेमे यत्न करना ।
 अच्छा । अतीव (वि०) । निहायत शौक.
 कुप, (अन्त्य०) कस्मिन् स्थाने वा काले । किसजगह वा
 किसवकमे । कहाँ । कब.
 कुस, निन्दा करना । कुप० आत्म० सक० सेट् । कुस्यथे.
 कुसा, (स्त्री०) कुत्+अ+टाप् । निन्दा । परिवार.
 कुसित, (न०) कुम्भ+क्त । कुम्भनाम धौपव । निन्दा
 कियाहुआ (वि०).
 कुच, (पु० स्त्री०) कुम्भ+अच् । हाथीकी पीठका रंगीव-
 रंगी कंबल.
 कुहाल, (पु० न०) कुं भूमि उहालयति । उह+दल्+अण
 सक० । कोविदारुस । कचनालका दारुस । कोण्डी
 नामा । पूर्वीको कोदनेका अक्ष । आन्तर । कोहाट
 (न०).
 कुनय, (पु०) बह रोग कि तिममे नमूनोच रंग बदल
 जातहै । कुनय रोगनाल जन (वि०).
 कुन्त, (पु०) कुं भूमि उत्पति । उत्पन्न । सक० । गने-
 पुत्रा धान्य । प्रसवकी छत्र । मल । मेला । बरछा.
 कुन्तल, (पु०) कुन्तं कुन्तामाकारं उत्पति । अ+क्त ।
 कंच । पीनेका पात्र । हाथ । देशभेद.
 कुन्ति, (पु०) कुम्भ+शिव् । देशभेद । सुविष्टिर आरित्री
 नामा (स्त्री०) वा वीप् । बह श्रमेन राजकी औरकी
 पूषा मानी कन्या थी । पुत्रदित कुन्तिभोजको पिताने
 मन्त्रके द्वये ही.
 कुन्द, (पु०) कुं भूमि उत्पति उत्पि वा । दै-तो वा-क नि०
 म् । (कुन्द) कुन्तीका पुत्र । कुन्दुद नाम मन्थद्वय ।
 मूनिद्वय । वाग्द । कुवेरका निविनेद । करवीरसु.
 कुपु, श्लेष काव्य । वि० । पर० । अह० । मेद् । कुपति ।
 कुपुर्द । कुपुर्नीद

कुपाणि, (वि०) कुम्भिनः पाणिः अन्त्य । हाथी
 हाथवाला । वरद्वय । देदे हाथवला.
 कुपिन्द, (पु०) कुप+किन्दच् । तन्पुत्राव । तीव्र । कुप
 कुपूय, (वि०) कुम्भिनं पूषने । पूष-कदर+अणो
 कुपि तरहमे फलना है । जानि और अचर इ
 निन्दित । कुप आचरण करनेवाला.
 कुप्य, (न०) कुप+अयच् नि० । मोने और
 तीजम उपायातु । दम्पा नामने प्रसिद्ध वस्तु । स्नेह
 में विना और मव वस्तु.
 कुप्येर, (पु०) कुम्भति घनं एरुक् । नप्रेरव ।
 राजा । नन्दीकृत " कुम्भिनं वेरं देहोऽम् " मि
 देह बुरा हो । मूर्ध् (वि०).
 कुम्भ, (पु०) उपाय उत्पन्न आर्जने अन्त्य । प्रक
 की घोषीमी कोमलता हो । कुम्भा (वि०) ।
 क्षयामर्ग । अणुकांटा.
 कुम्भार, (पु०) कुम्भारयति कीर्तति । कुम्भितो न
 कीं मारयति दुःखत वा । तोता परी । कर्कि
 व्योचिमे सुवराज । सिन्धुनद । वरगण्य । प
 का बालक.
 कुम्भारभृत्या, (स्त्री०) कुम्भारयत् । ६ त० । कुं
 गर्भिणीकी सेवा.
 कुम्भारिका, (स्त्री०) कुम्भार+ " वयति प्रवने
 स्थाने कन् । पाच वर्षकी विवाह विना कन्या ।
 काष्ठ । भारतवर्षाजगद्भेद । " वर्गमती
 कुम्भारिकाभ्ये " इति सिद्धान्तशिरोमनि..
 कुम्भारी, (स्त्री०) कुम्भार+टीप् । नवमासका । इ
 नरीभेद । अराजिता । मोटी श्वास्त्री । वर
 १२ वर्षकी अवकालिना कन्या । रक्षणा परी.
 कुमुद, (न०) कुं मूर्ध्ना मोदने । मुद+क
 कन् । विद्यकमन् । वानरभेद । देवभेद । कु
 कुमुदिनी, (स्त्री०) कुमुदाना समूहः दनि० । कि
 " अन्तर्ये दनि० " कुमुदनायी पुच्छरिनी (इ
 कुमुदला.
 कुमुदधान्यय, (पु०) ६ न० । कन्दम । इ
 कुमुद्व, (वि०) कुमुद+मत्पु+ईप् । भेज कने
 हुआ । नी (स्त्री०) चिंटे कुलवाला । छवि
 क्षिणोके शरीरमे गिजला है । कम्पी.
 कुम्भ, (पु०) कुं भूमि कुम्भिनं वा उत्पत्ति । इ
 अच् । छप् । घन । हृदयका रोग । हरीके
 भागके गोले । कुम्भकर्णका पुत्र । वेदका
 पाचमका अक्ष । शगको रोदनेवनी बेटा ।
 माप । ११ वीं छवि । गुग्गुलु

कुम्भक, (पु०) कुम्भ इव वायुति नियन्त्रया प्रवर्तते ।
क०क० । आस प्रभासको छोड़कर प्राणवायुका रोकना-
इव प्राणायामका अंग । जिसमें वायु न बाहिर और
नहीं भीतरको जाय अर्थात् मध्यमें रोकधिया जाय ।
जैसे घडा भरहुआ नहीं डोला ।

कुम्भकर्ण, (पु०) कुम्भ इव कर्णी अम्य । जिसके बान
घड़ेके समान हैं । रावणका छोटा भाई । राक्षसका भेद ।
(रामसे मारा गया) ।

कुम्भकार, (पु०) कुम्भमें करोति । क०अण् । उ० । बुझार ।
जातिभेद । कहुम पत्नी ।

कुम्भपोनि, (पु०) कुम्भो योनिः क्वलतिमानं यस्य ।
जो घड़ेके उपजा । अगस्त्यमुनि । “कुम्भगम्भव” ।
शोणाचार्य । श्रेण्युत्पी ।

कुम्भाच्छ, (पु०) कुम्भाकारः अण् । घड़ेके समान अण्डा ।
पेरा । बाणायुका मन्त्री । “कुम्भाच्छ” यही अर्थ ।

कुम्भिन, (पु०) कुम्भ+अरल्यर्थे इति । हाथी । कुम्भीर ।
पुगुल ।

कुम्भिल, (पु०) कुम्भ+अरल्यर्थे इत्यच् । घोर । छालमच्छ ।
ओढ़के अर्थको सुरानेवाला । इवाल । छाल ।

कुम्भीपाक, (पु०) कुम्भ्यां तैलघटे पाको यस्मिन् ।
तेलके घट्टेमें जदा पकाते हैं । “जदा यमके काकर
तथेदुए तेलमें डालकर रीपते हैं” ऐसे लक्षणवाला
नरकका भेद ।

कुम्भीर, (पु०) कुम्भिनं इति अयि ईरयति । जो
हाथीबोभी हिला देगाहै । ईर+अण् । (कुम्भीर) जल-
का जन्तु । संभुभा ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भ+अण् । उ० । उ० । कुम्भ । कुम्भ ।
अधोरीय ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भ+अण् । “जो घोडाया
छाल (ताम्र) और हरिणके सम्पत्ता हो” गुणभेद ।
हरिणमय ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भ+अण् । उ० । उ० । कुम्भ । कुम्भ ।
कुम्भ पत्नी ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भिनो रमोऽय । जदा सुरा राग हो ।
मदका भेद । कुम्भे रतकला (वि०) । कौटिल्य कला (श्री०)
दाप् । कुम्भ राग (पु०) ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भ+अण् । कुम्भ+अण् । इति अण्-
इति के कुम्भेयवा हरिण और पंजरके पूर्वका अण् ।
अण् । कण्ठकारिका । कंठिभारी । अण् कंठमेंसे कण्ठ-
हीनका कथेभेद ।

कुम्भ, (म०) कुम्भिनं ईति । कुम्भ एवं वमि तस्य
तेजसा इति वारण्यु केषुम् । एव तस्य वि जदा
एव दूर होता है । कौरवराज्यके कुम्भका हत्य ।
पद० २०

कुम्भ, (पु०) ईपत् रीति । व शब्द करना+अण् इति कुम् ।
उवद् । रकाण्ट । पीनसिटी । (कुम्भी) पुण्यम् ।

कुम्भिविन्ध्य, (पु०) उरयु विन्ध्य इव । पदरागमि ।
मन्त्रिक ।

कुम्भिविन्द, (पु०) उरन् विन्दति । विन्द+अण्-
मोवा । कुम्भाय । दर्पण । शीशा । डिहुल । रीण । पद-
राग मणि (म०) ।

कुम्भिविन्ध्य, (पु०) उरयु विन्ध्य । वर लोहे लोहेका
एक भाग ।

कुम्भिविन्द, (पु०) कुम्भी जनपदानां राजान । एतास्म्य
तद्विन्ध्य बहवु इव । ठेपु उरयु इव । वरकेमें दूरा ।
सीमापितामह ।

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुम्भिविन्ध्य, (म०) ईपत् अयं दृष्टवेन गददन्वन् । इन्-
के समान विद्या होनेसे । एव नमक ययु । मंगलयु

कुलपति, (पु०) ६ प० । मुनिविशेष । “जो दस हजार मुनिओंको अग्रादिसे पालता और विद्या पढाताहै” । सेनाका मादिक ।

कुलपर्वत, (पु०) कौं श्रुतियों कीयते । ली+ड । महेन्द्र, मलय, सख, शुचिमान्, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य, और पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं । “कुलानल” यही अर्थ ।

कुलंधरः, (त्रि०) कुल+धृ+पन् सुम् । कुलधो धारण करनेवाला ।

कुलधर्म, (पु०) कुलस्य धर्मः प० त० । कुल (खानदान) का धर्म (कर्तव्य) ।

कुलविद्या, (स्त्री०) कुलागता विद्या । कुलकी परम्परासे आरही विद्या ।

कुलव्रतं, (न०) कुलस्य व्रतं प० त० । कुलका व्रत (नियम) ।

कुलाचार, (पु०) ६ त० । कुलोचित धर्म । कुलका धर्म । “ जीव, प्रकृतितत्त्व, रिशा, काल, आकार, श्रुतिवीर, जल, तेज और वायु” इन सबको “कुल” कहते हैं । एक सकलमें जो ब्रह्मकी बुद्धिसे विकल्परहित व्यवहार करना, इसीको कुलाचार कहतेहैं इस प्रकारका ज्ञान ।

कुलाय, (पु०) कुलं पत्रिर्घपालोऽयतेऽयम् । अय्+घञ् । पक्षिओंका घर । नीड । आलना । कोई जगह । “कौं लायो गतिः अस्मात्” शरीर । देह ।

कुलाल, (पु०) कुल्+कालन् । कुलं अलति, अल्+अण् । कुम्भकार । कुम्भार । कुम्भ पशी ।

कुलिक, (पु०) कुल्+अस्त्वर्थे टन् । आठ नामोंमेंसे एक । एक साग । समवशिरोप । कुलमें सबसे अच्छा (त्रि०) ।

कुलिङ्ग, (पु०) कौं श्रुतियों की श्रुति विरणार्थं गच्छति अन् । जो श्रुतिवीर विचरनेके लिये जाताहै । चटक । चिडिया । धूम्राट (पिशा) । डुरे विहवाला (न०) ।

कुलिन्, (पु०) कुल्+अस्त्वर्थे इनि । पर्वत । अच्छे कुलवाला (त्रि०) ।

कुलिना, (पु०) (न०) कुले हन्ते शंते । शी+ड । कुलिन पर्वत इति शी+ड वा । वज्र । अस्थिसेदार वृक्ष । मन्थनेर ।

कुली, (स्त्री०) कौं लीयते-लीप् । कल्पकरी । बरीयाली ।

कुलीन, (पु०) कुले आधरे भवः । ख । अच्छा बोरा । अच्छे कुलध (त्रि०) । कुलधारवाला (त्रि०) ।

कुली (लि) र, (पु०) कुल्+ईर वा ईरक् । ककट (कांडवा) केकडा । मेषके कौंसी रति ।

कुल्मार, (पु०) कुल्+अस्त्वर्थे टन् । कुल्+अस्त्वर्थे टन् । अर्थे गीते छोले कण्ड आदि । कुल्थय जो आदि ।

कुल्य, कुल्+इन्द्राहोना+अयप् । अयिप् । शी । इन्द्राहोना “कुले भवः”+अन् । अच्छे कुलमें बना कुलमें कुल्+अयप्+टाप् । बनावटी छोटी नदी । नदी । कुल

कुयुक्त, (न०) कुनिग्नं वज्रम् । सीमक (टील) वृक्ष

कुयुलय, (न०) कौवेलयं इव सोमादेनुवन् । इन्द्राहोनामल । नीलाकमल ।

कुचलयार्पाड, (त्रि०) कुचलयं आनीत स्तनं मनीले कमलके भ्रूणवाला जन । एक देल विदेने रूप धारण कियाया और कुण्डीसे मारा गया ।

कुयाद, (त्रि०) कुयितं वदति अण् । दूसरी शेर का वाला । “भावे घञ्” । कुमितवाक्य । कुलवत् ।

कुविन्द, (पु०) कुं मूर्तिं विन्दति । विद्+थ । इन्द्राहोनाकी छोके गमनें विश्वकर्माने लयबहुता बनें

कुवेपि-पी, (स्त्री०) कुवितं वेगन्ते मन्यवेग+नृन् वा । मन्याधानी । मच्छिओंकी टोरी ।

कुवा, (पु० न०) कौं शंते । शी+ड । कुवत् (पात) रामचन्द्रनीका पुत्र । धोके सनुने तिद्रोप (जनीर) पापी । मत्त । पतला इव ।

कुवाचञ्ज, (पु०) जनकराजाका छोटा भाई ।

कुवापुष्प, (न०) कुवाकारे पुष्पं अस्य । विन्दे कुवाकी नाई हो । मन्थियपने वृक्ष ।

कुवाबुद्धि, (त्रि०) कुवा इव तीक्ष्णा बुद्धिः मस्य । समान तीक्ष्ण (तेज) बुद्धिवाला ।

कुवाल, (न०) कुवा कलन् । कल्याण । मुख । कुली (कुवान्) लालि । लामक । चतुर (त्रि०) कलनें कु

कुवाशयल, (न०) ६ त० । कमीज देण । कुवाशयल (स्त्री०) शीप् ।

कुवाश, (स्त्री०) कुवा+क । लगाम । रस्सी । मनुष्यके

कुवाश्रम्, (न०) कुवाया अश्रं-य० त० । कुलनीके तीक्ष्ण नोक ।

कुवाश्रीय, (त्रि०) कुवाश्रं इव छ । बहुत ही अतिशय ।

कुवाशीरम्, (न०) कुवाया शिर्मिनं वीर । कुवाश्रं बनावे गईं पीशाक ।

कुवास्तनम्, (न०) कुवाया आसनं-य० त० । कुवाश्रं आसन । कुवाशी बनीहुई वयाई ।

कुवायती, (स्त्री०) कुवा+अस्त्वर्थे मनुर् । मन्थन रामचन्द्रनीके पुत्र, कुवाशी पुत्री वा रामपत्नी

कुशिक, (पु०) कुल्+अस्त्वर्थे टन् । जमरदिन विधासिनका पिता । मुनिसेद । “कुवा इव” बली । वृक्ष । बदेश ।

कुशिन, (त्रि०) कुवा+नृन् । कुवासे मिला हुआ म

शीलय, (पु०) कुपितं शीलं अस्त्वर्थे व । पुत्रीलं
शक्ति । भीरु देशमें यशको प्रशिक्ष करनेकाय । नट ।
कायक । मंगिनेकाय । शाल्मीकमुनि । माट.

शीलय, (पु०) द्वि० व० । वृषाय लयथ । द्वि० नि० ।
रामजीके दोनों पुत्र.

शूल, (पु०) इन्+शूलच् । तुपति । तोहरी भाग ।
अथवा बोटा । इंट आदिवा बनाहुआ धान्य आदि रखने-
कायक जगह । भडोला.

शोषाय, (न०) शूरे जले सेठे । शी+श्व्+अडच् ।
कमल । शारणपरी । करनेका इश.

शोषकम्, (न०) शृणुयुं शृङ्क् । जलसे मिठा हुआ
शुष्क वृष.

शू, शैवना-श्या० पर० एक० सेट् । कुष्णाति । अश्वोपीट्
श्राकु, (पु०) कुष्णाति । कुष्+श्राकु । बनर एवं ।
आग । शरीर.

शु, (न०) कुष्णाति रोमं देहं वा । कुष्+शुच् । एक
रोग । एक प्रकार । कोहक । उड.

शुक्ति, (पु०) १ त० । विद्वग्नि । परोक्ष । गणक.

शुद्धि, (त्रि०) शुद्ध+अस्त्वर्थे इति । शुद्धीयुक्त ।
शुद्धी.

शुष्कण्ड, (पु०) ईशद् कम्पा पितृदेवुत्तार । अश्वेपु
कीजुपु कस्य दाह० । जिसके बीजोंमें बोरीली गर्मी हो ।
कुमहानामां वृत् । सिद्धजीके वाकदेवनाथा भेद । "श्रिया
शोर्" । लगभेद । शुष्क । उमा.

शूर, अतिहन करना । रिवा० पर० एक० सेट् । कुस्ति ।
शूरतार । अश्वोपीट्.

शुश्रूष, (पु०) कुष्+शु । जनपद । आवक मगर ।
शोचयिष्ठा.

शुशीह, (न०) ओ निमेष शोकर शुशीतोवेदुष्णोमी पर
वा आठगुणा शिवाजानादै । शूर । व्याज । अर्धप्रदोष.

शुभ, (न०) कुष्+शुम् । पूत । पत । शीरज ।
नेत्रका शोभनेद.

शुभमर्शुका-कापधनन्, (पु०) शुभमभि कर्मुं=
धनु दस्य-व० त० । पूत (अशोक-आव शरिके) ही
शिवका धनु है । बामदेव.

शुभमपुत्र, (न०) पत्न्या बन्धने प्रशिक्ष देता । पत्नीपुत्र
"कुशुभ" दहीअर्थ.

शुभमपुत्रम्, (न०) शुभमनां पुत्र । पत्नीपुत्र (पत्न्या)
कापका काय है.

शुभमपत्, (त्रि०) शुभ+अपत् । पूतोकाय.

शुभमपत्नी, (श्री०) शुभम+अपत्+ईच् । पूतकी । पर
श्री० शिवको शक्ति कपुर्ष्व (कुष्) कायक हो । अट्ट-
दही श्री.

शुभमलना, (श्री०) शुभमानां लना । पूतोकी सेड.
शुभमदायनम्, (न०) शुभमानां दायनम् । पूतोकी दायना
(ऐत्र).

शुभमलयाकार, (पु०) शुभमनां लयाकार । पूतोका
पुष्पा.

शुभमाकार, (पु०) १ त० । पूतोकी गान । बगन्त कपु ।
"शुभनी शुभमाकरः" गीता.

शुभमापीड, (पु०) शुभमनां शरीरः-भूतान् । पूतोकी
मात्र । पूतोका भूषण (जेवर)

शुभमायुध, (पु०) शुभमं भायुषं अयम् । शिवका पूत
दात्र है । बामदेव

शुभमासय, (न०) शुभमस्य लग्नस्य अन्वय । शुभके
लग्ना मय । शुभका मयु । पूतका मय । बगन ।
पूतोकी दात्रक.

शुभमित, (त्रि०) शुभमभूतन् । पूतकाय । शिवका
पूत निश्चल काये हो

शुभमेपु, (पु०) शुभमभि इकरो दाय । पूत शिवके
दात्र है । बामदेव.

शुभमोषय, (पु०) शुभमनां लयय । पूतोका कपु ।
पुष्पा.

शुभमोश्रयल, (त्रि०) शुभमं श्रायलः । शु० त० ।
पूतोके बमपीका.

शुभमम्, (न०) कुष्+शुम् । पूत शिवके कपु हो निश्च
इत् । शुभमत् । पूत । "शुभे" व । बमपीट्ट

शुभमिति, (श्री०) शुभमिना इति । शु० शिव । इत्त० ।
दात्रक । जगती

शुभमम्, (पु०) शु० शिव ईश्वर व शुभमिति । शुभम,
अच् । मतोप नि० । शिव्यु । शम्यु

शुभ, लक्षरंतोना । शुभ० अन्व० लय० ईश्वर । शुभके
अपुत्रक.

शुभ, (अन्व०) इत्त० "शुभ" इति कर्तव्ये ते-ई

शुभक, (न०) इत्त०-शुभ । इत्त०करी कर्तव्ये शिव
कपुका शरीर प्रकाश हीमत् । कर्त० इत्त०करी । शु० ।
जगती । पूत (त्रि०)

शुभक, (पु०) इ इति । इ+अच् । इत्त० । शुभ० । कर्त-
भेद । कर्त० शिव । कर्त० कर्त० । कर्त०करीक कर्त

शुभ-इ, (श्री०) इत्त०+इ व इत्त० । इत्त० अन्व०
शिव शिवके कर्तव्यके कर्त शिवक ही कर्तव्यके
पूत हो । कर्तव्य अन्वय (कर्तव्य)

शुभकट, (पु०) शुभमिति कर्तव्ये इत्त० । शिवके
कर्तव्ये शुभ कर्तव्य कर्तव्ये । कर्तव्य । कर्तव्य

शु, अन्वय दात्रक । कर्त० इत्त० अन्व० ईश्वर । शुभके
पूतोका । अन्वय । कर्तव्य

कुशीलय, (पु०) कुशिलं रीतं अस्त्रं च । कुशीलं
 वाणि । और देशमें बराबो प्रसिद्ध करनेवाला । नट ।
 कथक । मंगनेवाला । कालीकमुनि । भाट.
 कुशीलय, (पु०) द्वि० क० । कुशय लक्ष्य । द्वि० नि० ।
 रामजीके दोनों पुत्र.
 कुशल, (पु०) कुश+कृलच् । शुभाभि । तोहरी भाग ।
 अथवा बीटा । ईद आदिवा बनावुआ धान्य आदि रखने-
 लायक जगह । मजोला.
 कुशोदाय, (म०) कुशे जले रोते । शी+अच्+अडच् ।
 कमल । शारदापत्नी । बरनेका पुत्र.
 कुशोदकम्, (न०) कुशयुक्तं उदकं । जलसे मिला हुआ
 कुशका सुण.
 कुश, सेवना-क्या० पर० सक० सेट् । कुशाति । अशोषीत्.
 कुशाडु, (पु०) कुशाति । कुश+आडु । कानर स्यं ।
 भाग । रासीर.
 कुश, (न०) कुशाति रोगं देहं वा । कुश+कपन् । एक
 रोग । एक दरार । कोहट । कुश.
 कुशारि, (पु०) ९ त० । विद्वारि । पटोल । मथक.
 कुशिन, (त्रि०) कुश+अत्त्वयं इति । कुशरोगयुक्त ।
 कोहरी.
 कुम्भाण्ड, (पु०) ईषन् कम्पा पितृहेतुत्वात् । अण्डेषु
 बीजेषु बन्धु सक्त० । जिसके बीजोंमें मोटीही नहीं हो ।
 कुम्भानानी वृक्ष । सिद्धजीके गणदेवताका भेद । "त्रिधा
 दीप्" । लक्षानेद । दुर्गा । उमा.
 कुम्भ, अलिङ्गन करना । दिवा० पर० सक० सेट् । कुम्भति ।
 अकुम्भत् । अशोषीत्.
 कुम्भिल, (पु०) कुम्भ+क । जनपद । आवाद नगर ।
 योमविद्य.
 कुम्भीद, (न०) जो निर्भय होकर कुशीरोतेहुएसेमी चार
 वा आठगुणा विभाजितार्थे । मूत् । व्याज । अयंप्रयोग.
 कुम्भ, (न०) कुम्भ+उमच् । कूल । फल । खीरज ।
 नेत्रका रोगनेद.
 कुम्भकामुंका-पाषाणम्, (पु०) कुम्भानि कामुंका-
 धनु यन्त्र-क० स० । कूल (अशोक-आय आदिके) ही
 विषका धनुर् है । कामदेव.
 कुम्भपुर, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध देश । पाटलीपुत्र
 "कुम्भ" यहीअर्थ.
 कुम्भपुरम्, (न०) कुम्भानां पुरम् । पाटलीपुत्र (पटना)
 नगरका नाम है.
 कुम्भघत्, (त्रि०) कुम्भ+भृत् । कुलोवाला.
 कुम्भघती, (स्त्री०) कुम्भ+भृत्+ईप् । कुलोकी । वह
 स्त्री० जिसको माणिक ऋतुधर्म (कूल) आगया हो । ऋतु-
 स्त्री स्त्री.

कुम्भलता, (स्त्री०) कुम्भानां लता । कुलोकी बेल.
 कुम्भदायनम्, (न०) कुम्भानां दायनम् । कुलोकी काप्या
 (छेज).
 कुम्भस्तम्भः, (पु०) कुम्भानां स्तम्भः । कुलोका
 गुच्छा.
 कुम्भाकर, (पु०) ९ त० । कुलोकी खान । वरान्त ऋतु ।
 "कपूर्वा कुम्भाकरः" गीता.
 कुम्भापीड, (पु०) कुम्भानां आपीडः-भूषणम् । कुलोकी
 कावा । कुलोका भूषण (जेवर).
 कुम्भायुध, (पु०) कुम्भं आयुधं अयम् । जिसका कूल
 काय है । कामदेव.
 कुम्भासय, (न०) कुम्भस्य सदसस आसवः । कूलके
 रखका मय । कूलका मयु । कूलका मय । शरत् ।
 कुलोकी शराव.
 कुम्भमित, (त्रि०) कुम्भ+इन्च् । कूलवाला । जिसपर
 कूल निबल आये हों.
 कुम्भेषु, (पु०) कुम्भानि इषो यस्य । कूल जिसके
 भाग हैं । कामदेव.
 कुम्भोद्यय, (पु०) कुम्भानां उद्ययः । कुलोका समूह ।
 गुच्छा.
 कुम्भोज्ज्वल, (त्रि०) कुम्भैः उज्ज्वलः । ९० त० ।
 कुलोसे बनधीला.
 कुम्भम्, (न०) कुम्भ+उमन् । कूल जिसमें बहुत हों ऐसा
 वृक्ष । कुम्भमा । कूल । "सायें" क । कामदेव.
 कुम्भति, (स्त्री०) कुम्भिता वृत्तिः । कुम्भिन् । शय्या ।
 शय्यात । जापूरी.
 कुम्भम्, (पु०) कुं भूमिं ईषत् वा लुभति । कुम्भम्+
 अच् । नलोपः नि० । विष्णु । समुद्र.
 कुम्भ, आयुर्होना । कुम्भं आत्म० सक० सेट् । कुम्भये
 अचुकुम्भत्.
 कुम्भ, (अन्व०) कुम्भ । "कही" इसी अर्थमें होताहै.
 कुम्भक, (न०) कुम्भ+कुम् । इन्द्रजालकी मायासे किसी
 बलुआ ओरही प्रकारके सीलना । माया । इन्द्रजाल । छल ।
 जापूरी । धूर्त (त्रि०)
 कुम्भर, (पु०) कुं हरति । इ+अच् । गुहा । गुहा । नाग-
 भेद । गडा । छिद्र । गला । कान । एकप्रकारका माथ.
 कुम्भ-क, (स्त्री०) कुम्भ+कृ वा कृ । वह अनामक
 कि जिसमें बन्दपाकी कल्प और चतुर्दलीसे
 युक्त हो । खोलका ...
 कुम्भक, (पु०) दस्यः । जिसके
 कुम्भक इह ऐसा
 कुम्भक करना
 कुम्भके ।

ता । तना० उभ० सङ० अग्निद् । करोति । पुरते ।
पूर । अष्टत.

ना । पुत्रा० पर० सक० सेद् । किरति । अवासीत् ।
ः।

हुः (पु०) हुकेण कण्ठेन वक्ति । वच् भोलना-
कथ्य । पुत्रद । मोर । सरद पत्नी.

ःकन, (स्त्री०) हुकं कण्ठं अटति । अद्+ध्रुल्-
कपि आह्वम् । श्रीवामे कंठी जगद् । धष्ठी.

(न०) हुद्+रु-ओञ्तादेशः । बट । हुःरा ।
वा कारण पाप । बटदेनेवाय प्रजापत्य आदि मत ।
हृष्परोम.

हटना । पुत्रा० पर० सक० सेद् । चकनं । कृतति ।
तीद ।

धीर्तेन कटना । पु० उभ० सक० सेद् । धीर्तेयति-ने ।
धीर्तेत्-त् । हुतः.

(न०) हु+क । देवताओंका चारहजार वर्ष ।
धोंके मानसे १७२८००० वर्ष । सत्ययुग । पूर ।
। बत । फल । रचमाया (त्रि०).

(न०) हुन+हुन् । बनावटी । ह्म्टीकल्पना
। गया.

मेन्, (त्रि०) हुनं कर्म । येन । जो अपना काम
पुष्प है । बनुर । परमात्मा । संन्यासी.

य, (त्रि०) हुनं कृत्यं कृत्यं येन । जो अपना
। करबुझाहो । हुनार्थ । समाप्तकार्यं । धन्य । विद्वान्.

य-किय, (त्रि०) हुनं कृत्यं येन । जिसने अपना
। जिन मिद कर लिया है । कामयाब.

ण, (त्रि०) हुतः क्षणः समयो येन । जिसे समय
। गया हो । सन्धावकाश.

(त्रि०) हुतं हन्ति । हुन्+क । जो कियेको नाश
। है । उपकारीका अपकार करनेहारा । “हुतो
। स्त निष्कृतिः” पुराणम्.

ह, (पु०) हुतं शूद्रकर्म यस्य । जिसका शूद्रकर्म
। उचनसंस्कार हो चुका है.

(त्रि०) हुनं जानाति हा+क । कियेको जानेहारा ।
। उचकार.

(त्रि०) हुनं हुतोपकारं जानाति । हा+क । जो
। वेगये उपकारको जानता है । उलट कर उपकार
। नकाश.

ते, (त्रि०) हुना सम्पादिता पीयैत । जिनने क्षण-
। अभ्याससे अन्तःकरणको शुद्ध कियाहै.

णात्, (पु०) कियेगये पुष्य और पापका भोगके
। ना नाश होना । हुतहाति । पुष्यपापकी हानि.

हुतम्, (अम०) “अर्ल” इय अर्थमें । बत । निषेध ।
। रोकना.

हुतलक्षण, (त्रि०) हुतानि लक्षणानि क्षण । जिसके
। लक्षण कियेगये हों । गुणोंसे प्रसिद्ध कियागया.

हुतपिद्य, (त्रि०) हुता अभ्यस्ता मिया येन । जिसने
। विद्याका अभ्यास किया हो । अभ्यस्तपिय । विद्वान्.

हुतपीर्य, (पु०) हुतं पीर्यं अनेन । एकवीरराजाका
। पुत्र । बली । एक राजा.

हुतधम, (त्रि०) हुतः धमो येन । (जिसने मिदगत
। धी हो । महोहाही । बड़े पापकाल.

हुतस्वर, (पु०) हुतः सरो यत्र । सोनेके उपजनेकी
। जगह । सोनेकी रान.

हुतदस्त, (त्रि०) हुतः अभ्यस्ता ह्मो येन । जिसके
। हाथमें बाण आदि चलनेकी चतुराई हो । तिरंदाज सीता-
। हुआ जन.

हुताञ्जलि, (पु०) जो हाथ जोड़नेके समान पत्तोंको
। शिकोड सेताहै । सजाउरक्ष । हाथ जोड़ेहुए (त्रि०).

हुतारामन्, (पु०) हुतः शिक्षितः संस्कृतो या आत्मा
। अन्तःकरणं यस्य । जिसका चित्त सीसाहुआ है ।
। जिसका मन साफ है । शिक्षितचित्त । शुद्धान्तःकरण.

हुतात्यय, (पु०) हुतस्य कर्मजन्यभोगस्य अत्ययो-
। कथानं । कर्मसे उत्पन्नहुए भोगका अन्त । भोगके विना
। कियेगये कर्मका नाश.

हुतान्त, (पु०) हुतः अन्तो येन । जिसने अन्त कर-
। लिया । शिद्धान्तको जानाहुआ । हातनिदान्त । “हुतो
। नाशो येन” । नाशकरनेवाला । देव । पाप । यम.

हुतार्थ, (त्रि०) हुतः अर्थः प्रयोजनं येन । जिसमें
। काम करलिया । हुतकार्यं.

हुतात्त्र, (त्रि०) हुतं शिक्षितं अर्लं येन । जिसने अर्ल-
। का बलाना सीरा कियाहो । शिक्षितात्त्र.

हुति, (स्त्री०) हु+कियत् । पुष्पका प्रयत्न । कर्ताका
। ध्यापार । २० अक्षरके पादबला छन्दोमेद.

हुतिन्, (पु०) हुतमनेन । पण्डित । योग । पुष्पवान् ।
। बनुर । पापु । हुतार्थं.

हुतोद्भव, (त्रि०) हुतः उद्भवस्कारः यस्य । ब० स० ।
। जिसका तर्पण वा जलप्रतिवेरकार किया गया हो ।
। अत्रली रिया हुआ.

हुतोद्वाह, (त्रि०) हुतः उद्वाहः येन । ब० स० । जिसका
। विवाह होगया हो.

हुतोपकार, (त्रि०) हुतः उपकारः यस्य । ब० स० । उप-
। कार किया गया । सहायता पहुंचाया गया.

हुतोपभोग, (त्रि०) हुतः उपभोगः येन । जिसका भोग
। भोग किया है । किसी बलुको काममें ला चुका हो.

एप्पणा(सा)र, (पु०) एप्पणागी सारः (सारः)
 बालम् । बालधारणम् । हरिणका मेद । जो बाल
 भी विहित हो । यकीका इत्यतः ।

एप्पणसखः-सारथिः, (पु०) एप्पणस सखा वा कृष्णस
 सारथि-उत्स० । भीष्टृष्णका मित्र वा स्यवाही । शत्रुनं ।

एप्पणाजिन, (न०) एप्पणार हरिणका चमरा ।

एप्पणाएक, (पु०) एप्पणं वर्णं एति । एतन्क । कृष्ण ।
 गुणवत् । रती । बह आधी वाली होकीदे ।

एप्पणाष्टमी, (स्त्री०) कृष्णस्य अष्टमी । कृष्णके जन्मदिन
 श्रावणकृष्णपक्षकी अष्टमी । गोकुलाष्टमी इती अर्थमें ।

एप्पणका, (स्त्री०) कृष्णैव । चंद्रायं कन् । सौं । राजसपैप ।

एप्पया, (स्त्री०) इष्+अहांयं क्यप् । रोचनेलायक शृषिबी ।

केकय, (पु०) केकमेद । सूर्यवंशीयराजाका मेद । दशरथ-
 राजाकी स्त्री (स्त्री०) ।

केकार, (पु०) के मूर्धं क्नुं चीतं अस्य । कृ+अप् ।
 अलृक् स० । निम्नोन्नताक्षियुक्तपुरण । नीची ऊंची आंघ-
 वाला पुण्य । टीका ।

केका, (स्त्री०) के मूर्धं क्यवे कर्मणि ट अलृक् स० ।
 मोरकी बाणी ।

केकिन्, (पु०) केका अस्त्ये इति । मोर । मयूर ।

केतक, (पु०) कित्त-निवास करना । ण्युल् । केतकीशुश ।
 क्योडा ।

केतन, (न०) कित्त+स्युद् । पर । हाण्डा । चिह्न । वाम ।
 धमा कृत्य ।

केतु, (पु०) वायु+तु कयादेशः । रोग । चमक । सन्दी ।
 चिह्न । वातु । नवग्रहोंमेंसे एक ग्रह । भूमकेतु । भीमारी ।

केदार, (पु०) के विरसि दारोऽस्य । पर्वतमेद । केदा-
 रेश्वर महादेव । शृषिबीका भागविशेष । कपारा ।

केनिपात, (पु०) के जडे निपातोऽस्य अलृक् स० ।
 अग्नि । केरी आदिकी गठिचो रोडनेकाता । हाथानामसे
 प्रसिद्ध काष्ठ । "केनिपातक" यही अर्थ ।

केत्यूद, (पु०) के कातुविरसि वाति । वा+उरक् । अलृक्
 स० । जो मुत्राके शिरेपर बालाकाताई । कातु । कुहा ।

केरद, (पु०) देशमेद । बह देश कि जहां वेरवे यहक-
 रवेका अधिकार नहीं । क्षत्रियमेद ।

केल्, दिलावा । भ्या० पर० सक्० वेद् । केलति । अकेलीत ।

केलि, (पु० स्त्री०) केल्+इत् । परीहास । मर्वात । बाल ।
 शृषिबी ।

केल्, सेवाकरना । भ्या० भा० सक्० वेद् । केवते । अकेविष्ट ।

केवल, (वि०) केल्+कलृप् । के सरति कलयति । कल्+
 अल् । अलृक् स० । एक । अकेला । पूरा । निधय
 विवाहभा । हानमेद । इत् । हाक (न०) ।

केस, (पु०) किरयवे डिधाति वा किरि+अच् छलो-
 पथ । कस ईसो वा । बरण । दैलमेद । विष्णु । बाल ।
 मञ्जुपातुका उपपातुविशेष ।

केसापात्री, (स्त्री०) केस+पात्र+णीप् । शिखा । बोरी ।
 केसोंके बीचकी चूना (कसमी) ।

केसामार्जक, (न०) केसान् मार्जि । गृज्+ण्युल् । कंगी ।
 कंकुतिहा ।

केदार, (पु०) के जडे चीर्यते । कृ+अप् । शेरके
 कंधेकी लटा । सोडेके कंधेपरके बाल । फूलकी तिरि ।
 नागकेसरका इत्यतः । गुपारीका पेड ।

केदा(स)रिन्, (पु०) केदा(स)रः सन्त्यस्य इति ।
 सिंह । शेर । घोडा । पुषागशुश । नागकेसर । वीज-
 पूरकइस । तरबूज । हनुमानका पिला । वानरमेद ।

केदाय, (पु०) केसो मन्त्रदो अपि अनुकम्यतया वाति
 वा+इ । मन्त्र और रजनीपरणी जो दया कर्ता है ।
 "केसं केसिनं वाति दिनसि वा क" विष्णु । केसी-
 देखके मारनेवाला । सूर्य आदि अंदावाला परमेश्वर ।
 केस+प्राप्तस्ये क" । अच्छे बालोंवाला ।

केदावेदा, (पु०) केदास वेदाः । बालोंकी सजावट ।
 गुप्तका बंधन ।

केदिवा, (स्त्री०) केसिन इव वावति । के-क । सतापरी
 नाम एक वृक्ष ।

केदिन्, (वि०) प्रशस्ताः केसाः सन्त्यस्य । केस+इति ।
 अच्छे बालोंवाला । विष्णु । दैलमेद । सिंह । शेर ।

केदिनिपू(स्)दन, (पु०) केसिनं निपूदयति दिनसि ।
 नि+पूद+निष्+स्युद् । केसीको मारनेवाला । कृष्ण ।
 "केसिहा" यही अर्थ ।

के, शब्दकरना । भ्या० पर० अक्० अनिद् । कायति ।
 लकावीत ।

केकस, (पु०) कीकस-अण् । कीकस पुत्र । एक दैल ।
 जिन ।

केकेय, (पु०) केकयानो राजा, अण् । केकेय देशका राजा
 वा वाणक ।

केकेयी, (स्त्री०) केकेयस्यापत्यं स्त्री अण् । भरतकी मा ।
 दशरथकी स्त्री ।

केटभजिष्, (पु०) केटभं जितवान् । जि+भूजे जिप्
 कृत्व । विष्णु ।

केतकम्, (न०) केतकयाः पुर्ण-अण् । केतकी (केवज)
 इत्यका फूल ।

केतय, (न०) कितवस्य कर्त्त अण् । कपटता । छल ।
 जूभा । धण्ड ।

कैदारिक, (न०) केदार+समूहार्थे पुन् । उम् । का । केप्रतनुद ।
 बटुत वेत ।

श्रीशारदाः, (पु०) शोभं करोति इत्युत्पत् । देवमया
 राजाना बनानेकात् । देवमी श्रीश.
 श्रीशारदा, (पु० श्री०) इत्युत्पत्-नि० गुणः । अयो-
 ध्यापुरी । -ला टाप् ।
 श्रीशारदात्मजा, (श्री०) श्रीशारदायां राजा ६ त० । तस्या-
 त्मजा-पेटी । रामचन्द्रजीकी माता ।
 श्रीशारदाशक्तिः, (श्री०) श्रीशारदा शक्तिः । पेटीकी शक्ति (शक्ति) ।
 श्रीशारदाच्युतः, (पु०) श्रीशारदा च्युतः । श्रीश (राजान) -
 का मानिक । राजासी ।
 श्रीशारदायिका, (श्री०) श्रीशे शोभे । श्री+शुत् । श्री-
 शारदायिका रक्ताहुभा वाह ।
 श्रीश, (पु०) इत्युत्पत् । परमा मन्त्र । धन आदि रखने-
 का पात्र । भोज्य । बुद्धिवा । अयना (शि०) ।
 श्रीशोण, (न०) इत्युत्पत् को-बादेयाः । जो शोभनेमें शोभा प्राप्त
 हो । शोभनवसु (शि०) ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) श्री शुद्धि स्वर्णते । अशुद्धः गुणः । राजे-
 का भेद । शरायका भेद ।
 श्रीशुद्धिका, (पु०) शुद्धी मानां पादपतनवेनं च परवति ।
 टक् । पाण्ठमी । श्रीशे आदिके मरनेके इरते शिव
 पदनेकी जगहको देखनेहारा संस्थाही । दम्नी ।
 श्रीशोभय, (पु०) शुभो सन्तानं बन्धः । टक् । शरा
 कांठमें दुबारेहुके तलवार । तरकार ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) स्वप्न तर्गाणि । अपने घरमें इच्छा-
 पूर्वक काम करनेवाला ।
 श्रीशुद्ध, (शि०) इत्येनं मृगचपनदक्षेण वरति टक् । मांश
 देववर जीविका करनेवाला व्याप (शिवाय) । जो जालके
 वाय प्रमा है ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) शुभः शिवः भद्रवत्त्वेन विद्यतेऽयम् अम् । जो
 सुखें यत्ता है । शराय ।
 श्रीशुद्ध, (न०) शुभ+शरार्थेऽम् । इच्छा । तमासा ।
 श्रीशुद्ध देवनेका शिव ।
 श्रीशुद्ध, (न०) शुद्धक शरार्थेऽम् । श्रीशुद्ध । तमासा ।
 श्रीशुद्ध ।
 श्रीशुद्ध, (न०) शुभे पतने अर्धेति अशरार्थे नि० । पात्र ।
 पासी (शि०) । "श्रीशुद्ध शुद्धिर्नि अति श्रीशुद्धी,
 तदाशुद्धकत्वात्" । शिवायेशुद्ध होनेसे शुद्धका शिवाका
 आशुद्धान् । लंगोरी ।
 श्रीशुद्ध, (श्री०) शुभेत्वा इत्वं अम् । शुभेत्वा । उभर शिवा
 (यही शुभेत्वा की बात कहेंगे) । शुभेत्वा शक्ति । मन्त्रभेद ।
 श्रीशुद्ध, (न०) शुभारम्भ भावः अम् । उपजतेही शिवने
 श्रीशुद्धी पावके माता । शिव इत्येत्वाकी अशुद्धा (उभर) ।
 श्रीशुद्धकी शक्ति (श्री०) शुभारी ।

श्रीशारदाः- (पु०) शुभारिकायाः अशुद्ध-इत्युत्पत् ।
 शुभारिका शुभ । शुभारिका लक्षणा ।
 श्रीशुद्ध, (श्री०) शुभदानां इत्युत्पत् अम् । शारदा ।
 इसके इत्येसे शुभर शिवदेव । शक्तिकी पूर्णिमा ।
 अशुद्धी पूर्णिमा ।
 श्रीशुद्ध, (श्री०) शोः श्रुत्याः पालकत्वात् मोदक-
 शुभोदकी विष्णुः तस्यै अम् । श्रुत्यावनी पालन करनेहारे
 विष्णुकी जो हो । गदाका नाम है । (विष्णुकी गदा) ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) शुभेत्वा अम् । शुभराजकी गन्तति ।
 शुभराज और पाण्डके पुत्र (दोनों शुभके बंधमें उपजनेमें)
 श्रीशुद्ध, (पु०) शुभेत्वा । शुभेत्वामें वरना श्रुत्या ।
 "शुभः" अम् ।
 श्रीशुद्ध, (शि०) शुभे शारदा भयः अम् । अशुद्धे शुभका ।
 तन्त्रमें बदेहुए शुभारामे लगा शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (पु० श्री०) शिवशुद्धाः शरा अशुद्ध टक्
 शरादेव । श्रीशुद्धायेकी शरी (पतिव्रता श्री) का
 भेदा । "शुद्धायाः अशुद्धम्" । अशुद्धारिणीकीका भेदा ।
 शुभमाशुद्ध शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (पु० श्री०) शुभका शरा अशुद्ध का अशुद्ध
 टक् । अशुद्धारिणीकीका शुभ । नेहकाशुद्ध कदीनीका
 शुभ । भेदा ।
 श्रीशुद्ध, (पु० श्री०) शुभका शरा अशुद्ध । अशुद्ध टक् ।
 शुभमाशुद्ध श्रीका शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (शि०) शुभका अशुद्ध टक् । शुभराजके
 बलाशुद्धा । "शुद्धायेका टक्" । शुभका अशुद्ध ।
 "शुद्धे शुभस्य प्रवर्तयति टक्" । शुभस्येको बलने-
 हारा तन्त्रमें बदाहुआ शिवकी । मनु अदि । शरादम्नी ।
 शुद्धा । शराशुद्धम् ।
 श्रीशुद्ध, (न०) श्री श्रुत्यां लीने दम्पात् । अशुद्ध शरा ।
 बनेगे शराशुद्धा । शिवाशुद्धा । शिवा । शुभ शरा ।
 श्रीशुद्धका भेदा । शुभमाशुद्धे शक्तिका शुभका । शुभ
 शरा । शुभगीकी शुभ । शरा । अशुद्धकेमें पत्ता शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) शुभका शरा अशुद्ध । शुभका शरा
 अशुद्ध । शरा ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) शुभे अशुद्ध टक् । अशुद्धे शुभका शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (न०) शुभका शरा अम् । शुभके शुभ ।
 शरी । शराशुद्ध ।
 श्रीशुद्ध, (श्री०) शुभका शुभ टक् । शुभका शुभ ।
 "शुभका शराशुद्ध शरीने टक्" । शिवे अशुद्धे शरा-
 शिवे शराशुद्ध । शराशुद्ध । शरा । शिवका शुभ
 अशुद्धका शुभ ।
 श्रीशुद्ध, (पु०) श्रीशुद्धका अशुद्ध टक् । शुभे ।
 शराशुद्ध

कौशल्या, (स्त्री०) कौशलदेशे भवा एष । रामनन्दनी-
की माता ।
कौशाम्बी, (स्त्री०) कुशाब्जने निर्गता नगरी । अण् ।
एतन्नाम पुराने नगरका जो गंगापर है । कनाराजादी नगरी ।
कौशिक, (पु०) कुशिक्य गोत्रापर्यं । कुम+ठक् ।
कुशिक+अण् वा । विश्वामित्र मुनि । “कोशे भवः” टक् ।
नेत्रला पकडनेवाला । उडू । इन्द्र । गुग्गुलु । “कोशेऽधि-
कृतः टक्” । कौशाक्ष्य । स्वजानची ।
कौशिकी, (स्त्री०) इग नामकी दुर्गा । एक नदी । नाट-
कमें एक वृत्ति ।
कौशेय, (त्रि०) कौशात् उरिषं टक् । कीडाके राजाना-
से बनाहुआ कपडा । रेशमी कपडा ।
कौसल्यायनिः, (पु०) कौशल्याया अपत्यं क्तिप् । धीरम-
चन्द्रनी ।
कौसुम्म, (पु०) कुसुम्म+म्बयिं अण् । बनका कुसुम्भा ।
शाकभेद । “कुसुम्भेन रसं अण्” । कुसुम्भेके रंगये रंगा-
हुआ कपडा आदि ।
कौस्तुतिक, (त्रि०) कुस्तुला चरति टक् । मायाकरनेवाला ।
जादूगर । घूर्त ।
कौस्तुभ, (पु०) कुं भूमि स्त्रुभाति कुस्तुमो जलधिः तत्र
भवः अण् । समुद्रमे निकला । विष्णुकी छातीपर बडे
तेजवाला मणि ।
कौस्तुभवक्षस्, (पु०) ६ व० । कौस्तुभो वक्षति यस्य ।
मगवान् विष्णु ।
क्रय, मारना । घुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सेट् । क्रययति-ले ।
क्रयति । अचिक्रयत्-त् । अक्रयिन् ।
क्रस्, टेढाहोना । चमकना । बोलना । दिवा० घुरा० पर०
अक० सेट् । क्रसति । अक्रसीत्-अक्रसीत् । क्रययति-त्ते ।
क्रूप, दुर्गन्ध उटना । गीला होना । शब्दचरना । भ्वा० आत्म०
अक० सेट् । क्रूयते । अकृयिष् । क्रोपयति-त्ते ।
क्रकच, (पु०) क्रयति क्रदति शब्दायते । कच्+अच् । गाठ-
दार वृक्ष । आरा (पु० न०) ज्योतिषमें एक योगका भेद ।
क्रकचपाद्-द, (पु०) क्रकचमिव पादौ यस्य वा अन्यल्लो-
पः । जिसके पाव आरेके समान हों । कुकछारा । किरला ।
क्रकर, (पु०) क्रदति शब्दं कर्तुं शीघ्रं अस्य । अच् । जो क
क शब्द कर्ता है । एक प्रकारका तीतर । गरीब आदमी ।
क्रतु, (पु०) कृ+ध्रु । यूपवाला वा यूपके विना यज्ञ ।
सकल्प । मरीच आदि मुनिविशेष । वैश्वदेवभेद । इन्द्रिय ।
विष्णुका नाम । शक्ति । इच्छा । भेडा । पूजा । बुद्धि ।
क्रतुद्विष, (पु०) कृत् द्वैष्टि । द्विष+क्तिप् । यज्ञा बरी
द्वैत । नास्तिक ।
क्रतुर्ध्वसिन्, (पु०) कृत् दधसं ध्वंगयति । ध्वंक्+
निच्+निच् । दधके दधको नष्ट करनेवाला शिवजी ।

क्रतुपतिः, (पु०) कर्तो कर्त्ता-य० त० । यज्ञ
यज्ञा शतुमान करनेवाला ।
क्रतुपत्न्युः, (पु०) कर्ताः पत्न्युः । यज्ञ पत्न्युः ।
क्रतुपुरगः, (पु०) कर्तो पुरगः । यज्ञा पुरगः ।
क्रतुमुञ्ज, (पु०) कर्ता यज्ञे कर्त्तुमिच्छति ।
मुञ्ज+क्तिप् । यज्ञमें दिव्यगये धीशक्तिसे कर्तने
आदि देवता ।
क्रतुराज, (पु०) कर्तुषु राजते-राज्+क्तिप् । यज्ञमें
है । यज्ञोंका राजा (अगमेश्वर) ।
क्रतुराज, (पु०) कर्ता राजा । टक् मना० ।
राजा । अगमेश्वर यज्ञ । राजपूय यज्ञ ।
क्रच्, मारना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्रयति । अ
अक्रयिन् ।
क्रयन, (न०) क्रय् ल्युट् । मारना । काटना । “
कृन्” ऊंट ।
क्रदि, रोग । पचराना । अक० । बुलना । सक्
सेट् । क्रन्दति । अक्रन्दीत् ।
क्रन्दन, (न०) क्रदि-भावे ल्युट् । शोक आदिसे
गिरना । रोना ।
क्रप्, कृपा करना । भ्वा० अक० आत्म० सेट् ।
अकृपिष् ।
क्रम, जाना । भ्वा० पक्षे दिवा० पर० सक०
कमति । क्राम्यति ।
क्रम, (पु०) क्रम-भावकरणादौ घञ् । पांव रखना
जाना । एकके पीछे दूसरा । सिलसिलेवार ।
हमला ।
क्रामणः, (पु०) क्रामति अनेन-करणे ल्युट् । जिसके
चलता है । पाद । पांव । अर्थे । न्ये (न०)
कना । चलना । लापना ।
क्रामिक, (त्रि०) क्रमात् आगतः टन्+इक् । क्रमसे
क्रमानुसार सिलसिलेवार ।
क्रमुक, (पु०) क्रम्+उक् । तत-संज्ञायां क्व ।
मदभोग्या ।
क्रमेल, (पु०) क्रामति । क्रम्-विच् । एलति अच् ।
-क । “कृन्” ऊंट ।
क्रय, (पु०) क्री+भावे अच् । मोल देकर चीज
खरीदना ।
क्रयिक, (पु०) क्रयेण जीवति टन् । जो खरीदने
है । कर्गपानन । व्यापारी ।
क्रय्य, (त्रि०) क्री+यन् । “खरीदनेवाले खरीदने”
विचारये जो फैलायाजाय । खरीदनेके लिये दुकानार
गई चीजें । “क्रय्यत्तदर्थं” इति नि० ।

कल्प, (न०) कृत्+कल्प्-रत्नोत्पत्त्यात् । आमनांस ।
 कल्पानांस ।
 कल्प्याद्, (पु०) कल्प्यं अस्ति । अद्+किप् । मांस खाताहै ।
 राक्षस । गीघ आदि ।
 कल्प्याद्, (पु०) कल्प्यं अस्ति । अद्+अप् । राक्षस ।
 दोर । बाज । सुदौके मांसको पानेवाली आग । “कल्प्यादो
 गृहभक्षणे” ।
 कल्प्याद्, (पु०) कल्प्यं अस्ति । अद्+किप् । मांस पाने-
 वाला । राक्षस । गीघ ।
 कल्पिमिद्, (पु०) कल्पय भावः इमनिच् । कृपता । कमगोरी ।
 शुक्रता ।
 कल्पन्त, (पु०) कल्प्+क । घोडा । दवायाहुआ । लांपगया ।
 पिराहुआ (थि०) ।
 कल्पन्तदस्तिन्, (थि०) कल्पन्त अतीतं पदवति विनि । जो
 पिछपी बातको जानताहै । पण्डित । कवि । अतीतदश ।
 कल्पन्ति, (स्त्री०) कल्प्+किन् । आचरण । कपडरं करना ।
 दवाना । जाना । चटना । आकरके गोलेमें कुण्ड टेडी
 गोल बैठा जहाँसे सूरज गति कतां है ।
 कल्पि, (पु०) कल्प्+इति । इषादेः । इमि । कीडा । मकोडा ।
 छोटी कीडी ।
 कल्प्या, (स्त्री०) कृ+भावे स टाप् । करना । पूछकरना ।
 काम । आरम्भ । पेशा । इन्द्रियोक्त व्यापार । धातुका
 अर्थ । बदला । पूजा मिललाना । हलाना करना । गर्भाधा-
 नादि संस्कार । व्यवहारका एक भाग ।
 कल्प्यापद्, (पु०) व्यवहारका सीमता पद । (गणाद् लेख्य
 क्रिये गये दावेको पूरा करना । वै तीन पाद हैं) ।
 कल्प्याफल, (न०) ६ त० । कामका फल । यदस्ति
 उत्पन्नहुआ पुष्पापुष्प ।
 कल्प्यायोग, (पु०) योगके क्रिये क्लियागया देवताका आरा-
 धन आदि ।
 कल्प्यात्ममिहाद्, (पु०) कल्प्+अभि+हृ+घम् ६ त० ।
 किसी कामको बारं करना । “कल्प्यात्ममिहारेण निरा-
 ध्यन्तं सुमेव ह” माघः ।
 क्ली, मोल लेना । क्लारि- क्लम० अक्० अनिद् । क्लीगति-
 क्लीगते । क्लैगीन् । क्लेट् ।
 क्लीह, सेलना । भ्वा० पर० अक्० सेट् । क्लीडि । पिक्कीड ।
 अफीबीड ।
 क्लीडन, (ग०) क्लीह्+नुद् । परीक्षा । मसंठ सेलन ।
 सेलना ।
 क्लीन, (पु०) क्ली+क । सरीरहुआ । बारह प्रकारके पुत्रों-
 मेंसे एक । मोल लीमई कोई चीज (थि०) ।
 क्लीतानुनाय, (पु०) क्लीते अनुनासः एचन्त्यो दय ।
 सरीरवद् किसी प्रकारकी कुटुम्बके वरुणका । १८६ प्रा-
 र्थके विक्रममेंसे एक ।

कुञ्ज, (पु०) कुन्ज्+किप् । कुञ्ज । एक प्रकारका बगला ।
 कुञ्ज, जाना । टेडा होना । अनादर करना । सक० पर० सेट् ।
 कुञ्जि । अकुञ्जीत् ।
 कुञ्ज, (पु०) कुन्ज्+कर्मणि घम् । कंसंपर्वत । “अन्
 टाप्” । एकवीणा ।
 कुञ्ज, हेराहोना । गले मिलना । क्वा० पर० अक्० सेट् ।
 कुञ्जति । अकुञ्जीत् ।
 कुञ्ज, गुस्ता करना । दिवा० पर० अक्० उपगमंगहिन-
 सक० अनिद् । कुञ्जति । अकुञ्जत् । क्ल्यं अभिकुञ्जति ।
 कुञ्ज-धा, (स्त्री०) कुञ्ज्+किप् वा टाप् । इच्छाकी प्राप्ति न
 होनेसे उपपन्न हुआ विनामी इच्छा मेद । बोप । गुग्गा ।
 कुञ्ज, रोना । विनाला । सक० भ्वा० पर० अनिद् । कोरति ।
 अकुञ्जत् ।
 कुञ्ज, (न०) कुञ्ज-भावेक । रोना । हाथ करना । आर-
 कर्मणि क् । कुन्जादागया (थि०) ।
 कुट्, (थि०) कृ+र-धातोः कृ । कटिन् । सप्त ।
 निर्दय । बेरहम । दूसरेके साथ बँद करनेका । गरम ।
 बाजपक्षी । कडपक्षी । ज्योतिषमें कृष्णया सुबं, मंगल,
 राशि, राहु और केतु ग्रह । मुनहरी करनेका दरहन ।
 कुप्य, (थि०) क्री+पर । सरीरनेलायक कोई चीज ।
 केतव्य बतुमात्र ।
 कुप्य, (पु०) (न०) कुर्-दशना होना । जगलना । पनी-
 भाव । घोरता कन् । अक्० गोड् । राक्षस । कुप्य (पु०)
 पोडोकी छाती और भुज्जओका मध्य । (स्त्री०) टाप् ।
 काताती कन्द (पु० स्त्री०) ।
 कुप्यदस्ति, (पु०) कुप्ये अस्तिभेत् । जिसके पाँच मोरमें
 हो । कप्यार । कप्यु ।
 कुप्य, (पु०) कुप्य+घम् । दूसरेका अपहर (कुप्यं)
 करनेके लिये पित्तकी इच्छा मेद । दूसरेके अपिच्छी
 इच्छा । गुस्ता ।
 कुप्यहृद्, (थि०) कुप्यं करोति हृ+किप् । कुप्य करने-
 वाला । बोधी ।
 कुप्यज, (पु०) कुप्येज् जदते । जन्+ज् । कुप्ये । अन्व ।
 बेसमर्थी । कुप्येके अठ्, मण हैं जैसे कुप्यहृदोपी, क्लिती,
 बँद, ईर्ष्या, दूसरेकी उपति न मारना, अन्व (पुत्रोंमें
 दोष लगना), अर्धदण्ड (धर्मको विनाशना), कर्दण्ड
 (कर्णो कर्णं कर्ण) , परण्ड क्लिजना । कर्णौ ।
 कुप्यन, (पु०) कुप्यन्त्यु । कुप्यन्तु । कुप्येकः । कुप्य
 एत् । मेरुमेद ।
 कुप्ययना, (थि०) कुप्यय कटः । कुप्येके अर्धेन दृष्ट
 कुप्यहृद्, (पु०) कुप्यं एत्ति एत्-किप् । कर्णं
 कर्णवेकः । क्लिज् ।
 कुप्यानक, (पु०) कुप्यय शब्द ६० त० । कर्णो अर्धः ।

क्षेत्रिन्, (वि०) क्षेत्र+अस्त्वयं इति । नेतृवाला । क्षेत्रका
 स्थानी ।
 क्षेत्रिय, (पु०) परक्षेत्रे देहान्तरे विक्रियः । परक्षेत्र+
 य-नि० । दूसरे देहमें इलाज करनेवाला असाध्य रोग ।
 दूसरेके क्षेत्रमें उपाय पुत्र । क्षेत्रज पुत्र । क्षेत्रमें उपाय-
 हुआ लक्ष्य ।
 क्षेत्र, (पु०) क्षिप्+धन् । मिश्रण । मिन्दा । अहंकार ।
 लंपना । देरी । नेत्र । मेजना ।
 क्षेत्रः, (पु०) क्षिप्+धन् । फेंकना । इधर उधर हिलना ।
 भंगोका हिलना ।
 क्षेत्रक, (वि०) क्षिप्+धुत् । फेंकनेवाला । मेजनेवाला ।
 मनी देनेवाला । निरादर करनेवाला ।
 क्षेत्रक, (वि०) क्षिप्+धुत् । फेंकनेवाला । धम् साथें
 कर्त् । अन्य आदिमें अन्यकाके विना किसी दूसरेमें टाल-
 गया पाठ । गुन्दा जोड़नेवाला अंक (कुट्टक) ।
 क्षेत्रजम्, (न०) क्षिप्+धुत् । फेंकना । मेजना । बलना ।
 बिलना (समय) ।
 क्षेत्रज, (न०) क्षिप्+धुत् । प्रेरण । मेजना । फेंकना ।
 बिलना ।
 क्षेत्रनिका, (स्त्री०) क्षिपते चाल्यतेऽनया । क्षिप्+अनि ।
 विन्ने (बेसीछे) चलते हैं । नौका चलानेका दण्ड ।
 पाठमेर ।
 क्षेत्रणीय, (वि०) क्षिप्+अनीयत् । मिन्दियाल अथ ।
 पत्थर आदि फेंकनेवाला अथ । फेंकनेवाला कोई चीज ।
 क्षेत्रपिष्ट, (वि०) अयं एषां अतिगमेन क्षिपः इत्यत् । बहुत
 दौघ (जर्घ) करनेवाला । " बसुधै क्षीयिष्या देवता "
 इति धृतिः ।
 क्षेत्रम्, (न०) क्षि+धन् । खोजनी कल्पद्रव्य । मिमीहुई
 बसुधो बलना (पु० न०) कुण्ड (न०) कुण्ड-
 बन्ध (वि०) मुक्ति । कुट्टक (न०) ।
 क्षेत्रिन्, (वि०) क्षेत्र । इत् । स्त्री । मुष्टी ।
 क्षेत्र्य, (वि०) क्षेत्र्य इत्युत् । सुख देनेवाला । आराम
 पहुँचानेवाला । सम्य । सम्यक् । मध्यमत् । क्षान्ति-
 देनेवाला ।
 क्षेत्र, सारण्यः । क्षणिकः । ज्ञा० पर० अह० क्षणिकः ।
 सारणी । क्षणिकः ।
 क्षेत्र्य, (वि०) क्षेत्रे क्षणिकं इत् । दानें मन्दाय दिया
 गत् । स्त्री (स्त्री०) । बसुधु ।
 क्षेत्र, (न०) क्षेत्रम् इत्युत् । म । क्षेत्रम् इत्युत् । भेगोका
 इत्युत् ।
 क्षेत्रिन्, (स्त्री०) क्षिप्+धुत् इत् । बसु । वृष्टिरी ।
 इत्युत् । इति लक्ष् ।
 क्षेत्र, (पु०) क्षि+धन् । म । वृष्टि । वृत् । वृत् ।
 देव । इत्युत् ।

क्षोद्दाम, (वि०) क्षोदं क्षमते लच् । विचारने
 वाला । तबको निश्चय करनेकेलिये दोष करने
 चन । पीयनेवालाक ।
 क्षोदिष्ट, (वि०) अयं एषां अतिगमेन क्षुद्रः । इत्युत् ।
 देगः । बहुत छोटा । बहुत कमीना ।
 क्षोम, (पु०) क्षुम्+धम् । व्यर्थ इधर उधर हिलना
 मय आदिका कारण । अपने कामको न करनेमें
 पवराइत् । हलजुत् ।
 क्षोमण, (पु०) क्षोमयति क्षुम्+निष्+भ्यु । जो
 कामदेवके बाणका मेद । साह्यमें कहागया प्रति-
 षकनेवाला पुरुष । इधर ।
 क्षोद्र, (न०) क्षुद्राभिः सरपाभिर्निर्गृह्यतम् । शहरी
 ओंछे बनायाहुआ । " अय् " इत्युत् ।
 क्षोद्रज, (न०) शार्द्रावायते जन्मत् । शहरी ज-
 मोम । विषयक ।
 क्षोद्रघातु, (पु०) कर्म० । मासिक मत्तु । मति
 इत्युत् । छपा ।
 क्षीम, (पु० न०) क्षुमाया अन्त्या विकारः अय-
 (अलसी) की खाट (बलकल) का बनाहुआ
 देरीवाला । खनका बनाहुआ कारण । क्षुम्+धम्+
 क्षीम, (न०) क्षुरेण निर्गुप्तं अय् । उखरेमें क्षिप-
 (मुग्धन) आदि । हनामन ।
 क्षौरिकः, (पु०) क्षुरेण जीवति+क्षुर+उट्+इत् ।
 जीता है । नापिन । नाई ।
 क्षुण्, तैजकला । अदा० पर० गक० मेद । क्षौरी । अ-
 क्षमा, (स्त्री०) क्षमते भारे । क्षाम्+अम् । उधर
 वृष्टिरी
 क्षमाभूत्, (पु०) क्षमां वृष्टिरी विमर्शि पात्यती
 क्षिप् । मुक्च । जो वृष्टिरीका पालन करता है । वृ-
 परेन । पशत् ।
 क्षमार्य, क्षान्ता । ज्ञा० आ० गह० मेद । इ-
 अक्षमापित ।
 क्षियत्, व्यापकना । ज्ञा० आ० अह० मेद ।
 क्षयते इत्युत् ।
 क्षियत्, क्षयना । कर्षं बोधना । ज्ञा० पर० अ-
 इत्युत् ।
 क्षय, (पु०) क्षि+धन् । क्षीनभोगनामी इत्युत् ।
 मत्त । अक्षुणीती अक्षय । क्षयमेव इत्युत् ।
 क्षय, (स्त्री०) क्षि+धन्+उट्+इत् । क्षयती ।
 क्षयत्, (न०) क्षय+अम् । क्षि+धन् । क्षय-
 इत्युत् ।
 क्षय, (न०) क्षय+अम् । क्षि+धन् । क्षय-
 इत्युत् ।
 क्षय, (न०) क्षय+अम् । क्षि+धन् । क्षय-
 इत्युत् ।

ख

(पु०) खच्+इ । ख्यं । इन्द्रिय । शरीर । पुर । ध्वज ।
 खप । किन्दु । आकाश । स्वर्ग । सुरा (न०) ।
 खर्, इगना । भ्वा० पर० अच्+सेट् । खचयति ।
 ख, (पु०) से आकाशे गच्छतीति । गम्+इ । ख्यं ।
 खन्ता । बाण । पक्षी । वायु । सूर्य, चन्द्र आदिग्रह ।
 खप, (पु०) खगन् पाति । वा+क । गड्ड । "खग-
 पति" यती अर्थे ।
 खपति, (स्त्री०) ६ त० । पक्षीकी चाले (रीन, प्ररीन,
 मृगिन, संरीन, परिरीन, विरीन, अवररीन, अनिरीन, रीन,
 रीनक, गदागत, प्रगतिष्ठ, सम्पाठ) । तरह २ की परि-
 रीकी चालें ।
 खोल, (पु०) खं गोल इव । गोलेकी भांति आकाश ।
 भूगोलके ऊपर ठहराहुआ गोलस्वरूपवाला आकाश ।
 ख, बांधना । बुरा० उभ० खक० सेट् । खचयति-वे ।
 अचखचन्-त् ।
 खर, (पु०) से आकाशे चरति । चर्+इ । जो आका-
 शमें बिचरताहै । रासस (श्रीलङ्कामें भीष्म होताहै) ।
 ख्यं । वायु । ग्रह । खचर । आकाशमें जानेहारा (वि०) ।
 खर, (पु०) से चरति-वा -खेचर । आकाशमें घूमने-
 वाला । पक्षी । मेघ । सूर्य । वायु । दैत्य । आकाशीभूत ।
 खंचवे आदि ।
 खेत, (वि०) खच्+क । खंघाहुआ । मिलाहुआ । बद्ध ।
 दखन्ना । संयुक्त ।
 ख, मयन करना । रिङ्कना । भ्वा० पर० खक० सेट् ।
 खञ्जति । अराजीब । अराजीब
 ख, विंगलाहोना । भ्वा० इदिद पर० खक० सेट् । खञ्जति ।
 अराजीब ।
 ख, (पु० स्त्री०) खञ्+अच् । दधि । कड्डी । चमचा ।
 मधानी ।
 खलम्, (न०) खस्य खलम् । आकाशका जल । ओस ।
 आकाशसे वृष्टि ।
 खिक, (पु०) से आकाशे जीयते । अञ्+घम् । आजो
 गति सोऽस्यास्तीति टन् । साम्रा । कुशिये । खील ।
 खीकीसी वायु चलनेपरती ये आकाशमें उड़ने लगतीहैं ।
 ख्योतिस्, (पु०) से आकाशे ख्योतिः शब्द । जिसका
 प्रकाश आकाशमें हो । खद्योतकीट । टिटाणा । एक्कीना ।
 ख-क, (पु०) खजि-वाली विकलता । छीट म चल-
 सजना । अच् । खुल । पादबिडल । दूला । लंगडा ।
 खन, (पु०) खञ्+न्त्यु । एक पक्षी । मनोला । गमन ।
 जाना (न०) ।
 खद, चाहना । भ्वा० पर० खक० सेट् । खटति । अराजीब-
 अराजीब ।

खट, (पु०) खट्+अच् । अंधारआ । कफ । बलगम ।
 हल । पाग ।
 खटि, (पु० स्त्री०) खट्+इन् । शवरथ । मुर्देका तह्ला ।
 खटिक, (पु०) खट्+टन् । कुन्डे हाथवाला । डेडे हाथ-
 वाला । खटियामरी । खिदानेका इन्व (स्त्री०) ।
 खट्ट, पेरादेना । बुरा० उभ० खक० सेट् । खटयति-वे ।
 अचखर-त् ।
 खट्टा, (स्त्री०) खट्+इन् । आठ काठके खट्टोसे बनीहुई
 छेज । पलंग ।
 खट्टाङ्ग, (पु०) एक राजा । मानो छेजका अंग है । नर-
 पञ्जर । मनुष्यकी हड्डियोंका पित्ररा । महादेवका शक्ति-
 सोप । पीडका बंधा । ६ त० । खट्टाका अङ्ग (न०) ।
 खट्टाङ्गभृत्, (पु०) खट्टाङ्गं धिमाति । गृ+किप्+भृच् ।
 जो खट्टाङ्ग(नरपञ्जर)की धारण करताहै । शिव । बटुकभरव ।
 खट्टाकट, (पु०) खट्टा+अम् । आ+इह+क । मिलासमा० ।
 प्रमादवाला । भूलनेवाला । बेपनाह । पलंगपर बडाहुआ ।
 खद, रिङ्कना । तोडना । भ्वा० आम्+सक०सेट् । खट्टे ।
 अचखिट्ट ।
 खङ्ग, (पु०) खडि+ग । नि० नलोप । गंडेका सींग ।
 गंडेके सींगवाला । गैंडापशु । चोरनाम गंधद्रव्य । कोह(न०) ।
 खङ्गफोप, (पु०) ६ त० । चमडेका बनाहुआ तरवारका
 टकना । मिथान । डाल
 खङ्गपिधान, (न०) खङ्गः पिधीयतेऽनेन । जिसके द्वारा
 तरवार छिपाई जातीहै । तरवारका खजाना । मिथान ।
 खङ्गिन्, (पु०) खङ्ग+अस्त्वर्थे इति । गैंडापशु । वह जन
 कि जिसके पास तरवार है ।
 खण्ड, (पु०) खडि+घम् । भेद । टुकडा । गमनेका विकार ।
 खाद । एकदेश ।
 खण्डकर्ण, (पु०) खण्ड इव कर्णं कन्दो यस्य । जिसकी
 जड़ टुकडोंके समान है । शकरकन्धी । आलूका भेद ।
 खण्डधारत, (स्त्री०) खण्डे एकदेशे धारा यस्य । जिसकी
 धार एकधोर हो । कर्तरी । कैंची ।
 खण्डन, (न०) खण्डि+न्त्युद । तोडना । फाडना । खण्ड
 करना । निकालना ।
 खण्डपरशु, (पु०) खण्डयति खण्डं परशुः अस्य । जिसका
 कुन्डाका टुकडाहुआ है । महादेव । महादेवका दिव्य परशु-
 राम । "खण्डपरशु" इसी अर्थमें होताहै ।
 खण्डित, (वि०) खडि+क । फाडागया । तोडागया ।
 दोड़के टिकागया । खण्डिता नखिया (स्त्री०) ।
 खण्डीर, (पु०) अण्डेका खण्डीर । पीली मूंगी । पीनसुङ्ग ।
 खतिलक, (पु०) रस टिलक । ख्यं
 खट्ट, पना होना अक० । मारना-खक० भ्वा० पर० नेट् ।
 खट्टि । अराजीब-अराजीब

गदिर, (पु०) गद+गिरण । गदकी लक्ष्मी । एक वृक्ष । इन्द्र । चन्द्रमा ।
 गदिरस्यार, (पु०) ६ त० । गदिरवृक्षकी गोदरा गार ।
 खद्योत, (पु०) खेद्योतते । सुन्+अच् । जो आकाशमें चमकता है । सूर्य । एक प्रकारका कीड़ा । टिडाना । पटबीजना ।
 खद्युप, (पु०) खं आकाशं धूपयति । धू+अच् । आगकी मेल ।
 खन्, फाटना । गोदना । भ्या० उभ० सक० मेट । खनति । अखानीत्-अखानीत् । अखनित् । खान्त्-खनान्त् ।
 खनक, (पु०) खन्+खुन् । मूषिक । मूसा । बुद्ध । उभि-तरकर । सप्रलगनेवाला चोर । पृथिवीको फाड़नेवाला (त्रि०) ।
 खनन, (न०) खन्+खुन् । खोदना । फाटना । सप्रलगना । गटाकरना ।
 खनि-नी, (स्त्री०) । खन्+ङ् वा णीच् । धातुरत्न आदिके उपजनेका स्थान । खान । पृथिवीको फाड़ना । खन ।
 खनित्र, (न०) खन्+इत्र । अत्रमेद । गोदनेका हृदयकार । अवधारण । रंसा ।
 खपगग, (पु०) खस परगगः । आकाशकी धूरी । अंधकार ।
 खपुष्पम्, (न०) खस्य पुष्पम् । आकाशका फूल । कोदनेनी अर्धभव नामुनकिन्न वस्तु ।
 खमूर्तिः, (स्त्री०) खस्य मूर्तिः । आकाशकी मूर्ति (एकल) । शंकरका नाम ।
 खर, (पु०) खं मुखविलं अनिग्रयेन अन्ति अस्य+र । खं इन्द्रियं राति । र+क वा । जिसके मुखका विल बहुत बड़ा हो । गधा । गदम । खचरा । खसमेद । कष्टकी-वृक्ष । कामदेव । लक्ष्मी । तीक्ष्ण वस्तु । कटिन सशंवाला (त्रि०) ।
 खरदूपण, (पु०) खरं उग्रं दूपणं उन्मादकताहेतुदोषो यत्र । जहाँ अत्यन्त उन्माद (पागलपना) उपनसित है । घत्सू । खर और दूपण नाम प्रसिद्ध राक्षस रावणके प्रधान । बड़े दोषवाला (त्रि०) ।
 खरध्वंसिन्, (पु०) खरं खरजानानं राक्षसं ध्वंसयति । खन्+धिञ्+निनि । खरनाम राक्षसको नाश करनेवाला । धीरामचन्द्रजी ।
 खरयानम्, (न०) खरवाहिनं यानम् । गधोंसे चलने वाले गाड़ी । गधेगाड़ी ।
 खरदाह्, (पु०) खरस्य चन्द्रः । गधेकी आवाज ।
 खरदान्ता, (स्त्री०) खरणा धान्ता । गधोंका तबेला ।
 खरादया, (स्त्री०) खरः अश्वते सुव्यवे अश्वम् । जो खरोंसे खाई जाती है । मनुष्यिका । मोरकी बटनी (घोड़ी) । रत्नप्रानानी वेद ।

गद, (पु०) गन्+ङ् । शत्रुमें रक्षा करने के अर्थकार । फोड़ा । टीप । काँटेप । चिह्न । कला । निबंध । वेगमत्त । पूरा । निवे । वेद गतं, पीडाहोना । अहं-गक बरना । ए०-गं-गन्ति । अगर्जी ।
 गजिन, (न०) गजे+गुट । बड़हन । गुरा । गुरजन ।
 गजु-वे, (स्त्री०) गजे+वा ऊर् । बड़ा । एकप्रकारका कीड़ा । गदृका वृक्ष ।
 गजुप्र, (पु०) गजुं कण्डपनं इति । एक-धनुग । गुरजीको दू करनेवाला आकाश इन्द्र ।
 गदं, दंगल । डंकमारना । डमना । भ्या० पर० सक० गदति । असादीन ।
 गदपं, (पु०) कपरेभ्योके समान पु० गदन् । ओर । धूतं । नटगट । मीगका पात्र । कर्ना । छाना । शायरी ।
 खर्व-र्व, जना भ्या० पर० सक० मेट । खर्वति ।
 खर्व-र्व, (पु०) खर्व (वर्)+अच् । इन्द्र । निधिमेद । संख्यामेद (हजार श्रेय) । नीच । बौना (त्रि०) ।
 खपेट, (पु०) खर्व (वर्)+अट् । वह नीचे पासकी एक ओर नगर बस रहाहो । और नदी एवं भी बहा हो । पर्वतके पासका गांव । मन्त्री खर्वेत् ।
 खल, चलना । हिलना । भ्या० पर० अहं-उत् । अयात्सीत् ।
 खल, (न०) खल्+अच् । घन मलनेका स्थान । वाहा । पृथिवी । तिलोका चूर्ण । खल । नीच । निदय । वेरहिम (त्रि०) "ने लीकते लीक" । आकाशमें छिन्नजाता है । सूर्य । "खं बर्णः क्लीकं त्रिसका रंग आकाशके समान है । तमालवृक्ष ।
 खलति, (पु०) खल् हिलना । पु० । खलति गंजका रोग । गंजा (त्रि०) ।
 खलपू, (त्रि०) खलं भूमिं पुनाति । पु+धिञ् । शोधन करनेवाला । शाफ करनेवाला । फल ।
 खलि, (पु०) खल्+ङ् । तेलकित । तेलका मेल ।
 खलि (स्त्री०) खलं । खे मुखछिरे लीक । वा हन्तः । जो मुखके छेकमें छिपी हो । घोड़ेके में स्थित होरही कविका । कटियाल । जो हिले दिया जाता है ।
 खलिनी, (स्त्री०) खलानां धान्यमर्दन्खलनी इति । घान मलनेके स्थानोंका समूह । खल ओका समूह ।

बहु, (अन्.) प्रश्न । सवाल । निश्चय । बाण्यकी घोभा करनेवाला । विशेष इच्छा । विशेष । बाण्यकी पूरा करनेवाला । कारण.

बलेकपोत, (पु.) सटे धान्यमर्दनमाने यथा कपोता युगपत् पतन्ति । धान मलनेके स्थानपर जैसे बहूतर एकहीकार आ गिरते हैं वैसे विदेवणोंका एसी स्थानपर आन्य होना । इस प्रकारका एक म्यामैद.

बल्या, (श्री.) गलना गमूहः यद् । धान मलनेके स्थानका गमूह.

बुद्ध, (पु.) गलतीति क्विप् । गम् । सं लतीति । छा+क । एकप्रकारका कण्डा । काम । गडा । पातक । पवीटा । मत्तक । औषध (दवाई) मलनेका पात्र । गल । गल.

बाण्य, (न.) १ त. । तनको आकाशमे बहनेवाला पानी । बरक । भोग.

बन्ध्या, (श्री.) रास्य पिशा । आकाशकी पिशा । एक प्रकारका ज्योति-पात्र.

बन्ध, (पु.) देगमेद । दिवालयेके पातका देस । पतिन । शत्रियमेद.

बन्धवन्ध, (पु.) पोतानामी कलवाला बन्धमेद । जिमके हलको अदिपिन बहतेहैं । अर्धम.

बाण्य, (पु.) इन्द्रमल्य । देहली नगरके पातका बज.

बाण्य, (न.) गन्धक । गडा । लालवरी आदि । "पूर्त गान्धरि बर्मे थ" इति ल्यात् ।

बाण्य, (पु.) गन्धकम् । गार्धे बन् । परिता । गार्धे । "गान्ध इव बाण्यी । वै+क." अधगर्ण । बर्मेदार । जणी. गार्ध, लाना. । अन्+ पर+ गन्+ सेट् । गार्धरि । आगरीय.

बाण्य, (पु.) गार्धरि । गार्ध+गुम् । जगलनेवाला । बर्मेदार । गानेवाला । गवैया (वि.) । "गार्धिका" (श्री.)

बाण्यमोदना, (श्री.) गार्धतं मोदन् इति तानं यत्र अग्निपीयते । गाभो मुदीमगाभो इत्यप्रकार जहाँ निरन्तर बहा जाता है.

बाण्य, (पु.) गार्ध-कारणे लुट् । जिमके द्वारा गाथा जणा है । दाँत । (नं. न.) लाना । कबला । भोजन । लुट्+क.

गार्धरि, (वि.) गार्धरिस्व पिशातः अम् । गार्धरि (घी) की लकीरका बन्दुका लुट् (बहना संभ.) आदि.

गार्ध, (वि.) गार्धितुं शीघ्रम् । अनेकप्रकार । लुट्+क.) भोजन । गान्.

गार्धिनी, (श्री.) सं अर्धरि । लुट्+क. लीट् । वा हल+क. अर्धरिवा परिष्क (कण) को १. गे. अर्धो ११ मन ३१ शेरका होना है (५१२ है)

गार्धिक, (वि.) गार्धो बाण्य । गार्धि (घी) परिष्काने अम् वा ईकम् । गार्धि (१६ शेर) परिष्काने । अर्धोके बोनेका क्षेत्र । गार्धिभर धानआदि.

गार्धिक, (पु.) गार्धमगम् । गार्धि अर्धरि । जे अर्धके समान प्रतीत होनी है.

गार्धि, बरना । अन्+ पर+ अक. सेट् । गेट्ति । अनेदीट्.

गार्धि, चीन होना । पिशा. गीर तथा. अन्+ अक. अनिट् । गिपते । गिपते । अनित्त । गिप

गार्धि, (वि.) गिप+क. । दैव्ययुक्त । दु गमे पदागुमा । आलसी । गेट्दुक्त.

गार्धि, कर्णिये युगला । दाना ३ होना । गुण+ पर+ गन्+ सेट् । गिपति । अनेदीट्.

गार्धि, (वि.) गिप+क. । हल आदि न संस्कारात् सेन आदि । बट क्षेत्र रि जहाँ हल नहि बलादा गया । बोदे में पार । पहिले न बदेगयेका परिष्क (करी) जेऊ कारवेद आदिमे धीगूक । बजुवेदमे पिबनेकाय आदि । महाभारतमें हरिबंध कारायण (बट जीमकपुत्रे गन्धे)

गु, गन्ध (आपान) बरना । अन्+ अन्+ अक. अनिट् । गवते । अगोश

गुम्, गुमाना । अन्+ पर+ गन्+ सेट् । गोपति । गुम्+क. अगोशीट्

गुम्, गुणना । टुबदे ३ बरना । गुण+ अन्+ लक. सेट् । गोपति-से । अगुशीट्+क.

गुम्, गुणना टुबदे ३ बरना । पंजा गारना । गुण+ पर+ लक. सेट् । गार्धि । अगोशीट्

गुम्, (पु.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (वि.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (पु.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (वि.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (पु.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (वि.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (पु.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (वि.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (पु.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

गुम्, (वि.) गुण+क. । अन् । लुट्+क. लुट् । अनेदीट् गंधस्थ । गार्धिका अन् । हल+क. पतत आदिवा दन्ध

सेटक, (पु०) सेट+थुल् । फलक । टाल । "सेटकं पूर्णचापं च" इति दुर्गाप्यानम् ।

सेद, (पु०) सिद्+थम् । दुग् । शोक । दिल्ली पवराइट् ।

सेय, (न०) सन्+थत् । परिष्ठा । गाई । गोदनेलायक (त्रि०) ।

सेल्, द्विजना जाना । भ्या० पर० सक० सेट् । नेलति । अघेयीत् ।

खेलन, (न०) गेल्+थ्युल् । खीटा । गेल् । गेलना ।

खेला, (स्त्री०) खीटा । खेल् गेलना ।

खेव्, सेवाकरता । भ्या० आत्म० सक० सेट् । खेवते । अघेयिष्ठ । अघिनेवन ।

सेसर, (पु०) से आकाश द्व शीघ्रगमितान् गुरति । स+त् । अथुक् समा० । जट्टी हलनेमे मानो आकाशमे चलती है । अथतर । राबर । अम्बर । एकप्रकारका पशु ।

खोद्, गतिप्रतिघात चालका रकना । भ्या० पर० सक० सेट् । खोटयति-ते । अनुसोटन्-त ।

खोटि-सी, (स्त्री०) खोट्+इ चोप् । चतुर स्त्री । अकल्पमन्द और खचरी (स्त्री०) ।

खोड्, चालका रकना । भ्या० पर० सक० सेट् । खोटति । अखोटीत् । अनुखोडत्-त ।

खोड, (त्रि०) खोड्+अच् । खज । लंगडा । लड्डा । लंटा ।

खोद्, गतिवैकल्य-चालका दूटना । भ्या० पर० सक० सेट् । खोलति । अखोटीत् । अनुखोलन्-त ।

खोर-ळ, (त्रि०) खोर् (ल्)+अच् । खज । लंगडा । लड्डा । लडा ।

ख्या, कहना । अदा० पर० सक० सेट् । ख्याति । अख्यात् ।

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त । ख्यातिसमन्वित । प्रतिदि-वाद्य । मगहूर । कथित । कहागया ।

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त । प्रसिद्ध । जाना गया । नामवाला पुकार गया । कहा गया । जाना गया ।

ख्याति, (स्त्री०) ख्या+क्तिन् । प्रशंसा । खुति । तारीफ । मगहूरि । कहना ।

ख्यापक, (त्रि०) ख्या+णिच्+थुल् । पुक् च । प्रकाश करनेवाला । प्रसिद्ध करनेवाला । मगहूर करनेवाला ।

ग

ग, (त्रि०) गम्+ट् । (केवळ समसमे फीले आताहै) जो जाताहै । जनैवाला । द्विजना । होना । उठरना । रहना । गंधर्ष । गणेशकी नाम । छन्दोगप्रथमे गुरु अक्षरके द्विये सिद्ध (पु०) गीत । गी+क्त (न०) ।

गगन-ग, (न०) गम्+गुच् । गगन्तादेवः । कड़े कहेते हैं कि "गन्" की मूल है जैसे "कामुने गगने केने पत्नीमिच्छति वरंणः" । आकाश । फोल्ड । शून्य । निम्न । सगं । परिदत्त ।

गगनस्पज, (पु०) गगनस्य स्पज इव । का प्राग्जा है । मेघ । बादल । मृगं । मृग ।

गगनगद्, (त्रि०) गगने मीदति । काफ (पु०) स्वर्गःसीमूल । देवता ।

गगनसिन्धु, (स्त्री०) गगनस्य सिन्धुः । गगना नाम ।

गगनस्य, (त्रि०) गगने निवृत्ति स्यात्+क्त । नैसाय । स्थित । इमी अर्थमें ।

गगनस्पशंसः, (पु०) गगने स्पृशति-अन क हारा । वायु । आठ मन्त्रोंमेंमें एक ।

गगनाङ्गना, (स्त्री०) गगनस्य अङ्गना । अ अ+सरा ।

गगनाम्बु, (न०) गगनस्य अम्बु । अ अ+प्रांसा पानी ।

गगनेचर, (पु०) गगने चरति । चर्+उठ् । में विचरता है । मृगं आदि प्रह । न पक्षी । देवता । राशिओंका चक्र ।

गग्ना, (स्त्री०) गम्+भान् । अपनेतानने प्री प । दुगां । देवी ।

गग्नाज, (पु०) गग्नायां जायते । जन्+उठ् । उपजा । मीम । कार्तिकेय । शिवकीने व डाला यह सहाय न सक्ता इमस्थिते उपने दिया उत्से कार्तिकेय उपजा यह पुराणकथा है ।

गग्नादक्ष, (पु०) गग्नाया दक्ष । गंगासे मीम वा कार्तिकेयका नाम ।

गग्नाद्वारम्, (न०) गग्नाया द्वारम् । गंगा स्थान । द्वारद्वार ।

गग्नाघर, (पु०) गग्ना घरति । घृन्+अच् । शिवकी (इमने जयामे गंगाको घरण कि पुण्य है" । समुद्र ।

गग्नापुत्र, (पु०) गग्नायाः पुत्रः प० त० । गं मीम वा कार्तिकेय । एक प्रकारका नीच ज जिमका काम मुर्दोंको लेजाना है । यात्रियों करनेवाला प्राज्ञगण ।

गग्नाभृत्, (पु०) गग्नां विभर्ति-भृ+क्तिप् । गग्ना करनेवाला संकर । महादेव ।

गग्नाम्बु-अमम्, (न०) गग्नाया अम्बु+अमम् । जल । शुद्ध इष्टका जल जो अस्तुवा भाति गिरता है ।

गग्नालहरी, (स्त्री०) गग्नायाः श्लोकानिमिषा यत् प्राथ पण्डितका बनाया हुआ एक प्रकारका कव्य खुनिमें है ।

ज्ञायतारः, (पु०) ग्ञाया अतारः । गत्राका पृथिवीपर उत्तरना.

ज्ञाएकम्, (न०) गत्रायाः अष्टके=अष्ट श्लोकानां समूहः । गगाकी स्तुतिमें आठ श्लोकोंका समूह.

ज्ञासामर, (पु०) गत्रायाः सामर । वह स्थान जहाँ समुद्र में गत्रा गिरती है.

जट, (पु०) गम्+ज । जट । इतल । लीलावतीमें प्रसिद्ध अंकमेद.

ज, मद्मे एवहरता । भ्या० पर० अह० सेट् । गजनि । अयाजीत् । अयाजीत्.

ज, (पु०) गज्+अच् । हाथी । आठकी संख्या (गिनती) । मनुष्यकी ३० अंगुलतकका परिमाण । एक दैत्य जिसे महादेवने मारदियाया.

जपछाया, (स्त्री०) अमृ महीनेकी मघानक्षत्रकाली नवोदयी (इमें धाद करनेका विशेष पुण्य होताहै)

जता, (स्त्री०) गजानां समूहः सञ् । हाथियोंका समूह.

जदन्त, (पु०) गजम् दन्तौ इव दन्तौ अस्म । गणेशजी । हाथीदंतके समान दंतकला (वि०) ६ त० । हाथीका दंत । बरिदन्त (पु०).

जपुट, (पु०) हाथभरका घडा.

जमिया, (स्त्री०) ६ त० । दादहीपत्र.

जम्बिधनी, (स्त्री०) गत्रा बन्धन्तेऽत्र । ल्युट्+धीच् । हाथीबांधनेकी शाला । अराबल । तबेडा.

जमहरया, (स्त्री०) गत्रैर्महरया । जिसे हाथी खाते हैं । दादहीपत्र.

जम्बुद्वीप, (स्त्री०) ६ त० । बटुगसे चीजकाली गिरिबदनी । राजकी.

जम्बुद्वीप, (न०) गजेन दक्षिणामयवृषेण सहित आङ्गो नाम बन्ध । हाथीकाली राज्याये जितका नाम प्रसिद्ध हुआ । दक्षिणपुर । बरणावन । रिणी । बुरबी राजधानी.

जजा (८) दान, (पु०) गत्रैर्यते । बर्मा ल्युट् । जिसे हाथी खाते हैं । अथवापत्र । सोरका दहन । दादही (स्त्री०) हीप्.

जजाजीय, (पु०) गत्रैर्यतेऽन्निनितासीत्ये । जीप् अच् । हाथीओंका पालन करनेके जितका संबन्ध होताहै । दक्षिणतक । हाथीओंका पालनेवाला.

जजानन, (पु०) गत्रस इव अर्धं सुप्तं बन्ध । हाथीके समान शिथिल सुप्त हो । गणेश । "हाथीको हाथिसे हाथका फिर बजायया पीठे हाथीके मस्तकसे हाथका सुप्त हुआ" यह प्रुत्तकी बात है.

जजागोह, (पु०) गत्रं आगेदधि । गज्+अच् । जो हाथीपर बजता है । दक्षिणतक । बर्मा । हाथीका

गजाह, (न०) गजमहिता आङ्ग बन्ध । हाथीके माथ जिनका नाम हो । दक्षिणपुर (दिने) । "गजहृद" वही अर्थ.

गज, (पु०) गजि+पच् । अघडा । अदर न करना । "आधारे पच्" । अण्गार । पासीका पर । मनि । गज । गौर्ये बांधनेकी शाला । नीचोंका पर । मटका पच् । मटकी शाला (स्त्री०) टाप् । दुकान । बाजार । मरी.

गह, सीपना । बाहिर निकालना । रग निकालना । भ्व० पर० सत्० सेट् । गजि । अयासीत्-अगसीत् । गुा० पर० । गज्याति । "गज-पिनाला । टाकना."

गह, (पु०) गह्+अच् । गह प्रकाशकी सगरी (सगरी) । विप्र । रोक । गार । व्यवधान । करण । शीकमें पदग्या देणमेद.

गहि-रि, (पु०) गह्+रि (ल) इट् । गामार्थे हंमेपर की पुट्यामे बोधा उठानेके इत्थे लगेया इत्थम (बद्) आदि । बच्छा.

गहु, (पु०) गह्+उ । मांगको बढानेवाला रोग । दृष्ट गहु (पुष्क) नाम रोगविशेष । गजगः रोग । बुद्धा । बच्छा.

गहुरि (ति) वा, (स्त्री०) गुरि (णे) ईप् अट्+रिणि । ट् । मेदेके पीठे जानेवाली मेदेकी बगर (रणि)

गण, गिनना । गुण० उभ० लभ० ऐट् । गणर्णं हे । अजीगण्+न । अजगण्+न.

गण, गण+बर्मादि बर्मेरि वा अच् । सिद्धकीका अनुसर । भूतगणुट् । संख्या । गिनती । १० हाकी, १० हा, १० पाडे, १११ बदादि (देदक) इत्थी गिनतीके गण । अर्थात् अर्थात् आदि प्रमुअंके गहुर । उदरिपुने देव आदि कामकले मथन (लरे) छ-लेदयने लं १ । अगणोवाके "ग व १" आदि आट । अण्+रिणि वा अट्

गणक, (पु०) गणददि+अच् । जो गिनती बर्मेरि । देदक । उलोभायी.

गणदेवता, (स्त्री०) गण देव गणदेव वा देवना । देवगणोंका समूह जिसे ११ बगट् आदि, १० सिद्धेक २ बगु, ३६ सुविन, १४ अयलट, १९ बगु ३१० महाद्विह, ११ काद, ११ बट । गणदेवदिव्य-लक्ष्मणिके अन्तर्गतिके । महाद्विहका दह दहक अन्तर्गतक ।

गणनाथ, (पु०) गणना इदददीना अच् । इदद अन्ते-अन्तेके हाथी । गणेश । दिव । "दक्षिणतक अन्ते" वही अर्थ.

गणपुत्र, (न०) गणनां दददीना अन्ते । "दद-ददके दददददद हेनेके सिद्धमन्ते हेका अन्ते अन्ते हेका" । दक्षिणतक । गहुर, बगुनी वगे । हाथका

गणरूप, (पु०) गणा बहुभिः स्वामि अर्थः । जिनके बहुतमों रूप हों । अकंठ्य । आकका इत्यन्तः ।

गणशास्त्र, (ध्व०) गणान् गणान् इति गण+शास्त्र । अनेक वक्ता । बहुवचनः ।

गणाश्रम, (त्रि०) गणाय उत्पद्ये, गणानां वाऽश्रमं । बहुतोंके लिये दियागया अश्रम । बहुतोंका अश्रम । मठ (भगवतः) आदिमें बहुतोंके लिये दिया गया अश्रम । वह अश्रम कि जिसके बहुतसे स्वामी हों । " गणाश्रमं गणिकान्तं चेति " मनुने नियुक्त अश्रममें गिना है ।

गणिका, (स्त्री०) गणः गमूहोऽस्त्यस्याः मन्वृत्वेन टन् । जिसके बहुतसे पति हों । वेद्या । कंचनी । कंचरी । हचिनी ।

गणित, (न०) गण्+माने क् । गिनना । "करणे क्" व्यक्त और अव्यक्तरूप अंकशास्त्र । पाटीगणित वेद्या और बीजगणित । "कर्मणि क्" गिनती क्रियागया । गिनागया (त्रि०) ।

गणेश, (त्रि०) गण्+श्व । गिनेलायक । गणनीयः ।

गणेश, (त्रि०) गण्+एङ् । कनेरका वृक्ष । हचिनी । वेद्या । कंचनी ।

गणेश, (पु०) गणानां ईशः । गणोंका मातृक । अपने नामसे प्रसिद्ध देवता । शिवजी ।

गण्ड, (पु०) गण्डि+अच् । हाथीकी गाल । गाल । गण्डीर । गेडा । चिह्न । निदान । बीर । मोडेका भूषण (लेवर) बुहुदा । बुलबुला । स्रोतक । कोटा । विष्कम्भादिमें एक योग । पिटक । संदूकरी ।

गण्डक, (पु०) गण्ड-स्वार्थे क विप्र । गण्ड । चिह्न । दाग । फोटा । प्रियोग । चार कौडीका गंडा ।

गण्डक, (पु०) गण्ड+स्वार्थे कन् । अपने नामका पशु । गंडा । गंडा (चार कौडी) । अन्तराप । द्वावट । अंग । निमान ।

गण्डकी, (स्त्री०) एक नदीका नाम जो गंगामें बहती है । गंडी ।

गण्डकीशिला, (स्त्री०) गण्डकानां तल्पमा शिला । गण्डकीमें स्तम्भभूई शिला (पर्यटका टुकड़ा) । शाल-प्राप्तशिला ।

गण्डमात्र, (न०) गण्डाः स्रोतका गण्डेऽवयवे यस्य । जिसके शरीरपर सर्वांगमें फोटे हों । चीनाकण्ड । माला निकलना ।

गण्डमिच्छि, (स्त्री०) प्रशलाः गण्डः । हाथीकी गालका फटना जिसमेंसे मद बूजा है । शीवारकी भांति हाथीकी गाल । बहुत टंडा, कौरी और सुन्दर हाथीकी गाल ।

गण्डमाला, (स्त्री०) गण्डानां स्रोतकानां माला । फोटीकी कवार । दृक्प्रकारका रोग जिसमें बहुत फोटे निकलते हैं ।

गण्डमूर्ध्नि, (त्रि०) गण्ड-सम्पन्नः मूर्ध्नि । (बहुवचनी) मूर्धा । बडा बड्याग ।

गण्डहोत्र, (पु०) होत्रस्य गण्ड इति । एकः स्यात् । पर्यन्तं गिरेहूण कोटे पर्यन्त । सचन्द्र । सचन्द्र ।

गण्डमयस्त्री, (स्त्री०) गण्डस्य स्त्री । गण्डा जन्म गन्ध । कपोलः ।

गण्डु, (पु०) गण्+उ । गण्ड । उदार । होत्र । गण्डुपद, (पु०) गण्डयुक्तानि पदानि यन् । (त्रि०) कोठेकोठे हों । केवुधा । किमुदक ।

गण्डुप, (पु०) गण्डि+उप । मुं भरनेका लोचुनी । हाथीके मुंठी नोक । आषकी अंगुली ।

गण्य, (त्रि०) गण्+यन् । गण्येय । शिष्टेके इन धरनेके लयक ।

गत, (त्रि०) गम्+क् । जानागया । गयदुना । जान गया । काम दियागया । गिरगया । समान हुआ ।

गतागत, (न०) गतं च आगतं च । जाना और जान गया और आया । पत्नीकी बालका मेरु ।

गतातया, (स्त्री०) कृतोत्सं आतंत्रः । तन्मते स्तुते । गत आतंत्रो यस्याः । जिसकी गतमें घाल करके नई नई रही । बांस । बूटी ।

गति, (स्त्री०) गम्+भावाद्गो क्तिन् । जाना । पय । टट हान । पहुँचना । दशा । यात्रा । सहर । इन कामका फल ।

गद्, (पु०) गद्+अच् । धीहृणका छोटा माँरे । ले बोमारी । "मावे क्" । कयन । कदना । विप । उरी ।

गदा, (स्त्री०) गद्+अच्+टाप् । अपने नतनेके छोटेके कोलवायी । लोहेका अश्र । पाटलाइस । हा गदा ।

गदाप्रज, (पु०) ६ त० । गदका बडा माँरे । श्रीहृणके ।

गदाधर, (पु०) गदा धरतीति । ४० अच् । ६ त० श्रीहृणक ।

गदारति, (पु०) ७ त० । औपच । दवार ।

गद्द, (पु०) गद् दलव्यर्थे गदति क् । अच् वा । बल और अरुण्ड शब्द । ऐसी आवाज कि जो गण्ड में बने । दहा धाक सुनाई न पडे । गिदगिदाना ।

गद्दभ्यनि, (पु०) गद्दः अव्यक्तः ध्वनिः । दह बने । दहा कानध्वनि आवाजका ठीक न निकलना ।

गद्य, (त्रि०) गद्+यन् । कयनीय । करनेलायक । कर्मिका रपादुधा पादरहित पदगमूह । वह रक्ता श्रीकर्ममें नई ।

गम्भी, (स्त्री०) गम्भ्यतेऽस्या हृत् । बीर । नीचेके बोके लायक गावी । जनेवाली ।

श्रीरथ, (पु०) श्रीरथ इव अभीष्टप्रधानप्रपञ्चत्वात् ।
रथकी भाँड़े काहे गये स्थानपर पहुँचा देनेहाय । गाँवा ।
गद्गा । बँलगादी ।
न्द, बँर करना । घुग्रा० आत्म० अक० सेद् । गन्धमते ।
अत्रगन्धर,

गन्ध, दलना । भ्वा० पर० सक० सेद् । गन्धति । अगन्धीर,
गन्ध, (पु०) गन्धु+ञ्च् । सम्बन्ध । लेस । गंधक । अर्ह-
कार । गुहांसना । पिसेगने चन्दन आदिवा नखिकादिदि-
यसे प्रदण करने योग्य गुणमेद (वह गन्ध पांच प्रध-
रवा है, जैसे घूर्ण पियामया, पियामया, जलया वा
से बागया, मलीभीति मलागया, प्राणियोंके अंगोंसे उपजा
हुआ) पिसाहुआ चन्दन आदि.

गन्धकःपूर्णे, (पु०) गन्धकप्रधानधर्मः । ऐसा घूर्ण कि
जिसमें गंधक बहुत हो । बाह्दनामी पदार्थ.

गन्धकाष्ठ, (न०) गंधयुक्त काष्ठ कर्म० । अणुवचंदन.

गन्धका, (स्त्री०) गंधं जानति अनया । घनयें क । जिसके
गंधको जानना है । नासिका । नाक.

गन्धकैल, (न०) गंधयुक्त चंदनमय अग्निसंयोगेन जनिते
तेलं । गंधवाले चंदनका आगके संयोगसे उत्पन्न हुआ तेल ।
अत्तर आदि.

गन्धक्यच्, (स्त्री०) गंधान्विता लक्ष् दस्याः । जिसका
छिलका गंधवाला हो । एका । इत्ययची.

गन्धदला, (स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः । जिसके पत्तोंमें
गंध हो । अत्रमोदा । अत्रकाईन । जवैन.

गन्धधन, (न०) गन्धु+भ.कारिण्यु ल्युट् । उल्लाह । दिलेटी ।
प्रकाशन । जाहिर करना । एहन । गुणलखोटी । हिंसा ।
मारना.

गन्धपाप्राण, (पु०) गंधयुक्तः पाप्राणः । गंधवाला पत्थर ।
गंधक.

गन्धघन्धु, (पु०) १ त० । आस्राश । आमका दरलत.

गन्धवीजा, (स्त्री०) गंधो बीजे यस्याः । जिसके बीज
(बीजों) में गंध हो । मेथिका साग । मेथी.

गन्धमादन, (पु० न०) गंधेन मादयति । मद्+मिच्+ल्युट् ।
गंधसे जो मला करता है । पर्वतमेद । अमर । और ।
बानर । बँवर । गंधक (पु०).

गन्धमादिनी, (स्त्री०) गंधेन मादयति । मद्+मिच्+
गिति । छाशा । छास । घुगनामी गंधवाला इव.

गन्धमांसी, (स्त्री०) गंधयुता मांसी । कर्म० । जठामांसी-
मेद । एक बनराति.

गन्धमुखी, (स्त्री०) गंधो मुखेऽस्याः । जिसके मुँहमें गंध
हो । गुह्रंदेरी । गुंवा । छुह्रंदर.

गन्धमृग, (पु०) गंधप्रधानो मृगः
जिसमेंसे बहुत गंध निकलता है ।

गन्धराज, (न०) गंधेन राजते । राज्+अच् । जो गंधसे
चमकता है । चंदन । गुग्गुलु । अपने नामका वृक्ष.

गन्धर्प, (पु०) गंधं शर्वति । अर्च्-जाना । अच् । मृग-
मेद् । घोडा । कोदल । लगका गवैया । देवयोनिमेद ।
देवोंका गायन.

गन्धर्पेनगर, (पु० न०) गंधर्षाणां नगरं इव । मानों
गंधर्षोंका नगर है । शल्यका आश्रयपुरका स्वरूप । नीले
पीले आदि बाहलौंड़ी रचनाका मेद । इन्द्रजाल । “गंध-
र्षपुरम्” इसी अर्थमें है.

गन्धर्षलोक, (पु०) १ त० । गुणलोकके ऊपर विद्याध-
रोंके लोकके नीचेका स्थान.

गन्धर्षवेद, (पु०) १ त० । सामवेदका उपवेद । संगीत-
विद्या । गाधर्व.

गन्धलोलुपा, (स्त्री०) गन्धे लोलुपाः । गन्धका लालच
करनेवाली । मक्खी.

गन्धयती, (स्त्री०) गंधु+मत्पृ-सको व होता है । व्यासकी
माता । शुषिकी । बापु और बरुणकी सपत्नी । मुग्रा । शरव.

गन्धवदकल, (न०) गंधो वदकलेऽस्य । जिसके छिलकेंमें
गंध हो । दारचीनी । दालचीनीका छिलका

गन्धवह, (पु०) गंधं वहति । वह्+अच् । १ त० । बापु ।
हवा । गंधवाला नायक (स्वामी) आदि (प्रि०).

गन्धवहः (पु०) गंधं वहति । गन्धको उठानेवाला ।
बापु । हवा.

गन्धवारि, (न०) गंधवारितं वारि । गंधवाले इव्यसे गुं-
धीवाला जल (पानी).

गन्धवाह, (पु०) गन्धं वहति । वह्+अच् । उर० ।
हवा । बापु । जो गंधको उठाती है । नासिका । नाक ।
(स्त्री०).

गन्धशाली, (पु०) गंधप्रधानः शालिः । बड़ी सुगंधीकाउ
चाकड़ । आमोदवाले धान्यमेद । वासमती आदि.

गन्धसार, (पु०) गंधयुक्तः पारो यम्य । जिसका सार
गंधवाला हो । चंदनका इव.

गन्धसोम, (न०) गंधार्थं सोमो विद्युर्मस्य । चन्द्रमा जिस-
की सुगंधीकी बढाता है । कुमुद (कुल), चन्द्रमाके उदय
होनेसे इसका गंध होता है.

गन्धहारिका, (स्त्री०) गन्धं -य इत्यर्थे
तवार करनेवाली स्त्री.

गन्धा, (स्त्री०) गंधु+मिच -य इत्यर्थे
कलिका । चम्बेकी

गन्ध, (पु०) गंधं इत्यर्थे
() आदीकी ।

गन्ध, (पु०) गंधं इत्यर्थे
सेता है ।

गन्धाक्षर, (पु०) गंधेन आक्षरः । गंधमे मराहुआ । चंद्र-
नक्ष । नागरंग वृक्ष । गंधवान्ना दरुश्च (त्रि०) ।
स्वर्णवृषी (स्त्री०) ।

गन्धाक्षय, (त्रि०) गन्धेन आक्षयः=पूर्णः । सुगन्धिमे मरा
हुआ । बहुत सुगन्धदार ।

गन्धाधिकम्, (न०) गन्धे अधिकं । बहुत गंधवाला ।
एक प्रकारका अक्षर ।

गन्धापकर्षणी, (न०) गन्धं अपकर्षति । गन्धको निवा-
रण करना ।

गन्धाभ्यु, (न०) (गन्धयुक्तं .अभ्यु) गंधवाला जल ।
सुगंधिवाला (सुगन्धदार) जल ।

गन्धार, (पु०) गंधं ऋच्छति । ऋ+धन् । वष० राग ।
सिन्दूर । एक प्रकारका स्वर (आवाज) देशमेद ।

गन्धाद्मन्, (पु०) गन्धवान्-अद्मन् । सुगंधिवाला
पत्थर । सत्कर । गेवक ।

गन्धाष्टकम्, (न०) गन्धानां अष्टानां समूहः । आठ सुग-
न्धिवाले द्रव्य जो देवताओंपर चढ़ाये जाते हैं ।

गन्धाष्टक, (न०) गंधानां (गंधद्रव्याणां) अष्टकं । आठ
सुगंधीवाले द्रव्य । चंद्रन आदि आठ गंधवाली चीजे ।

गन्धिनी, (स्त्री०) गंधो विद्यते अस्याः इति । जिसका गंध
हो । सुरानामी गंधवाला द्रव्य । शराव ।

गन्धेम, (पु०) गन्धप्रधानः इभः । गंधप्रधान हाथी ।
बहुत ही उत्तम हाथी ।

गन्धोत्तमा, (स्त्री०) गंधेन उत्तमा उन्मुह्या । बहुतही गंध-
वाली । मदिरा (मद्य) । शराव ।

गमसि, (पु०) गम्यते (जायते) गम्-ल-गः (विपद्यः)
तं गमसि (माययति) मग्+सिच् । विपद्य (पशुधं)को
प्रकाश करनेवाली । किरण । सूर्य ।

गमस्तिमन्, (पु०) गमस्ति+मनुप् । किरणोंवाला । सूर्य ।

गमस्तिहन्, (पु०) गमस्त्वो हन्ता इव यस्मि । जराको
मेंबनेमे जिसकी किरणें मालों दाय हैं । सूर्य । सूरज ।

गमीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गम् ईरन् । भान्ना-
देश्च । निप्र स्थान । नीचेकी जगह । जिसका तला न
होआ जाय । गहन । जहां प्रवेश करना कठिन हो । न
हटाना जानेहार ।

गम्, जना । भ्वा० पर० गङ्० क्षतिच् । गच्छति । अग-
मन् । जगम । गन् ।

गम, (पु०) गम्+अर् । एक प्रकारका जड़ा । जीवनकी
इच्छावलेही याता । जन्म । मार्ग । सराव फट ।

गमक, (त्रि०) गन्वति (बोधयति) गम्+विब+भ्युच् ।
बोधक । गन्तानेवाला । "गमक होनेमे समग्र हुआ" यह
भाव है । सवृत्ती । जन्मनेवाला ।

गमीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गम्+ईरन् ।
आगम हुआ । नि० जन्म वाणी जाता है । नीचेको
मन्द । गडिया । जमीर । कमठ । श्रद्धेय मन्
(पु०) । "अरे गम् व नामो व त्रिपु र्गन्धर्ष" ।

गमीरवेदिन्, (पु०) गमीर (मन्द) वेदि ।
गिन् । अन्व्याय की गद्दे विशाहो भी जो ।
तादे ऐसा हाथी । चमरा फाटनेमे छेद होने
काटनेमे भी जो अपनेको नहि समझता उसे नीचे
तामी कहते हैं ऐसा हाथी । "गमीरवेदिन् ।"

गय, (पु०) एक देवका नेद । वानरनेद । गंग ।
राग्य । तीर्थविशेष (स्त्री०) राप् ।

गर, (पु०) गृ-निगल्ना । मोलना । पुकारना । बुद्ध ।
अथ वा । विप । जहर । रोग । बीमारी । फलक
गरुड, (न०) गिरति जीवनं । गृ+अलच् । जो जल
निगलताय । विप । जहर । सर्पविप । सांके न
दिनकोका मूक ।

गरिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन गुरः दृश्यन् । बहुत
"गुरतर" "गरीवान् ।"

गरुड, (पु०) गरुडो इत्यते । वी+उ वृ० लृप्
कश्यपका बेटा विनताके गर्भमे उपजा पक्षियोंका
गरुडध्वज, (पु०) गरुडो ध्वजः (विदं)
जिसका चिह्न गरुड है । विष्णु ।

गरुडपुराण, (न०) गरुडेन प्रोक्तं पुराणम् । गरुड
हुआ पुराण । पुराणोक्ति एक ।

गरुडाग्रज, (पु०) ६ त० । विनताका बेटा पुत्र
सारथी अरुण ।

गरुड, (पु०) गृ-गृ-वा उति । पक्षियोंके आच्छादने
कारण । पर । पंख ।

गरुडमन्, (पु०) गरुड अग्नि अथ मनुर् नभो
होना । परोंवाला गरुड । विहगमात्र । इराक पक्षी

गर्भ, (पु०) गर्भः । प्रसूयाका पुत्र । सुनिर्मित ।

गर्भति, (स्त्री०) गर्भं इति गर्भं रति । गर्भ+तिच् ।
रिडकनेका पात्र । कलम । घटा । मच्छका नेद ।
पशु (पु०) ।

गर्भ, बटे जोरकी आवाज करना । भ्वा० पर० गङ्०
गर्भति । अगर्भन् । "गर्भे गर्भे क्षयं मूड" देवता

गर्भर, (न०) गर्भ+रिच् । गर्भ जायति । गर्भ
गर्भर । एकप्रकारका मूक (जड) ।

गर्भित, (न०) गर्भ+त् । बादली आकार । मेघ
"कनेरि+त्" मन्मथनी । मन्थारा हाथी । मन्थ

गर्भना ।

ते, (पु०) ए+नन् । वृषिषीबा छिद्र । गटा । त्रिभोके
नितम्ब (बूट) में गूएके स्वरुपका एक अंश । शोमभेद ।
डोआ।

दे, राक्ष करता । पुरा० उभ० पक्षे० भ्या० पर० अक्ष०
सेट् । गर्दयति-ते । गर्दति । राजगर्दय-त।

देभ, (पु०) गर्द+अभच् । गया । गर्दभ । गंधका भेद ।
विश्वामुद्र-

दिभाण्ड, गर्दभं (गंधविशेषं) अमति । अम्+उ । उभो
द्वार न हुआ । जिसके पते बट (बोट) के समान हो
गया वृक्ष । पाण्डु । इस नामसे प्रसिद्ध।

दिभी, (स्त्री०) गर्द+अभच् । दीप् । गोमयपीठ । गोद्वेका
कीज । विशोर्दिचारी । अपराजिता । रागभी । गयी।

दि, लिप्या । लाभ करनेकी दृष्टा करना । पुरा० उभ० राक्ष०
सेट् । गर्दयति-ते । राजगर्दय-त।

दि, (पु०) दृष्+पञ्च+अच् वा बहुत बाह । अतिराय
वृष्टा । गर्दभाण्ड नामी वृक्ष।

दिन, (त्रि०) दृष्+पुप् । सप्य । शोभी।

दिभ, दृ+अन् । भूय । दृक् (दीपं) भोर दोलित (लोट्)
के मेलसे उपजा शरीरके जन्मका करनेहाय मातृका
पिण्ड (मोला) । बधा । वृशि । बोल । नाटकमें सपिका
भेद । अन्न । आग । पुत्र । गंगा आदि पवित्र नदिओके
पायका स्थान।

दिभक, (पु०) गभं (केचमन्थे) कायति । के+क ।
केचोके बीचकी माला । केचामन्थस्य माल्य।

दिभकाल, (पु०) गभंस्य कालः प० त० । गभंका समय।

दिभहेरा, (पु०) गभंस्य हेराः । गभंका हेरा । बधा
उत्सव होनेके समयका दुःखा।

दिभशय (पु०) गभंस्य शयः । गभंका नाश होजाना वा
गिरजाना।

दिभशृङ्ग, (न०) गभं इव शृङ्गम् । गभंकी नाईं पर । परके
मन्थका भाग । बीचका बमरा।

दिभपातिनी, (स्त्री०) गभं इति । दृग्+निनि । दृग्-
ठिका वृक्ष।

दिभपुत्र, (त्रि०) गभंत् दपुत्रः । गभंसे गिर पत्र जैसा
कि बधा।

दिभपोषणं, (न०) गभंस्य पोषणं=भरणम् । गभंका पुष्ट
करना । गभंका पालना।

दिभद, (पु०) गभं ददाति । दा+क । पुत्रजीव वृक्ष । गभं
देनेहाय अर्थात् इसके सेवनसे गभं हो जाता है । ध्रुवभेद-

दिभपातक, (पु०) गभं पातयति । पर+विच्+अपुञ् ।
ओ गभंको गिरा देताहै । रक्षोभाजन । छाल राजना ।
छाल मुदाजना।

गभंयती, (स्त्री०) गभं विपद्यते अग्याः । मनुप् । गभो ब
होता है । आपसगभं स्त्री । बधा जनेवाली औरत ।
हामिलह।

गभंदाय्या, (स्त्री०) गभंस्य शय्या इव स्थानम् । गभंका बट
स्थान जो छेत्रके समान है । “दंराही नामीके समान
तीन आवर्त (घेरे) हैं, इन प्रकारकी योनि है, इसके
तीसरे आक्षेपमें गभंदाय्या (गभंकी छेत्र) है, जहाँ गभंका
निवास होताहै।”

गभंदाय, (पु०) दृग्+पञ् ६ त० । प्रसक्तिबाल आनेके
पहिले रोग आदिसे गभंका गिरना।

गभंदायिन्, (पु०) गभं दाययति । दृग्+णिच्+णिनि ।
गभंको गिरा देता है । हिंस्ताल वृक्ष।

गभंगार, (न०) गभं इवागारं । परका मन्थ (बीच) का
भाग । निवास करनेका स्थान (जगह) । गभंरूपी घर ।
गभंका स्थान।

गभंगान, (न०) गभंः शुद्धतया आर्षीयतेऽनेन । जिस-
के द्वारा शुद्ध होकर गभं टहनाजाताहै । इस प्रकारके
संस्कारोंसे गभंके पात्रको संस्कृत (साफ) करके बीचका
चीचना।

गभंशय, (पु०) गभं शयतेऽत्र । शी+अच् । “जहाँ
गभं सोता है । गभंका बैठन (पड़ा परनेवाला) रूप
चमरा । जरायु । जैर

गभंशुभ, (पु०) गभंशु (गभंशुदृष्टपरमशय) शुभम्
गभंपारण करनेके समयमें आठवा । गभंशुदृष्टने सेबर
आठवा महीना अथवा वर्ष (बरिस) । “गभंशुदृष्टे
शुर्वीत” मनु -

गभंशी, (स्त्री०) गभंशुल्लसराः इति । जिसे गभं हो ।
गभंवाली स्त्री । हामिलह।

गभंश्वरः, (पु०) गभंशु एव ईश्वर । जन्मका धर्मी । जन्म-
सेही पक्ववर्ती।

गभू, मद्करना । अहंकार करना । भ्या० पर० राक्ष० सेट् ।
गर्दति । अगर्दय-

गभू, अहंकार करना । पुरा० आत्म० सेट् । गर्दयते । अत्र-
गर्वन।

गभू, जाना-गति । भ्या० पर० राक्ष० सेट् । गर्दति । अगर्दय-

गभू, (पु०) गर्द अहंकारकरना+पञ् । अहंकार । मगर्दय-

गभू, (पु०) गर्द+पञ् । अनिमान । अहंकार । अगर्दय ।
“धन, रूप, अवासी, कुल, मिदा और बलके पात्र
द्वाराके कुल न समाना” इस प्रकार अहंकारका भेद

गभू, निन्दा करना । पुरा० ५६ भ्या० आत्म० राक्ष० सेट् ।
गर्दयते । अत्रगर्दय । गर्दयं । अगर्दय । अर्दय-

गहंण-णा, (न० स्त्री०) गहं+ल्युट्, अन् । निन्दा । उपात्मम् । विकार । गाली ।
 गहो, (स्त्री०) गहं+ञ् । निन्दा । गाली ।
 गहित, (त्रि०) गहं+क् । निन्दा क्रियागया । उपात्मम् क्रियागया । निरकार क्रियागया । निषेध क्रियागया । निहृष्ट । घुरा । तं० न० । उपात्मं वा पापजनक कृत्योंं भ्रातृथा काम् ।
 गहो, (त्रि०) गहं+भ्यत् । निन्दाके योग्य । अखंत नीच । नाजयक ।
 गहोवादिन्, (त्रि०) गहं वदति । वद्+गिति । निन्दाके लायक बोलनाहै । सराव बचन बोलनेवाला । निषवारी । "कद्द" ।
 गल्, गाना । बहाना । गालना । भ्या० पर० सक० सेट् । गलति । अगलीत् ।
 गल्, (पु०) गल्+भच् । कण्ठ । गला । सजेरस (धुना) वाजा । मच्छी ।
 गल्फ, (पु०) गल्+भुन्+अक् । गला । कण्ठ । गर्दन । एक प्रकारकी मल्ली ।
 गलकम्बल, (पु०) गले कम्बल इव । गलमें मानी कंबल है । साफ़ा । गौओंके गलेमें रहनेहारा मांसका गोला ।
 गलगण्ड, (पु०) ७ त० । (एरण्ड) एक प्रकारका रोग ।
 गलग्रह, (पु०) जहां आरम्भ होकर प्रत्यारम्भ (पीछे हटना) प्रतीत नहीं होता उसे गगोदि सम्पूर्ण मुनिओंने गलग्रह कहाहै । फिर न (प्रत्यारम्भ) छूटकर शुद्ध होनेवाला पदार्थ । कृष्णपक्षकी चतुर्था सप्तमी आदि तीन दिन, प्रयोदशी आदि चार दिनमें आठ गलग्रह कहे जाते हैं । आप टाळीगर्ह पिपति । मच्छीकी चटनी ।
 गलनं, (न०) गल्+भावे ल्युट्+अन् । घुना । गिरना पिसलना ।
 गलन्तिक, (स्त्री०) गल्+कृ+क्रीप् । अन्ध्यायें कन् । धोटेजयकी धारवाली गगरिया । शारा । कर्करी । "देवे देवा गलन्तिका" स्मृतिः ।
 गल(ले) स्तनी, (स्त्री०) गले भनो यस्याः वा अलुक् स० । त्रिषष्ठे गलेमें स्तन (मम्मा) हो । छापी । बहरी ।
 गलहन्, (पु०) गले हन् । निकालनेके क्रिये गलेमें दिवागया हाथ । गलहाया ।
 गलित, (त्रि०) गल्+ञ् । पतित । गिरपडा । श्लथगया । गलगया ।
 गलितवृष्टं, (न०) गलितं वृष्टं क० स० । निरपय (बे-हतर) कौट त्रिषमें अंगुष्ठियें गड जासीहै ।
 गलितनखदन्त, (त्रि०) गलितः नखाः दन्ताश्च यस्य क० स० । त्रिषष्ठे नखन और दाँत गल गयेहै ।

गलितगर्वाचन, (त्रि०) गलितं गर्वान् स्वार्थं वाचन (जसानी) नष्ट होनुकाहै । पृष्ट होना ।
 गलितघणम्, (त्रि०) गलितं घणः दमः । निन्दित जा चुकीहै ।
 गल्या, (स्त्री०) गलाना (कण्ठाना) गन्तुः । दाय (गम्भूट्) ।
 गल्ल, (पु०) गल्+ल । गाळ । गड । गट । इन्डो ।
 गल्लक, (पु०) गलति+कृ+णान्त् तं लृटि इत्येभ्यो कन् । चपक । पानपात्र । मरुतिके शरावका पिशाला ।
 गल्य, (पु०) गु+अभच् । गौंके मनन करनेके विना पशुका मेद । एकप्रकारका वानर ।
 गवल, (पु०) गुह्-गन्धकरना+अप् तं लृटि इत्येभ्यो कन् । गन्ध करनेहारा । मनमद्विय । बन्धन । गीग (न०) ।
 गवाकृति, (त्रि०) गोः आकृतिः इव आकृतिः स० । गौंकी आकृति (चकल) वाला ।
 गवाक्ष, (पु०) गवां क्षिणानां अक्षि स्तोत्राणां क्षिणोक्षी आक्ष निरुद्धोक्ष इव । गमान कुलीन स्त्रियोंके देखनेका स्थान । वातायन ।
 गवेन्द्रः, (पु०) गवां दन्द्रः प० न० । गौंके (मालिक) । उत्कृष्ट वृषभ । बैल व साठ ।
 गवेन्द्राः रेश्वरः, (पु०) गवा ईश्वरः वा रेश्वरः गौशोकं स्वामी (मालिक) ।
 गवेपू, अन्वेषण । तालाशकरना । गोजना । इन्द्रा । आत्म० सेट् । गवेपवते । अन्नगवेपन ।
 गवेपणा, (स्त्री०) गवेप+युच्+टाप् । अन्वेषण । गोजना । इन्द्र ।
 गव्य, (त्रि०) गोर्विकारः गवि भव । गोर्विंशति वा सर्वत्र यत् । गौका विचार, गोमें हुआ, दित्तकारी, गौका ये । गोसम्बन्धीय । वृष । गो । न । गोवर । गोमूत्र । पीला ।
 गव्युति, (स्त्री०) गोवृत्तिः । क्रोधयुग । इन्द्रा । गौंके सेट् ।
 गह, गहन गाथा होना (जिहा कि जंगल) इति । गल होना । घुरा० उभा० स० सेट् । अन्नगहनत् ।
 गहन, (न०) गह+युच् +ट् । हन् । अन्नगहनत् । घुरा० उभा० इन्द्रा । अन्नगहनत् । (त्रि०) ।

६. ४. (पु०) गुण्यकृतीनि पद्मानि अस्य ।
पत्ते गुच्छेरी सफलके दौं । सालका वृक्ष । इसका
पत्र गुच्छेके म्मपका है ।

८. गुण्यकृतीनि फलानि अस्य । जिसके फल
भी भंति हों । रीटा । बरसा । राजादनी । कतक
१) अमिदमनी । बाबमापी । केला । दाव (खी०)

नि । आवाज करना । गुञ्जति । जुगोज अगुञ्जित् ।

७. ४. गुञ्जना । दम्बरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गुञ्जति ।

(खी०) गुञ्जि+अच् । एक प्रकारकी लता (वेल) तीन
परिमाण (माप) । नगरा (पट्ट) । मीठी और
आकाश । सारावका पर । रती ।

(खी०) गुञ्जि+अच् । गोलसरूपकी गुटिका ।
ईकी गोनी । मूनि । सतरावकी नदी । स्वार्थे कन् ।
। बरी अर्थ ।

७. ४. गुञ्जना । लपेटना । गुरा० उभ० सक० सेट् ।
टयति-ने । अहुगुण्यत्-त् ।

लपेटना । तोड़ना । रोकना । गुदा० पर० सक० सेट् ।
गि । जुगोड अगुसीत् ।

(पु०) गुञ्ज+अच् । मोठ । हाथीका साराह (फन्दा) ।
प्राक । गन्नेका पकानुभा रस । गुञ्ज ।

८. (पु०) गुञ्जेन पर०-वा क्त् । गुञ्जका मोला ।
ग । गुञ्जकी बनाई गई एक प्रकारकी मद्य ।

यञ्ज-ञ्, (पु०) गुञ्ज इव मधुर त्वक् (त्वचा) मय्य ।
। सक्ती त्वचा (छाल) गुञ्जेके समान मीठी हो । छाल ।
क (र) चीनी ।

गुण्य, (पु०) गुञ्ज इव मधुरं पुण्यं अस्य । जिनका
उ गुञ्जेके समान मीठा हो । मधूक (मधुभा) वृक्ष ।

गोमु, (पु०) गुञ्ज इव मधुरा गिमुः । सालगुहोजना ।

का, (खी०) गुञ्ज-विशेष । तोटना । रोकना । आक ।
दा । नीट ।

केदा, (पु०) गुञ्जकाया- (निद्रामाः) ईश-वशि-
पात् । नींदकी वाङ् करनेवाला । शिब । अर्जुन ।

नाय, (पु०) गुञ्ज इव मधुरः आशयः (फलमर्थं)
य । जिसके फलमें गुञ्जकी मिठाव हो । आशरोटका
३ । ६ त० । गुञ्ज चाइनेवाला ।

कुञ्जी, (खी०) गुञ्ज बचाना । उ (ऊ) बट ।
पने सामकी लता । गिलोसकी वेल

, मधुभा । मकाह करना । दूध करना । गुरा० उभ० सेट् ।
गपति-ने । अहुगुण्यत्-त् ।

गुण, (पु०) गुण्+अन्-पम्-वा । धनुर्का विद्वद् । धनुर्
नेचनेकी रस्ती । रस्ती । धुरता आदि धर्म । राजाओंके
संधि विग्रह मान आसन ईंध और आश्रय ठे साधन ।
ज्ञान विनय आदि । साह्यके मतमें पुरुषके भोगका साधन
होनेमें उसे बांधनेहारे सब रज तम पदार्थ । अप्रधान ।
न्यायमतमें रूप आदि कींवीर्य पदार्थ । व्याकरणमें अ ए
ओ । अलंकारमें माधुर्य आदि । बुहराना । तन्तु ।
दूर्त । घास ।

गुण्यक, (पु०) गुण्+बुहराना । भरना+शुल् । भरनेवाला । यह
राशि जिसके साथ गुणा जाता है । “गुणान्तरमर्कं गुणकेन
हन्नात्” लीलावती ।

गुणतः, (अव्य०) गुण+तमित् । तीन गुणों (जयतके
सम्पूर्ण पदार्थोंमें) के अनुसार सत्व, रज, तम ।

गुणता-त्वं, (खी० न०) गुण+तत्-वा त्व-भावे । गुण-
पता । अष्टाध्याय । उत्कृष्टता । धर्म । गुणना । रस्तीपना ।

गुणनं, (न०) गुण्-स्तुद् अन् । गुणना । प्रतिद्व करना ।
गुणवर्णन करना ।

गुणनिका, (खी०) गुण्-भावे गुच्-स्वार्थे क । अध्ययन
अभ्यास । वृक्ष । नाचनेकी बिया । नाटककी-प्रस्तावना ।
माया । हार ।

गुणनीय, (त्रि०) गुण्+करने अनीयत् । गुण जरव । देने-
योग्य । गिन देनेलायक । उपदेश करने योग्य

गुणमय, (त्रि०) गुण+मयत् । छोटेसे तन्तु (धागे)
वाला । प्रकृतिके तीन गुणोंवाला । अच्छे गुणोंवाला ।
धर्मालया ।

गुणवृक्षक, (पु०) वृक्ष इव कायति । कं+क । गुणानों
(नींकाकपीपरखनो बन्धनधारः) वृक्षः । बेडिओंको
नेचनेवाली रस्तीओंके बांधनेका आश्रय । मस्तूद ।

गुणित, (त्रि०) गुण्+कर्मणि क्त् । गुणागया । अहट ।
घोट कियागया । भरागया । पूरित ।

गुञ्जित्, (पु०) गुणोऽस्त्यस्य इति । विवेकालय । धनुर् ।
गुणवाला (त्रि०) ।

गुणीभूत, (त्रि०) अगुणः गुणः भूतः । चिब+भू+क्त् ।
अप्रधान कियागया ।

गुणीभूतव्यङ्ग्य, (न०) गुणीभूतं वाच्यं वाच्यं अगुण्यत्
व्यङ्ग्य यत्र । वाच्यार्थ (अगुणो अर्थ) में जहाँ व्यङ्ग्य
(व्यञ्जना शक्तिसे जना गया) अर्थ अगुण्यत् (उक्त)
हो । अलंकारमें बह्नुभा मध्यम कान्य ।

गुणिक, (पु०) गुण्+अभि-अर्थमें टट् (टट्) । पीने
हुए चाबन आदि ।

ज्यारः, वा बजारः, (पु०) गुरोः वारः । गुरुवा वार ।
दूररतीकार । वीरवारः ।

जृम्भिः, (स्त्री०) गुरो हति=वर्तनं । गुरके सम्मुख
दिग्घना व्यवहारः ।

जृष्यथ, (त्रि०) गुरुः स्वपा यस्य । बही वीणवाला ।
वीणामे व्याकुल होरहा ।

जृद, (पु०) जृदभेदः । गुरुगत (दक्षिण) । उग देवा-
वा बाही ।

जृङ्गना, (स्त्री०) गुरो अङ्गना । गुरुकी स्त्री । अत्यन्त
आदरके योग्य स्त्री ।

जृष्यं, (त्रि०) गुरोः शर्षः । अत्यन्त उपयोगी भावदयक ।-
र्थः (पु०) गुरुदक्षिणा । शिष्यके विद्या पढ़ानेकी ।

जृषी, (स्त्री०) गुरुगर्भेऽम्लस्याः । इति । नि० जिसे
गर्भ हो । गर्भवती । गर्भवती स्त्री ।

जृषी, (स्त्री०) गुरु+शर्षः । गर्भवती । "नहि बन्धा
विशानाति गुरुप्रियवदेदनाम्" । आदरवाली स्त्री बही स्त्री ।

जृष, (पु०) गुरु+शर्ष-नि० । पाओ की गाँठ । पादमन्थि ।
गिरा ।

जृष, (पु०) गुरु-रक्षा करना-बचना । लपेटना-चेर-
लेना+भृ । इत्यनोरुद्धयम् । प्रधानपुरषोसे आश्रय दिया-
गया रक्षा करनेहार पुरषोंका समूह । (हाथी ९, रथ ९
पोडे २७, पदाति ४५) इतनी संख्याकी सेना । एक
प्रकारका सेना । हाथी । ग्रीहीरोप ।

जृषमूल, (न०) गुणकारि मूलमस्य । त्रिंशती जट
हाथीके समान हो । आर्द्रक । अहरक ।

जृषमूर्ति, (स्त्री०) गुणकारा बही । हाथीके समान
वेड । योग्यलता ।

जृष्याक, (पु०) गुणभाक । नि० । गुणारी । शमुक ।
प्लीकल ।

जृ, संघरण । विपत्ता । हाँकना । शशा० उम० एक० सेद ।
गुरुति-ने । अगूर्ति । अगुधत् । अगुहित-अगुह ।

जृ, (पु०) गुरु+क । कानिश्चैव । घोडा । रामचन्द्रजीका
मित्र शत्रुवेरा स्वामी । बण्डालोंका भाष । गया । विष्णु ।
सिंहपुष्पी बैल । पर्वतका गडा । इदय (स्त्री०) । "गुहा
प्रविष्टा" इति श्रुतिः..

जृ, (स्त्री०) गुरु+भृ । गुण । विपनेका स्थान ।

जृहास्य, (पु०) गुरोवा (गर्भे) आसते । स्त्री+भृ ।
जो गर्भमें सोता है । अशान । मिह आदि । इदय । बुद्धिमें
रहनेदार जीव । ईश्वर । "जृहास्य गद्रेष्ठं" इति श्रुतिः..

जृहादित, (त्रि०) गुरादा आदितः । श्रव (हृदयमें)
रखता गया ।

गुरा, (त्रि०) गुरु+भयम् । कच्छ । गाराण्ड । परमात्मा ।
एकान्त । भग । निह (न०) रहस्य । छिपानेके लयक
(त्रि०) ।

गुराक, (पु०) गुणं कं (गुणं) यस्य । गुणं बुजितं
शयति । शै+क वा । जिसका गुण छिप हुआहो । जो
पुत्र राज्य बना है । पुत्रके धनको बचानेहारा । देव-
योगिभेदः ।

गुराकेश्वर, (पु०) ९ त० । गुणकोंका स्वामी । कुबेरः ।

गुरागुरुः, (पु०) गुण-गुरुः । छिपाने योग्य गुरु । शिवजी ।
गुणकेश्वरः ।

गुराभाषितं, (न०) गुणं भाषितं । छिपीहुई बातचीत ।
गुप्तभाषणः ।

गू, विशालाग । मलका छोडना । गुरु० पर० अक० रोद ।
गुवति । अगुविट । जुगाव । गुतः ।

गू, (त्रि०) गू+क । गुन । छिपाहुआ । उका हुआ ।
गहन । एकान्त (न०) ।

गूद्वार-चारिन्, (त्रि०) गूदं चरति-चर-गिन् । छिप-
धर इधर उधर घूमनेवाला ।

गूदज, (पु०) गूदं गुप्त यथातथा जातः । गूदः गन् वा
जातः । जन्+ज । छिपाकर पैदाहुआ । छिपाहुआ उपजा ।
बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक ।

गूदपथ, (पु०) गूदः पन्थाः । छिपाहुआ मार्ग । गुप्तमार्गः ।

गूदपाद-द, (पु०) गूदाः पादा अस्य वा पद्माव ।
जिपके पांव छिपेहुए हो । संपं । सांप

गूदपुरय, (पु०) छिपाहुआ पुरय । गुप्तवर । प्रसिद्धि ।
जासूद ।

गूदभाषितं, (न०) गूदं भाषितं । गुप्तवातो । छिपीहुई
बात । गुप्तः ।

गूदमैथुन, (पु०) गूदं केनापि आरयं मैथुनं यस्य । जिसे
भोग करने बोदे भी नहीं देता सखा । बाक । बौआ ।

गूदसाक्षिन्, (पु०) छिपाहुआ गवाह । अर्था (मुद्दे)
अपने प्रबोधनकी सिद्धिके लिये प्रत्यक्ष (मुद्दालद)के
छिपेहुए बचनको जिसके द्वारा स्पष्ट करके सुनवानाहै दण
प्रकारका गवाह । मुद्देमें पौबीदह मुद्दालदके इन्हारा सुने-
वाला गवाह ।

गूदाह, (पु०) गूदमि अज्ञानि अस्य । जिपके भग
अभांउ सरीरके भग छिपेहुए हो । कच्छप । कच्छु ।

गूदोत्पन्न, (पु०) छिपकर उत्पन्नहुआ । जारने उपपन्नहुआ
एक प्रकारका पुत्र । " ये नित्यवा पुत्र है " ऐसा नहीं
जान सजे ।

गूय, (पु० न०) गू+यत् । गिरा । मड । गुरः ।

गूर, उद्यम करना । सुरा० आत्म० सक० सेद् । गूर्यते
अद्गुरत् ।

गूर, मारना । जाना । रिवा० आत्म० सक० सेद् । गूरयते ।
अगुरीष्ट ।

गु, संक । सीवना । भ्वा० पर० सक० धनिद् । गरति ।
अगर्षीत् ।

गुज, धनि । शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेद् । गर्जति ।
अगर्जत् ।

गुजन, (पु०) गुणते (भक्षत्वेन कथ्यते) रोगेषु ।
गुजि+भ्युद् । गजर । विषवादे पशुका मांस (न०) ।

गुच्, लालच करना । लिप्सा । रिवा० पर० सक० सेद् ।
गुच्यति । अगुचत्-अगर्चीत् । गर्दिन्वा । गुच्वा ।

गुधु, (वि०) गुधु+धु । लुच्य । लोमी । लालची ।

गुध, (पु०) गुधु+क्यु । गुडुनि । पशी । गीध । लोमी ।
(वि०) ।

गुधराज, (पु०) ६ त० । गुधराज पुत्र । जटायु पशी ।
पक्षिभोज राजा ।

गुष्टि, (स्त्री०) गुडु गभं गुडति । प्रदु+किच्-गु-नि० ।
एकवार जमेराती मी । बराहकान्ता । बदरा औपध ।
करनी ।

गुह, धरय देना । बचाना । सुरा० आत्म० सक० सेद् ।
गुह्ये-अगुह्यत् ।

गुह, (न०) गुह-घरके अर्थमें क । इंद मदी आरिमे बना
हुआ घर । गुह-सेना-अच् । बलन । श्री । जीत । नाम ।
गुह अर्थात् लुपिटा मन्दिर । एक घरके अर्थमें यह शब्द
बहुगुह और बहुत घरोंके अर्थमें पुंलिंग होता है । "नगरागारे
घरसंघटनम्" इति मेघदूतम् । श्रीके अर्थमेंही द्वार
घरके समान बहुबचन होता है ।

गुहकपोतः, (पु०) गुहकपित्त कपोत । घरका पायादुआ
बचन ।

गुहविच्छेदः, (व०) गुह्य छिन्ने-दीप । चरेद्दु होय ।

गुह्यः-जन्तुः, (पु०) गुह्ये जन्तुः-जन्तु-ट का ल । घरमें ट-
जन्तु हुआ (वच)

गुह्यजनः, (पु०) गुह्यजन्तु-जन्तु । घरकी जन्ति (स्त्री०) ।
घरके जन्तु ।

गुह्यनिन्दकः गुह्यनिन्द, (पु०) गुह्ये एव इनी-इ+
निद् । घरके निन्दक ही जो कमष्टर है । जन्तुनिन्द ।

गुह्यनामः, (पु०) गुह्यनिन्द-नामः । घरका नाम । चरेद्दु
देव ।

गुह्यवेत्ता, (स्त्री०) गुह्य वेदना । घरकी वेदनी । गुह्यवेदी
वेदनावेदी एक शक्ति (कल्प)

गुह्यवेदी, (स्त्री०) गुह्य वेदनी । घरकी वेदनी । गुह्यवेदी
वेदनी

गुह्यपति, (पु०) ६ त० । गुह्यका पति । घरका पति
मन्त्री । बर्बर । धर्म ।

गुह्यपत्नी, (स्त्री०) गुह्यका पत्नी । Ved. एवमे
(स्वामिनी) । गुह्यकी स्त्री ।

गुह्यपालः, (पु०) गुह्ये पालयति । घरको बचनेके
घरका रखावा ।

गुह्यवलिः, (पु०) गुह्यव बलिः । घरेलू बलि । घरके
भोजनमेंसे घरके देवता सम्पूर्ण पशुपक्षिभोजी देने
मेला ।

गुह्यमणि, (पु०) गुह्ये मणिरिव । घरमें मानो हीने
प्रतीप । सीवा ।

गुह्यमृग, (पु०) गुह्यम्य मृग इव । मानो घरमें
डुङ्गुर । उता ।

गुह्यमेघिनः, (पु०) गुह्येः दरमेंघते (संगच्छते)
सङ्गम-मिलना+गिति । जो घरका संग करे ही । एवम्

गुह्यमेघीय, (पु०) गुह्यमेघिनोऽर्थ छ (ईव) । एवम्
आंके धर्म ।

गुह्ययालु, (वि०) गुह्य+आलु । प्रहीना । लेनेवाला ।

गुह्ययाटिका, (स्त्री०) गुह्यमीये याटिका आरम्भ ।
पागका छोटा बन । गुह्यके सानीपका उपवन ।

गुह्यदुकुन्तिका, (स्त्री०) गुह्ये पाटिका सु-
पक्षिणी । घरमें पालादुआ पशी (परिदा) ।

गुह्यस्थ, (पु०) गुह्येऽपु तिष्ठति (अतिरमते) स्थ+
श्रीके साथ बिलगकर्ता है । घरमें रहनेवाला ।
द्वितीयाधमी । मालयवेदार ।

गुह्यगत, (पु०) गुह्ये आगत । आ+गम्+क । श्री
आगन्तुक । मरिमान वा पादुना । घरमें आगता (वि०)

गुह्यधिपः, (पु०) गुह्यका अधिपः । घरका
गुह्य

गुह्यगम, (पु०) गुह्ये (गुह्यमीये) अरम्भ ।
पागका छोटा बन । गुह्यमीयक उपवन । बन

गुह्यार्थः, (पु०) गुह्यका अर्थः । घरका नाम । घर ।
श्री घरेलू बचन ।

गुह्यप्रदहणी, (स्त्री०) गुह्ये अवपुष्टनेऽनेन । जिन्ने
घर घरका जय । अर्ध+गुह्य+दहणे सुगुह्ये ।
देनेवाला । देवदी ।

गुह्यिणी, (स्त्री०) गुह्य+अर्ध+गुह्ये इति । जिन्ने
घरका । अर्धो । जो । जीव । श्री । घरके
बचन श्री । "गुह्यिणी लक्ष्मिणे द्विपः शम्भो" इति
गुह्यिणी ।

गुह्यि, (पु०) गुह्य+अर्ध+गुह्ये इति । जिन्ने
श्री ही । गुह्य । घरमें रहनेवाला ।

दिन्, (पु०) घटे एव नन्दि न सम्पराये (पु०) । परतीमें बजंता है । लडाईमें पीठ दिखानेवाला । ठेका खादनी । बापुरप । एगमें बरनेवाला । परमेंही धम मचानेवाला ।

त, (वि०) ग्रह+क । लीबार किया गया । मनाया गया । नजर किया गया । प्राप्त । पाया । हासिल किया । हात । लाया गया । धन । पकड़ा गया ।

त, (वि०) ग्रह+क कर्मणि । टिधा गया । पकड़ा गया ।

तगर्भो, (स्त्री०) एहीतः गर्भः यथा घ० स० । गर्भ-ली स्त्री शीत ।

तदेह, (वि०) एहीतः देहः येन । जिसने पृथिवीपर त्वत्तार डिया है ।

तनामन्, (वि०) एहीतं नाम येन । नाम सेनेवाला । जन्मे पुकारा गया ।

तथेतन, (वि०) एहीतं येतनं येन । जिसने अपनी जगहा देखी है । मिहनतका फल बुधा दिया गया ।

तार्थ, (वि०) एहीतः अर्थः येन-ब० स० । जिसने तर्ष प्रयोजन-मतलब समझा डिया है । समझे हुए मत-बवाला ।

तिन्, (वि०) एहीत+तिन् । समझा हुआ । अच्छी-तरह जान बुधा ।

, (पु०) ग्रह+क्यप् । एहाणक । परमें फगाहुआ । ली धीर पत्र । मलका द्वार (दर्वाज) । वेदमें कहेहुए अर्थके प्रयोग (लगाव) को जतानेवाला मोलिलसूत्र आदि ग्रन्थविशेष । अस्तज्ज । परापीन । जो आखाइ प्रति । अपनी ओरघा (वि०) "एदे भव" यद् । परमें हुआ । परबा । वस्तु (चीज) (न०) "अपने अर्थमें हुन्" । नगरके बाहिरका गांव (स्त्री०) टापू एणा ।

विहायन । जानाना । जानाना । इतिहा देना । पुरा-शास्त्र-सक० सेद् । गावयते । अत्रीगरत ।

सब्द आवाज करना । ब्रया० पर० सक० सेद् । गृणाति । अगारीद् ।

नियरण । निगतजाना । गदण्य करना । गुदा० पर० सक० सेद् । गिरति गिलति । अगारीद् अगलीद् ।

द्, जाना गति । भ्या० आत्म० सक० सेद् । गेद्वे । अगे-रिष्ट । अजिगेद्वद् । गेदित्वा-गेत्वा ।

तु(पुत्रु)क, (पु०) गच्छतीति गः इन्दुरिव । इकार्थे कन् । जो चांदकी भांति जागा है । कन्दुक । गेन्द । कपकेका बनाहुआ मोठ लहरका धिलेला । ट्टी० "गेन्दुक" एही अर्थे ।

य, (वि०) गे-नाता+यत् । कर्त्तरि । सर्वथा "भावे यद्" गीति । गाना । गीत । "कर्मणि यद्" गानेवाक (वि०) ।

गोह, (न०) गो (गणेशः) गन्धर्वों का ईहः (ईषितः) यत्र । जहां गणेश वा गंधर्व होनेकी इच्छा की जाय । पर-

गै, गाना । भ्या० पर० सक० सेद् । गायति । अगावीत् ।

गैरिक्, (न०) गिरौ मव-उठक् (इक) । पर्वतमें उभरा उपपात्रु (छोटा पात्रु) । सोना । गेरी ।

गो, (पु०) गम्+उ० । इयन । बैठ । खर्गें । किरण । वज्र । जल । पत्रु । चांद । हवा । बायु । सूर्य । और ऋषभ-नामी औषध । सौरभेयी । गी । दृष्टि । नजर । बाण । धीर । विशा । माला । बाणी । भूमी (स्त्री०) ।

गोकर्णे, (पु०) गोर्वेत्रं कर्णो बल्य । आंराही जिसके कानहैं । ताप । "गौरिव कर्णो बल्य" । जिसके कान गौके समान हों । अश्वतर । बछेरा । खचरा । एक प्रकारका पत्रु । गणदेवताका भेद । शिवतीर्थभेद । एकनाम ।

गोकील, (पु०) गोः पृथिव्याः कील इव । मानो पृथिवी-की मेरा है । कातल । मुसल । हल ।

गोकुल, (न०) गवां कुलं यत्र । जहां गौओंका समूह हो । गौओंकी जगह । गोठ । गौओंके बाधनेका स्थान । यमुनाके निचट नन्दके निवासका स्थान । मजनामी प्रतिद स्थान । "गोकुळे रामकेरावो" पुराण ।

गोहीर, (न०) गोः शीरम् । गौका दूध ।

गोष्टिः, (पु०) गोष्टु इष्टि=वृष्टप्रसूता गौः । गौओंमें एक बार जनी हुई गौ ।

गोगोष्ठं, (न०) गवां गोष्ठं । गोबाधा । गोमवन । गौओंके निवासका स्थान ।

गोप्रासः, (पु०) गवां प्रासः । गौओंको देनेयोग्य प्रास (पास) अन्न ।

गोघातः-घातकः, घातिन्, (पु०) गाः घातयति इन्+क +ञ्चुल्+गिन् । गौको मारनेवाला ।

गोघृतं, (न०) गवां घृतं । इष्टिका जल । सुद्ध मक्खन । गौका घी ।

गोम्र, (पु०) गोईष्यते यस्मै । इन् सम्प्रदाने टक् (अ) । जिसके लिये गौ मारीजाती है । अतिथि । महमान । (इहके आनेपर मधुपर्कके लिये गौका मारना विहितहै । ये बहुत पुरानी चाल थी । जिस समय मरीहुई गौकोभी फिर जीवन देनेकी सामर्थ्य रखतेथे) । "कर्त्तरि टक्" । गौको घातकरनेवाला (कर्त्तृ) (वि०) ।

गोचर, (पु०) गावः (इन्द्रियानि) परन्ति अरिम् । वि० क । जहां इन्द्रिये विचरती हैं । इन्द्रियोंके नियंत्रण रख रख आदि । "गावथरन्वतिम्" वि० क० । गौओंके विचरनेका स्थान । देशमात्र । अन्यराष्ट्रिये वत्त स्थानमें सर्व आदि ग्रहोंका जगह ।

गोचमैत्र, (न०) ६ त० । गवां चर्म । गौशोका चमडा ।
पृथिवीचा परिमाण (मात्र) १०० गज लंबा और ३
गजके निरुद्ध चौडा.

गोज, (त्रि०) गोः=शुषिभ्याः जायते-जन्+उट । पृथिवीसे
उत्पन्न हुआ.

गोजलं, (न०) गवां जलम् । गौशो वा बैलोका मूत्र ।
गोमूत्र.

गोजा, (श्रो०) गवि (पृथिव्यां) गौशदिरूपेण जायते
अथम् । पृथिवीरर घन आदिके रूपसे जो उत्पन्ना है ।
पावलादि गोलैमिष्य नानी इत्यतः.

गौजिहा, (श्रो०) गौजिह्व । मानो गौश्री जीम है ।
लज्जितिये । गौजिहा.

गोपी, (श्रो०) गुप्त+घृ+पि० गुणः । गोमन्त्रीम् ।
घन्यद्य आभय । गुप्तकान्ते प्रसिद्ध आभयनाम । पुण्या
कारण । छ । एक प्रकारका नाम । छत्रम्.

गोनम, मन्त्राद्य पुत्र । अग्ने नमसे प्रसिद्ध मुनिनेद.

गोत्र, (पु०) गो (पृथिवी) प्रायते । प्र+क । जो पृथिवीको
बन्धु है । परंत । पराज । मान । बन । जंगल । क्षेत्र ।
क्षेत्र । पर । वंश । दम्भ । एता । एक जातिकी समूह ।
ऐंज अदि ऐंजन । मनुष्ये बड़े गये शैवीय शाण्डिल्य
अदि श्री शैवपुरा.

गोत्रज, (त्रि०) गोत्रे (कमाने गोत्रे) जायते । जन्+उट ।
एक गोत्रसे उत्पन्न.

गोत्रनिष्ठ, (पु०) गोत्रम् परंतम् निवसति । निष्ठ+
ठिप् । परंतोको बसनेवाला । इन्द्र । देवताओंका शरा.

गोत्रा, (श्रो०) गोत्र (परंतः) अग्नि अथाः । अग्ने
परंतोको बस । पृथिवी । "गोः समूहः प्र० ।"
गौशोका इत्यतः.

गोदाम्, (न०) गोदाम् इव अवगतो दाम्य । त्रिपके
अवगत होने वाले समान हो । इतिगुण । वनमति ।
गोदाम् (पु०).

गोदान, (न०) गो (देवा) दीपान्ते (उद्वान्ते)
अथ । दीपान्तर (अथ) । इतिगो देवा (बल) बने
करे । देव उद्वान्तेच इत्यतः । "अथवा गोदानविधेः
इत्यतः एव । गोदा इत्यतः.

गोदायक, (न०) गो (मूत्र) दायकः । दायक+कम् ।
दुष्टरूपसे दायकवाला । दायक । इत । दुष्टक.

गोदायकी, (श्रो०) गोदाम् इव । गोदायकी (गोदायकी-
रूपेण)

गोदाय, (पु०) गो (देव) गोदाम् इव । गोदायक इव ।
गोदायक इव

गोधन, (न०) गवां धनं (समूहः) । गोशयनादेः
"गौरिव धनं अथम्" गोधनम् । त्रिपके ५३
(पि०).

गोघा, (श्रो०) गुप्यते (वेष्टयते) बाहुः अन्तः ।
धन् । जो मुजाको धरलेता है । धनुषके निरुद्ध
बचनेके लिये प्रकोष्ठ (आंठकी) पर
" कर्नरि अथम् " । गोघापर नामसे प्रसिद्ध
" यथकः शश्री गोघा " मनुः.

गोधूम, (पु०) शुष्क+ऊम । गोहिनेद । कर्कश । गो
प्रकारके धान.

गोधूति, (पु०) गोम्य उल्लिखितो धूतिर्गन्ध इति ।
समय गोओंसे घूल उठती है । स्पंके अन्तर्गत
सांस्रमय.

गोश्रीय, (पु०) गोश्री (दम्भनीपे देहे) मन् ।
देशके पास उत्पन्न हुआ । पामिनी मुनि । (सिद्ध,
पाठ, धातुपाठ, व्याकरणका) कर्ता.

गोशर, (पु०) गौरिव नासा अथम् । त्रिपकी का
समान है । एक प्रकारका सांय.

गोपति, (पु०) ६ त० । गौशोका पति इति ।
इतके पति शिव । पृथिवीका पति । गोपम् ।
पति स्वयं । स्वयंका पति इन्द्र । अथम नाम शैव

गोपा, (श्रो०) गो पति । पा+क+टाप् । इत्यतः

गोपानसी, (श्रो०) गवां (किरणानां) पत्नं (इति
गोपानं-अग्नि । सो+क ङीप् । शीकारोपर गौरी
उपगवा गवा देहा काठ । बलनी । बलनी । छत्र ।
के आगे निरुद्धी सञ्चरी.

गोपाल, (पु०) गो (गो-शुभमदिकं-भूमि का) इति
गो बैल का पृथिवीकी रक्षा करनेवाला । गोप ।
छत्र । नन्दछत्रका पुत्र.

गोपुर, (न०) गोपः पूर्वन्ते यत्र । पु+क । गौरी
जाती है । पुराद्वार । दरवाजा इत्यादि । का
केवलपुत्रक.

गोपुरीयं, (न०) गवां पुरीयं । गौशोका गोद.
गोम्य, (त्रि०) गुप्त+मन् । रक्षाके योग्य । त्रिपके
गौरीयमूद (पु०).

गोप्रकाशक, (न०) गोपु प्रकाशक-अर्थः । एक गोप
गो का शान केन्द्र.

गोभृत्, (पु०) गोः=पृथिवी विभक्ति-न+भृत् । गो
कारण बानेकाल । परंत । पराज

गोमण्डलं, (न०) गो (मण्डलं) गोशोका मण्डलं
गोमणी, (श्रो०) गोपिणेय । देवता सम्बन्धित

गोमय, (पु० न०) गो (पुरीयम्) गो. मण्डलं
कत । गोश । गोशय.

गोमायु, (पु०) गो=विष्णो कर्षं=निनेति । मा+युच् । जिसकी विष्णु हुई आबाज हो । अंगान । गीद्व । विचार । गन्धर्व, गोमिन्, (वि०) गो+अन्त्यर्थे मिति । गौओंका स्वामी । गीद्व (पु०) ।

गोमुख, (पु०) गोरिव मुखं अस्व । जिसका मुख गौके समान हो । महाविरोध । नरु । तंदुआ । मगर । तिरछा पर । एक प्रकारका बाजा । चोरसे की गई एकप्रकारकी रमिष (छत्र) लेपन । उपमात्वा रत्नके लिये पङ्के सूतका बनाहुआ एकप्रकारका रत्न । शुभी । हिमालयके एक ओरसे गंगाके तिरनेकी मुहा । गोमुली । गंगोत्री (स्त्री०) ।

गोमुत्रिका, (स्त्री०) गोमूत्रं साधनत्वेन अस्याः इत् । जो गौके मूत्रसे उपजती है । गोमूत्रसे उपजी लता (एकप्रकारकी बेल) । एक काव्यकी रचना जो आज तिसे गौके मूत्रसमान बनाई हो ।

गोमेद, (पु०) मन्त्रिदोष । जवाहर । द्वीपमेद । एक जमीरा ।

गोमेघ, (पु०) गणो मेघन्ते यत्र । मेघ+आधारे घन् । जहाँ गौएं मारीजानी हैं । एक प्रकारका यज्ञ ।

गोदानं, (न०) गवां दानम् । बैलसे बलाया गया दान (रथ) । बैलघाटी ।

गोयुगं, (न०) गवां युगं । गौओंका जोड़ा ।

गोरथ, (पु०) गवां रथः । गौओंका रथ (रथ) ।

गोरोचना, (स्त्री०) गोभ्यो जला रोचना (हरिद्रा) । गौओंसे उपजी हरिद्रा । अपने नामसे प्रसिद्ध शुगन्धकाव्य इष्य । गौके मलाच्छे निबला पीलेरंगका पदार्थ ।

गोल, (पु०) गुड+घञ् । (ब और छ समान है) । चारों ओरसे गोल । मदन (मैत्र) का वृक्ष । अर्थात् मरजानेपर आरामे उत्पन्न हुआ पुत्र । भूगोल । आकाशका गोल । एक राशिमें छ प्रहोका लुटना । " स्थायं च् " गोलक । छटवीका गेंद ।

गोलाङ्गुल, (पु०) गोरिव कृष्णं लाङ्गुलं अस्व । गौके समान जिसकी काली पूछ हो । काले मुखवाला एक प्रकारका बाजर ।

गोलास, (पु०) गवि (गोमये) लसो (जन्म) यस्य । जो गोहैमें उपजा हो । गोमयकीट । गोहैवा कीम । शिलीअ । खंवे ।

गोलोक, (पु० न०) १ त० । वैकुण्ठके दक्षिणी ओरका स्थान । विष्णु महाराजके निवासकी जगह (पु०) ।

गोवर्द्धन, (पु०) गो वर्द्धयति । वृध्+विच्+स्तु । गौको बढ़ानेहार । वृन्दावनका एक पर्वत । (बास आदि द्वारा यह गौओंको बढ़ाता है) । यहाँ गौएं भली भीति पनती हैं ।

गोवर्द्धनधर, (पु०) गोवर्द्धनं (पर्वतं) धारयति । धृ+अच् । पर्वतको उठानेहार । भीरुण । नन्दजीके नन्दन ।

गोविन्द, (पु०) गो विन्दति । विद्+थ । गौको लपन कर्ता है । भीरुण । बृहस्पति । गौओंका अय्यर (स्वामी) ।

गोदीर्घ, (न०) गोः दीर्घ इव । गौके तिरछी नाई । गोदीर्घः (पर्वतः) " वत्र जगत्वात् " । मलयके एक देशमें उपजा बन्दन । १ त० । गोमहाक (न०) ।

गोष्ठ, संपात-वृद्धा होना । भ्वा० आ० अक० वेद् । गोष्ठते । अगोष्ठित् ।

गोष्ठ, (न०) गावः तिष्ठन्ति अत्र । क-पत्वं । जहाँ गौएं ठहरें । गौओंका स्थान । गोबाजा । गोशाल । म्वाल । गूजर ।

गोष्ठी, (स्त्री०) गावः (अनेका वाचः) तिष्ठन्ति अत्र । क-पत्वं । जहाँ बहुतसी वागिएं निकलें । हावा । मजलत ।

गोष्पद्, (न०) " गो. पर्व " । गौका पांव फंसनेसे उपजा गडा । गौके पांव जितना । गौओंसे सेवन किया गया देस । वह देस जहाँ बहुतसी गौएं हों (वि०) ।

गोसय, (पु०) गावः स्यन्ते (कथन्ते) अत्र । सु+अच् । जिसमें गौओंको मारकर होम कियाजाय । गोयज्ञ । गोमेधयज्ञ ।

गोस्तन, (पु०) गोः स्तना इव गुच्छो यस्य । जिसका गुच्छा गौके स्तनोंकी नाई हो । चार लड़ोंवाला हार । गौका स्तन ।

गोस्तनी, (स्त्री०) गोरिव स्तनः (कलं) अस्याः । जिसका कल गौके स्तनकी नाई हो । एकप्रकारकी दास ।

गोस्थानक, (न०) गवां स्थानं स्वयं च् । गौओंकी जगह । गोष्ठ । गौओंका घर ।

गौड, (पु०) एक नगरका नाम । बगालेसे लेकर भुवनेश्वर तक एक देश । उस देशके लोग । बहु० । विष्णुपर्वतके उत्तर भागमें निवास करनेहारें माद्राणविरोध । बहु० ।

गौडी, (स्त्री०) गुडस्य विकारः अण् । गुडका विकार । एकप्रकारकी मय (तास) । मिटाई (न०) । अलंकारमें एकप्रकारकी रीति ।

गौण, (वि०) गुणात् आगत +अण् । गुणमें आया । गुणके योगसे प्रकृत हुआ राज्य । अगुण्य वृत्तिसे निबहुआ अर्थ । छोटा । दूररा । व्याकरणमें प्रधानका विरोधी ।

गौणपश, (पु०) कर्म० । दुष्किदा निर्बल भाग । जिन ओर दूनीलकी कमजोरी हो ।

गौणिक, (वि०) गौण गुणोवात् (सत्, रज्ज्, तमम्) । गौण । छोटा ।

गौतम, (पु०) गौतमस्य अपत्यम् । पित्र्यो वा अण् । गौतमकी सन्तान का उपनाम पेटा । नचिकेताका पिता । छाननन्दनामी एक मुनि । धारण्यगिरि । भारद्वाज ऋषि । बुद्धका नाम । म्यादराजके रक्षनेहारैका नाम ।

गौतमी, (श्री०) गौतम+इदं अर्थे अन् । ततो हीम् ।
 गौतमकी । गौतमके रची गई सोढ पदार्थवादी विद्या ।
 गौतमकी नहीं । एक राजकीका नाम । दोगकी छी कृषी ।
 पुत्रदेवकी विद्या । गौरीवना । कवकी बहिन । दुर्गा ।
 गौघार, (पु०) गौघारा अर्थे आर्य । गौघारा पुत्र
 मिलित ।
 गौर, (पु०) गुर+र मि० विद्य रंग । विही शरिओं । श्वेत
 वर्ण । चन्द्रमा । पनाथ । मिथुन । बडा साफ । कालरेव ।
 गौरव, (न०) गुरोर्भावः अन् । गुरत । बडावन । सामनेसे
 उठ सके होना आदि मत (इवन) ।
 गौरी, (श्री०) गौरी+हीम् । गौरी । पार्वती । अठ वर्षकी
 कीवने (रव वा अशु) रहित कन्या । हल्दी । गोपी-
 कन्या । नदी । मर्याद । दुर्गा । दुर्गादेवती । आकल-
 लकी । एकराकी उचिनी ।
 गौरीशिवर, (न०) पार्वतीका तान्त्रिकान् । पार्वतीके
 सा शानेके नाम ।
 गौरीन, (न०) दूर्ग भूतं गेयं गन् । भूगुरी गेठ । पुराना
 गेठ ।
 गण, इति+अन् । शिवरचना । देवकन्या । पुपना ।
 गणः । शिवरका । मान-दरि+गण० गेम् । अन्वये ।
 अन्वये ।
 गणित, (वि०) अन्वय+अन्+अन् । गणित । गुणा
 रण । शिष्य । अन्वय । अन्वय । अन्वय ।
 गण, (पु०) अन्वय+अन् । गणन । गुणना । पन । "करो
 एव" अन्वय । अन्वय अन्वय अन्वय वा पन् । मिन् ।
 गणः । मिन् ।
 गणित, (पु०) अन्वय+इत् । गणितमधि । गण आदि
 गण (गेठ) । गणितमधि । गण । अन्वय । अन्वय+अन्
 गणः । गणः । गणः । गणः । गणः । पन ।
 गणित । गणित गेठ । गणन । गणन ।
 गणितवेद, (पु०) गणित विज्ञान, मिन्+अन् । गण
 वेदवेद । गण वेदवेद । गण वेद । गेठ ।
 गणितज्ञ, (न०) गण-ज्ञानं गेठ अन् । गणित ज्ञान
 वेदवेद । गणन । गणन ।
 गणितज्ञ, (न०) गण-ज्ञानं गेठ अन् । गणन (वि०) ।
 गणन । गणन । गणन । गणन । गणन ।
 गणन, (पु०) गणन (गणन) । गणन । गणन गेठ
 गणन (गणन) गणन
 गणन, (न०) गणन । गणन । गणन । गणन । गणन ।
 गणन । गणन । गणन ।

ग्रह, (पु०) ग्रह+अन् । स्यादि नव । दूर्ग
 अनुग्रह । हठसे पकडना । कडाईका उदय
 दुःख देनेहारे पूतना आदि । चन्द्र की हर्ष
 ग्रहण, (न०) ग्रह+भाकरी स्तुत् । सीधर ।
 भानडेना । आदान । देना । आदर । पं
 सूत्रका प्राग । इन्द्रिय ।
 ग्रहणीहर, (न०) ग्रहणी हरति । इन्द्र
 हांग । ग्रहणी रोगको दूर करनेहार (वि०)
 ग्रहनायकः, (पु०) ग्रहणां नायकः । ग्रं
 ग्रहणस्थ स्तुत् ।
 ग्रहपति, (पु०) १ त० ग्रहोच्च स्थानी । हां
 यक आदि ।
 ग्रहयाग, (पु०) ग्रहेभ्यो याग । ग्रहके भिन्ने
 दूर करने वा पुष्टिके लिये ग्रहके उद्येने मिः
 ग्रहराजः, (पु०) ग्रहणां राजन्+अन् । ग्रहों
 ग्रहसंगमः, (पु०) ग्रहणां संगमः । हां ।
 परस्पर मिलना ।
 ग्रहाघार, (पु०) १ त० । ग्रहोच्च भाग
 नयन (ताप) ।
 ग्राम, (पु०) ग्राम+अन्+आन्+अन् । वि
 गन् । खरमेद । रागका उदय । मिन्
 पुर्णनी इच्छे होते हे पैगा मरौका मन्
 हे । ग्राम्य आदि कागोका कागमन ।
 कानेही भूमि हो और जहाँ विधिप कहे हों
 ग्रामकण्टकः, (पु०) ग्रामस्य कण्टकः । गौ
 गौको कष्ट पहुँचनेका कारण ।
 ग्रामकुकुटः, (पु०) ग्रामस्य कुकुरः । गौ
 गौका कुकुर ।
 ग्रामकुमार, (पु०) ग्रामस्य कुमारः । गौ
 गौ । गौका कुकुर ।
 ग्रामगृहा, (श्री०) ग्रह+भाकरी अन् । ग्रहों
 गेठ, गौने गेठ ।
 ग्रामन-वन, (वि०) ग्रामे जन्मने अन्वय गण
 गणन गणन ।
 ग्रामनी, (पु०) ग्रामे जन्मि । श्री+विम् । गौ
 ग्रामको भागी अन्वये देवना है । गणन ।
 गौ । गणन (वि०) गौ+अन् । गणन गेठवेद
 (गेठवेद) । गौ+अन् (श्री०) ।
 ग्रामना, (श्री०) ग्रामना गेठवेद । गणन । गणन
 ग्रामवेदना, (श्री०) ग्रामस्य वेदना । गणन गेठवेद
 ग्रामगुरुः, (पु०) ग्रामस्य गुरुः । गणन गेठवेद
 (गणन) ।

घग्, हंमना । भ्या० पर० अक० सेट् । घग्ति । अघग्तीन् ।
 घद्, चेट् । कामकरना । हरकन करना । यन्न करना । भ्या०
 आगम० अक० सेट् । घदादि । घटते । अघटित । घटयति ।
 घद्, घग् करना । घुरा० उम० अक० सेट् । इदिन् ।
 घटयति-ते ।
 घट, (पु०) घट्+अच् । कलस । घटा । जलकी घटी ।
 कुंभरुशिक्षा विह । वीस श्लोकका परिमाण ।
 घटक, (त्रि०) घटयति (स्त्रविशिष्टतया निम्नयति)
 घट्+निच्+शुल् । साय रहनेसे बनानेहार । वास्य
 आदिके बीचमें पडनेहार पदार्थ । योजक । जोडनेहार ।
 अपने छिये यन्न करनेहार । पूरा करनेहार । वीआ
 निलाने बनानेहार ।
 घटकारः-कृत्, (पु०) घटं करोति । घटा बनानेवाला ।
 कुम्हार । कुम्भकार ।
 घटप्रहः, (पु०) घटं घृणाति । घटा खानेवाला । पानी
 मरनेवाला । मिशर ।
 घटना, (स्त्री०) घु० घट्+घुल् । संहरकरण । इका
 करना । जोडना । मेलना । हाथियोंघ समूह । रचना ।
 यन्न । बनाना ।
 घटस्थापनं, (न०) घटस्य स्थापनं । किसी देवताकी प्रति-
 स्थापन विह । घटेका स्थापन करना ।
 घटा, (स्त्री०) घट्+अ । यन्न । कोचिच । समा । समूह ।
 हाथियोंघ घृष्ट । बादलोंकी फैलवट (आम्बर) ।
 घटिका, (स्त्री०) घाट पलोंका दग्ध काल । घटी ।
 “ घटति विहितकार्यकरणाय ” घट्+निच्+शुल् । विहित
 (बंदमें कहागया) कार्य करनेके छिये जो लगाता है ।
 दो दग् । मुहूर्तसमय काल अर्थात् दोघटी । “अतो
 घटः कन्” । छोटा घटा “इकार्ये कन्” । नितम्ब । घूट ।
 घटीघण्ट, (न०) ६ त० । कृण्मेंसे पानी निकालनेकी कला ।
 धारण । माउ । उद्वहन । खोलना । प्रहरीरोगनेद ।
 घटोत्कच, (पु०) एक राक्षस । दिव्या राक्षसीके पेटमें
 नीममेरुने टपन्न कियागया । यह बड़ा पण्डित्वा वा और
 वरुणके दुर्घमें पण्डित्वाकी ओरसे उभा परन्तु कर्णने
 इन्द्रसे प्रसन्नकीर्ण घण्टि (बरछी) से मार दिया ।
 घटोद्भवः, (पु०) घटान् उद्भवति-उप० स० घटत्रः घटान्
 जयते । जन्-उ-घट योनिः । घटः योनिः दन्व-ब० स०
 संनव+घटान् संभवति-उप० स० । घटेसे उत्पन्न होता
 है । अणय ऋषि ।
 घटोष्ठी, (स्त्री०) घट इव उपः दन्वाः । जिसके मन हवना
 घटके समान पूने होरहे है ।
 घट्ट, घट्टन । दिव्या । भ्या० अण्य० मक० सेट् । घट्टते ।
 अघट्टित् ।

घट्ट, दिव्या-भुग० । उम० मक० सेट् । घट्टते । अ-
 घट्टन ।
 घट्ट, (पु०) घट्टेज्ज । घम् । नहानेके छिंने एणके
 स्थान । घाट । घुक्त (श्रीम-सामूट) खेदक हरा ।
 भावे घन् । दिव्याना ।
 घट्टकुटी, (स्त्री०) घट्ट्य कुटी-य० त० । घुक्त (न्)
 खेनेकी कुटिया । मण्डकी चौकी ।
 घट्टित, (त्रि०) घन्+क् । निर्मित । बनाना ।
 हिलयागया । रंगा गया । पोटागया ।
 घण, वीसि-चमकना । तना० उम० अक० सेट् । घणे
 घणुते । अघणीन्-अघणीन् । अघणित् । घनिना ।
 घण्ट, बोलना । चमकना । भ्या० घुण० पर० । घण्टी-घट्टे
 घण्टा, (घंटे-अच्) घंटी । कांसी आदिका बन्दुका
 प्रकारका वाता । अनिबला । नागका । घण्टे
 वृद्धनेद ।
 घण्टानादः, (पु०) घण्टानाः नादः । घण्टाका
 घंटीकी आवाज ।
 घण्टापथ, (पु०) घंटेपलङ्गिनः । घंटेसे पहिलेका
 मार्ग (रास्ता) । घंटेवालों (हाथी आदि) के से
 योग्य रास्ता । ट्व । नगरका प्रान्तनाम । दुर्ग
 घटी सङ्क ।
 घण्टाराज्यः, (पु०) घण्टायाः राज्यः । घंटीकी
 घण्टिका, (स्त्री०) घृष्टा घंटा । अण्यसे कन् । छोटी घंटी ।
 इसीके समान स्वप्न होनेसे तापुकी जीम । घंटी ।
 घन, (पु०) घन्+अण । घनादेशः । मेघ । इतना
 मोथा । प्रवाह । घट । मजबूत । कठिन । सत्त्व । ईश
 घरीर । लोहेका मुद्गर । कठ । अग्रक । सत्त्वनाम
 तीन अंशोंको आधारमें गुणना । जैसे तीरका घन
 और कारका ६४ है । निविड । गाडा । मण्डुका । इतना
 मन्थम नाच । लोहा (न०) ।
 घनकफ, (पु०) घनम्य (मेघम्य) कठ इत् । घने
 बादलकी कठ है । बादलके परपर । गाँ । अंके ।
 घनच्छद्, (पु०) घन । (निविडः) छादः दन्व । नि
 गाँटे पडनेवाला वा बादलके पडनेवाला ।
 घनध्वनिः, (पु०) घनम्य ध्वनिः । मेघघन्ता । घने
 आवाज । मेघघञ् ।
 घननामि, (पु०) ६ त० । धूम । घृष्टा । घन
 कारण होनेसे उगे नामिन प्राप्त हुआ । पर “घने-
 निः घटिलमन्त्रा” इत प्रकार मेघघनेमें घने
 कारण कहा है ।
 घनपदवी, (स्त्री०) ६ त० । बादलोंका मन । घन
 (से मेघका आधार होनेसे एणा कहा है
 घनी बादल घनने हैं) ।

घनरस, (पु०) घनस्य रसः (विषयः) । बादलस्य रस । पानी । घण्टा रस । कर्पूर । चारु । पीतुपर्णी (पु०) गण्डे रसवाला (त्रि०) ।

घनपट्टी, (श्री०) घनस्य बन्दीव । मानो बादलकी बेट है । विजली ।

घनदयाम, (त्रि०) घन इव दयामः-उपमित-स० । मेघके समान दयाम । शीतला । बडा कावा ।-मः (पु०) श्रीराम । धीरुष ।

घनसार, (पु०) घनस्य सार इव सीतलत्वात् । ठण्ड होनेसे मानो बादलका सार है । कर्पूर । पारद । पारा । जल । पानी । एक प्रकारका द्रव्य ।

घनागम, (पु०) घनानां (मेघानां) आगमः यत्र-विषय समय बादल आगम्य । वर्षाका काल । पानी बसनेका समय (बष्प) ।

घनागमः-उदयः, (पु०) घनस्य आगम्यः अधवा उदयः । मेघ (बादल) का आना । वर्षाकाल । बरसिका समय ।

घनाघन, (पु०) ह्य्+अच्+नि० ह्य् । बरसनेवाला बादल । मसहारी । अन्योन्यबटन । एक दूसरेके घकेलना । निरन्तर । सदा । सदा मारनेवाला (त्रि०) ।

घनात्यय, (पु०) घनानां अत्ययः (नाशः) यत्र ङाङे । जिस समय बादल छिन्नमय । धारवाला । अस्य और बलक । विजा ।

घनामय, (पु०) घनः (रसः) आमयः यस्मात् ५ ब० । जिससे रस (पदार्थ) रोग होता है । घर्करका द्रव । (द्रव्य)

घनाम्बु, (न०) घनस्य अम्बु-य० त० । मेघजल । बादलका पानी ।

घनोपल, (पु०) १ त० । घनस्य उपल इव । बटिन होनेसे मानो बादलका पत्थर है । करक । तिल । मडा । शीला ।

घम्बू, आना । हिलना । भ्या० पर० सक० सेट् । घम्बति । अधम्बीत् ।

घरट्ट, (पु०) घृ+अच् । परः शब्दो यस्मात् ५ ब० सक० कर्ता । पण्ट ।

घर्घर, (पु०) घ्नः घ्नः घर्त्ति । घर्त्तृक् अच् । चलते हुए पानीका शब्द (आवाज) । बजनाद् । दर्वाजा । एक प्रकारकी खर (आवाज) ।

घर्घरिका, (श्री०) घर्घर+अत्यर्थे ङ् । छोटी घण्टी । एक कावा । घुनेहुए धान । एक नद (पु०) ।

घर्मे, (पु०) घृ सीवना+सक् नि० घृण । धमसे पीहित हुएके अगोष्ठे बहाइ पानी । पलीना । धूप । गरमी ।

घर्ष, आना । भ्या० पर० सक० सेट् । घर्षति । अधर्षाय, घर्षान्ताः, (पु०) घर्षस्य अन्तः । मरगीच अन्त । वर्षा काल ।

घर्षान्ताः, (पु०) घर्षा अंतयः यस्य ब० त० । उष्ण तिर-पोशाल । स्यं ।

घर्षोदकम्, (न०) घर्षस्य उदकं । पलीनेका पानी । पलीना ।

घर्षणी, (श्री०) घृ+कर्मणि ल्युट् षीप् । हरिया । हल्ली । घस, आना । भ्या० पर० सक० अनिट् । घषति । अध-सात् । घग्ना ।

घस्यत्, (त्रि०) घस्य+कर्मण् । मशायगील । खाने-वाला । घारट् ।

घस्य, (पु०) घस्य+कृ । दिन । हिंघ । मारनेवाला (त्रि०) ।

घाण्टिक (पु०) घम्या घर्त्ति ङ्क् । घंटा लेकर विचरता है । राजाओंको जमानेके लिये घंटा बजायकर खुति पढ़नेहाए । घन्सा । घंटा बजानेहाए (त्रि०) ।

घात, (पु०) ह्य्+पञ्च । प्रहार । चोट । मारना । अंकुशे पूरा करना । गुणना । "घरणे घन्" बाण । तीर ।

घातिव, (त्रि०) ह्य्+तच्छीलार्थे णिनि । घातुका मारनेके क्षमाववाला ।

घातुकी, (त्रि०) ह्य्+उक्त् । हिंस । मारनेवाला । दूर । निर्दय । बेरहम ।

घार, (पु०) घृ-सीवना-पञ्च । सेवन । सीवना । छिडकना ।

घातिक, (पु०) घृतेन निर्मितः तस्य विद्यतो वा ङ्क् । घीका बनाहुआ । एक प्रकारका खाना । प्योर । पीसे भरहुआ ।

घास, (पु०) घस्य+कर्मणि घञ् । गौआदिके खाने योग्य लृण आदि ।

घासिः (घस्य+ङ्) अग्नि । घास ।

घु, शब्दकरना । भ्या० आत्म० सक० अनिट् । घवते । अघोट ।

घुट, सीटना । पीछे हटना । भ्या० आत्म० सक० सेट् । घुटते । अघुटत । अघोटि । अघोटित् ।

घुट्ट, सामनेसे चोटकरना । उलटकर मारना । दुदा० पर० सक० सेट् । घुटति । अघुटीत् । उघोट ।

घुट, (पु०) घुट+अच् । बरणमयि । पाँचवीं घाँट । मिठा (गुल्क) । एषी ।

घुण, घुसना-केना । दुदा० वम० सक० सेट् । घुणति । अघोणीत् । घुणते । अघोणित् ।

घुण, (पु०) घुण+क । अधने नामसे प्रसिद्ध लकड़ीको खानेहाए सीमा ।

घुर, चब्द करना । बंदी आवाज करना । घुरघुमाना । दुदा० पर० सक० सेट् । घुरति । अघोरीत् ।

घुर्षुं, (पु०) शो "घुर" इन प्रकार चब्द निघण्टु है । घुर्षुंरिया सीमा । घुरघुरी आवाज ।

धृ, स्तुति (तारीफ) करना-आभिष्करण। जाहिर (प्रगट) करना। धृ० उम० पर० सक्० सेद्। धोय-यनि-चे। धोयति। धृत्तुपूयन्त। धृत्तुपयत्।

धृष्ण, (न०) धृष्+कृष्णच्। डुडुम। केसर।

धृक्, (पु०) "धृ" इति कायति। कै+क। "धृ" ऐमा। चिह्नाता है। उद्। पेशक।

धृद्, मारना-सक० पुराना होना। अक० दिवा० आरम० सेद्। धृयंते। अधृष्टि। धृष्णः।

धृष्ण, धूमना। तुदा० उम० सक० सेद्। धृष्णति-चे। अधृष्णन्। अधृष्णति। धृष्णतः।

धृ, सीचना (सेक) भ्वा० पर० सक० अनिद्। परति। अधृष्णन्।

धृष्ण, चमकना। तना० उम० अक० सेद्। धृष्णति-धृष्णते।

धृष्णा, (स्त्री०) धृ+नक्। कारण्य। दया। निदा। घिन।

धृष्णि, (पु०) धृ+नि० नि० किरण। लाट। तरङ्ग। उद्हर। सूर्यं।

धृत्, (न०) धृ-चमकना। भावे क। चमक। "कर्त्तरि क्" चमकान्ना (त्रि०) सीचनेके अर्थमें "कर्त्तरि क्" पानी। पकाहुआ मसखन। घी।

धृत्कुमारी, (स्त्री०) धृत्प्रधाना कुमारी। एक औपवी (द्वार)। इसका पत्ता मलनेपर धी-धीनाई बढ़ता है। जीनीकंद।

धृत्वाची, (स्त्री०) एक अयरा। उत। चमकनेवाली। धीवाली।

धृत्, घसना-रगटना। सक० प्रग्न होना। अक० भ्वा० अन्म० सेद्। मयंते। अधृष्टि।

धृष्टि, (पु०) धृष्+क्तिच्। बण्ड। सुअर। "क्तिन्" विपना। रगटना।

घोट (क), (पु०) घृत्+अच्+शुल् वा। अथ। घोडा।

घोटकारि, (पु०) ६ त०। महिय। भैंसा (घोडेका शत्रु)।

घोणा, (स्त्री०) धृष्+अच्। घोटेकी नायिका। नागा (गदकी)।

घोनिन्, (पु०) घोणा नागा अन्नि अस इति। (लंबी) नागावला। घृत् (इसकी लंबी नागा होती है)।

घोर, (पु०) घृत्+अच्। शिव। एक ऋषि। (सांख्यमें, रत्नसुप्रथम। अकारादि सिद्धेय धर्म। विष (जदर) (न०) (गन्ध) भयानक। दुर्मि (त्रि०)।

घोरामन, (पु०) घोर एयनं (उज्ज्वल) अन्म। इण्-वती अकारवला। गीदर। सिद्धर।

घोड, (पु०) (न०) घृत्+कर्मणि घृत्। इधोड। तक। अदी। उद्। मयदुभा इति। मय०।

घोष, (पु०) घोषन्ति गाः अथ। घृत्+अन्तेत्। जहां गाएं शब्द कर्ती हैं। आभीरपत्नी। अर्धैकता। "भावे घष्" शब्द। बादलकी आवाज। "करीर" एक प्रकारकी लता। (व्याकरणमें) बहुरूपधर्म। काशी (न०)।

घोषकः, (पु०) घोष-मार्थे क। विलनेकाल। रोतः। दिग्दोष करनेवाला। दग्दोष देनेवाला।

घोषणा, (स्त्री०) घृत्+विच्+घृच्। छोड़ने प्रसिद्ध होने त्रिये कंचं शब्द करना। टोंगी। मुनारी। बंगोर से। घ्रा, गंधलेना। भ्वा० पर० अक० टेना-अक० इन्। विप्रति। अघ्राणीन्। घ्राणः। घ्रातः।

घ्राण, (त्रि०) घ्रा-कर्मणि+क्। मूया गया 1-कः (पु०) णं-(न०) गन्ध-संपन्नेकी क्रिया। नासिका+नक०।

घ्राणचक्षुस्, (त्रि०) घ्राणं चक्षुः यम्। घ्रा (उद्) देखनेवाला। अंधा। जो मार्गमें संपत्ता जाता है।

घ्राणतर्पण, (पु०) घ्राणं (नासिकां) तर्पयति। इत्+निच्+स्यु। जो नासिकाको तृप्त कर्ता है। सुपत्ता। सुगंध।

घ्राणपाकः, (पु०) घ्राणस्य पाकः। नासिका (नक) के व्याधि।

घ्रातव्य, (त्रि०) घ्रा+नव्य। संपनेवायक।

घ्नय, (त्रि०) घ्रा-यत्। संपनेके योग्य। संपनेवायक।

ड.

(इस अक्षरका बोधवाचकमें आनेवाला कोई शब्द नहीं)

ड, (पु०) डु+ट। विपयकी इच्छा। मोहकी वा इच्छा। डित्तिका नाम।

डु, शब्द करना। भ्वा० आरम० अक० अनिद्। इति अटविट्।

घ.

घ, (अन्व०) चि-ट्। अन्वावय (एककी प्रत्ययमें होने को साथ कहना) जैसे "गांवको जा और बरतके ना" यहाँ गांवमें जानाहि मुख्य और बरतकीका दृष्टको आनुवंशिक (उसके साथ) है। समुपय (एक हीमें अपेक्षाके बिना बहुतांश एक काम आदिमें सम्यक् जैसे "पिता और पुत्र साथको जाता है" यहाँ एक एक रूप काममें पिताकी नाई पुत्रका भी संबंघ है। इसी योग (आपगमें अपेक्षावालीका एक कर्ममें अन्व) "पिता और पुत्र जाते हैं" यहाँ दोनोंहीका जनकत्व में आपगमें अपेक्षाहित अन्वय है। गमहार (के) दुर्भोद्य अन्वय) जैसे हाथ और पांवको बरतना है, हाथ और पांव सिद्धेय-भौवाही अन्वय है। और। विपय घामन। वाररुण। वरमा। वडुधा। और (पु०)

सुति । रजना । सुष्टोना । प्रगप्रहोना । अरु० अ० उम०
 द । चरति ते । अचरीत्-अचारीत् । अचरिष्ट ।
 चरु, चीति । प्रकाश होना । चमकना । अदा० पर० अरु०
 च । चराति । अचकाचीत् । अचकाचासत् ।
 चत, (न०) चरु+भावे क । भव । इत्या । "चर्त-
 क" । इराहुभा । ईरानहुभा (प्रि०) शीतल अक्षरके
 द्वारा एक छन्द (छी०) ।
 चर, (पु०) चरु-नृम होना+ओरुन् । अपने नामका
 शी । (बहते हैं कि चन्द्रमाही गिरणोंका पान करना है) ।
 चरी, लीकित होना । धर्मि । तत्कलीक उठाना । गुरु० उम०
 च० सेद । चरपति ते । अचबबत्-त् ।
 चर, (प्रि०) चर-अरुन् । शोल । परेरात् ।
 चर, (पु०) कियते अनेन । इ+पमये क । नि० द्विसम् ।
 चरका पयी चरर (पहिया) रवात्र । चाचा । सेनाके
 योग । उसके सब राज । एक प्रकारका पाण्डु । कुम्भा-
 का शापन (चरर) । एक प्रकारका अन्न । अन्नचर्च ।
 चरपेट । (लक्ष्मण) मूलापार आदिमें रहनेवाले छ पद्य ।
 चरवाही पूजा करनेके यन्त्र । (बजा) एक प्रकारकी वाद्य-
 यन्त्र । सेठीकी चरवा । समूह । गाँवका समूह । पुन-
 का भाव । मरीची गुंज । (लक्ष्य भेदोंकी हफका जिह
 ता है) ।
 चर, (पु०) चर्क इव वापति । चर्क । त्रिपरी पहि-
 योकी आकाश निक्षाली है । (व्यापराक्रममें) एक प्रवा-
 का सर्क (हलील) । एक घोष ।
 चरारिन्, (पु०) चरने चरति-उप० रा० । चर (पहिये)
 के चलना है । इव ।
 चरधर, (पु०) चर्क (अक्षमेदं) (कर्ममण्डलं वा)
 चरती । चर्क+अच् । एक प्रकारके अन्न (हृदिकार) का
 कर्मसमूहको उठानेहाता । चिन्तु । शाप । चर्च । शम्भ ।
 चरघारा, (छी०) चरत्स धारा (चर्च) । परिवेधी
 शोक । पहिये का अक्षके जाने को एकभगमें सीधका
 (सेठी) होती है ।
 चरिणी, (छी०) चर्क इव चरुणी मरी । चरणी भीति
 मूमली हुई चरनेवाणी मरी । लक्ष्मी मरी ।
 चरिनाम्न, (पु०) चर्क ही काम बस । चर्कके काम-
 बाल । चरवाचरणी ।
 चरिनायक, (पु०) चरक-सेनापते कर्ण । सेना-
 समूहके बलानेहाता । सेनपति । चरनायक ।
 चरिपानि, (पु०) चर्क (प्रारंभ) चर्चो बस । शिठके
 शेषमें चरुकी अन्न (हृदिकार) है । चिन्तु ।
 चरिपाद, (पु०) चर्क चर इव बस । पहियेको शिथल
 चर्च है । इव । लक्ष्मी । "चर्क इव चर अन्न" । शिथल
 चर्चको पहिये कहते हैं । हली । हली ।

चक्रपुष्करिणी, (छी०) हरिश्चोकन निगता पुष्करिणी ।
 हरिके चक्रके घोड़ीगर्द लक्ष्मी । चरणीमें मन्दिरीयका
 चक्रनीच ।
 चक्रपद्म, (पु०) चक्रयोः चक्रुः (इव) । चक्रको
 (मेल करानेके) मानो चक्रु है । सूच । (निन्देरी ल-
 मय ये मिल जाते हैं)
 चक्रभृत्, (पु०) चर्क विमर्ति-चर्क+भृत् । शिठके हृदके
 चक्र है । चिन्तु ।
 चक्रमेदिनी, (छी०) चर्क भिननि (मियो गिरीयकी)
 गिरीयनिनि । जो चक्रकोका अक्षयमें गिरीय कराने ।
 शक्ति । शन । (शानको ये गिरीय करते हैं यह शोधमें
 प्रसिद्ध है) ।
 चक्रस्रम, (पु०) चर्क इव अक्षय+अक्ष । पहियेकी तरह
 घूमनेहाता । कुन्दनकी चरणीमारीकी बल । लक्ष्मीकी चरणी
 चक्रपतिन्, (पु०) चर्क (भूमण्डले) चर्क+पतिन् । चर्क (ईश
 चर्क) का (लक्ष्मीभूमि) चर्क+पतिन् हील अक्षय । कुन्दन
 का गिति । जो पृथिवीमण्डलपर हल है का लक्ष्मीके हनु
 हबो सबल पृथिवीपर घूमनेहाता । लक्ष्मीके पृथिवीके
 लक्ष्मी । महाकायधिराज । लक्ष्मी दुर्मिदका बहल ।
 चर्कके समान घूमनेहाता । (प्रि०) सेठ । कुच ।
 लक्ष्मी अक्षय । लक्ष्मीकी (छी०)
 चक्रयाक, (पु०) चक्रयाकेन चरने । चर्क+अक्षय
 "चर्कनि" चर्क । जो "चर्क" इत्येको लक्ष्मी लक्ष्मी है ।
 अपने लक्ष्मीका पति ।
 चक्रयाक-क, (पु०) चर्क इव चरते चरति अक्ष । जो
 चर्कके समान चरते है । लक्ष्मीके चर्क+अक्षय (छी०)
 चक्रचुडि, (छी०) हरीकी हृदिके । लक्ष्मीकी हृदिके ।
 लक्ष्मीका हृदिके । लक्ष्मीका हृदिके ।
 चक्रचुड, (पु०) चर्क इव चरु । लक्ष्मीके हृदिके लक्ष्मी
 भीति शीतल सीधका सेनाको उठाने ।
 चक्रहस्त, (पु०) चर्क इव चरु-क-क- । शिठके हृदके
 चक्र है । चिन्तु ।
 चरवा, (छी०) चर-रुचि+अक्ष । लक्ष्मीके । चरवा । लक्ष्मी ।
 चरवाह, (पु०) चरवा अक्ष (अक्षचर्क) इव (अक्ष)
 बस । अपने पहियेके हृदके शिथल लक्ष्मी है । इव ।
 "चर्क अक्ष अक्ष" पहिये शिथल अक्ष है । इव । लक्ष्मी ।
 चरिच, (पु०) चर+अक्ष चर्चो हृदिके । चर्क (हृदिकार)
 बस । चिन्तु । शाप । चरवा । कुच । लक्ष्मीके ।
 लक्ष्मी । एक प्रकारका लक्ष्मी । चरवा । लक्ष्मी ।
 (छी०) ।
 चरवीच, (पु०) चरवा अक्ष अक्ष लक्ष्मी लक्ष्मी ।
 लक्ष्मीके लक्ष्मी है । लक्ष्मीके लक्ष्मी है । लक्ष्मीके लक्ष्मी
 लक्ष्मी है । लक्ष्मी । लक्ष्मीके लक्ष्मी

रुद्र, (न०) चतुरी अंगानि यस्य । त्रिकके चार अंगानि । हाथी, घोडा, गधी, पैदलरथ चार अंगोंवाली गंगा । रुद्र, इरा, पीला और काले चार रंगके समान रंगके लक्षण त्रिकके हों । तदंतरं । चौदहवीं श्लोक.

रन्ता, (स्त्री०) चत्वारः अन्ताः यस्याः—४० छ० । चार अन्तवाली । पृथिवी.

रत्नीति, (त्रि०) चतुरधिषः असीतितमः । चतुरधियों । चार ऊपर आसीतः.

रत्नीति, (स्त्री०) चतुरधिषा असीतिः । चतुरधियोंकी संख्या.

रत्न-स, (त्रि०) चतस्रः अथयः=श्रेयाः यस्य । चार जेनबन्दा.

रत्न, (त्रि०) चतस्रः अथयः=श्रेया यस्य । नि० । शुभश्रेया । शंश्रेया । चार जेनबन्दा । (ज्योतिषमें) प्रभते चौथा और आठवां स्थान । “चतुरस्र” भी होता है.

रत्नन, (पु०) चत्वारि ज्ञानदानि यस्य । त्रिकके चार मुक्त हों । प्रज्ञा । “चतुर्मुक्तं” आदि हकी अर्थमें लेते हैं.

रत्न, (त्रि०) चतुर्गुणाः गुणाः यस्य । चारचार गुणा हुआ सोलहवीं संख्या.

रत्न, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । जिससे चारवी संख्या पूर्ण (भर) होती है इस प्रकारका श्रेय (श्रेया) .

रत्न, (त्रि०) चतुर्गुणः । चार भागोंमें से एक भाग । चौथा.

रत्नी, (स्त्री०) चन्द्रमाके पक्षका चौथा दिन । चौथी तिथि । (व्याकरणमें) के ध्यां भ्यत् ये टीनों प्रत्यय.

रत्नी, (त्रि०)—यी । (स्त्री०) चतुर्णां पूरणः—४४ । चारोंको पूरा करनेवाला : चौथा । या चौथी ।—यीः (पु०) चित्री श्रेणीका चौथा अक्षर ।—यीं (न०) चौथा भाग.

रत्नीमत्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं यस्य । चौथा भोजन करनेवाला । चौथीवार खानेवाला.

रत्नीमत्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं—भक्त+भिर । प्रत्येक आय (आमदन) का चौथा भाग देनेवाला (प्रमासे) राजा.

रत्नीमत्त, (त्रि०) चतुर्थः भक्तः यस्य । चौथे भक्त (हिस्से) का भाग । चौथा हिस्सा देनेवाला ।—यः (पु०) चौथा भाग । चतुर्थीय.

रत्नीमत्त, (पु०) चतुर्थः आभयः यस्य । चौथे आभय (संन्यास)वाला मादण.

रत्नीमत्त, (न०) चतुर्थी कर्म । चिवाहसे चौथी रत-पर कर्तव्य कर्म (रीतराम) .

रत्नंत, (पु०) चारवारी दन्ता अस्य । जिसके चार दंत हों । ऐरावत । इन्द्रपत्र । इन्द्रजीवा हाथी.

चतुर्वेदान, (त्रि०) ४० व० । चतुरधिषा दस । चार ऊपर दस । चौदहवीं श्रेया (गिनती) । “तस्य पूरणे चत्”-चतुर्धाः (चौरधा) । “त्रियां” चतुर्विधा । चौदही तिथि.

चतुर्विधा, (अन्व०) चतुर्धा रिसां समाहारः—समा०—४० । चार रिसाओंका समूह.

चतुर्विधा, (अन्व०) चत्वारि द्वारानि यस्य । चार द्वार (दरवाजों)वाला (घरआदि).

चतुर्विधा, (अन्व०) प्रकारे या प्रत्ययः । चार प्रकारसे । चार तरहसे.

चतुर्विधा, (अन्व०) चतुर्प्रकारं+धाच् । चार प्रकार (तरह) से.

चतुर्विधा, (पु०) चत्वारः बाहवः यस्य । चार हाथोंका । चार भुजावाला । विष्णु.

चतुर्विधा, (अन्व०) चतुर्णां मन्त्राणां समूहः—समा०—४० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.)

चतुर्विधा, (न०) चत्वारि भद्रानि । धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप चारों इच्छे हुए कल्याण । मिलेहुए धर्म आदि चार.

चतुर्विधा, (पु०) चारवारी भुजा (हस्ताः) अस्य । जिसके चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्विधा, (पु०) चत्वारि मुखानि यस्य । चार मुखोंवाला । प्रज्ञा.

चतुर्विधा, (न०) चतुर्णां गुणानां समाहारः । सत्य, प्रेता, द्वार और कठिहर चारों गुण । “विज्ञेयं तच्चतुर्विधं” इति मनुः.

चतुर्विधा, (पु०) चतुर्णां वर्गः (समुदाय.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुरुषका अर्थ.

चतुर्विधा, (पु०) चत्वारः वर्गा । मानव जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्विधा, (पु०) चत्वारो वर्गाः येषु ४००० । हिन्दुओंके चार वर्ग या चार जातिएं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.

चतुर्विधा, (स्त्री०) चत्वारि वर्गानि वयो यस्याः (गोः) इत्यर्थः । चार वर्ग अवस्थावाली गौ । चार वर्षकी गौ.

चतुर्विधा, (पु०) चत्वारो विद्याः (वेदज्ञानरूपाः) यस्य । चार वेदोंके जापेदारा । चारों विद्यावाला भी होता है.

चतुर्विधा, (त्रि०) चत्वारः विद्याः अभ्यस्यः येन—४००० । चार वेदोंको पढ़ा हुआ । चारवेदोंका ज्ञाता.

चतुर्विधा, (स्त्री०) चत्वारः विद्याः—४००० छ० । चार विद्याएं । चारों वेद.

चतुर्विधा, (त्रि०) चत्वारः विधाः यस्य । चार प्रकारवाला । चार तरहका.

चतुर्विधरीर, (न०) जरायुत्र, अश्वज, सेनर और उद्दिहर चार प्रकारके शरीर । “चतुर्विधरीरानि पूषा मुखाः परहसः” इति.

चक्रेश्वर, (पु०) चक्रेश्वरः-प०त० । सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका
ईश्वर (स्वामी) । विष्णुका नाम । हिंदी प्रदेशका अधि-
कारी । जिलाधिकारी ।

चक्रोपजीविन्, (पु०) चक्रेण उपजीवति । तेलके चक्र
(झंझू) से जीता है । तेल निकालनेवाला । तेली आदमी ।

चक्र, चक्रना । छोटना । सफल करना । बरा० आत्म०
बक० सेट् । बटे । अस्तन-अह्वन् । (भाष्यके मतमें)
कक्षाकीट । अक्षर । (छोटना इस अर्थमें तो)
समवाहित ।

चक्रण, (न०) चक्रण्-उत्पत्त्येः । बहना । बोलना ।
भ्रम बहानेके लिये एक प्रकारकी चटनी ।

चक्रुम्, (न०) चक्रु-कर्मणे उति । देखना । आंख ।
कर । प्रकाश ।

चक्रुधम्, (पु०) चक्रुधा श्योति । धु+अधुम् ।
चक्रुधे धः कर्त्तुं धम् वा । आंगणसे मुलता है । जिसकी
आंगणी बन है । मने । गाँव ।

चक्रुष्, (पु०) चक्रुषे द्विः च । नेत्रके लिये द्वि-
कृति । चन्द्र (चंद्रमा) । पुत्रकीप्राप्त । पुराजना ।
पुत्र । चक्रव । आंगणका उपासी (पि०) भजश्री ।
चक्रुष्वा (श्री०)

चक्रुष्म, (न०) चक्रुष्मत्+शुद् । कर्त्तार पूजना ।
शुद्ध पूजना । इतर पूजना । शिष्टे पूजना ।

चक्रुषी, (श्री०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पु०) चक्रु-आत् । तं कृति । कर्मक । रहो क ।
चक्रुष्य । चक्रुषी । भिन्ती और चक्रु । चक्रुष्य और
चक्रुषी (पि०) चक्रुषी और चक्रुषी (श्री०) ।

चक्रुष्य, (श्री०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पु०) चक्रुष्ये इत्येति कर्म । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पि०) चक्रुष्यं विभं कर्म । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (श्री०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पु०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पु०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चक्रुष्य, (पु०) चक्रु-कर्मणे चक्रु-र्त्तुं कृति । कर्मक ।
रहो क हंसे है । कीर् । धर्मगी । भीती । शिन्तिवीर्य ।
"चक्रुषी" की कर्त्तु ।

चटक, (पु०) चटति (मिनति)
धान्य आदिको तोड़नालती है ।
चटककः । चटिका (श्री०) ।

चटकाशिरस्, (पु०) चटकाकाः
शिरसी नार्दे । पिप्पलीमूल । मय ।

चटु, (पु०) चट्+ङ् । पियास
आगम । उदर । पेट ।

चटुल, (पि०) चट्+उलन् । चम
ली (श्री०) ।

चट्ट, कौ । क्रोध करना । सफाहोना ।
अक० सेट् । चट्टयति-ते । अचक्रुष्य ।

चण, जाना । मारना । शब्दकरना और
सक० सेट् । सगति । अचाणीन्-
चाणयति । वा पयाति ।

चणक, (पु०) चणु-देना+भृन् । सस
छोले चने । एक मुनिका नाम जिसे
मुनि हुआ ।

चण्ड, (पु०) चण्डि-कोप+अन् । शिन्ति
दरल । समके दूत और एक दैत्य
(न०) तेजीवाला और गुम्मेवाला (पि०)
चण्डी, चण्डिका ।

चण्डामक, (पु० न०) चण्डी (कोपनी)
शुद् । सुन्दरिप्रियोद्या आधे उदरों (प०)
छोटा कोट ।

चण्डाल, (पु०) चण्डि+कालन् । मारने
शुद्धे मादृशीमें उपाय कियागया चण्डीकी
चण्डांशु, (पु०) चण्डा (चण्डा) की
सही चिकित्से तेज हो । शुद्ध ।

चण्डी, (श्री०) चण्डि+काल+कीर् । को
देती । उगीके महाम्भुको करनेके
आयको चण्डी करते हैं ।

चण्डीश्वरा, (पु०) चण्डाः ईश्वर ।
(चण्डी) का ईश्वर । द्विज ।

चण्डु, (पु०) चण्ड+उत् । शूद्रक । मूला ।
चण्डु, मंगला । मना । म्ना० उभ० शिब० है ।
अपेक्षीत् । अपेक्षित ।

चणु शाला, (श्री०) चणुः शाला इति ।
मन्ने लिये होई चणु चणुष्य मन्ने ।

चणुर, (पि०) च० चणु+उत् । चणु
दरलपत्त । "चिवा" चणुः । "चणुषी"
चणु, (पु०) चणु+उत् । शिन्ति ।
चणुने उदर । उदर । आंगणके चणुने ।
(पि०) ।

तुल्यः, (न०) बलारि अंगानि यस्य । जिसके चारों ओर
हों । हाथी, घोड़ा, गायी, पैदलरूप चार अंगोंवाली
सेना । लाल, हरा, पीला और काले चार रंगोंके समान
पेलके साधन जिसके हों । सदरंज । चौपट्टी खेल.

तुल्यता, (स्त्री०) बलारः अन्ताः यस्याः—न० घ० । चार
अन्तवाली । वृषिदी.

तुल्यतीति, (त्रि०) चतुर्विधः अस्तीतिवमः । चतु-
रित्वां । चार ऊपर आसीया.

तुल्यतीति, (स्त्री०) चतुर्विधः अस्तीतिः । चतुःसोदी
संबन्धा.

तुल्य-य, (त्रि०) चतस्रः अथयः=चोणाः यस्य । चार
घोनावाला.

तुल्य, (त्रि०) चतस्रः अथयः=चोणा यस्य । त्रि० ।
चतुश्चोण । चौघोना । चार घोनावाला । (ज्योतिषमें)
काम्ये चौथा और आठवां स्थान । "चतुस्र" भी होता है.

तुल्यनन, (पु०) चतारि आननानि यस्य । जिसके
चार मुख हों । प्रसा । "चतुर्मुख" आदि इसी अर्थमें
होते हैं.

तुल्यं, (त्रि०) चतुर्गुणाः गुणाः यस्य । चारचार गुण
हुआ लोखरी संबन्धा.

तुल्यं, (त्रि०) चतुर्णं पूरणः । जिससे चारों ओर
पूर्ण (भर) होती है इस प्रकारका दुरीम (पीया).

तुल्योदा, चतुर्गुणः । चार भागोंमें से एक भाग । चौथा.

तुल्यी, (स्त्री०) चतुर्माके पक्षरा चौथा दिन । चौथी
तिथि । (व्याकरणमें) के अर्थ अथय् से तीनों प्रत्यय.

तुल्यं, (त्रि०)—यी । (स्त्री०) चतुर्णं पूरण—यद् । चारों
ओर पूरा करनेवाला । चौथा । वा चौथी ।—यीः (पु०)
मिथी अंगीच चौथा अक्षर ।—यं (न०) चौथा भाग.

तुल्यंभक्त, (त्रि०) चतुर्भ अंके यस्य । चौथा भोजन कर-
नेवाला । चौथीतर खानेवाला.

तुल्यंभाज, (त्रि०) चतुर्भ भक्ति—अन्+भि । प्रत्येक
भाग (भागदत्त) का चौथा भाग देनेवाला (प्रकृते)
राजा.

तुल्योदा, (त्रि०) चतुर्वे. अंतः यस्य । चौथे अंत
(हिस्से) का अन्ती । चौथा रिता देनेवाला ।—दा (पु०)
चौथा भाग । चतुर्भाज.

तुल्योदाभयः, (पु०) चतुर्वे अथयः यस्य । चौथे अथय
(चौथा) का अथय.

तुल्योदाभयं, (न०) चतुर्वे अर्थे । जिसके चौथी तर
पर चौथा अर्थ (रीततय).

तुल्यंत, (पु०) चतुर्वे अर्थे अयः । जिसके चार ओर
हों । देवता । इन्द्रका । इन्द्रकी ही.

चतुर्वेदान्, (त्रि०) न० घ० । चतुर्विध दत्त । चार
ऊपर दत्त । चौदहवीं संख्या (गिनती) । "तस्य
पूर्णे इदं—चतुर्वेदं" (चौदहां) । "त्रिणां चतुर्वेदी ।
चौदवीं त्रिभिः.

चतुर्वेदं, (अन्व०) चतुर्वेदां रितां समाहारः—चतुः+वेदं ।
चार रिताओंका समूह.

चतुर्वेदं, (अन्व०) चतारि द्वावमि यस्य । चार द्वा
(द्वाओं)वाला (परभादि).

चतुर्वेदां, (अन्व०) प्रकृते वा प्रत्ययः । चार प्रकारके ।
चार तराही.

चतुर्वेदां, (अन्व०) चतुःप्रकारं+फल् । चार प्रकार
(ताह) के.

चतुर्वेदां, (पु०) चतारः अर्थः यस्य । चार अर्थोंका ।
चार धुमावाला । विष्णु.

चतुर्वेदं, (अन्व०) चतुर्णां मन्त्राणां समूह—चतुः+वेदं ।
चार मानवरीकनेके कथान (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वेदं, (न०) चतारि भद्रानि । धर्म, अर्थ, काम, मो-
क्षरूप चारों हीसे हुए कथान । मिले हुए धर्म अर्थ चार.

चतुर्वेदं, (पु०) चतारो गुणाः (दशाः) अन्व० । त्रि-
के चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्वेदं, (पु०) चतारि गुणानि यस्य । चार गुणोंका ।
प्रसा.

चतुर्वेदा, (न०) चतुर्णं गुणानां समूहात् । तय, वेदः,
हापर और इतिहास चारों गुण । "विदेव लक्ष्मणं"
इति मनुः.

चतुर्वेदां, (पु०) चतुर्णं अर्थः (समुदाय) धर्म, अर्थ,
काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका चतुर्वेदा अर्थ.

चतुर्वेदां, (पु०) चतार अर्थः । धर्म अर्थ काम चार
समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वेदां, (पु०) चतारो अर्थः चतुर्वेदं । त्रिभुजके चार
अर्थ चार अर्थके अर्थः अर्थः, अर्थः, अर्थः, अर्थः
चतुर्वेदां, (स्त्री०) चतारि अर्थः चतुर्वेदां (अर्थः)
इत्यर्थः । चार अर्थ अर्थः अर्थः । चार अर्थः अर्थः.

चतुर्वेदां, (पु०) चतारो अर्थः (चतुर्वेदां) यस्य ।
चार अर्थोंके अर्थः । चारों अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः.

चतुर्वेदां, (त्रि०) चतारि अर्थः अर्थः—वेद—चतुर्वेदः ।
चार अर्थोंके अर्थः अर्थः । चारों अर्थः अर्थः.

चतुर्वेदां, (स्त्री०) चतारि अर्थः—चतुर्वेदां (अर्थः)
इत्यर्थः । चारों अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः.

चतुर्वेदां, (त्रि०) चतारि अर्थः यस्य । चार अर्थः अर्थः ।
चार अर्थः अर्थः.

चतुर्वेदां, (न०) चतुर्वेदः अर्थः अर्थः और
अर्थः अर्थः चार अर्थः अर्थः । "चतुर्वेदां अर्थः अर्थः
अर्थः अर्थः" इति.

तुष्टा, (न०) बतारि अंगनि दस्य । जिसके चार अंग हो । हाथी, बोन, गायी, वैदलक्ष्य चार अंगोंवाली सेना । लस, इण, पील्य और कजे चार सेनाके समान घेतके लक्षण जिसके हो । ततरंज । शीपखी सेक,

तुष्टता, (श्री०) बतारः अन्ता दस्यः-४० स० । चार अन्तबन्धो । पृष्टिदी,

तुष्टीति, (त्रि०) बतारिभ्यः असौष्ठितमः । पुष्टि-
तिम्बा । चार करर आसीक,

तुष्टीति, (श्री०) बतारिभ्यः असीतिः । तुष्टीसीदी संभवा,

तुष्टप्र-प्र, (त्रि०) बतारः अधयः-घोषाः दस्य । चार बोनबाध,

तुष्टध, (त्रि०) बतारः अधयः-घोषा दस्य । नि० । बतुघोष । शंघोषा । चार बोनबाध । (ज्योतिषमें) लगने शीघ्र और आठवां स्थान । "बतुष्टप्र" भी होता है,

तुष्टानन, (पु०) बतारि अन्नानि दस्य । जिसके चार मुख हो । मन्ना । "बतुष्टुण" बतारि इषी अर्थमें होते हैं,

तुष्टुण, (त्रि०) बतुष्टुणः शुष्णाः दस्य । चारचार शुष्ण हुआ सोलहवी संख्या,

तुष्ट्य, (त्रि०) बतुष्ट्यां पूरणः । जिसके चारही संख्या पूर्ण (भर) होटी है इस प्रकारका तुष्टीय (शेष) ।

तुष्ट्यादा, बतुष्टुणः । चार भागोंमेंसे एक भाग । शीघ्रा,

तुष्ट्या, (श्री०) बतुष्ट्याके पक्षका शीघ्रा दिन । शीघ्री तिथि । (व्याकरणमें) के अर्थे भ्यस् ये तीनों प्रत्यय,

तुष्ट्य, (त्रि०)-थी । (श्री०) बतुष्ट्यां पूरणः-बद । बा-
रोंके पूरा करनेवाला । शीघ्रा । बा शीघ्री ।-थ्यः (पु०)
द्विषी शेषीका शीघ्रा अक्षर ।-थ्यं (न०) शीघ्रा भाग,

तुष्ट्यभक्त, (त्रि०) बतुष्ट्यं भक्तं दस्य । शीघ्रा भोजन कर-
नेवाला । शीघ्रीवार छानेवाला,

तुष्ट्यमात्र, (त्रि०) बतुष्ट्यं मात्रि-भक्त+त्रि । प्रत्येक आय (आमदन) का शीघ्रा भाग देनेवाला (प्रकाशे) राजा,

तुष्ट्योत्तर, (त्रि०) बतुष्ट्यः अंतः यस्य । शीघ्रा अंत (हिस्से) में भागी । शीघ्रा हिस्सा देनेवाला ।-घः (पु०)
शीघ्रा भाग । बतुष्ट्योत्तर,

तुष्ट्योत्तरमः, (पु०) बतुष्ट्यः आधमः यस्य । शीघ्रा आधम (शीघ्रा) प्रायः प्राण्य,

तुष्ट्योत्तरमन्, (न०) बतुष्ट्यो कर्म । शीघ्रासे चौथी रात-
पर कर्मव्य कर्म (रीतानम) ।

तुष्ट्युत्तर, (पु०) बतुष्ट्यो दन्ता अस्य । जिसके चार दंत हो । एणवत । इन्द्रयज । इन्द्रवीर्य हाथी,

बतुष्ट्यान्, (त्रि०) ४० व० । बतुष्ट्यान् दस्य । चार करर दस्य । शौदहवी संख्या (गिनती) । "तस्य पूरणे बद"-बतुष्ट्याः (शीघ्रा) । "श्रियां" बतुष्ट्यां । शीघ्री तिथि,

बतुष्ट्यां, (अन्व०) बतुष्ट्यां रितां समाहारः-घमा०-३० । चार रिताओंका समूह,

बतुष्ट्यां, (अन्व०) बतुष्ट्यां द्वारानि दस्य । चार द्वार (दर्वाजों)वाला (परभादि),

बतुष्ट्यां, (अन्व०) प्रकाशे या प्रलयः । चार प्रकाशे । चार तरासे,

बतुष्ट्यां, (अन्व०) बतुष्ट्यां+धाच् । चार प्रकाश (तर) से,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्याः बाहवः दस्य । चार हाथोंका । चार भुजावाला । विष्णु,

बतुष्ट्यां, (अन्व०) बतुष्ट्यां भद्रानां समूहः-समा०-३० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

बतुष्ट्यां, (न०) बतुष्ट्यां भद्रानि । धर्म, अर्थ, काम, मो-
क्षरूप चारों इच्छे हुए कल्याण । मिलेहुए धर्म आदि चार,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्यां शुष्णा (दस्यः) अस्य । जिस-
के चार हाथ हो । विष्णु,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्यां शुष्णानि दस्य । चार मुखोंवाला । मन्ना,

बतुष्ट्यां, (न०) बतुष्ट्यां शुष्णानां समाहारः । सल, त्रेता, द्वापर और कलिरूप चारों शुष्ण । "विज्ञेयं तच्चतुष्टयं" इति मनुः,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्यां वर्णः (एतुष्ट्याः) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुष्टका अर्थ,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्याः वर्णः । मानव जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) ।

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्यां वर्णः । येयु-४०-४० । हिन्दुओंके चार वर्ण का चार जातिएं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र,

बतुष्ट्यां, (श्री०) बतुष्ट्यां वर्णानि चतुः दस्यः (गोः) इत्यर्थः । चार वर्ण अर्थात्वाणी गो । चार बर्षकी गो,

बतुष्ट्यां, (पु०) बतुष्ट्यां विधाः (वैदिकानुष्ठानः) यस्य । चार वैदिके जाग्रोदार । चारों विधावाला भी होता है,

बतुष्ट्यां, (त्रि०) बतुष्ट्याः विधाः अन्वयः मेन-४०-४० । चार वैदिके पत्रा हुआ । चारवैदिके का हाता,

बतुष्ट्यां, (श्री०) बतुष्ट्याः विधा-४० स० । चार वि-
धाएँ । चारों वैद,

बतुष्ट्यां, (त्रि०) बतुष्ट्याः विधाः यस्य । चार प्रकारका । चार तराहा,

बतुष्ट्यां, (न०) बतुष्ट्यां, अन्वयः, संद्वय और उद्दिष्ट्य चार प्रकारके शरीर । "बतुष्ट्यां शरीरानि शुष्णा शुष्णाः शरीरानि" इति,

पन्द्रनिभ, (त्रि०) चन्द्रेण निभ=उत्तः । चन्द्रमाके समान चमकनेकाला रोचन । सुन्दर .

चन्द्रप्रभा, (श्री०) चन्द्रस्य प्रभा । चन्द्रमाकी रोशनी । चांदनी.

चन्द्रघोला, (श्री०) चन्द्रस्य (चंद्रस्य) काला इव । (समानवर्ण होनेसे) मानो चापूरकी कन्या है । मोटी हलचपी.

चन्द्रभागा, (श्री०) काश्मीरदेशकी एक नदी.

चन्द्रमण्डल, (न०) १ त० । चन्द्रमाका मण्डलकार स्थान । चांदकी गोल चक्कल.

चन्द्रमरु, (पु०) चन्द्र (आहार) विमीडे । आनन्द देनेवाला । "चंद्र" (चंद्र) माति (तुलसी) मा+असिः । वा । चापूरके समान हीरामेढाए । चन्द्र । चन्द्रमा । चांद.

चन्द्रमुखी, (श्री०) चन्द्र इव मुखं यस्याः-ब० घ० । जिनका मुख चन्द्रमाके समान है । प्यारी सुन्दर श्री.

चन्द्रमौलि, (पु०) चन्द्रः मौली यस्य । जिनके माथेपर चन्द्रमा है । चन्द्ररोशर । शिव । सोहर । महादेव.

चन्द्रलोकः, (पु०) चन्द्रस्य लोकः । चन्द्रमाका लोक.

चन्द्रपद्मिनी, (श्री०) १ त० । सोमलता । एषप्रकारकी बेन.

चन्द्रचन्दन, (त्रि०) चन्द्र इव चन्दनं यस्य । चन्द्रमाके समान उज्वल सुसुगन्ध.

चन्द्रवंशः, (पु०) चन्द्रस्य वंशः । चन्द्रवंशी राजाजोग.

चन्द्रमत्त, (न०) चन्द्रस्य (चन्द्रलोकवासये) मत्तं (निषम) । चन्द्रमाके लोकमें जानेके लिये निषम । चान्द्रायण नामी जग.

चन्द्रमाला, (श्री०) चन्द्रः माला इव आपपरः अस्या । परके समान चांद जिनका आभय है । चांदनी । "चन्द्र इव आदर्शिका माला" । चन्द्रमाके समान प्रकाश । करनेवाला घर । प्रकाशोपरिष्ठ एव । बना कंचा मालके ऊपरका पर.

चन्द्ररोशर, (पु०) चन्द्रः रोशरं (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिनके शिरका भूषण (जेवर) है । शिबकी । चंद्रदेवमें एक चंद्रन .

चन्द्रसम्पत्, (पु०) सम्पत्ति कस्याम् सम्पत् । चन्द्र सम्पत्त यस्य । चन्द्रमाके सम्पत्तुः । पुत्र । इसी प्रकार "सोमसुता" अति भी इसी अर्थमें । सर्वदा मती और मोटी हलचपी (श्री०).

चन्द्रदास, (पु०) चन्द्र इव दासः (दस) अस्य । चन्द्र इति दा । जिनका प्रहारा, चांदके समान हो । वा श्री (सुन्दर होनेसे) चांदके भी इस रंग है । चन्द्र का रंग । सरदार । दसा (न०) । पुत्रकी (श्री०).

चन्द्रा, (श्री०) चन्द्रि+रच् । एव । हलचपी । चन्द्रार । चांदीआ.

चन्द्रातप, (पु०) चन्द्रस्य अतः (गन्तं) ततः पति । पा+त । चांदीआ । चांदकी शिरण । ज्योत्सा । चांदनी.

चन्द्रापीड, (पु०) चन्द्र-आपीडः (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिनके शिरका अडेकार है । शिबकी । लण-पीडका पुत्र एक राजा.

चन्द्रार्धः, (पु०) चन्द्रस्य अर्धः । चन्द्रमाका आधा । आधा चन्द्रमा.

चन्द्रिका, (श्री०) चन्द्रः स्वार्थयवेन अग्नि क्रम्यन्तु । चन्द्रमा जिनका अपना आभय है । चांदनी । मोटी हलचपी । रोह आहारके पादकाए एक छन्द.

चन्द्रोपल, (पु०) चन्द्रयितः उपलः । चन्द्रमाका शि-याए पत्थर । चन्द्रबज्जमणि.

चाम्, चूर्णिकरण-पीठना । सन्तन-हीनता देना । शक्ति देना । पुत्र० वा भ्रा० उम० मरु० सेट् । चारसी-ने । अचीबरा-त । चर्मी । अचरीट् । अचरीट्

चपल, (पु०) चर्-चंद्रापीडोरी १ कलम+कल । चन्द्र । चार । मछली । एक पत्थर । और राजमण । चपल । क्षणिक । जिनमरके लिये करनेका प्रकाश हुआ । और सुविनीत । अक्षिण । बेचकूट (त्रि०) मन्त्री । शिबकी । सुचली । ललाच औरत । मय । शिबकी । शिबकी । शिरा । जिहा । जीभ । और अर्धचन्द्रा सेट् (श्री०)

चपेट, (पु०) चर्-चमर्थे क । चपट (लचकन्द) अर्थात् (मछली) दर+क । जो दूधको उठा करके हलिये जाती है । पत्नीट्टी अंगुलीभोरण एव । चपेट । "सविहकोलमय-सिपय-बरेड ददति" इति अर्थ प्रयोगत् । "हाथे चट्" । चपेटक । दती अर्थ.

चाम्, काना । भ्रा० म० पर० एव० सेट् । चन्दरि । आचमति । शिबमति । चर्मी । अचरीट् । अचरीट् चन्वा.

चामाकार, (पु०) चमर इति अन्वयः शिरसे । इम्बन् । लोकाजीनकमु । (अर्थ चर्च) को देकर शिबके अन्वयका कारण प्रकृत । शिबका । है। श्री० । अचर्च । अचमर्थे इव

चामर, (पु०) चर्-अरच् । मनेके सारका एव हीन । जिनकी लुके चमर (चर्च) चर्च चर्च चर्च है और एव हीनः "चिद" चमरी । चार रंग (न०)

चामर, (पु० न०) चर्-अरच् । लवण एव चर्च एव एक चर्च । लोकाजीनक एव । चर्च (पु०) चमर.

चर्मचट, (पु०) इन्वया चर्च लोकेके लवणक मय । (शिब काय लोकेके "चर्मचट" चर्च है)

चन्द्रनिभ, (त्रि०) चन्द्रेण निभ =सदृशः । चन्द्रमाके समान चमकनेवाला होना । सुन्दर, .

चन्द्रप्रभा, (स्त्री०) चन्द्रस्य प्रभा । चन्द्रमासी राशनी । चांदनी

चन्द्रपाला, (स्त्री०) चन्द्रस्य (चंद्रस्य) बाला इव । (समानगंध होनेसे) मानों कापूकी कन्या है । मोटी इलायची.

चन्द्रभागा, (स्त्री०) कान्तीरदेवकी एक नदी.

चन्द्रमण्डल, (न०) १ स० । चन्द्रमाका मण्डलकार स्वरूप । चांदकी गोल चकल.

चन्द्रमस, (पु०) चन्द्र (आह्वयं) निमीते । आनन्द देनेवाला । "चंद्रं" (चंद्रं) माति (मुलपति) मा+असि-श्वा । चापूके समान घीरनेवाला । चन्द्र । चन्द्रमा । चांद.

चन्द्रमुयी, (स्त्री०) चन्द्र इव मुयं यस्याः-ब० स० । जिसका मुख चन्द्रमाके समान है । प्यारी सुन्दर स्त्री.

चन्द्रमौलि, (पु०) चन्द्रः मौली यस्य । जिसके माथेपर चन्द्रमा है । चन्द्रोत्तर । शिव । शंकर । महादेव.

चन्द्रलोकः, (पु०) चन्द्रस्य लोकः । चन्द्रमाका लोक.

चन्द्रपहारी, (स्त्री०) १ स० । शोभलता । एकप्रकारकी बेल.

चन्द्रचन्दन, (त्रि०) चन्द्र इव चन्दनं यस्य । चन्द्रमाके समान उज्वल मुखवाला.

चन्द्रचंदा, (पु०) चन्द्रज्ज चंदा । चन्द्रचंदा राजालोक.

चन्द्रमय, (न०) चन्द्रम्य (चन्द्रलोकाप्रसवे) मयं (नियमः) । चन्द्रमाके लोकमें जानेके लिये नियम । चन्द्रायण मानी मय.

चन्द्रवाला, (स्त्री०) चन्द्रः शाला इव व्यापारः अस्याः । परके समान चांद जिसका आश्रय है । चांदनी । "चन्द्र इव आह्वयिश्वा शाला" । चन्द्रमाके समान प्रणय । करनेवाला घर । प्रासादोपरिस्थ पृष्ठ । बना लेना महलके कपराका घर.

चन्द्रोत्तर, (पु०) चन्द्रः उत्तर (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके शिरका भूषण (जेवर) है । शिवजी । पूर्वदेशमें एक पर्यंत.

चन्द्रसम्भव, (पु०) सम्भवति. अस्मात् सम्भवः । चन्द्र सम्भवः यस्य । चन्द्रमासे उत्पन्नहुआ । पुत्र । इसी प्रकार "सोमसुत" आदि भी इसी अर्थमें । नर्मदा नदी और मोटी इलायची (स्त्री०).

चन्द्रहास, (पु०) चन्द्र इव हासः (प्रभा) अस्य । चन्द्रं हसति वा । जिसका प्रकार, चांदके समान हो । वा शो (गुपेय होनेसे) चांदकी, भी इस रहा है । अणु वा शत्रु । तरकार । हला (न०) । शुद्धी (स्त्री०).

चन्द्रा, (स्त्री०) चन्द्रिभरद् । एष्य । इलायची । चन्द्रातप । चांदीभा.

चन्द्रातप, (पु०) चन्द्रस्य आतः (समनं) ततः पारि । पा+क । चांदीभा । चांदकी शिरण । ज्योत्स्ना । चांदनी.

चन्द्रापीड, (पु०) चन्द्रः आपीडः (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके गिरका अलंकार है । शिवजी । तारापीडका पुत्र एक राजा.

चन्द्रार्धः, (पु०) चन्द्रस्य अर्धः । चन्द्रमाका आधा । आधा चन्द्रमा.

चन्द्रिका, (स्त्री०) चन्द्रः स्वाश्रयत्वेन अस्ति अस्याः उन् । चन्द्रमा जिसका अपना आश्रय है । चांदनी । मोटी इलायची । सेरह अशरके पादवाला एक छन्द.

चन्द्रोपल, (पु०) चन्द्रमियः उपल । चन्द्रमाका पि-यारा पत्थर । चन्द्रचान्तमणि.

चन्द्र, चर्वाकरण-पीठना । सान्त्वन-होतला देना । शान्ति देना । पुष्ट- वा भ्वा० उभ० सक० सेट् । चपपति-से । अचीचवत्-त । चपति । अचारीत् । अचपीत्.

चपल, (पु०) चर्-चंदगति-चिरी २ चलना+कल । पारद । पारा । मछली । एक पत्थर । और राजमाप । बगल । दक्षिण । छिनभरके लिये रहनेवाला घबराया हुआ । और दुर्जिनीत । अस्थिर । बेचकूक (त्रि०) छद्मी । विजगी । पुंयनी । तराब औरत । मय । पिपकी । विजना । मरिच । जिह्वा । जीभ । और आर्वाछन्दका नेद (स्त्री०).

चपेट, (पु०) चप-चपयें क । चपाय (सात्वनाय) अटति (गच्छति) इद+क । जो दूसरेकी टेंग करनेके लिये जाती है । फैलीहुई अंगुलीभावाला हाथ । चपेट । "एषिश्चोपापायः शिष्याय चपेटो ददाति" इति भाष्य-प्रयोगात् । "स्वार्थे चन्" । चपेटकः । यही अर्थ.

चम्, खाना । भ्वा० खा० पर० सक० सेट् । चमति । आचामति । चिचमति । चम्रोति । अचपीत् । चमिरका-चान्ता.

चमत्कार, (पु०) चमत् इति अन्वयं कियते । कृ+पप् । लोहालीतलपु । (अचीब चीब) को देखकर चिन्ते आनन्दका कारण प्रकृत । विस्मय । हैरानी । आश्चर्य । अपमान इव.

चमर, (पु०) चम्+अरच् । भेजेके स्वरुप एक हरिय । जिसकी एतने चमर (चाँदी) नानी घंटा बनते हैं और एक दाल । "चिरी" चमरी । चमर घंटा (न०).

चमस, (पु० न०) चम्+अरच् । लक्ष्मीका बनानेवाला यज्ञ एक पात्र । सोनरगरीबीका पात्र । लडू (पु०) चमका.

चमीकर, (पु०) इन्द्ररानी सोनेके कपड़ेके स्वरुप । (जिस कारण सोनेकी "चमीकर" चरते हैं).

चम्, (श्री०) चम्+क । सेना । (हाथी ७२९, रथ ७२९, घोड़े २१८७, पैदल २१४५) इतनी संख्यावाली सेना।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चरच् । मृगनेत्र । एक प्रकारका हतिय । बचवालाका हतिय । "बाह्वचम्बूचर्मनाः" इति भाषाः।
 चम्बूक, (पु०) चम्+ञ्जना+कृच् । केला । देउछा वृक्ष । चंबिका वृक्ष।
 चम्बूकमाला, (श्री०) ६ त० । सोनेके चम्बूकोसे बना हुआ छिपकोटे मलेका अलंकार । दस अक्षरके फदवत्क पंचिछंदका मेट । छंदोविष्टेय।
 चम्बूकपिच, (पु०) ६ त० । चम्बूका खामी कर्मकाय।
 चम्बू, (श्री०) मन्त्रमितिथि संस्कृत काव्य । मन्त्र और पद्यके मिश्रणका बचन । एक प्रकारका काव्य।
 चम्बू, जन्म । च्त्त० पर० सक्त० सेट् । चम्बूति । अवधीयत् । चम्बू, जन्म । च्त्त० क्तान्० सक्त० सेट् । चम्बूते । अवधीयत् ।
 चम्बू, (पु०) चि+ञ्चम् । प्रकाशक । सोट । समूह । चौकी इत्यादि।
 चम्बू, (पु०) चि+ञ्चम् । समूह । देव।
 चम्बू, (श्री०) चि+ञ्चम् । एक प्रकारकी सीपके ऊपर बैठो-टी पत्ता । कुछ अर्थका पुस्तक । इच्छा करना।
 चम्, जन्म । च्त्त० पर० सेट् । चांति । अवधीयत् ।
 चम्, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हे और हृषीके उग्रके इगाला-के कान्हेके पिरे लक्ष्मी अन्वये मृगनेत्राका हतिय । प्रतिमिथि ।
 चम्बू, जन्म । च्त्त० (गौरीविभे) चिन्, कर्के, तुला और महर इत्यादि । कान्हे, पुनर्वसु, भाग ये तीनों तारे ।
 चम्बू, जन्म । च्त्त० (श्री०) चम्बूकाय । कान्हेकाय (चि०) ।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय ।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय ।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय ।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय ।
 चम्बू, (पु०) चम्+ञ्चम् । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय । कान्हेके कान्हेकाय ।

चरणारविन्दं, कमलें-पद्मं (श्री०) चरतः (वं) इव-उप० स० । कमलके समान चरण (पैर)।
 चरणव्यूह, (पु०) चरणानां (वेदकालां) वृत्तं शेषेण ऊहः (निरूपणं) यत्र । त्रिसरे वेदके इतने विशेषरूपसे वर्णन हो । व्यासका बनायाहुआ एक प्रकारका चरणव्यूह।
 चरम, (चि०) चर्+ञ्चम् । अन्त । अन्तः । आसिरी।
 चराचर, (न०) चर्+ञ्चम् चि० । चलने की वत्ता । जगत् । दुनिया । समा० ई० । जगत् की वत्ता । आकाश । चिचिरीकी जगत् (पु०)।
 चरित, (चि०) (न०) चर्+ञ्चम् (इत का) । चरित पात्रिका । चरितिका । जानापना । अनुकूलन । चरित विवरना । अर्थकर्मआदिमें यत्न करना । कौशल कहानी । चालचलन । समाप्त।
 चरितम्, (न०) चर्-इत् । सहाचार । बचनका चरितम् । चरितम् । चर्+इत् । चर्+इत् । चर्+इत् । चर्+इत् ।
 चरित, (पु०) चर्+इत् । ह्यात् । होममें दानके (यी दान आदि) । यह पकनेका पात्र (भाँस) । यो योमें पकाकर इसके ऊपर रूप छिड़कने है ।
 चर्च, (पाठना) चुप- उभ- सक्त० सेट् । चर्च । अवधीयत् । चर्च । चर्च । चर्च । चर्च ।
 चर्च, चर्च । चिच्छकना । मर्मना । चुप- पर० सक्त० चर्चति । अवधीयत् ।
 चर्चक, (चि०) चर्च+ञ्चम् । चिच्छकनेका । चर्चकना । चुपका चर्चकना।
 चर्चनम्, (न०) चर्च+ञ्चम् । अन्वय करना । चुपका चर्चनम् ।
 चर्चनी, (श्री०) चर्च+ञ्चम् । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी ।
 चर्चनी, (श्री०) चर्च+ञ्चम् । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी ।
 चर्चनी, (चि०) चर्च+ञ्चम् । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी ।
 चर्चनी, (पु०) चर्च+ञ्चम् । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी ।
 चर्चनी, (पु०) चर्च+ञ्चम् । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी । चुपका चर्चनी ।

घाट, (पु०) चद्-भेद । फाटना+अच् । पहिले विधाय दे-
कर पीछे धन लेजानेहारा चोर । “घाटचारणदासोपु दामं
भवति निष्कलम्” स्थितिः ।

घाटकैर, (पु०) चटकायाः चटकस्य वा अर्पणं एरक् ।
विडियाका वया । चटकापल्य ।

घाट्ट, (पु० न०) चट्ट+भुण् । पियारा वचन । झट
पियारा वचन । साथें कन् ।

घाट्टकार, (त्रि०) घाट्ट करोति उप० स० । झट्याप्यारा
वचन बोलनेवाला । चापट्टसी करेनेवाला ।

घाट्टपट्ट, (पु०) घाट्टां (सिध्दा परितोषणे वाक्ये)
पट्टः । झट्टेही प्रसन्न करनेवाले वचनमें चतुर । मांड ।
सुशामयी । घ० पद्ये व । “घाट्टपट्ट” विदुषक । नाटकमें
एक मर्दाडिया ।

घाट्टिका, (स्त्री०) घाट्टः टफिः । दुसरेके प्रसन्न करनेके
लिये झट्टा कथन । चापट्टसीका वचन ।

घाणकीन, (त्रि०) वणकस्य भवनं क्षेत्रं, खन् । चनों-
छोलोंका खेत ।

घाणक्य, (पु०) चकणस्य मुनेर्गोत्रापखं+अन् । वणक-
मुनिके वंशमें हुआ । नौ नन्दोंको मारकर चन्द्रगुप्त राज्य
देनेहारा विष्णुगुप्त (कांडिल्य) । प्रसिद्ध नीतिशास्त्रका
रचनेहारा । एक नीतिका पुस्तक ।

घाणूर, (पु०) चण्+ऊरन् । कंस राजाका बडा पहिल-
वान (मल्ल) ।

घाणूरसूदन, (पु०) घाणूरं सूदयति+भ्युद् । घाणूरको
मारनेहारा । श्रीकृष्ण ।

घाण्डाल, (पु०) चण्डाल एव+अण् । चण्डालही चण्डाल ।
अलस । शत्रु ।

घातक, (पु०) घति (याचते) सततं धम्मः (मेधं)
चत्+भ्युल् । जो सदा बादलका पानी मांगना है । चक्या ।
पपीहापभी ।

घातकानन्दन, (पु०) घातकं आनन्दयति-उप० स० ।
पर्षदोंको आनंद देनेहारा । चणोत्तु । बघांत ।

घातुररक्ष, (न०) चतुर्मिः अर्थः निगायते+अण् । चौपट
खेलेके चार फाले ।

घातुरार्थिकः, (पु०) चतुषु अर्थेषु विहित+उक् । व्याक-
रणमें चार निम्न अर्थोंमें शब्दके छाप प्रयोग कियागया
एक प्रत्यय ।

घातुराध्रमिक, (त्रि०) चतुषु अध्रमेषु विहित+उक् ।
चार अध्रमोंमें विधान कियागया । चारोंमेंसे ब्राह्मणका
एक अध्रम ।

घातुरिकः, (पु०) चतुरी=चचर्चा धीन+उक् । रथकी
सेवाके अधिकारी । रथचाली । चर्दव । चारवी । लगी
बदनेवाला ।

चातुरी, (स्त्री०) चतुरस्य भावः । सम्येदं च-उक् ।
राई । होगयागी । छत्र ।

चातुर्मास्य, (न०) चतुषु मासेषु विहित+अण् । चत-
नोंमें विधान कियागया । चार महीनोंमें प्रसन्न
यज्ञ वा मन । चापाट्टमुची द्वादसीके ठे कनेके
द्वादशीतक चार महीने (जो शुभ कर्मके लिये बर्तों) ।

चातुर्य, (न०) चतुरस्य भाव+अण् । चतुराई । चत-
सुन्दरता ।

चातुर्घण्य, (न०) चत्वारः (ब्राह्मणद्वय) द्वे ।
साथें ष्यन् । ब्राह्मण आदि चारों वर्ग । “च-
मया सृष्ट” गीता । “भावे ष्यन्” । “चतुर्वर्गदं” ।
वर्णोंका धर्म ।

चातुष्टय, (त्रि०) चतुष्टयं वेदित+अण् । चारके
जाणेवाला ।

चान्द्रनिक, (त्रि०)-स्त्री (स्त्री०) चंद्रनेत्रं मृगश-
चंद्रनका बनाहुआ । चंद्रनसे निकलहुआ । वं
रगसे मृगश्रिचत कियागया ।

चान्द्र, (पु०) चन्द्रः देवता अस् । तलेदं च-
जिसका देवता चन्द्रमा है । वा चन्द्रमाका र ।
कान्तमणि । तीस विधिओंवाला पौनर्मासी क
वास्तवक एक महीना । चान्द्रायणत्रय (न०) ।
माका लोक (पु०) । “चन्द्रेण प्रोक्तं” अ् । चन्द्रे
गया । एक प्रकारका व्याकरण । “उदधीते” । “चि-
चान्द्रव्याकरण पटनेहारा (त्रि०) ।

चान्द्रमस, (त्रि०)-स्त्री (स्त्री०) चन्द्रमस इ-
चन्द्रमाके साथ संबंध रखनेवाला । चन्द्रमाका वा वन
चान्द्रायण, (न०) चान्द्रः (चन्द्रलोकः) अण्ये
अभ्युत्सुद् गलम् । जिसे चन्द्रलोक मिला है
वनका भेद ।

चाप, (पु०) चपस्य (वंशभेदेस्य) विद्यारः ।
बनाहुआ । “अण्” । घतुप् । कमान । नेले
नवमी राशि ।

चापल, (न०) चपलस्य भावः कर्म वा अण् ।
होना । दिलकी आराम न होना । बिना सोचे के
करना । प्रयोजनबिना हाथपांवका हिलाना । बला
बेकटरी । “अण्” चापल्य (यही अर्थ) ।

चापिन्, (त्रि०) चापः अस्ति अस्य इति । घतु-
चपायेहुए ।

चामर, (पु० न०) चमरस्य विद्यारः । चमर (
की पूंछ) बनाहुआ पंजा ।

चामरप्राहः-प्राहिन्, (पु०) चामरं एरक्ति । चं-
दनेवाला ।

रामीकर, (न०) रामीकरे (आकरमेरे) भवः अण् ।
 रमीकर नामी खानसे उपना । सोना । स्वर्ण । धरुरा ।
 मुण्डा, (स्त्री०) चम् (सेना-निबन्धनसमूहका)
 स्मृति (आदत्ते) । ल+क । आवासआदि समूहस्य
 सेनाको ग्रहण करनेवाली । दुर्गादेवी । चण्ड और मुण्डको
 खानेवाली । "यस्माच्चण्डं च मुण्डं च पृथीला समुत्पन्ना ।
 चासुण्डेति ततो लोके ह्यथा देवी भविष्यति" ।
 चण्डेयक, (न०) चण्डायाम् भवः+उक्, ततः स्थायें कन् ।
 चण्डक । चण्डिका फूल । नागकेदार । सोना । क्रिष्णलक ।
 चण्ड, दर्शन । देवता । भ्वा० उभ० सक० सेट् । चापति-ठे ।
 अचामीन्-अचामीत् । अचामिष्ट-अचामिष्ट ।
 चार, (पु०) चर इव+स्थायेण् । चर । सुन्दर । "चारिः
 पर्यवसित राजानः" इति नीतिशास्त्रम् । चरु+भावेण् चम् ।
 गमन । आना । आधारे चम् । चारागार (जेठखाना) ।
 चन्द्रखाना । इतिमविष । बनावटी जहिर (न०) ।
 चारण, (पु०) चारयति (कीर्ति) चरु+निच्+भ्यु । यच्-
 षो क्तान्तेहारा । कीर्तितयारक । नट ।
 चार, (पु०) चरु+भ्यु । बृहस्पति । सुन्दर ।
 चान्त (वि०) ।
 चारिक्य, (न०) चरु+पालयें णुच् । चरिक्केव । "रायें
 ध्यम्" । चन्दन आदिसे धारीको धीयना ।
 चार्म, (पु०) चर्मणा परिचरुः रथः अण् । चर्मदेसे बका-
 हुआ रथ । चारोंओर चर्मदेसे बनीहुई गद्दी ।
 चार्पाक, (पु०) चरुः (लोकविदः) शकः (बचनं)
 यस्य (पु०) जिसका बचन संसारको शक्या समे ।
 प्रत्यक्षप्रमाणको मासंहारा लोकयतिक (नाटिक) । इस
 मतके चलनेवाले बृहस्पति हैं । एक राक्षसका नाम ।
 चार्पी, (स्त्री०) चारु+ईप् । सुन्दर । सुन्दर स्त्री । चाँदनी ।
 सुदि । प्रकाश । शान्ति । दनक । कुनेरकी स्त्रीका नाम ।
 चारुः, (पु०) चरु+ण । चारुई छत । मौला । गरुड ।
 चारुनम्, (न०) चरु+निच्+भावेण् स्तुट् । हिलनेबन्ना ।
 कंगानेबन्ना ।
 चारुनी, (स्त्री०) चारुदे छत्तारि अन्वया । चरु+निच्
 +भावेण् स्तुट् । जिसके धानआदि छतदे हैं । अपने कामका
 बहुत ठेकोवाला धानआदि बलनेका साधनस्य चारुपी ।
 छानपी ।
 चाप, (पु०) चरु+खाना+निच्+अण् । गोदेरीकी जोरीकाल
 नीलेरगका एपी । भीठकष्ट ।
 चि, बचन-बुद्धा । पुण० यस्मै भ्वा० उभ० ङिङ् । अत्रि ।
 चयनति-ठे । चयति-ठे । अर्धचयन् । अर्धचयन्-
 चिकित्सक, (पु०) चिद्-रोगोपपन्नम् । रोग हारणना ।
 हलकरना । "तयें तम् णुन्" । रोग हार करनेवाला
 रोग । हरीय ।

चिकित्सा, (स्त्री०) चिद्+स्थायेण् सन्+भावेण् अ । रोगहारीकर-
 णम् । रोगका उपाय करना । बीमारीका इलाज करना ।
 चिकित्सित, (वि०) चिद्+स्थायेण् सन्+कर्मणि क् । चिकित्सा
 क्रियागया । इलाज क्रियागया ।
 चिकित्स्य, (वि०) चिकित्सयितुं योग्य । अर्थायें ष्यच् ।
 उपायके योग्य (रोग) । इलाजके लायक । (बीमारी)
 रोग मुझनेलायक जन ।
 चिकीर्षक, (वि०) कृ+घञ्+भ्युच् । करनेकी इच्छा कर-
 नेवाला ।
 चिकीर्षा, (स्त्री०) कृ+घञ्+अच् । करनेकी इच्छा ।
 इच्छा । चाह । चाहिना ।
 चिकीर्षिन्, (वि०) कृ+घञ्+क् । चहागया । करनेकी
 इच्छा क्रियागया ।-तं (न०) संकल्प । इच्छा । प्रयोजन ।
 चिकीर्षु, (वि०) कृ+घञ्+उच् । करनेकी इच्छा करनेवाला ।
 चिकुर, (पु०) चि-इति अन्त्यकं छन्दं कुरति । कुर+क् ।
 जो "चि" इस छन्दको धीरेसे करे । केरा । बत (सिरके) ।
 एक वृक्ष । परेत । और (छापीआदि) छपीय । बरत ।
 चण्ड । तारत (वि०) ।
 चिद्, पीठन । तक्षलीक पतुंखाना । पुण० उभ० सक० सेट् ।
 चिद्वयति-ठे ।
 चिद्वय, (पु०) चिद्+विच् । चिद्, तं कर्त्तु+कृ+उच्-
 आभावप्रदान+अण् । प्रकाश हुए । उगच्छा पत (न०)
 चिद्वना (वि०) । चिद्वनेय्य सुप्रकाशी कल्पन की (स्त्री०) ।
 चिद्विरः, (पु०) चिद्+इङ् । कृष्ट । गुण । कृष्ट ।
 चिद्विहासः, (पु०) चिद्+ह्यच् । इन्द्रको प्रथम बर-
 नेवाला ।
 चिद्व्यक्ति, (स्त्री०) चिद्वेय एषि । चिद्व्यक्त्य सामर्थ्ये ।
 मन और बुद्धिही लक्षक । "चिद्व्यक्त्य परमेश्वरस्य विद्वत्तं
 चिद्व्यक्त्येकोप्यते" । चिद्व्य ।
 चिद्व्या, (स्त्री०) "चि" इति अन्त्यकं छन्दं चिद्वेयः ।
 चि+क् । इसलीका दारद । चिद्विन्दुका पुत्र ।
 चिद्, प्रेयस । मेखना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चिद्वी ।
 अर्धेरी ।
 चिद्, हन । ब्रजा । भ्वा० पर० एङ्गे पुण० अन्वय० एङ् ।
 सेट् । चिद्वी-चिद्वयते । अर्धेरी ।
 चिद्, ह्यति । बरहन्ना । पुण० उभ० सक० सेट् । ह्यिच् ।
 चिद्वयति-ठे ।
 चिद्, (स्त्री०) चिद्+उच्+अण् । चिद् । हन । चिद्वना ।
 चिद्वय । रोग ।
 चिद्, (स्त्री०) चिद्+उच्+अण् । चिद् । हन । चिद्वना ।
 चिद्वय । रोग ।
 चिद्, (स्त्री०) चिद्+उच्+अण् । चिद् । हन । चिद्वना ।
 चिद्वय । रोग ।
 चिद्, (स्त्री०) चिद्+उच्+अण् । चिद् । हन । चिद्वना ।
 चिद्वय । रोग ।

चित्ति, (स्त्री०) चि+क्तिन् । चित्ता । समूह । पुत्रा । (वेदान्तमें) निर्विषयसंवेदन । ऐसा ज्ञान कि जिसका विषय कोई नहीं । "निर्विशेषविशिवैव केवल" इति संक्षेपसातीरक । प्रमाद (महल) आदिमें ईश्वरी गिनतीको जात्रेके लिये अंशभावमें कहागया "पर" इस नामसे प्रसिद्ध एक पदार्थ । आगका एक स्थान.

चित्त, (न०) चित्ते (ज्ञानतेजसेन) चिन्+क्त । जिसे जानते हैं । बुद्धि । मन । (वेदान्त) अनुमन्थन । (मोचना) स्वरूपवृत्ति (सवाल) कला अन्तःकरण । चित्तकी लक्षणी.

चित्तविशेष, (पु०) चित्तं विशिष्यन्ति (योगात् आपनवन्ति) क्षिन्+ञ्च् । जो चित्तको योगसे हटावते हैं । योगान्तर्गते बहनेवाले योगके विरोधी व्याधिआदि नी.

चित्तनिद्रा, (पु०) चित्तस्य चित्तः शनवस्थायानं यस्मात् ५४० । चित्तने चित्त स्थिर न रहे । उन्माद रोग । पागल होनेकी बीमारी.

चित्तान्मोग, (पु०) सम्पद् भोग आभोग एकविषयता । ५४० । चित्तका भगीभंगी उटना । इसका कारण अहं-कार । चित्तका एक ओर लगना.

चित्तिः, (स्त्री०) चि+क्तिन् क्तिन् । सवाल करना । संख्या । कर्मात् । बुद्धि । ज्ञान.

चित्त, (पु०) चैवनेशोः । चि+क्तयच् । जो चिनी जाती है । अर्थ । चित्त (स्त्री०).

चित्, (स्त्री०) चित्तमाके लिये होना । चित्तमा) । (मूर्ति अर्थात्) । अर्थ होना । पुण० उभ० तद० सेट् । चित्तचित्ते

चित्, (पु०) चि+क्तिच् । चारने । प्रे+क्त वा तलोपः । चि+क्तच् क् । कर्मका मेद । "इश्वरोत्तम्य चित्तव" यद् लोचनं कथं है । अर्थ इत्थं । (चित्त) चित्तक वृत्त । चित्तवत् । अर्थ इत्थं । एक प्रकारका कोट । जो नाना वर्ण । इति इत्थं (चि०) मूर्त्त । इत्थं । एक स्थल-कर्मके अर्थ इत्थं (न०) । "अथे कर्त्" की अर्थे । (चित्तवत्) एक प्रकारका इत्थं । "चित्त इव कायसि" के-४ । एक प्रकारका अन्त (चित्तवत्).

चित्तवृत्त, (पु०) चित्त कर्त्तव्य अर्थ । चित्तका मज्जा रस-कात्त है । चित्तवत् (न०) अर्थ चित्त चित्तवत्तया चित्तवत् । अर्थ चित्तवत् । पुत्र

चित्तवत्, (पु०) चित्त वर्णने । इ+क्तच् । मूर्त्त कर्त्तव्य-काल । चित्तवत् (एक प्रकारका) । "चित्तवत्त" इति अर्थ

चित्तवृत्, (पु०) चित्त वृत्त अर्थ । चित्तकी वृत्ति चित्त है । एक वृत्त.

चित्रगुप्त, (पु०) यमका मेद । "चित्रगुप्त" इति तर्पणम्.

चित्रपट, (पु०) चित्रः पटः । रंगबारी कपड़ा । मूर्ति । तसमीर.

चित्रपादा, (स्त्री०) चित्रो पादौ यस्याः हैं । सारिका पक्षी । मैना इस नामका पक्षि.

चित्रमानु, (पु०) चित्रा भानकः यम । चित्र चित्र हों । अग्नि । आग । सूर्य । चित्रात् । दरहत.

चित्ररथ, (पु०) चित्रा रथः अथ । चित्ररथ है । सूर्य । सूरज । गंधर्वमेद । एक गंधर्व का बौका राजा । कश्यपके सोलह पुत्रोंमेंसे एक.

चित्रलेखा, (स्त्री०) अप्यारोमेद । एक प्रकारकी कन्या) उपाकी सती (चित्रे) । कन्या रोंके पादवाला एक प्रकारका छन्द.

चित्रशिखण्डिन्, (पु०) चित्रः शिखण्डिः अर्थ इति । अजीव घोड़ीवाला । "चरीषि, चरुषि, पुलस्त्य, पुलह, कनु, जोर वसिष्ठ ये सब चित्रशिखण्डिण्ये चाल मुनि.

चित्राङ्ग, (पु०) शान्तपुरावाच पुत्र । चित्राभाई । एक गन्धर्व.

चित्रार्थी, (स्त्री०) चित्रं अर्थं भाषता । चित्रार्थी गंग हो । मगौठ । कणोन्मूलिका । कानशोकर.

चित्राकारा, (न०) चित्र आकारा इति । (चित्रे लयका आधार होनेसे) चित्राकारा (साक) अर्थ.

चित्रामारा, (पु०) चित्र आभारः (प्रीतिवत्) अर्थ पराजती । बुद्धिमें आत्माका प्रतीकित्व । चित्रा, (पु०) चित्र एव अर्थ अर्थ । चित्रार्थी अर्थ है । आग्या । पुरनेवाला । कन्या । परमेष्ठी

चित्रा, (स्त्री०) चित्रि+ञ्च् । चित्रिते अर्थ । इनमें उपाती । चित्रारथो जगानेवाती । देवदेव्ये एव कारण (वादकरता) चित्रा । मोच.

चित्राप्रति, (पु०) चित्राप्रतिपत्ता अर्थ । परलोको उन्मत्त चित्रेदारा मति । लोकोत्तरे चित्रवन्द्यो देवदेवी मति । एक मति जो सब जगत्-अर्थ । बुद्धदेव.

चित्रमय, (पु०) चित्र+मय । चित्र । चित्रमय अर्थ चित्रमय । "चित्रमयानी" अर्थ चित्रमय.

चित्राच, (न०) चित्र इव । इतरे अर्थ.

चित्रित, (पु०) चि+क्तिच् । एक प्रकारका चित्र । चित्रित अर्थ.

बूडा, (बी०) बुड+मड्+नि० । मोरही दिता (बोडी) मगबडे मयने मनेहांगी दितामत्र (बोटी) । जटि-
वा (बंग) । बडुघा भूग । अगे । भूतानत्र । हुव
(भूत) । हय प्रकारके संस्कारमें एह । "प्रयनेउन्दे
वृद्धिमे व" म् ।

बूडामनि, (डु०) १ न० । शिगेर । शिरीही मनि.

बूडान्, (न०) बूड (दिता) मनि मय । व ।
बोटीमय । शिर । मगबड । दितामत्र जन (वि०) ।
शिराणे । मगबडे.

बूड, बंधोर । शिरोम । पुण० उम० गड० मेड् ।
शुति । मन्नी.

बूड (डु०) बुड+मड्+वृ० । बूडमना । भाय । भाज ।
बूड+वृ० । पका रसिक (न०) । "भायें वड्" भाज ।
बूड । भाय । शेषि (उम).

बूड, देना । दीना । पुण० उम० गड० मेड् । शीरशि ले.

बूडे, (डु०) बुड+वृ० । दीमडेमे उनी शूती । मबीर
मनी हय । उम कबनेमरड हय । "श्रीमानीयती
हं" हं

बूडेक, (डु०) बुड+मड्+वृ० । मडु (मडु) । "भायें वड्"
भा । मगबडेमय मडु शिके मग कपोर म ही मीर
मगबड हं । मने (न०) । मग । मनेमिगेर.

बूडेकमत्र (डु०) बूडेके इति बूडे । शिके मने ३
मय । बूड+मने मय । मगबड (मगबड).

बूडे मने (डु०) बूड मड् मनि । वि० । मगब-
डेके मनेमय मनेमय । मगबडे । शिरीहीमना-
मने मने

बूडेमना (बी०) बुड+मड्+वृ० । मने । मनेके मने
मने मने । मनेमने । मनेमने मनेमने मने.

बूडे, मने मने । मने मने । मने मने । मने । मने ।
मने

बूडे । मने । मनेमने । मनेमने मनेमने (मनेमनेमने)
मने । मने

बूडे (न०) बुड+मड्+वृ० । मनेमनेमने मनेमने
मनेमने

बूडे । मने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मने । मने । मनेमने.

बूडे-मने । मने । मनेमने मनेमने मनेमने । मनेमने ।
मने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

बूडे, मनेमने । मने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

बूडेमने, मने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

बूडे मने । मने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेतन, (पु०) चित्त+युन् । आत्मा । स्व । मोहने
प्राप्ती । चेतन्यता (वि०).

चेतनकी, (बी०) चेतनं करोति । हय । मने
तडी । हरीड । जो चेतन बनाउते.

चेतना, (बी०) चित्त+युन्+या । बुदि । मने ।
जना.

चेतनायन्, (वि०) चेतना+यन् । चेतना
होसाला.

चेतय, (न०) चित्त+अयुन् । चित्त । दिता । हय
"भायी चेतना केउने निरुंगय" इति मुनी.

चेतोउममन्, (पु०) चेतनः उममय । चित्त
कामने । म्पार.

चेतोमुय, (पु०) चेतनी मुयं द्वारे मय । चित्त
द्वार है । (चेतनमें) मुनिमिद्य मनिमनी ही

चेतोपिकार, (पु०) चेतन विकार । चित्त
हना । धीम.

चेदि, (पु०) एरुदेग । उम देगमें मनेमनेमने
मनेमने

चेदिपति, (पु०) चेतनी पती । चेतनेमने
मनेमनेमने पुन । "चेदिमने" "चेदिमने"
इति मनेमने.

चेद, मना । मनेमने । मनेमने होना । मनेमने
मने । चेतनि । मनेमने.

चेद, (न०) चित्त, भाष्यामने मनेमनेमनेमने
मनेमने । मनेमने । (मनेमनेके मनेमने मनेमने)
मनेमने । "भायेंचेद" मनेमने मनेमने । "चेतन
मनेमने । मनेमने.

चेद, मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेद, मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेद, मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेद, मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेद, (बी०) मनेमने, "भायेंचेद" मनेमने, मनेमने
मनेमने मनेमने मनेमने मनेमने मनेमने । मनेमने
मनेमने । मनेमने

चेदिम, (वि०) चेतन+मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेदिम, (न०) चेतन+मनेमने मनेमने मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेदि, (न०) चित्त मनेमने मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेदि, (न०) चित्त मनेमने मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेदि, (न०) चित्त मनेमने मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

चेदि, (न०) चित्त मनेमने मनेमने । मनेमने । मनेमने ।
मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने । मनेमने

छत्र, (त्रि०) छद्+गिच्+क नि० । आच्छादित । टका-
हुवा । निजंन (एकान्त) तनहा (न०) ।

छद्, वमन-कार छठ होना । सुउ० उभ० सक० सेद् ।
छदंयति-ते ।

छद्म, (पु०) छद्+गिच्+भ्यु । नीमका वृक्ष । मदनका
वृक्ष । "मावे ल्युद्" वमन (कार छठ होना) (न०) ।

छद्मि-सी, (स्त्री०) छद्+गिच्+इन् । वमनरोग । वा शीष् ।
वान्ति ।

छल, (न०) छो+कलच् । धात्र । धारत । स्वरूपको छिपा-
ना । (न्यायमें) किसी और तात्पर्यमें प्रयोग क्रियेगये शब्द-
को वाहीने दूसरे अर्थमें लगाना । प्रतिकारीके दिशागया
रूप । जैसे यह "नेपालके थापा है क्यों कि इसके पास
नर कमल है" ऐसे वादीद्वारा कहेजानेपर "नर" शब्द
"नये" इस अर्थमें लगाये जानेपरभी प्रतिकारीद्वारा "नव"-
का नौ (सेद्वा) वापसी कयनासे यह कहना कि इसके
पास तो एकही कमल है नौ कमल कहा है इस प्रकार
दोष लगाना ।

छलना, (स्त्री०) छल । सत्करोति+गिच्+भावे युच् । पर-
बचना । झूठेको टगाना ।

छली, (स्त्री०) छद्+गिच् तां ल्यति । लम्बक दीप् । बल्क-
ल । छल । छला । बेल । सन्नति । आलाद ।

छलि, (स्त्री०) छनति अकार, छिनति तमो वा नि० । अकार-
रक्षे इ कर्ति है । अघेरेको काटती है । शोभा । क्षान्ति ।
चमक । भन्क ।

छाम, (पु०) छो+भद् । छामल । बकर । प्रियां दीप् ।
पुरोगम । बर । "इसमें अण्" बरहीका दूध । बर-
रेषा संघ (न०) ।

छामपादन, (पु०) छामो कर्त्तुं अल । बकरा जियही
रूपी है । अंग्र ।

छान, (वि०) छो+कर्मणि-कर्मरे वा क् । कटाहथा । छिन ।
दुबंठ । कमरीर । "छनेवगाम्बुछछेति" काव्य०
३० १८ ।

छान, (वि०) छुणेरेकच्छदनं छनं, तच्छनं अन्ध+
व । छुणे सेके छिन्नदण्य छानेवत्वा । छिन्व । घेत्वा ।
छन्दका छान (न०)

छन्द, (न०) छद्+गिच्+भ्यु । नीमका विटलवृक्षा वृक्ष ।
"ज्ने ल्युद्" छन्द । वमन । छन्द । "कामे ल्युद्"
वम । वम (न०) ।

छन्दस, (पु०) छन्दो वेदं अर्पिते+भ्यु । वेद कर्त्तव्यता ।

छन्दोग्य, (न०) छन्देग+अ+गान्ते अन् । कामवेदकी
कर्त्तव्यता । छन्दोरे कर्त्तव्यता अर्थ । मन्त्ररूपमय
कथन ।

छाया, (स्त्री०) छो+ण । आतपामात्र । भूक रक्षे
कान्ति । चमक । प्रतिबिम्ब । परछाई । परछाई
रिखत । वही । पंक्ति । कतार । सूर्यकी छाँ:।
रोके पादवाला एक छन्द ।

छायातनय, (पु०) छ त० । शनैश्वर । "छ"
"छायापुत्र" वही अर्थ । शनैश्वर ।

छायातरु-डमः, (पु०) छायाप्रधानतरुः ।
वृक्ष । बहुत सावैदार वृक्ष ।

छायाद्वितीय, (त्रि०) छाया एव द्वितीयः सन् ।
माघ द्विती छाया है । एकान्त । अकेला ।

छायापथः, (पु०) छायायाः पन्थाः । छन्द
वाक्याय ।

छायापुरुष, (पु०) छाया पुरुष इव । छन्दे
नाई । आकारमें देगनेलायक अपनी छन्दे
छायाके स्वरूपका पुरुष । (अपनी परछाईके देण
कारमें आँप टकाकर देसनेसे छायापुरुष देण
होती)

छायाभृत्, (पु०) छायां विभर्ति-भृ+गिच् ।
धारण करनेवाला । चन्द्रमा । चाँद ।

छिकनी, (स्त्री०) छिक् इति अन्त्येकं नासिच्छन्ते
शब्दावते+अच् । दीप् । नाकसे "छिक्" से
कर्त्ता है (नाकछिकनी) एक प्रकारका वृक्ष ।

छिका, (स्त्री०) छिक् इति अन्त्येकं शब्दं कृते
नीछ । धुन ।

छिद्, कटना । हया० उभ० सक० अनेद् । छिं
छिन्ते । अच्छेदीत् । अछिच्छत् । अछिच्छन् ।

छिदिर, (पु०) छिद्+छिरच् । कुतार । डारुण ।
अग्नि । एक प्रकारकी रस्मी । बरकाठ । तार ।

छिदुर, (वि०) छिद्+कुरच् । बेटी । पूर्व ।
काठनेहास । छन्दव्य । काठनेका हविष ।

छिद्, मेदन । कटना । सुउ० उभ० सक० सेद् ।
ते । अचिच्छिच्छत्-त् ।

छिद्र, (न०) छिद्+भक् । छिद्+अच् वा ।
गर्त । गड । आधास । (ज्वोडिपने) छन्दे
स्थान ।

छिद्रदशन, (वि०) छिद्रं परयति । शोष रेकनेक ।

छिद्र, (वि०) छिद्+क । काटागया । सुउ छिद्र
नया किया गया ।

छिद्रकेना, (वि०) छिद्राः केनाः क्वथ । छिद्र
कटे गये हो । हजामत किया गया ।

छिद्रभूमः, (पु०) छिद्रः भूमः । कटन का
छिद्रभूम, (वि०) छिद्रं देय-विधायाय ।
दण्ड वृक्ष होगया हो । निरमोचक ।

नागिका, (प्रि०) शिवा नागिका यन् । बरी हुई
 निवा (नाक) यन् । विनयाववाला।
 मिश्र, (प्रि०) शिवायगी मिश्रय । हार उपर
 टा और वासवादा । बडा हुआ
 माला, (श्री०) शिवां मालं यन् । शिवाका शिर बडा
 । दस महाविद्याओंमें एक महाविद्या । दुर्गा । बैवी।
 ममूर, (प्रि०) शिवां मूर्त्तं यन् । जलते बडा हुआ ।
 श्रेयकी जड जाती गई हो।
 मरु, (पु०) शिम्रोपि रोहते । ररुक् । बडा हुआ
 की उगना है । तिलक । गुणो (श्री०) गिलोद । जग-
 लकी।
 मरु, (प्रि०) शिवां मरुत् । पु० । मरुत् । बरी ।
 मरुत् । भूत और छेदक । काटनेहार । छेदन ।
 मरुता (न०)।
 मरुतस्य, (प्रि०) शिवाः संघातः यन् । शिवाका संघात
 का) बडा गया हो । काटे गये संदेहवाला । निस्स-
 देह । संघपरहित । पडा चिया गया।
 मरुता, (पु०) उम० उम० पक्षे दुर्गा० पर० राक० छेद् ।
 मरुतसिन्धे । मरुतः । अच्युतीन् ।
 मरुत्-काटन्य । भ्वा० पर० राक० छेद् । मरुति ।
 अच्युतीन् ।
 मरुत्, छेदन । छेदकरना । मरुत् । पर० राक० छेद् । मरुति ।
 मरुता, (श्री०) मरुत्+भुन् । एकप्रकारका हथियार ।
 मुरी । काष् । चारु ।
 मरुत्, भडवाना । धमकना । सेटना । धमन । ऊपरछटककरना ।
 मरुत् । उम० उम० पक्षे भ्वा० पर० राक० छेद् । मरुत्-विन्-वे ।
 मरुति । अच्युतीन् । अच्युतीन् । अच्युतीन् ।
 मरुत्, (पु०) छेदकम् । शरायक परी । परमैही
 हिलाहुआ परी । मृग । और हरिण । विदग्ध । चतुर ।
 माय । नागरक (न०) ।
 मानुमास, (पु०) छेदक (विदग्धस्य) प्रियः अमुश-
 वाः शोकः । पण्डितका विचार अनुमास । अमुशवाका
 मेद । शब्दसम्बन्धी अलंकार।
 मोजि, (श्री०) छेकायाः विदग्धाय उक्तिः । चतुर-
 छोका बचन । पेचदार बचन । बकोकि (टेडाबचन)-
 का अलंकारका मेद।
 मरुत्, (प्रि०) छिद् । मृत् । काटनेवाला।
 मरुत्, छेदन-काटना । मरुत् । उम० उम० राक० छेद् । छेदयति-वे।
 मरुत्, (पु०) छिद्+पम् । काटना । सोडना । काटनेवाला ।
 भाजक । शब्द । दुकडा "बलाहकच्छेदप्रितकरणा"
 इति कुमारः..
 मरुत्, (पु०) छेदं=छिद् करोति । छेक निकाटनेवाला ।
 छेकी काटनेवाला,

छेदक, (प्रि०) छिद्+भुन् । काटनेवाला । विभक्त (मरुत्)-
 करनेवाला।
 छेदन, (प्रि०) छिद्+सुद् । काटनेवाला । मरुत् करनेवाला ।
 न (न०) काटना । मरुत् २ करना । फाटना । नास
 करना । हडाना।
 छेदि, (प्रि०) छिद्+इत्, काटनेवाला । सोडनेवाला ।-दिः
 (पु०) सर्पान् । इत्यत्र चक्षुः।
 छेदित, (प्रि०) छिद्+क्व । काटागया । फाटागया।
 छेद्य, (प्रि०) छिद्+स्यत् । काटनेके योग्य । काटनेलायक।
 छेदिक, (पु०) छेदं नित्यं अर्हति । छेद् । चेतव्य । वेद्य ।
 वेतयि छी।
 छे, काटना-रिवा० पर० राक० अनिद् । छपति । अच्युत् ।
 अच्युतीन् ।
 छोटिका, (श्री०) मरुत् । मरुत्+भुन् । तर्जनी और
 अंगुठीका मरुत् । गुडकी।
 छ्यु, जाना भ्वा० आत्म० राक० अनिद् । छपवते ।
 अछ्योत् ।

ज

ज, (पु०) (जि+जन्+वा ङ) (समासके अन्तमें आता
 है) उसमें और उससे पैदाहुआ (अधिनेत्रज, कुक-
 ज, जलज, भोजज), शिवजी । विष्णु । पिता । वेग ।
 युक्ति । विष । (छंदःशास्त्रमें) गुरमन्थवाले तीन वर्ण
 (अकार)।
 जर्ज, मक्षण-खाना । राक० । हसन । अक० अदा० पर०
 छेद् । जशति । अजशीत् । जसित वा जग्ध।
 जगद्यु, (पु०) जगतां चतुः रत्न । (सब पदार्थोंको
 रिरानेवाला होनेसे) संसारकी मानों आँख है । सूर्य ।
 सूरज।
 जगत्, (पु०) गम्+क्तिन्-नि० । वायु । हवा । जंगम (प्रि०)
 शोक (न०)।
 जगती, (श्री०) गम्+क्तिन्-नि० । श्रुतिवी । भुवन । जन ।
 शोक । अच्युतीन् । दुनियां । १२ अक्षरोंके पादवाला
 एक छन्द।
 जगत्प्राण, (पु०) जगतां प्राणः (जीवनहेतुत्वात् ।)
 (जीवनका कारण होनेसे) संसारका मानों प्राण है ।
 वायु । हवा।
 जगत्साक्षिन्, (पु०) जगतां साक्षीन् । (सबको साक्ष्य
 देपनेसे) संसारका मानों साक्षी (गवाह) है । सूर्य।
 जगत्सेतुः, (पु०) जगतः सेतुः । जगत्प्राण । परमात्मा।
 जगत्सृष्ट, (पु०) जगतः सृष्टः । जगाका रचनेवाला ।
 ब्रह्मा । शिव ।
 जगदम्बा, (श्री०) जगतः अम्बा वा अधिपति-म्बता ।
 जगत्की माता दुर्गा मातृदीक्ष मातृ।

जगदात्मन्, (पु०) जगतः आत्मा । जगत्का आत्मा । परमात्मा ।
 जगदाधार, (पु०) ६ त० । वायु । इवा । जगत्का आधार । "कालो हि जगदाधारः" इति सृष्टिः ।
 जगदीशः-पतिः, (पु०) जगतां ईशः वा पतिः । जगतांका : मालिक । परमेश्वर । परमदेव ।
 जगद्गुरुः, (पु०) जगतः गुरुः । जगत्का गुरु । परमेश्वर ।
 जगद्धात्री, (स्त्री०) धाम्नीच् । ६ त० । जगन्की माता । एक दुर्गा ।
 जगद्योनि, (पु०) जगतां योनिः उत्पत्तिः यस्मात् । जिस्ते जगन्की उत्पत्ति होती है । शिव । विष्णु । हिरण्यगर्भ । कुमार । ६ त० । श्रुतिवी ।
 जगन्नाथ, (पु०) ६ त० । जगन्का नाथ (मालिक) । विष्णु । विष्णुका क्षेत्र । विमलपीठका एक भैरव ।
 जग्घ, (त्रि०) अङ्+क्त । वा जङ्+क्त । मुक्त । खाया-हुआ । या टिया ।
 जग्घि, (स्त्री०) अङ्+क्तिन् । भोजन । खाना । सहभोजन । इच्छे खाना ।
 जघन, (न०) हन्+यद्+अच्-पृ० । त्रिओकी श्रोणी (रङ्ग)का अगला भाग । त्रिओकी कमर । जांघ । पद ।
 जघन्य, (स्त्री०) हन्+यद्+अच्-(पु०) । जघनं इव (इवा-थै रन्) जघनकी नारी । अधम । नीच । बरम । सबसे निचला और अहंकारी । शूद्र (पु०) उपत्य । विक्र ।
 जघन्यज्ञ, (पु०) जघन्ये (चरमे) जायते । जन्+ट । सबसे पीछे उत्पन्न होता है । शूद्र । कनिष्ठ । सबसे छोटा (त्रि०) ।
 जङ्गम, (त्रि०) गम्+यद्+अच् । गतिशक्तिमन्वितः । चल-नेकी सभ्यताका ।
 जङ्गल, (न०) गम्+यद्+अच् । पु० । वन । एकता । उत्तम । भाग (पु०) ।
 जङ्गा, (स्त्री०) जङ्गम्ये=कुटिलं गच्छति । "जङ्गा" धर्म-बडे हृत्पठके अगे कर्त्तव्यधर्ममे यद् हुआ । अ । (पु०) । शुष्क और जानुका अन्तराल अवयव । गिरे औ बुदनेके बीचका भाग । जांघ । कान् ।
 जङ्गाकारिक, (त्रि०) कृ+अप्+करः (विक्रियः) ६ त० । तनः अग्नि धर्मै ट्ट् । जंघाचरनेन कारीवयति । जंघा-भोदं बटनेके कारीवन (रोगी) काटा । पावक । जिस-का जीवन टटोके बन्धनार है । सौन्दर्यका ।
 जङ्गाण्ड, (त्रि०) जंघा वेगनी अग्नि अण्य । टक् । जिसकी जंघा (कान्) में बग बग (खोर) हो । धन-क । ईश्वरका । बरके अखरे जीनेका । करैट्ट-कट (पु०) ।

जङ्ग, योपन-रुडाई करना । ध्या० पा० । इदिन् । जवनि ।
 जङ्ग, संहति । जुडना । इकठा होना (जैसे बने पर० अक० सेट् । जटनि । अजादीन्-अकरीन् ।
 जटा, (स्त्री०) जट्+अच् । अन्वोन्मसंश्रयै जुटहुये बाट । प्रतिओकी थिरा । सिंह (से) सटा । जूडा । वृषआदिका मूत्र । जटामांठी । रसे वेदका पाठ । महादेवकी जटा । छाटा ।
 जटाजूट, (पु०) ६ त० । जटानां जूट (स्वे) च । जटाओका बंधन । जटाओका समूह ।
 जटामांठी, (स्त्री०) जटां मन्थते । मन्थ्+मन्थिने नामसे प्रविद्ध सुगन्धिकाका द्रव्य ।
 जटायु-म्, (पु०) जटां याति । कान्+ङ् । जटायु-अच् । जटं (संदत्तं) आयुः अस्व वा । वि-उमर हो । अपने नामका पत्नी । जटौर । पुण्ड्र-जटाल, (पु०) जटा अस्ति अयम् लच् । पुण्ड्र-भोड । कर्पूर । अमूर । जटावाला (त्रि०) जट (स्त्री०) ।
 जटिन्, (पु०) जटा अग्नि अस्म+इनि । इम । पेट । बोडके समान पत्तीवाला वृक्ष । जटाय (त्रि०) ।
 जटिल, (पु०) जटा अस्त्वर्थे । इलच् । जटाय (त्रि०) शेर । बद्धचारी । जटायुक्त (त्रि०) जटामांठी । मन्थन । बचा । दमनशुभ (स्त्री०) ।
 जटर, (न०) जायते जन्तुः गर्भे वा अभिन् । जट-दान्तादेसः । जिममें जीव वा गर्भे उपजता है । बकरी । पेट । वृद्ध । बटाहुआ और कटिन । (त्रि०) ।
 जटरयन्त्रणा, यातना, (स्त्री०) जटरस्य यन्त्रणा । तना । गर्भके भीतर लक्ष्मै अनुभव की गई पीडा ।
 जटरव्यथा, ज्याज, (स्त्री०) जटरस्य व्यथा । जट-पेटकी पीडा वा खट ।
 जटराग्निः, (पु०) जटरस्य अग्निः । पेटकी (अकरीन्)की बाजी अग्नि ।
 जटरामयः, (पु०) जटरस्य आमयः । पेटकी अकरीन् ।
 जटरीकृत, (त्रि०) अटरः जटर इन्-जटरी-कृतः । जटरीके भीतर (गर्भमें) टिगनायका ।
 जट, (त्रि०) जलति (पानीभवति) जट्+अच्+इत् । इतिशक्तिमन्वितः । मला पुण न जनेहता । इन्मे हीन् मूक । गुंगा । बुदिये हीन । बेअहल । अगे । पदनेमें अगमनी और धूर्त । जव और हीना (त्रि०) ।
 जटता, (स्त्री०) जटन्-भावे । जटाना । धूर्त । गता । मूल । बेरहूरी ।
 जटिमन्, (पु०) अट । इन् । मूर्खतर ।

(प्रि०) अजडः अडः कृग-अड+प्रि+कृ+क ।
 या गया । बेहोश किया गया ।
 १०) जन्+उ । अन्तमें तथा आदेश होता है ।
 । कण्ठ । स्वर ।
 १०) जन्+ह । क्षान्तादेशः । स्कन्ध और कण्ठकी
 कंठे और वाय (कच्च्) का जोड़ । पहलेके नीचेकी
 यै ।
 न हत्यप्र होना । रिना० आत्म० अक० शैट् ।
 । अजनिट् । जनयति । जातः ।
 ०) जन्+अच् । लोक । लोग । पामलोक । नीच
 आम लोग । महोलोकके ऊपरका लोक । जीव ।
 वा पुण्य) । "एवं जने शुद्धति" ।
 पु०) जन्+मिच्+शुल् । रिता । बाप । मिथिला
 एक राजा (सीताजीका पिता) । कारण (सबब)
) ।
 ता, (स्त्री०) जनकम् मुना । ६ त० । जनक-
 या । सीतादेवी । धीरामजीकी पत्नी (स्त्री) ।
 (स्त्री०) जनानां समूहः-भास् । जनसमूह । भीड़ ।
 जोग ।
 ती, (स्त्री०) जन्+अभि वा दीप् । माता । माँ ।
 म सुगंधवाद्या इव्य । दया । अलणक । कापका
 जटामांसी । ममीठ ।
 (पु०) जना पचन्ते गच्छन्ति यत्र । पदु+प ।
 जोग जाते हैं । देव । मुक्क ।
 द्, (पु०) जनानां प्रवादः । लोगोंका बहुत बो-
 लिवदन्ती । अरवाद । निदा ।
 ; (पु०) जनानां शिब । लोगोंका प्यार । लोक-
 शि ।
 य, (पु०) जन+एम्+मिच् सुम्ब । परीक्षित
 न पुत्र । इतिनापुरका प्रसिद्ध राजा । अर्जुनका
 । (इसका पिता गांधी वसुधुआ मरगदा, जन-
 ने गांधीके कुछबो नरा करनेकी इच्छाने सर्वेति
 हवा जियेने मरक गांध भिन सब गांध दस
 से बनी राजा है जिसे वैतम्भानने महाभारत
 पर अमरलसिने तुकासा) । "जन्मेजय" ऐगामी
 है (पु०) ।
 द्, (पु०) जन्+मिच्+शुल् । उपम करनेहार ।
 । मया (स्त्री०) दीप् ।
 त्, (पु०) महोलोकके ऊपर एक पुत्र । ऊपरका
 जगत् ।
 यहार, (पु०) जनानां अरहारः । लोगोंका अर-
 । शीतरथम् ।
 यण० २०

जनधुन, (प्रि०) जनेषु युतः । लोगोंने विस्तार । सबसे
 जानाहुआ । मराहूर ।
 जनधुति, (स्त्री०) जनानां धुतिः । लोगोंकी धुनीहुई बन ।
 किवदन्ती । अकवाद ।
 जनधुति, (स्त्री०) जनेषु धुतिरेव न दृष्टिः दस्सः । लोगों-
 ने धुनाही है देखा नहीं । तथा वा दृष्टा लोगोंका बनन ।
 लोकप्रवाद । किवदन्ती । अकवाद ।
 जनसंवाध, (प्रि०) जनानां संवाध-य० त० । लोगोंकी
 गादी भीड़
 जनस्थानं, (न०) जनानां स्थानं । लोगोंका स्थान । दण्ड-
 बनका एक । भाग
 जनास्थान, (न०) दण्डबनके पाग एक स्थान । लोगोंके
 रहनेकी जगह । "जनास्थाने धानम्" इति उद्धृत ।
 जनाफीर्णं, (प्रि०) जनेः आधीर्णं । लोगोंके ३ त० मरा-
 हुआ । लोगोंके मरागायन हुआ ।
 जनाचार, (पु०) जनानां आचारः । ६ त० । लोगोंका
 आचार । शीतरथम् वा बालबानन ।
 जनान्तिक, (न०) ६ त० । जनगमीर । जनेके लोगोंके
 पाग । अप्रकाश । शिबर की गई बागचीर (अटक) ।
 अभिनय (मछल) करनेवाले लोगोंकी आरामके पुन
 बातचीत ।
 जनार्णय, (पु०) जनानां अर्णयः-य० त० । बहुत लोगोंका
 दूधड़ा जनसमूह । जनसमूह ।
 जनार्दन, (पु०) जनेः अर्दने दण्डने लक्ष्मीं अर्ने ।
 अर्द-मोगना+अर्दनि लुट् । लोग अर्दनी दण्डा शिमे
 पूरी किया करते हैं । "जने अर्दनी वा अर्द+मान् ।
 लु वा" । जो जीसोको (पचके कारण) मरता है ।
 शिष्णु । माराधन ।
 जनार्दन, (पु०) जनान् अर्धनि-अर्द+शु । लोगोंको
 मारागाई । मार । अर्दित ।
 जनार्धम्, (पु०) जनानां आन्धम् । लोगोंके दिरन्ध
 स्थान । शरण ।
 जनार्धय, (पु०) जनानां लोकानां अर्धयः । लोगोंका
 अन्धता । मरण । दुर्मिया । पर ।
 जनि-जी, (स्त्री०) जन्+अये इन् वा दीप् । कल्पिनी ।
 विदय । "अयते जनेः कल्पन्" । जियेने जने ल-
 जग है । जनी । जोग । मारा । क । कृत् । कृ ।
 कसा । "अयते अयेयं अयत" । अयेय
 (संदृष्टी) लोक है । एक ही । एक ही । एक
 लक्ष्मीर शिष्णु ।
 जनुम्, (न०) जन्+अच् ।
 जनु-न्, (न०) जन्+उ

(त्रि०) जन्+भिच्+क । उत्पन्न करया गया । किया गया।

(पु०) जन्+सृच् । उत्पन्न करनेवाला । पिता ।

(स्त्री०) जन्+सृच्+वीप् । उत्पन्न करनेवाली । मां।

(पु०) जनानां इन्द्रः ईशा-ईश्वरः । लोगोंका इन्द्र मी राजा।

(पु०) जन्+नु । प्राणी । प्राणवाला । अविषादोप-
हमें आत्माका अभिमान करनेवाला । जीव।

(पु०) जन्तु कृमीन् हन्ति+उक् । विद्वत् । विद्व ।
। प्राणिजोहो मारनेवाला (त्रि०)।

उ, जन्तवः फले अस्य । जिसके फलमें जीव हों ।
। गूलर।

(स्त्री०) जन्तु कीटान् लाति । ला+क ।
। काही । इममें बहुतसे कीड़े रहते हैं।

(न०) जन्+मनि । उत्पत्ति । आद्यक्षणका सम्बंध ।
रक्षर योनिसे बाहिर आना । (न्यायमें) अपूर्व-
से सम्बंध । (ज्योतिषमें) जन्मका नक्षत्र
।) । जन्मउत्तम।

जन्, (न०) जन्मना नाम । जन्मसे बाहरहें दिनमें
। गया नाम।

जन्, (स्त्री०) जन्मनः प्रसिद्धा । जन्मका स्थान ।
। पैदादण्डी जगह।

जन्, (स्त्री०) जन्मना प्राप्ता भवति । जन्मसे प्राप्त
। भवति।

जन्, (स्त्री०) जन्मनः भूमिः । जन्मकी पृथिवी ।
। भूमि।

जन्, (पु०) १ उ० । जन्मका महीना । जन्म-
के अक्षरिण्य एव दिनका महीना।

जन्, (त्रि०) जन्मना रोगः अग्नि अग्न्यः । निनि ।
। रोगीके रोगी है।

जन्, (पु०) जन्मनः हेतुः । जन्मका कारण । पैदाद-
। कारण।

जन्, (न०) जन्मन् जन्मन् मन् ० । दृग्गा जन्म ।
। संस्तर । परदेह । बड़े दुनियां।

जन्, (न०) जन्मन् जन्मन् मन् ० । दृग्गा
। जन्म।

जन्, (त्रि०) जन्मन् जन्मन् । जो जन्मने अग्न्य है।
। जन्म।

जन्, (पु०) जन्मन् जन्मन् इति । जन्म । जन्मन् ।
। जन्मन्।

जन्म, (त्रि०) जन्+कर्तात् यत् । जायमान । पैदाहुआ ।
“जन्+भिच्+यत्” उत्पाद्य । पैदाकरनेवाला
जनक । पिता । पैदाकरनेवाला । और नई विद्या
हुई स्त्रीके जातीके लोग । अष्ट । अठारी । परीकाद । का
नामी । प्रीति । युद्ध । लडाईं और शरीर (पु०)
“भावे यत्” जनन । उत्पन्न होना (न०) । मां
सहेली (स्त्री०)।

जन्, मनमें धोलना । उच्चारण । बोलना । भ्या० पर० सक०
सेद् । जपति । अजापीत्-अजपीत्।

जप, (पु०) जप्+अच् । वेदके मन्त्रआदिका बार १
बोलना । बार २ उच्चारण करना । मन्त्र आदिका मात्र।

जपा, (स्त्री०) जप्+अच् वा पय्य व् । अपने नामका ११
उसका फूल।

जम्, मैथुन-जुडा-भोग करना । भ्या० पर० सक० सेद् ।
इदित् । जम्मति । अजम्मीत्।

जम्, जम्भण । उबानी लेना । भ्या० आत्म० सेद् । जम्भने ।
अजम्भित्।

जम्, भक्षण । खाना । भ्या० पर० सक० सेद् । जमति ।
अजमीत्।

जमदग्नि, (पु०) परशुरामका पिता । एक मुनि।

जम्पती, (पु० द्वि० ष०) जाया व पतिव्य । द्वं० जा-
या जम् । दम्पती । स्त्री और पुत्रका जोडा।

जम्बाल, (पु०) जम्+यन् जम्बं आलाति । आ+ला+क ।
पह । कीचड़ । शैबल । सेवाल । केतरी । केवडा।

जम्बालिनी, (स्त्री०) जम्बाल+अग्नि अग्ने इति । जंलके
वाली नदी।

जम्बु-भू, (स्त्री०) जन्+इ नि० । युद् । पु० । का इत् ।
जाम्बुका वृक्ष । “उपधा फल” इस अर्थमें अण् उ-
का विहण्यसे शोध । “जाम्बु” का इत्ये “जम्बु”
मी । जाम्बुका फल।

जम्बुक, (पु०) जम्बु इत् चायति । के+क । गोलाकार
मनुष्यामी वृक्ष । “स्थापे क्व” जम्बुकारके अर्थसे
गीदह।

जम्बुद्वीप, (पु०) जम्बुद्वीपविहितो द्वीपः । एव० ।
जाम्बुद्वीपके निवासीका द्वीप (जमीन) । लाल द्वीपके
एव।

जम्बुक, (पु०) जम्बु नि० । जम्बु । गीदह । जीव । एव ।
जम्बु । जम्बु । एव (स्त्री)।

जम्बु, (पु०) जम्बु+यत् । एव देव । एव । वं० ।
जम्बु । द्विष्ठा । इत् । टोरी और लाल । एव । एव
यत् ” कान् । इवानी देना । जम्बु । “जम्बु” इत्ये
इवानी । जम्बु (स्त्री०)।

जम्मोदिन्, (पु०) जम्मं दैव्यं निनति । निन्द+निनि ।
जो जम्म नानी दैलको पदना है । इन्द्र । " जम्मने-
दन " आदि । यही अर्थ ।

जम्मला, (स्त्री०) जम्मं जम्मां सति । ला+क । एक
राक्षसी (इत्यका स्मरण करनेसे जवर (साध-मुलार)
नाश हो जाता है और जवरके उदनेपर उसके पहिले
आनेवाली उषाक्षीका भी नाश होता है) । " मगुदस्वोत्तरे
तीरे जम्मला नाम राक्षसी " ।

जय, (पु०) जि+भावे अच् । धातुओंका अभिभवन (वि-
रकार-दधाना) । नाटयणश्च पार्थिवर (पद्य विचरने-
हार) । विराटके पुरमें प्रथम नामवाला युधिष्ठिर ।
देवी (स्त्री०) ।

जयदम्बा, (स्त्री०) जयमृषिका दम्बा । जीतको बतानेवाला
बाजा । बाधनेद । एक प्रकारका बाजा ।

जयद्रथ, (पु०) जयन् रथो यस्व । जितका रथ जीतनेवाला
है । सिन्धुदेराका राजा । बुद्धोधवका भगिनीपति (बह-
नोई) । महाभारतकी लडाईमें इतनी अभिमन्युको मारा
और भाव अर्जुनसे माराया ।

जयन्त, (पु०) जि+भाच् । इन्द्रके पुत्रका नाम । यन्द्रमा ।
शिखरी । विराटके पुरमें प्रथमनामवाला भीम ।

जयन्ती, (स्त्री०) जयति रोषान् । जि० धातु+तीप् । एक
दुर्गा । " जयन्ती मन्त्रवा वाली " इति मन्त्र । हांसा ।
इन्द्रकी कन्याका नाम । जरा । कुशापा । जयन्ती इह ।
" शावना (धावण) महीनेको दृष्यपशुकी अष्टमी यदि
शेडिभी मशयके साथ हो और आधीरातके पहिले वा पीछे
भी उमकी बोई कल (भाव) अक्षय हो उषाका नाम
जयन्ती हो जाता है " इत्य प्रकारका योग (इषी योगमें
धीदृष्यदेवका जन्म हुआ) पताका । निरात । हांसी ।

जयपत्र, (न०) जयपत्रकं पत्रम् । जीतको जगनेवाला पत्र ।
" पहिली और पिछली किवाकाल निर्णय (फैसला
करके पीछे जो जीतनेवालेको निराहुका पत्र दिया
जाता है " जीतका लेख (मखिरा) । अभिषेधयज्ञमें
घोड़ेके महापत्र तथा पत्र (चित्री) ।

जयपाल, (पु०) जयेन पालयति । पाल+अच् । इसविशेषका
राम । विष्णु । राजा । जयकालोदेका इह ।

जया, (स्त्री०) जि+अच् । हीनकी । हीन । जयन्ती ।
दुर्गा । रिजका (भंग-अंग) । एक हांसी । सीतलुर्वा ।
दानाहुवा । (ज्योतिषमें) जयोरही, अष्टमी और तुलीदा
विशिवसुद ।

जय्य, (वि०) जेजुं एवर । जी+इह । " लयज्यो एवरदे " ।
वि० । जिसे जीतते है । जेजुं एवर । जीन जयक-
नेहाव ।

जयट, (वि०) जय+अटच् । बंदत । बडोर । सरय ।
पालु । जदं । जीर्ण । पुणना । वृत्त ।

जयत्, (वि०) जय+अयत् । वृत् । वृत्त । जीर्ण । पुणना ।
जययुक्त । बुद्धापेवाला । " जिवा " जयती । वृत्ती ।

जयत्काद, (पु०) मनसादेवीका पति । एकमुनि । मनस-
देवी. (स्त्री०)

जयद्रथ, (पु०) जयन् गो० वज्रमा० इन्द्रोश्च । वृत्त बंज ।
एक गीध ।

जयस्त, (पु०) जय+सच् । सहिव । भंग । जीर्ण । वृत्त ।
(वि०) ।

जया, (स्त्री०) जय+अच् । वह अवस्था कि जिसमें लीर
विपिल (शीला) हो जाता है । बुद्धापा ।

जयाजीर्ण, (वि०) जयया जीर्णः । बुद्धेये जीर्ण (पुणना) ।
विपिल अंगोवाला ।

जयानुव, (वि०) जयया आनुव-यु० ल० । बुद्धेये
सीधित । हीले अंगोवाला । वृत्त । वृत्त ।

जयामीट, (पु०) जयया मीटः । पं० म० । पदार्थ
देवना । कामदेव । (बुद्धेये देवदेवका) ।

जययुज, (वि०) जययुजो जयते । जय+उच् । जो जयने
युक्त उपजना है । पद्य-युग साध-जीनर बहिर दण्डदे-
रासध-पिताथ और मनुष्य जययुज है । जो कपड़ेके रस्स
महीनकी होती है उसे जययु करके हैं कहीसे टुक (कौं)
और सोणित (सोह) का योग होकर रसं बन " है इतने
वह जययुज कहा जाता है " इत्य प्रकारका दर्भ " जो
जैसे भिजने ।

जयावस्था, (स्त्री०) जयया अवस्था । बुद्धेये अवस्था
(शलन) बुद्धापा । बुद्धावस्था ।

जयावर्ष, (पु०) एक इतिहास एकाका वर्ष । जो बर
बराहुर था । बुद्धवर्षा पुत्र । इसे जानकर एतहीसे क-
हीसे बरमेहुए हो अनेको अंग दिन इत ही विरचिते इत्य
अर्थ जयवर्ष हुआ ।

जयित, (वि०) जय+अच् । जिसे बुद्धा जयता ।
वृत्त । वही इमारका ।

जयित्, (वि०) जयि । (स्त्री०) । जय जयि जय+इति ।
जिसे बुद्धा है । वृत्त । वही इमारका ।

जय्य, (वि०) जय+अयत् । बहिर (एवर) अंगोवाला ।
जयजित्, (वि०) जय+जि+अयत् । जयं (वृत्)
होकर । शिष्ट वत्त ।

जयं-दं-(स्त्री०) जयन् शिरवत् । वृत्त० एव० लघ० बंज ।
जयं (स्त्री०) बंज । अयत् (स्त्री०) बंज ।

जयं, (पु०) (व०) जय+अयत् । एक
अर्थ । वृत्त (स्त्री०) ।

जङ्ग, कटना । निन्दा करना । तुदा० पर० सक० ऐद् ।
जसति ।

जङ्ग, आच्छादना । बाँटना । पुरा० उभ० सक० ऐद् । जा-
त्यति-ने,

जङ्ग, तेज होना । ध्वा० पर० सक० ऐद् । जलति । अजा-
हीत् । जल । जालः ।

जल, (त्रि०) जल्लभञ् । जड । भृगं । टंडा । उदर ।
पेट । गंधद्रव्य । (ज्योतिष्यं) समसे चाँया पर । पूर्वा-
पात्रा नक्षत्र (न०) पांच भूतोमेंसे एक अर्थात् पानी
(न०) ।

जलकण्टक, (पु०) जलस्य कण्टक इव । मानो पानीका
कांटा है । गृत्ताटक । सिपाडा । कुम्भीर । मंसार ।

जलकपि, (पु०) जले कपिविव । मानो पानीमें बानर
है । शिशुमार । जलजन्तुमेद । घडियाल ।

जलकरङ्क, (पु०) जलस्य करङ्क इव आधारः । खोपड़ीके
समान पानीका आधार । नारिकेल । नारियेल । नरैल ।
मेघ । बादल । कमलकूल । शंख । पानीकी तरंग (लहर) ।

जलकाक, (पु०) जले काक इव । पानीमें मानो कौआ
है । पानकौषी नामी एक प्रकारका पक्षी ।

जलकुन्तल, (पु०) जलस्य कुन्तलः केश इव । मानो
पानीकी बुल्ल है । शंवाल ।

जलक्रीडा, (स्त्री०) जलस्य क्रीडा । जलकेली । जलकी खेल ।
आपसमें पानीसे खेल करना ।

जलचर, (पु०) जले चरति । चर्+टक् । मत्स्य-भूमिं प्राह-
आदि जलके जीव ।

जलचारिन्, (पु०) जले चरति+गिति । जलमें फिरने-
वाला मत्स्य । मच्छी ।

जलज, (पु०) जले जायते । जन्+ञ् । पानीमें उपजता
है । शंवाल वा नीरवृक्ष । मत्स्य । मच्छ । (ज्योतिष्यं)
कर्म मान और मकर राशिका पिछला आधा । कमलकूल
(न०) शंख (पु० न०) पानीमें उपजी वस्तु (त्रि०) ।

जलतरङ्ग, (पु०) जलस्य तरङ्गः । जलकी तरंग (लहर) ।

जलताडनम्, (न०) जलस्य ताडनम् । जलका ताडन
करना (टकराना) । कौर्सी निरर्थक (निष्प्रयोजन) किया ।

जलद, (पु०) जलं ददाति दा+क् । पानी देता है । मेघ ।
बादल । कर्पूर । कष्टूर । पानी देनेवाला (त्रि०) ।

जलदागम, (पु०) जलदानां आगमः यभिन्न समये ।
जिस वक्त बादल आते हैं । वर्षाकाल । मेघका पानी बर्ष-
नेका काल ।

जलधर, (पु०) जलानां धरः । धृ+थञ् । पानी रखने-
वाला मेघ । बादल कर्पूर । समुद्र । जलधारण करने-
वाला (त्रि०) ।

जलधि, (पु०) जलनि धीयन्ते धत्र । धृ+धि । जो
पानी टहरता है । समुद्र । समुंद्र । " नोर्नी " वा-
नी इमी अर्थमें । काडी मंथना । एकप्रकारकी मिट्टी

जलधिजा, (स्त्री०) जलरोः जायते । जन्+ङ् । ह्यु-
निकलनी है । लक्ष्मी ।

जलनिधि, (पु०) जलनि निधीयन्ते धत्र । धि+
धि । जहाँ पानी टहरते हैं । समुद्र । काडी मंथन ।

जलनिर्गम, (पु०) जलानां निर्गमः । जलोंका निकल
नहीं आरिक्के जलका घूमना । नीचे टहिरैहुए पानी
ऊपरको जाना । प्रवाह । फसील ।

जलप्राय, (न०) जलं प्रायं यत्र । जहाँ अधिक पानी है
बहुजलदेग ।

जलयुहुद्, (न०) ६ त० । जलका बुल्लयुद्ध । जलकी
जलमार्ग, (पु०) ६ त० । प्रवाही । मोरी । नदी ।
जलका रास्ता ।

जलमुच, (पु०) जलनि मुवति । जो पानी छोड़ता है ।
मुच+किप् । मेघ । बादल ।

जलयन्त्र, (न०) जलानां लक्ष्णेपगाथं यन्त्रं । पानीके उप-
करण फेंकनेकी कला । फोहार । मुझार ।

जलयानम्, (न०) जलस्य यानं । जलकी सवारी । पै-
वडाक ।

जलराशि, (पु०) जलस्य राशिः । जलका समुद्र ।

जलवाद्यम्, (न०) जलस्य वाद्यं । जलका वाद्य (बज) ।
। एक प्रकारका वाजा जिसे जलतरंगनी कहते हैं ।

जलवेतस, (पु०) जले जातं वेतसः । शाक० । जल
उपजाती । वेतसमेद । बंन ।

जलव्याल, (पु०) जलस्य व्यालः हींस्रः । जलमें
मारनेवाला जीव । सर्प । साप । क्रूर (बेरहम) क
करनेवाला जन्तु (जीव) ।

जलदायिन्, (पु०) जले (समुद्रजले) शोभे ।
गिति । जो समुद्रके पानीमें छेदना है (छोट्टी)
विष्णु । नारयण ।

जलशुक्ति, (स्त्री०) जलस्य शुक्तिरिव । मानो पानी
कीपी है । एक प्रकारका जलका जीव । घोस । किं

जलहस्तिन्, (पु०) जले हस्तिव । मानो पानीमें हाथ
है । प्राह (तन्दुआ) नामी पानीका जंतु ।
पानीमें हाथके स्वरूपका एक जीव ।

जलहाग, (पु०) जलानां हाग इव । (शिशु हस्ति)
मानो पानीका हाथना है । फेन । हाग । ह्यु-
समुद्रकी हाग ।

जलहास, (पु०) जलस्य हासः । जलका हसना । हा-
एकप्रकारकी मच्छी ।

जानुषान, (पु०) जनु धानं (सविधानं) अस्य । कवी
 अक्षर पाकर जिसे पकड़ते हैं । रासस । "जातुषान" भी ।
 जानुष (त्रि०) जनुतो विहार+जण् । पुषागमः । साक-
 क्य बनाहुआ पदार्थ । कपटी भीम ।
 जातुर्कण, (पु०) एक मुनिव्य नाम । शिवजीका नाम ।
 जातेष्टि, (स्त्री०) यञ्+फिन् इष्टिः । जात । उत्पन्नहुएके
 संस्कारके लिये क्रियावादा यज्ञ । जातकर्म नामी एक
 संस्कार । यह संस्कार जो जन्मके समय क्रियाजाता है ।
 जातोष्ट, (पु०) जातः प्राप्तशिशुणीयदशः उष्ठा टञ्+भमा०
 शिशुने श्ययक दशाकी पशुका सोष्ट । जवान सोष्ट ।
 जात्य, (त्रि०) जानो भव+यत् । जातिमें हुआ । कुलीन ।
 धेठ । चन्त । खान्दानी । अन्ता । सुन्दर ।
 जात्यन्ध, (त्रि०) जाती (जन्मनि) एव अंधः । जन्म-
 का अंधा । जन्मान्ध । "जाल्गो कपिलस्य" इति मनुः ।
 जात्युत्तर, (न०) जाल्वा व्यासिदीनाम्नां साधर्म्यवैष-
 म्याम्नां उत्तरं । हेतु और साध्यके इच्छा रहनेके नियम
 विन साधर्म्य और वैषम्यसे उत्तर देना । एसा उत्तर ।
 असन् उत्तर ।
 जानकी, (स्त्री०) जनकस्य इयं+अण् । जो जनककी
 (लक्ष्मी) हो । सीता ।
 जानपद, (त्रि०) जनपदे भवः । तत् आगतो वा+अण् ।
 देवता वा देवते आयाहुआ । धियां बीपु ।
 जानु, जन+भुण् । अर्जुनफामप्यभवा । पद और हातोंके बी-
 चका हिस्सा । घुटना । गोड़ा । "सायं कन्" ।
 जाप, (पु०) जप+पण् । पुषवाप मनहीरी प्रार्थना ।
 गुनगुन । कानाहुसी । जप ।
 जापक, (त्रि०) जप+ण्कु । जप करनेवाला ।
 जाप्य, (त्रि०) जप+यत् । जप करनेयोग्य ।
 जावाल, (पु०) जवालयया अपत्यं+अण् । जवालाकी
 सन्तान मुनिमेद । एक मुनि ।
 जामदग्नय, (पु०) जमदग्ने अपत्यं+यण् । जमदग्निकी
 सन्तान । जमदग्निका पुत्र परशुराम ।
 जामा, (स्त्री०) जम् शरने+अण् स्त्रीलम् । बन्सा । लक्ष्मी
 पतोह । नं ।
 जामातु (पु०) जयां माति निनोति-मिमीते वा तुञ् ।
 जो स्त्रीको मापता (हरएक काम उधका देणका है)
 केंचता (काम सिगड़नेपर सिगड़ता है) और कारण
 (वसा दोष करेवर शासन भी कर्ता) । पितापु । सान्नी ।
 लक्ष्मीका पति । दुहितृपति । जवाई ।
 जामि, (स्त्री०) जन्+मिण् नि० इदिः । भगिनी । बहिन ।
 दुहिता । लक्ष्मी । कुषा । नं । बहू । कुलत्री । निवट-
 की स्त्री । "जामयो सानि गेहानि" मनुः ।

जामेय, (पु०) जाम्याः भगिन्याः अपत्यं+दण् । भगिनी-
 का पुत्र । बहिनका छत्रका । मनेवा ।
 जाम्ययत्, (पु०) रामायणमें प्रसिद्ध गुरुकान (री-
 टोंका राजा) ।
 जाम्ययती, (स्त्री०) जाम्यवतः अपत्यं स्त्री । जाम्यवान्-
 की स्त्रीका सन्तान । कृष्णदेवकी भार्याभूमिसे एक ।
 जाम्यवान्की कन्या । सापोंको कावू करनेहारी ।
 जाम्वूनद, (न०) जम्बून्दे भवं+अण् । जम्बूनदमें हुआ
 लण । सोना । एक प्रकारका सुन्द सोना । धतूरा ।
 जाया, (स्त्री०) जन्+यक् । "पति स्त्रीमें प्रवेशकरके गर्भ
 होकर इस संसारमें उपजाता है । जायाका जायापन यही
 कि इनमें पहिली पुत्र रूपसे उत्पन्न होता है" । स्त्री । श्रोत ।
 हमने सातवां घर ।
 जायाजीव, (पु०) जायया जीवति । जीव+क । जो स्त्रीके
 आसरे जीता है । नट । नकल करनेवाला ।
 जायु, (पु०) जयति रोगान् । जि+उण् । जो रोगोंको जीत
 लेता है । औषध । दवाई । दूटी ।
 जार, (पु०) जीयंते अनेन । जम्+करणे घञ् । उपपत्ति ।
 जार । मार ।
 जारज, (त्रि०) जाटव जायते जन्+क । सारसे पैदा होता
 है । सारसे उत्पन्न हुआ । कुण्ड । गोलक पुत्र ।
 जाल, (पु०) जल्-सम्भरण-शोकना+यण्, जल् मारना ।
 निवृत्त+अण् । जले क्षिप्यते अण् वा । जिसे डोकते, मार-
 ते वा जिसे पानीमें फेंकते हैं । कदमका दूध । बारीक
 सरोसा । गन्ध । छिद्र । मच्छिप्रीकी पकड़नेके लिये
 लकड़के सूतका बनाहुआ आनाय (जाल) । न घिलीहुई
 कडी । सुदृक्ल । और पशुपतिओके पकड़नेके लिये लज्ज
 (पार्श्व-शंका) । जाल्य । धूर्तता । दम्भ । पातक । समूर ।
 इन्द्रजाल (न०) सायं कन् । मोचकफल । नई कलिओका
 समूह (न०) ।
 जालक, (न०) जालं इव कायति कै-क । जालकी भांति
 काय करता है । जाल । समूह । इन्द्र ।
 जालयत्, (त्रि०) जाल+यण् । जालयत् । छत्रिया ।
 कपटी । धातवी ।
 जालन्धर, (पु०) जाल+भ+वृ+मुण् । कालके उत्तर-
 पश्चिमका एक देश । अण और छत्रव नदीकेके मध्यका
 एक देश ।
 जालिक, (पु०) जालेन कपटि । जाल+कृ । कपूरिक ।
 कंदक । जालसे जीनेवाला । देवर्षि । पीर । सर्वदक ।
 मच्छी ।
 जाल्म, (त्रि०) जालयति
 अपने दोषको छिपाता है ।
 जाल्म ।

"म" (जो
 मयं । दूर ।

आहम्, (न०) जाह्वन्-एक प्रत्यय है । गंगानदीक शब्दोंके साथ लगाना जाता और शरीरके किसी अवयवको प्रकृत करता है जैसे "कर्णनाहं" कानका मूलस्थान ।
 जाह्वयी, (स्त्री०) स्वर्गके आइंहुई गंगाको वेगानी देगकर जहराजर्षिने पहिले मुराये पीछिया पीछे कानके ; भांगेके निकाला इमलिये जहु राजर्षिकी कन्या होनेसे गंगाको जाह्वयी भी कहागया । गंगानदी ।
 जि, जय-जीतना । भ्वा० पर० रा० अलिट् । जयति । अजयीत् ।
 जिगीया, (स्त्री०) जि+गन्+अ । जयेच्छ । जीतनेकी इच्छा । चाह । प्रकपं । रक्षक । उदम । मिह्रत ।
 जिगीयु, (त्रि०) जि+गन्+उ । जीतनेकी इच्छा करनेवाला ।
 जिघत्सा, (स्त्री०) अद्+गन्+घगादेशः । भावे । मश-णेच्छा । खानेकी इच्छा ।
 जिघत्सु, (त्रि०) अद्+गन्+घगादेशे-उ । गानेकी इच्छा-वाला । भूत्वा ।
 जिघांसु, (त्रि०) हन्+सन्-उ । मानेकी इच्छावाला ।
 जिज्ञासा, (स्त्री०) ज्ञा+गन्+भावे अद् । जापेकी इच्छा ।
 जिज्ञासु, (त्रि०) ज्ञा+गन्+उ । जापेकी इच्छा करनेवाला । सुमुमु । छूटनेकी चाहवाला ।
 जित्, (त्रि०) जि+क्विप् । "समाप्तके पीछे आता है" जीतनेवाला । "कंसजित्" ।
 जित, (न०) जि+क्व (भावे) जय । जीत "कर्मणि क्व" । अग्निभूत । दयायागया । परजित । हरदियागया । जीतपाने-वाला । बशीकृत । काबू कियागया । आयत्तीकृत ।
 जितकाशिन, (त्रि०) जितेन (जयेन) काशते (प्रकाशते) णिनि । जो जीतसे चमक रहा है । जिताह्व । जिसने लड़ाई जीती है । जयी । जीतनेवाला । फनहयाव ।
 जितमन्यु, (त्रि०) जितः मन्युः येन व० स० । श्लोषको जीतनेवाला ।
 जितशत्रु, (त्रि०) जिताः शत्रवः येन । शत्रुओंको जीतने-वाला । विजयी ।
 जितस्वर्ग, (त्रि०) जितः स्वर्गः येन । स्वर्गको जीतनेहार ।
 जितात्मन्, (त्रि०) जितः (बशीकृतः) आत्मा । (इन्द्रिय-मनो वा) येन । जिसने इन्द्रिय वा मनको बश किया है । जितेन्द्रिय ।
 जित्ति, (स्त्री०) जि+क्विप् । जीत । लाभ । नष्ट । हासित ।
 जितादि, (त्रि०) जिताः अरयः येन । जिसने अपने शत्रुको वा कामकोफादिको जीत लिया है ।-दिः (पु०) बुद्धदेव ।
 जितेन्द्रिय, (त्रि०) जितादि (बशीकृतानि) इन्द्रियाणि येन । जिसने अपनी इन्द्रियोंको बश किया है । "जो मनुष्य हन, देष, छ, खा और संपकर एग देष नहीं करता" हर्ष और विकार (रज) से रहित चान्द जीव । कामको बश-नेहार हृष ।

जिग्यस्, (त्रि०) जि+गन् । जगतीत । जगतीत श्रियां शीर् ।
 जिन, (पु०) जयति गंगारं । जि+क्व । गंगारको जीतनेहार । बुद्ध । णिणु "जिग्य" (त्रि०) ।
 जिग्, गेक-गीतना । भ्वा० पर० गक० ऐद् । जेने अजेकीर ।
 जिण्यु, (पु०) जि+गन् । अजुन । इन्द्र । णिणु । सुभाउ वयु । जीमनेवाला (त्रि०) ।
 जिण्यु, (त्रि०) जि+गन् । जीतनेवाला । जयकीर ।
 जिगम्, (त्रि०) हा+गन्+दिवादि णि० । बुद्धि । जिगमन् । मूयं । तगरका वृष ।
 जिह्वग, (पु०) जिह्वं गच्छति । गम्+उ । जो टेंग हो चला है । खं । मांय । मदनका वृष । धीरे जलेन बुद्धि (त्रि०) ।
 जिह्वा, (स्त्री०) लेदि अन्वया । जिह्वा णि० । जिह्वाटना है । रमको जापेवाकी इन्द्रिय । रमना । बंन जवान ।
 जिह्वामूलीय, (पु०) जिह्वामूले भव+उ । जीमकी जग हुआ । क और एमे पहिले आपी विमर्गका विद । जिह्वामूलीय ।
 जिह्वारद, (पु०) जिह्वैव रदो दन्तः बर्षणमायनं दन्त जीमकी जिसके चावनेका माधन है । दन्तहीन । राजेके विना । जीमहीसे चावनेहार पक्षी ।
 जीन, (त्रि०) ज्या-बधोहानि । अवस्थाका घटना । बुद्ध होन । कर्तेरि क मन्त्रमारण-शीघंथ । बुद्ध । वृद्ध । बर्णु । चमढेका होना ।
 जीमूत, (पु०) ज्या+क्विप्-जीः तथा जरया मूलो बुद्ध । मू+वाधना+क्व । बुद्धेसे बंधाहुआ । " जयति नम" जो आकाशको जीतता है । "जीयते वायुना वा" जो हरे जीत जाता है । जि+क्व-मू-शीघंथ । "जीम (जलस्य) मूतः (पटवन्थ)" पानीकी गठरी । ने । बादल । मोया । पर्वत । (पहाड) । देवताइ हृष । हर्ष । कोपानकीकृता (बेल) ।
 जीर, (पु०) ज्या+क्व । जीरक । जीर नामी पर्वत । (जो मसालेमें डाला जाता है) । सत्र । ठरकर । भा छोटा ।
 जीर्ण, (पु०) ज्+क्व । जीरा । शैलज (बुद्धि बदि) (न०) । जगन्वित । बुद्धापेवाला (त्रि०) । हर्ष जीर (स्त्री०) ।
 जीर्णग्यट, (पु०) जीर्णः ज्वरः । पुणना ज्वर (बुद्धा) जीर्णग्यट, (त्रि०) (जीर्णानि क्याणि यम्) । जिने पुणने बन् (कर्ते) पहिने हों ।

जीर्णोद्धार, (पु०) जीर्णस्य (भ्रममन्दिरस्य) उद्धारो मवीकरणं यत्र । जहाँ दूटे दूटे मन्दिर आदिबो नया बन-बाया जाय । (संस्कार)

जीर्णोद्यानम्, (न०) जीर्णं उद्यानम् कर्म० त० । पुराना उद्यान (बाग) ।

जीव्, प्राणधारण । प्राणोको पकटना । भ्या० पर० अक० सेट् । जीवति । अजीवीत् । निष् । अजिजीवत्-त् । अजीजिवत्-त् ।

जीव, (पु०) जीव्+क । देहका अभिमानी । आत्मा । मनुष्यो लेहर कीने मर्होतक चेतन । “ प्राणोको हो-त्रस (होत्रको आमेदार) स्वरूपे पारण कर्ताहुआ जीव कहलाता है ” प्राणी । “ बरणे यन् ” जीवनका उपाय “ जीव्+निष्+अच् ” इत्यभिरोध । “ भावे यन् ” प्राणोको पकटना-

जीवगृह-मन्दिर, (न०) जीवस्य गृहं । जीवका घर । इतिर ।

जीवप्राहा, (पु०) जीवन्ते एकात्रि जीव्+प्रह+णञ् । जीते-जी पकडा गया अरारापी ।

जीवघन, (पु०) जीव एव घनो भूतिः (सिन्धवदिल्ल-राकल इव) यस्य । सेंपे छल (जल) की झिलके टुकटे-के समान जीवही जितकी भूति है । हिरण्यगर्भे ।

जीवजीव, (पु०) जीव् जीवयति+क । देखनेसे वृत्ति करता है । वृत्ति । जीवोको । जिलनेहार । चकोर पक्षी ।

जीवय, (त्रि०) जीव्-अय । बरी भायु (उमर) बाला । -य (पु०) जीवन (जिदगी) । राता । कष्ट्यु ।

जीवन, (न०) जीव्यते अनेन । जीव्+न्युट् । जिसे जीते हैं । वृत्ति । जीविका । जल । हैयत्रवीन । हाजामकपन । “ भावे ह्युट् ” प्राणोको धारण करना “ जीवयति ” । निष्+स्यु । पत्र । जीविक औषध । बायु । छोटे फलोंकाटा वृत्त (पु०) ।

जीवनयोनि, (स्त्री०) १ त० । (व्यायमें) इतिमें प्राणोके चलनेका कारण इन्द्रियेणे न आभेयोग्य एक प्रकारका यम ।

जीवनद्वैत, (पु०) १ त० । जीनेके कारण । “ विद्या-दिल्य (करीमगी), वृत्ति (नीकरी) सेवा, औश्रीकी रसा, विपणि (दुकानदारी) वृत्ति, कुसीद (व्याज), इति (खेती), और गील मांगना इस प्रकार जीनेके उपाय हैं ।

जीवन्ती, (स्त्री०) जीव्+भा+शीप् स्तार्थे कन् हत्वे अत इवम् । गुहवी । जीवाहयकाक । बन्दा । इरीतकी । इरीर ।

जीवन्मुक्त, (त्रि०) जीवमेव मुक्तः (लक्षणेसारः) । जिमने जीतेही संसारको छोड़दिया । आत्माको साक्षात् करनेहार । जितने आत्माको जानदिया । प्रारम्भकर्मके नाशतक मुमुक्षुके समान स्वबहार करनेहार । आत्माको आभेवाला जीव । ब्रह्मस्वरूप आत्माको आभेवाला ।

जीवन्मुक्ति, (स्त्री०) जीवत एव मुक्तिः । जीतेही कर्तुं ल भोक्तृत्व (मैं कर्ता हूँ मैं भोक्ता हूँ) से छूटना । जीतेही बंधमे निरुक्ति ।

जीवपत्नी, (स्त्री०) जीवतः पत्नी । वह श्री जितका पति जीता है ।

जीवस्थान, (न०) १ त० । जीवका स्थान । मर्म । टिपी-हुई जगह । जहाँ चोट लगनेसे जल्दी प्राण छूटजाय ।

जीवा, (स्त्री०) जीव्+अच् । जीववतेरच् वा टाप् । धनु-ष्का चिह्न । जीवन्तिका औषधी । दवा । पृथिवी । जल । जीवनका उपाय ।

जीवानु, (पु० न०) जीव्+अनु । अन्न । जीवत । जीव-नकी औषध । मुर्देको जिलनेवाली दवाई ।

जीवात्मन्, (पु०) कर्म० । देहका अभिमानी जीव ।

जीवाधार, (पु०) जीवस्य आधारः । जीवका आधार । आश्रय । हृदय ।

जीविका, (स्त्री०) जीव्+अ+कन्-अत इवम् । जीवनका उपाय । आजीवन । रोजी ।

जीवितेश, (पु०) १ त० । जीवनका मालिक । यम । प्राणोका स्वामी । जीवन । चंद्रमा । सूर्य । विद्याका स्वामी (त्रि०) ।

जीवोपाधि, (पु०) १ त० । जीवकी उपाधि । सान्न, सुयुक्ति और जामव अवस्था ।

जीवोत्सर्गः, (पु०) जीवस्य उत्सर्गः । जीवन (जिदनी) प्राणका त्याग ।

जु, रह-जोसे चलना-येग । भ्या० पर० अक० अनिद । अवति । अवः ।

जुए, स्वाग-भोजना । भ्या० पर० अक० सेट् । इदित् । जुप्रति ।

जुगुप्सा, (स्त्री०) जुग्-निन्दा करना । साथे सन् अ-याप् । निन्दा ।

जुटिका, (स्त्री०) जुट्-संहति-द्वया होय-टाप्-नि० प्रु-तिवा । बोरी । इकडे हुए २ बाठ ।

जुह, बांधना-जाना । दुरा० पर० अक० सेट् । जुगति । अजोरीय ।

जुह्, चमटना । भ्या० आत्म० अक० सेट् । जोतणे ।

जुन्, गति-जाना । दुरा० पर० अक० सेट् । जुनति ।

जुर्, हर्ष सुगहोना । अक० सेवाकरना । अक०-दुरा० आत्म० सेट् । जुपते । अजोषित ।

जुष्ट, (न०) जुष्ट्+क । उचित । जूडा । सेमित । सेवा कियाहुआ (त्रि०) ।

जुह, (स्त्री०) जुहोति अथवा । इ+विप्-नि० । जिसे होन कर्ता है । पलायकी लक्ष्मीका बनावुआ भाषे चंद्रमाके स्वरूपका यज्ञपायिरोध । पत्तोका बनावुआ एक प्रकारका यज्ञका पाय ।

नसाधन, (न०) विष्+विच्+करणे ल्युट् । १ त० ।
आपे वा साधन । इन्द्रिय ।

नानापोद्, (पु०) अण-ऊट्+पञ् । १ त० । निस्वरण ।
भूलना । ज्ञानका जाता रहना ।

नानाभ्यास, (पु०) १ त० । ज्ञानका अभ्यास । “उत्तीको
तोचना । कृत्वा, आपसामे समस्ताना । और उत्तीमें छो
रहना” इत्यादिरूपसे ध्यान करनेयोग्य विषयकी चिन्ता ।

नानिन्, (त्रि०) ज्ञाने अस्य अस्ति+इनि । आपेवाला ।
सामान्यज्ञानवाला । लखवहानी । अगली बातको आपेदाए ।
देवज्ञ । ज्योतिषी (पु०) ।

नानेन्द्रिय, (न०) १ त० । ज्ञानकी इन्द्रिय । सुने देखने
आदि ज्ञानके साधन । धन, धार, नाक, जीभ, लक्षण
इन्द्रिय । अन्त करण । मन ।

नापक, (त्रि०) ज्ञा+विच्+स्यु । जनानेवाला । विराने-
वाला । जतलानेवाला ।-कः (पु०) शिक्षक । विराने-
वाला । आज्ञा करनेवाला । स्वामी । मालिक ।-कं (न०)
(दशमेंमें) किसी नियमके नियत सम्बन्धमें अधिक अ-
र्थको सूचन करनेवाला नियम ।

नापनम्, (न०) ज्ञा+विच्+स्युट् । जतलाना । इतिला-
देना । विखलाना । सूचन करना ।

नापित, (त्रि०) ज्ञा+विच्+क । जतलाया गया । इतिला
रियागया । सूचना रियागया ।

नाप्ता, (स्त्री०) ज्ञा+सन्+भावे अ । आपेकी इच्छा
य, (त्रि०) ज्ञा+कर्मणि यत् । आपेके योग्य । समस्तनेला-
यक । ध्यान करनेयोग्य । प्रशस्त होनेलायक ।

नाया, बूझा होना । क्या० पर० अक० अनिद् । जिनाति ।
अज्ञासीत ।

न्या, (स्त्री०) ज्ञा+भर् । मीर्षा । धनुषका विहा । भागा ।
भूमि । जमीन ।

न्यानि, (स्त्री०) ज्ञा+किल् । जीर्णता । बूझापन । पुन-
नापन । हासि । पुनःमान । मयी । दर्शो ।

न्यायस्, (त्रि०) अविज्ञयेन वदः ईयमुनि ज्ञादेशः । इनको आ
होता है । बहुत बडा । बहुत बूडा । बुडावावाक्य । अविज्ञाय
वदः । शिष्यो कीप् ।

न्युत्, शीति-चमकना । भ्या० पर० अक० सेट् । ज्योतिषि-
ज्योतिष, (त्रि०) वदः इष्टन् । ज्ञादेशः । बहुतही बूझा ।
अतिइष्ट । बहुत अच्छा । अप्रमत्त (पु०) (बडा भई)
बडी रहिन । अवस्थामें बडी बडे भार्खी स्त्री (स्त्री०)
टाप् । गंग । अलक्ष्मी । अकारवां नक्षत्र (स्त्री०) । कीप् ।
“ज्योतिषी” ।

ज्योतिषात्, (पु०) सातम्य ज्येष्ठः । पिताके आगे टापन
हुआ साया जेठ ।

ज्येष्ठवर्षा, (पु०) ज्येष्ठः वर्षः । सबसे ऊंची जाति (साधन) ।

ज्येष्ठानां, (पु०) ज्येष्ठस्य अन्तः । बडेभार्षका भाग (हिस्सा) ।
उत्तमभाग ।

ज्येष्ठाधम, (पु०) ज्येष्ठ आधमो यस्य । सबसे बडे आधम-
वाला । “तीनों आधमोंको अन्नादिद्वारा गृहस्थकी धारण
कर्ता है इस लिये यही बडा आधम है” गृहस्थाधम ।

ज्येष्ठी, (पु०) ज्येष्ठानक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी ज्येष्ठी
सास्मिन् मासे अण् । अपने नामका चांद्रमास । जेठका
महीना ।

ज्येष्ठ्य, (न०) ज्येष्ठस्य भावः प्यम् । ज्येष्ठल । बडापन ।
“विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठ्यम्” इति मनु० ।

ज्योक्, (अव्य०) सम्प्रति । अब । बहुत समय । जल्दी ।
सबाल । प्रथम ।

ज्योतिरिक्, (पु०) ज्योतिरिष्य इत्ति । इग्+अच् । रीच-
नीकी तरह चमकता है । रापोत । टणणा ।-रिक्त्रण ।
आगकी मन्थी ।

ज्योतिर्विन्द, (पु०) ज्योतिषां (स्यांसीनां) गत्यादि कं
वेत्ति । जो सूर्य आदिकी गति (चाल) को जानता है ।
विद्+किप् । ज्योति-शास्त्रको ज्ञानेवाला ।

ज्योतिःशास्त्र, (न०) १ त० । प्रह और नक्षत्र आदि-
की गति और स्वरूपका नियम करनेवाला । इस शास्त्रके
पांच स्वरूप शास्त्रमें कहे हैं “क्षोरा, गणित, संहिता, केरल
और वाजुन” ।

ज्योतिष्यक, (न० १ त०) सूर्यआदि ज्योतिर्विद्य
मण्डल (राशि) । सातार्ष नक्षत्रोंवाला मेघआदि
राशिभौंका चक्र ।

ज्योतिष्, (न०) ज्योतिः । अपिचकृत कृतो ग्रन्थः । ज्योति-
(प्रह आदि) के विषयमें रचागया ग्रन्थ । नि० न वृद्धिः ।
ज्योति-शास्त्र । वृद्धि । तरापी । “ज्योतिर्विं” यती अर्थ ।

ज्योतिष्योम, (पु०) ज्योतीषि स्वोमा यस्य वलम् । ज्योति-
जिगके स्वोम (धन वा स्रोत्र) हैं । सोलह ऋत्विगोंसे
विद करने योग्य यज्ञविषय ।

ज्योतिष्मत्, (पु०) ज्योतिः अस्ति अस्य मनुज् । ज्योति-
वाला सूर्य । ह्रस्वदीप (जमीर) का एक पर्यन । और
मालवप्रणी नामी टणा (बेट) । रात्रि । टण । (योग-
शास्त्रमें) चित्तकी इतिहास एक मेद । (स्त्री०) कीर् ।
ज्योतिषशास्त्र (त्रि०) ।

ज्योतिस्, (पु०) दोनवे दुल्लवेऽनेन वा । पुनः+सन् ।
आदि दूको ज होता है । चमकना है वा जिसके चमकना
जाता है । सूर्य । अग्नि । और मेदीच बूझ । आंखकी
बनीबिडा (पुनली) में देखनेका साधन । परापी ।
नक्षत्र (साध) । प्रकाश । आपकी चमकनेवाला । सबसे
पमकनेवाला परम्य (न०) ।

ज्योत्स्ना, (स्त्री०) ज्योतिः अस्ति अस्यां । न । उपधालो-
पथ । जिसका प्रकाश हो । कौमुदी । चांदनी । चन्द्रमा-
की किरण । ऋप् । ज्योतिवाली रात्रि (स्त्री०) ।
ज्योतिषिक, (पु०) ज्योतिषां शास्त्रं वेत्ति अपीवे वा ठक्
(इक्) । ज्योति (ग्रह आदि) अोंके शास्त्रको जानता
वा पदवा है । दैवज्ञ । भाग्यको जानेहार । ज्योतिषी ।
ज्ञि, अभिभव-दवाना-तिरस्कार करना । भ्वा० पर० सक०
अनिट् । अयति । अज्ञेपीत्,
ज्ञी, वयोदानि । बूढा होना । बुरा० उभ० पञ्जे क्वा० पर०
अक० अनिट् । ज्ञाययति-ते । जिणाति,
ज्वद्, रोग-रोगी होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्वरति ।
ज्वर, (पु०) ज्वद्+थ । अपने नामका एक रोग । बुखारकी
बीमारी । ताप । कस्त । बुखारकी गर्मी ।
ज्वरघ्न, (पु०) ज्वरं हन्ति । हन्+घञ् । जो ज्वर (बुखार)
को मारता है । गिलोय । गुइची । ज्वरका नाशक (त्रि०)
मंजीठ (स्त्री०) ।
ज्वरप्रतीकार, (पु०) ज्वरस्य प्रतीकारः । ज्वरका उपाय
(इलाज) ।
ज्वरघ्निसि, (पु०) ज्वरस्य अग्निः । ज्वर (बुखार) की
अग्नि=ताप (आग) ।
ज्वरान्तक, (पु०) अन्तयति । अन्त+तत् करोति गिच् ष्वुल् ।
इत् । ज्वरको अन्त करनेवाला । नेपालकी नीम । लोहेकी
बनीहुई दवाई । बुखारको दूर करनेवाली दवाई (त्रि०) ।
ज्वरापहा, (स्त्री०) ज्वरं अपहन्ति । अप+हन्+उ ।
ज्वरको दूर कर्ता है । बेल । सौंठ । बिल्वपत्र । ज्वरना-
शक (त्रि०) ।
ज्वरित, (त्रि०) ज्वरः सप्रातः अस्य । तारका० इत्च् ।
जिसे बुखार होगया हो । ज्वरयुक्त । बुखार चढाहुआ ।
ज्वल, दीप्ति-न्वमकना-चलन-चलना । भ्वा० पर० अक० सेट् ।
ज्वलति । अज्जालीत् । ज्वलयति । ज्वलः । ज्वालः ।
ज्वलन, (पु०) ज्वलति । जलता है । समकताहै । ज्वल्+
युच् । वहि । आग । चित्रकका वृक्ष । “भावे स्युद्”
दीप्ति । समकना । दाह । जलना ।
ज्वलनाद्गमन्, (पु०) ज्वलतीति ज्वलनो देरीप्यमान
अस्मा (सूर्यकी किरणोंके पटनेसे) चमकनाहुआ पत्थर ।
सूर्यकान्त मणि । सूर्यकी पियारी मणि । सूरजका पत्थर ।
ज्वरित, (त्रि०) ज्वल्+ञ् । दग्ध । जलाहुआ । पीत ।
चमक हुआ । उमरड । प्रकाशमान । भास्वर । चमकीला ।
ज्वाल, (पु०) ज्वल्+ञ् । अभिहित्वा । आगकी लाट ।
झीलमें टाप् । यही अर्थ । चपकहुआ (त्रि०) ।
ज्वालजिह्व, (पु०) ज्वालः (जिह्वेव) त्रिक्रम्य ।
(अग्नेरुत्पी) बलुधो चटनेसे लाटकी भाई त्रिनकी
जैव है । बहि । आग ।

ज्वालामुखी, (स्त्री०) पीटस्थानविशेष । दुर्गाका भा
“ज्वालामुखायां महाजितो देव उन्मत्तभैरवः । क्षि
निक्षिकानात्री सानो जालन्धरे ममेति” तन्मन्त्र ।
ज्वालामुख, (पु०) ज्वाल एव वर्कं यस्य । लाटकी जि
मुख है । शिवजीका नाम । अग्नि ।
ज्वालिन, (त्रि०) ज्वल्+गिति । लाटवाला । चमकनेका
शिवजी महाराजका एक नाम ।

झ

झ, (पु०) झग-संहति-इकडाहोना-ग्रह-पकडना-पिचानवेंद
रना । ड । झञ्जावात । बढी जोरकी हवा (जिममें बाँ
साथ हो) । बूहस्पति । इन्द्र । ध्वनि । आवाज । मट्ट
खोईगई चीज (त्रि०) ।
झग (गि) ति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । उठी सम
एकवारही ।
झंकार, (पु०) झं इत्यव्यक्तशब्दस्य कारः । झ+पञ् (अ
प्रमर आदिका शब्द । भौरेकी आवाज ।
झंकृति, (स्त्री०) झन् इत्यव्यक्तशब्दस्य कृतिः । झ+कृत्
कांसीआदिकी आवाज ।
झञ्झा, (स्त्री०) एक प्रकारकी ध्वनि (आवाज) । झं
वायु (हवा) सखतहवा ।
झट्ट, (संहति) इकडा होना । भ्वा० पर० अक० सेट्
झटति । अशादीव-असदीव ।
झटिति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । झट । उठीव
एकहीवार ।
झण, (न०)-स्कार, (पु०)-झणदित्यव्यक्तशब्दस्य शा
करणम् । झ+पञ् । क्षमक्षम करना । कड़ण (कड़े)का
दिकी आवाज ।
झग्प, (पु०) झग्+पञ् झं इति कृत्व पतति । पञ्+ए ए ।
बलके साथ ऊपरसे नीचेको गिरना । कूटना । (त्रि०)
“ झग्पा ” ।
झर, (पु०) झग्+अप् । निर्गमं । झरना । झरनेसे निकल
जलका प्रवाह ।
झर्च (छं) झं, कूटना-झिडकना । मुदा० पर० सक० हे ।
झर्चे (छं) इति ।
झर्जर, (पु०) झर्ज+अर्ज् । (झर्ज) वाजेका मेरा । हो ।
कल्पियुग । एकनद । बाजा ।
झरक, (पु० न०) झर्ज+अणुल् वृ० । कांसीका बाजा । ए
प्रकारका बाजा । मंजीराह ।
झरुरी, (स्त्री०) झर्ज+अर्ज् । वृ० । एक प्रकारका कल
हृद । मका । गीला । डोल ।
झरू, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भाषि । मारपी ।
अभरीत् ।

हायू, सेना-संरचना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । शयति-न्ते ।
शायायौन् ।

हाय, (पु०) हायते कर्मणि च (अ) । मत्स्य । मण्ड ।
मण्ठी । मीनराशि "भावे च (अ)" । ताप । गर्मी ।
धूप । बन (न०) ।

हायकेतु, (पु०) हायो (मीन-) (मकरः वा) केतुः यस्य ।
जिनका निधान (हाँडा) मण्ठी हो । मदन । कामदेव ।
"हायकेतन" आदि ।

हायोदरी, (स्त्री०) हायस्य उदरे इव उदरे यस्याः-ब०स० ।
सालयतीका नाम । व्यासमाता ।

हाट, (पु०) हाट्+णिच्+अच् । बेलोते ढक्काडुआ स्थान ।
कान्ता । जंगल । मन (फोप वा जयम) आदिका घोना

हामक, (न०) हाम्+कर्मणि षुल् (अक) । बहुत पची-
हुई ईंट ।

हाहिनी, (स्त्री०) हृ० । सिंगिनीका पेठ । उल्हा जुआती ।

हाहिली, (स्त्री०) हाहिति । हिल्+अच्+हृ० । एक प्रकारका
बीया । हाँपुट ।

हाण्ट, (पु०) हाण्ट्+अच्+हृ० । लम्ब । गुल्म । हाथी ।
झू, झुडा होना । दिवा० पर० अक० सेट् । हाँपति । असा-
रीत् । हाप ।

ज

ज, (पु०) ज (बँड) । टुक । विरछे जाना । गायन ।
गाथा । परेर जनि । जुखणन ।

ट

ट, (पु०) टल्+ट् । बामन । बीना । पाद् । पाँव । निम्न ।
नुपचाप । नरेली खोपरी । टंकार (न०) ।

टक्, बांधना । पुण० उभ० सक० सेट् । इतिट् । टह्यति-न्ते ।
भटटह्यन्त ।

टक्, (पु०) टक्+णच्+अच् वा (अ) । कोप । गुस्सा ।
राजाना । कोप । तरवार । और परपर पाठनेका अन्न
(औजार) । चार मासेका माप । जाँप । रात्रिज । रंवा ।
अईंकार (पु० न०) ।

टक्क, (पु०) टक्कते षम् (अ) संज्ञायां कन् । रजनमुदा ।
बाँसीकी मोहर । हया ।

टङ्कार, (पु०) टंङ् इति अल्पकारन्दस्य कार् । ह्+णच् (अ) ।
टंकोर । एक प्रकारकी आवाज । पत्रुपने भिन्ने चञ्जनेकी
आवाज । विम्वज्यनि ।

टङ्गन (पु०) टङ्गि+णच् (अन्) एक प्रकारकी सार । मुहावा ।

टिटि, (हि) भ, (पु०) टि टि (हि) इति अल्पकारन्दं
भाषते । भ्ण्+ङ् । टि टि शब्द करनेवाला । टिटहण ।
"सायें कन्" यती अर्थ ।

टिप् मोदन-प्रेरणा करना । चलाना । पुण० उभ० सक० सेट् ।
टेपयति ते ।

टिप्पनी, (स्त्री०) टिप्+किप् । टिप्पण्यते ताप्यते अच् ।
अर्थपोतक टीका ।

टीक, गति-जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । टीकते ।
अटीकित ।

टीका, (स्त्री०) टीक्+क । कठिनपदोंका वर्णन दिखाने-
करनेवाली कृति ।

ठ

ठ, (पु०) मण्डल । चन्द्रमाका विम्ब (स्वरूप) । सूना ।
महेश्वर । महादेव । बरी भाषाज ।

ठमुद, (पु०) ठाडुर । देवताकी प्रतिमा (मूर्ति) । ब्राह्म-
णोंकी एक उपाधि ।

ड

ड, (पु०) डी+ड (अ) । बाइबाभि । समुद्री भाग ।
सम् । भावाज । चासपसी । शिवरी ।

डमण, (पु०) डम् इति शब्दं इयति । ऋ+उच् । टीह ।
एक प्रकारका बाजा । काराधिक योगिओंके बमानेलायक ।
चमत्कार ।

डहक, (न०) बाँत आदिका रवाडुआ पाय । दम ।

डवित्य, (पु०) काष्ठमयण्य । लकड़ीका बनाहुआ हिरन ।

डाकिनी, (स्त्री०) डाकानां समूह इति । डाकीके पापंद
गणोंमेंसे एक ।

डामर, (पु०) शिवरीसे च्छायाका लम्बराज । भयानक ।
तांकनाक ।

डिचिडम, (पु०) डिचि इति शब्दं सिनेति प्रकृतयति
सि+ङ् । ओ डि डि ऐसे शब्दको निकालता है । एक बाबा ।
इसविशेष ।

डिचिड (स्त्री) र, (पु०) डिचि इति शब्दः कश्चि शब्द रः
(पहिले पदको छेप हो जाता है) समुद्री केन (भाग) ।

डिर्य, (पु०) लकड़ीका हाथी । रजामरूप, जवान, विद्वान्,
शुद्ध, सम्पूर्णताओंके अर्थको जापेदार कोई पुरान ।

डिप्, इक्या होना । पुण० उभ० परे भ्वा० आ० अक०
सेट् टेपयति-न्ते । सेपते ।

डिच्, प्रेरण-चलाना । पुण० उभ० परे भ्वा० पर० अक०
सेट् । इतिट् । डिम्भयति-न्ते । डिम्भति ।

डिम्, शिवन-मारना । भ्वा० पर० अक० सेट् । डेनति ।
अडेमीर ।

डिम्ब, (पु०) डिभि+णच् (अ) । टिपु । कथा । अज ।
भयानक शब्द । दम ।

डिम्भ, (पु०) डिभि+अच् । मूर्ध । कन् । "सायें कन्"
यती अर्थ ।

डी, आकाशमें जाना । उडना । भ्वा० आ० अक० सेट् ।
उपते । अउभिट् ।

डीन, (न०) डी+भावे क् । पक्षिओंकी गति (चाल) ।
उडान उडना ।

डुण्डुभ, (पु०) डुण्डु+भण्-भावे+ड । (डोंडा) एक
प्रकारका साँप ।

ढ

ढ, (पु०) ढका । बाजा । कुत्ता कुत्तेश्री पूछ । नियुंण ।
गुणहीन । ध्वनि । आवाज । साँप ।

ढङ्गा, (स्त्री०) ढक् इति कायति । कै+क । एक बाजा ।
बटा वा दूरा बाजा । यशका बाजा ।

डुण्ड, अन्वेषण (ढूँडना । तालाश करना । खोजना) भ्वा०
पर० सक० सेट् । डुण्डति ।

डुण्डि, (पु०) डुण्ड+इन् । गणेश (काशीमें प्रसिद्ध डुण्डि-
राज) ।

डौक, प्रेरण । चलाना और जाना । भ्वा० आत्म० सक०
सेट् । डौकते । अटौकिट् ।

ण

(इस "ण" अक्षरके साथ प्रारम्भ होनेवाला ऐसा शब्द कोई
नहीं कि जिसे संस्कृतमें अधिक बोलचालमें लतेहों ।
यहुतसे यातु जो धातुपाठमें "ण" के लिखे जाते हैं
वास्तवमें वे "न" के साथ प्रारम्भ होते हैं । "ण" के
साथ लिखनेका कारण यह है कि जिस्ते जाना जाय कि
"न" कईएक उपसर्गों [प्र-अन्तर आदि] के पहिले आनेसे
"ण" के साथी बदल जायगा ।

ण, (पु०) णख-जाना-ड (अ) टृपो० । ज्ञान । हल्म ।
निर्णय । फैसला । भूषण । जेवर । जल । पानी । जलका
स्थान । पुत्र आदमी । शिवजी । नाहिंकी आवाज । देना ।
बखरीया ।

णट्, नाचना-बताविके साथ नटका कामकरना-मारना । भ्वा०
पर० अक० सेट् । नटति-प्रणटति । अनाटीत्-अनटीत् ।
(मारना) प्रनटति ।

णद्, अन्वयक शब्द । गुम आवाज करना । भ्वा० पर० अक०
सेट् । नदति । प्रणदति ।

णश्, अदर्शन । छिपाना । नाश होना । रिवा० पर० अक०
सेट् । नदति । प्रणदति । अनेशन्-अनशत् । प्रनटः ।

णद्, बाँधना । रिवा० उभ० सक० अगिट् । नशति-ते ।
प्रणदति-ते । अनाग्यात् । अनद् ।

निद्, शोषण । छाक करना । झरो० उभ० सक० अनिट् ।
नेनेकि । प्रनेनेकि । नेनेके । अनिन्द् । अनैशीत् ।
अनिक् ।

णित्, चूमना । अदा० गठ० सेट् । इतिट् । निने । प्रनेने ।
अनिशीत् ।

णी, प्राणण -गुंजाना -जेजाना । भ्वा० उभ० द्वि० क्तिट् ।
नयति । प्रणयति । अनणीत् । अनेट् ।

णु, स्तुति । तारीफ करना । अदा० पर० गठ० वेट् । नीते ।
प्रणाति । अनाणीत् । अनणीत् । मुजुविद ।

त

त, (पु०) तक् -नादना-हरना । वाड (अ) चोर । दू ।
पूछ । गोद । म्लेच्छ । रत्न । शिवायकी पूछ । छाँट ।
लडाका । बंचल और पुष्प (न०) ।

तक्, दोस्ती-दुस्ती होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इतिट् ।
तइति । अतइत् ।

तत्र, (न०) तक्+रक् । चौथा भाग जलके संयोगसे मगधुका
दही । छाछ । लस्सी ।

तत्रकूर्चिका, (स्त्री०) [छाना] । पकेहुये गन्ने हुने
लस्सीके संयोगसे बनीहुई आमिषा ।

तक्ष, कार्य । कमजोर करना । काटना । छीलना । भ्वा०
(पक्षे) स्वा० पर० सक० वेट् । तक्षति-तक्षोति । अ-
शीत्-अताशीत् । (शिटकना) । संतक्षति ।

तक्षक, (पु०) तक्ष+श्वल् । तखान । कारीगर । विपद्गर्त ।
कश्यपका पुत्र । एक नायका नाम ।

तक्षन, (पु०) तक्ष+कनिन् । विश्वकर्मा । तखान । विक-
नामी नक्षत्र (तारा) ।

तक्षशिला, (स्त्री०) सिंधदेशमें एक नगरी ।
तगर, (पु०) (तगर) एक वृक्षका नाम ।

तङ्गन, (न०) तकि+त्युद (अन) । डु लसे जीना । इट् ।
तच्छील, (त्रि०) तद् शीलं यस्य । उस समाजका
कोई जन ।

तङ्ग, सिकोडना । रथा० पर० सक० वेट् । तकि ।
अतजोत् । अताहीत् ।

तद्, ऊंचा होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तटति ।
अताटीत्-अतटीत् ।

तट, (त्रि०) तद्+अच् । कूठ । किनारा । तीर । इ
आदिका कंडा ।

तटस्थ, (त्रि०) तटे तिष्ठति । स्था+क । तीरका । कि
नारेका । पारका । स्वरूपसे भिन्न विशेषण । भयत
उदासीन पुरुष ।

तटाक, (पु०) तटं अकति । अक्-टेडाजाना+अण् (अ) ।
धोडेपानीवाला तालाब ।

तटाग, (पु०) तटं अगति । अण्-टेडाजाना+भण् (अ) ।
तालाब (तडाग) ।

तटा (अ) पात, (पु०) । दापीने संदको ऊंचे बट-
रना । कपटीया । किनारेपर दापीने संदके चढना ।

तटिनी, (स्त्री०) तट्+अति अर्थे इति । नदी । द्वाी ।
 तडाग, (पु०) तट्+घोट लगाना । नि० । तालाब ।
 गहर तालाब । हरिण पकड़नेका जाल ।
 तटिद्, (स्त्री०) तट्+यति मेघम् । जो बादलको फटकारती
 है । सुरा० तट्-नि० । विजयी ।
 तटित्यत्, (पु०) तटित् अति अत्य मनुष्य मको व ।
 विजलीबाला । बादल ।
 तटिद्गर्भ, (पु०) तटित् गर्भे मत्स्य । विजयी जिसके गर्भ
 (मत्स्य)में है । बादल । मेघ ।
 तटिह्वता, (स्त्री०) तटित् लता इव । विजयी जो बेलके
 स्वरूपमें है । टीक्ष्ण विजयी ।
 तटिह्वेखा, (स्त्री०) तटित् लेखा । विजलीकी रेखा (लकीर) ।
 तटिन्मय, (त्रि०) तटित्+मयद् । विजयीबाला । विज-
 यीसे भरा हुआ ।
 तण्डक, (पु०) तटिन्+शुल्क (अङ्क०) । ममोला । द्वाग ।
 ऐसा बरान कि जिसमें सम्यक् (बहुत शब्दोंका एकसाद
 हो जाना) बहुत हो । फरकी लकड़ी और कृशका स्कन्ध ।
 मायावी । फरेवी । बललहरनेवाला जन (त्रि०) ।
 तण्डुल, (पु०) तटिन्+उल्लृप् । धानोंका सार । चावल ।
 सोहरहित धान ।
 तण्, (अन्व०) टन्+किप् । हेतु । इसलिये । इसकारण ।
 तत, (न०) टन्+क् । बीणा आदि बाजा । वायु । हवा
 (पु०) । धिगुआ । फँसलुआ (त्रि०)
 ततम्, (त्रि०) तट्+कृत् । बहुनोंमेंसे एक । "ततर" ।
 दोनोंमेंसे एक ।
 ततस्-ततः, (अन्व०) तट्+तण्डि । उस पुरष वा स्त्रीसे
 था उस स्थानसे । बढ़ाये । उसके अनन्तर ।
 ततस्त्य, (त्रि०) अन्वयसे स्पर् होना है । तत्रभवः ।
 वहाँ होनेदारा । वहाँका ।
 तति, (स्त्री०) टन्+किन् । धेणी । बतार । सपूह । फँसना ।
 तत्काल, (पु०) तः कालः । वह समय । वर्तमानकाल ।
 होरहासमय ।
 तत्कालधी, (त्रि०) तस्मिन् योग्ये समये वीर्यवियोगः ।
 जिसकी ठीक समयपर बुद्धि कुरे । तिरतर आई विप-
 तिको दूर करनेवाली अचल ।
 तत्किञ्च, (त्रि०) केवलं बिना किया कस्य । तनराइके
 बिना काम करनेदारा ।
 तत्क्षण, (पु०) स पारो क्षणः । उठी बक । छट्टी ।
 सय । जस्तीवे ।
 तत्स्य, (न०) टन्+किप् । सतो भावः । तस्य भावः ।
 स वा तलोपः । सबाई । स्वरूप । अस्तनी दाकल ।
 परमात्मा । प्रज्ञापन । नाचना । बजाना । गाना । बित्त ।
 बट । छोटके २५ पदार्थ ।

तत्स्यज्ञान, (पु०) ६ त० । यथार्थज्ञान । सप्ताज्ञान । प्रज्ञा-
 ज्ञान । प्रज्ञान ज्ञाना ।
 तत्स्यधिद्, (त्रि०) तत्त्वं वेत्ति । ठीक २ जानता है ।
 दार्शनिक । प्रज्ञके वास्तविक स्वरूपको जानेदारा ।
 तत्स्यभियोगः, (पु०) तत्त्वेन अभियोगः । यथार्थ अन्वय ।
 सची मालिवा ।
 तत्पर, (त्रि०) तत् परे (उत्तम) यस्य । तहत । उग-
 में गया । उठीमें फस गया ।
 तत्परायण, (त्रि०) तदेव परे अग्रयं गच्छ (णल) ।
 वही जिसका ब्रह्म आश्रय है । तदानक । उठीमें निरंतर
 लगाहुआ ।
 तत्पुरय, (पु०) मुख्य पुरय । परमात्मा । समाप्तोंमेंसे
 एक । (जिसमें पहिला पद दूरसे पदके अर्थको जताना है)
 जैसे "राजपुरयः" ।
 तत्पुरय, (पु०) तः पुरयः । वह मुख्य पुरय वा परमात्मा ।
 एकप्रकारका समाप्त जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है ।
 तत्र, (अन्व०) तस्मिन् बाह्योऽन्तर् प्रत् । उस समय । उस
 जगह । वहाँ ।
 तत्रत्य, (अन्व०) तत्र भवः (अन्वयसे तत्) । वहाँ होने-
 वाला । वहाँकी चीज ।
 तत्रभवत्, (त्रि०) तः पूर्यो भवान् (प्रथमाके अर्थमें
 प्रत्) कर्म० । पूर्य । पूजा करनेके ल्यक् । दूर
 (जो आसोंसे परे हो उसके लिये बोला जाता है । इत्यन्तरी
 जाहिर कर्ता है) ।
 तथा, (अन्व०) प्रकार अर्थमें यान् (था) । साम्य ।
 बैसेही । पहिलेकी भांति मानलेना । मिथय । उठी तौरपर ।
 तथाकृत, (त्रि०) तथाकृतः इम प्रकार किया गया । बैसे
 किया हुआ ।
 तथागत, (त्रि०) तथा गतः । ऐसी दशामें हुआ । ऐसी
 हालमें प्राप्त हुआ ।
 तथागुण, (त्रि०) तथा गुणाः यस्य । बैसे गुणोंवाला ।
 तथाच, (अन्व०) पहिले कहेहुए अर्थको पदा करना ।
 उगपरसी । जैसा कि ।
 तथाकृप, (त्रि०) तथा कृपं यम् । बैसे कृ (दाकल) वाला ।
 तथाविध, (त्रि०) तथा विधा यस्य । बैसे प्रकारवाला ।
 इस तरहवाला ।
 तथावम्, (न०) तथा ख । बँपारन ।
 तथादि, (अन्व०) निदर्शन । मसाल । रटान । प्रतिद
 है । जैसा कि ।
 तथ्य, (न०) तथा । तत्र साधु+यत् । सत् । सब ।
 सबका (त्रि०) ।
 तद्, (त्रि०) टन्+अति । पहिले कहेहुआ । बुद्धिमें
 दूरगुआ । निवार करनेल्यक् । दूरका विषय । द्रव
 (न०) "भो तस्यदि" गीता ।

तदनुन्तर, (प्रि०) ताम्ना अन्तरः । उसके अन्तर
 (पीठ) काला ।-रं (अञ्ज०) उसके आला । इगार.
 तदर्थ, (प्रि०) तम् अर्थः । उसके प्रयोजनकाला । उगकाग.
 तदर्थ, (प्रि०) तम् अर्थः । उसके योग्य । उसके लयक.
 तदर्थ, (अञ्ज०) बर्तक.
 तदर्थस्य, (प्रि०) गा अवस्था यम् । उस दशाप्रकार
 (हालत) काला.
 तद्वा, (अञ्ज०) तस्मिन् काले दान् । उस समय । तब ।
 उगवक.
 तद्वात्मन्, (प्रि०) उ अन्ता यम् । त्रिगका बहु मन्त्र
 हो । उस रूपकाला.
 तद्वातीम्, (अञ्ज०) तस्मिन् काले । तद्+शानीम् ।
 तब । उगवक.
 तदेकचित्त, (प्रि०) तस्मिन् एकं चित्तं यम् । उगमें एक
 चित्तकाला । उसीपर एक चित्त लगाये हुए.
 तद्गत, (प्रि०) तस्मिन् गत आसक्तः । तत्पर । एधमन
 होनेसे वहीमें लगा हुआ.
 तद्गुण, (पु०) अर्थात्तद्गुणविशेष.
 तद्गुणसंविमान, (पु०) तद् (बहुनेहं) गुणस्य
 (विशेषणस्य) संविमानं (विशेषणपरतन्त्रयेण बोधनं)
 यत्र । व्याकरणमें बहुव्रीहिसमासका एक भेद । जहां
 विशेष्यके आधीन होकर विशेषणका ज्ञान हो जैसे "उन्म-
 कर्षणमानय" यहां गुणीभूत कर्षका भी जाना है.
 तद्धन, (प्रि०) तदेव धनं यस्य । जिसका वही धन है ।
 कृपण (सूत्र) । (इसे जितना मिटे उसे थोडा समझ-
 कर अपनेमें उतनेही धनका अविमान करता है) .
 तद्धर्मन्, (प्रि०) किसी और उद्देश्यके बिना त्रिगका
 वही धर्म हो "यद् धनना धर्म है" ऐसा समझकर
 धर्ममें लगा हुआ जन.
 तद्धित, (पु०) ऐभ्यः हितः । उनके छिये हितकारी ।
 व्याकरणमें नामके आगे लगनेवाले प्रत्यय.
 तद्धत्, (अञ्ज०) तेन कृत्यं वा कृत्या वा चेत् किया ।
 उसके समान कियाकाला । उसके समान । "तद्धत्
 शिवस्य विमुता."
 तद्, फटना-विसृज्य होगा । उम० सक० सेह् । तनोति-
 तनुते । अतानीन्-अतनीत् । अतत-अततिट्.
 तनय, (पु०) तनोति कृत् । तन्+क्यन् (अय) ।
 जो कुछको फटाता है । पुत्र । बेटा । लटकी । बैठ ।
 जीवीकंद (श्री०) .
 तस्मिन्, (पु०) तनोमांशः स्मनिच् । छोटेका होना ।
 सुतारं । कार्वं । बारीक । नाटुकावा.

तनु, (श्री०) तन्+उ । वेत । शरिर । मुँह । मूत्र
 (वा उद) । मोश । शिरा । पुत्र । बारीक । गूना ।
 (शिरां वा शीर्) तनी-तनु.
 तनु (नू) त्, (पु०) तनोः तन्वा वा तनुते । म-
 उ । शरीरमे काना । पुत्र । बेटा । लटकी (श्री०) .
 जो देखने उगान हो (प्रि०) .
 तनुच्छाय, (पु०) तनी छाया यम् । शिरा से
 छाया हो । बुरक कान । शरीरमे छाया वा छँ ।
 १ त० । (श्री० न०) .
 तनुत्पन्न, (प्रि०) तनुं उत्पत्ति । शरीरको छोटेका
 मरनेकाला.
 तनुज, (पु०) तनोः वा तन्वाः जायते । शरीरमे उत्प-
 न्न होता है । पुत्र । बेटा ।-जा (श्री०) पुत्री । बेटे.
 तनुप्र, (न०) तनुं (देख्) प्रायते । प्रै+क । जो देख-
 को बचाना है । बचव । त्रिग । लुट् । "तनु-
 यही अर्थ.
 तनुमन्त्रा, (श्री०) तनो (देख्य) मन्त्र इत् । न-
 शरीरको पूंछनी है । नाशिका । नाक । बनें । ई
 धांछनी.
 तनुभृत्, (पु०) तनुं (देख्) विभर्ति । (आननेन न-
 न्यते) भृ+क्ति । जो शरीरको अपना मनछेता है
 जीव । "वा दुम्लना तनुभृतां".
 तनुपार, (न०) तनुं (देख्) वृणोति । इ+अन् । दा-
 जो शरीरको ढांक लेता है । बचव । बिरह । सन-
 तनुस्, (न०) तन्+उत्ति (उप्) । देख । शरीर । प्रि-
 तनुनपात् (द), (पु०) तनुं न पालयति । पद+कि-
 क्ति । जो शरीरको न पालेदे । अग्नि । आग । त-
 रदकरनी खायेहुए अन्नको पचानेसे यह देखे कि-
 नहिं देती । तनुं न पाति (रथति) । पा+अन् ।
 शरीरको न बचावे । वहि । आग । (यह शरीरको न
 देती है) । (पत्ते) तन्वा ऊन कृषं पाति तनुं इत्
 तन् अति । अद्+क्ति जो शरीरको बचावे (श्री०) ।
 आग । वहि । आग.
 तनुपह, (न०) तनौ रोहति । र्+क । जो शरीर
 उगता है । रोम । रोम । लूं । पशुओंके पर.
 तन्नु, (पु०) तन्+तनु (तु) । प्राद । एधमन
 पानीका जीव । अथवा । सन्तान । अंडर । हा-
 सूत । तान । तन्द.
 तन्नुकीट, (पु०) तन्नुपादकः कीटः । सूत्रको निर-
 काला कीट (कीटा) । रैधनी कीटा.
 तन्नुनाग, (पु०) तन्नुवत् शीघ्रः नागः । बजा उंग नद (श्री०)
 तन्नुनाम, (पु०) तन्नुः नामो अस्व । अच् स० । शि-
 नाममें सूत हो । दना । मकरी.

तन्तुनिर्यास, (पु०) तन्तुः इव निर्यासः मस्य । जित्तीची गोद तातोके समान हो । सालका इव ।

तन्तुपर्यन्त, (न०) तन्तोः महोपवीतस्य दानरूपं पर्यं । महोपवीत (जनेऊ) के देनेका पर्यं । धावन (धावण)-धी पूर्वमा । (इग दिन धामनवीको जनेऊ दान करनेका उत्सव रिया जाता है) ।

तन्तुर-ल, (न०) तन्तुः प्रियते अस्य । र । लच् वा । तांतवाला । मृणाल । कमलकी टण्डी । भे.

तन्तुम, (पु०) तन्तुवद् भावि । तांतकी तरह चमकता है । सरसोका बीज । बरत । बरछा । बपेटा ।

तन्तुपर्यन्त, (पु०) तन्तु-पर्यन्तं पर्ययति+पर्य+तन्तु । बंताओ बटानेवाला । पिन्नु । शिव ।

तन्तुप्रायं, (न०) तन्तुमिधं प्रायं । तांतोंवाला बाजा । शितार । मीन ।

तन्तुपाप, (पु०) तन्तुव् वयति । वन्+अण् उच् । ओ तांतोंको बोना है । तन्तुपाप । जुलहा । जुमेवाला ।

तन्तुपाप, (पु०) तन्तुव् वयति । वन्+अण् । ओ तांतोंको बुनता है । जुलहा । जातिविशेष ।

तन्तुविग्रह, (श्री०) तन्तवः विग्रहे यस्याः । जितके शरीरमें तांतें हों । कदवी । बेला । इसकी सालमें बहुत सत प्रकट होते हैं ।

तन्तुचाला, (श्री०) तन्तुनां वपनाय चाला । तांत पु-मेका पर । सत जुमेका पर । जुलहाका पर ।

तन्तुसन्तत, (त्रि०) तन्तुनिः सन्ततं (ध्यातं) । ओ तांतोंके धिराहो । स्थूलवस्त्र । धीयागया कपडा ।

तन्त्र, (न०) तन्+ङ् । शिञ्जन्त । केशला । औषध । दवाई । बुद्धम्भ (बुनवा) का कार्य । प्रधान । बजा । जुलहा । इसके आधीन होकर करना । परिच्छद । पौशाक । देण्ड । सबब । कार्य (कार्य) को सिद्ध करने-हाथ । संतु । तांत । अपने राज्यकी चिन्ता । परिजन । नौकर । चाकर । तन्तुपाप (जुलहादेवी सलवाई) । प्रबन्ध । बन्दोबस्त । धापप । बसम । ली । धन । पर । सोनेका धापन । बुल । बेदकी एक शाखा । वेदवि शास्त्र । अपने नामसे प्रसिद्ध शिवजीका बहाहुआ धात्र ।

तन्त्रक, (न०) तन्त्रात् अचिरात् अर्थात्+कन् (क) । जल्दी शिवागया । महीन बख । मया कपडा ।

तन्त्रावाप, (य), (पु०) तन्त्रानि (तन्तुव्) वप(य)-ति । वप्-भा-वी+अण् । उप्० । तन्तुवाप । जुलहा । तांतों ।

तन्त्रिका, (श्री०) तन्त्रयते । तन्त्र+ई (टि) स्तौर्त्तं कन् (क) । शिलेय ।

तन्त्री, (श्री०) तन्त्रि+ई । शिलेय । एक प्रकारकी बीजा-शितार । शरीरकी । खडी । एक मरी । एक जवान औरत ।

तन्त्रा, (श्री०) तन्त्रि+अ । आलस्य । ऊपना । नींद । जागोमीदी । प्रमीला ।

तन्त्रालु, (त्रि०) तन्त्रि+आलुच् । निद्रापीड । बहुत सोने-वाला ।

तन्त्रित, (त्रि०) तन्त्रा जाता अस्य-तन्त्रा+इत् । जिते ऊप आगई है । आलसी ।

तन्त्रिन्, (त्रि०) तन्त्रा+इत् । आलसी । मुह । विप्रान्त । घकाहुआ ।

तन्त्रय, (त्रि०) तदेव । मयद् । वही । उसी स्वरूपको पहुंचा । अनेद । वही । तद्रूप ।

तन्त्रय, (त्रि०) तद्+मयद् । उसका बनाया हुआ । उस स्वरूपवाला ।

तन्त्राय, (त्रि०) तदेव । तदात्मक । वही । वही एक-लका । शब्द-वर्ण-स्व-रस और गंध ।

तन्त्री, (श्री०) तनु+त्रीच् । एक प्रकारकी वेत । कृशात्री । नाजक श्री । क्षीणमन्या । पतनी बभरवाली श्री । एक प्रकारका छन्द ।

तप्, दाह-जलाना । भ्या० उभ० राक० सेट् । तपति-वे । अता-पीट-अतपीट । अतपिच ।

तप, (पु०) तप्+अच् (अ) प्रीप् । गरमी । जेट और हावका महीना ।

तपःश्रेयस, (पु०) तपसः श्रेयसः । तपसाका सुःख ।

तपती, (श्री०) तप्+धातु नि० । छाया नामवाली सूर्यकी श्री । एक मरी । सूर्यकी कन्या (जितके योगसे बुध तापल बहे जाते हैं) ।

तपन, (पु०) तप्+तु (अन्) धृच् । ताप । गरमी । अज्ञातकर्म । एक नरक । गर्मीका मौसम (ऋतु) । आकका वृश । सूर्यकात्मनि ।

तपनतनय, (पु०) ६ त० । वम । यमुना और शनी (जंरी) इश (श्री०) ।

तपनमणि, (पु०) तपनस्य मणिः । सूर्यमणि ।

तपनारमजा, (श्री०) तपनस्य=सूर्यस्य आरमजा । सूर्यकी पुत्री । यमुना ।

तपनी, (श्री०) तप्+तु (अन्) धीच् । मोदावरी मरी ।

तपनीय, (पु०) तप्+अनीयद् । खरी । शोना । तपने-हाथक । खार्थे कन् । वही कार्य ।

तपत्रयण, (न०) तपसः त्रयणं । तपसाका करना । तपसा अभ्यास ।

तपस्, (पु०) तप्+अणुच् । तपसा महीना । सिद्धि ऋतु । जनदेवके उपरस लोक । आत्येवमः शोचण । अपने आश्रयका मिश्रित पद । वायुवच धारि धर्मे (ज्योतिषमें) ऋषे वचन वर ।

तमोभिद्, (उ०) (तमः निगतिभिद्+किप्) अपेरेको
कादनेवाद्य । राघोत । उटाना ।

तमोयिकार, (पु०) तमयां विकारः । अपेरेका विकार ।
व्याधि । बीमारी ।

तमोवृत्, (त्रि०) तमताहन । अपेरेसे दका हुआ । वि-
गमा हुआ । बादलसे दका हुआ । क्रोधसे भरा हुआ ।

तरधु, (पु०) तरं (गति-भावे वा) क्षिप्येति । ओ राधेको
रोकता है । पशुओंको खानेवाला छोटा मैकिया ।

तरद्ग, (पु०) तु+अत्रच् (अत्र) । उर्मा । तहर । बाधसे
हिलकर पानीका नीचे ऊपर उठलना ।

तरङ्गिणी, (स्त्री०) तरङ्ग (आस्त्रयें) इति (इन्)+ङीप्
(ई) छद्गोवाली नदी । दर्वा ।

तरङ्गित, (त्रि०) तरङ्ग- सञ्जातः अस्त्व । इत्वच् । जात-
तरङ्ग । जिससे लहर हो । छद्गीत्य । छद्गोवाद्य । बंबल ।

तरण, (पु०) तु+अण् (अण) मेळक । मेळ । बोझ ।
आर स्वयं । भावे ल्युट् (अण) पारजाना । तरना (न०) ।

तरणि, (पु०) तु+अणि (अणि) । सुवं । डोंग । आकडा
रुप । किरण और ताँबा (मा) । बेटी । नौका । जीनी-
बंद (स्त्री०) ।

तरंत, (पु०) तु+अच् । समुद्र । भारी मेघका धमाधम व-
सना । मेटक । एक दैत्य । राक्षस । मरु । सी (स्त्री०)
नौका । पिन्नी ।

तरतम, (त्रि०) न्यून (कम) अधिक् (त्रियासा) भाव-
वाद्य अर्थ । जो शब्दके अन्तमें समाप्तिसे दोसेसे एककी
(तर) और बहुसेसे एककी (तम) अधिक्ता अताने-
वाले प्रलय ।

तरपण्य, (न०) तरस (नदारिधारयानस्य) पथं (शृण्वं) ।
नदी आदिके पार जानेका मामूल । नदी आदिके पारजानेके
लिये देनेवायक पत्रिय (मात्स्य) ।

तरल, (पु०) तु+अलच् । शारके बीचकी मणि । हार । और
तल । चपल । बानी । निम्नार । घमडीत्य । बर्दा हुआ
पदार्थ विरही । कम्पी । मय । छापन (स्त्री०) ।

तरलनयना, (स्त्री०) तरले नयने बस्या । व० स० । बंचल
नेत्रोक्ती ।

तरलिन, (त्रि०) तरल+इत् । बंचल । बांधनेवाला ।

तरवारि, (पु०) तरं (धनुर्णा गति) वारवति । इ+विच्
(इ)+इत् । ओ धनुर्भांसी गतिसे रोकता है । एक
तरवार ।

तरस, (न०) तु+असृच् (असृ) । यत् । पैग । तेरी ।
अच्छीसे जाना । योग । छीर । बनर ।

तरसा, (अथ०) क्षति । बहुत जल्दी । हार ।

तरस्विन्, (पु०) तरस्+ (अस्त्रयें) भिनि (भिन्)
बाधु । हवा । गरद । रोज चलनेवाला घर (बहादुर)
(त्रि०) ।

तरि-री, (स्त्री०) नौका । श्रेणी । बेटी । कपडेकी पिटाही ।
कपडेका पत्रा ।

तद (प) खण्ड, (पु०) तदणां समूहः तद+य (रा) ष्ट ।
इशोंका समूह । इशोंके टुकडे ।

तर, (त्रि०) तु+भावे अच् । सोंधनेवाला । तरनेवाला ।
जीतनेवाला ।

तरण, (पु०) तु+ ल्युट् । नौका । किरती । स्वयं ।

तरण, (पु०) तु+उजन् (उज) । एण्डका वृत्त । मोटा
पीरा । कुम्भपुण्य । एक प्रकारका फूट (न०) । जलन (नया) ।
जवान (त्रि०) । फिर उदयहुआ । गर्म । बोलल । ताजा ।
सयः मरीके सेलका पौदा । जवान बोल (स्त्री) ।

“इदस्य तरणी विपम्” हि० प० ।

तरणज्वर, (पु०) एक ज्वर (बुध्दार) जो बटपर सात
दिनतक रहता है । एक सप्ताहतक रहनेवाला ताप ।

तरमृग, (पु०) तरोः मृगः । इराका मृग । बंदर । बनर ।

तरपाज, (पु०) तदणां पत्रा+अच् । इशोंका राजा । ता-
क्या वृत्त । पारिजातक ।

तरपायिन्, (पु०) तरी शीवे-शी+भिनि । इरापर सोने-
वाला । पत्ती । परिवार ।

तरणिमन्, (पु०) तरण+इमन् । जवानपना । जवानी ।
जवन । युवा ।

तरपिलासिनी, (स्त्री०) वृक्षकी मानो बिलसिनी है ।
नवमरिच ।

तर्क, (पु०) तर्क+अच् (अ) । आकाश । जनेकी चाह ।
दलील । बिनहं । दाक । रादाक । संभावना । टकरंब ।

“प्रसन्नरते तर्कः” वे० सं० । विशद (श्रमदा) । व्यापरात्र ।
हेतु । केवल दलीलको मानेवाला दात्र । जहाँ व्यप्य
(हेतु) को मानकर व्यापककी माना जय । जैसे “यदि
यहाँ आग न होवे तो धूम भी न होगी” । सीमांग अदि
दात्र । वेदशास्त्रके साथ विरोध न रखनेवाली दलीलसे
पेदाशब्दकी परीक्षा करना । व्यभिचार (हेतुमें दोष) की
शंकाको मिटादेहारे । स्वयंमे कहेहुए अत्यन्तव्य अदि
पांच दोष । न जनेहुए अर्थको दलीलसे टिक र जना ।

तर्क, हीनि (पत्रकना)-अक- विनहं । नदाक बनर । छप
करना । अनुमान करना । छक- पुण- उभ- वेद । तर्क-ही-
ने । अतर्क-इत् ।

तर्क, हीनि (पत्रकना)-अक- विनहं । नदाक बनर । छप
करना । अनुमान करना । छक- पुण- उभ- वेद । तर्क-ही-
ने । अतर्क-इत् ।

तर्क, हीनि (पत्रकना)-अक- विनहं । नदाक बनर । छप
करना । अनुमान करना । छक- पुण- उभ- वेद । तर्क-ही-
ने । अतर्क-इत् ।

तर्क, हीनि (पत्रकना)-अक- विनहं । नदाक बनर । छप
करना । अनुमान करना । छक- पुण- उभ- वेद । तर्क-ही-
ने । अतर्क-इत् ।

तर्कशास्त्रं, (न०) तर्कस्य शास्त्रं । तर्कका शास्त्र । न्यायशास्त्र (मंतक) ।
 तर्कामास, (पु०) तर्कस्य आभासः निगमनं । वातका निचोद्धमें श्रद्धा हेतु ।
 तर्किन्, (त्रि०) तर्क+निनि । तर्क करनेवाला । दलीलयाज । नैयामिक । मंतकी ।
 तर्कु, (पु०) कृत्+उ-नि० । एकप्रकारका यन्त्र (जिसपर हरे निकाराते हैं) बेलना । कातनेका साधन ।
 तर्ज, अर्जन । शिदकना । जुग्रा० आत्म० सक० सेट् । तर्ज-यते । शततर्जत् । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्जति । अनर्जत् ।
 तर्जनं-ना, (न० स्त्री०) तर्ज+भावे ल्युट् । शिदकना । निरादर करना । निन्दा करना । धमिदा करना ।
 तर्जित, (त्रि०) तर्ज+क । शिदकागया । डराया गया । निन्दा किया गया । निराहार किया गया ।
 तर्जनी, (स्त्री०) तर्जयतेऽनया । तर्ज+ल्युट् (अन) । जिससे शिदकते हैं । अंगुठेकी पासकी अंगुठी ।
 तर्ण, (पु०) तर्ण+अच् (अ) । बत्स (पियाय) । सुत् (अक०) । गौडा बटका । अभी उत्पन्न हुआ बच्चा ।
 तर्ण, शिवा (मारना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्णति । अवर्ण ।
 तर्ण, (स्त्री०) तर्ण+च् वा+उ । लकड़ीकी बनी हुई दवाँ (कण्ठी) ।
 तर्पण, (न०) तर्+ल्युट् । वृषि । रजना । "तर्+ल्लिच्+ल्युट् (अन) । शूय करना । साक्षा करना । प्रथम करना । दूरदूरीपरतक करनेयोग्य । पाँच यज्ञोभिसे नित्ययज्ञ । यज्ञी लकड़ी । देवता कृषि और पितरोंको पानी देकर रजना ।
 तर्पण, (त्रि०) तर्+ल्लिच्+भा ल्युट् । शूय करनेवाला । प्रथम करनेवाला । शिल करनेयोग्य पाँच यज्ञोभिसे एक । नित्ययज्ञ ।
 तर्पित, (त्रि०) तर्+ल्लिच्+क । शूय (प्रथम) किया गया ।
 तर्प, कति-उत्तर । भ्वा० सक० पर० सेट् । तर्पति । अनर्पित् ।
 तर्प, (पु०) तर्+ल्युट् (अ) । अनिश्चय । काह । कृष्णा । लकड़ ।
 तर्प, (अन०) तर्+ल्लिच् (हिं) गद्य । उपरक (समय) । तर्प, कति । स्त्रिय होना । कथम काया । पूरा करना । इतर पूरा करना । जुग्रा० उभ० पड़े भ्वा० पर० अक० सेट् । तर्पति-ये । तर्पति ।
 तट, (पु० न०) तट+अच् (अ) । सम्य (जिसे पूरि-हीट लट् । हचय लट्) । नीचेका भाग । चोटे । और लकड़ वड । लकड़की सुने । अन्तर (अन्तर) । तट, लकड़ (पु०) वर (न०) ।

तलघात, (पु०) तलेन घातः । हाथकी ठजने लन मारना ।
 तलयुद्धं, (न०) तलेन युद्धम् । हाथकी तलिके से करना ।
 तल्लोक, (पु०) तलः लोकः । तल्लोक । नीचेका संज्ञा पाताल ।
 तल्लिन, (त्रि०) तल्+लनन् । पतल । छोटा । लट् । लट् । निबल ।
 तल्लप्रहार, (पु०) तलेन (चपेटेन) प्रहारः । प्र-अन् (अ) । चपेट मारना । चपेटका आघात (चोट) ।
 तल्लातल, (न०) अतलादिभिसे पांचवां पाताल ।
 तल्लित, (न०) तल्+इतच् । श्टमांस । मुनमुना का तलाहुआ ।
 तल्लुन, (पु०) त्+उनन् (उन) रको ल होता है । पुं । हवा । जवान । पडा (त्रि०) । जवान औरत (स्त्री०) गौरी ।
 तल्प, (पु०) (न०) तल्+पक् (प) शय्या । छेद । बर्तनी दाग । स्त्री ।
 तल्लज, (पु०) लज्-कान्ति-बाहना+अच् (अ) प्र-अन् । बहुत अच्छा (समासमें यह शब्द पीछे रहता है) । पने लिङ्गको नहीं छोड़ता । (माझगीतल्लजः) ।
 तल्ल, (त्रि०) तल्+क (त) । छोटा कियागया । रो । टुकड़े कियागया । गुणागया ।
 तल्ल, (पु०) तल्+ल्युट् । एक प्रकारकी जाति । शिप तल्लान ।
 तल्ल, अलंकार-सजाना । जुग्रा० उभ० पड़े भ्वा० सक० सेट् । इति । तल्लयति-ये । तल्लति । आतल्ल अतलीत् ।
 तल्ल, उल्लेख । ऊपर फेंकना । शिवा० पर० सक० सेट् । तल्लति । अतलीत्-आतलीत् । तल्लिवा-तल्लिवा ।
 तल्लकर, (पु०) तल् करीति । तल्+क अच् (त्रि०) । रो पीछे वा सामने दूरदेकी चीजको शूयनेहाए । रगतल्ल ।
 तल्लचील्ल, (न०) तल् चील्लं अल्ल अच् (प) । शिवा बही समाव है । नियम । तल्लभास । नियमों का बन बचाला ।
 तल्लरघ्य, (न०) तल्लस्यस्य समाव+अच् (अ) । शरी होना । पाग होना ।
 तल्लका, (स्त्री०) एक तल्लागी (जिसे लकड़की) ल किला ।
 तल्लकेय, (पु०) तल्लकायः आतल्ल+अच् । लल्ल ल छोटा पुन । शरीर ।
 तल्लनी, (स्त्री०) तल्लनेऽनया । जिससे चोट लगती । तल्+अच् लल्ल+ल्युट् (अन) । बला (स्त्री०) । अल्लुट् ।

पद्म, (न०) तपुना (मुनिना) श्रेष्ठं अनुष्ठानं यस्य अण् (अ) । जिसका प्रकार तपुमुनिने कहा है । पुरवके नाचको तापद्म और छीके नाचको छस्य कहते हैं । पुरु-बोंका नाच । एक प्रकारका पात । जोरसे नाचना ।

पद्मप्रिय, (पु०) तापद्मं प्रियं यस्य । पुरवका नाच जिसे पियारा लगता है । प्रियजी । नाचका पियारा । (त्रि०) ।

पित, (न०) तन्+क (त) पीर्यं । पिता । दया करने लायक । और पूजाके लायक (त्रि०) । पियारा । ताया ।

तनुस्य, (पु०) तातेन तुल्यः । पिताके समान । चाचा । ताया ।

तारकालिक, (त्रि०) तारकाले भवः+उक् । उसी समयमें होनेवाला ।

तारपर्यं, तारपर्य भावः स्यम् (य) । निचोड़ । मतलब । इयादा । कहनेवालेकी इच्छा (चाह) । अभिप्राय । एक-काममें लगना ।

तात्त्विक, (त्रि०) तात्वे भवः । तात्त्वमें होनेवाला । अ-सल । दरअसल । पारमार्थिक ।

तादर्थ्यं, (न०) ताले इदं तदर्थं तस्य भावः स्यम् (य) । उसके लिये होना । उसके लिये तदुद्देश । उद्योगी भावत ।

तादात्म्य, (न०) स आत्मा (स्वरूपं यस्य) तस्य भावः स्यम् (य) । उसी स्वरूपका होना । अनेद । एकही स्वरूप । एकल ।

तादाहर, (त्रि०) तस्य इव दर्शनं अस्य । इत्+भवः । जो उसकी नाईं दिखावई देता है । उच प्रकारका । उस विसा ।

तान, (पु०) तन्+धम् (अ) । एक याग । कमलकी ताव । (संगीतशास्त्रमें) संदी आवाज (गुर) "तान-प्रदासित्वमिबोपगन्तुम्" कु० (तानोंकी संख्या ४९ उर-चाह है) । फेलाव ।

तानयं, (न०) तनोर्भाषः । छोटापन । पतकपन । घुसमता ।

तान्तव्य, (त्रि०) बी० (छी०) तंतेर्विहारः+अन् । तन्तु (सत) का बना हुआ ।

ताम्रिक, (त्रि०) ताम्रं (चिदान्तं) तन्नामकं ताम्रं वा अथीवे वेद वा उक् (इक) । चिदान्त (असली बात) वा इन नामके शास्त्रको जो पढ़ता वा जानता है । हान-चिदान्त । जिसने चिदान्त जान लिया । ब्रह्मवादी । जो परमात्माके विषयमें बातचीत करता है । तन्त्रशास्त्रके ज्ञातेदार ।

ताप, (पु०) तप्+धम् (अ) धन्ताप । शोक । गर्मी । कृष्ण । सुदिक्कल । दुःख ।

ताप, (पु०) तप्+धम् । उष्णता । गर्मी ।

तापक, (त्रि०) तप्+न्तुत् । तापनेवाला । गरमी देनेवाला । अजनेवाला । -कः-(पु०) ज्वर (ज्वरा) ।

तापत्रय, (न०) तापानां त्रयं । आध्यात्मिक आदि संसा-रके तीन ताप (दुःख) ।

तापन, (त्रि०) तप्+ध्विच्+भाभे ल्युट् । गरम करनेवाला । अजनेवाला ।

तापस, (पु०) तपसि तापुः अन् (अ) । तमालपत्र (इन दिनों तमालहूको भी इसी नामसे बोलते हैं । तेज-पत्ता) "तपः अस्ति अस्य (अच्)" जो तप करता है (तपसी) (त्रि०) । दमनक वृक्ष (पु०) ।

तापसतप, (पु०) तापसोपगुणः तपः । तपसिओंके कामका वृत्त । इहृषीका वृत्त (इसके सेल आदिसे तपसी-ओंके सब काम पूरे होवेहैं) ।

तापहर, (त्रि०) तापं हरति । तापको हर करनेवाला । शीतल करनेवाला । शान्ति (दिखावा) देनेवाला ।

तापिन्ध्र-ध्र, (पु०) । तापिनं छादयति त्रयसि वा । छद्-जि वा ङ (अ) । ध्रुवो । ताप हर करता है । तमालका वृत्त ।

तापित, (त्रि०) तप्+ध्विच्+क । तापायाया । गरम किया गया । पीडा पहुँचाया गया ।

तापिन्, (त्रि०) तप्+मिनि । तापनेवाला । किसी प्रकारकी व्याधिसे पीड़ित । गरम करनेवाला । गरम ।

तापी, (छी०) तापयति । अच् । शीर् (ई) । दिव्य पर्वतमें पथिमभोर बहनेवाली एक नदी ।

तामरस, (न०) तामरे (जडे) ससि । सप्+च । जो जलमें घोटा है । पद्म । शोना । चतुरा । बारह लसरोके पादवाला एक छन्द ।

तामस, (पु०) तमसि (अंधकारे) अविद्यागुणे वा रतः+अण् (अ) । अंधेरे वा अविद्या (बेधमही)के गुणमें पचगसा । साँव । उन् । नीच । "तमसा (गुणमेदेव) निर्गुप्तं+अण् (अ)" । जो तमोगुणसे बना है (सां-रूपमें) तमोगुणसे उत्पन्नहुए अंधकार आदि । (त्रि०) "तमसः (राशेः अपरसं) अण्" शत्रुघ्नि छन्तार । (ज्यो-तिर्यमें) एकुष्ण पुत्र वेत्तु । तमसा स्यत्ता अण् (अ) शीर् (ई) । रात्रि । रात । अटामाँगी । वह छी जिसमें तमोगुण बहुत है (की०) ।

ताम्रसिक, (त्रि०) शी० (छी०) तमसा निर्गुप्तं+अण् । अंधकारसे बना । अंधेरा । अंधेरेके साथ संबंध रखनेवाला ।

तामिः, (पु०) तमिरे अस्ति अस्तिन् य (अ) जिसमें अंधेरा हो । (सांस्कृतमें) अठारह प्रकारका विपर्वर (बहुसे उलझा दिखानेवाला) रत्न ज्वर । जंगली हवाके रकनेसे उपजा बीज (गुम्फ) । शालम (जिसके घुरे आकार हैं) । एक नरक । जिसमें अंधेरी अंधेरा हो (न०) ।

सारायण्यं, (न०) साराणां षण्यं । तारोंकी इष्टि । बराना-
गिरना ।
सारिणी, (स्त्री०) सारमति । वृ+सिच्+मिनि (इन्) ईप्
(ई) । सारनेहारी । शिवजीकी स्त्री । पार्वती । इगरी
महाविद्या ।
सारिन्, (त्रि०) वृ+सिच्+मिनि । सारनेवाला । बचानेवाला ।
तार्किक, (पु०) तर्कं वेत्ति अपीते वा ठक् (इक्) ।
जो तर्क (इलीज) को जानता है वा पढ़ता है । तर्कशा-
स्त्रको पढ़नेवाला । तर्कशास्त्रको ज्ञानवाला । तर्कशास्त्र गाँठय,
कण्ठ और बृहस्पति आदिसे रचाहुआ है ।
साश्यं, (पु०) साशय्य अशय्यं यश् (य) । साशं (करन्पर)-
की सन्तान । गण्ड । अशय (स्यंका सारयि) । साप ।
पोडा । सोना । रय ।
साश्यध्वजः, (पु०) साशयं ध्वजो यस्य । गण्डके सण्डेनाला
भगवान् विष्णु ।
सार्णः, (त्रि०) -र्ण (स्त्री०) वृणस्य इदं-अच् । पायका
बना हुआ ।
सार्तीय, (त्रि०) वृतीय एव+सार्थ्ये अण् । तीगरा । तीसरे-
का सम्बन्धी । -य- (न०) तीसरा भाग (हिस्सा) ।
सार्तीयक, (त्रि०) वृतीय (अपने अर्थमें) +ईकृक् ।
तीसरा । वृतीय ।
ताल, (पु०) तल्+यन् (अ) । सिच्-अच् वा । अपने
नामका वृत्त । हउताल । देवीका सिंहासन । गानपरिमाण ।
रागका बजन (रागकी क्रियाका मान-माप) । दोनों
हाथोंका राग (ताली बजाना) कौसीक बनाहुआ बाजा ।
लय (तलवारकी मूठ) । बारह बार जातु (गोडा) पर
चारोंओर हाथ मुमानेसे जितना समय सगता है । ताल ।
तालकः, (न०) तल्+यन् (अक) । दर्शांजो बन्द कर-
नेकी कला । ताला । हउताल ।
तालध्वज, (पु०) तालचिह्नितः ध्वजः यस्य । जिसके हाँडे-
पर तालका निशान है । बलभद्र । बलराम ।
तालपत्र, (न०) तालस्य पत्रं इव । मानो तालका पत्ता है ।
कर्णमूलण । कानका जेवर । तालक । एक प्रकारका सुवर्ण-
निर्मित बानका भूषण ।
तालधूम्र, (न०) ताले (करतले) धूम्रं (बधनं) अस्य ।
जिसका हाथकी तलीपर बंधन होता है । "तालस्य इव
धूम्रं अस्य वा" । जिसका बंधन तालकी नाई हो । व्यञ्जन ।
पक्का (पंसा) "अपने अर्थमें कच्चा" यही अर्थ होता है ।
तालध्व, (त्रि०) ताली भवः+ध्व । ताउसे संबंध रखने-
वाला । -ध्वं. (पु०) तालध्वे उच्चारण किया गया अक्षर
तालङ्क, (पु०) तालचिह्नितः अङ्कः (ध्वजः) अस्य ।
जिसके हाँडेपर तालका चिह्न हो । बलभद्र । बलदेव ।

तालिक, (पु०) तालेन (करतलेन) निर्धृतः ठक् (ईक)
हाथकी तलीसे बना । षण्डेड । यण्ड । हाथकी तली ।
तातु, (न०) तारन्ति अनेन वर्णाः । सु+युच् (उ) रणे
न होता है । जिससे अक्षर सँतेते हैं । जीम (इन्द्रिय)-
का आसरा ।
तातुजिह्व, (पु०) तातु एव जिह्वा यस्य । तालही जिसकी
जीम है । कुम्भीर (संसार) । जीमके न होनेपरभी यह
तालहीसे रसका स्वाद वेता है ।
तायक, (त्रि०) -यी (स्त्री०) तव इदम् । तावकीन (त्रि०)
(तव इदं+उ+ईत्) तेरा ।
तायव, (अभ्य०) तायपरिमाणं अस्य । नि० । उसका इतना
माप है । इतना । ताय । माप । अवधि (इक्) । तिथय ।
प्रशांसा । सारीफ । वाक्यका भूषण (सजावट) । तदा ।
(तव) । इतना बडा ।
तिक्, जाना । भ्या० आत्म० अक० घेद् । वेकते । वेकं-
चके । अवेकित ।
तिक्, (पु०) तिञ्+क (त) । कहेला । खडा छ रसोंमेंसे एक ।
तिग्म, तिञ्+भक्-जको ग होता है । तीक्ष्ण । तेज । तेज
चीज (त्रि०) ।
तिग्मपरिम, (पु०) तिग्मा रमयः अस्य । जिसकी तेज
किरणे हों । सूर्य । सूरज ।
तिक्, पातन-कतल करना । स्था० पर० एक० घेद् ।
तिमोति । अवेपीत ।
तिक्, तीक्ष्णीकरण । तेजकरना । तुष्ट० उभ० एक० घेद् ।
तेजयति-ते ।
तिक्, शमा (मुआफ) करना । अपने अर्थमें सन् (त)
होता है । भ्या० आत्म० एक० घेद् । निविशते । अडि-
विलिप्त । (जब सन् नहीं होता तो) तेजते । वेकित ।
तितउ, (पु०) टाप्रणी । बालनी ।
तितिक्षा, (स्त्री०) तिञ् । शमा करना (अपने अर्थमें सन्-
अ-उद्) शमा (मुआफ़ि) । दूसरेसे क्रियेयसे अमान
आदिको सहारना । शीत (सारी) उष्ण (गनी) अदि
सहारना ।
तितिक्षु, (त्रि०) तिञ्+सन् (ग)+उ । शीत आदि
सहारनेवाला । ऐसी चीजसे कि जिसमें उष्णोष्ण विरोध
न हो जाय ।
तिष्ठार-री, (पु०) तिष्ठि इति अस्म्यच्छब्दं लुति ।
रा+क (अ) ति वा । एक प्रकारका पत्नी (परिदा) ।
तिष्ठार । सीयर ।
तिथि-नी, (पु० स्त्री०) अष्ट+सिद्ध्यन् (व) वा टीर् (ई) ।
बन्दगीकी पन्द्रह बन्दगीके दिनाङ्कसे होनेवाली मन्दिरा
आदि तिथि । पन्द्रहवीं संख्या ।

तिथिपत्र, (पु०) तिथीनां (तिथ्युपलक्षितानन्दकल्पानां) शयः यस्मिन् । त्रितार्ये चन्द्रमासी कृत्रभौका शयःनास होजाता है । दश (सूर्य और चन्द्रमाका संगम-भेद) अमावास्या । ६ त० । तिथिभौका नास ।

तिथिपत्री, (स्त्री०) तिथीनां पत्री । तिथि (सारीक) ब-
तानेवाली पत्री ।

तिथिप्रणी, (पु०) तिथीन् प्रणयति (खगला निष्पादयति)
प्र-ष्णी+किप् । जो अपनी गति (चाल) से तिथिओंको
बनाता है । चन्द्रमा ।

तिम्, (आर्द्रमास) गीला होना । भ्रा० पर० अक० सेट् ।
सेमति । अतेमीत् ।

तिमि, (पु०) तिम्र्+इन् (इ) मत्स्य । मच्छी । समुद्र ।
बड़े शरीरवाला समुद्रका मच्छ ।

तिमिद्भिल, (पु०) तिमि (मत्स्यं) गिरति । शु-निगल
जाना+सञ्च् मुम् च । एक प्रकारका मच्छ । जो तिमि
मच्छको भी निगल जाता है । बडामारी मच्छ ।

तिमित, (त्रि०) तिम्र्+फ (क्तामि) । निश्चल (न हि-
लनेवाला । कायम) । गीला ।

तिमिर, (न०) तिम्र्+किरच् (इर) । अंधकार (अंधेरा)
एक प्रकारका नेत्रोंका रोग (बीमारी) ।

तिरस्कृत, (त्रि०) तिरस्+कृ+फ । तिरस्कार किया हुआ ।
वेदकात किया गया ।

तिरस्वीन, (त्रि०) तिर्यक्+ख (अपने अर्थमें) (ईन)
टेढा हो गया । “ गतं तिरस्वीनमनुहसारयेः ” इति मापः ।

तिरस्, (अव्य०) अंतर्धानं । छिपना । तिरस्कार (बेदवती)
तिरछा । बक ।

तिरस्करिणी, (स्त्री०) तिरस्+कृ+गिति-नि० । जवनिष्ठा
(पढदा) “ तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति ” उभारः ।

तिरस्कार, (पु०) तिरस्+कृ+पष् । अनादर । बेदवती ।
तिरछ ।

तिरोधान, (न०) तिरस्+धा+ल्युट् (धन) । अन्तर्धानं ।
छिपना ।

तिरोहित, (त्रि०) तिरस्+धा+फ (त) । अन्तर्हित ।
छिपाहुआ । आच्छादित (ढकाहुआ) ।

तिर्यक्, (अव्य०) बक । टेढा । निरुद्ध । रुकाहुआ । पशु ।
पक्षी । टेढा चलनेवाला (त्रि०) ।

तिट्, (अव्य०) बेद-विघना होना । वृत्ता० पर० अक० अनिद ।
विलति ।

तिल, (पु०) तिल्+फ (अ) । अपने नामका दूध ।
तण्डुका फल ।

तिलक, (पु०) तिल्+कृन् (अक) । तिल+कृन् (क)
का । तिलारु । एक प्रकारका घोंदा । एक प्रकारका रोग ।
चन्दन आदिका तिलक । (पु० न०) । प्रपान (त्रि०)
“ खड्गदिलकः ” इति कण्ठश्रुत् ।

तिलकट, (न०) तिलक्य रजः । तिल+कृत् ।
पूग । पूर्वा ।

तिलककक, (पु०) तिलक्य ककः । तिलक्य
विष्याक । मत्त ।

तिलकालक, (पु०) तिल इव कालकः (इव)
तिलकी नाई काया हो । शरीरपर तिलके लयका त्रि
एक प्रकारका रोग ।

तिलतैल, (न०) तिलक्य तैलः । तिलक्यतैल (तै-
लितोंका तैल । तिलोंकी चिकनाई । “ तिलक्य ”
अर्थमें ।

तिलधेनु, (स्त्री०) तिलनिर्मिता धेनुः । तिलोंकी
गाई गाँ । दान प्राप्तको (देने) के लिये तिलोंकी धे-
नु (धेनु) ।

तिलोत्तमा, (स्त्री०) तिलोत्तम तिल २ (छोटा २ बड़ा)
बनाईगाई एक अल्परा (सगंकी वेद्या । कंठी) ।

तिल्य, (न०) तिलानां मयनं (क्षेत्रम्) तिल्यं+भ्यद् । त्रि-
सेन ।

तिष्ठ, (अव्य०) तिष्ठन्ति गवो यय । ति० । तिष्ठ
गाँपुं सोनेके लिये ए टहरती है (एक पन्था का दे
रात गये) ।

तिष्य, (पु०) तुष्यन्ति अस्मिन् । तुष्यन्त्यप् (न)
पुष्यनस्यत्र । कडियुग । “ तिष्यनस्यत्रनें वपत्र ” अ-
उङ् । पुष्य नस्यत्रनें उत्पन्न हुआ (त्रि०) ।

तिष्यफला, (स्त्री०) तिष्ये (कडियुगेऽपि) फलं
५ व० । कडियुगमें भी जिसका फल होता है ।
की । आवला । आमला ।

तीक, (अव्य०) वायन (मांगना) । भ्रा० आत्म० द्विक०
तीकते । अतीकित ।

तीक्ष्ण, (न०) तिज्+ञ्झ (चीपं हो गया) । ति-
लडाई । विप । तेज । लोहा । दण्ड (भोजार) ।
रहित और मोस चाहनेवाला । योगी (पु०) ।

तीक्ष्णकण्टक, (पु०) तीक्ष्णः कण्टकः अस्मिन् । ति-
काटा तेज हो । घट्टार । इहरीहल । और बां-
रहित और मोस चाहनेवाला । योगी (पु०) ।

तीक्ष्णकन्द, (पु०) तीक्ष्णः कन्दः (मूर्तं) अस्मिन् । ति-
जड तेज हो । पलाण्डु । गंडा ।

तीक्ष्णकर्मन्, (त्रि०) तीक्ष्णं कर्म यस्य । तेज इव
नेवाला । चालाक । उत्साही । दिलेरे ।

तीक्ष्णगन्धा, (पु०) तीक्ष्णः गन्धः अस्माः । त्रिषती तेज
हो । बघा । रात्रिका । कंयारी । छोटी इलाची ।
तेज चावत हों । पिप्पली । मध ।

तीक्ष्णतण्डुला, (स्त्री०) तीक्ष्णाः तण्डुला अस्माः । ति-
तेज चावत हों । पिप्पली । मध ।
तीक्ष्णदंष्ट्र, (पु०) तीक्ष्णाः दंष्ट्राः यस्य । तेज इव
व्याघ्र । पीटा ।

तीक्ष्णधारः, (पु०) तीक्ष्ण धारा यस्य । ६ त० । तेज धारवात्य । तत्वारः ।

तीक्ष्णपुण्य, (पु०) तीक्ष्णं पुण्यं अस्य । जितका तेज फल हो । स्वप्न । शौच । केतकी (श्री०) ।

तीक्ष्णबुद्धिः, (त्रि०) तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । तीक्ष्ण (तेज) बुद्धि (अक्षेण) बाला । चतुर । बालकः ।

तीक्ष्णरस्मिः, (पु०) तीक्ष्णा रस्मयः यस्य । तेज किरणों-कल्प । सूर्यः ।

तीक्ष्णरसः, (पु०) तीक्ष्णः रसः यस्य । तेज रसवाला । विषमय रस । कोईसी जहरीला रस । विष । जहरः ।

तीक्ष्णद्रव्य, (पु०) तीक्ष्णः द्रव्यः क्षमं यस्य । जितके आगेका भाग तेज हो । ज्व । जी । जी ।

तीक्ष्णायस, (न०) तीक्ष्णं अयं+अच् समा० । तेज लोहा । स्त्रील । लोहेकी बलम । एक प्रकारका लोहा ।

तीक्ष्णांशुः, (पु०) तीक्ष्णाः अंशवः यस्य । तीक्ष्ण (तेज-क-ठिन) किरणोंवाला । सूर्यं । अग्निः ।

तीक्ष्णोपायः, (पु०) तीक्ष्णः उपायः । कठिन उपाय । तीक्ष्ण (तेज) गायनः ।

तीक्ष्ण, ब्रह्मन । गीला करना । निगोना । दिवा- पर- अक- सेट् । तीक्ष्णति । अतीभीत् ।

तीक्ष्ण, पारगति । पारजाना । तैरजाना । काम समाप्त करना । पुरा० उभ० अक० सेट् । तीक्ष्णति-त्ते । अतितीक्ष्ण-त्तः ।

तीक्ष्ण, (न०) तीक्ष्ण+अच् (अ०) नदीआदिका तट (किनारा) । बाण । तीर । तीक्ष्ण (सिद्धा) (पु०) ।

तीक्ष्ण, (त्रि०) स्तु+ञ् । उत्तीर्णं । तैरगथा । पारहुआ । अतिभूत् । दृषया गया । आहुन (महापाहुआ) ।

तीक्ष्ण, (न०) स्तु+ञ्क् (ष) । धात्र । यद् । क्षेत्र (पुर-क्षेत्र आदि) उपाय । क्षीका रज (पूल) । नदी आदिका उतरना । घाट । विद्या आदि गुणोंवाला पात्र । उपाध्याय (पापा) । पशनेहाण । मन्त्री (विक्रतरयजीर) । पानीका स्थान । पवित्र स्थान । यात्राका स्थान । बोनि । दर्शन । आगम । निदान (आधिकारण) । आश । लूके पासघ्न शरोवर (तालाव) । कोई पवित्र विषय (जो विशेषकर विनी पवित्र मधीके तीरपर वा पासही हो) । “ तुषि मनो सफल तीक्ष्णं रिम्” अन्तु० । छरीर, मन और पृथिवीके पवित्र स्थान । (घरीरके अहुलीके आगे देव, अहुलीओंके मूलमें ब्राह्मण, अगुटे और अहुतिके बीचमें पेत्र और अगुटेके मूलमें ब्राह्म तीक्ष्ण है,) मनके तीर्थ सत्य, धामा, इन्द्रियोंका निरपु (रोचना), गव जीर्णपर दवा, सबके साथ बोमड रहना, पान, दम । (अपनेको बन्धु करना) सन्तोष (सबकारना) ब्रह्मचारी होना बडा तीर्थ है । (तीर्थकी रक्षा करना, स्त्रीके निवृत्त न जाना) । विपरा ध्वन बोडना । हान (अपने आशको जाना) । तीरज करना । पप ३०

पुण्य करना । (सबसे अधिक तालको पृथिवीपेसाले बहने हैं कि सय तीर्थोंमें बहुत बडा तीर्थ तो मनकी विमुक्ति अर्थात् सहाई है) । पृथिवीके तीर्थ (जित प्रकार घरीरके कईएक स्थान बहुत पवित्र होते हैं वैसेही पृथिवीके कईएक स्थान पुण्यतम अर्थात् बहुतही पुण्यके देनेहारे हैं जहाँ ज्ञान, ध्यान, पान होना बडेही पुन भाग्यका फल समझागया है । पृथिवीके अधिक प्रभाव, जलके तेज, और मुनिओंके आश्रय लेनेसे तीर्थोंका सेवन पुण्यके देनेहारा है । पवित्र बातोंके विरानेदारा शुभ “ मया तीर्थार्थमिनपविशा सिद्धिना ” श्ल० ।

तीर्थंकर, (पु०) तीर्थं (हितसाधनं आगमं) करोति । कृ+ङ्क् (अ) । हितको करनेहारे धाम्यका उपदेश करनेवाला । गौतम, बणिल, कणाद आदि । जैन । जैनोंका सन्त । “ तीर्थंकर ” भी इसी अर्थमें होताहै ।

तीर्थोद्धकं, (न०) तीर्थंस्व उदकं । तीर्थका जल । पवित्र जलः ।

तीर्थकमण्डलु, (पु० न०) तीर्थंस्व कमण्डलुः । तीर्थके जलसे भरा हुआ कमण्डलु । संन्यासियोंका पात्र वा घमः ।

तीर्थकाकः-स्वाहू-वायस, (पु०) तीर्थंस्व काकः । तीर्थका कौआ । अर्थात् बहुतही खोसी (लालची) पुरवः ।

तीर्थदेव, (पु०) तीर्थंस्व देवः । तीर्थकी देवता । सिनः ।

तीर्थयात्रा, (श्री०) तीर्थंस्व यात्रा । तीर्थकी यात्रा (गकर) ।

तीर्थराज, (पु०) तीर्थानां राजा+ङ्क् । तीर्थोंका राजा । प्रयागराजः ।

तीर्थविधि, (पु०) तीर्थंस्व विधिः । तीर्थपर विवाह करनेका नियम । तीर्थपर करने योग्य चीज समः ।

तीर्थसेविन्द, (त्रि०) तीर्थं सेवते+णिनि । तीर्थकी सेवा करनेवाला । तीर्थयात्रीः ।

तीर्थ, सौत्व । मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । तीर्थति । अतीवीत् ।

तीर्म, (पु०) तीर्+ङ्क् (र) । शिवजी । लोहा । विद्या और तेज “ न सहाय आनेदार ” । बहुत तेज (त्रि०) गमन । विनहर । मन्वन् ।

तीर्मवेदना, (श्री०) कर्म अतन्तपीडा (बहुतही दर्द) बाणना (पीडा) ।

तु, (अन्व०) तिन्तु । लेखन । पदको पूरण कहते हैं और वा (कभी कबपके पढ़िके नदें आना, परन्तु प्रायः पढ़िके सम्पडे पीछे आना है) । बरी तो । इसके सिवा । तौनी । पर । नी । औरः ।

तुह, (पु०) तुह+ङ्क् (अ) । पदंन (पदार्थ) वेग-रहा द्रव्य । जलियेल और (ज्योतिषमें ह्वे कर्णक विशेष अर्थात् पृथिवीवर्ग मेघप्रदि सदिषे) कर्णक-बला । छंका । प्रदान (त्रि०) ।

तुङ्गभद्र, (पु०) बड़ा मसा हाथी । दक्षिण देशमें इगनामकी एक नदी (स्त्री०) ।
 तुच्छ, (न०) तुद्+क्षिप् (तुद्+क्षयया छपति -छो+क) । चावलसे रहित धान्य । तोः । तुप । हीन । निरुम्मा । घोडा । रूपा (त्रि०) ।
 तुम्, हिंसा । मारना । कतल करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोजति । अतोमीत् ।
 तुम्, द्विधाकरण । दो टुकड़े करना । तोडना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोडति । अतोमीत् ।
 तुण्ड, (न०) तुद्+अच् (अ) । मुख । मूं । चिह्न ।
 तुण्डिम-ल, (त्रि०) तुण्ड+म लच् वा । बहुत बोलनेवाला । वही नामि (धुमी) वाला । "तुन्दिल" यही । गोगडिया अर्थ ।
 तुप्य, स्तुति । सपहना । तारीफ करना । तुप० उभ० सक० सेट् । तुष्यति-ते ।
 तुप्य, (पु०) तुद्+यक् (य) । अत्रि (भाग) । एक प्रकारका अन्न (सुरमा) (न०) ।
 तुद्, व्ययन । पीडा पहुंचाना । तुदा० उभ० सक० अनिट् । तुदति-चे । अतोमीत् । अतुत् ।
 तुन्दकूपी, (स्त्री०) हस्तः कूपः कूपी । तुन्दस्य कूपीव । मालों पेडकी बूट्टे हैं । नामी (धुमी) । (अपने अर्थमें कन् (क) "तुन्दकूपिका" यही अर्थ ।
 तुम्, (पु०) तुद्+क (त) । (तुंद्) वृक्ष । पीडा पहुंचाया गया । कटा गया (त्रि०) ।
 तुम्नवाय, (पु०) तुम्+दिप्रं वयति । वै+अच् (अ) । जो कटेहुएकी ओडता है । हाँचिक । दर्जी । सूईका काम करनेवाला ।
 तुम्, हिंसा । मारना । कतलकरना । दिवा० क्वा० पर० सक० सेट् । तुम्यति । तुम्नाति-अतोमीत् ।
 तुमुल, (पु०) तुम्+लक् (तुल) कलियुल (व्यय) । पबरापाहुआ और लडाईं । पबराहटकी लडाईं (न०) ।
 तुम्पर, (पु०) तुम्+परच् (पर) । एक गंधर्व । एक प्रकारका काम ।
 तुम्, बेंग । जरवी जाना । तु० पर० अक० सेट् । तुमोति । अतोमीत् ।
 तुम्, (पु०) तुम्+व (वेग) गच्छति । गम्+व (अ) । जो बढे ओर वा तेरीये जाता है । घोडा । चित्त । मन । तिल ।
 तुम्गस्कन्ध, (पु०) तुम्ग (समूहअर्थमें) स्कन्धच् (स्कन्ध) । घोडेका शपूह । १ ट० । घोडेका बंधा ।
 तुम्ग, (पु०) तुम्+व गच्छति । गम्+व तुम् वा । घोडा । चित्त । "दुग्ध" यही अर्थ होता है ।

तुम्गयद्म, (पु०) तुम्गम् इय वचनं कम् । तिन्ध घोडेकी नाईं मुग हो । फिरर (एक प्रकारकी वेग) ।
 तुम्गारि, (पु०) १ ट० । बगविरह । मद्दिर ।
 तुम्गानाह, (पु०) तुम्ग (वेग) गच्छे । तुम्ग (वेग) वा माहयने (अभिमवति) वा जिप्-यन्म् । जो केने यश्वराते अथवा जो वेगवालेको दबा लेने है । एवं देवनाथोंका राजा ।
 तुम्गि-री, (स्त्री०) तुम्ग+इन् वा षीप् । तुम्गदेवी लडाईं बनाहुआ तुम्ग साधन (औजार) ।
 तुम्गीय, (त्रि०) तुम्ग+रूप अर्थमें . तीव्र प्रबल हेतु । निम्ग० । चौथा । चार हिस्सोंवाला । मन्दिनाल । (वेग-नदगंममें) आत्माकी चौथी दशा त्रिममें यह इन्द्र परमात्माके साथ एक हो जाता है । तुम्गम् सिद्धि प्रदा । तीनोंसे पहिली दशावाला ।
 तुम्गीयवर्ण, (पु०) कर्म० । चौथी चतुर्थ जतिघ मुग्ग शूद्रवर्ण ।
 तुम्गक, (पु०) तुम्ग+उल्लिङ्-कार्ये कन्-यन्म् । एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य (गिलरस) । तुम्ग लोग (बहुवचन)
 तुम्ग, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । यद् । नि० । चारोंसे एक करनेवाला । चौथा ।
 तुम्ग, हिंस । कतलकरना । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तुम्गति । अत्तं ।
 तुम्गसु, (पु०) यमातिराजाका पुत्र ।
 तुम्ग, उम्मान । तोलना । मापना । तुप० उभ० परे २० पर० सक० सेट् । तोलयति-ते । तोलति । अतुम्गत् । तुला शब्दसे निच् होकर "तुल्यति" बनता है ।
 तुम्गन, (न०) तुम्ग+न्युद् । बोझा उठाना । बटवती ।
 तुम्गसी, (स्त्री०) तुला अय्यति अम्+अच् (अ) इत् । जो बटवतीको फेंक देती है अर्थात् त्रिमके मन् संगारमें और कोई इश नहिं । (तुलसी) अपने नामसे और एक इश ।
 तुम्गा, (स्त्री०) तुम्ग+अच् (अ) । माहय । बरार । मान । माप । तक्की । एक बडा पात्र (बर्तन) । कल्प रसि । तोलनेका भाग ।
 तुम्गाकोटि-री, (स्त्री०) तुम्गा तुला वा कोटति (ति तापयति) कुद्+इ वा षीप् । नूपर । बंत्र । कला । एक माप ।
 तुम्गाधर, (त्रि०) तुम्गाया (मानदग्गस) या । तर्क पकडनेवाला । पू+अच् (अ) । कानिआ । तुम्गट्टी ।
 तुम्गापरीक्षा, (स्त्री०) तुम्गा परीक्षा । तर्कपकडने वा गूढेकी पहिचान ।
 तुम्गापुरव, (पु०) सोढ्य प्रधाके महादलोने एक तुम्गापति, (स्त्री०) तुम्गायाः पतिः । तक्कीकी स्त्री ।

तुल्यान्वय, (न०) तुल्यायाः स्त्रं । तद्वतीका लङ् वा स्यत् ।
 तुलित, (वि०) तुल्य+तल्लरोति णिच् (कर्मणि क्) परि-
 सिन् । मापणया । घटशीकृत । बराबर कियागया ।
 तुल्य, (वि०) तुलया सेमिने यत् । सरस । बराबर । समान ।
 तुल्यदर्शन, (वि०) तुल्यं परमति-दृष्ट्+स्यु । बराबर दे-
 खनेवाला ।
 तुल्यपानं, (न०) तुल्यं पानम् । इच्छे मिलकर पीना ।
 तुल्ययोगिता, (स्त्री०) अर्थालंकारका एक भेद ।
 तुषर, (पु०) तरति (दिनसि) रोगान् । तुम्भरच्-
 निच् । जो रोगीको मारता है । एक प्रकारके धान ।
 कषाय । कसौला खाद । कसैले खादवाला (वि०) ।
 तुष, तोष । प्रसन्न करना । रजाना । दिवा० पर० अक०
 अनिद् । तुष्पति । अनुपत् ।
 तुष, (पु०) तुष्+क (अ) । विभीतक वृक्ष (बहेरा) ।
 पानकी खाद । अपने नामका पदार्थ । भूमी ।
 तुष, (पु०) तुष्+भावलोका क्तिका वा भूमी । तोह ।
 तुषानल, (पु०) तुषस्य अनलः । तोहरी भाग । तोहरो
 पैदाहुई भाग ।
 तुषार, (पु०) तुष्+आरह् (आर) । हिम (बर्फ) ।
 कर्पूर । कपूर । कापूर और शीत (घादी) । उषवाला
 (वि०) ।
 तुषित, (पु०) तुष्+कितच् (इत्) । तोषआदि बारह वा
 छत्तीस गणदेवता ।
 तुष्टि, (स्त्री०) तुष्+कित् (छि) । सन्तोष (छवर) ।
 अहर्षार्थ (जो करना या वह न किया) दसामें भी
 ऐसी बुद्धि होना कि मैं हर्षार्थ (जो करना या तो कर
 चुकाई) हो गयाई । सोह्रवें भी प्रकारकी बही है ।
 तुष्ट, बंध । मारना । भ्वा० पर० सक० सेद् । तोहति ।
 अदुहत् । अनोदीह ।
 तुष्टिन, (न०) तुष्ट+इन्म् (इन्) । हिम । बरफ । चन्द्र-
 माका चक्र ।
 तुष्टिनाशु, (पु०) तुष्टिना अंशको यस्य । जिसकी हिले
 बरफ ही । चन्द्रमा । चाँद । "दिनाशु" इसी अर्थमें
 होता है ।
 तुष्ट, सेकोच । तिक्कोइना । पुष्ट० उभ० सक० सेद् । तुष्ट-
 यति-त्ते । अदुष्टयत्-त्त ।
 तुष्ट, पूरण । भरना । पुष्ट० आत्म० सक० सेद् । तुष्टयते ।
 अदुष्टयत्-त्त ।
 तुष्ट-णी, (पु० स्त्री०) तुष्+क । बाण (तीर)का
 आधार । तरफ्त ।
 तुष्टीर, (पु०) वयो (सेकोचं) एति (इति) ए+क ।
 तरफ्त । तीररखनेवा बाण ।

तृण, (न०) खर्+क (त्) ऊर्द् । (तद्यो न हो जाता है) ।
 शीघ्र (जल्दी) । जल्दीवाला (वि०) ।
 तृण, (न०) तृण । हिवा । मारना+यत् (य) । एक प्रकारका
 बाजा । घुरी बाजा ।
 तृण, पूरण । पुष्ट० आत्म० सक० सेद् । तुष्टयते ।
 अदुष्टयत्-त्त ।
 तृण, (पु० न०) (तुल्+क) । एक प्रकारकी कपास
 (कपाह) । आकाश । तुंद नामका वृक्ष (न०) ।
 तृणिका, (स्त्री०) तृन्+भस्त्वर्थे ण्यु (इक्) । दान्या
 (छेत्र) का साधन । तुल्य (अक) । सूति दिखनेका
 साधन । तुली (इत्य) ।
 तृण, (पु०) तुष्+वृ-पीपथ । वह गो जिसके पीग मर्दि ।
 वह पुष्टय जिसकी दादी मर्दि निकली । कसौला रण ।
 तृणीक, (वि०) तृणी । तृणी शीलं यस्य । शीलअर्थमें
 कन् (क) मल्लोप हो जाता है । तुष रहनेहार ।
 तृणीम्, (अश्व०) मीन (तुषयाप) ।
 तृणीशील, (वि०) तृणी शीलं यस्य । मीनावलम्पी ।
 तुष रहना जिसका स्वभाव है (पु०) ।
 तृण, (न०) तुष्+तन्-पीपथ । जटा । घहनकेट । इच्छे-
 दुष्ट बाल । धूर । महीन ।
 तृण, अश-खाना । तना० उभ० सक० सेद् । तृणोति-व-
 णोति । तुष्टये-तृष्टये । तर्गिता-तृष्टा ।
 तृण, (न०) तृष्ट+नह् । नवा लोप होता है । नगरि ।
 पास बगैरह । दिनका ।
 तृणकाण्ड, (न०) तृणानां समूहः । काण्डच् (काण्) ।
 तृणसमूह । शिनकीका डेर ।
 तृणह्रम, (पु०) तृणजातीया ह्रमाः । शाक० । तृणजतिके
 वृक्ष (अक्षर होनेके) । नारिकेल (नारियेल-नरेल)
 का । खर् ।
 तृणधान्य, (तृण) इव धान्यं । शाक० । तिनकेपी नाई
 पान । ऐसी भूमिमें उपजता है कि जिसे बर्षण नहीं
 कियागया । नीवार खाकके फावल ।
 तृणराज, (पु०) तृणेषु राजते । राज्+अच् (अ) ।
 १ त० । टच् वा । सालका इष्ट ।
 तृणार्थ्यं, (न०) तृणैः इत्यं । तृणो (तिनकी) जे इत्यं
 (रहित) । केपकी । नदिका ।
 तृणसिंह, (पु०) तृणेषु सिंह इव । तिनकीमें सेरकी स-
 र । पुष्टकी ।
 तृणहर्म्यं, (पु०) तृणानां हर्म्यम् । तिनकीका (बनटुआ)
 घर । तिनकीके शाक्यदिन ।
 तृणीहृत, (वि०) तृण+चि+हृ+क । तिनका बनाका गया ।
 हलका किया गया । तिराबर किया गया । मिटर
 मिया गया ।

तृणोक्त, (न०) तृणनिर्मितं शोकः । तिनकोंका बना हुआ पत्र । मराना ।

तृण्य, (त्रि०) तृणानां गमूहः । य । तिनकोंका ढेर ।

तृतीय, (त्रि०) त्रयाणां पूरणं । तृतीय । सम्प्रसारण । तीनोंका पूरा करना । यह पदार्थ जो तीनही संख्याको पूरा करे ।

तृतीया, (स्त्री०) चन्द्रमाके मण्डली तीनकलावाली पट्टाके तीसरी त्रिवि । तीज ।

तृतीयाहृत, (त्रि०) तृतीयं हृतम् । तीरा क्रियागया । त्रिगुना क्रियागया । तृतीय+हृत्+कृ+क (त) । तीन बार खेचाहुआ क्षेत्र (खेत) ।

तृतीयाप्रकृति, (स्त्री०) स्त्रीयुग्मां अपेक्ष्य तृतीया प्रकृतिः (प्रसरः) । स्त्री और पुंस्य न होकर तीसरा प्रकार । नपुंसक । स्त्रीव । नपुंसक चिह्न ।

तृद्, अनादर । आदर न करना । हवा० उभ० अह० सेट् । तृप्ति । तृप्ते । अतर्हीत-अतृद्त् ।

तृद्, हिंसा । मारना । तुदा० पर० सक० सेट् । वृत्ता वेद् । तृंहि । अतृंहत् ।

तृप्, शीघ्रण । तृप्तहोना । रजना । दिवा० पर० सक० वेट् । तृप्ति । अतर्पीत् । आतापीत् ।

तृप्त, (त्रि०) तृप्+त्र । तृप्त हुआ । प्रसन्न हुआ ।

तृप्ति, (स्त्री०) तृप्+क्तिन् (र्ति) । बहुत खाजनेसे खानेकी इच्छा न रहना । रजना । प्रसन्न होना ।

तृप्, शीघ्रण । प्रसन्न होना । रजना । तुदा० पर० सक० सेट् । तृप्ति । अतर्पीत् ।

तृ (त्रि) फला, (स्त्री०) त्रयाणां फलानां समाहारः । वा सम्प्रसारणम् । तीन फलोंका इच्छा होना । हरीतकी (हरीट) । आमलकी (आमल्य) और अश (बहेडा) वयम्भारूप तीन फल ।

तृप्, तृष्णा । चाहना । दिवा० पर० सक० सेट् । तृप्ति । अतृप्त् । अतृपीत् ।

तृप्-या, (स्त्री०) तृप्+क्रिप् । भागुरीके मनमें हलन्त होनेके कारण विकल्पसे टाप् (आ) होताहै । तृष्णा । चाह । कामदेवकी कन्या ।

तृष्णाम्, (स्त्री०) ६ त० । श्रोम । हृदयका एक स्थान । चाहकी जगह ।

तृप्तिन, (त्रि०) तृप्ता जाता अस्व । तार० इत् (इत्) । विद्याया । चाहकाय । तृष्णावाद्य ।

तृष्णाद्वय, (पु०) तृष्णाया (खेमस्य) हयो वस्मान् । शिष्यं खेम गृह्णतीति । सम (वागनाया छोटना) । मन्त्रको रोचना ।

तृष्णातृ, (त्रि०) तृष्णा+अतृत् । बडा विभावा (तृपाने) । बडा छोटवी ।

तृद्, त्रिप् । मारना । तुदा० पर० गह० वेट् । अतर्हीत् । अतृद्त् ।

तृ, तरण । तरना । त्रयन । उच्छटना । अस्मिन् । तुदा० पर० गह० सेट् । तरति । अतर्गीत् ।

तेज्, निमान । तेजहटना । फानना । अ० पर० सेट् । तेजति । अतेजीत् ।

तेजःफल, (पु०) तेजस्करं फलं यस्य । त्रिविधं तेजी कर्ता है । तेजबल्युत् ।

तेजस्, (न०) त्रिभु+अभुत् । उष्ण (गरम) सत्त्वो अग्नि आदि द्रव्यं । (साध्यमें) शब्द और शक्तिगुणके रूपनमात्रासे उग्रहुआ भूत (आग) । प्रकाश । प्रकाशम् । वीर्यं । मनुष्यमें उजवा था । तर्नेमें ज्योति । स्यं । शरीरकी आग्नि । मोना आदि वस्तुमें द्रव्य । पित्त । अथमान आदिछान सद्धारना । पंचसामाधिक बल (जोर) । धैर्यव्यवहार परम प्रयत्नम् । साध्यमें मत्त्वगुण ।

तेजस्विनी, (स्त्री०) तेजस्+विनि । तेजवाली ज्योतिष्मती लता । तेजवल ।

तेजीयस्, (त्रि०) तेजस्विन्+अतिशयने इवकुत्रि लोपः । तेजवाला । "तेजीयमां न दोषाय बने" बने यथा" भागवतं ।

तेजोमय, (त्रि०) तेजस्+प्रयुगये मयट् । बहुत तेजस्वियमें प्रचान तेज हो । ज्योतिर्मय । प्रकाशलक्षणां दीप् । "तेजोमयी वाक्" श्रुतिः ।

तेजोमात्रा, (स्त्री०) तेजनां (सत्वगुणानां) मात्रा (अन्तः सत्वगुणोंका अंश) । इन्द्रिय (भूतके सात्विक बलके इन्द्रकी उत्पत्ति साध्यमें स्वीकार की गई है)

तेप्, कांपना और मिरना । अ० आ० अह० सेट् । अतेपिष्ट ।

तेम, (पु०) तिम्र-धन् (अ) आर्द्रभाव । मीठा होना । तिम्रतेमन, (न०) तिम्र+म्युट् (अन) । आर्द्रकरण । तिम्र करना । कर्मणि ल्युट् । व्यञ्जन । नाश्ना । अजी । तिम्रकारका पुत्रा ।

तेजस, (न०) तेजसः विकारः+अण् । तेजका विकार । अजी । और धातुका पदार्थ । (साध्यमें) नष्ट होकर उत्पन्न हुआ भूत (त्रि०) चमकीला । शक्तिवत् (अ० कनवाला) (त्रि०) । (वेदान्तमें) सूक्ष्मधारण ।

तैत्तिल, (पु०) गण्डक पत्रु । गंगापत्रु । वनके अंगुल (न०) ।

तैत्तिरीया, (स्त्री०) त्रितिरिभ्यः अपिगना+अन् (त्रि) तीनों (वाक्स्वयंके गुणके साथ विचार होनेके कारण वचन कीगई विद्याको वैशम्पायनके शिष्योंने टीकाएकी बनाकर ग्रहण किया यह उपनिषद्की कथा है) वैशम्पायनके एक शिष्य । तृष्णयत्तुः ।

त्यागिन्, (त्रि०) लङ्+यितुन् (इन्) । दाता । देनेवाला
 शूर । (बहादुर) । ब्रह्मसूत्र । त्रिगुण स्वभाव त्याग
 (तोड़ने) का है । कर्मके फलको छोड़नेहारा ।
 प्रक्, गति जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेद् । प्रकते ।
 अग्रकिये ।
 प्रप्, लब्धा । शरम करना । भ्वा० आ० सक० वेद् । प्रपते ।
 अग्रकिये । अग्रम ।
 प्रपा, (ली०) प्रप्+भावे अर्ध् । लब्धा (धामे) । अन् ।
 अन्तिकारिणी (बदमाश मोरन) । कुल । क्षीर्णि (यश)
 प्रपु, (न०) (अग्नि दृष्ट्वा) प्रपते (लज्जते) इव, लज्जया
 इवीभवति वा । जो आगको देख शरम करताहै । अथवा
 लज्जते बल जाताहै । हीसक (रांगा) टीन ।
 प्रपुटी, (ली०) प्रप्+उट् (उट) वीर् (ई) । छोटी
 इलकपी ।
 प्रपुम्, (न०) प्रप्+उटि (उम) । रांगा । टीन ।
 प्रप, (न० ली०) प्रपानो शवयवाः । प्रयोऽवयवा येषां
 व+भ्रवच । टीनोंका भाग । वा टीन भागकाय । टीनों
 " अणुप्रयमनाह्वय " मनु । धीमें वीर् (ई) । टीन
 पेशवकाय (त्रि०) । अणुप्रयमनाह्वय (टीनों वेद) ।
 अणुप्रयमनाह्वय (टीनों वेद) । अणुप्रयमनाह्वय (टीनों वेद) ।
 प्रपीनम्, (पु०) प्रपी एव हनु यन्म । वेद (टीनवेद)
 ही त्रिगुण वर्ण है । मूर्त् । प्रीकीका नाम (प्रपीनय) ।
 प्रपीधर्म, (पु०) प्रपी (वेदप्रयोग) विधीयमानो धर्मः ।
 टीनों वेदोंके विषय विद्वानुभा । वेदका धर्म । उजोश्रीशोभादि ।
 प्रपीमुण्ड, (पु०) प्रपी एव मुण्डं यन्म । वेदही त्रिगुण
 मुण्ड है । अणुप्रयमनाह्वय ।
 प्रपीद्वान्, (त्रि०) प्रपय द्वा व, प्रयथिवा द्वा वा ।
 टीन वर्ण इदं ही मन्वा । वेद । वेदको पूरा करनेके
 अर्थमें इत् (अ) प्रपीद्वः (त्रि०) । वेदही वेद
 इदं ही मन्वा वीर् (ई) प्रपीद्वी ।
 प्रप्, अर । शरम । त्रिगु० पर० अक० सेद् । प्रपति-
 इत् । अणुप्रयमनाह्वय । प्रपुम्-लज्जामनु ।
 प्रपरेणु, (पु०) प्रपः (अः) रेणुः । छोटेके भीतर
 छोटेके भीतर त्रिगुणोंके रूप ३ कागहा अणुप्रयमनाह्वय
 अणुप्रयमनाह्वय मन्वा । टीन अणुप्रयमनाह्वय मन्वा ।
 मूर्त् ही मन्वा (ली०) ।
 प्रप्, (त्रि०) (प्रपन्थ) शरम ।
 प्रप्, (त्रि०) प्रपन्थ (इ) । शरम । शरम । अग्रिय ।
 शरम मन्वा । वीर् (ई) ।
 प्रप्, (त्रि०) प्रपन्थ (इ) । शरम । शरम । अग्रिय ।
 प्रप्, (त्रि०) प्रपन्थ (इ) । शरम । शरम । अग्रिय ।
 प्रप्, (त्रि०) प्रपन्थ (इ) । शरम । शरम । अग्रिय ।

प्रास, (त्रि०) प्रप्+भावे पप् । बरनेवाला । शरमोक्त
 -मः (पु०) इत् । मय ।
 त्रि, (त्रि०) बहु० तु+ङि । तीनही संख्यावाला । त्रि
 निप्र आदेशः ।
 त्रिदा, (त्रि०) त्रिदान्+भूत्वे इत् (अ) । टीनके
 करनेवाला । तीगर्वा ।
 त्रिदाक, (त्रि०) त्रिदाना कोतः+भुन् (अक) । टीन
 संख्यावाले द्रव्यसे खरीदी गयी वस्तु । टीनके
 गई चीज ।
 त्रिक, (न०) त्रयाणां संपः+कन् (क) । टीनोंके
 पृष्ठवंशके नीचेका भाग । पीठकी हड्डीके नीचेका हिस्सा
 कटिका भाग । त्रिकला (इति उच्यते) और अणुप्रयमनाह्वय
 त्रिकुट (सोट-मध-और मिरच) । मिठेसुए का फल ।
 त्रिकुटुद्, (पु०) त्रीणि कुरुतुन्वानि मूर्त्ति
 (कुरुते अन्त्यका लोप हो जाता है) । टीन
 समान जिसके तीनों तीगर्वा हैं । त्रिहृत् नामी परी (परा
 त्रिकात्, (न०) त्रयाणां कालानां समाहारः । (भूत
 भूत और वर्तमान) तीनों समय । गवैर दुपद और
 त्रिकात्स, (पु०) त्रिकात्सर्विपदाणां जन्तुः । इति
 तीनों समयके पदार्थोंको जन्तुहारा । उजोश्री । इति
 चक पुत्र जात्रेहारा ।
 त्रिकूट, (पु०) त्रीणि कूटानि आद्य । त्रिगुणों
 में हैं । छोटाके पग मुनेउ नामी परी (परा
 त्रिकोण, (त्रि०) त्रयः कोणा यन्म । त्रिके ही
 हैं । टीन नोकोंवाला पदार्थ । (उजोश्री)
 नौवां और पांचवां स्थान (न०)
 त्रिगतं, (पु०) तीन गते । मुण्डों नाम उच्यते
 उत देवके शेष । अ० व० ।
 त्रिगुण, (न०) त्रयाणां गुणानां समाहारः । तीन
 का मन्व (मन्वयमे) प्रथम (तारे अणुप्रयमनाह्वय
 " त्रिगुणयन्म " गुण-विज्ञानी करना+भय (अ) इति
 गुण गया (त्रि०) । तीनके त्रै त्रिगुणयन्म ।
 त्रिगुणाद्यन्, (त्रि०) त्रिगुणं कृत्वा इति । अणुप्रयमनाह्वय
 (अ) । टीन अणुप्रयमनाह्वय मन्वा ।
 त्रिगुणात्मक, (न०) त्रयो गुणः (मन्वयन्)
 (मन्वयन्) यन्म+कन् । तीन गुण त्रिगुण मन्वा ।
 (मन्वयन्) प्रथम । (त्रिगुणयन्म) अणुप्रयमनाह्वय
 त्रिगुणात्, (ली०) त्रयाणामपि प्रसिद्ध एव इति ।
 त्रिगुणाधिकेण, (पु०) त्रिगुणं अधिकेण अणुप्रयमनाह्वय
 वेत् । टीन अणुप्रयमनाह्वय मन्वा । अणुप्रयमनाह्वय
 अणुप्रयमनाह्वय (त्रि०) का मन्व । " त्रिगुणयन्म " इति
 मन्व इति मुक्ति ।

ता, (स्त्री०) व्रीन् इति-नि० । दक्षिणामि गार्हपत्य आहव-
नीय तोनो इक्ष्वादी अभिव्ये । रात्र्युगके पीठे आनेवाला
हिन्दुओंका गुण । ब्रह्मी शैलका साधना । पाषाणका कंचे
होकर गिरना । जिस पासे तीन अंक हैं । तीन चौदियोंका
कंच होकर गिरना । तीनों मिले हुए ।

धा, (अन्व०) त्रिप्रकारयें धाव् । तीन प्रकार । तीन
तरहसे । तीनभाग ।

धावन । बचाना । भ्या० आत्म० सक० अनिद् । प्रायते ।
अप्राहा ।

गुणिका, (त्रि०) त्रिगुणार्थं प्रयच्छति । त्रिगुणा होनेके
लिये देता है । त्रिगुणं महीतुं एकगुणं प्रयुजे । उक् ।
त्रिगुणा देनेके लिये एकगुणा देता है । एकगुणा देकर त्रिगुणा
देनेवाला । तीन तरहका एक प्रकारका बूटा ।

गुण्य, (न०) प्रयाणां सत्वादीनां गुणानां समाहारः । तीनों
(रात्र रज तम) गुण । “स्वार्थे व्यम्” (य) । तीनों
गुणोंके कर्म पुण्यरूपरूप कर्मोंके फलवाला संसार ।
“त्रिगुण्यविषया वेदाः” इति गीता ।

धि, (न०) त्रिप्रकारे । तीन तरह ।

लोभ्य, (न०) प्रयाणां लोभानां समाहारः । “स्वार्थे
व्यम् (य)” । तीनों (स्वर्ग मर्त्य पाताल) लोक ।

लोभ्यविषया, (स्त्री०) प्रलोभ्यं विजयते (सेपते,
आपीनं करोति) । तीन लोकको जीतनी है (सेवन करनेसे
आपीन करती है) वि+जि+अव् (अ) । भग्न । भंग ।

विधि, (पु०) तिष्ठो विद्याः समाह्वानः । तीनों विद्या लौ-
गई । ऋग् यजुः और सामवेदरूप तीनों विद्याओंको
जानना वा पढ़ना है । तीन वेदोंको आग्रहारा ।

व्यम्बक, (पु०) व्रीणि अम्बकानि (नेत्राणि) अस्य ।
जिसकी तीन आंख हैं । शिवरी । (बरीं भावनेनी
इसके आदेश माना है इस लिये “त्रियम्बक” भी इसी
अर्थमें है) ।

व्यम्बकस्त्रय, (पु०) १ त० । महादेवका मित्र ।
“धन्व सामाः” पुत्रे ।

व्यहस्वपदा, (पु०) प्रयाणां अहां (तिदीनां) हरणं वरि-
भित्तिं सारदिने । सूर्यका वह दिन कि जिसमें तीन
तिथिओंका भेद है । तीन तिथिओंको छूनेहारा सूर-
जका एक दिन ।

व्य, (त्रि०) अन्वत्स्मिन् । भोर । भिन्न । अज्ञा (वेदमें)
एक ।

व्यकपत्र, (न०) लग्निय परं अस्य । जिसको पत्ता छि-
केनी भाई हो । गुप्तत्व । दाबचीनी । वेचनता । हीग
(स्त्री०) ।

व्यक्ष, (कारयं) कमजोर होना । भ्या० पर० सक० सेद् ।
त्वक्षति । अत्वक्षीत् ।

व्यच्, सेवण । बांकना । छिगाना । वृद्धा० पर० सक० सेद् ।
त्वचति । अत्वाचीत्-अत्वचीत् ।

व्यच्-वा, (स्त्री०) त्वच् + क्विप् वा टाप् । बल्बल । रा-
लदी । छिलछा । चमडा । बरल । गुदत्वच । दाबचीनी ।

व्यच, (न०) त्वच्+अच् । चमडा । छिलका (पदल) ।
सेजपात । दाबचीनी ।

व्यचिसार, (पु०) त्वचि सारोऽस्य (क्षतमीका अङ्क
होता है) । जिसकी त्वचामें सार हो । बंध । बाँस ।

व्यत्, (त्रि०) तन्+क्विप् । अन्को विकल्पसे वृक् होता
है । भोर । झारा । (यह सर्वनाम है) ।

व्यत्, वेग । जल्दी करना । जोरकरना । भ्या० क्षारम० अक० ।
सेद् । त्वरते । अत्वरिट् ।

व्यरा, (स्त्री०) त्वरु+अर् । वेग । जोर । चाहे गये पदार्थको
पानिके लिये पिटाम्बका न सहाकरना “विच्” । त्वरयति ।
अत्वरत् । सरा ।

व्यरित, (न०) त्वरु+क् । क्षीप्र । जल्दी । जल्दीवाला
कोईनी (त्रि०) ।

व्यरितोदित, (त्रि०) त्वरितं यथा तथा उदितं । बर्-
क । जल्दी बोल दियागया । क्षीप्रोपारित ।

व्यष्ट, (पु०) त्वष्टु+वृच् । देवताओंका शिल्पी (कारी-
गर) । विश्वकर्मा । १२ आदित्योंमेंसे एक । तर्जन ।
विग्रानुद्यत ।

व्याहृष्ट, (त्रि०) तत्र इव द्युपंनं अस्य+वृश् । जो तेरी
नाई सीखता है । तेरे समान । तेरे जैसा । त्वत्तरा-ट् ।

व्याष्ट, (पु०) त्वष्टुरपत्यम् । विश्वकर्माकी सन्तान ।
इनाष्टर । इयनामी आदित्य । संज्ञा नामवादी सूर्यकी
पत्नी (स्त्री०) । विग्रानुद्यत ।

व्यिच्-वा, (स्त्री०) त्विच्+क्विप् वा टाप् । टीमि ।
प्रकाश । चमक । रोशनी ।

व्यिच्, टीमि । चमकना । भ्या० उम० अक० अनिद् ।
त्वियति-ते । अत्वियत्-अत्वियत् ।

व्यियांपति, (पु०) १ त० । अङ्क उनाच । तिरणोद्य
(प्रकाश) य मलिक ।

व्यस, उद्ययति । कपटसे जाना । भ्या० पर० सक० सेद् ।
त्सरति । अत्सारीत् ।

व्यस, (पु०) त्वरु+उ । सज्जुति । (मृत्) ।
तरनारका अन्व ।

व्यस, (त्रि०) त्वरु+उचम् ३३३ ३३३ ३३३

ण्ड, (दण्डपालन-नाशदेना) पुण० उभ० सक० सेट् ।
दण्डयति-से । अददण्डत्-त्त.

ण्ड, (न०) दण्ड्+अच् (अ) । लघुट् (छाडी) । षंडा ।
षोडा । षोण । रिडबनेका षंडा (मपानी) । शोर सेना ।
षाड पलका समय । दृषिवीध एक भाष । पूर्वक अनुपर
(नीचर) (पु०) । "दण्ड्+भावे षच् । राजाओंका चौपा
उपाय ।" दण्ड्+कर्त्तरि अच् (अ) । यमराज.

ण्डवता, (श्री०) दण्डक बनमें जनस्थाननामका वन.

ण्डकारण्य, (न०) दण्डवनामी राजाका देश (पुण्डकके
द्वारसे वन बनगया) । जनस्थानका वन । एक तीर्थ.

ण्डघर-घार, (पु०) दण्डं धारयति । धृ+भिच्+अच्
हलः अच् वा । दण्ड बरकइनेहाल । यमराज । राजा । कु-
म्भकार । कुम्हार । जिसके हाथमें षंडा है (त्रि०).

ण्डनायक, (पु०) १ त० । चार प्रकारकी सेनाका मा-
लिक । शोतवाल । सिपाही.

ण्डनीति, (श्री०) दण्डो नीयते (बोध्यते) यथा । नी+
क्तिन् । जो दण्ड (सजा देना)को बोधन करताहै । दृक्-
आदिसे बहाराया नीतिसाध । फौजदारीका कानून.

ण्डपाणि, (पु०) दण्डः पणो यम्य । प० ब० । जिसके
हाथमें दण्ड (सजा वा षंडा है) यमराज । वनायके
शिबजीका नाम.

ण्डपादप्य, (न०) दण्डेन पादप्यं यत्र । जहाँ सजासे
सहती है । अठारह प्रकारके विवाहों (श्रमणों)मेंसे एक ।
राजाओंका एक प्रकारका व्यसन (दुरी आदत).

ण्डविधि, (पु०) दण्डस्य विधिः । दण्ड (सजा)का नि-
यम (कायदा).

ण्डच्यूट, (पु०) (दण्डस्य च्यूटः=रचना । एक प्रकारके
सेनाकी पैकिओंमें सजा करना.

ण्डशालनं, (न०) दण्डविधायकं शास्त्रम् । दण्डवा विधान
करनेवाला शास्त्र । फौजदारी कानून.

ण्डाजिनं, (न०) दण्डः अजिनं च । दण्ड और मृगचर्म.

ण्डाज्ञा, (श्री०) दण्डस्य आज्ञा । दण्ड (सजा)की आज्ञा ।
सजाका हुक्म.

ण्डादण्डि, (अव्य०) दण्डेथ दण्डेथ प्रहस्य इदं प्रशतं युतं ।
क्रियाव्यतिहारे (जो एक क्रिया करताहै उसे देख दूसरामी
बैसाही करे) इच्+समा० पूर्वपदधीर्भः । आपसमें दंडोंकी
घोटके साथ बीगई सजाई । इंडमइंडा । काटमकाटि.

ण्डाधिप, (पु०) दण्डस्य अधिपः । दण्ड (सजा)का
सामी । बडा हाकिम । माजिस्ट्रेट.

ण्डानीक, (न०) दण्डस्य अनीकं । सैन्यविभाग । फौजका
हिसा । बरी टैज सेना.

ण्डाह, (त्रि०) दण्डस्य अहः=योग्यः । दण्ड (राजा)
देनेलायक.

ण्डाहत, (न०) दण्डेन आहन्यते । ला+हन्+क् । षंडेसे
घोट कियागया । तक । छाट.

दधिदन्, (पु०) दण्ड्+अक्षि अर्थे इति । जिसके पास षंडा
हो । यमराज । राजा । द्वारपाल (दर्शन) । सूर्यके पास
विचरनेहाल । जिनका भेद । चौथे आश्रमवाला । दण्डी ।
संन्यासी । काव्यादर्शनाम साहित्यभण्डके रचनेहाल एक
कवि । दण्डवाला.

दण्डय, (त्रि०) दण्डयितुं योग्यः+यच् । सजाकार । दण्ड देने-
योग्य (लायक) । युर्मानिके लायक.

दत्त, (त्रि०) दा+क् । विद्युट् । दियागया । छोडा गया ।
और रक्खा गया । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (दत्तक) ।
एकप्रकार वैश्यकी उपाधि । और दत्तात्रेयनामी भगवानका
एक अवतार "भावे क" दान देना और एकप्रकारका
दान (न०) । "स्त्रार्थे क्त् (क)" एकप्रकारका पुत्र ।
जिसे माता और पिता आपही देवे (पु०).

दत्ताप्रदानिक, (न०) दत्तात् आश्रदानं पुनः आदानं अक्षि
अस्मिन्+ञ्च् (इक) । अठारह प्रकारके विवाहों (श्रमणों)-
मेंसे एक (जिसमें सौगई बन्धुको फिर छेलेते हैं) । नार-
दने कहा व्यवहारका भेद.

दत्तात्मन्, (पु०) दत्त आत्मा येन । जिसने अपनेको आ-
पही देरिया है । एकप्रकारका पुत्र.

दत्त्रिम, (त्रि०) दानेन निर्भूतः । दा+त्रि-नेर्भृच् । दाननि-
भूत । देनेसे हुआ (बनगया) । जिसे माता पिता आप-
तिता समय जान आपही देवें । दत्तक पुत्र (पु०).

दद, दान देना । धीरज करना । भ्या० आ० सक० सेट् ।
ददते । अददिट् । ददते.

ददु, (पु०) दद+क् । एकप्रकारका रोग (दाद-पथी) ।
बहुआ.

ददुम (पु०) ददं हन्ति । ददु+ञ्च् । जो दादको दू
कताहै । यदमर्दक । दादमर्दन.

ददुण, (त्रि०) ददुं+अक्षि अर्थे न । दादकी बीमारीकाय.

ददू, (पु०) ददिश+ञ् (निपा०) । धीरके कमरका रोग
दाद । पथी.

ददू, देना । धारण करना । भ्या० अत्म० सक० सेट् । ददते ।
अददिट्.

दधि, (न०) दध्+दत् (इ) दधी । एकप्रकारका दूध
मिच्छा । और दधज (धा+क्ति) शिल्प । धारण करनेहाल
(त्रि०).

दधिहूर्विका, (श्री०) दहीके साथ दूध रक्का हुआ । आ-
निष्ठा (छाना) । गरम दूधमें सडा दही काकनेसे जो एक
बन्धु बनती है.

दधिसार, (पु०) १ त० । दहीका सार । नवनीत । मक्खन । भाखन.

दधीवि-च, (पु०) अथर्वमुनिका धारस (असली) पुत्र । कर्दमप्रजापतिकी कन्यामें उपजा एक मुनि । इन्द्र देवकी मारनेके लिये जिसकी हृदिअंष्टि देवताजोने वज्र बनाया था.

दनु, (श्री०) कदपपत्नी पत्नी (श्री०) । दक्षप्रजापतिकी कन्या । दानवमाता । राजसौंकी माता । दैत्योकी माता.

दनुज, (पु०) दनोत्रांपते । जन+उ । दनुसे उपजता है । अमुर । दैत्य.

दन्त, (पु०) दम्+तन् । सर्वपसाधन । चावनेका साधन । मुखमेंके दांत.

दन्तक, (त्रि०) दन्ते प्रकृतः+कत् । दांतोंमें लगाहुआ । दांत साफ़ करके जीनेहार । नागदन्त (खंटी) । पहाडसे टेढ़ा बाहिर निकलाहुआ पर्यर (पु०).

दन्तकाष्ठ, (न०) दन्तधावनार्थ काष्ठ । दांत साफ़ करनेका काष्ठ.

दन्तच्छेद, (पु०) दन्ताः क्षयन्ते अनेन । जिसे दांत छेके जाते हैं । छद्+निच्+प हसः । शोथ । होठ । ओठ.

दन्तधावन, (पु०) दन्तान् धावति (शोपयति) । धाव+ल्यु (धन) । सारि (सार)का इस । मोर बकुड । दागुन । "भावे स्तुद" । दांतकी सफ़ाई.

दन्तपत्रक, (न०) दन्त इव ध्रुवं पत्रं (दलं) यस्य । दांतकी नाई जिसका सफ़ाई पत्ता हो । कुन्दपुष्प । कुन्द-लगाका पत्र.

दन्तधीजक, (पु०) दन्तवन् धीजानि यस्य । जिसके धीज (धी) संतोंकी नाई हो । दाहिम । अनारका वृक्ष.

दन्तयक, (पु०) दन्तप्रधानं यकं अथ । जिसके मुखमें बड़े २ दांत हो । इन्द्रकीका विरोधी एक राजा.

दन्ताघात, (पु०) दन्तं आहन्ति । आ+हन्+अच् । निम्बूक । मिथु । "भावे यच्" । दांतोंसे घोट लगाना । दांत कुदीन.

दन्ताटिका, (श्री०) दन्तान् अटति (भूरजति) तेष्वो वा परांमेति । अल+अच् । वा ल्युच् (अट) । जो दांतोंमें मरना देता है । बाओ दांतोंके लिये पूरी है । बन्ना । अन्तम.

दन्तापट, (पु०) दन्त+अधि कार्यं कठञ् (पद्मिष्ठेशो पीपं ह्येत्) । दन्तेषु । हृष्टी । हृष्टी.

दन्तिन्, (पु०) दन्त+दिन् (इत्) । दन्तेकल । हाथी.

दन्तुर, (त्रि०) दन्तुः दन्तः एतन् अथ । दन्त+दत्+लृ । दन्तके लिये दांत हो । लंबे दांतका ; नीचे ऊपर करके.

दन्त्य, (त्रि०) दन्ते (दन्तमूले वा) मत् (इत्) । तकी जउसे निकल । दांतोंसे "निकले" उपसर्ग अक्षर "दन्तेभ्यः हितः+यत्" दांतोंके लिये दांतोंका हित करनेहार.

दन्दशूक, (पु०) गदितं दशति । दन्तु+भृद्वेत् इत् । शूरी तरहसे बसता है । सरकनेहार । कां.

दन्मू, दम्भ । पाखण्ड करना । खा० पर० बह० से भोति । अदम्नीत्.

दन्मूर, दंसन । उठाना । भ्या० पर० सक० अनिद्र । अदाहीत्.

दम्, प्रेरण । चलाना । मेजना । घुरा० उम० उ० इति । दम्भयति-त्वे । अददम्भन्-त्.

दम्भ, (न०) दम्भ+क् । अल्प । शोड । "अददम्भं शय्य" इति भाषिः.

दम्, शान्ति करना । दण्ड (सजा) देना । रोडना । अक० सेट् । दाम्भयति । अदमात् । अदमीत् । इत् दन्त्वा.

दम्, (पु०) दम्+यच् । दण्ड (सजा) । बाहिरके बाँध प्यान करनेकेयक नियमसे व्यतिरिक्त (उ०) बाँधे निवर्तन (इत्याना) । "बाहिरकी शक्तिमें नेको दम् कहते हैं" । विचार (विगडने) का हो । कट होनेपरमी मनका (स्थिर) कायम रहना । (छोटे) कामसे मनको इत्याना । बीबट । रोडन.

दमघोष, (पु०) शिशुपालका पिता । अन्वयेयं दामघोषन्ती, (श्री०) दम्+निच्+घञ् । नवउपसर्ग (श्री०) दमदोषकी लडकी । मरमन्त्रिण.

दमित, (त्रि०) दम्+क् । नि० । दान । रोडने शक्तियोंकी शक्तिओंको रोडनेहार । बोसा उठनेके लिये सहानेहार.

दमु (म्) नम्. (पु०) दम्+उत्तरति-वा पीपं । अन्वयेयं । कावयं (दैत्योका राजा वा पुत्र).

दम्पती, (पु० त्रि० ष०) जया य पतिव्य (इत्येत् शब्दको दम् आदेश होगा है) । मिलेहुए जो दो (मील साथिन्द)

दम्भ, (पु०) दम्भ+यच् (अ) । बगट । छट । अर्धुत्त । पाप । अभिमान । महर.

दम्भोदि, (पु०) दम्भोदि (धेरवति) दम्भ+उत्ते । नाम अक्ष । एक प्रकारका हस्तिवार । नीचेसे एक मनुष्य शिकरी बने डेजमें बने है.

दम्प, (पु०) दम्+यच् षञ् वा । बोसा उठनेका लिये पहुँकाना अथ (बसना) । मोर पैर । दम्पक (त्रि०).

दय, जाना। मारना। देना। और पालन करना। भ्रा० आत्म-
सक० सेद्। दयते। अर्धयित्।

दया, (स्त्री०) दय-भिरा० कर्। दय (कौशित) सेमी
द्वारेके दुःखको दूर करनेके लिये इच्छाका उपजना। मि-
हर्षांनी।

दयालु, (त्रि०) दय+आलच्। कृपायुक्त। दयावाला। रह-
मरित। "दयद्वरपि स दृग्" उद्भूटः।

दयित, (पु०) दय+क। पति (कामिन्द)। पियारा
(त्रि०)-ता। स्त्री (कौत) { स्त्री० }।

दय, (अन्व०) द+अच्। ईपत्। धोडा। डर। और गद्ग
(पु० न०)।

दयकण्ठिका, (स्त्री०) दयः कण्ठः मूलाः। अपने अर्धमें
कन्। विगयर कोई र (थोडा) कौटा हो। शतावरी।

दयद्, (स्त्री०) द+अर्ध। पदापर पानीका निरला
(प्रयात)। भय। पयैत। बाण। ज्येष्ठजातिभिर्येप।
और हृदय। दयद (पु०)। खगजाति।

दयिद्र, (पु०) दयिद्रा+अच् (काका छोर)। निषेध।
घनरहित (गरीब)। धीन (दुःखिया)।

दयिद्रा, सुरेहाल होना। गरीब होना। अदा० पर० सक०
सेद्। दयिद्राति। अर्धसिद्धो-अर्धदयिद्राणीत्।

दयुर्, (पु०) दुनाति कर्णौ दन्देः+उच्। आपावेषे जो
कानको दुःख देवे। चावल। मेटक (डू)। एक प्रकारका
बाग। एक पहाड। एकप्रकारका मशीका पात्र। दक्षिणमें
एक पर्वतका नाम जिसका संबंध मलयसे है। "सामाविष
दियन्मसाः शैली मलयदुर्दुरी" रघुः। एक प्रकारके चावल।

दयुर्, (स्त्री०) दयिद्रा+ऊ-नि०। (दाद)। रोगमेद। एक
प्रकारकी बीमारी।

दयुर्, (पु०) दयुर्+अच् वा अर्धपर। गर्व। गहर।
एक प्रकारका हिरन। अघारवा। छल।

दयुर्क, (पु०) दयुर्पति। दयुर्+मिच्+वृच् (अक)। काम-
देव। अभिमानको उपजनेद्वारा (त्रि०)।

दयुर्ण, (पु०) दयुर्+अच् (अन्)। कर्षी परछाही देवने-
का आधार (आधरा) आदर्य। धीरा। एक शुभचिह्न
पहाडका नाम।

दयुर्ध, (पु०) दयुर् (गांठना) +अच् (अ)। द+म वा।
"पुत्रा, काश, कबल, दौर्ण रोमकाले (सेत्रद्वंताले)
मौत्र और छादल" ये छ दयुर्ध कहे जातेहैं। कात आदि छ
प्रकारका पात्र।

दयुर्ध-वा, (स्त्री०)। द+मिन् वा वीप्। अग्रजन (बाल्या)
आदिको उठानेका साधन। देवकीसे बाल्या इतीसे निकाल-
करे और देवते हैं। कडकी। लकड़ी आदिका बनहुआ
वदार्थ। "सार्धं कन्" इती अर्धमे। और कोविड-
कला (धेन)।

दयुर्धिर, (पु०) दयुर्ध कः कर्णो यस्य। दयुर्ध कर्ण करोति
वा कडकीके समान जितका फल है अथवा जो कडकी-
की नाई फल बनाता है। "कन्+अच्" सर्प। सार।

दयुर्ध, (पु०) दयुर्धे (चात्रे) चन्द्रार्धतमो यन्।
दयुर्ध+अच् (अ)। जहाँ चांद और सूर्यका मेल होता है।
अमावास्या तिथि। यशसियेप। "दधेर्लामाराभ्यां यजेत्"
श्रुतिः। "भावे यच्" दर्शन। देवता। दयुर्ध+अच्।
देवनेद्वारा (त्रि०)।

दयुर्धक, (पु०) दयुर्धेति राजानं आगतान्। जो आवे हुयोकी
राजाका दर्शन करावे। दियानेद्वारा (त्रि०)।

दयुर्धन, दयुर्ध+अच् (अन्)। जिसे देवते हैं। आंत
(नेत्र)। क्षत्र (शुभता)। बुद्धि। धर्म। उपलक्ष्य।
शिलाहुआ (हासल)। धीरा। अभ्यास (अपनाआप)।
हानके उपाय। न्याय आदि धात्र।

दयुर्धनीय, (त्रि०) दयुर्ध+अनीयद्। मनोहर। दिलपंद।
देवनेलायक।

दयुर्धयिद्, दयुर्ध+मिच्+वृच्। दियानेद्वारा (त्रि०)। द्वारपाल
(दर्शन) दर्शनपर आवेहुओको राजाका दर्शन कराता
है (पु०)।

दयुर्ध, मेदम। काठना। लौठना। दलना। भ्रा० पर० सक०
सेद्। दलति। अदालीद्। "सिचि"। दयुर्धति-ने। अर्ध-
दयुर्ध-त।

दयुर्ध, (न०) दयुर्ध+अच्। कंचाई। दृक्क। सख्यद
(निमान)। अग्रव्य (सोड)। पत्ता। कादल। तमा-
लका पत्ता। आपा।

दयुर्धलित, (त्रि०) दयुर्ध+क। प्रकृत (फूलाहुआ-पिचलहुआ)।
तोडागया। आधा कियागया।

दयुर्ध, पति-जाना। भ्रा० पर० सक० सेद्। हरित। दयुर्धति।
अदमवीत्।

दयुर्ध, (पु०) दुनोति। दु+अच्। वन। जंगल। वनकी भाग
"भावे अच्"। स्वतार। गरीपी।

दयुर्ध, (पु०) दु-उ-उगमाप। गरम होना। लघुच्। धर्म।
अंग आदिची जलन।

दयुर्धसि, (पु०) दयुर्ध (वनस्य) अग्निः। जंगलकी भाग।
दावानल।

दयुर्धिष्ठ, (त्रि०) अग्निपेन दूः। इच्छु। अन्वहा कोर
और पुण। बहुत दू। "ईयसुन्"दयुर्धयु। यती अर्ध।
द्विर्वा वीप्।

दयुर्ध, धीति। धमकना। दंतन। बगना। पु० अन्व० सक०
सेद्। हरित। दंतयति। अर्धदंत। उम० "अक०"
दंतयति-ये। अर्धदंत-न।

दयुर्धक, (न०) दयुर्ध परिमाणं अयुर्ध+अच्। दयुर्धकी संदरा
(सिन्धी)।

दशकण्ठ, (पु०) दश कंठाः यस्य । जिसके दस गले हैं ।
दशमुख । दशवक्त्र ।

दशकर्म, (न०) दश कर्माणि । दश प्रकारका संस्कार ।
गर्भाधान, पुंगवन, सीमन्तोपसन, जातकर्म, नामकरण,
निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उर्ध्वनयन और विवाह ।

दशाक्ष, (पु०) दश परिमाणं अक्ष+अक्षि । दसोंका समूह ।

दशाद्या, (अक्ष०) दश+प्रकारे षाच् । दश प्रकारका ।

दशान्, (त्रि०) दशान्+कनिन् । दस एक संख्या ।

दशान, (पु०) दशवतेज्जनैः । जिससे दशजाना है । नि०
“नद्य लोप” दांत । जिसका “करणे लुट् (अन)” ।
कवच (जिरह) । “भावे लुट्” दशन (डमना) । दांत
आदिसे षोड छगाना ।

दशानोच्छिष्ट, (न०) दशनेन उच्छिष्टं यत्र । जहां दस-
नेसे जूटा होता है । शोड (होड) आदिका घुमना ।

दशायल, (पु०) दश बलानि यस्य । जिसके दस बल हैं ।
बुद्धुनि । दान, ईश, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल,
दया, प्रीति और हान ये दशबल हैं ।

दशभुजा, (स्त्री०) दश भुजा यस्याः । दस भुजावाली
दुर्गा (देवी) ।

दशम, (त्रि०) दशानां पूरणः+उटि-भट् । दशवां । जो दस-
वी संख्याको पूरा करते ।

दशानिन्, (त्रि०) पूरा अर्थमें+इनि । नश्वेसे ऊपरकी
उत्तरकाला । बहुत बूढ़ा ।

दशार्मा, (स्त्री०) दशानां पूरणी । दसोंको पूरा करनेवाली ।
दशनी त्रिपि । नश्वेसे ऊपरकी ऊपर । बहुत बूढ़ी उमर ।
काननेवही दशवी अवस्था (मरणकाल) ।

दशार्माम्ब, (त्रि०) दशानां अथवायां त्रिपि । स्वा+
(अ) । अतिरह । बहुत बूढ़ा । नश्वेसे ऊपरकी उमर-
काल । क्षीणत्व । जिसकी संसारके पदार्थमें प्रीति कीजी
होगे । स्मृतिहीन (जो बल बन्द नहीं रख गया) ।
तिरहने कीटकी हल्लको पशुवगये कामिथोका भोज ।

दशमूढ, (न०) दश मूढानि यत्र । जहां दस बूढ़े हैं ।
दशमूढाश्च यत्र (कानेगये अत्रको पवनेहय) । निम्ब,
दोनेक, कम्बुकी, पटला, कजिकरिका, कम्बुकी, शूलि-
पर्णी, दोने बुरही और सोहर ये दस मूढ हैं ।

दशार्थ, (पु०) दशसु विभु काने एते वक्ष्य । त्रिपिश्च एव
एते विचार्येते वक्ष्य । मूर्खोंकी हल्ला । श्रीगणेशकी विना ।

दशार्थमुत्त, (पु०) १ पु० । एतच्छब्द (दशार्थका पुत्र) ।
“दशार्थमुत्त” ।

दशार्थविह, (त्रि०) दशार्थेषु अत्र-उटि-भट् । दशार्थके
अर्थमें+इनि । दशार्थमें समान होनेका ।

दशविध, (त्रि०) दश विधाः=प्रकारः यस्य । दशविध
(तरह) का ।

दशसहस्रं, (न०) दश सहस्रानि । दश हजार ।

दशाहारा, (स्त्री०) दशविधानि दशजन्मात्रिकानि च एते
हस्ति । इ+उट् । दश प्रकार का दश जन्मोंके संपूर्ण
पापोंको दूर करती है । गंगाके जन्मका दिन । जेठ महीने
शुक्रपक्षकी दशमी ।

दशा, (स्त्री०) दशान्+खट् । नि० । नखेर । क्षय ।
हालत । दिवेंकी बसी (बही) । “अपेक्षान्ते न च भ्रं +
पात्रं न दशान्तरम् । परोपकारनिरता मनीषीना एते”
इत्युद्धृतः । वप्रान्त । आंचल (पद्मना) गंगातटकी
वालकपन । जवानी । बुटेया । कामसे उरनी शिरीमें
दसप्रकारकी हालत । सोनिनी दशा ।

दशाकर्ष, (पु०) दशया (तैलविकं) आकर्षति । दोह
से तेल आदिको खेंचता है । आ+कृ+प्रत् । प्रती ।
आ । बत्रायल । कपडेका पद्मना (आंचल) ।

दशाधिपति, (पु०) दशाया अधिपतिः । दशका हने
सुयं वा अन्य प्रह ।

दशान्त, (पु०) दशान्ताः अन्तः । बसीका अन्त (नि०) ।

दशाणं, (पु०) दश कृणानि (दुर्गाणि ज्वरानि च) एत
जहां दस फिरे वा पानी हैं । एक देव । ए
(स्त्री०) ।

दशाहं, (पु०) यदुपजाद्य देस । उग्र देवके ।
बहु० व० ।

दशावताट, (पु०) दश मीनादयोऽन्यथा यस्य ।
आदि जिसके दस अवतार हैं । विष्णु ।

दशाश्व, (पु०) दश अथा रथे यस्य । त्रिपिडे रथ
घोडे हैं । बन्द । चाँद । चंद्रमा ।

दशाश्वमेधिक, (पु०) दश अश्वमेधा अग्रण इत्य
अत्र+उट् (इड) । जहां अग्रणें दस अश्वमेध
हैं । काशीमें एक तीर्थसिंघेव है ।

दशाह, (पु०) दशानां अज्ञां समाहारः । दश-
दिन । “दशाहं एतकी भवेत्” इति स्मृतिः ।

दशोन्मथ, (पु०) दशा वर्तिष्वेव इत्यनेन वक्ष्य । एत
गदी लक्ष्मी है । प्रतीय । टीभा । टीषा । टी ।

दश, उभेय । पेंचना । सटना । दशा० वर० वर० ।
दशार्थ । अतएव-अदानी-अदानी ।

दश, दशनं । देगना । ईगन-दशना । पुग० वक्ष्य० ।
भेद । हरिन् । ईगयने । अदर्शन ।

दशसु, (पु०) दश+सु+ (अन्त आदेश बही देव) ।
दुःखन । एतु । अतएव-इति । बसा इति ।

दास्य, (न०) द+अप् । दास्य । लक्ष्मी । पील । और देवदास्य
(दिवार) वारीगर । फाड़नेहारा (त्रि०).
दास्यक, (पु०) कृपाशीला दास्यी (गाधी चलावेहारा).
दास्यण, (पु०) दास्यति चित्तं । द-अना+अनन् । विद्या
रंतरस और मयाक रस । ठपवना । दुःसाह । मीपण ।
भयका कारण (त्रि०).
दास्यसार, (न०) दास्यु सारं (श्रेष्ठं) । लक्ष्मीधर्मि बहुत
अच्छी लक्ष्मी । चन्दन.
दारुसिता, (स्त्री०) दारुमयी जिना (मपुरतान्) लक्ष्मीकी
मिथरी (मीठी होनेसे) । दारुचीनी । दालचीनी.
दास्येष्ट, (न०) दास्यन् निश्चलता व्यतिष्ठति अत्र । अद+क ।
जहाँ लक्ष्मीकी नाई चुपकाप होकर घूमते हैं । चिन्ताग्रह ।
सोचनेका पर । विचार करनेका पर । कचहरी.
दार्यावाट, (न०) (पु०) दास्यति आहन्ति । दन्+अप् वा
दान्तादेशः । एक प्रकारका पक्षी (काटयोच्छर).
दास्यी, (स्त्री०) दृग्भ्यु गी० दीप् । दिवारकी लक्ष्मी ।
हल्दी । गोविद्धा । दास्यहिया.
दास्य, (पु०) दुनोति (दु+अप्) । वन । जंगलकी आग ।
“मावे पम्” ताप (गर्मी).
दास्यग्निर, (पु०) दास्य (वनस्य) अग्निः । वनकी आग ।
“ दावानल ”.
दास्यिक, (त्रि०) देसिकायां (नयां) भवः । देसिका
नयीमें हुआ.
दास्य-म्, हिंसन मारना । खा० पर० सेट् । दास्ये (स्त्री०)-
ति । अदासी(स्त्री)न्.
दास्य, देना । पुण० उभ० सङ्० सेट् । दास्यति-ते । अदि-
दास्यन्-त.
दास्य-स, (पु०) दसति मन्थान् । दन्+अप् । नि० ।
जो मच्छिओको टमता है (पकड़ता है) “दास्यते मून्वे
अम् । दाम्+पम् वा” त्रिषे मोल दिया जाता है । दाम
(नाँकर) । मच्छिओरन जीनेवाला पीवर । मछी
पकड़नेहारा.
दास्यस्य, (पु०) दस्यस्य अयं अम् । जो दस्यस्य हो ।
धीरामकन्द । “प्रदीपना दस्यस्य मेपित्री” नाटकं.
दास्यगति, (पु०) दस्यस्य अयं+अन इष् । दस्य-
स्यकी छन्दान । धीरस्य, सदनस्य, मरन, सत्रुस्य.
दास्यार्हं (पु०) दस्यं (दानं) अर्हति । अर्ह+अप् । जो
दानके योग्य है । “ दस्यार्हस्ये भवः अम् वा ” दस्यार्ह-
बंरने उच्यते । विष्णु । दस्यार्हं देसमें जन्मा (त्रि०).
दास्य, देना । आ० टन० सङ्० सेट् । दास्यति-ते । अदासीन्-
अदस्यन्-त.

दास्य, (पु०) दाम्+अप् । दाम् । अनेके रंग
पीवर । दानके अयक । दस्यी उपाधि । “दस्ये (नि-
अम् अयादि । दाम्+पम् ” । त्रिने अर्हति क्षे-
दे । द्य और सेयक । “ त्रिना ” गदी.
दास्येय, (पु०) दाम्या अयंयं इक् (एव) । दस्ये
उपना । दाम् । “ दाम्य (पीराम्य) अयंयं इक् ” (नि-
पीररीकी छन्दान । व्यानटी मत्ता (स्त्री०).
दास्येर, (पु०) दाम्+एरक् । कंट । “ दाम्या दानं
(एव) । दासीका वेदा । कन्+अप् ।
दास्येरक, (पु०) मात्या देग । तस्य देसके सेन स्यु-
दाद, (पु०) दह्+पम् । मन्मीकरण । जलना । खड
शरीर आदिका तपना.
दास्यक, (पु०) दह्+प्युन् (अह) । विद्या इष् ।
विद्या । जलनेवाला (त्रि०) “ त्रिना ” इहिक-
दिकार, (पु०) दिसु कीवतेऽमी । ह्+अप् । जो दिसु
केजाय । तरण । जवान । सुवटी (स्त्री०).
दिस्यभ्रं, (न०) दिसां चक्रम् । दिसाओका मन्त्र ।
संघात.
दिस्यपति, (पु०) ६ त० । दिसाओका दिसर (दस्ये
“ इन्द्रो वदिः पितृपतिर्नृपतो वदयो महर । इन्द्रो
पतयः पूर्वोदीनमधीपतः ”.
दिस्यम्बर, (पु०) दिक् (शब्दं) एव अम्बरं दम । दि-
निसका कपडा है । शिवजी । एक प्रकारका बन्द । दस्ये
शरीरके माप जितना जोय मापेगा । बंदोने ए
नम (नंगा) (त्रि०) कसिका (स्त्री०) बीर । “ दिस्ये
कपटेकी नाई टाकनेसे ” । तम (अन्धकार-अनेक) (त्रि०)
दिस्यज, (पु०) ६ त० । पूर्व आदि दिसाओमें इन्द्रो
पकड़नेके लिये उदरेहुए एरावन आदि हाथी । “ दिस्ये
पुष्पटीको सामनः उमुद्रोअननः । पुष्पदन्तः सर्वान्
सुप्रतिपद्य दिस्यजाः ”.
दिस्य, (पु०) दिद+अप् । दिप (जहर) से दिपदुष्कर
(तीर) और बहि (आग) । “ मावे उ ” इह । दि-
नाई (वेड) और सेयन (न०) । “ कर्मि उ ” इह
“ दिवगहुआ ” (त्रि०).
दिस्याग, (पु०) दिसां नागः ४० त० । दिसाओका
(हाथी) । दिस्यज.
दिस्यिजय, (पु०) दिसां विजयः ४० त० । दिस्ये
भिजय (पीत) । संघारका विजय.
दिस्याय, (न०) दिसो मात्रा संघः । एक देस । एतयो
६ त० । बोदाया (त्रि०).
दिस्यी-टी, (स्त्री०) दोनका बीप् । किन् । देसके दस्ये
करनाई की । “ मावे दिस्यीन् नदी रोप ” देस

तेज, (पु०) दितेजायने । जन्+ञ (अ) । दिविने
उपजा । अमुर । दित्य । "दिविमुत्" यही अर्थ ।
सा, (स्त्री०) दा+सन्+अच् । देनेकी इच्छा ।
सु, (वि०) दा+सन्+उच् । देनेकी इच्छा करनेवाला ।
धेयु(धु), (पु०) दिधियुं आराम इच्छति+कच् कित् ।
उ० वा हलः । इययी वार विवाही गई श्रीका स्वामी ।
हारा धाविद् ।
धेयु, (स्त्री०) दिधि धियं स्मृति । सो क वा पलम् । जो
भीरवको सोझे । द्विभ्या । दोवार पिकाहीहुई भोरत ।
बही भगिनी (बहिन-भैत) के न होते छोटीका विवाह ।
"ज्येष्ठ्यां अनुयायां यस्यां ऊर्वायां कनिष्ठमग्निव्यां च" ।
धिपुपति, (पु०) १ त० । भाईके मरजानेपर जो
उसकी स्त्रीमें विपयभोगकी इच्छासे विवा धर्मसे अनुरक्त
होता है । इययी वार विवाहीगई श्रीका पति । विपकाका
पति । बहीके न निकहे जानेपर विवाहीगई छोटी बहिनका
पति । ईकी (बेका) का समम ।
धीर्मा, (स्त्री०) धृ+भाज्+इ । धारण करनेकी इच्छा ।
आध्य देनेकी इच्छा ।
न, (पु०) पति तमः । जो अधिकको काटता है । सुर्वधी
धिरगोषे पहिचाना गया (१०) गाठ घसी वा वार
पहिरका समय । दिन । रोज ।
नकर, (पु०) दिन करोति ओदयेन । क+टक् । जो
अपने उदयसे दिनको बनला है । सूर्य । सूरज ।
नक्षय, (पु०) विना दिन तीन दिविये इवरी आजाय ।
दिनका मास ।
नपति, (पु०) १ त० । दिनका पति सूर्ये । आकका इश ।
नमति, (पु०) दिने मयिः इव (प्रयास करनेसे) दिनके
समय मानो मयि धनक रही है । सूर्ये । आकका इश ।
नमुत्सम्, (म०) दिनस्य सुप्तम् । दिनका सुप्त । प्रातः-
काल । रातेरा ।
नर्यापनम्, (म०) दिनस्य रात्रिम् । दिनकी जगानी ।
दिनमध्य । पुपहित ।
मादि, (पु०) १ त० । दिनका प्रथम (प्रातः) । प्रातः-
काल । रातेरा । सुबह ।
नाम्त, (पु०) १ त० । दिनका अन्त । दिवसका अन्त-
काल । रातकाल । रात । रात ।
भू, वेरण । बनाना । पु० । इम० । रा० । सेट । इरिपु ।
दिग्गदिने । अतिरिभन्त ।
रूप, (पु०) सूर्यवंतमे होवेरूप एक राजा । सुबह दिन ।
इ, भीति । प्रयास होना । भा० । पर० । रा० । सेट । इरिपु ।
दिग्गदि । अतिरिभन्त ।
इ, तीन बहका-रूपे काला-भारत-रूप-अन्त-मेरु-
रूपी काका-पुपरीका-बनकाका । दि० । पर० । रा० । (२१)
रा० । सेट । इरिपु । अतिरिभन्त । इरिपु । इरिपु ।
प० । ३१

दिव, (स्त्री०) दिव्+गवि । स्वर्ग (बहिन) । आकका ।
आम्मान ।
दिव, (न०) दिव्+क । स्वर्ग । आकका । दिन । बन । जंगल ।
दिवस, (पु०) दीव्यन्ति अथ । दीव्+अगच् । दिन । रोज ।
दिवसमुग्र, (न०) १ त० । दिनका मुग्र (दुःख) ।
प्रमान । रातेरा ।
दिवसविगम, (पु०) दिवसम् विगम-प० त० । दिनका
थला जाना । रायं । रात । सुबान् ।
द्विपुपति, (पु०) १ त० । अलक राजा० (गम्य अन्त)
स्वर्गका पति । इन्द्र । देवताओंका राजा ।
द्विपुपुषिणी, (स्त्री०) द्वि० । दिवस व पृथिवी व । मि०
मुद् । स्वर्ग और पृथिवी । मिडेपु पृथिवी और स्वर्ग ।
जर्मान-आम्मान ।
द्विया, (अन्त०) दिव-का । दिवस । दिन । रोज ।
द्वियाकार, (पु०) दिवा करोति । दिन करना है । सूर्ये ।
कांजा । सूरजका कुल ।
द्वियाकीर्ति, (पु०) दिवं कीर्ति- कर्त्तुं इत्य । दिनका काम
दिनकीके समयमें है (रातको हजमका काम इमे है)
मायित । माई । माँभा ।
द्वियादन, (पु०) दिवा अरति । दिनके समय दूतका है
(रातको अंधा होजाता है) बीज ।
द्वियादन, (वि०) दिवा अन्त-उत्पुपुत् । दिवअन्त । दिग्ने
होनेवाला । अिदा बीर् ।
द्वियानिदाम्, (अन्त०) दिवा व निदा व लतेः कम्पुत् ।
दिन और रात ।
द्वियाग्र, (पु०) दिवा (दिने) अग्र (दल व मन्नेने)
जो दिनको अंधा होता है । लक् अरि । "दिग्गदि-
प्रतिन केविपु" कावी ।
द्वियाभीत, (पु०) दिवा (दिने) भीत । दिग्ने कम्पु
बहुभा । सेट । रा० । लक् । "दिग्गदि-प्रतिनकायु"
इति कुम्पु ।
द्वियामध्यम्, (न०) दिव-अन्त-कामम् । दिवका अन्त ।
मन्दिन ।
द्वियाग्रम्, (अन्त०) दिव व रात्रि-कामे कम्पुत् ।
दिन और रात ।
द्वियाग्रस्तानम्, (न०) दिव-दिनम् अन्त-काम । दिग्गदि
आन् (अन्त-काम) कायं । रात ।
द्वियाग्राय, (वि०) दिवा दिने-रात्रि-काम । जो दिनके समय
होनेहै ।
द्विदिग्ग, (पु०) दिग्ग अन्त-काम (अन्त-काम) कायं ।
दिग्गदि । दिग्गदि ।
द्विदिग्ग, (पु०) दिग्ग अन्त-काम (अन्त-काम) कायं ।
दिग्गदि । दिग्गदि ।

दाह, (न०) दृग् + अच् । बाह्य । लक्ष्मी । पीतक । और देवताह
(दियार) कारीगर । काहनेहाग (त्रि०) .

दाहक, (पु०) दृष्णीका कारवी (गरी नचनेहाग) .

दाहण, (पु०) दाहयति क्ति० । द-धरना + अच् । मित्रा
रात्रस और मयानक राग । हयवना । दुःगह । भीषण ।
मयका कारण (त्रि०) .

दाहसाह, (न०) दाह्यु कारे (धेठे) । लक्ष्मीकेमें बहुत
लक्ष्मी लक्ष्मी । चन्दन .

दाहसिता, (स्त्री०) दाहमयी मित्रा (मयुक्ताय) लक्ष्मीकी
मिचरी (भीठी होनेसे) । दाहचीनी । दाहचीनी .

दाह्येष्ट, (न०) दाहयन् निधयना कर्तव्य अय । अद्र + ष्ट ।
जहां लक्ष्मीकी नाई सुनकार होकर पूजते हैं । पिन्तागह ।
सोचनेका पर । रिचार करनेका पर । कलारी .

दाह्याघाट, (न०) (पु०) दाहमि आहन्ति । हन् + अच् का
दान्तादेशः । एक प्रकारका पत्ती (काटटोकर) .

दाह्या, (स्त्री०) दृग् + युच् गौ० बीच् । दियारकी लक्ष्मी ।
हल्दी । गोविद्धा । दाहदिया .

दाह्य, (पु०) दुनोति (दु + ष्य) । मन । जंगलकी आग ।
" भावे घञ् " ताग (घरनी) .

दावाग्रि, (पु०) दावल (वनस्य) अग्निः । वनकी आग ।
" दावानल " .

दाहिक, (त्रि०) देखिकायां (नयां) मयः । देखिका
नरीमें हुआ .

दाह्य-न्, हिंयन मारना । स्वा० पर० सेट् । दाहो- (स्त्री०)
क्ति । अदाही(सी)न् .

दाह्य, देना । पु० रम० सक० सेट् । दाहयति-ते । अदि-
दाह्यन्-त् .

दाह्य-य, (पु०) दहति मस्यान् । हन् + अच् । नि० ।
जो मच्छिओको टपता है (पकटता है) " दाह्यते मृत्ये
अर्थे । दाह्य + अच् का " जिसे मोल दिया जाता है । दाह्य
(नाकर) । मच्छिओपर जीनेवाला धीवर । मच्छी
पकडनेहाग .

दाह्यरथ, (पु०) दहारथस्य अर्थ अय् । जो दहारथका हो ।
श्रीरामचन्द्र । " प्रथीयतां दाह्यरथम मयिजी " नाटक .

दाह्यरथि, (पु०) दह्यरथस्य अर्थय + अन् हन् । दह्यरथ-
राजकी सन्तान । श्रीराम, रामण, भरत, चतुस्र .

दाह्यार्ह (पु०) दाह्यं (दानं) अर्हति । अर्ह + अच् । जो
दानके योग्य है । " दह्यार्हस्ये मयः अय् का " दह्यार्ह-
बंधमें उपजा । मिश्र । दह्यार्ह देसमें जन्मा (त्रि०) .

दाह्य, देना । भ्या० रम० सक० सेट् । दाहयति-ते । अदाही-
दाह्यति .

दाह्य, (पु०) दाह्य + अच् । ह्य । अनेने मय
धीर । दानके योग्य । अर्हति कर्त्तुः । " दह्यो (स्त्री०)
अर्थे अमतिः । दाह्य + अच् " । जिसे अर्थे देना
है । दाह्य और देना । " दह्यो " कर्त्तुः .

दाह्येय, (पु०) दाह्येय अर्थे ह्य (ह्य) । ह्येय
अर्थे । दाह्य । " दाह्येय (दीह्येय) अर्थे ह्य " (त्रि०)
धीरकी गन्तान । जगदी मय (श्री०) .

दाह्ये, (पु०) दाह्य + अच् । क्त । " दह्यो अर्थे
(ह्य) । दाह्येय देना । ह्य + अच् .

दाह्येय, (पु०) मयका देना । मय देनाके अर्थे ह्यः
दाह्य, (पु०) दृग् + अच् । मयकी देना । मयका । दाह्य
धीर अर्थेय माना .

दाह्यक, (पु०) दृग् + युच् (अच्) । मयका देना
मित्रा । जकनेहाग (त्रि०) " दह्यो " अर्थे .

दाह्य, (पु०) दह्यु कीयेवेदंगी । ह्य + अच् । जो देनाके
कंधनाय । हयग । जगन । गुडी (स्त्री०) .

दाह्यकथं, (न०) दह्या कथम् । दह्याओघ कथम् ।
मयार .

दाह्यपति, (पु०) ६ त० । दह्याओघ देवर (बनेन)
" दह्यो बधिः विन्युतिनेकणे बधो मयः । कुते
पययः पूर्वांटीतमधीयारः " .

दाह्यग्यर, (पु०) दह्य (शब्दं) एव अन्तरं मय । ह्येय
जिहवा कथय है । दिवती । एक प्रकारका बौद्ध । मयके
धीरके भाव जिनना जीव मानेहाग । बंधनेने ल
मय (नंगा) (त्रि०) कच्छिका (स्त्री०) दाह्य । " दह्यो
कथेदी नाई दाह्येय " । तमः (अन्वकार-अनेप) (त्रि०)

दाह्यगज, (पु०) ६ त० । पूरे आदि दह्याओघे ह्येय
पकडनेके लिये ठहरेहुए ऐरावत आदि हाथी । " दह्यो
पुच्छीको कामनः कुमुदोऽधनः । पुष्पदन्तः कर्त्तव्य
सुप्रतिषेध दह्यगजाः " .

दाह्य, (पु०) दह्य + अच् । दह्य (जहर) जिहवा
(तीर) और कडि (आग) । " भावे क " सेट् । नि
नाई (सेठ) और सेटन (न०) । " बर्मेन क " से
" दिवजानुवा " (त्रि०) .

दाह्यग, (पु०) दह्यां आगः य० त० । दह्याओघ
(हाथी) । दह्यग .

दाह्यजय, (पु०) दह्यां विजयः य० त० । दह्येय
विजय (जीत) । संसारका विजय .

दाह्यध, (न०) दह्यो माना अर्थः । एक देव । दह्यो
६ न० । घोषाटा (त्रि०) .

दाह्यी, (स्त्री०) दह्या अर्थे । क्विन् । दह्येयका
कथयकी स्त्री । " भावे क्विन्-धीर् नाई होय " दाह्य

ज, (पु०) गिनेजायते । जन्+ञ् (अ०) । दितिसे
पजा । अशुर । दैत्य । "दितिसुत" यही अर्थ ।
ज, (स्त्री०) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा ।
जु, (त्रि०) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा करनेवाला ।
जेषु(पु०) (पु०) दितिपुं आत्मन इच्छति+कच् क्त्वि ।
• का हस्तः । हमरी बार विवाही गई छोका स्वामी ।
राज्य स्थापित ।
जेषु, (स्त्री०) दिति धर्म स्तनि । सो ऊ का पलम् । जो
गिरजको तोड़दे । टिकुडा । दोवार विवाहीहुई भीरत ।
जी मगिनी (बहिन-अन) के न होते छोटीका विवाह ।
ज्येष्ठार्थं अनुदायां सर्वां ऊदायां कनिष्ठमगिन्यां च ।
जेषुपति, (पु०) ६ त० । माईके मरजानेपर जो
ससकी स्त्रीके प्रियभोगकी इच्छासे किंवा धर्मसे अनुरक्त
होता है । हमरी बार विवाहीगई स्त्रीका पति । विधवाका
पति । बर्षके न विवाहे जानेपर विवाहीगई छोटी बहिनका
पति । रैनी (बेका) का सतम ।
जीपों, (स्त्री०) पू+सन्+उ । धारण करनेकी इच्छा ।
आश्रय देनेकी इच्छा ।
जि, (पु०) यति समः । जो अंधिरेको काटता है । सूर्यकी
करणीसे पहिचाना गया (९०) गाठ यमी का चार
दिक्रका समय । दिन । रोज ।
जिबर, (पु०) दिन करोति श्लोद्धेन । कृ+उच् । जो
अपने उदरसे दिनको बनाता है । सूर्य । सूरज ।
जिहय, (पु०) जिम दिन तीन त्रियिसे इकठो आयाय ।
दिनका मास ।
जिपति, (पु०) ६ त० । दिनका पति सूर्ये । आकका इष्ट ।
जिमणि, (पु०) दिने मणिः इव (प्रकाश करनेसे) दिनके
समय मानो मणि चमक रही है । सूर्ये । आकका इष्ट ।
जिमुखम्, (न०) दिनस्य मुखम् । दिनका मुख । प्रातः-
काळ । सवेर ।
जिर्वायनम्, (न०) दिनस्य शौचनम् । दिनकी जवानी ।
दिनमध्य । पुषदिर ।
जिदि, (पु०) ६ त० । दिनका प्रारम्भ (शुरू) । प्रातः-
काळ । सवेर । पुषद ।
जिदन्त, (पु०) ६ त० । दिनका अन्त । दिवसका अन्त-
सान । सायंकाल । शाम । सांश ।
जि, प्रेरण । बलात् । पुष्ट० इभ० सच० सेद० इरिद० ।
दिम्भयति-से । अदिदिम्भयत्-त् ।
जीप, (पु०) सूर्यवंशमें होनेवाला एक राजा । खुश चिता ।
जि, मीति । प्रमत्त होना । म्भा० पर० सच० सेद० इरिद० ।
दिम्भयति । अदिन्वीत् ।
जि, जीत बाहना-शर्त लगाता-व्यवहार-इच्छा-अज्ञा-भेदना-
सुखि करना-पुसहोना-चमकना । दिवा० पर० अक० (और)
सच० सेद० । जीव्यति । अदेवीत् । देवित्ता । पूना ।
पद्य० १२

दिव, (स्त्री०) दिव्+दिति । स्वर्ग (बहिन) । आकाश ।
आस्थान ।
दिव, (न०) दिव्+क । स्वर्ग । आकाश । दिन । मन । जंगल ।
दिवस, (पु०) दीन्यति अत्र । दीव्+असच् । दिन । रोज ।
दिवसमुख, (न०) ६ त० । दिनका मुख (शुरू) ।
प्रभात । सवेर ।
दिवसविगम, (पु०) दिवसस्य विगमः-प० त० । दिनका
बला जाना । सायं । सांश । सूर्यास्त ।
दिवस्वपति, (पु०) ६ त० । अलकू समो (सदा भागम)
स्वर्गका पति । इन्द्र । देवतागोंका राजा ।
दिवस्वृषिधी, (स्त्री०) दि० । दिवस्+पृथिवी च । नि०
मुद् । स्वर्ग और पृथिवी । मिटेहुए पृथिवी और स्वर्ग ।
जमीन-आस्थान ।
दिवा, (अन्व०) दिव-ना । दिवस । दिन । रोज ।
दिवाकर, (पु०) दिवा करोति । दिन करता है । सूर्ये ।
कांशा । सूरजका फूल ।
दिवाकीर्ति, (पु०) दिवैव कीर्ति-कृत्यं बल । जितका काम
दिनहीके समयमें है (रातको हममतका करना मने है)
नामित । नाई । नौशा ।
दिवाटन, (पु०) दिवा अटति । दिनके समय घूमता है
(रातको गथा होजला है) कीआ ।
दियातन, (त्रि०) दिवा भव+उपु-पुद् । दिवाभव । दिनमें
होनेहाए । खियां दीप् ।
दियानिशम्, (अन्व०) दिवा च निशा च तयोः समाहारः ।
दिन और रात ।
दियान्ध, (पु०) दिवा (दिने) अन्धः (देख न करनेसे)
जो दिनमें अंधा होगा है । उम् । आदि । "दियान्धाः
प्राग्निः केचित्" शब्दी ।
दियाभीत, (पु०) दिवा (दिवसे) भीतः । दिनके समय
बराहुआ । खोर । बाँद । उम् । "दियानीतनियान्धकारम्"
इति पुष्करः ।
दियामध्यम्, (न०) दिवा=दिवस मध्यम् । दिनका मध्य ।
मध्यदिन ।
दियारात्रम्, (अन्व०) दिवा च रात्रिश्च तयोः समाहारः ।
दिन और रात ।
दियापस्थानम्, (न०) दिवा=दिवस अस्तानं । दिनका
अन्त (आखिर) सायं । सांश ।
दियाशय, (त्रि०) दिवा सेवे+शी+अ । जो दिनके समय
सोचदे ।
दिविज, (पु०) दिवि जयते (जट्+उ) अउच् सन् ।
सर्पका । दिविभव ।
दिवियद्, (पु०) दिवि हीरति त्रिप्-बन् । स्वर्गमें रहने-
हाए । देवता ।

दाघ, (न०) दृ+घृ। काठ । लकड़ी । पीतल । और देनाघ
(दिया) कारीगर । फाड़नेहार (वि०) ।

दाघक, (पु०) कृष्णतीका कारपी (गायी चकनेहार) ।

दाघण, (पु०) दाघणि चित्तं । द-घरना+घनन् । चित्रा
रंद्रिय और भयानक रग । डपवना । दुःगह । भीषण ।
भयका कारण (वि०) ।

दाघसार, (न०) दाघु सार (धेठ) । लकड़ियोंमें बहुत
थकड़ी लकड़ी । चन्दन ।

दाघसिता, (स्त्री०) दाघमी सिता (मपुरलात) लकड़ीकी
मिश्री (भीठी होनेसे) । दाघीनी । दाघनीनी ।

दाघैट, (न०) दाघवैट निघलनया अटमि अत्र । अट+क ।
जहाँ लकड़ीकी नाईं चुपचाप होकर घूमते हैं । चिन्तापूह ।
सोचनेका घर । मिथार करनेका घर । कुहरी ।

दाघाघाट, (न०) (पु०) दाघणि आहन्ति । हन्+अण् वा
दान्तादेशः । एक प्रकारका पशी (काटनेकर) ।

दाघी, (स्त्री०) दृ+शुष् + गी० डीप् । दियारकी लकड़ी ।
हल्दी । गोजिहा । दाघइरिदा ।

दाघ, (पु०) दुनोति (दु+घ) । घन । जंगलकी आग ।
“मावे घम्” ताप (गरमी) ।

दाघाघि, (पु०) दाघल (वनस्य) अग्निः । वनकी आग ।
“ दावानल ” ।

दाघिका, (वि०) देविकायां (नयां) भवः । देविका
नदीमें हुआ ।

दाघ-ए, हिंघन मारना । खा० पर० सेट् । दाघो- (छो)-
ति । अदायी(सी)न ।

दाघ, देना । चु० र० र० सक० सेट् । दाघायति-से । अदि-
दाघत्-त ।

दाघ-घ, (पु०) दशति मस्यान् । दन्तु+पय् । नि० ।
जो मच्छिओंको चसता है (पकड़ता है) “दाघते मूल्ये
अग्ने । दाघु+पय् वा” जिसे मोल दिया जाता है । दाघ
(नांहर) । मच्छिओंपर जीनेवाला धीवर । मछड़ी
पकड़नेहार ।

दाघारघ, (पु०) दशरघस अयं अण् । जो दशरघदा हो ।
धीरामचन्द्र । “प्रधीयतां दशरघाय मैषिणी” नाटकं ।

दाघारघि, (पु०) दशरघस अपयं+अत इप् । दशरघ-
राजकी सन्तान । धीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ।

दाघाहं (पु०) दाघं (दानं) अहंति । अहं+अण् । जो
दानके योग्य है । “ दगाहंवेभ्यो भवः अण् वा ” दगाहं-
भंगमें उपजा । मिश्रु । दगाहं देशमें जन्मा (वि०) ।

दाघ, देना । भ्वा० र० र० सक० सेट् । दाघयति-से । अदायी-
अदायि ।

दाघ, (पु०) दाघ+अत । शर । सनेछे मं-
धीर । दानके योग्य । शत्रुकी शक्ति । “अग्ने (ई-
अग्ने) अत्रादि । दाघु+पय ” । जिसे अन्न देकर
है । एव और मेवक । “ प्रियां ” दगी ।

दासेय, (पु०) दाघ्या अयं दत् (एव) । दत्ति
उपजा । दाघ । “ दाघय (धीरय्य) अतं दत् ” (वि०)
धीररकी सन्तान । व्यागकी भाजा (श्री०) ।

दासेर, (पु०) दाघ+एरच् । कंट । “दाघ्या अनेक
(एव) । दाघीका घेडा । कन्+अण् ।

दासेरक, (पु०) माघ्या देव । उग देवके लोग गु-
दाघ, (पु०) दह+पय् । मग्नीकरण । जलना । खट्ट
शरीर आदिका तपना ।

दाहक, (पु०) दह+गुच् (अह) । चित्रा इन्द्र
चित्रा । जलनेवाला (वि०) “ प्रियां ” दहैट ।

दिघर, (पु०) दिघु कीयंतेऽमां । ह्+अर् । जो दिग्-
कंचनाय । तपन । ज्ञान । युवती (स्त्री०) ।

दिघयंत्रं, (न०) दिघां चक्रम् । दिघाओंका घूर्णन
संघार ।

दिघपति, (पु०) ६ त० । दिघाओंका ईश्वर (देवता)
“ इन्द्रो वासिः विनृपतिर्नृणो वरुणो मरुत् । इन्द्रो
पतयः पूर्वाचीनानवीथराः ” ।

दिगम्यर, (पु०) दिक् (इत्यं) एव अम्वरं वम । दिग्-
जिसका कपडा है । शिवनी । एक प्रकारका बौद्ध । कर्ण
शरीरके मांस जितना जीव मांसहार । बंदोने से
नम (नंगा) (वि०) कच्छिका (स्त्री०) डीप् । “ दिग्-
कपडेकी नाईं बाकनेसे ” । तमः (अन्वकार-अणो) (वि०)

दिग्गज, (पु०) ६ त० । पूर्व आदि दिशाओंमें इन्द्र
पकड़नेके लिये उदरेहुए ऐरावत आदि हाथी । “ इन्द्रो
पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽज्रनः । पुष्पदन्तः सर्वभू-
सुप्रतिकथ दिग्गजाः ” ।

दिग्घ, (पु०) दिह्+क । विप (बहर) से लिपगुण
(वीर) और वहि (आग) । “ मावे क ” कंठ । सि
नाईं (वेठ) और लेपन (न०) । “ इमं क ” से
“ लिबगाहुआ ” (वि०) ।

दिग्गाघ, (पु०) दिघां नागः घ० त० । दिशाओंका
(हाथी) । दिग्गज ।

दिग्घिजय, (पु०) दिघां विजयः घ० त० । दिग्घ-
विजय (जीत) । संसारका विजय ।

दिघ्यात्र, (न०) दिघो मात्रा मंत्रः । एक देश । (त०)
६ व० । घोडाला (वि०) ।

दिति-वी, (स्त्री०) दो+वा वीप् । किन् । वैश्वेदेव
कश्यपकी स्त्री । “ मावे चिन्-वीप् नईं होय ” होय

दिवो(वी)कम्-स, (पु०) दिवि-दिवं वा ओङ्क् यम्
 प० अक्षरान्त भी होता है । देवता (जिसका स्वर्गमें
 स्थान है) । "तारकेय दिवोक्तसः" इति कुमारः ।
 दिवोदास, (पु०) चंद्रवंशमें काशीनगरीका एक राजा ।
 दिव्य, (न०) दिवि मर्त्तं वृत् । लौक्य । चंद्रन । शय्य (क-
 सम-सी) । गुग्गुल । स्वर्गकी चीज । एक प्रकारका मायक
 (पु०) "दीव्यते अनेन-दिव्-भयम्" । मनोहर । सुन्दर ।
 अजीव । चमकील्य (त्रि०) ।
 दिव्यगन्ध, (पु०) दिव्यो मनोहरो गन्धोऽस्य । जिसका म-
 नोहर गंध है । गंधक । लौक्य (न०) । छोटी इलायिची
 (स्त्री०) । कर्म० वत्तन गंध (पु०) ।
 दिव्यगायन, (न०) कर्म० । अजीव गानेहारा । गंधर्व
 (देवताओंका गंधर्वा) ।
 दिव्यचक्षुस्, (पु०) दिव्यं चक्षुः यस्य । जिसकी अजीव
 आंख हो । जिसके सुन्दर नेत्र हो । जो ज्ञानकी आंख
 रहता है । अंधा ।
 दिव्यमानं, (न०) दिव्यं ज्ञानं क० म० । विचित्र (स्वर्गीय
 वा हेरात करनेवाला) ज्ञान (समस्त) । आश्चर्यज्ञान ।
 दिव्यतेजस्, (स्त्री०) दिव्यं तेजो यस्याः । जिसका आश्चर्य
 तेज हो । प्राणी बना । एक प्रकारकी बेल ।
 दिव्यदत्त, (पु०) दिव्यं पश्यति तप० त० । आश्चर्य रूपसे
 देवानेकला । ज्योतिषी ।
 दिव्यदोहद, (न०) अनीतमिदि (बालीगर्द चीजकी का-
 मकारी) के दिव्ये जो पदार्थ देवताओंको दिया जाता है ।
 दिव्यप्रभ, (पु०) दिव्यः प्रभः । स्वर्गीय (आश्चर्यजनक)
 बनोका पृष्ठना । भारी वृत्तोंका पृष्ठना ।
 दिव्यमानं, (न०) दिव्यं मानं क० म० । आश्चर्य मान ।
 देवताओंके बर्त और दिव्यके अनुगार समयका परिमाण ।
 दिव्यरस, (पु०) दिव्यः रसः । स्वर्गकी गूदी । आकाशमें
 बजती है ।
 दिव्यप्रभ, (त्रि०) दिव्यानि वप्राणि यस्य क० म० । जिसके
 दिव्य रस है । स्वर्गकी पीलाकला । -स्यः (पु०) धूर ।
 दिव्याहना, (स्त्री०) दिव्या अहना । कर्म० त० । स्वर्गकी
 अहसा । अन्त सुन्दरी भारी ।
 दिव्यादिव्य, (त्रि०) दिव्यं अदिव्यं । दिव्य (स्वर्गीय)
 अदिव्य (मनवीय) । अन्त मनुष्य और लाया देवता ।
 दिव्यान्त, (पु०) दिव्यः अन्त यस्य क० म० । स्वर्गकी
 बजतीय दिव्योत्तना । धूर ।
 दिव्योदकं, (न०) दिव्यं उदकं । स्वर्गका अन्न । वहां
 (कर्म०) का वृत्त ।
 दिव्योपधि, (स्त्री०) कर्म० । मन दिव्यः । गेतिप्रदि ।
 अर्धिव उदकं ।
 दिव्य, इन देव । दृग्-दृग् । दृग्-दृग् । दृग्-दृग् ।
 दृग्-दृग् । अर्धिव

दिव्य, भा, (स्त्री०) दिग्+क्रिप् । अन्त (दिव्यो-
 दिग्ना, (स्त्री०) दिग्+अद् । धोर ।
 दिशोमान्, (पु०) दिशः भजति मन्-सर्व ।
 धर्मों भागनेवाला । कांदिरीक । चण्ड ।
 दिश्य, (त्रि०) दिशि मर्त्तं-...
 होनेवाला । दिशाओंसे लायागया । जो कुछ दिव्य है
 दिष्ट, (न०) दिग्+क्त । माय । क्लिप्त । कन (त्रि०)
 (पु०) । उपदेश कियागया (त्रि०)
 दिष्टान्त, (पु०) दिष्ट्य (मायस्य) अन्त । अन्त
 अन्त । मरण । मौन ।
 दिष्टि, (स्त्री०) दिग्+भावे क्तिन् । चंद्रानांभर्त्तं
 वा । भय्य । अपना भाग । किम्मत । भारी । दिष्ट
 अच्छा भाग्य । कोड़े मंगलहृत्तान्त ।
 दिष्ट्या, (अन्त्य०) मज्जल । हर्ष । भाग्यते । मैं बहुत
 दिष्ट, लेपन । लीपना । बंदन आदि लगाना । अर्ध-
 सक्र-अनिद् । देवि-दिग्धे । अदिस्त-अदिस्त ।
 दी, धय । घटना । नाचहोना । दि० आ० अ० अर्ध-
 यते । अदास्त । दिग्धे । दीन-
 दीक्ष, मुंडवाना । यज्ञोपवीत करना । नियम वा प्रती
 करना । म्वा-आत्म-सक-सेद् । दीयते । अर्ध-
 दीक्षा, (स्त्री०) दीक्ष+अ । नियम । सत्कार "भारते
 निरवर्तयद्दुः" इति श्रुः । असीध देवदारा मन्त्र
 (तन्त्रमें) । मन्त्रका उपदेश और यज्ञ । देवी ।
 दीक्षागुह, (पु०) मन्त्रआदिचा उपदेश करनेवाला
 उपदेशका दाता ।
 दीक्षान्त, (पु०) दीक्षायाः (प्रधानभाग्य) अन्त (त्रि०)
 भागको भागनेदः) । अवश्यव्यप यागनेद । अर्ध-
 धनमें जो उसका अग्रहण छोड़ा यज्ञ किया जाता है
 दीक्षित, (त्रि०) दीक्ष+क्त । शोमयाग आदिमें यज्ञ
 रके नियम दिया गया । "दीक्षा यथा अस-भारतु"
 गने तन्त्रके अनुगार दीक्षा (मन्त्रका उपदेश) है
 दीक्षि, (पु०) दिग्+क्रिन्-अन्त्याय और लीपं ।
 (देवताओंका गुह) । अन्त (पु० न०) । उदगुह
 दाहुआ (त्रि०) । उदगुह कायन (पु० न०) ।
 दीक्षिति, (स्त्री०) दीक्ष+क्रिन्-अन्त्याय और लीपं ।
 धरण । दाहा ।
 दीन, (त्रि०) दी+क्त तको न । दुःखित । निर्धन
 (दृग्दुःखा) । तगरका वृत्त (न०) ।
 दीनार, (पु०) दी+आत्क-नुद । गोलेका वृत्त (त्रि०)
 जेवर । मोहर । कर्मीय रत्नीवर गोला । मोनेद
 दीर्, दीपि । चन्द्रका । दिश-अन्त्य० अर्ध-वे । दीर्
 अर्धिव अर्धिव । दीप ।
 दीर्, (पु०) दी+क्त । प्रदीप । दीर् । दिग् ।
 अर्धिव प्रदीपका दीर् ।

दीपक, (पु०) दीप्+स्थापे क्त्वा । दिला । बाज पक्षी । एक प्रकारका रंग । बेगर । एकप्रकारका अर्धांशुकार (न०) । बुवाल । कामको प्रकाश करनेहारा (वि०) "दियां टाप्-अने ह्" । एक ग्रंथका नाम ।

दीपन, (पु०) दीपयति भक्षणत् जटपतिं वनेत्रयति । दीप्+निच्+स्तु (क्षन) । जो खानेसे पेटकी आगको भक्षणता है । तगरकी अन्न । पलाण्डु (प्याज) । बेसर । जो शांसीको दूध करनेहारे । चमकानेवाला (वि०) । मेधी (स्त्री०) ।

दीपनीय, (वि०) दीप्+अनीय । प्रकाश करनेयोग्य । जगनेलायक ।

दीपमालिका, (स्त्री०) दीपानां माला यस्यां कृष्ण अक्षो ह् होयी है । जिसमें दीबोंकी कतार हो । दीबोंवाली आभा-बसा । दीबाली । ६ त० । दीबोंका समूह ।

दीपित, (वि०) दीप्+कृ । आगमें जलाया गया । प्रकाश किया गया । लेज किया गया ।

दीपित्, (वि०) दीप्+निनि । प्रकाश करनेवाला । जगने-वाला । चमकानेवाला । रोशन करनेवाला ।

दीप्त, (पु०) दीप्+कृ । नीत्र और मिद (सोर) । सोरा और हीग (न०) जलहुआ । घडाहुआ । चमकहुआ । चमकील (वि०) ।

दीप्तजिह्वा, (स्त्री०) दीप्ता ज्वलन्ती जिह्वा यस्याः । जिसकी जीभ जलरही है । जलकामुणी (चुआसीसुर्द) । एक प्रकारकी गीदरी । (इसकी जीभ रातको जलनी है यह प्रसिद्ध है) ।

दीप्तमूर्ति, (पु०) दीप्ता मूर्ति । यस्याः । चमकरही मूर्तिवाला । सुये वा मिथुन ।

दीप्तलोचन, (पु०) दीप्ते लोचने यस्य । चमकदार आंखों-वाला । विद्या । विशाल । विशी ।

दीप्ताग्नि, (पु०) दीप्तः अग्नि जटयन्ते यस्य । जिसकी पेटकी आग चमक रही है । अगहलमुनि । लेज पेटकी आगवाला (वि०) ।

दीप्ति, (स्त्री०) दीप्+कृ+त् (ति) । कान्ति । बहुत बजगई सुन्दरता । विशेष एक प्रकारका गुण । चमक । भरक ।

दीप्तिमत्, (वि०) दीप्ति+मत् । प्रकाशवाला । चमकदार ।

दीप्य, (वि०) दीप्+यच् । प्रकाश करनेलायक । जगनेलायक ।

दीप्यं, (पु०) दीप्+यच् (श्चोयच्-श्रुषिच्) । लगा । चालका हुआ । ऊँठ । दो मात्राका अक्षर जैसे "आ" । संज्ञा (शा-यत्) (वि०) ।

दीप्यकण्ठ, (पु०) दीप्यं कण्ठे यस्य । जिसका कंठा चमका हो । बक । बगुला । संज्ञे बनेवाला (वि०) ।

दीप्यप्रतिष्ठ, (पु०) दीप्यं प्रतिष्ठः पदे यस्य । जिसकी सोँठ संज्ञी हो । गजपिप्लीही ।

दीप्यंभीव, (पु०) दीप्यं भीवा यस्य । संज्ञी गर्दनवाला ऊँठ ।

दीप्यच्छद, (पु०) दीप्यः च्छदा यस्य । जिसके कंठे पते हैं । शृङ्ग । गन्ना ।

दीप्यजङ्घ, (पु०) दीप्यं जङ्घा यस्य । जिसकी लंबी छातें हैं । ऊँठ । बगुला ।

दीप्यजिह्वा, (पु०) दीप्यं जिह्वा यस्य । जिसकी लंबी जीभ है । सर्प । साँप ।

दीप्यतपस्व, (पु०) दीप्यं तपः यस्य । कंठे तपवाला । अद-ल्याका पति गोतमकृपि ।

दीप्यदंतिन्, (पु०) दीप्यं दन्ति पश्यति । दन्तु+निनि । दूखे देखनेहारा । दूरदर्शी । परिश्रत और शीघ्र (मूढक) । आ-नेवाले कामको जाणेहारा । दूरसे देखनेवाला (वि०) ।

दीप्यदृष्टि, (पु०) दीप्यं दृष्टिः अस्य । जिसकी लंबी नजर हो । परिश्रत । दीप्यं दूरगा दृष्टिः यया । ३ ब० । दूर जाती है नजर जिससे । दूरवीक्षण । दूरबीन । एकप्रकारकी बला ।

दीप्यनाद, (पु०) दीप्यं नादः अस्य । (दूर जानेसे) जि-सकी लंबी आवाज हो । शंख (इसका मध्य दूर जाता है) ।

दीप्यनिद्रा, (स्त्री०) कर्म० । लंबी नींद । मृत्यु (नील) । बहुत देरकी नींद ।

दीप्यपहस्य, (पु०) दीप्यं पादः अस्य । जिसका लंबा पाता हो । सनका हुआ । "कर्म०" लंबा पाता (पु० न०) । कंठे पतनेवाला (वि०) ।

दीप्यपादप, (पु०) कर्म० । लंबा हुआ । हाडका दरारत । सुगतीका वृक्ष ।

दीप्यपृष्ठ, (पु०) दीप्यं पृष्ठ अस्य । जिसकी लंबी पीठ हो । सर्प । साँप ।

दीप्यरगा, (स्त्री०) दीप्यं (बहुकालस्थायी) रगो (रत्नं) यस्यः । जिसका रंग बहुत देरतक रहता है । हरिया । हल्दी । बना पियार करनेवाली भीरत ।

दीप्यरात्र, (न०) कर्म० । लंबीरात । ७ ब० । बहुत रात-वाला । देरतक ।

दीप्ययन्त्र, (पु०) दीप्यं यन्त्रं यस्य । कंठे सुगन्धला । हारी ।

दीप्यसत्र, (न०) कर्म० । बहुत कालमें होनेवाला एक प्रकारका यज्ञ । ६ ब० । उग्र यज्ञको करनेहारा (वि०) "द्विदे दीप्यसत्रस्य सा वेदार्थी प्रवेण" इति श्रुः ।

दीप्यसूत्र, (वि०) दीप्यं (बहुकालेन) सूत्रं (अविनशित-कर्म) यस्य । जिसका यज्ञवाक्य काल देरसे होता है । श्रावण दिनेगरे कामको देरसे समाप्त करनेवाला । जिसकी "कर्म" लंबी मान (न०)

दीप्योपुष्प, (पु०) दीप्यं अपुष्पं यस्य । जिसकी लंबी टहन हो । कर्पूरपत्र ।

दीप्योपुम्, (पु०) दीप्यं अपुम् (अश्रुतकठ) यस्य । जिसका अनेका समय लंबा है । सोना । जिसका पेट ।

दशा, (स्त्री०) दुष्टा भासा । बुरी भासा (उम्मीद) ।
 त्रुद्ध, (त्रि०) दुष्टेन भासयते (पम्बते) अर्था ।
 जिसके दस बहूषणा कठिन है । दुर्+भा+सद्+सत् ।
 दुर्मय्य । दुर्मयं । जिसका साधना नहीं कर सके । "बभूव
 दुर्गमरः" इति रघुः ।

दश, (न०) दुष्टं दशं (गमनं) नरकारिभ्यः अनेन ।
 जिसने नरक आदि बुरे स्थानकी प्राप्ति हो । पाप । दुष्ट
 काम । थोडा चलन ।

दा, (न०) दुष्टं लक्षं । दुष्टा कदागवा । क्षाप । दानत ।
 द्योद, (त्रि०) दुःखेन उच्छिद्यते अर्थो । दुर्+उद्+
 श्छिद्+सत् । जिसे मुश्किलसे हटाना जाय । दुर्बिकार ।

दाद, (त्रि०) दुष्टेन उच्छिद्यते । दुर्+उद्+शु+सत् ।
 जिसे कठिनतासे तराके । दुस्तर । "दुष्टं उच्छिद्यं" दुष्ट
 उच्छिद्य (न०) ।

दाद, (त्रि०) दुष्टेन उच्छिद्यते (विलसयंते) । "जहद्+
 सत्" । जो बहुत दुःखसे सफलमें लया जाय । दुर्बिकार ।

दाद, (पु०) दुष्टं समन्तदः उच्छिद्यते । चारों ओरसे
 जिसका परिणाम (नतीजा) धराय हो । दुष्ट दे देष्ट जि-
 सका । दुष्टकार । दुर्कारिभा । पाप । दानं । दा । दास्या ।
 दूभा (न०) "दुरोदरच्छत्रहृता" भारविः ।

दा, (पु०) दुष्टेन गम्यते अर्थो । कर्मणि ङ । जिसके पाप
 मुश्किलसे पहुँचके । एक देव । उस देवको मारनेहारी
 देवी (स्त्री०) । "दुष्टेन गच्छति अयं" दुर्+गम्+आधा-
 रे ङ । जहाँ पहुँचना कठिन है । रोगा देश पर्वत ओ
 आरिये कठिन स्थान बनगया । थोडा । किला । गद
 (न०) । दुर्गमदेश । कंवा । दु राते मिलनेलक्षक (त्रि०) ।
 काम कथेय आदि दु खके धरण कठिनतासे तराजानेवाला
 संसार (न०) ।

दा, (त्रि०) दुर्गच्छति । दुर्+गम्+क् । दोषको प्राप्त
 हुआ । बुरी दशामें पहुँचा ।

दा, (स्त्री०) दुर्+गम्+क् । बुरी दशा । नरक ।
 निर्धनता ।

दा, (पु०) दुष्टः गन्धः । बुरी गंध । ६ व० । बुरी गंध-
 वाला (त्रि०) गंधा (पु०) ।

दा, (स्त्री०) ६ व० । दुर्गां (देवी) धी नवमी ।
 कार्तिकके छत्रपक्षकी नवमी (दश दिन जगदानीनमक
 दुर्गाकी पूजा होती है) ।

दा, (त्रि०) दुष्टः जनः । बुरा आदमी (जिसकी मार
 आचरण (बालकलन) करनेसे साधु (भला) भी दूषित
 हो जाता है) । नीच (पु०) ।

दा, (त्रि०) दुर्+अर्+ञ्ज । दुःखेन जय यस्य । जो
 मुश्किलसे पुरानी हो । बह पदार्थ जो मुश्किलसे जीर्ण होता
 है । प्योनिष्पटी रत्ना (स्त्री०) ।

दुर्जात, (न०) दुष्टं जातं । प्रा० । व्यसन (बुरीआदत) ।
 भाव (सुखीकरण) ६ व० । जो अच्छा नहीं हुआ और
 अनुचित (गामुनायिच) (त्रि०) ।

दुर्गामा, (त्रि०) दुष्टं निश्चितं नाम अस्व । बुरेनामवाला ।

दुर्गाम्ना, (पु०) दुष्टं दान्तं (दमनं) यत्र । जहाँ रोचना
 मुश्किल है । कलह (सगडा) । दुःखेन दम्पतेस्य ।
 मुश्किलसे रोसाया । अज्ञान (जिसे दान्ति नहीं)
 कपडा (त्रि०) ।

दुर्दिन, (न०) दृष्टि तमः इति दिनं । दुष्टं दिनं । प्रा० ।
 भेषो (बदलें) के आच्छादन (दाकना) आरिये अंधे-
 रेको बुर न करसकनेवाला दिन कि जिसका सरप प्रतीत
 न हो । बदलेंके अधिरा । पर्वना । पानीका बरसना ।

दुर्धर, (पु०) दुर्+धृ+सत् । एक नरक । एक देव ।
 "दुःखेन सुमुमुक्षुर्निर्दये धार्यते, केनापि न धार्यते+धा
 सत्" । मोक्षके चाहनेहारे जिसे मुश्किलसे हृदयमें धारण
 करते हैं वा जो किलीसे भी पकडा नहीं जाता । विष्णु ।
 बह पदार्थ कि जिसका पकडना वा धारण करना मुश्किल
 है (त्रि०) ।

दुर्धर, (त्रि०) दुःखेन धृष्यते । जो मुश्किलसे पकडा वा
 सहाराप्राय । जिसका सामना करना मुश्किल है । अशोभ्य ।
 जो व्याकुलतासे रहित है ।

दुर्निवार-निवार्य, (त्रि०) दुःखेन निवारयितुं योग्य ।
 दुःखसे हटाया जानेवाला ।

दुर्नीचम्, (न०) दुष्टं नीचं दुष्टिच्छनीति । बुरी चाल ।

दुर्बल, (त्रि०) दुष्टं बलं यस्य । जिसका जोर दुष्ट है ।
 निर्बल । कमजोर । हवा । थोडे मांसवाला ।

दुर्बुद्धि, (त्रि०) दुष्टा बुद्धिः यस्य । बुरी शकलवाला ।
 मूढ । बेवकूफ ।

दुर्भग, (त्रि०) दुष्टं भगं (भाग्यं) यस्य । जिसकी बुरी
 किस्मत है । अल्पभाग्य । अभाग्य । बह धी जो पतिसे
 प्रेम नहीं करती (स्त्री) ।

दुर्मिश्र, (अव्य०) मिश्राया अभावः । अमका न मिलना ।
 अमाल । केदत । काल ।

दुर्मति, (त्रि०) दुष्टा मतिर्यस्य । जिसकी बुरी अफिठ है ।
 विचारको रोचनेवाले पापसे बानी बुद्धिवाला । बेअफिठ ।
 बेवकूफ । ६ व० योंमेंसे एक (पु०) प्रा० १० । दुर्बुद्धि ।
 बुरी अफिठ ।

दुर्मनस, (त्रि०) दुष्टं मनः अस्व । जिसका मन (चिन्ता
 आरिये) व्याकुल (परटाया) है । विमनस्क । जिसका
 दिल विगडा हुआ है ।

दुर्मयोद, (त्रि०) दुष्टा मयोदा यस्य । जिसकी मयोदा
 (सदाचार) बुरी है । अनिश्चिन । अविनीच । दुष्ट ।

दुर्मुख, (पु०) दुष्टं मुखं अथ । जिगसा मुं गावा है । घोडा । बन्दर । एक प्रभारका हाथी । एक देव । अत्रि-यवाही । कठवा वचन बोलनेद्वारा (त्रि०) ।

दुर्मुखस्, (त्रि०) दुष्ट मेधा अथ । अत्रिचु गमा० । जिग-धी घुरी बुद्धि है । मंदबुद्धि । जो विसंगे विचार नहीं कर सक्ता ।

दुर्गोचन, (पु०) दुर्गमेन युष्यते अर्गो । युष्+घुच् (गच्छे) अर्थमें जिसके साथ लड़ाई करना कठिन है । धनराज-राजाका बडा पुत्र । एक राजा । दुःखमे बुद्ध करने-योग्य (त्रि०) ।

दुर्लभ, (पु०) दुर्+लभ्+कृत् । जिगसा मिलना मुश्किल है । कच्चा । जो मुश्किलसे मिले (त्रि०) । “मानुष्यं दुर्लभं लोके” इति पुराणम् ।

दुर्ललित, (न०) दुष्टं ललितं (इष्टं) । कच्छेय्य । चादना +कृत् । घुरी चादना । चन्द्रमा आदि न मिलमकनेवाले पदार्थोंमें चादना । दुर्ललित (घुरी चाल) । घुरे आगव-वाला । दुष्टेष्ट (पदचलन) (त्रि०) ।

दुर्धन(व)घ, (भारता) भ्वा० पर० सक० सेट् । इवति । अर्द्धात् । इतः ।

दुर्धने, (न०) दुर्धोपि कथ्यते (रज्यते) अनेन । जो घुरे (बल्लआदि)घो रंग देता है । अथवा जो भेलेघो नी सुन्दर बना देता है । रजक । रंगरेज । घुरेरंगवाला । मेला (त्रि०) ।

दुर्विध, (त्रि०) दुष्ट विधा यस्य । जिसका प्रकार (हालत) घुरा है । दारिद्र (निर्धन) । गरीब । “दुर्विधं दुर्विधं” नैषधं । नीच । मूर्ख ।

दुर्दय, (पु०) दुष्टं हृदयं यस्य । घुरे हृदयवाला (शत्रुके अर्थमें निलसी हृदय आदेश होना है) घुरा (दुर्गमन) घुरे चित्त-वाला । “दुर्दयः” इषी अर्थमें होना है ।

दुर्द, (अक्षेप) (ऊपर फेंकना) मुलात्ता) घुरा० उभ० गच्छ० सेट् । दोलयति -त्वे । अर्द्धदुल्यत्त ।

दुर्लि-ली, (श्री०) । दुर्ल+दन्-नि० । कमठी । कच्छुधी श्री० । एक मुनिका नाम (पु०) ।

दुःशासन, (पु०) दुःखेन शिष्यतेऽश्री । शाम्+घुच् (अन) त्रिषे दुःखमे आश्रमं रक्षताऽय । दुर्गोचनका छोटा भाई । धनराजका पुत्र (भारतमें प्रसिद्ध है) ।

दुर्धर्मन्, (पु०) दुष्टं चर्मं यस्य । घुरे चर्मदेवाला । महापतनार्थे उपजे विद्ववाला । “दुर्धर्मो गुप्तःश्री स्यात्” इति सृष्टिः ।

दुर्धयन, (पु०) दुःखेन ध्यवनं पतनं यस्य । जो मुश्किलसे भिरे अथवा त्रिष पर ध्यवन मुनि बुद्ध हुआ । इत् । ध्यवनने विधेयमय इमे इयिन होकर धानने पदमे गिरादिता ।

दुग्, (पु०) वृत्त । वरुण राजा । वरुण । मि० पर० क् । अत्रिच् । दुष्पति । अदुर्गन्-अदुर्गात् ।

दुष्कर, (न०) दुःखेन कीर्तते । दुष्+कृत् । जो दुष्के मे सिद्धाया जाय वा फेंका जाय । अक्षय (कन्य) “दुष्कर” मुश्किलमे करनेलायक (त्रि०) ।

दुष्कर्मन्, (न०) कर्म० प्रा० म० । घुरा कर्तात् । ६ व० । पारगत्या (त्रि०) ।

दुष्कृत, (न०) दुष्टं कृतं इति । घुरा कर्त्तात् । ६ व० । पानी (त्रि०) ।

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+कृत् । दुर्वेल । कमजोर । अवन । दुर्जन । यद्आदमी आदि । दोषकाय (नेरी) । (दुष्ट) (पु०) । अत्रिचिचिनी (बदन्त) । (ओम्) (श्री०) ।

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+कृत् । विगटगवा । दुर्जन होना । हांगया ।

दुष्टचेनस्-पी-बुद्धि, (त्रि०) दुष्टं चेनः वा दुष्टं बुद्धिर्वा यस्य । दुष्ट (निगटे घुर) स्वभाववाक्य ।

दुष्टात्मन्, (त्रि०) दुष्टः आत्मा यस्य । दुष्टनवाक्य बदमात्र ।

दुष्प-(स)न्, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा । मारवा पिता । शकुन्तलाका पति ।

दुःसहा, (श्री०) दुःखेन मथ्यते । दुर्-सह-सन् । जो दुः से सहारी जाय । नागदमनी ।

दुःस्थ, (त्रि०) दुःखेन तिष्ठति । स्था+कृत् । दुर्गते है । चीन । मूर्ख । छोनी । टाटची ।

दुःस्थित, (त्रि०) दुर्+स्था+कृत् । अत्रस्थित । (त्रि०) चित्त कायम नहीं-कमी कुछ २) । वेकारह । दुर्गते न

दुःस्पर्श, (पु०) दुःखेन स्पृश्यतेऽर्शो । त्रिषे दुर्गते है । दुर्+स्पृग् ध्युत् । दुर्गलमा (श्री०) आक्षरों कडिआरी ।

दुर्, दोह । चोना । अदा० उभ० अक० अत्रिद । दोहं दुर्गते । अदुष्कृत । अदुष्गय ।

दुर्, वष । भारता । भ्वा० पर० सक० सेट् । दोहति । इत् । अशोहीन् ।

दुर्दितुःपति, (पु०) ६ त० । अलुच् गमा० । अर्द्धात् पति । जवाई ।

दुर्दितु, (श्री०) दुर्द+तुच् । घुरा न दुर्गा -नेर है गवा । नि० गुना । टाटी । बेटी ।

दु, मंद । तक्षणीय वराना । दिवा-आत्म० अक० वेदा । अर्द्धात् । दन ।

दुत्, (पु०) दु+कृत् -कीर्तय । संदेश (घर)घो भेनें हाय । बात पहुंचानेवाला । काविद ।

री. (स्त्री०) । दृ+क्विप् वा दीप् । संदेसा पदुंवा-
 ती स्त्री ।
 (न०) दृग्वा दृग्वा वा भावः वर्म वा+पर । दृ
 लीका होना वा कर्म । दृक्वा वाक् । दृक्वा स्वभावः ।
 (वि०) दृ+क् । शान्ते (मार्ग) में चलने आदिगे
 (वषा) हुआ । बहुत तरपुआ । बहुत दु ली
 (वि०) दुभेन ईयते (प्राप्यते) दृ+इप्+रक्
 ण श्येप । विप्ररूढ । दूर । अगोचर । जो आँखोंसे
 है ।
 नि, (पु०) दृग्वा पश्यति । दूरमे देरता है ।
 भुय् । एष । गीष ।
 तिन्, (पु०) दृग्वा (चार्थोत्तरे प्राक्) पश्यति ।
 चार्थके उपरनेमे पहिले देरता है । दृग्+गिति ।
 इत । दूरसे देरनेहास (वि०) ।
 (स्त्री०) दृषे । हिंगा । मारना-अ । एक प्रकारका पाप ।
 एण्ड, (न०) दृशंती समूह+भाण्डम् । दृशंका
 ह । पाणका देर ।
 (वि०) दृग्+अ । समारके पीछे आता है । "भंकि-
 ष्ट" विगाडनेकाल । दृशिन करनेकाल ।
 (वि०)-पिका (स्त्री०) दृग्+गिच्+भुवल् । दृशित
 नेकाल । दाग लगावनेकाल । विगाडनेकाल ।
 (पु०) राक्वकी मारकीका बेडा । एक राक्षण ।
 (भृत्तिव+भुवल्) दोषदान । ऐब लगाना । ऐब (न०) ।
 ता, (स्त्री०) दृश्यति (नेत्रं श्रितं करोति) दृग्+
 च्+भुवल् । नेत्रमल । आँखकी मैल । गिर् ।
 र, (वि०) दृग्+गिच्+क् । अभिचल । चापदि-
 ग्या । निन्दा क्रियाग्या । दोष लगायाग्या । सोहमन
 ग्या हुआ ।
 (न०) दृग्+गिच्+भ्य । कपडेका बनाहुआ पर । संवृ ।
 ण देनेके लायक (वि०) । हाथीकी बेडी (स्त्री०) ।
 र । मारना । स्त्रा० पर० सक० अनिद् । एणोति ।
 शपीत् ।
 र् करना । मुदा० आत्म० सक० अनिद् । इसके
 हूले आर्ह उपसर्ग रहता है । आदिपते । आहन ।
 रता । भ्या० पर० सक० सेद् । दरति । अदारी ।
 निष्) दरयति ।
 ग्दना । पिका० क्वा० पर० सक० सेद् । शीर्षति ।
 गति । अदारीत् ।
 साद्, (पु०) दृग् प्रसादयति । जो नजरको शाक
 रे । बुल्ल्या । इसका अंजन कालनेसे आँखें शाक हो
 ती हैं ।

दृढ, (न०) दृढ+क्विप् । छोटा । अतिराय और बहुत ।
 मोटा । गात्र । बलकाल । ताकनकाल और एतत् (वि०) ।
 दृढभूमि, (वि०) दृढा भूमिः अस्य । दृढ (मजबूत)
 भूमिकाल । योग्याभारमे संरुद्ध अंत करणकाल । ऐगा
 विसा कि जिसे विषयमुखकी प्रीतिसे बला नहीं सके ।
 दृढमुष्टि, (पु०) दृढा मुष्टिः यत्र यम्यात् वा । जहाँ
 परी मुठो है । सत्र (तरवार) । इसके भारण करनेसे
 मुठो परी होती है । "दृढा (अशियिता) मुष्टिः यस्य" ।
 त्रिपदी मुठो बीली नहीं होती । कृष्ण । एम । कंज्या ।
 बह धन आदिको मुठोमें रख न देनेकी इच्छासे दृढतर
 बांधलेताहै (मुठोमे निरुलता नहीं) ।
 दृढमत, (वि०) दृढं मतं नियमः अस्य । जिसका पत्रा
 नियम हो । प्रारम्भ क्रियेगये कामको फलोदयपर्यन्त
 (नवीना निरुलनेक) न छोडनेहाता । एक इकार
 करनेहाता ।
 दृढसन्धि, (वि०) दृढः सन्धिः सन्धानं यस्य । पके
 जोडकाल ।
 दृढता, (स्त्री०) दृग्पते । दृ+क् । जीरक । जीर ।
 दृति, (पु०) दृग्+क्विप् । चमडेका बनाहुआ पानीका पात्र ।
 मशक । एकप्रकारकी मच्छी ।
 दृन्भू, (पु०) दृग्+उ० नि० । नृद । राजा । वज्र । सूर्य ।
 ताप । पहिया ।
 दृप्, बाधन । तच्छरीक पदुंचाना । मुदा० पर० सक० सेद् ।
 दरति ।
 दृप्, सन्दीपन । भडकाना । वा मुदा० उभ० पक्षे भ्या० पर०
 सक० सेद् । दर्पयति-ते । दर्पति । अदीरपत्-त । अदद-
 पत्-त । अदर्पीत् ।
 दृप्, दर्प-मुदाहोना । गर्व-अहंकार करना । पिका० पर० अक्०
 सेद् । दृपयति । अदर्पत् । अदर्पीत् । दर्पिता । दृप्वा ।
 दृप्त, (वि०) दृग्+क् । गर्वित । मगहर हुआ ।
 दृफ, श्रेरा । तच्छरीक उडाना । मुदा० पर० अक्० सेद् ।
 दृफति ।
 दृग्ध, (वि०) दृग्+क् । प्रथित । गुया हुआ । भीत ।
 बराहुआ ।
 दृग्, मयन । गाँठना वा मुदा० उभ० पक्षे मुदा० पर० सक०
 सेद् । दर्भयति-ते । दर्भति ।
 दृद्वा, प्रेषण । देसना । भ्या० पर० सक० अनिद् । परयति ।
 अदर्पात् । अदर्पीत् ।
 दृग्-ता, (स्त्री०) दृग्-भावे क्विप् । वा दाप् । देसना ।
 जाना । "करमे क्विप्" नेत्र । आँस । दोकी संख्या ।
 "कर्त्तुं क्विप्" शापी । गवाह । देरने और जप्ने-
 हारा (वि०) ।

दृषद्, (श्री०) दृ फाडना+आदि मुक्. (मुक्) वा ह्यः । पापाय । पश्यर । पीगनेनी मिल । शिळा ।
 दृषद्गती, (श्री०) दृशद्+मत्तुप् (मत्तौव) एक नदी "गर-
 स्तीक्ष्ण (घ) ह्योः" इति मनुः । आर्यावर्तकी पूर्वी
 सीमाको बनानेहारी गरस्तीमें गिरती है ।
 दृष्ट, (न०) दृश्+कृ । अपनी वा शयुकी सेनाका भय ।
 देखा गया हर । देखागया । और लौकिक (दुनिशानी)
 (त्रि०) ।
 दृष्टकूट, (न०) कर्म० । कूटप्रश्न । मुद्रिकल गवाल । पहली ।
 बुझारत ।
 दृष्टान्त, (पु०) दृष्टः अन्तः यस्मिन् । जिसमें नाश सीमा
 और विचार देखा गया हो । मरण । मौत । शास्त्र । उदा-
 हरण । सिवाल । एक प्रकारका अयांलहार ।
 दृष्टि, (श्री०) दृश्+भावे क्तिन् । दर्शन । देखना । बुद्धि ।
 अक्षिण । "करणे क्तिन्" नेत्र । आंख । दोही संख्या ।
 मनका व्यापार ।
 दृष्टिगोचर, (त्रि०) दृष्टे गोचरः=प्रत्यक्षः । नेत्रका विषय ।
 जिसे आंख देख ले ।
 दृष्टिपथ, (पु०) दृष्टेः पन्थाः पथिन्+उ+अ समासं । नेत्रका
 मार्ग । नेत्रका विषय ।
 दृष्टिपूत, (त्रि०) दृष्ट्या पूतः । दृष्टिसे पवित्र किया ।
 दृष्टिचित्रम्, (पु०) दृष्टेः चित्रमः प० त० । दृष्टिका चित्रण ।
 रसमती आंखोंमें देखना ।
 दृष्ट्, बटना । भ्वा० पर० अक० सेट् । दर्हति । अदर्हन् ।
 (यह इदित् भी होता है) इदति । अदर्हीन् ।
 दृ, पालन । चवाना । भ्वा० ला० गक० अनिट् । द्यते ।
 अदान् ।
 द्ये, (त्रि०) दा+कर्मणि यत् । देनेयोग्य । देनेलायक ।
 द्ये, खेलना । भ्वा० ला० अक० सेट् । देवते । अदेतिष्ठ ।
 द्ये, (पु०) दिव्+अच् । अमर । देवता । प्रकाशस्वरूप
 आत्मा । परमेश्वर । ब्राह्मणकी उपाधि । और इन्द्रिय
 (न०) । पूजाके लायक (त्रि०) नाब्योक्तिमें राजा (पु०) ।
 द्येयक, (पु०) धीरुष्णका नाता (मातामह) । देवकीका
 : पिता । एक राजा ।
 दे(द्वै)यकी, (श्री०) देवकराजाकी कन्या । धीरुष्णकी माता ।
 बयुदेवकी श्री । "अपत्यायेंदुम्" "देवकी" यही अर्थ ।
 दे(द्वै)यकीनन्दन, (पु०) १ त० । धीरुष्ण । बयुदेवका
 : भैया "देवकीमुन" ।
 द्येयकुमुम, (न०) देवताओं प्रियं (योग्यं) वा कुमुमम् ।
 देवताओंके लायक फूल वा शाक । लवङ्ग । लोण ।
 द्येयखात, (न०) देवेन खातं । रण+कृ । देवताने छोटा
 अष्टमि अक्षरव्य । ऐसा गरीश्वर (ताकाव) जो इक्षीने
 नदि बनता । देवताके पत्न छोटा गया टाकाव आदि ।

द्वेयगात्रयिन्, (न०) देवेन गत्रं (विभक्तं) द्वेयः ।
 देवतासे कासी गरी शिव (युगल) । गुहा । पुत्र ।
 द्वेयगायन, (पु०) १ त० । देवताओंका गायन । मन्त्र ।
 द्वेयगुग्, (पु०) १ त० । देवताओंका ह्व । मन्त्र ।
 पारिजल, गन्तान, कन्यापूत और हृदिचन्दन देवन ह
 द्वेयच्छन्द, (पु०) त्रैः छन्दसे (प्रचरते) इ-
 कर्मणि यत् । देवताओंमें प्रार्थना कियाजाना है । ई-
 दोगाया हाग ।
 द्वेयनर, (पु०) १ त० । देवताओंका गुण । बुद्धि ।
 द्वेयता, (श्री०) देव+म्भायें तत् । इन्द्र आदि देव ।
 द्वेयद्वल, (पु०) देवा एतं देवामु+अक्षितिः ।
 "देवता इमं देवं" (मन्त्रगाय) । देवताके बर्तन
 गया । इयनामकान्या कोई जल । अनुज्ञा श्रुतः ।
 कानेसाला कायु (हवा) । "दिव्य दनः" देवताके
 छोटा हुआ (त्रि०) ।
 द्वेयदाह, (न०) देवताओं प्रियं दाह यम् । मित्रके
 वी (चन्दन) देवताओंको पियायी है । एक ।
 "यद् पुंस्त्रिभुं मी होता है" "असुं पुः पश्यते
 दास्य्" इति रयुः ।
 द्वेयदासी, (श्री०) देवं (इन्द्रियं) दास्ये-
 मारना+अच् । जो इन्द्रियको मारती है । केन
 कंजरी । बनका तबूज ।
 द्वेयदीप, (पु०) द्वेषु (इन्द्रियेषु) दीप इव । इन्द्र
 में मानों (रूपका प्रकाश करनेसे) दीपक बचने की
 है । नेत्र । आंख । लोचन ।
 द्वेयदेव, (पु०) द्वेषु मध्ये दीव्यति । दिव्+अच् । श्री
 ताओंमें चमकना है" । महादेव । शंकर ।
 द्वेयन, (पु०) दीव्यति अनेन । दिव्+करणे लुट् । मि
 खेलना है । पागक । पासा । "भावे लुट्" इति ।
 खेल । चमक । व्यवहार । जीनेकी इच्छा । इन्द्र ।
 तारीक । (न०) "दीव्यति अत्र-आगरे लुट्" इ
 खेलता है । खेलनेका वाग । कमल ।
 द्वेयनदी, (श्री०) १ त० । देवताओंकी नदी । य'
 "अर्षकाया देवनदी" म० भा० ।
 द्वेयपथ, (पु०) देवैः उपलक्षितः पन्थाः । अच्-मन् ।
 देवताओंमें पहिचाना गया मार्ग । उत्तरका छाया । तन्
 ओंका रण्वा । छायापथ (यमका मार्ग) ।
 द्वेयपुरोघर, (पु०) १ त० । देवताओंके पुत्र ।
 बृहस्पति ।
 द्वेयमयन, (न०) देवताओं भवतं इव । मानों देवता
 मन्दिर है । मन्त्रं बहिरुत् ।
 द्वेयमूय, (न०) देवम्य भावः । मू+भ्ययप् । देवताएँ
 देवम्य । देवपन । देवतायुगव ।

देवमणि, (पु०) देवेषु मणिरिव प्रकाशकत्वात् । देवताओंमें (प्रकाशक होनेसे) माने मणि है । त्रिवर्ती । घोड़ेके गलेमें रोमानन (बालोंकी घोटावट) । कौस्तुभ मणि ।

देवयान, (न०) १ त० । देवय । देवताकी गायी । देवताओंका रासत । अर्धरादिमागं । शुक्राचार्यकी बन्धा (स्त्री०) धीर् ।

देवयोनि, (पु०) देवाः एव योनिः कारणं अस्य । देव-तरी जिसके कारण हैं । देवताओंकी अंगुष्ठे उपजे विद्यापर आदि ।

देवय, (पु०) देव+अर । पतिवा छोटाभाई ।

देवराज, (पु०) देवानां राजा+उच् समा० । देवताओंका राजा । इन्द्र ।

देवराज, (पु०) देवाः एतं रामासु+ऊच् । देवता इने छे । अभिमन्युका पुत्र । परीक्षित राजा ।

देवर्षि, (पु०) वेदद्रष्टा ऋषिः । देव एव सन् ऋषिः । जो देवताकी वेदके देवनेद्वारा है । नारद आदि मुनि ।

देवय, (पु०) एक मुनि । असाक पिप्य (चेला) । असाकयिका बन्धाभाई । “देवान् जीविवार्षे सति+साक+क” । जो जीविकके द्विये देवताओंको प्रहण कर्ता है । देवपर जीनेवाला । “सायं वन्” यही अर्थ । एकप्रकारका ब्राह्मण ।

देवलोक, (पु०) १ त० । देवताओंका लोक । स्वर्ग । ईश्वरकी सम्प्रदाय लोक । भूगर्हि सत लोक ।

देवधर्मकी, (पु०) १ त० । देवताओंका तखान । कारि-गर । विश्वकर्मा ।

देवमत, (पु०) देवं (इन्द्रियसंयमनं) मत्तं अस्य । इन्द्रि-ओंको रोचना जिसका नियम है । नीम । पितामह ।

देवमान्, (अव्य०) देवेभ्यो देयं । देवताओंको देनेलायक । देवताओंके आपीन ।

देवसायुज्य, (न०) युनक्ति-युज्+क । सह युजेन सायुजः तस्य भावः सायुज्यं । देनेन सायुज्यं । देवनाके साथ एक आसनपर बैठनेकी योग्यता । देवताके साथ बैठ ।

देवसेना, (स्त्री०) इन्द्रकी बन्धा । वहीनमवाली कार्तिके-यकी स्त्री । सोलह माताओंमेंसे एक । १ त० । देवता-ओंकी सेना ।

देवसेनापति, (पु०) १ त० । देवताओंकी सेनाका माणिक । कार्तिकेय । इन्द्रका पुत्र । देवसेनाका पति ।

देवस्य, (न०) जो यज्ञ करनेवालोंका धन है । देवता-ओंका धन ।

देववृत्ति, (स्त्री०) सायम्भुवमनुषी बन्धा । वृत्तियुनिकी मा ।

देवजीय, (त्रि०) देवं (देवप्रतिमूर्त्त्यं) आजीयति । जीय+अण् । देवताकी प्रतिमाके इन्धने जीनेहारा । पूजारी । देवक । “देवजीवी” यही अर्थमें है ।

देवामनु, (पु०) देवो विष्णुः आत्मा यस्य । विष्णु जिसका स्वप्न है । पीपलीका पेठ (अक्षय) । देवता जैमा । देवसक्य. (त्रि०) ।

देवानांप्रिय, (पु०) अहम् समा० । देवताओंका पियारा । बकरा । मूर्त्त (देवकूक) (त्रि०)

देवापि, (पु०) चन्द्रमाके वंशका एक राजा ।

देवार्ह, (न०) देवान् अर्हति+अण् । जो देवताओंके योग्य है । सुरपणं । सहदेवी सता (स्त्री०) देवयोग्य (त्रि०) ।

देवाल्य, (पु०) देवानां आलयः । देवताओंका स्थान (पर) । स्वर्ग । देवोंकी प्रतिमा (मूर्त्ति) ओंका पर । “देवायतन” यही अर्थ ।

देविका, (स्त्री०) दिव्+अणुल् । एक नदी (जो दो कोस चौकी और बीस कोस लंबी है) । धरुवा ।

देवी, (स्त्री०) रीच्यति दिव्+अण् धीर् । जो अनेकप्रका-रसे खेलती है । दुर्गा । देवताकी स्त्री । धीर् । (नाटकमें) वृत्ताभियेका राजवनिता (पटराणी) । ब्राह्मणस्त्रियोंकी उपाधि । “दिभ्यन्ता विप्रयोपितः” इत्युक्तेः ।

देव्यु, (पु०) दिव्+क । देवर । स्वामीका छोटाभाई । योर ।

देवेदा, (पु०) १ त० । देवताओंका स्वामी । महादेव । उमकी स्त्री दुर्गा । धीर् ।

देवेष्ट, (पु०) देवानां इष्टः । देवोंका पियारा । शुभगुल । वनधीनपूरक (स्त्री०) ।

देवोद्यान, (न०) १ त० । देवताओंका बाग । वैभ्राय, मिथक, शिखारण, और मंदन ये वार वन ।

देवा, दिव्+अच् । पृथिवीके गोलका कोई विभाग । हिंसा । मुक्त । कुछ पायाल आदि प्रसिद्ध जनपद (देस) । स्थान (जगह) ।

देवाक, (पु०) दिव्+कर्त्तरि णुन् । शाकक । आशा बला-नेवाला । पिच्छक । मार्गप्रदरोक । रासक रिक्तनेवाला ।

देवाकालप्र, (त्रि०) देवाकाली जानाति हा+क+अ । बघाई देत और कालको जामेहारा ।

देवाज, जान, (त्रि०) देवात् जानः जन्+क । देवसे उपजा । देही पशुर् ।

देवाष्ट, (त्रि०) देवो इष्टः । सहर्षे देवता गया ।

देवाना, (स्त्री०) दिव्+पिप्+युच्+अन । पिशा । उपदेस ।

देवामापा, (स्त्री०) देवास्य माया । देवकी भाया । मुन्दी जवान ।

देवाव्ययहार, (पु०) देवास्य व्ययहारः । देवका व्ययहार (पाठ-रस्य) ।

देवास्त, (न०) अन्वो देवाः । और देव । परदेस । इराण मुक्त ।

देशिक, (पु०) देशेषु प्रसिद्धः । देशोऽपि समाह्वयः । पण्डितः । राही । देशे । उपदेशे साधुः । उप-
देश करनेमें अच्छा । गुह्य । उपदेश करनेवाला ।

देशिनी, (स्त्री०) दिशति । दिश्+णिन् । जलजाली है ।
अंगूठेके सायकी अंगुली । तर्जनी ।

देशीय, (त्रि०) देशे भवः । देशीयः । देशमें होनेवाला ।
देशी आदमी का चीज ।

देश्य, (न०) दिशम्बन्धः । पूर्वपक्षः । पहिली राय । देशों
अर्हति । देशके सायक (त्रि०) ।

देश, (पु०) (न०) दिह्+पञ् । शरीरः । जिम्मा । (स्थूल,
सूक्ष्म और कारणरूप) । ज्योतिषमें सम्राट् स्थान ।
“पञ्” डेन । डेन करना (चन्दन आदि छ्याना) ।

देशधारक, (पु० न०) देशं धारयति । धृ+निवृ+ञ्चुल ।
जो शरीरको पकड़ता है । अस्थि । हड्डियों । शरीरकी हड्डी ।

देश्यम्, (त्रि०) देशेन बद्धः । त० । देशसहित । देशी ।
शरीर । श्वत्वार ।

देश्यम्, (पु०) देश्य कन्धः । देशकी रचना । शरीरकी
रचना ।

देशमान्, (त्रि०) देशं भजति । भज्+णि । देशसहित ।
शरीर । (पु०) शरीर का जीवन धारण करनेवाला कोई
भी प्राणी विशेषतः मनुष्य ।

देशभूम्, (पु०) देशं भूमिः । जो देशको धारता का गुण
रहता है । धृ+भूम् । जीव । जीवन्मा । हृद ।

देश्याना, (स्त्री०) देशो माति (गच्छति) अनन । या+
करणे ह्रन् न कीर्त्त । जिसे शरीर बलता है । शरीरकी
बलका गणन । भोजन । भय आदि शान्ता । ६ त० ।
शरीरका बलन । धारण (भोजन) ।

देशी-त्रि, (स्त्री०) देशं (डेनं) छाति (शकति) । या+
करणे ह्रन् न कीर्त्त । जहाँ डेन किया जाता है । डेन
देखकर दर्शनेकी निमित्त (ज्योती) । ताकते
जैसे ही शरीर ।

देशघाट, (पु०) ६ त० । देशका घाट (अगल) ।
घाट । निव ।

देशान्वादिन्, (पु०) देशं एव आत्मनया वदति ।
वदु+नि । जो शरीरको आत्मनया बताना बोलता है ।
वदु+नि ।

देशिन्, (त्रि०) देशं-अभि बधे इति । शरीरवाला ।
इति । देशकर आत्मनया अभिमान करनेवाला जीव ।

देशिन्, (त्रि०) (स्त्री० स्त्री०) (देश+नि) । शरीरवा-
ला । शरीर । जहाँ हृद । इति निमित्तः । हृदु ।

देश्य, (पु०) देशः । देशः । दिश्+पञ् (वच) । दि-
श्टी ह्यन्धः । हृदु । देश । “देश” वी अर्त्त ।

देश्यगुरु, (पु०) ६ त० । देशोका गुह्यः । इतरां
“देशाचार्य” ।

देश्यमिच्छन्, (पु०) देशान् निम्नति (शिन्दे) ।
मृदु+मिच्छु+ञ्चु । देशोका माय कतां है । मिषु

देश्यमेदज, (पु०) देशानां मेदात्मायते । देशके ली
वना । जन्+ञ् । गुणुल । प्रथिवी । जमीन ।

देश्या, (स्त्री०) देशस्य प्रियाभवत् । देशकी निरुपे । तं
स्त्री । सुता (शराव) ।

देश्यारि, (पु०) ६ त० । देशोके शत्रुः । मिषु
देशेन, (न०) शीनस्य भावः । शीनयन । कपारत । भे
भवं अणु+दिनेन होनेहारा (त्रि०) ।

देशनिन्दन, (त्रि०) दिनं दिनं (प्रतिदिनं) तत्र नं
अणु-नि० । प्रतिदिन होनेहारा । हरदोत्र होनेहारा ।

देशनिन्दनप्रलय, (पु०) ७ त० । भ्रमके करनेवा
अनुसार प्रति दिनका अन्त । सम्यक् रवेणु शरते
शय (नाश) ।

देश्य, (न०) शीनस्य भावः पञ् (य) । शीनता ।
होना । शीनता । कायरपना । गरीबी । शान्त्य (दूरा

देश्य, गाक करना । भ्या+पर० सक्त० सेट् । दपति-अर्त्त ।
देश्य, (न०) देशादागतं । देशनामे भावा । “देशेके
अस्य” देव (विष्णु आदि) त्रिगुणा देवता है । “देव
इदं वा अणु” ये देवताका है । भाग्य । विष्णु ।

जन्ममें अर्जन (इच्छा) कियाहुआ कर्म (कर्म) ।
हाथकी अंगुलियोंके आगे देवताओंका शीप है । शरीर
का विवाह । तीन प्रकारकी भूनोंकी रचना (पु०) ।
साम्यन्धी आदर्शोम आदि (त्रि०) ।

देश्य, (पु०) देशं जानाति । ज्ञा+ञ् । जो देशके
जन्ममें अर्जन किये गये छुम वा अहमको ज्ञान
(उपासिता समय) आदिमें जानता है । शरीरके
वाला । ज्योतिर्विद् । ज्योतिषी । अणु आदिसे हुन
जानेवाली स्त्री (स्त्री०) टाग

देश्य, (पु० न०) देव एव देवता (त्रि अणु) । देव
देवताओंका समूह (अणु) (न०) । अणुको देव ।

देश्यम्, (त्रि०) जो आत्मकीके आतीन है । नीलन
(आदता) । आत्मवीत ।

देश्य, (त्रि०) देशं एव परं (भेदं) यस्य । जो
शरीरके अच्छा समझता है । देशकर । “जो देशके
का” करनेहारा ।

देश्य, (पु०) एतदे समय अक्षमात् (अक्षय) । एत
आदिमें एतदस्य एतदस्यको एतन (एत) एतन
वचन (वचन) ।

देश्यानी, (स्त्री०) देशस्य इव+अणु वती । देश
की है । आक्षयवती (अक्षयवती) वचन

देवसर्ग, (पु०) देवसर्गः (सम्पन्नगणना) सर्गः । (सादृश्यमे)
 सात्त्विकजंशरी सृष्टि (भूतोकी रचनामे) ।
 देवता, (अन्व०) देवे अतति । द्विप् । इडात् । अचान-
 क्ते । ईश्वरकी इच्छन्ते ।
 देविका, (न०) देवो देवता अस्व+उठ् (इठ्) । देवता-
 भोके अन्तेमें नियोगया धात् । देवताये आया । देवत-
 म्बन्धी । देवतायाः (त्रि०) ।
 देवी, (स्त्री०) देवस्य इय+अन् । देवताकी । सात्त्विक प्रकृति ।
 सस्य गुणका स्वभावः । देवगम्बन्धिनी । देवताभोकी ।
 "देवी सम्पद् विमोक्षाय" गीता ।
 देवोदासी, (स्त्री०) विरोदासस्य अपत्यं+अत् इम् । विरो-
 दासकी सन्तान । प्रनर्देन राजा ।
 देव्य, (न०) देवेन कृतं देवानां इदं वाच्यम् । देवसे
 क्रियागया । वा ओ देवताभोका है । भाष्य । हिम्बत् ।
 देवताया (त्रि०) ।
 देविका, (त्रि०) देवस्य इदं देवेन वा निर्देतं ठक् । देवका ।
 (म्यायमें) देवते क्रियागया स्वरूपका क्रियाहुआ भेद ।
 विरोपणसम्बन्ध ।
 देष्टिक, (त्रि०) रिष्टं (भागधेयं) एव सर्वतापनं इति यस्य
 मति +उठ् । भागवती साधका सापन है ऐवी युद्धिताया ।
 भाग्यापीनतावाची ।
 दो, छेद-काटना । दिका० पर० नक० अनिद् । दाति । अदात् ।
 दोग्ध, (पु०) दुग्ध+भृच् । दुग्धेद्याय । गोपाल । गुग्गर ।
 बन्वा । बछडा । सोनेकाळा (त्रि०) घी (स्त्री०) घीप् ।
 दोर्दण्ड, (पु०) दोर्दण्ड इव । (लंबा और बानको सिद्ध
 करनेवाला होनेसे) भुजा (बाहु-वां) मानो बंधा है ।
 "भुवदण्ड" यही अर्थ ।
 दोर्मूल, (न०) १ त० । भुजाका मूल । कक्ष । कच्छ ।
 दोल, (पु०) दुल्ल+भावे पम् । धीहृण्यका दोलनरूप उत्सव ।
 दोलयात्रा । दोलोत्सव । कृष्णको हलनेमें झुलाया जाता है ।
 दोला, (स्त्री०) दुल्ल+अच् टाप् अ वा । (बोली) । एक
 प्रकारकी सवारी । बाग आदिमें खेलनेकेलिये दोलनयत्र
 (हलनेकी कला) । पीग आदि ।
 दोलाधिकृत, (त्रि०) दोल्यं अधिष्ठतः । पयुं देवद चया
 हुआ ।
 दोलाखर, (न०) १ त० । भुजाकी खोटी । कृष्ण्य ।
 'बंधा । मोरा ।
 दोलायमान, (त्रि०) दोलां भागयते । अय+मानच् ।
 कर्णाहुआ । हलनाहुआ । दोलायत्र (पयुंवा) पर चया
 हुआ ।
 दोष, (पु०) दुष्+भम् । दूषण । ऐव । पाप । गुनाह । बान,
 पित्त, कफ, तीन दोष । (अलेकारमें) इव आदि विग-
 ढनेवाला दुष्ट शब्द । (म्यायमें) एग, द्वेष, मोह ।

दोषमाहित्, (त्रि०) दोषान् एव गृह्णाति न गुणान्+भ-
 ह्+यिनि । जो दोषोंकोही लेता है गुणोंको नहीं । दुर्जन ।
 "दोषमाही गुणलागी चालनीय द्वि दुर्जन" ।
 दोषघ्न, (त्रि०) दोषान् जानाति । ह्रा+क् । दोषोंको जानता
 है । पविष्ट । वात आदि दोषोंको जाग्रदारा । विक्रितक ।
 हरीम ।
 दोषत्रय, (न०) दोषाणां त्रयं । तीनदोष । वात, पित्त,
 कफ ।
 दोषा, (अन्व०) दुष्+अच् । रात्रि । रात ।
 दोषाकर, (पु०) दोषां (रात्रि) करोति । जो रात बनाता
 है । चन्द्र । चांद । दोषोंका समूह । दोषोंका भाषय ।
 कसूरवार ।
 दोषकटक, (त्रि०) दोषे एव न गुणे एका एत् यस्य । गु-
 णको छोड़कर जो केवल दोषहीको देखता है । सख ।
 नीच । बहुत सखब ।
 दोस्-वा, (पु०) दस् करना+ओमि । भुजा । बाहु-
 वां । दाहि पन्ध्र ।
 दोह, (पु०) दुह+कर्मणि पम् (अ) । दुग्ध । दूध । "आ-
 धारे पम्" । दोहनपात्र । सोनेका बर्तन (भांडा) ।
 "भावे पम्" । दोहन । सोना ।
 दोहद, (पु० न०) द्वयोः (गर्भिणीतद्वययोर्द्वयं) अत्र ।
 निपा० । जहाँ दोनों (गर्भिणी और सन्तान) का इदय हो ।
 गर्भे । "दोहं (आकष्यं) ददाति" । दाभवा । गर्भिणीकी
 अभिलाषा (चाह) । लाजसा । चिह्न (निदान) और ग-
 भंका छपण (न०) । "दू० शीत्" "दोहदम्" यही
 अर्थ है ।
 दोहदिनी, (स्त्री०) दोहदः अस्ति अस्मा+इनि । जिच्छता
 गर्भे हो । गर्भिणी । गर्भवाली । द्विहृदया । दो इदयवाली ।
 दोहनी, (स्त्री०) दुग्धोत्पन्न । आधारे स्तुद् । जहाँ सोना
 जाता है । सोनेका पात्र (दोहनपात्र) ।
 दोहा, (स्त्री०) एक अक्षरका मायाशब्द है (प्रायः अक्षरमें
 आया है) ।
 दोष्य, (न०) दूषस्य भावः कर्म वाच्यम् । दूषका होने
 (दूषण) का उल्लेख नाम ।
 दोर्भागिनिय, (पु०) दुर्भाग्या भाग्यं+उठ् (एव) । इत्
 आदेश । दोनों पदोंको द्विदि हो जाती है । दुर्भाग (पतिने
 भेद न करनेवाली) स्त्रीका पुत्र ।
 दोर्मनस्य, (न०) दुर्मनसो भाव+अन् (य) । बहिरी
 वा नीतरके कई एक कारकोंसे मनका दोषम् (विहातमी)
 विच्छिन्न विगडना । फिटर । चिन्तासे पबगहट ।
 दोषारिक, (पु०) द्वारे निवृत्तः । ट्ठ् (इठ्) । दर्शनेपर
 छगया गया । इतरपाल । दरबार । प्रतिहारी (स्त्री०)
 द्वाररक्षिका ।

दीर्घकुलेय, (वि०) दुष्पुत्र्य अलम्+ङ् (एष) ।
निन्दितपुत्रने उच्यते । छोटे सान्दान का छोटी जाति-
कोने उच्यते ।

दोहिय, (पु०) दुहितुः अन्त्यं+अच् । दुहिया (छडी) का
उच्यते । दोहनरा । दोहना ।

दायापृथिवी, (स्त्री० द्वि० व०) दाया पृथिवी न-दाया-
देशः । मित्रेद्वयं स्वर्गं पृथिवीका इत्या नाम । जमीन-
आम्नान् ।

दु, (पु०) दिन+ङिच्+उच् हन्तः । अमि । सुर्वं । आरु-
का दण्ड । आरुण । दिन (न०) ।

दुम्, (स्त्री०) नमस्कृतम् । आ० आ० गङ्० सेट् । दोतते ।
अपुनर-अपेक्षितम् ।

दुम्नि-नी, (स्त्री०) दुम्निन्+ङ् वा रीच् । कान्ति । सोमा ।
नमस्कृतम् । प्रकाशम् ।

दुम्नि, (पु०) १ ट० । दिनका पत्नी । सुर्वं । आरुका
इत् । "दुम्नि" ।

दुम्, (पु०) दिग् । नदी । आ०+ङ् । घन । दौलत ।
उ० । ओ० ।

दुम्, (व०) दिग्+ङ् । जूम् । पत्तोषी सेठ । केदार ।
बराह उ० ।

दुम्कार, (वि०) दुम्+कार् । इ+ङ् । पक्षी आदिषु
नेत्रं कार्तेत्यम् । नृकारिणा । "शुल्" "दुम्कारक"
"वि" दुम्कार (वीं अर्थ) ।

दुम्पुर्णिका, (स्त्री०) दुम्पुर्ण (दुम्पुर्णं क) पूर्णिका । जूम्पी
क इत्ते द्विभे पूर्णिका । आश्विनपूर्णिमा । अश्विनी
पूर्णिमा । सोमवती ।

दुम्पुर्णि, (पु०) दुम् एव इति । नैविद्यं यन् । नृभारी
शिवो नैविद्यो है । उ० । जूम्पुर् । नैविद्या ।

दो, (स्त्री०) दुम्+दो । नमो । आरुण । आम्नान् । बहिनः ।
दो, (पु०) दुम्+दो (अ) । प्रकाश । अन्तः । धूम् ।
उ० ।

दुम्पुर्ण, (पु०) दुम्पुर्ण अन्त्यं+ङ् इत्येवम् । इत्यन्
इत् । इत् । अश्विनी । पञ्चमना ।

दुम्पुर्ण, (व०) दुम्पुर्ण अन्त्यं । न । न । अन्तः ।
उ० । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी ।

दुम्पुर्ण, (व०) दुम्पुर्ण अन्त्यं । नमो । अश्विनी । अश्विनी ।
उ० । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी ।

दुम्पुर्ण, (पु०) दुम्पुर्ण अन्त्यं । नमो । अश्विनी । अश्विनी ।
उ० । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी ।

दुम्पुर्ण, (पु०) दुम्पुर्ण अन्त्यं । नमो । अश्विनी । अश्विनी ।
उ० । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी ।

दुम्पुर्ण, (पु०) दुम्पुर्ण अन्त्यं । नमो । अश्विनी । अश्विनी ।
उ० । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी । अश्विनी ।

द्रव्यत्व, (न०) द्रवति (सन्दते) । इ+ङ् । इत् ।
वहनापन, वहनेका कारण पृथिवी जल और हरेने
वाला एक गुण (न्यायमें) ।

द्रव्यद्रव्य, (न०) द्रवनीति द्रवं कर्म० । द्रु । री
आदि वहनेवासी चीज ।

द्रव्यन्ती, (स्त्री०) द्रु+ङ् । नदी । सन्दते ।
पत्नी ।

द्रव्यिड, (पु०) एक देश । उग देशके निवासी ।

द्रव्यिण, (न०) इ+ङ् । वित्त (घन) । हरे
इत् । बल ।

द्रव्य, (न०) द्रु+ङ् । पीतल । घन । लोहेका
(चंदन आदि) । दसाई । साय । विनय । द्रव्य
(न्यायमें) पृथिवी आदि नौ । (व्याकरणमें)
कि विषया द्विज और संख्यासे अन्य हो । "ने
विचारः" । दसाय विचार । द्रव्यमन्त्री (वि०)
द्रव्यपरिमह, (पु०) द्रव्यम् परिमहः । पत्नी
अधिकार (देना) ।

द्रव्यसंस्कार, (पु०) द्रव्यम् संस्कारः । इत्
की शुद्धि (साकार) ।

द्रव्योप, (पु०) द्रव्यम् ओपः । इत् (पर०, रट्,
का समुत् ।

द्रव्यय, (वि०) द्रव्य+य । देवने ओप (इत्
उत्) । सुन्दर ।

द्रु, (वि०) द्रु+ङ् । विचारमें इत् । वेत् ।
यार । सायी (गकार) । देवनेशा ।

द्रु, अत्र । सोना । भागना । अश्विनी । अश्विनी ।
अश्विनी ।

द्रु, (अन्त्य०) इ+ङ् । शीघ्र । शशिनी । अश्विनी ।
द्रु, वा इना । आ० पर० गङ्० सेट् । इति ।
अश्विनी ।

द्रु, (स्त्री०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्रु, (पु०) इति+अ । वि० नसा ओ० ।
विमर्शितम् । दण्ड ।

द्राह्, जानना । भ्या० आ० अक० सेट् । द्राहते । अद्राहित् ।
 द्रु, जाना । भ्या० पर० एक० अनिट् । द्रुवति । अद्रुवत् ।
 द्रु, (पु०) द्रवति कर्णे । द्रु+द्रु ड्रु वा । ओ ऊपरसो वदता
 है । द्रुव । द्रवत । दारता । द्रावी ।

द्रुघण, (पु०) द्रुं हन्ति अनेन । द्रु+घरणे अच् हन्तः
 कर्णे च । जिते द्रुघो मारते हैं । द्रुघ्न । द्रुघ्नाम ।
 द्रुघ्ना । चारमुत्पाका । भूमिचक्र (चक्र)

द्रुघ्न, मन्त्रन । द्रुघ्नी मारना । भ्या० पर० एक० सेट् । द्रुघ्नीति ।
 द्रुघ्ना, देहावतना । द्रुघ्ना० पर० एक० सेट् । द्रुघ्नी । अद्रो-
 पीत् ।

द्रुणत्, (वि०) द्रु- द्रव दीर्घा मायिका अस्व । त्रिविधा द्रुघ्ने
 समान संघी मायिका (माक) हो । संवेनात्पाका जन
 (पापात्) ।

द्रुणी, (स्त्री०) द्रुण-क-दीप् (ई) । काट्यमुखादिनी । एक
 पात्र लघवीका जिले बेरीमेंसे पानी निकालते हैं । क-
 ष्ठी । द्रुणुं (कच्छुदी स्त्री) । कर्णजलका । चानस-
 द्य । चमगाद्री ।

द्रुत, (पु०) द्रवति कर्णे । द्रु+क । ऊपरसो वदता है ।
 द्रुत । ऊपरी माचना । घाना और मजाना । और जल्दी ।
 (म०) द्रुतितावाका (जिले जल्दी हो) । पिपलाद्रुभा ।
 भागाद्रुभा (वि०) ।

द्रुपद्, (पु०) कर्णसंघमे सुषितिर अद्रिका अक्षर (गीत)
 एक राजा ।

द्रुम, (पु०) द्रु (शाला) अग्नि अस्व+म । दालीबन्ध ।
 द्रुम । द्रुम । पारिजात । पुत्रेत् ।

द्रुद्, अनिट् चिन्तन । द्रुत दारतावदता । द्रिवा० पर० सेट् ।
 द्रुदति । अद्रुदत् । द्रोहिता-द्रोधा द्रोधा ।

द्रुटिण, (पु०) द्रुट+इन्द्र । जगत्पथा । जगत् रचनेहार ।
 चतुर्भुज । चार मुखवाला । मन्ना ।

द्रुक्, धन । द्रुक्वदता । उलाहलता । भ्या० आत्य० अक०
 सेट् । द्रुक्ते ।

द्रु, मन्त्र । गोत्र । भ्या० पर० अक० अनिट् । द्रावति ।
 अद्रापीत् ।

द्रोण, द्रु+अच्+इ+क वा । मरणमे प्रसिद्ध एक योद्धा ।
 द्रोणाकर्षे । द्रोणमन्त्रा र्द्रोणा । द्रुघ्न (विण्ट्) ।
 एवप्रकारका वादक । एक द्रुव । शैलीय देखा परिसरक
 (पत्र) । एक जलपात्र (तालाव) जो अग्नी मन्त्र
 सेका होता है ।

द्रोणायन, (पु०) द्रोणय अर्णव+अच् (अणव) । द्रोणा-
 कार्दवी सायन । अर्णवायन ।

द्रोनि-ष्ठी, (स्त्री०) द्रु+इन्द्र क इप् । एक देव ।
 एक बली । द्रुणद्रुव शिनी (कच्छुदी स्त्री) । शैलका द्रुव ।
 एक वरु ।

द्रोह, (पु०) द्रु+अच् । अग्निचिन्तन । द्रुवा सोचना ।
 वर । द्रुमनी ।

द्रौपदी, (स्त्री०) द्रुपदम्य मरणं क्रो+अच् । द्रुपदम्यस्ये
 कन्या । पाण्डवोंकी स्त्री ।

द्रुग्ध, (पु०) द्रुं द्रुं सप्तचिन्तनं । दो ३ द्रुग्नी प्रवत्
 द्रुए । विषा । द्रुम (मेद-मुक्तिआ) । कन्द (शाला)
 शिबुन (योडा) खीपुरवका संयोग (मोहरन) । विण्ट
 (लहाई) । एवप्रकारकी बीमारी । ए मन्त्रमेंसे एच
 (जियमें दोनों पद प्रथम रहते हैं) । सेक । द्रुं ।
 शीत-उष्ण ।

द्रुग्ध्वर, (पु०) द्रुग्नीधुर वरति । वा+अच् । जेन्तो-
 वर विधरता है । बरवत् । बरवा ।

द्रुय, (म०) द्रुं अवरणं अय । इ अवरणं वा । इ+अव-
 ट् । दोरी रोपना । "क्षी० दीप्" । दोरी चिन्तन
 (वि०) ।

द्रुः(द्रु)श्च, (पु०) द्रुति शिपि । द्रु+श्च क शिपि-
 शेषः । द्रुंजिपर द्रुण है । द्रुपदक । द्रुम । "द्रुः
 (द्रु) शिपि" ।

द्रुघातवारिद्रात्, (स्त्री०) इ अघिघ कर्णविण्ट् । इं च
 कर्णविण्टक वा । दोमे जिलका वा दो मीर क ईक । वेअ-
 टीच । कर्णित ।

द्रुद्रा, (वि०) द्रुद्रात्तनी द्रुव +द्र । कर्णमे द्रुव वा-
 नेहता । जिले कर्णमे रोपण द्रुवी से कर्ण है ।

द्रुद्राकर, (पु०) द्रुद्रा का (द्रुग) अय । जिने
 कार द्रुव है । कर्णिय और द्रुपदिय । "द्रुद्राकर" ।

द्रुद्रामेव, (पु०) द्रुद्रव मेवति अय । शिपि ३३
 अय हो । ए मुखवाला कर्णिक । "द्रुद्रामेव"
 वरी अर्थ

द्रुद्राहाहृत्, (पु०) द्रुद्रा अहृत्क अय अय-अय
 वात् । कार अहृत्क अयकत् । शिपि-अयकत् । शि-
 कत् अय ।

द्रुद्राहाम्व, (पु०) द्रुद्रा अयकत् (द्रुं रोपण) ।
 शिपि ३३ सुं-दे हो । सुं । मीर कर्णका द्रुव

द्रुपद्, (पु०) द्रुं वी द्रुग्नी शिपि क अय-पु० अय-
 म् । शिपि हो अय क शिपि हो । द्राव । द्रुव ।
 मन्त्र और कर्ण के रोपण द्रुव (कच्छु) । द्रुव द्रुव ।
 शिपि हो अय हो ।

द्रुमुष्णायन, (पु०) द्रुं अय अय-अय । शिपि ।
 द्रुग्नी द्रुव । शिपि द्रुव

द्रु, (स्त्री०) द्रुवाक शिपि अय । द्रुवा शिपिअय ।
 पर अयिने शिपिअय अयकत् । द्रुव । द्रुव । द्रुव ।
 वरी । द्रुव ।

द्वार, (न०) द्वा+निच्+अच् । पर आदिसे निकलनेकी जग-
ह । द्वारपाल । द्वांते । उपाय । वसील । मुख । तजवीज ।
द्वारका, (स्त्री०) द्वारेण (प्रधानद्वारेण) कायति । कै+क ।
अच्छे द्वांतिसे शब्द कर्ता है । समुद्रके पास एक तीर्थ
है । "द्वारवती" यही अर्थ ।
द्वारकेदा, (पु०) ६ त० । द्वारकाका स्वामी । श्रीकृष्णदेव ।
द्वारण, (त्रि०) द्वारं पाति (रक्षति) । पा+क । द्वांतिसे रक्षा
करनेहाण । द्वारपाल । "पाल्+अण्+शुल्+व" यही अर्थ ।
द्वारण्यम्, (न०) ६ त० । द्वांतिसे कला । ताला (जं-
द-
रा । कुडक ।
द्वारवती, (स्त्री०) द्वारणि (मोक्षोपायाः) सन्ति अस्य ।
मनुस्मृत्यः । जहाँ मोक्षके उपाय हैं । एक तीर्थ । "द्वार
+अस्त्वयं ट्" । "द्वारिका" यही अर्थ ।
द्वारिन्, (त्रि०) द्वारं (पाल्यतेन) अन्ति अस्य+इनि ।
जिने द्वांतिसे रक्षा करनी पड़ती है । द्वारपाल ।
दावन ।
द्वारिदाति, (स्त्री०) द्वारिका विगतिः । द्वौ च विगतिश्च
आत्तं । दो अधिक बीज । वा दो और बीज । बाईस । बाई-
द्वि, (त्रि०) द्वि० ब० । द्व+क । द्विचसंख्या । दोही गिन-
ती । दो ।
द्विक, (पु०) द्वौ द्वौ (कर्तारौ) यत्र । जहाँ दो कर्तार
हैं । कर्मा । "द्वि कर्तव्यं कर्तुं" दोही संख्या । दो संख्या-
वाला (न०) ।
द्विकचक्र, (पु०) द्वे चक्रौ देव्य । अन्त्यलोपः । जिनके
दो चक्र (हथ) हैं । उर्ध्व । ऊँट । ऊँट ।
द्विगु, (पु०) आक्षरवर्गमे कदाप्या एक एतावत् (जिनमें
संख्याबद्ध शब्द पढ़िये रहता है) ६ ब० । दो गौंओका
बन्नी (त्रि०) ।
द्विगुण, (त्रि०) द्वान्नां गुण्यते । गुण+पतर्भे क । दोसे
गुण्यता । दुगुण्य ।
द्विगुणाह्वन, (त्रि०) द्विगुणं कृत्वा इष्टं । वाच्+कृ+अ+क ।
दुगुण करके संख्या । दोहरा रोवा (काथा) गया
अन्त ।
द्विज, (पु०) द्विर्जाते । जन्+क । दोहरा जन्मता है ।
द्विजन्त । द्विजन्त आदि टीनों बनी । दाँव । पत्नी (अग्ने-
से निकल) । दुग्धिका एक वृक्ष । संस्कार किया गया
द्विजन्त ।
द्विजिह्व, (पु०) द्विजिह्वे देव इव । दो बार जन्मप्राप्तिसे
बन्ने देवता है । अक्षय । कर्त्तव्य ।
द्विजिह्वन्त, (पु०) द्वि-जन्मकी वृत्त । द्विजिह्वो दो वृत्त
हैं । अक्षय, क्षय और वेव (टीनों बनी) । अक्षय ।
अक्षयसे द्विजन्त । वत् ।
द्विजिह्वन्तु (पु०) द्विजिह्वे कर्त्तव्यम् । द्विज द्विजन्त संज्ञ
है । (अक्षय बन्ने लायेके) । अक्षय कर्त्तव्ये इति

जन्मप्राप्तिसे जीनेहारे नीच ब्राह्मण, क्षत्रिय और
द्विजराज, (पु०) ६ त० । टच् समा० । द्विजोः
चन्द्र । चाँद । धनन्त । गदह । पशुओका राज ।
द्विजधर, (पु०) द्विजेषु धरः । द्विजोंके धे (
विभ्र । ब्राह्मण ।
द्विजाति, (पु०) द्वे जातौ (जन्मनी) यच्च । (दो
जन्म हैं) । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश (टीने
द्विजिह्व, (पु०) द्वे जिह्वे यच्च । जिनकी दो जीभ
(जीभ) । साल (नीच) । चोर । दुःकथ (जो
छे बरेहाण) (त्रि०) ।
द्विजय, (त्रि०) द्वौ अवयवौ अस्य । द्वि भावत् ।
+तयच् । द्विचसंख्यानिवृत्तं (दोही संख्याके)
संख्या (न०) ।
द्वितीय, (त्रि०) द्वयोः पूरणः । दोहो पूरा
द्वारा । द्वितीया तिथि (द्वा) (स्त्री०) । "द्व
द्वारा द्विस्था ।
द्वितीयारूढ, (त्रि०) द्वितीयं कृत्वा इष्टं । द्वन्
दोहरा करके रोवा गया । दोहरा रोवा गया के
द्विद्व, (त्रि०) द्वौ द्वन्तौ अस्य । द्वन्तौ द्वन्तौ
है । ययति । दो दानोंसे पहिचानी गई द्वातरा
दातवाला । भेल आदि । त्रियां शीर्ष ।
द्विद्वेय, (पु०) द्वौ द्वेषौ अस्य+अण् । जिनके दो दो
विभावा नामी नष्टप्र (तारा) । द्वाके इव दो
देवता हैं ।
द्विधा, (अव्य०) द्विधारे । द्वि+धाच् । दो ।
दोहरासे ।
द्विध, (पु०) द्वान्नां (मुगमुगान्नां) पिपीत्वां
(मूं और मूं) से पीना है । पा+क । इष्टौ ।
द्विध, (पु०) द्वे धरे यस्य । जिनके दो धर हैं
थ । देवता । पत्नी । राधा । उषि ।
द्विधदा, (स्त्री०) द्वौ पादौ अग्राः (पादके अन्त्य
होता है) दार । अग्नेरश्च एक मन्त्रधरेण । एव
वा गन् (जिनके दो पाद होने हैं) । "द्वौ द्वि
द्विधापूक, (पु०) द्वे धारौ अस्य । जिनकी दो
हैं । दुग्धं और कामुन्यो पालन किया गया
पदमंभ ।
द्विमुख, (पु०) द्वे मुखे यस्य । दो मुख । एव
मुनयान्ता (त्रि०) ।
द्विर्द, (पु०) द्वौ रदौ यस्य । जिनके दो र
हारी । दो दानयान्ता (त्रि०) ।
द्विर्दामन्त, (न०) द्विः अर्धं भागवती । दो धर
कला । द्विर्द्वे अन्त्य अक्षयः द्विर्द्विर्द्वे एव
सुखयत् । नै ।

द्वेषक, (वि०) द्विः लक्षं । (विवाद-अग्रा) आर्गमे
 दोवार बोलगया । दोवार बहगया । (व्याकरणमें)
 अन्त्यस्यैहावात् ।
 द्वेषक, (श्री०) द्वियारं ऊदा । बहु+क । दोवार विवादी-
 गई श्री ।
 द्वेषक, (पु०) द्वीं रेयां (वाचकनाम्री) यस्य । जिसके नामको
 बगानेद्वारे दो रेक अर्थात् "रक्षर" हैं । अमर । भौरा ।
 द्वेषधन, (न०) द्वीं दक्षि, द्वीं वा उच्येते अनेन । दो
 कदा दे वा दो जिस्ते बडे काते हैं । (व्याकरणमें)
 दोबो बगानेद्वारा प्रत्यय ।
 द्वेषार्थिक, (वि०) द्वयोः धर्मयोः मन्व+उच् । दो धर्मोंमें
 हुआ । दो धर्मके वाक्य आदि ।
 द्वेषाफ, (पु०) द्वीं शयो यस्य । जिसके दो पुर हैं । गी,
 बहरी, भंग आदि ।
 द्वेषार, (अव्यय) द्वीं द्वौ ददाति करोति वा । दो २ देना
 वा बर्ना है । दोवार ।
 द्वेष, बरकरना । अन्त- वम- राक- अगिद् । द्वेषि-द्विषे ।
 अद्विषद्-अद्विषत ।
 द्वेषवत्, (पु०) द्विप्+वत् । बर फर्ना हुआ । शत्रु ।
 वैरी दुस्मन ।
 द्वेषन्तव, (पु०) द्विषन्तं तापयति+तप्-विच्-वत्+हत्व-
 ध्रुव् । जो बर बने हुएको तपाता है । शत्रुभीका तपा-
 मेहारा ।
 द्वेष, (वि०) द्वयोः द्विषति । एवा+क चल । दोनोंमें टहरता
 है । दोनोंके बीचवा । धर्मोन आदि पदार्थ ।
 द्विष, (अव्य०) द्वि+युच् । दोवार बीचगई किया । दोवार ।
 द्विषन्सति, (श्री०) द्विषिका सतिषि । द्वीं च सतिषि च वा ।
 न आर्त्तं । दो ऊपर सतर वा दो नीचे सतर । बहतरकी
 संतरा ।
 द्विषद्भ्य, (वि०) द्विषद् इहेन कृष्म् । कर् । दोवार हलके
 सेधा गया । दोवार हलके सेधा हुआ सित (क्षेत्र) ।
 द्विषाधमी, (श्री०) द्वीं शयनी (बधोमन्वं) यस्याः । जित-
 की उमरवा भाव दो बर्षवा है । दीप् । दो बरताकी गी-
 द्विषद्भ्या, (श्री०) द्वे इद्वे यस्याः । जिसके दो हदस हैं ।
 गर्भवाकी श्री । (अन्ता और गर्भका हृदय)
 द्विगुणमात्र, (पु०) द्विभ्यां (द्वैतकफिद्विभ्यां)
 एतदेतयो । जो दोनो (द्वैत और एक) द्विद्वयोमें
 मात्र किया जाता है । (व्याकरणमें) संदरके द्वे पर क-
 त्त, इत्थ और अरे (द्वे एव युक् दोनो द्विद्वयोके
 कहेमते हैं) ।
 द्वीप, (न०) द्वयोः एत अथ अथ । अथ । कर्त्तको
 अ और द्वीं दोनी है । जिसके दोनी और एनी हो ।
 एतके बीच अन्त अन्त । एतु आदिसे द्विद्वय कृति-
 कीसे द्वेद्वे द्विद्वे । एतए एतए कम्पा । अथ । द्विद्वे ।
 दोरकथा । दुराट ।

द्वीपवत्, (पु०) द्वीप+अन्ति अर्थे नदुप्रासको व हेनर्दि ।
 द्वीपवाला नद (बडा दवां) । समुद्र । नदी और धूमि
 (श्री०) दीप् ।
 द्वीपिन, (पु०) द्वीं बर्षीं अच्यते । द्वे-पत् । द्वीपं (द्विषन्)
 चर्म । तद् अन्ति अन्त्य+नि । जिसका चर्मदा दुर्लभ हो ।
 पीला । बाप । एक प्रकारका बाप (मेदिनी) ।
 द्व, संवरण । द्विचना । अन्त- पर- मन्- अन्तिद् । द्वारि ।
 अद्विषीद् ।
 द्वेषा, (अव्य०) द्वि+प्रकारे च+च्-ट् हो गता है । द्विच ।
 दो तरफसे
 द्वेष, (पु०) द्विप्+वत् । विरोध । बर । दुस्मनी । अन्तर ।
 द्वेषण, (वि०) द्विप्+युच् (अन्) । शत्रु । दुस्मन । "अरे
 ह्युद्" बर (म०)
 द्वेष्य, (वि०) द्विप्+ष्यत् (य) । शत्रु । दुस्मन । विरोधी ।
 द्वेषुणिक, (वि०) द्विषुणं मर्त्तुं एवमूर्णं प्रदहन्ति इव ।
 जो दुष्प्रासा सेनेको एवमूर्ण देता है । इदि (अन्त) ता
 जीनेवाला । शत्रुणि । अन्त चन्नेद्वारा
 द्वैत, (म०) द्विधा द्वौ द्वौं तस्य भावः अन्त । दो उमरके
 मेदवाला । दोकी संमता । "अर्थेद्व" दो मारके अंतरक
 (वि०)
 द्वैतघन, (न०) द्वे इमे (गते) यस्यात् । बर्षीं । द्विने
 दोनो कते रहे हैं । दोर, बीर, शत्रु, दुष् अन्ति अन्ति
 रहित । एक वन
 द्वैतयादिन्, (वि०) द्वौं वरिणि । अन्ति । जो दो
 बरके बोलाए है । और और ईशरका द्वेद्वे अन्ति च बरके
 द्वारा वैदविक आदि ।
 द्वैष, (म०) द्वि+प्रकारे समुत् । दोरक । दोरक
 द्वेष, (पु०) द्वीपिनो द्विषन् +कम् । अथ (मेदिनी-
 पीला) द्विषेवा अन्तर । द्विद्वे अन्तेमे वदुप्रास एव
 द्वेषायत्, (पु०) द्वीप अन्त (अन्त्यर्थे) काय । द्वेष
 वन । स एव+अन्त । जिसकी अन्त्यर्थे द्वेष है । अन्त
 द्वेच । अन्त । पुनर्लोक बर्षीं
 द्वैतानुद, (पु०) द्वयोः अन्ते अन्त-अन्त । द्वेच । अन्त
 अन्त । दो मारकोटी अन्तव । दुर्लभ और वदुप्रासके वद
 गया । एतेत । अन्तवन्तकी एव
 द्युपुक्, (न०) द्वोः अर्थे (द्युपुक्) अन्-अन्त ।
 अन्तेद्वय दो अन्तमेद्वे हुआ । दो वदुप्रासके अन्त एव
 द्याप्त । द्वे (द्वेषार्थे) अन्ते (अन्त्यर्थे) । अन्-अन्त ।
 जो दोनो और अन्ते अन्त होना है । एव । एव ।
 एत ।
 द्युपुष्पायत्, (पु०) अन्त्य (द्विद्वय) अन्त वन
 (अन्त) अन्तवन्त द्वोः अन्तवन्त । एत-
 एत और एत अन्ते दो द्युपुष्पायत् है । एव अन्त-
 वत् इव ।

घ

घ, (घु०) घे-धावा+ङ । घर्मे । कुबेर और ब्रह्मा । घन (दौलत) (न०) ।
 घम्, नादाकरना । घुण० उभ० सक० सेट् । घमयति-ने । अर्धपङ्क्त-त ।
 घट, (घु०) घन+अल्-दान्तादेशः । तुल्या । लकरी । तराजू । दिव्य प्रमाणरूप एक प्रकारकी परीक्षा । ७ वीं राशि ।
 घटक, (घु०) एक परिमाण-माप (४२ रतिघ होताहै) ।
 घण, ध्वान । मन्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । घणति । अघानीन्-अघनीत् ।
 घन्त, (घु०) घपति भावत् । घांकर घृ० । जो घान्त-ओंको फूंकता है । घन्तरा ।
 घन्, धानोंको उभय करना । जुहो० पर० लक० सेट् । दधन्ति । अघानीत्-अघनीत् ।
 घन्, रत्न । मन्दकरना । भ्वा० पर० लक० सेट् । घनति । अघनीन्-अघनीन् ।
 घन, (न०) घन+अच् । वसु । अर्थ । दौलत । घन । झेद । विपत्त । घनिष्ठा नक्षत्र (तारा) ।
 घनत्रय, (घु०) घने जयति । त्रिभयत्-सुम्व । जो घनको जीतता है । अतुंन । बहि (भाग) । एक हाथी । पुनःपुनःकाला शरीरका वसु (पेडको फुला देता है) । पद्मगत ।
 घनद, (घु०) घनं दनते-दे-पालन-बचाना । जो घनकी रक्षा करता है । कुबेर । द्विषत वृष्ट । "दाभक" घनके देनेहार (त्रि०) ।
 घनदण्ड, (घु०) घनस्य दण्डः । घनका दण्ड (सजा) । तुंनना ।
 घनदानुचर, (घु०) ६ त० । घनदका अनुचर । यश (एक प्रकारका देवता) (कुबेर यशोंका राजा होनेसे) ।
 घनदानुज, (घु०) ६ त० । कुबेरका छोटा भाई । रावण ।
 घनघान्त, (घु०) घनस्य घान्तः । घनका म्वासी (माउटिक) ।
 घनघात, (घु०) घने घाटयति लण० स० । घनका घाटन करनेका । कुबेर ।
 घनघट, (त्रि०) घनेन गटः स्य । घनसे मग होनेकाला । घंटीका अभिधानी ।
 घनघम्, (त्रि०) घन+अनुत् । घनका ।
 घनघम्य, (घु०) घनस्य घम्य । घनका घम्य (घर्ष) ।
 घनघ्न, (घु०) घने हर्षति लण० स० । घनकी हरनेकाला । हर्षत् । घ्न ।
 घनघर्ष, (त्रि०) घनेन हर्षं+अर्द्धं घर्षतः । घनसे घर्ष मिल करनेका ।
 घनघ्नि, (त्रि०) घनेन हर्षः लृ० लृ० । घिनेन । घनसे हर्ष

घनाधिप, (घु०) ६ त० । कुबेर घनोंका स्वामी ।
 घनिक, (घु० न०) घनिकत् कयति । ई-धाकी समान शब्द कता है । घन्याक (घनेट्) (दौलत) (घु०) । "घनें विद्यते अन्व द्" पाय घन हो (घनी-दौलतमंद) । घने-कर्मों देनेहार (त्रि०) ।
 घनिष्ठा, (घी०) अतिघनेन घनवती । तराजू कोप होता है । बहुत घनवाली । घने नक्षत्र (तारा) ।
 घनुगुण, (घु०) ६ त० । घनुगुण गुण (विद्वान्) विद्या ।
 घनुग्रह, (घ्रादः) (घु०) घनुः पृकति पदु (घ) को पकड़नेकाला ।
 घनुज्या, (घी०) घनुजः ज्या । घनुगुण विद्वान् ।
 घनुधर, (घु०) घनुः धारयति । घ्+अच् । घने पकड़ता । घनुक । तीरन्दाज । तीर बन्दनेका ।
 घनुविद्या, (घी०) घनुयः विद्या । घनुयसे विद्या ।
 घनुवेद, (घु०) घनुयः वेदः । घनुयसे वेद । शास्त्र कि विगमने शस्त्र और अस्त्र बजाने कीरने करनेहारे मन्त्र पाये जाते हैं ।
 घनुवेदिन, (घु०) घनुः वेदि । घनुयसे विद्वान् ।
 घनुष्पाणि, (त्रि०) घनुः पाणी दध । घिने घनुय है ।
 घनुष्पत्, (घु०) घनुः अस्ति अन्व-सु-घनुष्पत् । तीरंदाज ।
 घनुम्, (घु०) घन+उत्ति । घिनारका दण्ड । पकड़नेहार (त्रि०) चाप । घनु । तीर । देने राशि (न०) ।
 घन्य, (घु०) घनाय दितम् । घनके लिये दितकी । अथकर्मका वृत्त । श्वाय । मटहनेकावक । घन्यः यत् । पुष्परचित । घन देनेहार नीतिमान । घने दितकी । घनके कारण (त्रि०) ।
 घन्यमन्य, (त्रि०) अथमानं घनं मन्यते-नन् घनने धारायी घन्य माननेकाला । जो घनने मान्यपत्त समझता है ।
 घन्यवाद, (घु०) घन्यया वद+अर्द्धं+लृ० प्रयोग वृत्त मुकरी ।
 घन्याक, (न०) घन+अच् । घिने । घने एक वृत्त ।
 घन्यन्, (त्रि०) घन+अर्द्धं । घन । घने (घिनवती) देण ।

नन्दारि, (पु०) धन्वन् (शिल्पशास्त्रं) तस्य अन्तं
इत्यति । न्द+न् । शिल्पशास्त्र । (कारीगरीकी) विद्या-
का अन्त करनेहारा । स्वर्गका एक षष्ठ (इकीम जो समुद्र-
के मयन करनेमे नारायणका अन्त प्रकट हुआ) । दिवो-
दास नामी काशीका राजा । विक्रमादित्यकी सभामें बैठने-
हारा एक पण्डित.

धन्वी, (पु०) धन्वं विद्यते अन्व+इति । अन्वेन । कृत्प्रका
इत्यतः । इन्द्रलम्बा । और बबुल । विद्वन्ध । चतुर । धनुष
पचनेहारा (वि०).

धम्, धम्पकरना । तुदा० पर० राक० सेद० । धमति । अधमीय.

धमक, (पु०) धम्+कृत् (अक) । कुंभनेहारा लुहारा ।
लोहारा.

धमन, (पु०) धम्यते अनेन । धम्+न्त्यु (अन) । नल ।
धौकनी (फुंकनी) के धौने (फुंकने)हारा । मूर । (बेर-
हम) (वि०).

धमनिनी, (स्त्री०) धम्+अनि वा ङीप् । नाडी । सिरा ।
प्रीका (गदने) । हल्ली.

धम्मिह, (पु०) धम्+भिच्+मिह्+क+पु० । संयतकेत ।
बंधिहुए बाल । मध्यमें फूल रखकर ऊपरसे मोतियों वा
और किसी रत्नकी लड्डियोंमें बंधाहुआ बालोंका जुड़ा.

धर, (पु०) धृ+अच् । पर्वत (पहाड़) कच्छुओंका राजा ।
कच्छुओंमेंसे एक । कायांगस्य । कपायका क्षत्र (पागा वा तार).

धरण, (पु०) धृ+णुच् (अन) । एक पहाड़ । लोक ।
गुण । पान । मूर्ध । सेतु (पुल) । पौवीश वा द्य
रतिओंका मार.

धरणि, (पु०) धृ+अनि वा ङीप् । पृथिवी (जमीन) बनका
कंद (स्त्री०).

धरणिणीधर, (पु०) धरणि(णी) धरति । धृ+अच् । पर्वत ।
(पहाड़) । पिण्डु । और कच्छ (कच्छका अवनार).

धरणिपति, (पु०) धरण्याः पतिः । पृथिवीका पति
(माणिक) राजा.

धरणीधर, (पु०) धरणी धारयति । पृथिवीको उठाना है ।
सेपनाय । पिण्डु । पर्वत । पहाड़ । कच्छ । राजा । दिग्गज.

धरा, (स्त्री०) धृ+अच् । पृथिवी । गर्भका आलय । (बीच-
की जगह) । जरायु । भेद (धर्त) को उठानेहारी नाडी.

धरात्मजा, (स्त्री०) धरायाः आत्मजा । पृथिवीकी पुत्री ।
हीना । रामभार्या.

धराधर, (पु०) धरा धारयति । धृ+अच् । जो पृथिवीको
धारण करता है । पर्वत । पिण्डु (बरद-मूषरत्न).

धराधर, (पु०) धराया अवर इव । पृथिवीपर मनो देवता
है । आत्मन । "भूदेव" अदि उच्यते इती अर्थमें है.

धरित्री, (स्त्री०) धृ+इच् । ङीप् । पृथिवी । भूमि । जमीन.
पृ० २४

धर्म, (पु० न०) धृ+मन् । जो (नदी-सधारणमें बहे जाते-
को) पकड़ता है । धुनि (वेद) स्थिति (धर्मशास्त्र) में
बहा गया कर्म । कर्मसे उपजा अष्ट (शुभ वा अशुभ) ।
आत्मा (देहको धारण करनेसे) जीव । आचार । सामाज्य ।
उपमा । यह आदि । अहिंसा (किसीको न मारना) ।
न्याय-उपनिषद् । यमराज । सत्यज्ञ । धनुर् । (ज्योतिषमें)
समसे नवम (नवां) स्थान । दान आदि (न०).

धर्मक्षेत्र, (न०) धर्मका क्षेत्र । (स्थान) । इन्द्रक्षेत्र
(जहाँ कौरव और पाण्डव युद्धका घोर युद्ध हुआ) ६ त० ।
धर्मका स्थान.

धर्मशुत, (वि०) धर्मः शुभः अनेन । धर्मकी रक्षा करनेवाला.

धर्मचारिणी, (स्त्री०) धर्म (साम्प्रदायिक) करति
चर+णिनि । जो धर्मको बर्ता है । भार्या । जाया । (स्त्री०) ।
जोरु । एक लवा (बेल)

धर्मजिज्ञासा, (स्त्री०) धर्मस्य जिज्ञासा=(शत्रुं इच्छा)
(स्त्री०) धर्म (नियम) जांचेकी इच्छा.

धर्मदान, (न०) किसी प्रयोजनको चित्तमें न रखके धर्म-
बुद्धिसे जो बलु पात्र (योग्य पुण्य)को दिये.

धर्मद्वयी, (स्त्री०) धर्मजनको द्रवी यन्त्रा । विवक्षा बरना
धर्मको उत्पन्न करता है । मात्रा "मदानटी" " देवनटी."

धर्मध्वजिन्, (वि०) धर्मो ज्ञान इव अस्ति अन्व+इति ।
जिगका धर्म शाब्देकी नाई हों । जीविकाके दिने जटा
आदि रखनेहारा.

धर्मपत्नी, (स्त्री०) धर्मार्थ पत्नी । धर्मके दिने स्त्री । पहिले
विवाही गई अपने बर्णकी स्त्री । धीरि । बन्नी । स्थिति ।
मेधा । प्रति । हम्ना.

धर्मपुत्र, (पु०) ६ त० । धर्मका पुत्र । धुपिठिर.

धर्मपाठक, (पु०) धर्मस्य पाठकः-व० त० । धर्मशास्त्रके
पढ़ानेवाला.

धर्मराज, (पु०) धर्मस्य राजा+टच् । धर्मका राजा ।
यमराज.

धर्मराज, (पु०) धर्मस्य राजते+अच् । धर्ममें योग्य पात्र
है । "धर्मस्य राजा बन्+टच् राजा०" धर्मका राजा ।
यमराज और धुपिठिर.

धर्मलक्षण, (न०) धर्मो लक्षणम् अनेन । लक्ष्+न्नुच् ।
जिसे धर्म पहिचाना जाता है । प्रति, क्षम, दय,
श्री, शैव, इन्द्रियोंसे रोचना, धी, मित्र, मत्त और
कोष न करना ये दय.

धर्मपाद, (पु०) धर्मस्य पादः । धर्मविचरर विवद
(शरण).

धर्मविधि, (पु०) धर्मस्य विधिः । धर्मका विधान । कच्छी
हुकम.

धाराशुद्धम्, (न०) धारायाः शुद्धम् । छमाछम पानी बराने-
का घर । भुआरेवाला घर (नहानेका कमर) ।

धाराट, (पु०) धारायं अटति+अच् । जो (मेघकी) धा-
राके लिये घूमता है । पपीहा (चातक) । घोडा । चाद-
ल । मत्तगज । मल हाथी ।

धाराधर, (पु०) धारयति । धृ+णिच्+अच् ह्रस्वः । जिसकी
धारा होती है । मेघ । चादल । मेह । मी । मीढ ।

धारानिपात, (पु०) धारायाः निपातः । वृष्टि (वर्षा)-
का निरना । छमाछम भारी वृष्टिका पडना ।

धाराधादिन्, (त्रि०) धारया (सन्तत्या) वहति । पद्+
निनि । जो निरन्तर वहता है । निरन्तर गिरनेद्वारा । धीरे
२ लगातार हो रहा । "स्वार्थे कच्" "धारावाहिक" यही
अर्थ ।

धारासम्पात, (पु०) धाराणां सम्पातः (पतनम्) ।
(पानीकी) धाराका गिरना । महावृष्टि । बड़ी वर्षा ।
बहुत बरसना ।

धारिणी, (स्त्री०) धृ+णिनि । जो धारणकरे भूमि ।
(जमीन) । गिम्बलका पेड ।

धारिन्, (पु०) धृ+णिनि । वीरुका वृक्ष । धारण करने-
द्वारा । आगरा देनेद्वारा । बचानेद्वारा (धि०) ।

धातराष्ट्र, (पु०) धाराष्ट्रे (घुराजदेशे) भव+अच् ।
अष्ट राजराज्ये देशमे हुआ । अथवा घुराजनाम देश-
में हुआ । एक गाँव । एक हंग (जिसकी चौक और
बराह (पाँव) काटे रंगके हो और शरीर चिड़ा हो) ।
"धृतराष्ट्रस्य धारयन्+अच्" । धृतराष्ट्री राजान । दुर्वा-
पन आदि ।

धार्म, (धि०) धर्मस्य हर्द+अच् । धर्मसंबंधी । धर्मका ।

धार्मिक, (धि०) धर्मं चरति (चलनं अनुशीलयति)+
इच् । जिसका निरन्तर धर्मही करनेका अभ्यास है ।
धर्मशील । धर्मोन्मा । धर्मबला । धर्मो ।

धाष्टयं, (न०) धृष्टस्य भावः+अच् । डीठपन । निर्दोषता ।
बेदरनी ।

धाष्ट, (न०) अष्टी बटका । आगना । अष्ट+सेट् । और वृद्धि ।
मक बनना । अष्ट+आ० अष्ट+सेट् । धाष्टनी । अष्टा-
धिट (अष्ट "ए" को "ध" आदिच होना है तब
बनकरती है) ।

धाष्टक, (पु०) धृष्ट+निच्+अच् । रबड़ (थोड़ी रस-
केड) । धृष्ट+अच् । अष्टी जनेद्वारा । शीघ्र । अगन-
द्वारा । (धि०) धाष्टिक ।

धाष्टन, (न०) धृष्ट+अच् । धिष्टन । धाष्टकरना । अष्टी
जना ।

धाष्टनम्, (न०) धाष्टन्य भावः । धिष्टनम् । धिष्टनम् ।

धावित, (धि०) धाव्+क् । शुद्ध किया गया ।
हुआ । भागा हुआ ।

धि, धृति । पकडना । रखना । तु० पर० ल०
धियति । अधीपत्व (संके साथ इसका कार्य
करना) ।

धिव्, (अव्य०) अनिट शब्दोंसे भव उपजाव
ना । निन्दा । "धिग् धिग् शकजितम्" इति
निन्दाके लायक । छिः, शरम, शोकके हत
अर्थमें प्रायः द्वितीया होती है । "धिक्
मदनं च इमो च सो च" ।

धिक्कार, (पु०) धिक्+कृ+घञ् । तिरस्कार ।
बेइज्जती ।

धिक्कृत, (धि०) धिक् (निन्दीय) कृत् ।
निन्दाके भोग्य क्रियाभया । निर्भीकत । धि
तिरस्कार क्रियाभया ।

धिक्, सन्दीपन । जगाना । रहना । सक० । हेण
अर्थमें अक० भवा० आत्म० सेट् । धिधवे ।

धिषण, (पु०) धृष्ट+क्यु-धिक्का आदेशः ।
देवताओंके गुह ।

धिषणा, (स्त्री०) धृष्णोति अनया । धृष्ट+क्यु-
दि । देस । जिससे धीरज और बहादुरी कता है । बुद्धि

धिषण्य, (न०) धृष्ट+अच्-नि० । स्थान । जग
पर । शक्ति । ताकत और तारा । अभि-आन ।
रकी आग । और शुक् (पु०) ऊंचे पदके योग

धी, अनादर । रामाल न करना । तिरस्कार करना
करना । रोया करना । दिवा० आगम० राठ० धि
यते-अधिष्ट । धीन..

धी, (स्त्री०) धी+किप् सम्प्रसारणं च । बुद्धि
ज्ञान । शकील । रामास ।

धीति, (धी०) धे+किन्ट् (धि) । धीना । धृष्ट
स । (वैरमें) अनुष्ठिये । भावाल । अनुष्ठा
बेइज्जत करना-नाराज न करना ।

धीम्त्रियम्, (न०) ध्यु, धीम आदि जने
इन्द्रिय ।

धीमत्, (पु०) धी (प्रज्ञा) अभि अर्थ-मद
बुरागी । बुद्धिबाला-वर्जित आदि (धि०) ।

धीरभयम् निरदर करना । मुग्ध० उभ० ह्य
(धि० "अव" उपगत इगके वक्षिडे (रस)
धीरप्रीने । धीरप्री ।

द, (त्रि०) धियं रात्रि (रा+क) धियं ईरयति (ईदृ+अच्) धीरजबल्य (होसलेवाला) । नम (ह्रीमि) ।
 लाला और पण्डित । राजा बलि । बुद्धिबो प्रेनेहारा ।
 बुद्धि साक्षी (गवाह) और परमेभर (पु०) केसर
 (न०) एक नायिका । टहरीहुई चित्तकी वृत्ति (स्त्री०) ।
 ल्चेतस्त्, (त्रि०) धीरे चेतं यस्य । ध० रा० । धीर
 चेतवाला । पका । टट । धीरजबाला ।
 लता, (स्त्री०) धीरस्य भाव-भक्त्यः । धीरपना । हीसल्य ।
 ल्प्रदान्त, (पु०) धीरः प्रदान्तथ । कर्म० रा० ।
 फेती काव्य वा नाटकका नायक जो धीर और दान्त
 लभाववाला है
 लोदास्त, (पु०) एक नायक (एक प्रकारका पुत्र) ।
 पर, (पु०) दधाति मत्स्यान् । धा+भ्वरच्+नि० । कैव-
 र्त । गच्छी पकड़नेहारा ।
 राक्ति, (स्त्री०) ६ त० । शुभ्रवा (सेवा) आदि आठ
 प्रकारके गुण ।
 राख, (पु०) धियः सता । टच्+गमा० । अमाल
 (बनीर) बुद्धिचा मित्र ।
 रान्धिय, (पु०) मन्त्री-बनीर । "धीमता" यती अर्थ ।
 रमन । बांपना । स्था० उभ० राक० अनिद । पुनोति-
 धुनुने । अर्धरीत् अर्धोत् ।
 रू, गन्दीपन । जगाना । रटना । भ्वा० धा० राक० सेद् ।
 धुसवे । अणुशिष्ट ।
 रू, (त्रि०) धु+क । छोडनाया । बांपनाया । एक ।
 मोषित । बभिनत ।
 से-नी, (स्त्री०) पुनोति येनवासीन् । जो बंनभारिको
 बंवाली है । गयी (रथां) ।
 शुमार, (पु०) बुद्धयः राजाका पुत्र । दन्तगोपकीज ।
 (बीरबहूटी) ।
 सु-रा, (स्त्री०) पुर्वे+त्रिप्+वा टाप् । चिन्ता (चिह्न) ।
 रथ आदिके आगेका भाग (हिस्सा) । गाडीका मुं और
 भार (बोझा) ।
 सुधर, (त्रि०) पुरं धारयति । धृ+मिन्+भ्रम्+सुम्+ह-
 राथ । भावराहक (बोझा उठानेहारा) बैल शारि । बोझा
 गहानेहारा
 रीण, (त्रि०) पुरं बद्धिभ्यः । बोझा उठाना है । घेउ ।
 अच्चा ।
 र्य, (त्रि०) पुरं बद्धिभ्यः । भार उठानेहारा । अच्चा ।
 र्ये, हीसा मारना-भ्वा० पर० गव० सेद् । पुर्वेति । अणु-
 शरि । पूर्त् ।
 रिय, (न०) धु+इत् । यत् आदिमें आगको (संघुसण)
 सुडगाना ।

धू, बांपना । भ्वा० उभ० गव० येद् । धवति-ने । अथा-
 बीत् । अर्धरिष्ट । अर्धोत् ।
 धू, बांपना । वा पुरा० उभ० पक्षे जुदा० पर० राक० सेद् ।
 धूनयति-ने । धुवति । अणुधुनत्-अणुवीत् ।
 धू, बांपना । स्था० क्वादि० उभ० राक० येद् । धूनोति-
 धुनुने । धुनाति-धुनीते ।
 धून, (त्रि०) धू+क । बांप गया । चलनाया । पंगरा हिया-
 गया । छोडा गया । जुदा हियागया । सिट्नागया ।
 धूप, वीसि । चमरना । पुरा० उभ० अक० । जपाना-रा-
 क० सेद् । धूपयति-ने ।
 धूप, सपना-अक० तपाना-सक० भ्वा० पर सेद् । धूपयति ।
 धूप, (पु०) धूपयति रोगान् (दोषान् वा) धूप+अच् ।
 गुग्गल आदि सुगन्धिवाले द्रव्योंसे निकलाहुआ धूम (धुआं)
 उगका साधन द्रव्य ।
 धूपित, (त्रि०) धूप+क वा भावना अभाव । मार्ग आदि
 चलनेसे धान्त (पका) हुआ । सन्तार दिया गया ।
 धूम, (पु०) धूम+क् । गीली लगरीसे उपजा मेघ और कम्ब-
 लका कारण । आगका शब्द ।
 धूमकेतन, (पु०) धूम केतनो यस्य । धुआं जिनका शब्द
 है । धूम इव केतन । धूमंकी नाई शब्द । उरगत(उपदव)-
 र्ण अणुभको धनानेहारा एक प्रकारका तारोय समूह ।
 ६ ब० । आग ।
 धूमयोनि, (पु०) धूमः योनिः अस्य । धूम जिनका कारण
 है । मेघ (बादल) योधा (गुम्फ) । ६ त० । शब्द ।
 गीली लटकी
 धूमल, (पु०) धूम (धूमद्रव्यं) खाति । ल+क । जो
 धुंकासे रंगको देना है । काज और लाल रंग । उग-
 वाला (त्रि०) ।
 धूम्या, (स्त्री) धूमनां समूह+य । धूमका समूह । धूमका
 साधन (त्रि०) ।
 धूम्र, (पु०) धूमं (द्रव्यं) रात्रि । रा+क-ट् । मपेदे
 रोमकी भांति । काज और लाल रंग । उगकला (त्रि०)
 सिद्धक ।
 धूम्रक, (पु०) धूम इव कायति । कै+क कंट । कंट ।
 धूम्रलोचन, (पु०) धूमं लोचने यस्य । जिनके नेत्र धूमिसे
 हैं । कपेट (कट्टर) । महिवापुट नानी एक सेनाका
 पति (मन्त्रिक) ।
 धूम्रवर्ण, (पु०) धूमः वर्णः अस्य । जिनका धूमिगा रंग
 है । सिद्धक । काज और लाल रंग, ऐसे धुंकेगरीमें रंगरज्य
 (त्रि०)
 धूम्रिका, (स्त्री०) धूम वर्ण सारे अति अन्व+ट्त् (टट) ।
 टानीका रक्षण ।

धूर, धप । मारना और जाना (गति) । धिवा० धपम० गह०
सेट् । धूरति । अधूरिष् । धूः ।

धूर्जटि, (पु०) अट-संघात (इच्छा होना) + ट् । धूरः
(प्रेतोक्तवचिन्तायाः) जटिः (संघातः) अत्र । जटो
तीनो लोकोकी चिन्ता इहमी हो रही है । शिपत्रीमहागात्र.

धूर्त, (पु०) धूर्-धूर वाक्फ । धनुरेका वृष । और एक-
प्रकारका नायक । सचरा । जभा नेउनेहारा । बमह
(टग) (धि०).

धूर्तक, (पु०) धूर्त इव (बमह इव) । इसके अर्थमें
कन् । जो टगरी नाई है । श्यामल (शिआर) । गीदर.

धूर्वेह, (धि०) धूर् वेदति । वह्+अच् । भारवाहक । बोझा
उठानेहारा । धुरेधर । "धुर्वेह".

धूर्लि-ली, (ली०) धूर्+लिच् वा डीप् । रजम् । पगम ।
धुरी । धूल.

धूर्लिष्यज, (पु०) धूर्लिः एव ष्यजः शक्य । धुरीही जिग-
का हांदा है । बायु । ह्वा.

धूसर, (पु०) धू सर । गहंम (गथा) । कंट । कपूर ।
तेलाकार । जिसका स्वरूप बेलही नाई हो । काल, विष्ट,
पीला उरा रंगवाला (धि०).

धूस्तर, (पु०) धूम+क्षिप्+तृ+कृष् + वा ह्रस्वः । धूरा.
धू, पतन । भ्वा० आत्म० अक० अनिद् । धरने । अधून.

धू, स्थिति टहरना । अक० । धृति-मट्टना-मक० । भ्वा०
उम० अनिद् । ध्रियते । अधून.

धू, धारण । पकटना । धुरा० उम० सक० अनिद् । धारय-
ति-वे । अधीधरत्-त्.

धृत, (धि०) धृ+कृ । कर्मणि । धारण क्रियागया । उठाया
गया । आश्रय दियागया । पहिरा गया । इतिमात्र किया गया.

धृतराष्ट्र, (पु०) एक राजा (चन्द्रवंशमें दुर्योधनका पिता) ।
सौंप । पत्नी.

धृति, (ली०) धृ+क्तिन् । वृत्ति । प्रसन्न होना । पकटना ।
यज्ञ । छाठवां योग । मुख । धारणा । (चित्तका किसी
एक देशमें रकजाना) । दुःखमें भी शरीर आदिकी रोक्क-
नेकी शक्ति । अठारह अधरके पादवाला एक छन्द ।
१२ की संख्या.

धृतिमत्, (धि०) धृति+मत् । धैर्यवाला । दृढ । पद्म ।
निघल । एक चित्तवाला । प्रसन्न । सन्तुष्ट.

धृष्ट, प्रागल्भ्य । बन्दुराई दिखाना । ला० पर० अक० सेट् ।
धृणोति । अधर्षात् । धृष्टः.

धृष्ट, सामर्थ्यबन्धन । ताकनकी रोक्कना । धुरा० आत्म०
अक० सेट् । धर्षयते.

धृष्ट, क्रोध । गुस्ता करना और अभिभव । दबाना । धुरा०
उम० पक्षे भ्वा० सक० सेट् । धर्षयति-वे । धर्षति.

धृष्ट, (धि०) धृ+कृ । प्रसन्न । बन्धु । प्रसन्न । प्रसन्न ।
बेगम.

धृष्ट, (धि०) धृ+कृ । प्रसन्न । प्रसन्न । प्रसन्न । प्रसन्न ।
धृष्टवृष्ट, (पु०) धृ+कृ (प्रसन्नं) वृष्टं (धि०) ।
प्रियारा मीरीर वर हो । इतरका धुर

धेनु, (ली०) गायिणी धुन्व । धेनुः । धेनुः । धेनुः । धेनुः ।
धेनुक, (पु०) धेनुः इव । (इच्छे गर्भे स्त्र) ।
धुर्देव । इगिनी (ली०) "अने गर्भे धेनुः" ।

धेनुकर्मन्, (पु०) धेनुकं मूरति (इच्छे) ।
(अन) । धीच्छेने "धेनुक" अति ही इच्छे

धेनुप्रकार, (पु०) धेनुः इव । धेनुः । धेनुः । धेनुः ।
जो गीके दाधीनमें फैलते । मंजर (मार) धेनु

धेनुष्या, (ली०) धेनु+भ्रंशमें वर-मूह व । धेनुः ।
(कर्ता उठाने) के दिने उगमर्भे (धिने धेनुः)
जाया है) संघटके नीरार हीगरे गो.

धेनुक, (पु०) धेनुनां ममूर+कृ । धेनुकं
बहुव गीर्ण.

धैर्य, (न०) धीर्य्य भाव + ध्यम् (य) । मनकी नि-
धीर्य्य । कंकर्भे । वारगोंके होनेवर नी मनकी नि-
रहना (न विगटना) । न पबटना.

धैर्य, (पु०) एकप्रकारकी गठने विच्छेदुं
धोद, गतिवायुयं । बाउडी बन्दुराई । ध्वा० पर०
सेट् । धोरति । अधोरत् । धिच् । अधुधोरत्.

धोरण, (न०) धोरति अनेन । धोर+धुन्वुर्
वा । दाधी, धोटा, गमी आदि मवायी (धि०)
"भाये ल्युट्" । एकप्रकारकी धोडेकी बल.

धौत, (धि०) धा+कृ-कट् । मांशिन (साह कि-
धोयागया । उत्तेजित (मटकाया गया) । धी०
वांसी (न०).

धौतकौपेय, (न०) कर्म० । धोया हुआ । धी०
जैसे उपजा कपडा.

धौरेय, (धि०) धूर् वहति+ट्कृ (एय) । धा-
हारा । वैठ आदि.

ध्मा, अधिर्षुधुन कृकना । ऐसा शब्द करना कि धि-
सांघ निकले । भ्वा० पर० । वैसी लाकपने
सक० अनिद् । धमति । अध्मासीट्.

ध्मात्, (धि०) ध्मा+कृ । संयुद्धित । मटकाया
कृयागया.

ध्माह्, आकाहा चाहना सक० । धोरत् । धोरत् ।
अक० भ्वा० पर० सेट्-दरिद् । ध्माहति । ध्माहति ।

ध्माह्, (पु०) ध्माहि+अच् । काह (बोझ)
आँधो खानेहारा । और मिथुक (मीसमार्गने)

पित, (वि०) ध्या+पिन्+क । भय्य पित्ता गया ।
 नक हो गया । पूंछ गया । जलाया गया ।

पित, (वि०) ध्ये+क । मयाल किया गया । गोया गया ।
 चिन्तन किया गया ।

पित्त्य, ध्येय (वि०) ध्ये+तन्व्य+भट् । ध्यान करनेयोग्य ।
 गोवनेलायक ।

पित्तम्, (न०) ध्ये+भावे ल्युट् । खयाल । चिन्तन ।
 तोव । ध्येयकी एकनामता ।

पित्तयोग, (पु०) ध्यानस्य योगः । ध्यानका योग (अ-
 ध्याय) । गार्ह समाधि ।

पित्तस्य, (वि०) ध्याने तिष्ठति । स्थानक । ध्यानमें स्थित ।
 एकचित्त होगया ।

पि, ध्या० पर० । ध्यायति । ध्यात । दप्या । रिध्यायति ।
 ध्यायते । ध्यान करना । खयाल करना ।

, ध्येय-टिक्ना-पदाहोना-जाना-चलना-मारना । ध्या० वृदा०
 प्रवति-भुवति । आर्षायीन्-अभुषीत् ।

पि, (पु०) ध्यु+अच् । पंजु (एकप्रकारका कील) । धियु ।
 मरुदेव । उत्तानवायुप्रवाहक पुत्र । एकप्रकारका योग ।
 धाराके आगेका भाग । साधेपर एकप्रवाही गोलावट ।
 भूगोलके दोनो (उत्तर और दक्षिण) केन्द्रों (चिरों) के
 ऊपरका भाग । और एक तारा जो स्थिर रहता है ।
 तिथिज (पहा) । दलील (तर्क) । आधारा (न०) ।
 सन्तल (लगातार) । न बदलनेवाला । स्थिर (कायम)
 (वि०) । "संज्ञा (नाम) में कन्" । एक गीत (न०) ।

पित्त्य, (न०) ध्युवस्य भाव +व्यच् । पनाहोना । स्थिर रहना ।

पित्त, गति । जाना । ध्या० पर० सक० सेट् । प्वजति ।

पित्त, (पु०) ध्यन्+अच् । संज्ञा । निशान । एक प्रतिबिम्ब
 पुत्रप । "कुलध्वज" अपने बंधमें विरोध पुत्रप । शौण्डिक
 (कलाक) । बेदीका कला । सेना (श्री०) । मेरु
 (पुत्रपका चिह्न) (पु० न०) ।

पित्तिन्, (पु०) ध्यन्+असि (टै) अर्थमें इति । राजा ।
 संदेवाला । रथ (गादी) । साक्ष्य । घोडा । हाथ ।
 कलाक । सोर ।

पित्तिनी, (श्री०) ध्यन्ना असि असा +इति । जिसकी
 ध्यन्ना हो । सेना (फौज) ।

पित्त, शब्द । बोलना । आवाज निकलना । सुरा० वम० सक०
 सेट् । ध्वनयति ।

पित्त, (पु०) ध्यन्+अच् (अ) शब्द (आवाज) । सुर ।

पित्त, (पु०) ध्यन्+अच् । घीमा मर्दंग आदिका शब्द ।
 अठंकारमें एक उत्तम शब्दमेव ।

पित्त्यन्धस, (पु०) ध्यन्+अच् (अ) । विनाश ।
 धर्षादी ।

ध्येय, गति । जाना । विनाश । होना विरना । ध्या० अत्त
 सक० सेट् । ध्वंते । "बला" में विकल्पसे इद होता है ।

ध्यस्त, (वि०) ध्यन्+क । विरपन । नष्ट । नाश हो कन्
 चलगया ।

ध्याह्, धाहना । उदावना । शब्द करना । ध्या० पर० मरु
 सेट्-इदित् । ध्यायति । अध्याधीन् ।

ध्याह्, (पु०) ध्याशि+अच् । कौशा । बगला । पट्टीर । पर
 ध्यान, (पु०) ध्यन्+अच् । शब्द । आवाज ।

ध्यान्त, (न०) ध्यन्+क । नि० । अंधकर । कृत्स्न
 ध्यान्तारि, (पु०) १ त० अन्धेरेका शत्रु । मूर्ख । कन्
 शत्रु । चांद । और भाग ।

न

न, (अद्य०) नद् बांधना (बन्धन) । नद्-
 वेय (शोकना) "क्रियाके साथ दोर हुने" (अभाव)
 और उपमा । खाली । टाटिक कन्-
 (वि०) मोती (पु०) ।

नकुट, (न०) न+कुट्+अ । नाक । कन्

नकुल, (वि०) नासि कुलं कन् ।
 निष्कल सांपका बेरी मेवला । "कन्-
 पुनः पितृन्" बाधवद्वा ।
 (पु०) । कुम्भी । जयान्दी कन् ।

नक्त, (न०) नक्त+अ । कन् ।
 साय दिन बिताकर रातके
 करना होता है ।

नक्तम्, (अद्य०) नद्-
 नक्तचारिन्, (पु०)
 जो रातको बिताते हैं
 विचरनेवाला कन्

नक्तञ्जर, (पु०)
 उन् और विन् ।

नक्तन्दिप, (न०)
 रात ।

नक्त, (पु०)
 रात ।

नक्त, (न०)
 रात ।

नक्त, (न०)
 रात ।

नक्त, (न०)
 रात ।

नक्त, (न०)
 रात ।

नक्त, (न०)
 रात ।

नक्षत्रनेमि, (पु०) नक्षत्राणां नेमिरिव । मानों नक्षत्रोंकी धारा है । ध्रुव नामी तारा । चांद्र । मिथुन ।
 नक्षत्रपाठक, (पु०) नक्षत्राणि पठति । पठ्+ण्वुल् । नक्षत्रों (तारोंकी पढ़नेवाला) । ज्योतिषी ।
 नक्षत्रमाला, (स्त्री०) नक्षत्राणां इव माला । तारोंकी नाई माला है । २७ मोतिभोंका बनावुआ एक हार । ६ त० । तारोंकी कतार “सर्व नक्षत्रमाला स्वाम्पत्तवर्धनतिर्मासिकः” कोश ।
 नक्षत्रलोक, (पु०) नक्षत्राणां लोकः । नक्षत्रों (तारों)का लोक । आकाश ।
 नक्षत्रविद्या, (स्त्री०) नक्षत्राणां विद्या । तारोंकी विद्या । ज्योतिःशास्त्र ।
 नक्षत्रसूचक, (पु०) नक्षत्राणि शुभाशुभतया सूचयति+ण्वुल् । जो तारोंका अच्छा वा बुरा फल कहता है । सिद्धा-न्तको न जात्रेद्वारा ज्योतिषी । “निनि” “नक्षत्रसूची” ।
 नक्षत्रेश, (पु०) ६ त० । तारोंका मालिक । चन्द्रमा । चांद्र । “नक्षत्रपति” आदि यही अर्थ है ।
 नख, गति । संपण । जाना । चलना । सड़ना । भ्वा० पर० सक० सेट् । नखति । अनखीत्-अनाखीत् ।
 नख, (पु० न०) नखं (छिद्रं) अत्र । जहाँ छेक-सुराप है । नख । नाँ अंगुलीका काँटा ।
 नखकुट्ट, (पु०) नखान् कुट्टयति । कुट्ट+अण् । जो नख-भोंको कूटता-उतारता है । नापित । नाई ।
 नखर, (पु० न०) नखं राकते । रा+क । नख । नख् । नाँ ।
 नखरायुध, (पु०) नखरं आयुधं यस्य । नखून जिसका शस्त्र (आजार) है । सिंह (शेर) व्याघ्र । (मेरिया) और कुतड़ । “नखायुध” यही अर्थ ।
 नखानरि, (अन्व०) “नखैः नखैः प्रद्वल इदं युद्धं प्रवृत्तम्” । आदसमें नखों (नाँ)की लड़ाई करना ।
 नग, (पु०) न गच्छति । गम्+च्छ । जो नहीं चलता । प-वर्त (पदाद) दृष्ट (दरसन) ।
 नगण, (पु०) लघु (एक मात्रावाला) रूप तीन अक्षर । न गच्छते (नहीं गिनी जाती है) गण्+अच् ।
 नगमिद्, (पु०) नगान् गिनति । मिद्+ङिप् । पर्वतोंको पढ़ता है । इन्द्र । पदादोंको तोड़नेवाला (त्रि०)
 नगभू, (स्त्री०) नग एव भू (टन्यासिस्थानं) यस्याः । जो पहाड़में निहलती है । छोटा पत्थर ।
 नगर, (न०) नगाः (इशाः पर्वता वा) यस्मिन् अस्मिन् । नगर । पुर । शहर (जहाँ अथे २ काम करनेवाले बसते हैं) । बहुत बड़ाभोंमें बर्गद्वारे अनेक जातिये हैं और सब देवताओंके स्थान भी हैं) । नगरी (स्त्री०) ।
 नगरजन, (पु०) नगरस्थः जनः । नगरके लोग ।

नगरध्वज, (पु०) “नगम्य रज्जुं कुर्वन्” । (कान पर्वत) में छेक गुग्गुलु बर्ण है । इन्द्र कार्तिकेय (महाशिवका बस पुत्र) ।
 नगरप्रदक्षिणा, (स्त्री०) नगम्य प्रदक्षिणा । नगरकी प्रदक्षिणा । किसी स्थानमें घूमने के लिये धीरे घुमाना ।
 नगरप्रान्त, (पु०) नगम्य प्रान्त । नगरके (विरा) ।
 नगरमर्दिन, (पु०) नगरं मर्दयति । टा० क० । मलनेवाला । मनमाला हाकी ।
 नगरमार्ग, (पु०) नगम्य मार्गः । १० त० । रास्ता । बही मटक । राजमार्ग ।
 नगाट, (पु०) नगेषु (पक्षेषु) व्यति-अच् । घूमना है । वानर । बन्दर ।
 नगाधिप, (पु०) नगानां अधिपः । पहाड़के हिमालय पर्वत ।
 नगौकम्य, (पु०) नग शोचो यम्य । पहाड़ जिसके पक्षी (परिंदा) । जेर । शरम । कीशा ।
 नग, (त्रि०) नग्न+ङ् । वस्त्ररहित । कपड़ेके बिना । दिग्भ्रमर नामी बौद्धोंका भेद (पु०) । तीन नेत्रों (आचरण) को छोड़नेवाला जन । “नग्नलोके रजकः किं करिष्यति” ।
 नग्निका, (स्त्री०) नग्नैव+भ्याम् कन् । नंगी । वह जो जिसे अंगी स्त्रीयमें (रज) नहीं हुआ वेदान्तके नग्नैक्य (त्रि०) अन्ततः नग्नः कृत् । नग्न+ङिप् । नंग किया गया ।
 नग्न, शोच । शरम करना । भ्वा० धा० कर्त् । नजते । अनजित् । नग्नः ।
 नग्न, (अन्व०) एक विशेष शब्द विशेष अन्वयोंके नहीं । न होना । रोचना । शोचपत । बुरा । बुरा शोच । बराबर । विशेष । फरक । नग्नने अन्वय अभाव-अपापम् । भेदे-अपदः पठः । ईश्वर-अन्वय अल्पते-अकेला । विशेषे-असुरः ।
 नद, न्युय-नाचना और हिंसा-मारना । भ्वा० कर्त् सेट् । नदति । अनदीत्-अनादीत् । पतिवर्ती ।
 नद, (पु०) नदति । नद+अच् । नाटक आदि बहो अमिनय (नकल) करनेवाला । एक प्रकारका नकल खीपर जीनेवाला । एकप्रकारका बर्णचंद्र (देवकी शतोक दृष्ट) ।
 नदन, (न०) नद+ण्वुट् (अन्) । नाच । नृत्य ।
 नदी, (स्त्री०) नद+अच् । टीप् (ई) । वेग । नदी भीतर ।

१. गिरना । सुग० वम० अक० रोद् । नादयतिने-
 १. (पु०) नद्+अच् । नदन् । नड । नडपाय । नृदीगर.
 १. (ली०) नडानो समुहः+य । नड (धातु) । नृयका
 समूह.
 १. (वि०) नडाः गन्धि अक्ष+ङ्गन् । नडकाला देवा.
 १. (वि०) नड+अच् । नड । नृवाहुभा । आपा दिन
 कीर्तनेपर जगदी पदी (पु०) । नगरदी जड (म०).
 १. ननासिका, (वि०) नना नासिका अक्ष । जिका नाक
 घुषा है । विपदीनासकाला (गान्धा).
 १. नान्दी, (ली०) ननं वात्रं अन्त्या+दीप् । नन और जपन-
 के बोधोये जिका अंग सुषा हो । एक भील.
 १. नि, (ली०) नन्+ङ्गन् । ननता । नृवना । सात तरदा
 निरता.
 १. नानोय । नृवाहोना । सवकारना । न्वा० पर० अक०
 रोद् । नन्दनी । नगमदी । नन्दयु० । प्रनन्दी.
 १. (पु०) नद्+अच् । गिपु-भैरव-सोप कादि ग्याभासिक
 जलकं प्रकाद.
 १. नृपु, (पु०) नद्+अधुच् । नृप । नदी लंबी भाषाज ।
 बलका द्यम्.
 १. नृपति-राज, (पु०) नदीनां पतिः वा नदीनां राजा । नरि-
 भाषा स्वामी । नृपुद.
 १. नी, (ली०) नद्+अन्+दीप् । नगा, नृगना कादि नृपुद
 वा बोधे जन्के प्रकाद । (एक हजार भाव धनुस् जितने
 भावमें बन्देहाती नदी बरी जाती है) । न्वा०.
 १. नीज, (पु०) नीप् । नदा. नदीये जयते । नन्+ङ
 । (म०) । नानुनवच । और नानामपुन । ओ नदीमें
 जयता है (वि०).
 १. नीग, (पु०) १ म० । नरिभांका स्वामी । नृपुद । और
 जयता भी करण.
 १. नीमानुका, (वि०) नदी नामा द्रव पोषिका अक्ष । नदी
 जिके नानाकीनर्त पुत्र बनी है । नदीके जलमे उदरे
 फलोये वाज नदा देता
 १. नीरय, (पु०) नदीनां द्रव । नदीका देव (तंटी).
 १. नीप, (वि०) नदी काजुं करणिय । का+अ-अच् ।
 नदीके करन बाला अन्त्या जयता है । जिक १ नदीमें
 ओ उदाला करीये द्रव जयनेहा
 १. नि, (वि०) नद+अच् । नदयुगा । निगदुग-
 १. निदी, (ली०) नद+अच्+अन्+दीप् । नददीकी करीपुद
 नदी.
 १. निद, (ली०) न नदयि । नद+अच् । (देव काजेल
 भी) ओ उदाल करी होये । नदीकी करीपुद (नद+अ
 नद । "नदयन्" करी करी.
 १. १८०-११

ननु, (अन्+अच्) प्रथ (द्यवत) । नदीयन । नृपुन । नदी-
 धन । निग्दा.
 १. नन्द, (पु०) नन्द+अच् । श्रेष्ठत्वके दिना । एक नोय ।
 महानन्दका पुत्र । एक राजा । नानन्द । एक नदक.
 १. नन्दक, (पु०) नन्दयति । नन्द+अच्+अन्+पु । इतिहास
 (गणकार) । ओ नैदकः अन्नाद देनेहा । ओ पु०ओ
 पालनेहाय.
 १. नन्दयु, (पु०) नन्द+अधुच् । नानन्द । नृदी
 नन्दन, (पु०) नन्दयति । नदि+अच् । नृपुदकां दे । पुन ।
 नैदक । एक पदक । और १० नैदक एक नदी । इत्यत्र
 वय (न०) । अन्नाद बरनेहाय (वि०).
 १. नन्दनन्दन, (पु०) नन्दयति नन्दनः । नन्दनीकी नृपुद का
 गेहाय । श्रीकृष्ण । "नन्दयन्" कादि नदी करी
 १. नन्दनान्दीनी, (ली०) १ म० । नृदी । नन्दनी बाल
 नान्दा, (ली०) नन्द+अच् । नदी । नदीकी । नद (ली०-
 कर) । एक विधि । (नदक, नृपुनकी ओर का नदक ।
 नदक । नदक.
 १. नानिग्राम, (पु०) श्रीरामके नदकय देनेहा जना का
 नीमे १० करी निग ग निदा द्रव काय (नदक)
 १. नानिद, (पु०) नन्दनीनी (द्रव) । निगनीका द्रवक
 (द्यवत)
 १. नानिदीनी, (ली०) नन्दयति । नन्दनीनी । नन्दनीनी
 धेनु (ली०) । नानिदी (नृपु) । नदीनी । नद । नदक ।
 नानिदीनी नाम । नैदक का नैदकी
 १. नानिदीनीनृपु, (पु०) १ म० । नदकयका नदी का
 द्या । नानिदीनी.
 १. नानिदीनृपु, (ली०) नदकयका नृपुनका । नदी का
 नदक । एक नृपुनका.
 १. नदी, (पु०) नद+अच् । एक द्रव । अन्नाद । नदकय
 एक नदक (वय निगनेहाय) न-नदक ।
 निगु । निव.
 १. नदीदा, (पु०) नदी ईद द्रव । निददीका द्रवक ।
 नदीका नदीका है.
 १. नदाम्, (पु०) न नदयति निग वय-नदक । नदी । वय
 (नदीका द्रव अन्ती) । "नदयन्",
 १. नदुग, (पु०) नदीका नदीका नृपुन । नदीका नदीका
 नदीका नदीका, नदीका नदीका नृपु है । नदीका नदीका
 निग है । नदक
 १. नदु (पु०) न नदयति निग नदीका नदीका नृपु ।
 नदीका नदीका नदीका नदीका नदीका नदीका नदीका
 नदीका नदीका (नदीका)
 १. नद, (ली०) न नदयति । नदकय (नदीका नदीका
 नदीका)
 १. नद, (ली०) न नदयति । नदकय (नदीका नदीका
 नदीका)
 १. नद, (ली०) न नदयति । नदकय (नदीका नदीका
 नदीका)

माला, (स्त्री०) नर्यां माला । मनुष्योद्यो (विरोधी) माला । "नरमालाविभूषणा" ही कथी.

मेघ, (पु०) नरः मेघते (कल्पने) पत्र । जिगमें मनुष्यको मारकर घेकर लिया जाता है । एक यज्ञ । जिगमें नरके मांससे होम किया जाता है.

घादन, (पु०) नराः वाहनानि अन्व । मनुष्य जितकी तकरी है । घुंघेर (लठे मनुष्य उठाते हैं) । जो मनुष्योंसे उठया जान (वि०).

सिंह, (पु०) नरधर्मी सिंहः । मनुष्य सेर । नर और सिंहके स्वरूपवाला । द्विरण्यकविपुत्रो नाम करनेके लिये प्रगठहुआ भगवान्का एक अवतार । "नरः सिंह इव" । मनुष्य मानों सेर है । सीधे आरिसे अच्छा आदमी.

स्कन्ध, (पु०) नर-समूहे स्कन्धः । नरोंका समूह । बहुलसे आदमी.

स्त्र, (पु०) नर स्त्र इव । मनुष्य मानों स्त्र है । राजा । विष्वेध (अहिर निवाकनेहार) । २१ अक्षरके पादवाला एक छन्द.

उत्तम, (पु०) नरेषु उत्तमः । पुराणमें उत्तम । नारायण । बैरागी पुरुष । और राजा.

क, (पु०) वृत्+म्बुल् (अक) । चारण (तारीक करनेहार) । नल्लुण । नाचके जगैहार नट (त्रि०) "नर्तकी" (स्त्री०).

न, (न०) वृत्+म्बुल् (अन) वृत् । नाच. "नन्द" आवाज करना । लक० जाना । लक० भ्वा० पर० सेट । नर्दति-प्रनर्दति.

दि, (पु०) नर्म (परिहासे) ददाति । दा+ठ । जो मर्गल देना है । केलिंगचिव । मर्गलके लिये बखीर । मर्गलिया (वि०) । नयी (स्त्री०).

न्, (न०) वृत्+मनिन् । परिहास । हसीटा । बैलि । बीडा । सेट.

किनी, (स्त्री०) नलकं (गण्डिदं अग्नि) अन्व+इनि । जिगकी छेकवाणी हई हो । जडा । खान.

कुवर, (पु०) नलः कुबरो गुणंपरोडस्य । इत नामका सुबरका पुत्र.

लेका, (स्त्री०) नल+ल्लथे कन्+जाप् । नायी । नायी । गुणपिडस्य.

किनीपण्ड, (न०) ननिनी+समूहे लण्ड । कमठिनी-ओका समूह.

घ, (पु०) नल+न । पारगी हाथका गिनाहुआ देस । पार-पी हाथ.

नय, (पु०) नु+भाप् । खब । तारीक+अच् । नून हुआ (त्रि०).

नयप्रह, (पु०) कर्म० । सूर्य आदि नौ प्रह.

नयति, (स्त्री०) नर ददातः परिमाणे अस्य नि० । नव्येही संख्या.

नयदल, (न०) कर्म० । कमलकी कर्णिकाके पातका पत्ता । नया पत्ता.

नयदुर्गा, (स्त्री०) कर्म० । शैलपुत्री आदि नौ दुर्गाकी मूर्तिए.

नयद्वारपुर, (न०) नव द्वारानि यत्र तारुं पुरम् । यह पुर कि जितके नौ दरवाजे हैं । देह । वारि (इतमें दो काल दो भाव, दो नासा और एक मुप । ये ऊपरके सान स्थान) गुदा और किङ्ग (ये नीचेके दो) इततरह ९ हैं.

नयधा, (लब्ध०) नवन्+प्रकारे धाच् । नवप्रकार । नौ तरह.

नयधातु, (पु०) कर्म० । सोना आदि ९ धातु.

नयन्, (त्रि०) वृत्० । ९ वी संख्या.

नयनीत, (न०) नवं नीयते स्म । नी+थङ् । नया निवा-लागया । कृषका सार । मन्थन.

नयनीतक, (न०) नवनीतस्य विकार+कन् । मन्थनसे बानाया गया । पी । घृत्.

नयम, (वि०) नवानां पूरणः+उटि-भट् । ९ वी संख्याको पूरा करनेहार । नावां ।-नी । "नवनी" एक विधि (स्त्री०)

नयमस्त्रिका, (स्त्री०) कर्म० । नयमास्त्रिका । बहुलूलों-वाला दृश.

नययज्ञ, (पु०) नवः यज्ञः । शत्रु (मौलिन) पर लपने कलौकी पहिली भेट देवताके लिये.

नययौपन, (न०) नवं यौपनं । नई जवानी । -ना (स्त्री०) नई जवानीवाणी.

नयराज, (न०) नवनां राजानां समुदायः । ९ रत्नोंके भेल । विद्यमानिलकी गभाके ९ पतिपठ.

नयरात्र, (न०) नवानां रात्रिणां समुदायः । ९ रात्रि और ९ दिन.

नयव्यागमन, (न०) ९ त० । नवव्यागः आगमनम् । नई बंधुका (पिताके परसे बनिके परमें) अन्ना.

नयवन्न, (न०) कर्म० । अनाहन नूनवन्न । पहिले ही पहिरा गया नया बरस । नून बरस.

नयवत्स, (न०) नवं वत्सं । नया बन्धु (बरसा).

नयदादिभूत्, (पु०) नवं दादिन् विभर्त्-व+ङिप् । नये वन्तमात्रो धारण करनेवाला.

नयदायक, (पु०) माती, लन्दि लन्दि.

नवधाद, (न०) कर्म० १।३।५।७।९।११ आदि विषय दि-
नोंमें करने योग्य धाद । ग्यारहवेंदिन करनेवायक धाद.

नवमूर्तिका, (स्त्री०) नव मूर्तं अस्ति अस्याःभट्टन् (इक) ।
त्रिसका नयाही प्रभव हुआ है । धेनु । नई प्रयुता गां.

नवाग्र, (न०) कर्म० । नवीन अग्र । नया अनाज ।
"नवं अन्नं यत्" । नये अनाज आनेका समय.

नवीन, (त्रि०) नव+न (इन) । नूतन । नया.

नवोद्गा, (स्त्री०) नवा ऊठा वङ्क+आ । नई सिवाही
गई (स्त्री०).

नवोदक, (न०) कर्म० । नवजल । नया पानी । "नवं
उदकं यत्" । नये पानीका समय.

नवोद्वन, (न०) कर्म० । नवनीत । नक्कान । नया
निकल गया (त्रि०).

नव्य, (त्रि०) नु+न्यत् । नूतन । नया.

नष्ट, (त्रि०) नश्+क । निरोहित । टिकाहुआ । जो
टिकना नहीं.

नष्टचेष्टा, (स्त्री०) नष्ट चेष्टा यन्म तस्य भावःभट्टत् ।
एवं (युगं) वा शोक (अभयोन) आदिषु सव
चेष्टा (हस्त) धीने रश्ति । बेहोश.

नष्टाग्नि, (पु०) नष्टः अग्निः यन्म । प्रमाद (भूउ)
आदिमें जिनमें अग्निहोत्र करना छोड़ दिया । निरग्नि.

नष्टेन्द्रकला, (स्त्री०) नष्टा चन्द्रकला यन्माम् । जिनमें
चन्द्रकी कला टिकागई हो । चतुर्दशीमें मिश्रहृदं
अन्यथा.

नष्ट्य, (न०) नवे हितं । नगाके लिये अष्ट्या । निरगी
आदि रोमके निवृत्तिके लिये नाकमें देनेवायक शूर्प ।
नष्ट्य.

नस्तोत्त, (पु०) नस्तं उत्तमं कृतं । आश्वे+क ।
जन्ममें उत्तमोत्तम परीक्षा गया । बनीवदं । बेट.

नष्टि, (अव्य०) निवेद्य । रोचना । नहीं.

नष्टुव, (पु०) चन्द्रवैपथ एक राजा । एक नाम (गां) .

नष्टुवामन्न, (पु०) नष्टुवदेवानी राजा । नष्टुवका बेठा.

ना, (अव्य०) निवेद्य । नहीं.

नाक, (पु०) न के अर्थ (दृ सं) नक्षत्रानि यत् । जहाँ
रुज नहीं । बहुत सुगंधा स्थान.

नाक्षत्र, (पु०) नाक. अग्नि अन्म । (जिनके रहनेका
स्थान) अग्नि है । देव । देवता.

नाग, (पु०) न गच्छति (अव्य०) न आगः । बगुडी
आदि जन्म दिवसके समय जन्मदिनका । यत्तु नैव पुनः
बडे समय । एतत् । बगुडी । नक्षत्रका । शोक । नष्ट
नक्षत्रके दूर (बहु) हो जानेके उद्भव (दहर)
कर्म है । अग्नेः अक्षरं नक्षत्रं । सर्वं क (त्रि०).

नागकन्यका, (स्त्री०) नागानां कन्यका । अग्नेः
की कन्या.

नागदन्त, (पु०) नागस्य दन्त इव . कर्णिकः ।
है । घरसे निकली हुई लकड़ी (दिने) । अर्ध

नागपञ्चमी, (स्त्री०) नागानां पंचमी । अग्नेः
पंचमी (पांचवां दिन).

नागपाश, (पु०) नागः पाश इव । (बन्ध
होनेके) नाग मानो पाश है । बदन देखकर

नागर, (त्रि०) नगरे भवः । नगरका । निरा
यार । नगरमोथा.

नागरक, (पु०) नगरे भवः (पुरे और चुरे
में) भुज् । (अक) चोर । मूर्त लिखनेका
कारिगर.

नागरराज, (पु०) नागानां राजाःभट्टत् कर्ण
हार्थीशोक राजा । अनन्तवानी शौर । नै
हार्थी । हार्थी.

नागरराज, (पु०) नागानां राजा-राज्यभट्टत्
राजा । सेपनाग.

नागलता, (स्त्री०) नागकारा लता । एक के
सकल सांजैसी है । लम्बूनी (पनदी के)
जिह्व.

नागलोक, (पु०) ६ त० । नगोका लोक ।

नागाङ्गना, (स्त्री०) नागस्य अङ्गना । अर्धके

नागान्तक, (पु०) नागस्य अन्तकः । हाँक
वाला । गहड़ । मयूर । मोर.

नागादान, (पु०) नागान् अर्पति । अर्प-
नागोद्यो गाना है । गहड़.

नागाह, (पु०) नागेन युज्य अष्ट रवः ।
नामकाल । हनिनायक.

नागेन्द्र, (पु०) नागानां इन्द्रः । इन्द्रके दूर

नाचिकेतम्, (पु०) अग्नि । अगः । एक ही
करी हुई एक कथा.

नाट, (पु०) नट+पत्न । नृत्य । नव । इन्द्रके

नाटक, (पु०) कामाःकाले यत्त एक दूर ।
योग्य एकप्रकारका काम्य (प्रविष्ट इन्द्रके)
गणिककाम्य).

नाटार, (पु०) नटस्य आरंभःअर्धत् । नटके

नाटिका, (स्त्री०) एकप्रकारका काम्य

नाटोप-र, नटस्य आरंभःअर्धत् (एव) इन्द्रके

नाट्य, (न०) नटानां कर्म+भट्टत् । नटके
काम्य और कला).

व्यभिच, (पु०) नाट्यस्य विभः । वृत्तस्य विधारा ।
 वीतरत्ना अयम् ।
 वृत्तनाट्य, (श्री०) नाट्यस्य नाट्यार्थं वा शास्त्रम् ।
 नाट्य वा नाट्यके लिये शास्त्रम् । नाट्यमन्दिरम् । नाट्यके
 माने बजानेकी शास्त्रम् । नाचपर । देवमन्दिरके साम-
 नेका घर ।
 वृत्तशास्त्रम्, (न०) नाट्यस्य शास्त्रम् । नाटक विद्या ।
 नाच विद्या ।
 वृत्तानुचर्य, (पु०) नाट्यस्य आचार्यः प० त० । नाट्यका
 आचार्य । माधवा सिग्नेवाला ।
 वृत्तोल्लि, (श्री०) नाट्ये (नाटकमन्त्रि) उक्तिः ।
 नाटकमन्त्र्यन्वयी बचनम् । नाटकमेव उपयोगी बचनम् ।
 वृत्ति-दी, (श्री०) । मन्त्र-धर्म गिरनाम्नन् वा दीप् ।
 गायत्रीकी शिरा (नाडी) । वृत्तदी शिरा । पदी ।
 नाडी । ६० पत्र ।
 वृत्तधर्म, (पु०) नाडी धर्मनि । प्मा-धर्म धर्मादेशः ।
 मुम् हस्तधर्म । जो बारा आदिनी नाडीको पूंरुता है ।
 सार्धचार । मुनार ।
 वृत्तधर्म, (न०) नाभिस्थनदीनिस्वरणचक्रम् । पुत्रोमें
 रहनेहारा नाभिओके निरुलनेषा चक्रम् ।
 वृत्तजङ्घ, (पु०) नाडीव जेपा अयम् । त्रिगदी एत
 नाडीके समान है । बीजा । ब्रह्माक्षर विधारा एक बगल ।
 एक मुनि ।
 वृत्तपरीक्षा, (श्री०) नाड्याः परीक्षा । नाडीकी परीक्षा
 (परिदान) ।
 गङ्गा, (पु०) न आशयः उल्लिखितः । जो बुरा नदी ।
 प्रत्यम् । अष्टम् । मोह आदि (जिह्वार निदान शुद्धा
 हो) (न०) ।
 घ, उपनास । गरम होना । सपना । मांगना । पर० । आसी-
 बंध देना । अरम० सङ्क० । ऐद-दृष्टमान करना-सेट् ।
 नापति । अनापीत् । नापते । अनापिष्ट (आसीव) ।
 घ, (पु०) नाप-ऐद-अब् (अ) । अधिप । स्वामी ।
 मालिक । शिबजी । प्रार्थना करनेवाला (प्रि०) ।
 घयम् (प्रि०) नापः अस्ति अस्त्व मनु० (मन्त्रो घ) ।
 जिमका मातिक हो । पराधीन । परतन्त्र । बचानेहारा ।
 घ, (पु०) नद्-घम् (अ) । घञ् (आवाज) ।
 अन्धविन्दु । बही ऊँची आवाज । एक प्रकारकी प्राणो-
 की दबा (वायु) ।
 घेय, (न०) नद्या नदस्य वा इदं-घञ् (एय) । नदी वा
 नदका । सैन्धवसत्त्वम् । सैधानोन । नदी वा नदका पानी ।
 घरा और वेतन (धन) (पु०) नदीघा (प्रि०) ।
 घू, मांगना (नापके सय अर्थ) । घ्रा० शा० सङ्क०
 घेत् । नापते ।

घना, (शब्द०) विना । अनेक (बहुत) । दोनों ।
 घनाजातीय, (प्रि०) घनाजाती भव-ईय । कई जातिमें
 होनेवाला । कई प्रकारका । कई तरहका ।
 घनारूप, (प्रि०) घना रूपानि यस् । कई तरह
 (सत्त्व) वाला ।
 घनार्थ, (प्रि०) घनाविधाः अर्थो यस्याः । बहुत नाम
 और प्रयोजन (मतलब) वाला ।
 घनाविधि, (प्रि०) घना विधाः प्रसाराः यस्याः । घना
 (कई) प्रकारवाला । कई तरहका ।
 घनाधीय, (प्रि०) घना वीर्याणि यस्याः । कई प्रकारकी
 शक्तिवाला ।
 घान्तरियक, (प्रि०) अन्तरे (व्यवधानं) अनुभवति ।
 (नम्के अर्थवाते "न" के साथ मगम होनेसे) घान्-
 रीयं । फिर अपने अर्थमें घन् (क) होता है । अवरय-
 म्भावी । अहर होनेहारा । फैलाहुआ । व्याप्त ।
 घान्दी, (श्री०) नन्दनि देवाः पितरो वा यत्र । नन्दु-दन्
 धीप् । घृ० । जहाँ देवता वा पितर प्रथम होते हैं ।
 "नान्दीधामं ततः कुर्यान्" इति स्मृतिः । गमृदि ।
 सधरा । इदम् । नाटकमें सूत्रधारसे करनेयोग्य एक
 प्रकारका मन्त्रलाचरण ।
 घान्दीमुख, (पु०) घान्दर्थ (वृत्तार्थ) बन्धनान्निर्त
 मुखं यस्याः । वृत्तिके लिये जितका मुख बाधा गया है ।
 मूलाका पन्दा । "नान्दी (वृत्तिके) तदर्थं धामम्" ।
 विवादआदिके पहिले किया जानेहारा मन्त्रलाचरण ।
 नान्दीधाममें भोजन करनेहारे पितर ।
 घान्दीघादिन्, (पु०) घान्दर्थं वदति वादयति वा ।
 नाटकके आदिमें मन्त्रलापठ करने वा कठनेहारा
 सूत्रधार । उसके लिये सूत्र (धात्रे आदि बजानेहारा
 नटआदि ।
 घापित, (पु०) उसारेका काम करनेहारा । एक जातिक
 नाम । नाई ।
 घापितायनि, (पु०) घापित-आयन् । घापित (नाई)-
 का पुत्र ।
 घाभि, (पु०) नपन्ते अत्र, नपन्ते अनेन वा । नद्-दन्
 आन्तदेघ । १२ राजाओंके चक्रवा चीन । पहिलेकी
 पुरी । मुख्य राजा । और शायिय । कस्तुरी (श्री०) ।
 पुष्पी (पु० श्री०) । प्रथम । मुख्य (प्रि०) ।
 घाभिज, (पु०) नाभी जायते । जन-उ । जो विष्णुकी
 नाभिमें उत्पन्नता है । चतुर्मुख । ब्रह्मा । "नाभिजन्मा" ।
 घाभिल, (प्रि०) नाभिः अस्ति अयम्-सत्त्वम् । नाभि (नाक-
 पुत्री) वाला । नाभीके उतरका वा आधा ।
 घाभ्य, (प्रि०) नाभि-यत् । नाभिशाळा । नाभिमें-अभ्यः
 (पु०) शिष्य ।

रसा, (श्री०) नग्न-रस+अ । नासिका । मन्त्रको प्रत्यक्ष करनेवाली एक इन्द्रिय और शब्द । मातृ ।
 रसिका, (श्री०) नाग्न-रस+रता+पुत्रुत् । नाक । नासा । नासिकी मूर्तिवाला ।
 रसिकामल, (पु०) नासिकायाः मल । नासिका मूत्र ।
 रसिकम्प, (वि०) नासिकार्थे हित-रस्य भरो वा+पम् । नासिकाके लिये हितकारी वा उभयमें होनेवाला । नासायै । उपजे आशनीयुमार (पु० शि० ५०)
 रसीर, (न०) नास+ईरन् । अग्नेर मय्य (आगे जानेवाली पीठ) सेनाका मुख । आगे जानेवाला । अम-रसीर (वि०) ।
 रस्ति, (अञ्०) अविद्यमानता । न होना । "अस्ति माग्नि न जानाति" वाक्यम् ।
 रस्तिव, (वि०) नास्ति परलोकादिकं इति मतिः अस्त-रन् । जिगत्वा विचार ऐसा है कि "परलोक, उग्रका स्थापन धर्म वा अर्थमें, उग्रका शास्त्री (महाद) ईश्वर कुछ भी नहीं" वाक्यके आदि । स्वर्ग, स्वर्गका स्थापन, और ईश्वर सीनोंको न मानेवाला ।
 रस्तिवता, (श्री०) नास्तिवस्य भावः । नास्तिवता होना । निश्चारादि । शूरी मजर (स्वयं आदि न मानिये) ।
 रस, (अञ्०) छेदापन । नीचे । बहुत । रादा । रसिह । रसाल । रसना । रटना । पाल । वादर । देना । रटना । रोचना ।
 रसट, (न०) नि+रट्+अच् (अ) । समीप । पास ।
 रसट, (पु०) नि+रट्+अच् । गण्ड । सार । मिल (पन) । निधि । सार, ना ।
 रसवर्षण, (न०) नि+वर्षण् । खेवनेने निवर्षण-गता । गोव आदिमें पर आदिसे बनावेके लिये वर्षा हुआ देना । आदि रंग करनेकी भूमि । अदिदिदरणभूमि ।
 रसवर्षण, (पु०) नि+वर्षण् (म्) शब्द प वा (वा) । वर्षणपण । छाया । गोला आदि बनावेका वर्षण । बगी-टी । हविषार आदिसे लेज करनेवाला वर्षण ।
 रसवा, (अञ्०) नि+वट (पात) । मधु (पीव) । रसायनी रासा (श्री०) ।
 रसायण, (न०) रसम् । रास । रास । सोने आदि-को पदिकभेदाए एक वर्षण । बगीटी । "रसिय-वट" ।
 रसकाम, (न०) नि+रस+पम् (अ) । रसेन्द्रिय । रसके अनुकार । देना करणया । अविद्य (बहुत) । पर । पर । परमाणु ।
 रसाय, (न०) नि+रि+पम् इत्यम् । रसकपटीर निरट । एकपदेरसोय इत्य । निरस्य । रितस्य । रस-

निकाय्य, (न०) निधीयते भाव । नि+वि+भ्य+इत्यम् । पर । पर ।
 निकाय, (नि+इ+पम्) परिमच । निररकार । बेहमनी । अयकार । कृ+पम् । धन आदिका उपर पेंकना । राने ।
 निकाया, (पु०) नि+कान्+पम् । मूर्ति । वाहन । अकार । दमन । निरुट गरा (बराबर) (गन्तव्यमें सीठ रहना है) ।
 निकुञ्ज, (न०) नि+नेषण् बी प्राप्ते । जन्+उ+पु० । कनारिपिहित स्थल । बेल आदिसे ढका हुआ स्थान ।
 निकुञ्ज, (पु०) नि+उञ्ज्+अम् । पु० । पुञ्ज-इ-रासका पुत्र । इन्द्रिय ।
 निकुञ्जिन्दा, (श्री०) उहाके पथिमरी और एक पुत्र । बहारी एक देवी ।
 निकुञ्जम्, (न०) नि+उञ्ज-उञ्जकरता+अम्पम् । इन्द्र । बहुतगा ।
 निकुञ्ज, (वि०) नि+इ+पम् । परिभूत । बेहमन निर-गता । उपरुत् । पुन विद्यमानता । उग्रगता । पीव । घट । धूर्ति ।
 निरुति, (श्री०) नि+इ+पिन् । राजा । भेद । नि-रकार और ईस्य । बेहमन बरग । उग्रगता । गीरी ।
 निरुट, (वि०) नि+इ+पम् । जाली और अकार आदिसे निरिदय । अयवट । पीव । अयम । पुत्र ।
 निकेत, (पु०) नि+वि+निवर्ण+रदना । अय दे+रम् । पर । पर । निवेगद ।
 निर, (वि०) नि+अ+पम् । भोज । रादा । कम्प विद्य । पर ।
 निर (वा) म, (पु०) नि+अ+अ+पम् । क । कम्प-र-रम् । सीनरी अकार ।
 नि-राविप, (वि०) नासि सारिद वर । इत्ते इत्तव नदी रादा । विनसविन का-वि-र ।
 निरिप, (वि०) नि+रि+पम् । रस्य । रसगता । पेंकगता । रसपिण ।
 निरिप, (पु०) नि+रि+प+रदीपि । रस । रसनेने कर्तव्य विदा गया अयता अयभारि । कम्प-प । निरि (अ-रा) के हाथमें हीट बरनेके लिये हीनुरे पीव ।
 निरिपण, (न०) नि+रि+प+पुत्र । पेंकना । पीव । रस-निरिपु, (पु०) नि+रि+प+पुत्र । पेंकनेर । रस-निरिपण ।
 निरिप, (पु०) नि+रि+प+पुत्र । पेंकनेर । रस-निरिपण ।
 निरिप, (वि०) नि+रि+प+पुत्र । पेंकनेर । रस-निरिपण ।
 निरिप, (वि०) नि+रि+प+पुत्र । पेंकनेर । रस-निरिपण ।

विगद, (पु० न०) विगद+अप् । उदम् । शंखल ।
 शंखली । शंखल । ह्यददी । बेदी ।
 विगदित, (त्रि०) विगदः जतः अत् । इत् । वद ।
 संवद । बंधुदुगा ।
 विगद, (पु०) विगद+अप् । भावन । धोला । धेद्वीही
 लिक-वदनाय ।
 विगम, (पु०) विगमनेऽयं अनेन वा । विगम्य पन् ।
 विषय । प्रविश । वेद । न्यायके पांच अक्षरवर्णिते
 निउय अवयव । न्याय । बाजार । वेदकी शाला ।
 उदम् ।
 विगमन, (न०) विगम+अप् । अव) । प्रतिद्वय
 (अक्षरवर्णित) प्रमाण (गूत्र) को लोचकर प्रहत
 (अक्षर) प्रमाणका विवर करकेहाय न्यायके पांच
 अक्षरवर्णिते रूपसे निउय "ह्यदिते यदा अक्षि हे"
 इति शब्दात् ।
 विगा(ग)र, (पु०) विग+अप् । वा । मोहन ।
 गन् । अर ।
 विगाय, (पु०) विग+अदन्+गाय+अप् । अथ
 (सं) के अर्थका अर्थ ।
 विगीर्ण, (त्रि०) विग+अत् । विगया गया । शया गया ।
 पूरा ३ अक्षर गन् । उगया गन् ।
 विगूढ, (त्रि०) विगूढ+अत् । उगया गया । गुप्त ।
 उग हुआ ।
 विगूढ, गूढ+अत् । अगुप्त । अक्षी मूय । उगहुभा और
 अगुप्त । विगूढा (त्रि०) ।
 विगूढित, (त्रि०) विगूढ+अत् । अक्षि (विगूढाया) ।
 अगुप्त हुआ । अगुप्त हुआ ।
 विगद, (पु०) विगद+अत् । विगदना । पीमा (हर) ।
 अक्षर । अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) । विविध अक्षर
 विगद विगद अक्षर । अक्षर । अक्षरवर्णित अक्षर ।
 विगद (विगद) ।
 विगद, (न०) विगद (विगद+अत्) अक्षर ।
 अक्षरवर्णित (पु०) की अक्षर । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 ३३ अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 विगद, (पु०) विगद+अत् । "देहा अक्षि (अक्षर) ही"
 अक्षरवर्णित अक्षर (अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित) ।
 विग, (पु०) विग+अत् । अक्षर । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 विगद, (पु०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 विगद, (पु०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित

विगद, (त्रि०) विगद+अप् अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 (अक्षरवर्णित) । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित)
 " विगद+अत् " इति अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (त्रि०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) विगद+अत् । अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।
 विगद, (पु०) अक्षरवर्णित अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित (अक्षरवर्णित) अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित
 अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित । अक्षरवर्णित ।

निपीडित, (त्रि०) निवृत्तं पीडितः । नि+पीड+क । बहुव्रीहि पीडा पहुंचाया गया । वृत्तनिपीडन । निचोढा-गया ।

निपुण, (त्रि०) नि+पुण्+कर्मणि क । प्रवीण । चतुर । काममें दक्ष (होशियार) ।

नियन्ध, (पु०) नि+बन्ध्+पण् । अमुक समयपर मैं देखंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करना । शपथ । प्रत्यक्षी रचना । मूत्र रुकनेकी बीमारी (रोग) । बंधन । "निकप्राति कोष्ठं+अन्" नीमका वृक्ष । (इसके सेवनसे कोष्ठ=पेटका भाग रुकजाता है.)

नियन्धन, (न०) निबन्धते अनेन अत्र वा+स्युट् । जिससे वा जहां फस जाता है । हेतु (सबब) । बांधना । चीन बाजेका ऊपरला भाग (हिस्सा) ।

निम, (पु०) निमाति । नि+भा+क । व्याज (बहाना) । "यदि पिछले पदमें रहे" सदृश । समान (त्रि०) जैसे "पितृनिमः" "मातृनिमः" इत्यादि अर्थात् उसके समान ।

निभृत, (त्रि०) नि+भृ+क । पृत (घो) । मनीत । (सीसाहुआ) । निश्चल (न हिलनेहार) । एकाग्र । गुप्त (सुपचाप) निर्जन (एकान्त) । अलक्षके लिये उपस्थित हुआ । छिपनेपर आगया ।

निमात्र, (त्रि०) नि+मस्+क । हुआ हुआ ।

निमज्जयु, (पु०) नि+मज्ज्+अयुच् । अवगाहन । दाखिल होना । झन करना । प्रल आदिमें प्रवेश करना । सुपचाप टहरना ।

निमज्जन, (न०) नि+मज्ज्+स्युट् । अवगाह । जल आदिमें प्रवेश करना । सुपचाप टहरना । निश्चलस्थिति ।

निमज्जण, (न०) नि+मज्ज्+स्युट् । धातु आदिमें भोजनके लिये बुझाना । बाझन । बुझाना ।

निमस्य, पु० प० । ममति । ममत्व । अमांसीत् । मम । हथवा ।

निमान, (न०) निनीयते (धीयते) अनेन । मा+स्युट् । जिम्मे खरीदते हैं । मूल्य । मोल । चीमन ।

निमि, (पु०) इलाकुके बंधमें और चन्द्रमाके बंधमें एक टकरा ।

निमिष, (न०) नि+मिद+क । कारण । हेतु । सबब । कार्य (निष्पन्न) विद्वा । निष्पन्न । भाविष्ठुमद्युमद्यो सूचना करवेहाए छड़न । खेद । सुदृशा ।

निमिषकारण, (न०) कर्म० । व्यायमें कहागया समयपरि और अणुकारणिते निमि कारण जैसे यह आदिमें महीआदि हस्तपरि कारण और कारणोंका संयोग अणुकारण कारण है, इस हेतुमें निमि कारण (कारण) आदि निमिषकारण है ।

निमि(मि)प, (पु०) निमेयति । नि+मिप् । एक समय । आंखके सामाजिक पुरस्कारका "मावे अप्" आंखका भीटना ।

निमीलन, (न०) नि+मील्+स्युट् । मल । आंखका भीटना ।

निम्न, (त्रि०) निम्नं मनति । प्रभक्त । परी (ए नीचे) । नीच ।

निम्नगा, (स्त्री०) निम्नं गच्छति । गम्भ । देरी है । हरएक नदी । दर्या । नीचे जानेवाला (नदी) ।

निम्नोन्नत, (त्रि०) निम्नं च उद् उन्नतं वा । नीचे ऊपर । बंधुर ।

निम्न्य, (पु०) निम्नति स्तस्यन् । निम्नने नीमका वृक्ष ।

निम्नोच्चन, (न०) नि+म्नोच्च+स्युट् । बन्दना ।

नियत, (त्रि०) नि+यम्+क । निश्चित (स) आचारवाक्य । नियमवाक्य । जिसकी इतिहास है । निश्चय काम (न०) ।

नियति, (स्त्री०) नि+यम्+क्तिन् । निम्न । सस्त । "नियतिः केन बाध्यते" इति पुस्तकमें मले बुरे काम और पुण्य ।

नियन्तु, (पु०) नियच्छति कहन् । निम्नत घोषों आदिको काव् कतां है । कायि । दई का प्रयु (मालिक) । सजा देनेवाला और फुटे (त्रि०) ।

नियन्तुत, (त्रि०) निवृत्तं यन्तुतः । निम्नत और प्रतिफल । इकाहुना । अच्छीतरह रूप ।

नियम, (पु०) नि+यम्+पण् । प्रतिज्ञा । निरा रोक । इच्छार । यकीन । मारीकर । धृति । कारका मत । मीमांसाकी एक विधि । टौर । वासा । वेदका पठना । ईश्वरमें सब देव ।

नियामक, (पु०) नि+यम्+स्युट् । बन्दना । हुकम बढानेहार । मालिक (त्रि०) ।

नियुत, (न०) दयलस संख्या । दय सब ।

नियोग, (पु०) नि+युग्+भावे षच् । कार्य (निश्चय) । आशा (हुकम) । निश्चय । काममें लगाया "नियुग्यते कश्चित्" का काम ।

नियोग्य, (त्रि०) नियुक्ते आदि+क । देना । लगाया है । प्रयु । मालिक ।

नियोजन, (न०) नि+युज्+स्युट् । बन्दना । मिलाया । कायम करना ।

नियोग्य, (त्रि०) नियुक्ते उन्मते+क । काम रिसा कायम है । देना । देनेका । नीच ।

निरुद्ध, (अव्य०) वृ+कृप् । निरुपे । नहि । निरुप ।
निरुद्ध (वकीन) निरुद्धता । बाहिर ।

निरुद्ध, (पु०) कालि अग्निः बस्य । निरुद्धी भाग नहि ।
अग्निसे विद्व होनेलायक वैदिक कर्मसे अन्य प्राण
आदि चीनें वर्ण ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अङ्गुलात् । जो अङ्गुल (रोकेचे)
निकलण्या । बाधशून्य । जिसे रोक नहिं छके ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतं अङ्गनं यस्मात् । जिसे मूल
निकल गई । निर्मूल (राक) तमोगुणसे निकलण्या
गया । तम जिसे निकलण्या । परमात्मा । परमात्मा । "निर-
ङ्गनः साम्यमुपैति विद्यम्" इति मुक्तिः ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अतिशयः अस्मात् । अति-
शयशून्य । परमोलूट । सबसे बहुतही अष्ट्या ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अत्ययः अस्मात् । प्रायसे
अहित । न हनेदेहा । अमानिह । जिसमें छठ नहिं ।

निरुद्ध, (पु०) निर्गतः अनुकोशः यस्मात् । अ० स० ।
निकल गई है क्या जिसे । निर्दय । बेरहम ।

निरुद्ध, (पु०) निर्गतः अनुनासिकः यस्मात् ।
जो बनी नासिका (नाक)से नहीं बोझ जाता ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतं अन्तर्गत, निर्गतं अन्तरं वा
यस्मात् । बीच निरुद्धता । निरिह । रोचना । निरुद्धि
(अजीम) । छायादार । बगैर करछके ।

निरुद्ध, (प्रि०) कालि अन्वयः संशयः यस्य । अ० स० ।
जिसका संशय नहिं । सन्धानरहित । अशंका । बाधयों
अन्वयके साथ संशय न हनेकेवाला ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अपत्रयायाः । क्यसे निकल-
गया । बेचरम ।

निरुद्ध, (प्रि०) कालि अपरपथः यस्य । अपराध-
रहित । निर्योच ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अपरादा दुःखं यस्य । दुःखरहित ।
अपय । अविवाही ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गता अपेक्षा यस्य । अपेक्षा (अप-
रक्षणा । अकरण) रहित । बेवर्बाद । स्वभाव ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अस्मिन्मयो यस्मात् । अ०
स० । निकल गया है अस्मिन्मय जिसे ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतं अर्गलं यस्मात् । जिसे देहा
(रोक) निकल गई । न हनेदेहा । अरहण । अति-
शंकरहित ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अर्दं यस्मात् । जिसे
मात्रक निकल गया । निरुद्धोद्यय । विद्व अश्वय ।
जिसका पुत्र अर्द नहिं ।

निरुद्धग्रह, (प्रि०) निर्गतः अवग्रहोद् । बेरोक । निर-
तिबंध । आभास । कृत्रिमबंधभाव । बहिराग्ने रोकेका
न होना ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अवग्रहः । निरुद्धसे निकल
हुआ । दोषरहित । और उत्कृष्ट (अष्ट्या) ।

निरुद्धयय, (पु०) निर्गतः अवग्रहात् । हिलेसे निकल
गया । परमाणु (सबसे छोटा) । आकार (साम्य) शून्य
आकार आदि (प्रि०) ।

निरुद्धोप, (प्रि०) निर्गतः अवग्रहोपः यस्मात् । जिसे
बाधी निकलण्या । सर्वस्मिन् । सब । छार ।

निरुद्धवित्त, (प्रि०) निरु+अव+धी+क । प्रायसे बहिर
क्रियागया । (जिसका धानेका प्राय-शून्य संस्कार
(छात्र) करनेकेमी छूट नहिं होना) । बचना
आदि नीच वर्ण ।

निरुद्ध, (प्रि०) निर्गतः अंगः यस्य । शिफा दिना
नहिं रहा । अंगरहित । प्रतिन (जो प्रायसे विरुद्धता)
नुपुंसक आदि पुत्र । संकल्पिका दिन ।

निरुद्ध, (अ०) निरु+अपु+भ्युद् । परित्याग । छोड़ना ।
विरहकार करना । मारना । निरुद्धता ।

निरुद्ध, (प्रि०) निरु+अपु+क । काटी होना गया ।
(लरितोकांत) । बूझ गया । बेद अज्ञानता ।
विरहकार क्रियागया ।

निरुद्धकरण, (अ०) निरु+अपु+भ्युद् । निरुद्ध (अ-
दान) । शू करना । निरुद्धार करना ।

निरुद्धारिण्यु, (अ०) निरु+अपु+भ्युद् । निरुद्ध-
शील । निरुद्ध देनेकेवाला ।

निरुद्धति, (अ०) निरु+अपु+भ्युद् । निरुद्ध ।
हटाना ।

निरुद्धय, (प्रि०) निर्गतः अस्मात् । रोकेसे निकल ।
रोगरहित । बका बकर और हकर (पु०) ।

निरुद्ध, (अ०) निरुद्धेन ह्यरुद्धे अय । निरु+अपु+भ्युद् ।
प्रतीपत्यय आदि अवरुद्धे अर्द्धो निरुद्धे वर
प्रियादान करनेकेप बेरुद्ध एक अय । एक अय ।
परोक्षे तोनेदेहा अकारण । बहुरुद्ध (प्रि०) ।

निरुद्धि, (अ०) निरु+अपु+भ्युद् । निर्दय । अर्द्ध
हनेके विरुद्धमें दूट व बरतना । अति (अनु) अत्य
आदि अवरुद्धे अर्द्धो अरुद्ध निरुद्धे अर्द्धो
कोश बरतना । अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध
शिरुद्ध है ।

निरुद्धाय, (प्रि०) निर्गतः अस्मात् यस्मात् । जिसे
अशुद्ध निकल गई । अशुद्धोद्यय (अशुद्धता अशुद्ध)
कथा (अशुद्ध) का पुत्र आदि । अशुद्ध अशुद्धे
जिसे अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध अशुद्ध ।

निर्वृत्ति, (श्री०) निर्+वृत्+क्तिन् । श्रुत् । श्रुत्विष्टि । धारमने रहना (भ्रम हो जाना) । मोक्ष (छुटकारा) । और मौत ।

निर्वृत्त, (प्रि०) निर्+वृत्+क्त । निष्पन्न । पूरा किया हुआ । "निर्गता वृत्तिः यस्य" इतिरहित । जिसकी कोई जीविका नहीं (प्रि०) ।

निर्वेद, (पु०) निर्+वेद+घम् । अपना धवमान । छाक-छारी । अयुताप । "इतना यत्न करनेपरमी काम न बना" इस तरह प्रकृताना । उदासीनता । उदासी । वैराग्य । संसारके पदार्थोंके मुं मोडना ।

निर्वेद्य, (पु०) निर्+विद्य+घम् । भोग । वेतन (मजदूरी) । मूच्छन् (बेहोशी) । निवाह (शादी) । प्राप्ति (हासिल) ।

निर्व्युत्, (प्रि०) निर्+वि+व्युत्+क्त । लक्ष (छोड़ना हुआ) । अस्मात् (जो खतम नहीं हुआ) । पूरा हुआ । समाप्त-हुआ । ढबडा । "उपचित" "जो काम सचाईसे पूरा किया गया हो" । पूरा दिखलाया गया ।

निर्हरण, (न०) निःशेषेण हरणम् । पूरा २ ठे जाना । दाह (जलना) के लिये शय (पुरां) आदिका देजाना और निकालना ।

निर्हार, (पु०) निर्+ह+घम् । निष्कात (फरेहुए) शल्प (तीर) आदिका उदारण (निकालना) । मल, मूत्र आदिका त्याग । "आहारनिर्हारनिहारयोगः" इति स्पृतिः । प्रेत (मरुहुआ) के शरीरको जलानेके लिये बाहिर डे-जाना । जड्ठे उखाडना । छोडना । अपनी इच्छासे निनि-योग (लगाव) करना ।

निर्हारिन्, (पु०) निर्हृति (हृत् गच्छति) निर्+ह+गिनि । दूर जानेहार गन्ध । जलानेके लिये दासको बाहिर डेरानेहार (प्रि०) ।

निर्हार्द, (पु०) निश्चयेन हार्दः । हृद+घम् । शब्द । धावाज ।

निर्लय, (पु०) निर्लीयते अत्र । ली+अच् । जहाँ छिप-रहे हैं । घर । मर । आवासस्थान । रहनेकी जगह ।

निर्लयनम्, (न०) नि+ली+अन् । छिपना । आधवासस्थान । निवास । बाहिर जाना ।

निर्लीन, (प्रि०) नि+ली+क्त । छिपलाया । शंक् किया गया । किसीमें छिप गया । गिरा हुआ । नाश किया गया । बदल गया ।

निश्चयन, (अर्थ०) वक्तनियम । कानी रोड कर । क-टन देकर ।

निश्चय, अर्थ० १- । छिपना । काना । बीमारोग्य करना । देना (पैसा बर्) निश्चयः निश्चयः ।

निश्चयन, (न०) निश्चयं वक्तम् । निश्चय आदिके बाजार देना । निश्चय देना ।

नियतन, (न०) दोनों ओरसे बंध आदि । सी बर्ग गत्र प्रथिवी । नि+वृत्+क्तिन् ।

नियर्हण, (न०) नितरां बर्हणं । न्युद् । मारना ।

नियसति, (श्री०) नि+वृत्+अच् । नि+वृत्+अच् । निवासस्थान । घर ।

निघसद्य, (पु०) न्युष्यते अत्र । नि+वृत्+अच् । हली प्राम गांव ।

निघसन, (न०) न्युष्यते अत्र । नि+वृत्+अच् । नि+वृत्+अच् । नि+वृत्+अच् । नि+वृत्+अच् ।

नियह, (पु०) नितरां टकते । बर्हणं । नि+वृत्+अच् । मात हवर्जामिने एव ।

निघात, (पु०) निघ्नः निघ्नः वा वातः वायु हटजाता वा रुकजाता है । रुकजात यह जिरह जिस्ते शत्रु (बीमार) बर्हणं मका । और बाधय (बाधण) । (बेहवा जगह) (प्रि०) ।

निघातकयच, (पु०) हिरण्यचयिषुके वेद्य । एकदेव ।

निघाप, (पु०) न्युष्यते । नि+वृत्+अच् । दान देना ।

निघापक, (पु०) नि+वृत्+अच् । बर्हणं रनेवाला ।

निघास, (पु०) नि+वृत्+आचारे षन् और आचारे । "जगप्रिकासो वसुदेवस्य प्रकाशकालः । कपटे पहिरे हुए ।

निघासिन्, (प्रि०) नि+वृत्+गिनि । कर्तकालः । कपटे पहिरे हुए ।

निघिड, (प्रि०) नितरां विवृति (संवृत्त+क्त । सान्द्र । घन । नीरन्ध्र । मोटा ।

निघिद्, अर्थ० १- । प्रायः प्रेरणार्थक किया जाता है ।

निघीत, (न०) नि+अच्+क्त । घने कथ्यत्स्विग मध्यम । पीलाक पहिनेहुए ।

निघृत्त, (न०) नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् ।

निघृत्ति, (श्री०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निघृत्तन, (न०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निघृत्त, (न०) नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् ।

निघृत्ति, (श्री०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निघृत्तन, (न०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निघृत्त, (न०) नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् । नि+वृत्+आच् ।

निघृत्ति, (श्री०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निघृत्तन, (न०) नि+वृत्+क्तिन् । इति । "निघृत्तिलु महापणा" इति मनु ।

निपाद, (पु०) निपादति मनः पापं वा यस्मिन् । पद्+
घञ् । "निपादं रति कुत्रः" वीणा वा गलेये निष्पीडुदे
आवात्र । चाण्डाल । माझगते शूद्रामे वपना पारसव नाम
वर्गसंकर । शोमला ।

निपादित, (प्रि०) नि+घट्+निच्+क् । धेयाया गया ।
दुःखी किया गया ।

निपादिन्, (पु०) निपादयति हस्तिनाम् । नि+घट्+निच्+
निनि । जो हाथीको बधताहै । हस्तिनाल । हस्तिनाक ।
हाथी चढानेवाला ।

निपिक्त, (प्रि०) नि+पिच्+क् । सींचा गया । छिनका गया ।

निपिद्ध, (प्रि०) नि+पिच्+क् । निषेवका विषय । हटा-
याहुआ । रोका गया ।

निषेक, (पु०) नि+षिच्+घञ् । गर्माधान । हमल टहरना ।
सींचना "निषेकादि श्मशानान्तम्" इति मनुः ।

निषेचनम्, (न०) नि+षिच्+घञ् । सींचना । छिटकाव
करना ।

निष्क, मान । मापना । गुण० आत्म० सक० सेट् । निष्क-
यति । अननिष्कृत । प्रादिते णत्व नहि होता ।

निष्क, (पु० न०) निश्चयेन कायति । कै+क् । सोलह
मासेका परिमाण । १०८ एकसौ आठ रविमर सोना ।
बशोभूषण । छातीका जेवर (हार) सोना । एक तरहका
सोनेका बर्तन ।

निष्कपटक, (प्रि०) निर्गताः कपटकाः यस्मात् । न० स० ।
जिममेंसे कपटे निकल गये हों । चतुरहित । भवहित ।

निष्कपट, (प्रि०) निर्गतं कपटं यस्मात् । छलरहित । निर-
पण्य । सरलहृदय । साक दिलवाला ।

निष्कटप, (प्रि०) निर्गतः कम्पः यस्य । न कांपनेकला ।
स्थिर । निश्चल ।

निष्कटण, (प्रि०) निर्गता कटणा यस्मात् । न० स० । नि-
दंय । बेरहम ।

निष्कप्यं, नि+घट्+घञ् । इयापारिच्छेत् । बरी बगका
छर (निचोड) । निचय । यकीन ।

निष्कल, (प्रि०) निर्गता कला यस्मात् । कलःशून्य ।
बेदुनर । और नटकीर्यं (त्रिषका वीर्यं नाशोयुका)
कपट (पु०) । "कला" (अवयवः) तच्छून्यः ।
निरवयव कला ।

निष्कलङ्क, (प्रि०) निर्गतः कलङ्कः यस्य । कलङ्क (दोष)-
रहित । बेदुग ।

निष्काम, (प्रि०) निर्गतः कामः यस्य । इच्छारहित ।
बेवाह्य ।

निष्कारण, (प्रि०) नानि कारणं यस्य । कारणरहित ।
इति हिंसी प्रदेवमप्यथा ।

निष्कारिण, (प्रि०) निष्+कृ+ण-
घारिण (निष्कारा गया) (न०) ।

निष्कचन, (प्रि०) कश्चि किंचन दत्त ।
कुछ नहीं । निषेचन ।

निष्कृत, निष्+कृ+क् । घरके पालक हू-
गयीया । खेल । अन्तःपुर । रत्नत्रय । निष्क-
(श्री०) इत्यञ्ची ।

निष्कृत्य, (प्रि०) नास्ति कुलं यस्य । निर-
अकेल रह गया ।

निष्कृपित, (प्रि०) निर+कृ+क् । कौटु-
निस्त्रचीकृत । खाल उतारा गया ।

निष्कृति, (श्री०) निर+कृ+क् । निर-
हृदयता । पाप आदिते निष्कृतता । "इत्ये-
कृतिः" इति स्मृतिः ।

निष्कृष्ट, (प्रि०) निर+कृ+क् । हाजिर ।
काला हुया ।

निष्कोपण, (न०) निर+कृ+क् । कोप-
(हिस्सों)को बाहिर निष्काटना ।

निष्कमण, (न०) निर+कृ+क् । बर्तन
जाना । चौथे महीनेमें करनेलायक एक मीर ।

निष्ठा, (श्री०) नि+स्था+अच् । कर्मने
समाप्ति । निष्ठाति नाथ । अन्त । नाथ
दुःख । वन । गुहरी सेवा । धर्म आदिसे
रहना । व्याकरणमें "कृ" "कृत्" दो अक्षर
निष्ठी (प्रि)व, (पु०) नि+घिच्+घञ् ।
शेषम निकालना । धूक । खजान निकाल
(ठे) बन" ।

निष्ठुर, (न०) नि+स्था+उरच् । परमात्मनः ।
कठोर (सखल) (प्रि०) । अक्षोव दान ।
रत्ना वा वचन बोलना (न०) । यव
(प्रि०) ।

निष्ठुत्, (प्रि०) नि+घिच्+क् । क्षिप्त । घेरना
हुआ ।

निष्णात, (प्रि०) निष्ठां ध्यातः (पत्न्यं)
नि+स्था+क् पत्यम् । अष्टमीतार वरपत्न्यम्
वा साष्टम्या । निजुग (चतुर) पाठान्तर ।
निष्पात्ति, (श्री०) निर+घट्+क् । कर्मने
शिदि । कड । नदीबद ।

निष्प्राकृति, (श्री०) पत्रं (पुंल) अथ
पत्रः (उरः) तस्य आरम्भे निष्प्राकृति
इति "आरम्भनिष्प्राकृतिमयमे" इत्य-
एवायि औलो निष्प्राकृति । अत्रि-
(दरद) ।

(प्रि०) निद्र+पठ्+क । निद्र । समाप्त । पुराहुआ ।
 प्रद, (प्रि०) निर्गतः परिप्रदः शम्भात् । कन्वा
 दधी) कौपीन (संगेटी) और पुत्रक आदिके निना
 के पास कुछ नदि । परमंहस संख्याही । जिसने स-
 संघ छोड़रिया । स्वफसंग (प्रि०) ।
 ड, (प्रि०) निर्गतं फलं यस्मात् । जिस्से फल निद्र-
 या । फलसे रहित । वेदावद । फल (पु०) ।
 (अन्व०) निषेध । निषय । साकम्प । पूरा २ ।
 रग्या ।
 द, (प्रि०) निवृत्ता एता यस्य । जिसकी इच्छा
 ही रही । निषेधके मुक्तकी इच्छासे रहित ।
 ि, (पु०) नि+यञ्+अप् । स्वभाव । स्वरूप और चरि-
 ट्य, (प्रि०) निर्गते सर्वं यत्र । जहां हीनता न रहा ।
 एत्य । जिसमें वीच नहि । कमजोर । जीवरहित ।
 म्पान, (पु०) निर्गतः सम्पातः (यत्पातं) यत्र ।
 समे आना जाना नहि रहा । अपेयत्र । निरीष ।
 धी रहत ।
 रण, (न०) नि-सरति शम्भात् । निद्र+अपपादाने
 द् । जिस्से निवृत्तना है । गेहनिद्रार । पर आदिवा
 िना "भाधे स्तुद्" निवृत्तना । मरना । और
 कोण । कुम्भना ।
 पर, (पु०) निर्गतः सारात् । सारसे निवृत्तनाया ।
 खोडवा प्रश । पाररहित (प्रि०) । केलेवा प्रश ।
 दही (स्त्री०) ।
 शरण, (न०) नि धार्यते अनेन । निद्र+गृ+णिच्+
 पुद् । पर आदिके निवृत्तनेका संघ (राक्षत) ।
 दन, (न०) नि+गृ+स्तुद् । मारण । मारना । ब ।
 च्छेद । नाश ।
 ला, (स्त्री०) निहता मृता । रु+क । बहुत फलमई
 होयी । ल्यूनी ।
 ए, (प्रि०) नि+यञ्+क । न्यञ् । छोड़हुआ । रचग-
 आ । मध्यय । बीचमें ।
 एार्थ, (पु०) "दोनोंके भावरी समझकर जो आप
 त्तर दे और कहेंहुए कामको करे" एक प्रकारका दाग ।
 तरण, (न०) नि+गृ+करणे+स्तुद् । "भाधे स्तुद्"
 नकार । पार जाना । तरना । और निवृत्तना ।
 तल, (प्रि०) निरम्नं तले (प्रतिष्ठा) यस्य । बहुत
 गोल । जिसका तला (नीचेका भाग) न हो । दिउ-
 नेदावा ।
 तार, (पु०) नि निषेध सारः । पुरानरना (पारजाना)
 वकार । छुटकाश । पार पहुँचना । शपनी इच्छाको पाना ।
 पद्य० ३०

निम्नुगशीर, (पु०) निम्नुवं अन्तः शस्यं शीरे इव शुभं
 यम् । तोहने रहित-ओ गीतरसे दूधकी नाई भेत हो ।
 गोधूम (कनक) । इगका आटा दूधकी नाई निद्रा
 होताहै ।
 निस्तेजस्, (प्रि०) निर्गतं तेजः यस्मात् । जिसमेंसे तेज
 (गया) निकल गया हो । शक्तिरहित । अमिरहित ।
 नपुंगक । आलसी ।
 निद्राय-निघ्न, (पु०) नि+गृ+अप् । "यच् वा" नदी ।
 प्रवाह । वयलेहुए चावलकी पीछ (माद) । अपक्षरण-बहना ।
 निद्रय, (प्रि०) निर्गता धरा यस्य । जिसकी लम्बा (शर्म)
 जाती रही । बेतराम । निर्लभ ।
 निद्रिशा, (पु०) निर्गतः विशयः अहुक्तिभ्य+अच् ।
 रामा० । जो वीर अंगुलिओसे निकलगया । सङ्ग (तल-
 पार) तीन अंगुलसे अधिकहीको कहते हैं, उसी छोटी
 सुरी होता है । उसके समान भारनेवाला होनेसे निर्दय ।
 बेरहम (प्रि०) ।
 निद्रैगुण्य, (प्रि०) निष्कान्तः प्रैगुण्यात् । तीन गुणोंके
 बायेंसे, सगारसे वा कामादिसे निकलहुआ । कामना
 (इच्छा-वाह) आदिके रहित । सगारसे पारहुआ ।
 निःश्लेधा, (स्त्री०) निर्गच्छति श्लेधः यस्मात् । जिस्से
 श्लेध निकलगया । अतवीना वृक्ष । प्रेभसे रहित (प्रि०) ।
 निस्व(प्य)न्द, (पु०) नि+घ्नन्द वा घ्यन्द+अप् वा-
 पलम् । सन्दन । "ईपर शरण"-बोझागा वहना । निमा-
 ना । "निष्कान्तं सन्दनं यस्मात्" । जिनके पास रथ नहि
 (प्रि०) ।
 निःस्य, (पु०) नासि स्वं अस्य । जिसके पास धन नहि ।
 दरिद्र । निर्धन । गरीब ।
 निस्वा-ल, नि+स्वन्+अप् वा । शब्द । आवाज ।
 निहन्, (प्रि०) नि+हन्+क । मारगया । कत्त दिया
 गया । लगा हुआ ।
 निहन्न, (न०) नि+हन्+स्तुद् । वध । मारना । कत्तक-
 रना ।
 निहन्तु, (प्रि०) नि+हन्+तुच् । मारनेवाला । नाश करने-
 वाला ।
 निहय, (पु०) नि+डे+अप् । आदान । जुलना । पुष-
 रना ।
 निहिन, (प्रि०) नि+पा+क । स्थापित । रक्ताहुआ ।
 शुभ । जिगाहुआ । उदरहुआ । शलाहुआ । "निद्रोहित"
 बहुत हिनधारी ।
 निहय, (पु०) नि+ह्+अप् । शरणा । और प्रभारसे बिन
 होरी बहुतसे शैरी प्रशाने सूजन करना । थपत्य ।
 जिगाना ।

निह्वनम्, (न०) नि+ह्व+ञन् । मुहर जाना । धाने
 ज्ञानको छिपाना । प्रतिपाद करना ।
 निह्वन्, (त्रि०) नि+ह्व+ञ् । छिपाना गया । प्रतिपाद
 किया गया ।
 निह्वति, (स्त्री०) नि+ह्व+ञिन् । छिपाना । मुहरना ।
 निह्वाद्, (पु०) निह्वन् ह्रादः । नि+ह्व+पञ् । अयत्त
 शब्द । ऐसा शब्द कि जिसका अर्थ प्रकट नहिं ।
 नीकादा, (पु०) नि+काश+पञ्-सीचः । निघ्नय । यकीन ।
 अञ् । सद्यः । समान (बराबर) । "यन्ननीकाश"
 यन्नघरीखा आदि ।
 नीच, (त्रि०) निह्यन् ईं ह्यसौ चमति । चम्+ट ।
 घामर । नीच । बामन (सीना) । चोरनामी गन्धद्रव्य
 हल (पु०) ।
 नीचैस्, (अव्य०) । नीचे । भोडा । और छुद्र (कनीना) ।
 नीह्, (पु०) निविधा इत्यन्ति अत्र । इह्+क । निवासस्थान ।
 रहनेकी जगह । पक्षिओंका कुलाय-आलना (घोंसला) ।
 नीह्वज्, (पु०) नीहे जायते । जन्+ट । घोंसलेमें उपजता
 है । विह्व । पक्षी । परिवृद् । "नीहोद्भव" यही अर्थ ।
 नीत्, (त्रि०) नी+क । लेजाया गया । बलाया गया । काम
 किया गया । व्यतीत होगया ।
 नीति, (स्त्री०) नीयन्ते उशीयन्ते अर्थां अनया । नी+ञिन् ।
 जिसके द्वारा अर्थ समझा जाय । नी+ञिन् । शुक्राचार्य
 आदिसे कहीहुई शास्त्रविद्या । एक शास्त्र "भावे" पहुंचाना ।
 इसलोकका इहम् । न्याह (इनकार) । दामिल करना ।
 नीतिमत्, (त्रि०) नीति+भन्तुप् । नीतिवाला । नीतिमें
 चतुर । दाना ।
 नीतिशास्त्र, (न०) नीतिबोधकं शास्त्रं । नीतिविद्या सिखानेहारे
 शास्त्र । बृहस्पति । शुक्राचार्य । कामन्दक । चागक्य ।
 विष्णुसर्मा आदिके रचेंहुए पद्यतन्त्र । हितोपदेश आदि ।
 नीप, (पु०) नी+पञ् । कदम्ब । बन्धूक । नील बरगोकका
 वृक्ष । विषक ।
 नीर, (न०) नी+रञ् । निर्गलं रात् अग्निगो वा । जो आगसे
 निकला जल । पानी । रस ।
 नीरज, (न०) नीरे जायते । जन्+ट । पानीमें हुआ
 कमल । मोटी । जो पानीमें उपजे (त्रि०) एक जलका
 जीव (पु०) ।
 नीरद, (पु०) नीरं ददाति । दा+क । भेष (जो पानी
 देता है) बादल और मुष्टक (मोषा) । "निर्गलः रदः
 दन्तः अस्मात्" । रंसेने शब्द (त्रि०) ।
 नीरघ्न, (त्रि०) निर्गलं रघ्नं यस्मात् । जिससे ठेक (पु-
 रात) निकलगाया । गान्ध (गारा) पन ।
 नीरस, (पु०) निःशरत् रसः यस्मात् । जिससे रस निकल-
 गया । दाहिन (अन्तर) जिम्में रस नहिं (त्रि०) ।

नीरगतन, (न०) नीरस्य शान्तुत्तयः ।
 नि० । निःशरीरं शरत्तं अत्र वा । जिन्में
 फेंकने है । अन्तर्गत्तं पूरा ? काले
 अग्निसे आदर करना । पड़िसे ही अन्त
 पानी दिवना- ३ परिय काज दिवना-
 पीपलके फोंसे पानी गीबना- ५ देना- ६
 आगुपिक । आरती करना । अग्नि (अन्त)
 फोंसे आदिसे पूजा करनी ।
 नीरज, (स्त्री०) निरगा इह् । नीरगी इति
 (साम्य) । "निरगा इह् यस्मात्" । जि-
 हुई । रोमारहित (त्रि०) ।
 नील, (पु०) नील रंग । क । इलाहाबादी
 कवयंका मयादायनेन । मारतवन्धु रूप
 यानर । एक निधि (सत्रना) । कल
 बोडका वृक्ष । इन्द्रनीलमणि । नील ।
 बेल । नीले रंगवाला (त्रि०) ।
 नीलकण्ठ, (पु०) नीलः कण्ठः अन्तः जिन्में
 है । जिन्की मझपत्र । मयूर (मोर) । नील
 विडिआ । सप्रन (ममोला) । बन्द ।
 नीललोहित, (पु०) नीलः कण्ठः लोहितं
 नीला और बालोंमें लाल जिन्की । उपके
 काला और लाल मिलादुआ रंग ।
 नीलयसन-वासम्, (त्रि०) नीले कपड़ेमें
 नीले बर्तोंवाला । नीजी पोशाकवाक ।
 नीलाम्बर, (पु०) नीले अम्बर रस ।
 नीला है । बरदेव । शनैबर । नीला रस
 य० (त्रि०) ।
 नीलोत्पल, (न०) कर्म० । इन्दौर । नील
 वाला । नीले रंगका नीलोत्तर कमल । नीला
 नीवार, (पु०) नि+ह्व+पञ् सीचः । ह्वयने
 चावल ।
 नीवि-वी, (स्त्री०) । निम्नपति । निर्दले
 व्येदन्-यत्र लोप । बलिपौधा मृगना । पूरे
 कमरबन्द ।
 नीवृत्, (पु० स्त्री०) नियतं वृत्ते वत् ।
 सीचः । जहां बहुत रहता है । देश । जना
 तबोग रहते है ।
 नीशार, (पु०) निशरं शीघ्रं हिमनिर्गलं वा ।
 जहां वा जिससे पाज वा बाधु इला बदा
 +पञ्-सीचः । हिम और बाधुगो रर करे
 (पट्टा) । कानन । बाण्डर ।
 नीहार, (पु०) निहियते । नि+ह्व+पञ्-सीचः
 सिधिर । बरक । कोप ।

(त्व) विकल्प । अनुनय । अनीत । प्रथ । हेतु ।
कं । अपमान । अपदेश । अनुगाय । निधय ।
क.

(स्त्री०) पु+किन् । खव । तारीक । और प्रणाम ।
। पूजा.

(त्रि०) सुदृ+क-विकल्पणे न होता है । प्रेरित ।
। पत्ययानुभा.

(त्रि०) नव एव । नव+तान । नवस्य पुः । अभि-
। नवीन । नया । अ "नूत" यही अर्थ.

(पु०) सुदति पापं । क । पू० शीघ्रं । इक्षमिरोप । शब्द-
। दरहत.

(अव्य०) वितर्कं । निधित । स्मरण । वाक्यपूर्ण ।
। श्लाघोत्तन । दलील । यकीनन । याद होना.

(न०) नू+किप्+पूर्+क । यादाप्रद । पौक्च भूरण ।
। गत.

दृकम्, (न०) निपण्णना=नाश्रा=अभिधानानां वा
। रू+कन् । वैदिक शब्दोंका शेष (राजानां) (पांच
। श्लाघोत्तन हैं, जिसपर वाक्यने टीका की है).

की, (स्त्री०) नीचे: अराधं चरति+उट्+शीप् ।
। तम गौ.

(त्व)क, (न०) निलं अनुष्ठेयम्+कन्+उट् वा । नि-
। तुष्ठेय । प्रतिदिन करनेलायक.

व-ण, (न०) निपुणस्य भावः+भ्यप्+अण् वा । दसता ।
। पुरार्द्र.

त्सिक्, (त्रि०) निमित्तात् आगतम्+उट् । पुत्रजन्म
। दि निमित्तका आश्रयकर सिपायमा जातेरिआदि ।
। बबरे.

त्सिकलय, (पु०) कर्म० । "चार हजार (शहर)
। गोकुं पीठे नैमित्तिक लय होता है" । ब्रह्माचा दिन भीत
। अनेपर अगतोंका प्रलय.

य, (न०) एक शीघ्रं । यहाँ निनेप (विष्णु) ने
। स्वयं नाच किया.

मोथ, (न०) स्वमोथस्य निकारः+अण् । बटफल ।
। तीडका फल.

विक, (त्रि०) म्यायं वेत्ति-अधीवे वा+उट् । जो
। धायको जानता वा पढ़ता है । म्यायत् । व्यापरात्रके
। शोधेहाय.

स्तर्यं, (न०) निरन्तरस्य भावः+अभ्यप् । अविच्छेद ।
। अगातर होना.

दय, (न०) निराशास्य (निष्कामस्य) भावः+अभ्यप् ।
। वाद् न रचना । आशाशून्यत्व । आशाएँ रहितत्व ।
। "नैराश्यं धर्यं दयम्".

नैराशः-नैराशिकः, (पु०) निरुपं वेत्ति-अधीते वा+अण्+
। उट्+इक । शब्दोंके प्रकृतिप्रत्ययको जातेहाय.

नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः+अण् । निर्गुणपन । गुणोंका
। न होना.

नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः निर्गुण्यम् । निर्देय होना ।
। वेरहमी.

निर्देशिक, (पु०) निर्देशं करोति+उट्+इक । आज्ञाको माप्रे-
। वाला । गृह्य । नौकर.

निर्गोष्य, (न०) निर्गोषस्य भावः+अभ्यप् । निर्गोषता । स-
। च्यता । राचार्द्र । शिपयोर्धे वैराग्य.

निलंज्यम्, (न०) निलंजस्य भावः+अण् । निलंजपना । शर-
। मिदगी.

नील्यम्, (न०) नीलस्य भावः+अण् । नीलपन । काल ।
। नीला रंग.

निवेद्य, (न०) निवेदं (निवेदनं) अर्हति+अभ्यप् । नि+
। विद्+णिच् कर्मणि यत्+स्वायें अण् वा । जो निवेदनके
। योग्य है । देवताके उद्देशसे छोड़नेलायक पदार्थ । देवताके
। आगे बढ़नेका पदार्थ.

निःश्रेयस, (त्रि०) निःश्रेयसस्य हित+अण्+शी+श्री । निधित
। श्रेय (कल्याण)को पहुंचानेवाला । आनंददाता । मोक्षका
। देनेवाला.

नैपथ, (पु०) निपथानां (जनपथानां) अर्थ+अण् ।
। निपथदेवताका नक्षत्राना राजा । इक्षीके शिपयमें बनाया
। हुआ ग्रन्थ (न०) उस देशमें हुआ और उसका सम्बन्धी
। (त्रि०).

नैष्कर्म्यं, (न०) निष्कर्म्यो भावः । कामसे रहित होना ।
। विधिसे सब कामोंको छोड़ना । "न कर्मणामनारम्भा-
। न्यन्म्यं" गीता.

नैषिक, (पु०) निष्के (हेत्रि-नीनारे) निपुक्+उट् ।
। घोड़े वा मोहरोंके काममें लगाया गया । शोषाप्यथ (शत्रु-
। नयो) । टंकाजालनिपुक् (टंकाजालिया).

नैष्ठिक, (पु०) निष्ठा (संसार-उन्नासिः) प्रयोजनं अस्य+उट् ।
। संसारको समाप्त करना जिसका प्रयोजन है । जो शारा
। जीवन ब्रह्मचारी होकर गुरुके शर्ममें निवास करता है । एक
। प्रकारका ब्रह्मचारी । "निष्ठा स्थितिमें लगाहुआ" एकनिष्ठ
। (त्रि०).

नैष्ठुर्यम्, (न०) निष्ठुरस्य भावः+अण् । निष्ठुरपन । निर्दण्ड ।
। बेरहमी.

नैसर्गिक, (त्रि०) निष्कर्म्येण (समावेन) निष्ठा+उट् ।
। समावेश बना । सामाजिक । ऊपरली.

नैश्चिदिक, (त्रि०) निश्चिदः प्रदर्यं अस्य+उट् । त-
। कार जिसका अर्थ है । तकारसे कचनेहाय (त्रि०)

निहवनम्, (न०) नि+हृ+अन । मुकर जाता । अपने
 झानको छिपाना । प्रतिवाद करना।
 निह्वन, (वि०) नि+हृ+अ । छिपाया गया । प्रतिवाद
 किया गया।
 निह्वति, (स्त्री०) नि+हृ+क्तिन् । छिपाना । मुकरना।
 निह्वाद, (पु०) निहृ+वाद् । नि+हृ+अन् । अन्त्य
 शब्द । ऐसा शब्द कि जिसका अर्थ प्रकट नहिं।
 नीकाश, (पु०) नि+काश्+अम्-शीर्षः । निषय । यकीन ।
 अन् । घट्टा । समान (बराबर) । "यन्ननीकाश"
 यन्नघरीला आदि।
 नीच, (वि०) निहृ+अ ई लक्ष्मी चमति । चम्+अ ।
 पामर । नीच । वामन (बौना) । चोरनामी गन्धद्वय
 ह्य (पु०)।
 नीचिस्, (अन्त्य०) । नीचे । थोडा । और थुद (कमीना)।
 नीह, (पु०) निधिता इल्लि अत्र । इल्ल+अ । निवासस्थान ।
 रहनेकी जगह । पक्षिओका कुलाय-आलना (घोसला)।
 नीहज, (पु०) नीहे जायते । जन्+अ । घोरलेमें लपकता
 है । निरुग । पशी । परिवह । "नीहोद्भव" यही अर्थ।
 नीत, (वि०) नी+अ । लेजाया गया । बलाया गया । लाम
 किया गया । बगीत होगया।
 नीति, (स्त्री०) नीचन्ते उभ्रीयन्ते अर्थां अनया । नी+क्तिन् ।
 शिष्यके द्वारा अपने उपासा जाय । नी+क्तिन् । शुक्रचार्य
 आदिसे बर्तव्यके शास्त्रविद्या । एक शास्त्र "मावे" पदुंवाणा ।
 इगणकका इत्यन्त । म्याह (इगणक) । हासिल करना।
 नीतिमन्, (वि०) नीति+मन् । नीतिवाला । नीतिमें
 बहुर । इत्यन्त।
 नीतिशास्त्र, (न०) नीतिशोधके शास्त्रं । नीतिविद्या सिगानेहारे
 एष्य । बृहती । शुक्रचार्य । कामन्दक । नागबन्धु ।
 सिन्धुदत्त आदिके रचेहुए पञ्चनख । दिवोपदेश आदि।
 नीर, (पु०) नी+अ । कदम्ब । क्यूह । नील अतोटका
 इत्यन्त । निरक।
 नीर, (न०) नी+अ । निरमें एतन् अग्निषो वा । जो आगसे
 सिद्धा अत्र । पानी । रम।
 नीरज, (न०) नीरे रजने । रन्+अ । पानीमें हुआ
 अन्त । मोती । जो पानीमें बरने (वि०) एक अटका
 नीर (पु०)।
 नीरज, (पु०) नीर रजति । र्ज+अ । मेष (जो पानी
 में रहते हैं) बन्धु अथै मूषक (मोसा) । "निर्वन्तः रजः
 इत्यन्त कर्मात्" । रजने इत्यन्त (वि०)।
 नीरज, (वि०) निर्वन्त रजं कर्मात् । शिष्ये छेद (पु-
 रान) । रजश्चर । मूषक (मोसा) । रज।
 नीरज, (पु०) निरजन् इत्यन्त । शिष्ये इत्यन्त निरज-
 रज । रजश्चर (मूषक) शिष्ये इत्यन्त (वि०)

नीराजन, (न०) नीरस शान्दुदकम्
 नि० । निःशोषेण राजने अत्र वा । जिने
 फेंकते हैं । अथवा जहां पूरा २ बांदा
 आदिसे आदर करना । पहिले ही
 पानी दिखाना- ३ पवित्र कपडा दिखाना-
 पीपलके पत्तेसे पानी सींचना- ५ इत्यादि
 आराधिका । आरती करना । अग्नि (इत्यन्त)
 थोडे आदिकी पूजा करनी।
 नीरज, (स्त्री०) निहृता इह् । भीमती इत्यन्त
 (स्वास्य) । "निहृता इह् यसाद" । निहृ-
 हुई । रोगरहित (वि०)।
 नील, (पु०) नील रंग । क । इत्यादि
 कर्षका मर्यादावन्त । भारतवर्षा ए
 वानर । एक निधि (खजाना) । कर्ष-
 बोडका वृक्ष । इन्द्रनीलमणि । नील (वि०)।
 नील (वि०) नीले रंगवाला (वि०)।
 नीलकण्ठ, (पु०) नीलः कण्ठः अथ । निर-
 है । पिपयी महाराज । मयूर (मोर) । नील
 विधिआ । राजन (ममोला) । बन्द-
 नीललोहित, (पु०) नीलः कण्ठः लोहितः
 नीला और बालोंमें लाल पिपयी । इत्यन्त
 काला और लाल मिलाहुआ रंग।
 नीलपत्तन-वासम्, (वि०) नीले कर्षका
 नीले वस्त्रोंवाला । नीली पोशाकवाला।
 नीलाभ्यर, (पु०) नीले अम्बर रस्य ।
 नीला है । बरदेव । धनेवर । नीला इत्यन्त
 य० (वि०)।
 नीलोत्पल, (न०) कर्मी० । इन्दिरा ।
 बाला । नीले रंगका नीलोत्तर कमल । नील
 नीवार, (पु०) नि+अ+अन् शीर्षः । इत्यन्त
 चारल।
 नीधि-नी, (स्त्री०) । निधयती । निधि
 धे-इत्यन्त शोष । बलिषोका मूलवत् ।
 कमरबन्द।
 नीधुन्, (पु० स्त्री०) निधने बन्ती अथ
 शीर्षः । जहां बहून रहता है । देश । जहां
 लोभ रहते हैं।
 नीशार, (पु०) निशरी शीर्षे निशियते अथ
 यशो वा शिष्ये पात्र वा बन्धु इत्यन्त
 +अन् शीर्षः । शिष्य और बन्धुसे शिष्य
 (यशसा) । बन्धु । बन्धु ।
 नीशार, (पु०) निशियते । निशियते
 निशियते । पात्र । शोष

(अभ्य०) विकल्प । अनुनय । अतीत । प्रथ । हेतु ।
 हं । अपमान । अपदेश । अनुपाप । नियम ।
 ३.
 (स्त्री०) नु+क्तिन् । काव । तारीफ । और प्रणाम ।
 १ । पूजा ।
 (त्रि०) नुद+क-विकल्पणे न होता है । प्रेरित ।
 १ । पलायानुभा ।
 (त्रि०) नव एव । नव+तन । नवम्य नुः । अभि-
 । नवीन । नया । ज "नूज" यही अर्थ ।
 (पु०) नुदति पापं । क । वृ० शीर्षः । इराधिशेष । रात्-
 । दरहन ।
 (अभ्य०) धितकं । नियत । स्मरण । वाच्यपूरण ।
 । शापोत्तन । दलील । यकीनन । याद होना ।
 (न०) नू+क्तिन्+पूर्+क । पादाद्वाद । पाँचका भूषण ।
 । रता ।
 (न०) निपद्यन्तां=नाम्नां=अभिधानानां वा
 । नू+कन् । वैदिक शब्दोंका शेष (राजाना) (पाँच
 नामोंमें है, जिसपर यास्कने टीका की है) ।
 । की, (स्त्री०) नीचे: अकार्यं चरति+उत्+शीप् ।
 । सम सी ।
 (स्य)क, (न०) निलं अनुपेयम्+कन्+उन् वा । नि-
 । नुपेय । प्रतिदिन करनेवालाक ।
 । न-ग, (न०) निपुणस्य भावः+प्यम्+अण् वा । दशता ।
 । पुरारं ।
 । त्तक, (त्रि०) निमित्तात् आगतम्+उठ्क । पुनश्च
 । रि निमित्तात् आश्रयकर क्रियागया जातेहिआरि ।
 । बबधे ।
 । सिकालय, (पु०) कर्म० । "चार हजार (चहत्तर)
 । शोके पीछे नैमित्तिक लय होता है" । मद्राका दिन बीन
 । निपर अगतोद्य प्रलय ।
 । य, (न०) एक शीर्ष । यहाँ निमेष (विष्णु) ने
 । लक्ष नाम किया ।
 । प्रोध, (न०) म्यामोधस्य शिकारः+अण् । बटफल ।
 । तिष्ठका फल ।
 । यिक, (त्रि०) म्यायं वेति-अपीते वा+उठ्क । जो
 । शयको जानता वा पढ़ता है । म्यायज्ञ । म्यायज्ञाश्रके
 । शपेहारा ।
 । शयं, (न०) निरन्तरस्य भावः+प्यम् । शयिच्छेद ।
 । शगातार होना ।
 । शय, (न०) निराशास्य (निष्कामस्य) भावः+प्यम् ।
 । शय न रचना । आशास्यत । आशासे रहितपन ।
 । "शैष्यं परमं शुभम्" ।

। नैरताः-नैदिक, (पु०) निरकं वेति-अपीते वा+अण्+
 । उठ्+इक । शब्दोंके प्रकृतिप्रत्ययको जापेहारा ।
 । नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः+य । निर्गुणपन । गुणोंका
 । न होना ।
 । नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः निर्गुण्यम् । निर्दय होना ।
 । बेरहमी ।
 । नैर्देशिक, (पु०) निर्देशं करोति+उठ्+इक । आशाको मापे-
 । बाटा । मृत्य । मौकर ।
 । नैर्मल्य, (न०) निर्मलस्य भावः+प्यम् । निर्मलता । स-
 । प्यता । तपाई । विषयोंसे बेराम्य ।
 । नैर्लज्ज्यम्, (न०) निर्लज्जस्य भावः+य । निर्लज्जपना । शर-
 । मिदगी ।
 । नैल्यम्, (न०) नीलस्य भावः+यत् । नीलापन । काल ।
 । नीला रंग ।
 । नैवेद्य, (न०) निवेदं (निवेदनं) अर्हति+प्यम् । नि+
 । विदू+णिच् कर्मणि यत्+स्तार्थे अण् वा । जो निवेदनके
 । योग्य है । देवताके उदेशसे छोड़नेवालाक पदार्थ । देवताके
 । आगे चढ़ानेका पदार्थ ।
 । नैऋत्यस, (त्रि०) नि.धेयघान्य हित+अण्+शी+म्बी । नियत
 । धेय (कल्याण)को पहुंचानेवाला । आनंददाता । मोक्षका
 । देनेवाला ।
 । नैपथ, (पु०) निपथानां (जनपदानां) अयं+अण् ।
 । निपथदेशका नलनामा राजा । इसीके विषयमें बनाया
 । हुआ ग्रन्थ (न०) उस देशमें हुआ और उसका सम्बन्धी
 । (त्रि०) ।
 । नैष्कर्म्य, (न०) निष्कर्मणो भावः । कामसे रहित होना ।
 । विधिये सब कामोंको छोड़ना । "न कर्मणामनारम्भाभि-
 । न्यर्त्य" गीता ।
 । नैष्टिक, (पु०) निष्के (हेत्रि-शीनारे) नियुक्त+उठ्क ।
 । सोने वा मोहरोंके काममें लगाया गया । शौराष्यश (धजा-
 । नवी) । टंकशालानियुक्त (टंकशालिया) ।
 । नैष्टिक, (पु०) निष्ठा (संसारसंगतिः) प्रयोजनं अस्व+उठ्क ।
 । संसारको समाप्त करना जिसका प्रयोजन है । जो सारा
 । जीवन ब्रह्मचारी होकर शुरूके रहमें निवास करता है । एक
 । प्रकारका ब्रह्मचारी । "निष्ठा स्थितिमें लगाहुआ" एकनिष्ठ
 । (त्रि०) ।
 । नैष्ठुर्यम्, (न०) निष्ठुरस्य भावः+य । निष्ठुरपन । निर्दयता ।
 । बेरहमी ।
 । नैस्तर्गिक, (त्रि०) निस्तर्ग्येण (सभावेन) निरुत्त+उठ्क ।
 । सभावेने बना । स्वाभाविक । कुदरती ।
 । नैष्ठितिक, (त्रि०) निष्ठितः प्रदरकं अस्व+उठ्क । त-
 । बार जिसका शब्द है । तरकारसे सजनेवाला (त्रि०)

नो, (अव्य०) क्षमाय । नहिं । न होना ।
 नोचेत्, (अव्य०) निषेध । नहिं तो । यदि न हुआ-
 नोदनम्, (न०) नुद्+भावे ल्युट् । प्रेरणा । चलाना ।
 धकेलना ।
 नोधा, (अव्य०) नवप्रकारं । नौ प्रकार । नौ तरहमें ।
 नोपस्यात्, (त्रि०) न उपनिश्रिति । स्था+तृच् । इत्थं ।
 इतरहनेहारा दूरका । दुष्ट-यात्री । बुरेवचन बोलनेहारा ।
 नौ, (स्त्री०) नुद्+ङां । पानीपर तरनेका साधन । वेडी
 "नौका" ।
 नौकर्णधार, (पु०) नावः कर्णधारः=चाठकः । वेडीके
 चलानेवाला । मल्हाह । मला ।
 नौकादण्ड, (पु०) ६ त० । वेडी चलानेके लिये दोनों
 ओर बंधाहुआ काठका टंडा । चप्पा ।
 नौयाधिन, (त्रि०) नावा याति-उप० स० । फिरतीमें जाने-
 वाला । मुसाफिर ।
 नौयसनम्, (न०) नावःव्यसनम् । वेडीकी तकलीफ ।
 बहाजका टकराना वा टटजाना ।
 नौसाधनम्, (न०) नावां साधनम् । फिरितीओंका साधन
 (उपाय) ।
 नृ, (पु०) नी+कृन् । मनुष्य । और पुरुष । नर । "जातो
 लोए" नारी ।
 नृकरोटिका, (स्त्री०) ६ त० । नरकपाठ । मनुष्यकी
 खोपरी ।
 नृग, (पु०) इक्ष्वाकुके बंसमें एक राजा ।
 नृत्, नाचना । दिवा० पर० अक० सेट् । नृत्यति । अन-
 र्त्तिम् । नर्तित्यति-नरत्यति ।
 नृत्-ल०, (न०) नृन्+कन्+क्यप् वा । ताल और खरसहित
 बिलासवाला अर्थात्का निक्षेप । नाचना ।
 नृप, (पु०) नृन् पाति । पातक । जिसका १६ कोसक
 अधिकार हो । एकप्रकारका राजा । और राजा । बादशाह ।
 नृपति, (पु०) ६ त० । कुनैर । और राजा । मनुष्योंका
 मास्तिह ।
 नृपप्रिय, (पु०) ६ त० । राजपुत्राण्ड । बच्चा पियाज ।
 धातिवचन्य । और धाम (धाम) । राजाका पियारा ।
 (त्रि०) ।
 नृपसम, (न०) नृपणां समाना-सदृशित्वां । राजाओंकी
 समान वा समान-समूह । राजाके रहनेकी साला ।
 नृपठ, (पु०) नृपां मठः । अतिविद्या पूजन । "नरपठ"
 दही धर्य ।
 नृपराह, (पु०) ना बराहः । मनुष्य और बराह (खर)-
 के सम्बन्धमें नरपराहका एक अक्षर ।
 नृप्राहन, (पु०) ना बरहनं मय्य । मनुष्य त्रिमयी रावर्गीहै ।
 ईश्वरीया इन्द्रे ।

नृशर्म, (त्रि०) नृन्+शर्मति । शर्म-हिकारना ।
 कूर । परतोरी । काठ करनेहारा । केन ।
 गाय बैर करनेहारा ।
 नृसिंह, (पु०) ना गिहृद । मनुष्य बैर निर-
 क्षामपगाला भगवानका एक अवतार (त्रिं
 रक्षा की) ।
 नृसोम, (पु०) ना सोमः=वन्द्र इव । ईश्वर ।
 महापुरुष । बच्चा आदमी ।
 नृ, नय । इत्याककरना । श्या० पर० स० सेट् । नय-
 नारीत् । नरयति (शिच्) ।
 नेजक, (पु०) निज्-शुद्धि+ण्युल् । रजक (हें
 करनेहारा (त्रि०) ।
 नेट्, (त्रि०) नी+तृच् । प्रसु । निबांहरनेहारा ।
 चलानेहारा । पहुंचानेहारा । नीनका हृष्ट (पु०) ।
 नेत्र, (न०) नयति नीयते वा अनेन+द्रन् । बनेमें
 एक प्रकारका कपडा । कृशका मूल (जट) ।
 नाडी । शलाका और आँख । पहुंचानेहारा ।
 साधन । प्रवर्तक (त्रि०) ।
 नेत्रगोचर, (त्रि०) नेत्रयोः गोचरः=प्रत्यक्ष
 विषय । आँखोंके सामने प्रतीत होनेवाला ।
 नेत्रच्छद, (पु०) नेत्रयोः छदः=आवरणम् । नेत्रों
 नेत्रमलम्, (न०) नेत्रयोः मलः । आँखोंके मल ।
 नेत्ररोगहन्, (पु०) नेत्ररोगं हन्ति । इन्द्र-
 काली वृक्ष (यह नेत्रोंके रोगको दूर कराहै) ।
 नेत्राञ्जनम्, (न०) नेत्राय अञ्जनं-च० त० । नेत्रों
 के लिये अंजन (सुगंध) ।
 नेत्रान्त, (पु०) नेत्रस्य अन्तः । नेत्रका बाहिरी को
 नेत्रामिष्यन्द, (पु०) नेत्रयोः अमिष्यन्दः । नेत्रों
 एक प्रकारका नेत्ररोग ।
 नेत्राम्यु-जम्, (न०) नेत्राय अयुः । नेत्रका
 अयु । धातु ।
 नेत्रोत्सव, (पु०) नेत्रयोः उत्सवः । नेत्रोंका उत्सव ।
 नेत्रोंके लिये मुसदादे कोड़े पड़ाने ।
 नेत्रिष्ठ, (त्रि०) अतिरायेन अन्तिकः । इन्द्र-
 ओ बहुतही पास हो । अतिराय निकटम् ।
 नेदीयस्, (त्रि०) धातिरायेन अन्तिकः । ईश्वर-
 अत्यन्त गामीपथ । बहुतही पास ।
 नेपथ्य, (न०) नी+निच्-नय-नेतुः पथ्यम् ।
 वेग । वेगका स्थान । माटक आदिकी लपटके
 भूमि (भगान) ।
 नेपाल, (पु०) अपने नामसे प्रसिद्ध एक देश ।

पक्ष, (पु०) पक्ष+अच् । पक्षदशदिन । १५ दिन (पञ्च-वाहा । पक्षी । परिदह । समय । पक्षिओंके पर । "केशसे परे समूह अर्थमें" केशपक्ष (कालोंका समूह) । पाव । पर । दोहपते । न्यायमें जहां साप्यका संदेहहो-जेसे "पदाक्षरं पराधाग हे" विरोध । चक्ष । सहाय । मित्र । हाथी । समूह । शरीरका आधा भाग ।

पक्षक, (पु०) पक्ष इव कापति । क्त+क । पार्श्वदार । पासेका दबाजा । खिडकी ।

पक्षता, (स्त्री०) पक्षस्य भावः । पक्षका होना । अनुमित्सा-विरहविशिष्टसिद्धभाव । एक पक्ष पकटना । न्यायशास्त्रमें "जहां वक्षित्व (आगका होना) वा निश्चय नहीं वहीं पक्षता होतीहै, उसका निश्चय होनेपर यदि अनुमानकी इच्छा रहे तो भी होसकतीहै नहीं तो नहीं" इस प्रकार मानते हैं ।

पक्षति, (स्त्री०) पक्षस्य मूलं-ति । पक्षवाडेकी जट । पक्षको आरम्भ करनेहारी प्रतिपदा । पडवा । एकम् । एक तिथि । पक्षिओंके परोंका मूल । परकी जट ।

पक्षद्वयम्, (न०) पक्षस्य द्वयम् । युक्तिके दोनों ओर । दो पक्ष (युक्तियें) ।

पक्षपात, (पु०) पक्षे (अन्याय्यसाहाय्ये) पातः (अभि-निवेशः) । एक ओर गिरना (जहां इत्याक नहीं) । अन्यायके लिये सहायता करना । तरफदारी । मुलाजा ।

पक्षहोम, (पु०) पक्षाय होमः । एक पक्ष (पक्षवाडे) में समाप्त होनेवाला होम वा यज्ञसंबंधी संस्कार वा रीति ।

पक्षायात, (पु०) पक्षस्य आपातः । युक्तिके एक अंशका इटजाना ।

पक्षान्त, (पु०) पक्षस्य अन्तः सत्र । जहां पक्षका अन्त होताहै । अमावास्या । ओर पूर्णिमा तिथि ।

पक्षाभास, (पु०) पक्षस्य आभासः=प्रतीतिमात्रम् । मिथ्या-युक्ति । झूठी दलील ।

पक्षाहार, (पु०) पक्षे व्याहरति । पक्ष (१५ दिन)में एक-ही बार भोजन करनेवाला ।

पक्षिणी, (स्त्री०) पक्षतुल्ये अहनी विद्येते आस्या+दनिः । त्रिषुके दोनों दिन परोंकी तरह हो । दोनों (आनेवाले ओर बर्तमान) दिनोंमें मिथीहुई रात । पक्षिओंका समूह ।

पक्षिन्, (पु०) पक्ष+अति अर्थे इति । जिनका पर हो । परिन्द । बाग (तीर) । "पिहजम ।"

पक्षिल, (त्रि०) पक्षः साहाय्यं+अति अर्थे इत्यच् । साहाय्यकारक । सहायता देनेहार । मारन करनेहार । न्यायका भाष्य बनानेहार काव्यायन मुनि (पु०) परवाला (त्रि०) ।

परमन्, (न०) पक्ष+अन्तिन् । नेवाररच्छोम । आरक्षो बंद करनेहार रोम (बँ) । शिम्पणी । पलक । कमठ-बूझी तिथि । पक्षिओंका पर । बहुत छोटा सुत ।

पक्षमल, (त्रि०) पक्षम+लच् । नेत्रोंके मल्लदेई । पक्ष्य, (त्रि०) पक्षे भा०+यच् । पक्षवाडेमें जहां एक ओर होनेवाला । प्रत्येक पक्षमें बदलने ।

पक्ष्, (पु० न०) पक्षि+पञ्-नि० । श्व । इन्द्र-वृष, पाप ।

पक्ष्(कि)ज, (न०) पक्षे जायते जन्मः । पक्ष-समाप्तः । जो कीचटमें उपजता है । पक्ष-समाप्त ।

पक्षिल, (त्रि०) पक्ष्+अति अर्थे इत्यच् । इन्द्र-जहां कीचट हो । कर्मवाला देव ।

पक्ष्केरुह, (न०) पक्षे रोहति । इक्ष्+क । बर-पक्ष (कमलछूल) । मारस मग । काल-मग ।

पक्षि, (स्त्री०) पक्षि+क्तिन् । सजातीवसन्तः । कतार । पाँच वा दस अक्षरके पक्ष्काल में गिनती । शुयिची । गौरव । बरपान । पक्ष-प्रथम । विस्मर (फैलावट) ।

पक्षिदूपक, (पु०) आदमें भोजनके लिये पाँचों पाँचोंको जो दूधित कर देता है (i. e. दुग्+णिच्+शुल्) । जो पक्षिके लायक नहै । आदिमें भोजन न देना चाहिये । घूर्त् ।

पक्षिपावन, (पु०) आदमें भोजनके लिये पाँचों कतारको जो पवित्र करता है । पक्ष-आदभोजनके लिये बँडेहुओंकी पक्षिके पाँच विद्वान् आदि ।

पक्ष्, (त्रि०) खजि+कु । (पक्ष् आदेश) ई, हीन । जो चल नहीं सक्ता । (स्त्रीमें नृ) लुंजा । शनेधर । शनीचर (पु०) ।

पक्ष्, पाक-पक्षान्-ध्या० उम० सङ्० अपाशीन् । अपक । पवित्रम । पक्ष् ।

पक्ष्, व्यक्तीकार । प्रकटकरना । जाहिरात । धनिर् । पचते (अपक) ।

पक्ष्, विस्तार । फैलाना । वृष्ट० उम० सङ्० पचपति-ते । अपपचत्-त् ।

पक्षेलिम, (त्रि०) पक्ष्+केलिम् । पक्षाहुधा ।

पक्ष्, आरण-नांकलेना । ध्या० पर० सङ्० पञ्चति । अपञ्चत् ।

पक्ष्, (पु०) पक्षां (मन्त्राणः चरणानां) इ +उ । जो मन्त्रके चरणोंमें उपजता है । पक्ष-अत्रायत्" इति श्रुतिः ।

पक्ष्क, (न०) पक्षानां धवयवः+अन् । ईन्द्र-पाँचकी गिनती और धनिशाये के पाँचवें-युद्धभेद (कर्दारका पैदान) ।

कपाय, (पु०) कर्म० । पांचप्रकारकी कसीसी चीजें । म्बु (जाम्बू जम्बु) साम्बली (सिबल), बाज्जाल, बल और बर (बेर) ।

कोप, (पु०) पच कोप इव आवरका यस्य । राजानों-की नाई जिसके पांच पइदे हैं । वैदान्तमें ब्रह्माहुआ अनमय आदि पांच कोपका अभिमान करनेहारा जीव । गमा० दिग्गु० । अत्रमय आदि पांच कोपवाले देह (न०) । अत्रमय कोप (स्थूल शरीर) प्राणमय, मनोमय और ज्ञानमय (जिह्वाशरीर) एवं आनन्दमय (कर्णशरीर) दे सबके पिछला शरीर मोक्षकी दशा है । अर्थात् इही आनन्दमयकोपरूप शरीरमें मुक्त पुरुष आपही आनन्दका मोषा है ।

कोपदेशी, (स्त्री०) पद्यानां कोपानां समाहारः । पांच कोपका अंतर (फलसौ) ।

खट्वमू-द्वी, (न० स्त्री०) पद्यानां खट्वानां समाहारः । पांच खट्वों (खंब) का समूह । पांच पलंग । पांच भेजे ।

गायमू, (न०) पद्यानां गवां समाहारः । पांच गौओंका समूह । पांच गौरें ।

गव्य, (न०) गोविंकारः यन्-पद्यानां गव्यानां समाहारः । गौका विचार । पांच गव्योंका भेद । दही-दूध-पी-गोमूत्र (गमूत्र)-और गोधा ये पांच ।

चूडा, (स्त्री०) पद्य चूडा यस्याः । जिसकी पांच कोटी हैं । एक अपारा ।

जन, (पु०) पद्यभिः भूतः जन्यते । जन्+पच् (इति नदि होती) । जिये पांचों भूत उत्पन्न कर्ते हैं । मनुष्य । एक देस (जिसकी हद्दीमें कृष्णपन्धका पांचजन्य नामका पत्थ बन) ।

तरप, (न०) पांचो तरप इषे (पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश) मत्- (तरप), मीन-मन्थ (मच्छी) मु-हा और मैनून "तन्त्रशास्त्रमें बहेतुये पांच ।" पचप्रकार क्योकि सबका पहिला अक्षर म है ।

पाण, (पु०) पद्य पाणा अस्य । जिसके पांच पाण हैं । कामदेव "पचपाण" ।

पयटी, (स्त्री०) षट् (षट्) गमा० दिग्गु० । "अथथ (पीपल) बिल (मित्र), षट (बोट), पात्री (कामक), और आषोडश । षट्क बनका एक भाग है जहां एक-पन्द्रही टीला और हरमनके सब विरकाव रहे (वही गोदाशरीरका प्रकाश होता है) । षट् कथिक परंतुये से मीनकी हृदयर है ।

पयंदेदीय, (त्रि०) पयसं+देदीयत् । पांच बरिठके लयभग आयु (उमर) का ।

पयाका, (पु०) पद्य कायकाया कण्ठक दश । जहां कथिओके लक्षमें पांच अनुपि हैं । इस । एक ।

पञ्चसूना, (स्त्री०) पञ्चसूनाः (प्राणिवपस्यानानि) । नीबों-के मरनेकी पांच जगह । "बुधे, पेयली (बनी), उप-हृर (परकी साम्बली), बण्डनी (बुहारी) और पनीका पदा" ये पांच जगह जहां कीड़े कीडियां मरते हैं ।

पञ्चाग्नि, (पु०) पद्य अग्नेः उपासा यस्य । जो पांच अग्निओकी उपासना कर्ता है । पांच अग्निवाला (त्रि०) ।

पञ्चाङ्ग, (न०) गमा० दिग्गु० । एक इतके लक्ष् (जिह्वा) आदि पांच । "त्रियि, वार, नस्य, योग और बरान" ये पांच । त्रिगके पांच अङ्ग हैं । "जप, होम, तपन, अ-भिषेक और ब्राह्मणभोजन" इस प्रकार तन्त्रशास्त्रका पुरा-रण । पांच अंग जिसके बतमें हैं । दूर्ग (कण्ठुआ) (पु०) । (यह अपने अग्रोके इष्टपूर्वक पिरोह लेता है) ।

पञ्चासूत, (न०) गमा० दि० "दूध, घण्ट (गंध), पी, दही और हाट" ये पांच ।

पञ्चाल, (पु०) एक देस । और उच देसका टमा । उच देसके वाली (बहु०) ।

पञ्चाली, (स्त्री०) पद्य (प्रथं) अग्नि (पयंदेति) अन्+अण् । ब्रह्मपुत्रिका । बरदेकी बनीदुरी पुनगी । गुरी । एक प्रकारका गीत ।

पञ्चारात्, (स्त्री०) पंच दरत परिमलं अयम् । त्रि० । पयास । पयागी संज्ञका । पचग ।

पञ्चेन्द्रिय, (न०) गमा० दि० । पांच इन्द्रन्द्रिय " (धो प्र-काल), हाह, नेत्र, हात (जीभ) और (प्राण-करीक)" बाहू, पाणी, पाद, पयु (उर), जाल्य (श्रि) ये बसै-न्द्रिय हैं ।

प(वि)ञ्जर, (पु० न०) पत्रि-सिञ्जि क्+अरच् । कर्णकी हृदिओका समूह । बहल । पत्रिभरिसे बरिदेकी कण्ठ (रित्रा) (न०) ।

पत्रि-श्री, पत्रि+रच् का शीर् । एतगभव लक्षिका (सू-की अरी) "सपे कन्" त्रियि वर अरि पदाशुके जन्ने-हारी । पत्रिका । पत्री (जंगी) ।

पञ्चतपस्, (त्रि०) पचतपस्यं तपः अयम् । जिसकी तपसा पांच अग्निओके सिद्ध होगी है । बगोअर का अग्निसे और ऊपर सुंदके लेखके लयदेहट ।

पञ्चतप, (न०) पद्यानां अरन्त देसं कन्ठकत् । पांच की संज्ञका । उच सिवरीकला (त्रि०) ।

पञ्चतन्त्राय, (न०) षट् एव तन्त्रायः । पचका लक्ष-प्रानं लक्षणाः । पांच लक्षणाओका देस । लक्षणादेसे प्रसिद्ध कण्ठुओ (इषिरी कर्ण) के लक्षण एव लक्ष-ण, एत ओ लक्षणाए पांच लक्षणाए ।

पञ्चत्व, (न०) पञ्चानां (पृथिव्यादिभूतानां) भावः । त्व । पाँचपन । मरण । मौत (इगमें शरीरके आरम्भ करनेहारे भूतोंअ अने २ अंशोंमें प्रवेश होता है) "पञ्चता" ।

पञ्चदश, (त्रि०) पञ्चदशानां पूरणः+इड् । पन्द्रहवो पूरा करनेहार । जिससे १५ हवीं संख्या भरजाती है । पन्द्रह । पन्द्रहवां "पञ्चदशी" पूर्णिमा । वेदान्तका एक ग्रन्थ है (छी०) ।

पञ्चधा, (अद्य०) पञ्च प्रकारे । पञ्च प्रकार । पाँचतरहसे ।

पञ्चनख, (पु०) पञ्च नखा यस्य । जिसके पाँच नखून हों । हाथी । व्याघ्र (भेड़िया) । पाँच नखोंवाला (त्रि०) ।

पञ्चनद, (पु०) पञ्च नद्यो यत्र । जहाँ पाँच नदीयें हों (विन्ध्या-दण्डवती-चन्द्रमागा-शतद्रु और विपाशा) । पञ्चाव नामसे प्रसिद्ध मद्रका देश । काशीमें विन्दुमाधव तीर्थके पासकी पाँच नदियें ।

पञ्चभूत, (न०) पञ्चानां भूतानां समाहारः । पाँच भूतोंका मेल । वैशेषिक आदिसे कहेहुए पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश स्वरूप पाँच भूत ।

पञ्चम, (त्रि०) पञ्चानां पूरणः । पञ्चम+मद् । जिससे पाँचवीं संख्या पूरी होती है । पाँचवां । +त्रियां दीर्घ । पञ्चमी त्रियि ।

पञ्चमकार, (न०) पञ्चानां (मकारादिवर्णानां) समाहारः । तन्मध्ये कहेहुए मय-भांश-मन्त्र-मुद्रा और मंथन । (ये पाँच शब्द जिनका पहिला वर्ण "म" है) ।

पञ्चमहापद्म, (पु०) महान् पद्मः=महापद्मः । ततः कर्म० । पाँच शरत्ओंके दोपकी दूर करनेहारे पाँच बड़े पद्म । कल्याणपाठ-आमिहोत्र-अतिथिपूजन-पितृपूजा और बलिदान ।

पञ्चमास्य, (पु०) पञ्चमः (शरभेद) आस्ये (तद्वत्-देमकृष्टे) यस्य । जिसके मठमें पञ्चमही शुरु निकलती है । सोरठिल । सोरठल ।

पञ्चहापन, (त्रि०) पञ्च हापनानि यस्य पाँच बरियरी उमावटा ।

पट्ट, कति-जन्ता । भ्रा० पर० सङ्० सेद् । पटति । अगा-दीर्घ-आपटीद् ।

पट्ट, दीर्घ । अणवन्ता । पु० टम० थङ्० सेद् । पाटय-त्रि-श्ले । धर्षणपट्ट-न ।

पट्ट, देहव-वेददेवा-वेदेवता । पु० टम० सङ्० सेद् । पटति । श्ले अणवन्ता-न ।

पट्टकार, (पु०) पट्टं करोति । कृ+अण् । कपटा बनाना है । टट्टकार । टट्टार ।

पट्टकुटी, (छी०) पट्टिर्जिता कुटी । न० । पट्टमव दूर । कट्टका या (संद्) । "पट्टहृद्" अन्तरि-नदी धर्ष ।

पट्टहार, (न०) पट्टाने (आवेष्टाने) । कन् । पट्टन्+चरट् । जीर्णोत्तर । पुपाना कपटा । "जे वेष्टिन इव चरति" चर+अण् । "जो कपटसे ढं-चलताहै" चोर (पु०) ।

पट्टल, (न०) पट्ट-वेष्टन+कलन् । छंदे । क० । नेत्रका रोग । और पट्टारी । वृक्षविशेष । श्ले अण् (पु०) ।

पट्टवासक, (पु०) पट्टान् वासयति (इच्छते) जो कपटोंको सुगन्धीवाला बना है । क० । पट्ट-वसनवासक । केसरआदिका धूप । अण् । पु० ।

पट्टह, (पु० न०) पट्टेन हन्यते-हन् । "पट्टे" शब्दं जहाति वा । हा-वाड । पट्टे तान्न किं वा पट्ट २ शब्दको छोटता है । डकार । डेड ।

पट्टिमन्, (पु०) पट्ट+इमन् । चतुरता । चतुरारी की । सखी । उपद्रव ।

पट्टीर, (न०) पट्ट+इरन् । काली (छत्रनी) । (खेत) । मेघं (बादल) । बंगुवार (बंदेण खदिर (खैर) । उदर (पेट) कर्षं (कर्म) चंदन ।

पट्टीयस्, (त्रि०) अतिशयेन पट्ट+ईयस् । डेड करनेमें बहुतही चतुर हो ।

पट्टजातीय, (त्रि०) पट्टुप्रकार+जातीयद् । पट्ट अचचीतरहका ।

पट्टरूप, (त्रि०) प्रसक्तः पट्टः । प्रसक्त्ये+म् । शयपक्ष । बहुत चतुर ।

पट्टोल, (पु०) पट्ट+ओलच् । इस नामकी एक ब्रह्मविशेष (न०) ।

पट्ट, (न०) पट्ट+क्त । ट वा । नगर । मुक । मूक सुरमा (चौक) । राजा आदिका उद्योग (पट्ट पट्टा । फलक (शाल) । राजका निहसन (लकारका कपटा । कौरोव (रोग) । दीर्घेण वा (पु०) ।

पट्टज, (न०) पट्टान् जयते । पट्टिर्जिता । कपटा ।

पट्टेदीर्घ, (छी०) पट्टं (राजाजनें) (देवी इत्येण छीं) । राजाके माथे पिशासनकर कर्णिक और । पट्टण्णी । "पट्टमक्षिणी" "पट्टमक्षिणी" ।

पट्ट (त्रि०) न, (न०) पट्ट (त्रि०) निव प्रया वा । पट्ट-वा+अण् । जहाँ बहुत शोक आनेहै । श्ले अण् । पट्टण्णी । बहा मुक ।

पट्ट, त्रिगण्यस्य । वाचन-विशेषेण । अण् । भ्रा० पर० सङ्० सेद् । पटति । अण् ।

पति (इन समय और प्राप्ति) जना० । भा० भा०
सक० छेद । पत्न्ये । अपसिद्ध.

पतिव्रत, (पु०) पति धनेन-पतः (पश) तेन गच्छति-
गम्+इ । जो पति जाता है । विद्वत् । पशु ।
परिन्दह.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पति, (न०) पत्न्यभावे ह्युट् । विक्रय । घेचना ।
करोक करना.

पति, (पु०-श्री०) पत्नं (व्यवहार) कति । वा+क ।
पटहनेद । एकप्रकारका ढोल । "पणवानकयोमुखाः"
इति गीता.

पाया, (श्री०) पत्न्यशायं आय सप्त-अ । व्यवहार ।
"नक्षोपतेमे बनिज्रां पणया" इति भट्टिः.

पापित, (त्रि०) पत्न्यशाय+क । प्युत् । सरदागया ।
हारीक विवायया । "आप" न होनेपर "पतिनं"
ऐशामी होता है.

पतिव्रत, (त्रि०) पत्न्यशय्य । विकेतव्य (सरीदनेकी
योग्य) । स्त्रीगव्य (हारीकके लायक) । और व्यवहार
(व्यवहारके योग्य) +यच् । इसी अर्थमें "पति" भी
होता है.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्या (सत्त्वानुग बुद्धिः) जाता अस्य ।
हार० इत्यच् । त्रिपदी बुद्धि सत्त्वकी पदिकानती है ।
शास्त्रके तात्पर्यके आश्रय । विद्वान् । आदिम । दाना ।
पतुर । समसवाला.

पतिव्रतमन्य, (पु०) आत्मानं पतिव्रतं मन्यते । जो
अपनेको पतिव्रत मानता है.

पतिव्रती, (श्री०) १ त० । विक्रयेद्रव्य । विक्रयेशाळा ।
घेचनेलायक पदार्थके बेचनेका स्थान । निपति । हुकान ।
हह । "क्षायं कन्" । पत्न्यवीथिका "पत्न्यशाळा".

पतिव्रती, (श्री०) कर्म० । वह श्री त्रिवे मोल छे
मके हैं । वेद्या । कंत्ररी.

पतिव्रती, (पु०) पत्न्येन आजीवति । आ+जीव्+अच् ।
जिसका जीवन (सरीद करोक कियेहुए द्रव्यसे) होता
है । बनिजत्र । बनिदा । व्यापारी (व्यवहारी).

पति, गति । जाना । गिरना । उतरना । नीचे आना । भा०
पर० सक० छेद । पति । अपसाव.

पतिव्रत, (पु०) पति धनेन-पतः (पश) तेन गच्छति-
गम्+इ । जो पति जाता है । विद्वत् । पशु ।
परिन्दह.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पतिव्रत, (पु०) पत्न्ये अनेन । पत्न्य+अच् । जिससे व्यव-
हार करने हैं । मूल्य (कीमत) पत । ताप (तामा)
एक पैसा । "भावे अच्" । धति (मजदूरी) । घृष्ट
(जूआ) । ग्लह (दाब) । नियम । और व्यवहार ।
चार बाकिनी । अतीतिरुपरिधा । अतीती शैशिवे.

पञ्चत्व, (न०) पञ्चानां (पृथिव्यादिभूतानां) भावः ।
त । पांचन । नरन । मैन (इनमें शरीरके आरम्भ
करनेवाले भूमीय जन्मे २ अंगोंमें प्रवेश होता है)
“पञ्चता” ।

पञ्चदश, (वि०) पञ्चदशानां दशान्+इत् । पञ्चदशको
दश करनेवाला । जिससे १५ इसी संख्या मन्वाती है ।
पन्द्र । पन्द्रहा “पञ्चदशी” पूर्णिमा । वैशाखका
एक ऋण्य है (मी०) ।

पञ्चधा, (क्त०) पञ्च प्रकारे । पञ्च प्रकार । पांचनरहने ।
पञ्चनव, (पु०) पञ्च नवता वन्म । जिसके पाँच नवून हों ।
हरी । न्यत्र (नैत्रिआ) । पाँच नवताका (वि०) ।

पञ्चनद, (पु०) पञ्च नद्यो वन । जहाँ पाँच नदीयें हों
(विन्दा-इण्डकी-नन्दमण-वाण्ड और विन्दाघा) ।
पञ्च नद्यो प्रसिद्ध मरुत देवा । काशीमें विन्दुमाधव
जीके पञ्चमी पाँच नदीयें ।

पञ्चमूर्त्त, (क०) पञ्चानां भूतानां समूहः । पाँच भूतों-
का समूह । वैश्वदेव आदिमें कहेहुए पृथिवी-जल-तेज-
वायु और अन्नका समूह पाँच मूर्त्त ।

पञ्चम, (वि०) पञ्चानां गुणः । पञ्चान्+मत् । जिसमें
पांचही पञ्च ही होती है । पाँचानां । अत्रिपां वीर ।
पञ्चमिदि ।

पञ्चमकार, (क०) पञ्चानां (अकारादिपञ्चानां) समूहः ।
जन्मे कहेहुए मण-अंग-अन्न-मृदा-और-मैसुन ।
(ये सब एकत्र मिलकर पञ्चम वनी “म” है) ।

पञ्चमकारक, (पु०) पञ्चान्+कारकः । मत् । कर्म० ।
पञ्चकारकके होतेही सब करनेवाले पाँच कहे
हुए । अणुकारक-अत्रिपां अत्रिपांविन्दुन-विन्दुनार्थ और
होतेही ।

पञ्चमला, (पु०) पञ्च (मन्वेत्) आधे (तदेक-
कोऽन्तः) वन्म । जिसके आधेमें पञ्चमही मूत्र निकलती
है । हो-पञ्च । हो-पञ्च ।

पञ्चमसक, (वि०) पञ्च मन्वेत् वन्म पाँच करिगरी
हन्वेत् ।

पञ्च, (क०) पञ्चानां । पञ्चान्+इत् । पञ्च । अत्रि-
पां । अत्रिपां ।

पञ्च, (क०) पञ्चानां । पञ्चान्+इत् । पञ्च । अत्रि-
पां । अत्रिपां ।

पञ्च, (क०) पञ्चानां । पञ्चान्+इत् । पञ्च । अत्रि-
पां । अत्रिपां ।

पञ्च, (क०) पञ्चानां । पञ्चान्+इत् । पञ्च । अत्रि-
पां । अत्रिपां ।

पञ्च, (क०) पञ्चानां । पञ्चान्+इत् । पञ्च । अत्रि-
पां । अत्रिपां ।

पटघर, (न०) पट्यते (आविश्यते) । पञ्च-
पट्य+घरत् । जीर्णवस्त्र । पुण्डा इना । प-
वेष्टिन इव चरति” चर+अभ् । “जो कान्धे में
बलताहै” चोर (पु०) ।

पटल, (न०) पट-वेष्टन+इत् । छपे । छपा-
नेमका रोग । और पटारी । हृदयिगेर । १०-
ग्रन्थ (पु०) ।

पटवासक, (पु०) पटान् वागवति (गुरोरेण
जो कापोंको गुणधीवाला कर्ता है । एत-
वगनवासक । केसरआदिका लून । यत्ना । पुण्य-
पट्य, (पु० न०) पट्येन इत्यन्ते इत् । “प-
घरत्” जहाती वा । हा-नाड । पट्येन तावत् क-
वा पट २ शब्दको छोड़ता है । इकाण्य । हो-

पटिमन्, (पु०) पट+इमन् । चतुरता । चतुरी-
की । सस्ती । व्यश्व ।

पटीर, (न०) पट्+इत् । वाजनी (उजली) ।
(सेन) । मेपं (बादन) । बंगार (बंग-
शरिर (रौर) । उदर (पेट) इति (वा-
चंनत ।

पटीयत्, (वि०) अत्रिपावेन पट्+इत् ।
करनेमें चतुरही चतुर हो ।

पटुजातीय, (वि०) पटुमकार+जतीयत् । पट-
अप्यहीतरइका ।

पटुमप, (वि०) प्रसन्नाः पटुः । प्रसन्नोन्मा ।
सावदश । चतुर चतुर ।

पटोल, (पु०) पट्+ओल् । इग मपयि इव
करिगिये (न०) ।

पट्, (न०) पट्+क । ट वा । मगर । मुन् । पु-
भुम्मा (पीठ) । राका आदिका देवराज (१३)
पटका । पटक (हाड) । राकाका (विद्वान्)
आकाका कता । वीरोव (रेशम) । वीरोव म-
(पु०) ।

पट्ट, (न०) पाट् अन्वेने । पट्टि-मैसुन ।
हृत् ।

पट्टकी, (धी०) पट्टे (मन्वेत्) (देव इत्यन्ते
धी) । पट्टक मन्म विद्वान्ता का
देव । पट्टकी । “पट्टमन्वेत्” मन्वेत्
पट्ट (म) न, (न०) पट्ट (म) विद्वान्ता का
मन्वेत् । जहा पट्टा मन्म मन्वेत् । मन्वेत्
पट्टा मन्म । पट्टा पु-
पट्ट, (वि०) पट्टे (मन्वेत्) मन्वेत् मन्वेत्
मन्वेत् । पट्टा मन्म । पट्टा पु-
मन्वेत् । पट्टा मन्म । पट्टा पु-

परिच्छद, (पु०) परि+च्छद्+घ हन्ः । उपकरण (सामान) (हाथी, घोडा, रथ, पैदल बगैरह) । कपडा गद्दना आदि । परिवार । " सेना परिच्छदनाम् " रघुः ।
 परिच्छेद, (पु०) परि+च्छिद्+घञ् । विशेषरूपने इयत्ताकरण । खासतौरपर हद्द बांधनी । प्रत्यके टहिरुवकी जगह (सर्ग-अध्याय आदि) । सीमा (हर) । विचार ।
 परिजन, (पु०) परिगतः जनः । चारोंओरके लोग । परिवार । प्रतिपालयजन (पालन करनेलायक जीव पुत्रादि) ।
 परिणत, (त्रि०) परि+नम्+क । गलम् । परिपक्व । पकाहुआ । वृद्धिगत (बडाहुआ) । दूसरी अवस्थाको पहुँचा । टेढे दाँत चलानेहारा हाथी ।
 परिणय, (पु०) परि+नी+अच् । विवाह । शादी ।
 परिणाम, (पु०) परि+नम्+घञ् । प्रकृतिका अन्त्यभावाव । विचार । समावकाश बदलना । बदलना । शेष । बाकी । नतीजा । अर्थालंकार ।
 परिणाह, (पु०) परि+नह्+घञ् । विस्तार । फैलाना ।
 परिणेतृ, (पु०) परि+नी+तृच् । विवाह करनेहारा । मतां । साविद ।
 परितप्त, (अव्य०) परि+तप्तिल् । सर्वतः । चारोंओरले ।
 परिताप, (पु०) परितप्यते (माकादौ घञ्) । तपना । दुःख । टण्णता (गरमी) । शोक (अफसोस) । भय (दर) । कम्प (कांपना) । एक प्रकारका नरक ।
 परिप्राण, (न०) परि+प्रे+स्त्युट् । रक्षण । बचाना । घु-राईमें अगेहुएको निवारण करना (हटाना) ।
 परिदान, (न०) परिवर्तेन दानम् । दा+स्त्युट् । गिनिमय । द्रव्यान्तरप्रदणेन द्रव्यान्तरदानं । बदलना । एक चीज डेकर दूसरी देना ।
 परिदेचन, (न०) परि+दिब+स्त्युट् । अतुशोचना । बार ३ सोचना । मिलाप (रोना) । क्रियेगवे कामको सोचना कि " अनुचित किया है " ।
 परिधान, (न०) परि धीयते । पहिरना । परि+ध+कर्मिन् स्तुट् । परिहितवस्त्र । पहिराहुआ कपडा ।
 परिधि, (पु०) परि+धा+क् । चन्द्रमा और सूर्यके पास भेष (बादल) आदिके निकट होनेसे उदास-हुआ बेटन (घेर) के लक्षमें मण्डल । सूर्यकी समा । चन्द्रकी समा । परिवेष । गोल । दायाल । गूल-रके घुसी राखा । चारोंओर और पास ।
 परिधिस्य, (त्रि०) परिधो विवृति । स्था+क । घेरेमें रहना । परिवारक । चाकर । लडाईमें रफीको बचानेकेलिये चारोंओर टहरीहुई सेना ।
 परिनिष्ठा, (त्रि०) परि+नि+स्था+अह् । पूर्णजन । पूर्ण समस्त । पूरा परिचय । पूरी समाप्ति (खातिमा) ।
 टीका (हर) ।

परिनिष्ठित, (त्रि०) परि+नि+स्था+क । पूर्णनै।ईत नियम पूरा जानाहुआ ।
 परिपक्व, (त्रि०) परि+पक्व+क+घञ् । पूरा पकाहुआ ।
 परिपन, (न०) परिपन्वने (अत्यधिकने) बने । घञ् । मूलघन । मूरी ।
 परिपन्थक, (पु०) परिपन्थयति (दोषकृतं च्छेत्, प्लुच् वा कञ् पन्थादेशः) । पन्थानं वर्धित्वा च्छेत् जो दोषको प्रकट कर्ता है वा जो नन्हे त्रि-जाना है । शत्रु (दुश्मन) ।
 परिपन्थिन्, (पु०) परि+पन्थि+अनि । शत्रु (दुश्मन) ।
 परिपाक, (पु०) परि+पक्व+घञ् । नैतुय (बर्णन) । उत्तमपाक । अच्छी तरहसे पकना ।
 परिपाटि-टी, (स्त्री०) परि+पट्+इन् । बहुवचन । मिला । कायदह । रीति ।
 परिप्लव, (न०) परि+प्लव+अच् । बबल । भीवर । कायम न हो ।
 परिवर्द्ध, (पु०) परि+वर्द्ध+घञ् । राजके दोन पै घोडा, रथ आदि सामान । हस्तधारपादि परिच्छद ।
 परिम(भा)त्र, परि+भू+अच्+घञ् वा । अनार । स्कार । हिकारण । बेइमती ।
 परिमाण, (न०) परि+माप्+स्त्युट् । निन्दते हुन नवाडी बातचीन । और नियम (कायदह) ।
 परिमाणा, (स्त्री०) परि+माप्+अ । इतिनचं । न वती नाम । अवयवायंअ अनारदरकर सुदरना विशेष नाम ।
 परिमूल, (त्रि०) परि+मूल+क । निरच्छेद । बरत बेइबत कियाहुआ । हिकारत कियागया ।
 परिमण्डल, (त्रि०) परितो मण्डलं । चारोंओर ले वर्तुलाकार । गोल शकल ।
 परिमल, (पु०) परि+मल+अच् । केवर चंदर का मलना । मलनेसे निकटो सुगन्धि ।
 परिमाण, (न०) परिमीयते अनेन । परि+मा+अच् । किये परिमाण किया जाय । माप । बतावती । प्रमाण । समता । परिघर ।
 परिमित, (त्रि०) परि+मा+क । इतपरिच्छेद । इत गया । युक्त । मुनालिब । ठीक मात्र । बर्णन ।
 परिमितकथ, परिमिता कथा वयम् । बोरा बोलीक ।
 परिमिताभरण, (त्रि०) परिमितानि आभरणानि कथं कथं । जोहोते भूषण (जेवर) पहिर हुमा ।
 परिमितायुस्, (त्रि०) परिमितं आयुः यत् । इत आयु (उमर) बाटा ।
 परिमिताहार-भोजन, (त्रि०) परिमितः धार भोजन ।
 बोध खानेवाला । अल्पभोजन ।

देमेव, (वि०) परि+भा+पठ् । आनेत्यथ । पो-
हाग । परिच्छत्र.

रि(री)ग्म, (पु०) परि+रु+पम्+मुष् वा सीपं ।
आधिक्य । छात्रीये छत्रात् । बगलमिगी.

रियज्जन, (न०) परि+ज्ज+ये अगुमिः अनेन । वृश्+
मिष्+अनुद् । मारण । मारणा । वृश्+भावे ह्युद् । एग ।
छंजना । वेना.

रि(री)जर्न, (पु०) परि+वृ+भावे यम वा सीपं ।
विनिमय । बदली । आधारे यम । गुणके अन्त्यत्र गमय ।
अध्यायधारि । “ वर्तते अन्व ” । वृष्यराज (वृष्य-
शोका राजा) । “ भावे ह्युद् ” परिवर्त्तं.

रिपट्, (पु०) परि+वट्+अप् । गात्र वायुभोगेने एट्.

रि(री)गद, (पु०) परि+वट्+अप् वा सीपं । अय-
कार । निग्दा । बलेट् । बदनामी । गात्री.

रियादिनी, (स्त्री०) परिणे बदनि (गच्छादरे इव व-
दति) । ओ गात्र आशरीरी गाई कोलनी है । वट्+निमि ।
गात्र तारीशानी बीन । निग्दा करनेवाणी स्त्री.

रि(री)वप, (न०) वट्+विष्+अपम । गुण्डन (गुंरना) ।
ह्युद् । परिचापन.

रियापित, (त्रि०) परि+वप्+विष्+अप । गुण्डन ।
गुण्डाद्रुभा.

रि(री)जट, (पु०) परिशिवने आगी । अनेन वा ।
परि+वपम् वा सीपं । परिजम । टुडुव आदि । तार-
बन्दी निआन.

रि(री)जट, (पु०) परि+वट्+अप् वा सीपं । जमो
वपुण । पानीका प्रपट् । आशोभोरे पानीके उतारनेये । मम.

रिविष, (वि०) परिशिवने आगी । वर्द्धिणि का । छोटे
भट्टके विकारमय म विकटा द्रुभा बडा भाई । वैली
बदिन (स्त्री०) । अगुत्रविकारभावे अट्टव रेता उट्टे.

रिविषि, (पु०) परि शिवने आगी । परि+विट्+वर्द्धि
मिष् । बडे भाईके म विकटरेव विकटमका छोटा
भाई । आदेहृए छोटे भाईका बडा भाई (म विर-
ट्द्रुभा) .

रिवृट्, (त्रि०) परि+वृ+अप । अद्विप । प्रभु । कागिड ।
(लगी) .

रिविह्व, (न०) परि+वृ+दिन । अद्विपकर्म वेदवप् ।
(विवट् लभो व) । बडे भाईके बडे देहरेव लोके
विह्व होयक.

रिविहा, (पु०) परि+विट्+अप+भावे यम् । वेदव ।
वेत । बटव आदिरे दृग्गे उच्यते द्रुभ बटव आदि
दृग्गे बटवका वेत । दृग्गा । वरिहि

रिविह्व, (न०) परि+विट्+अप+अनुद् । अनेके सिदे
अप अद्विप । अनेकेव । अनेकेव वदेवक । वेत ।
वेत । वेत .

परिवेष्टु, (पु०) परि+विष्+वृत् । अनेके सिदे अनेके
परिमात्र, (पु०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को

छेदकर (बडेके वट्टा परिमाण वा) विर कण्ठके
जानेहाग । सिदे आधमवना । वरि । वीर्यनी.

परिमाज्-व (पु०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यनी.

परिमाज्, (न०) परि+विष्+अप । “ बडे बडे वट्टे ” ।
अवशिष्टावशिष्टावट्ट वट्ट । वट्टि हो लुकेनेवाणी
बडी मगको बट्टेहाग वट्ट । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्जन, (न०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यनी.

परिमाज्जि (स्त्री०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिमाज्ज, (त्रि०) परि+वृ+अपि+अपि० । मम बडे को छेदकर
जानेहाग । सिदे आधमवना वरि । वीर्यन । वट्टा-
आ = बडी

परिसर्ग, (पु०) परितः गृह्यते । घृत्+घम् । चारों ओर
रहे लपेटना (परितो वेष्टन) । चारों ओर जाना (स-
मन्तात् गमन) ।

परिसर्वा, (त्रि०) परि+सृ+ञ् । सर्वतो गमन ।
चारों ओर जाना । सेवा ।

परिसंख्या, (स्त्री०) परि+सम्+ख्या+श्च् । गिनती ।
राशि । जमा । नम्बर ।

परिसंख्यात, (त्रि०) परि+सम्+ख्या+क्त । गिना गया । सम-
झा गया ।

परिस्यन्द, (पु०) परि+स्यन्द+घम् । चारों ओर चल-
ना । कपना फूल और पत्तों आदि की रचना । सफाई ।
चाकर । नौकर । परिवार ।

परि(री)हार, (पु०) परि+हृ+घम् वा दीर्घः । त्याग
देना । दोषापाकरण । दोष दूर करना । धनादर (वेद-
जती) । छोटना । तोटना ।

परि(री)हाम, (पु०) परि+हृस्+घम् वा दीर्घः । कटि ।
झोंग । मरौल । टहरा ।

परीक्षक, (त्रि०) प्रमाणेन परीक्षते । परि+ईक्ष+ण्युल् ।
प्रमाण (सपूती) की रचनासे विषयको जाचनेहार ।
परीक्षा करनेहार । इन्तिहान करनेहार । मुन्तहिन ।

परीक्षण, (न०) परि+ईक्ष+ण्युल् । प्रमाणसे वस्तुका
निरूपण करना । परखना ।

परीक्षा, (स्त्री०) परि+ईक्ष+ञ् । दुष्टादुष्टभावलोचन ।
दुष्टदे भयाई देखना । प्रमाणसे वस्तुको पहिचानना ।
"स्त्रुतिमं" बुरे भलेको दिखलानेहार तुला (तकरी)
आदिका प्रमाण (माप) ।

परीक्षित, (पु०) परि+ईक्ष+क्तिप् । परीक्षा करनेवाला ।
अभिमन्युका पुत्र और अजुंतका पाँत्र (पोता) एक
राजा ।

परीक्षित, (त्रि०) परि+ईक्ष+क्त । परीक्षा किया गया ।
इन्तिहान किया गया ।

पदत्, (अश्व०) पूर्वभिन् वयें+उत् परधान्तादेना । गत-
बन्धर । पिछला बरिन । पिछला साल ।

पदल, (त्रि०) पदङ्कवः+ञ् । गतवर्षभय पदार्थ । पिछले
गालका । पिछले बरिसका ।

पदय, (न०) पू+उत् । निरुत्खन । सेहतका अर्थ । गुण
कोटना । गरी । विप्रवणे (रंगबरेगी) । और कठोर
(सख्त) (त्रि०) ।

पदय, (न०) पू+उत् । मन्थि (गीठ) और पद (गिरह) ।

पदय, (त्रि०) पद+इत्+क्त । गत । भाग गया । दूर-
बढ गया ।

परेतगात्र-न्, (पु०) त० । तृत् स्त्री ।
रात्रने । रात्र+अच्+क्तिप् वा । मरेदुओंष (मरे-
दुओंषिं प्रकानना हे । यमरात्र । यमः ।
परेद्युम्, (अश्व०) परमिद्युमिति । पर+द्युम् ।
द्वय दिन ।

परोक्ष, (अश्व०) अश्वः पम् । (अश्व०) इ-
धर्मिणे परे । अप्रत्यक्ष । छिप हुआ । जो हमारे
" परोक्षे तिद् " सि० कां० ।

परोक्षवृत्ति, (त्रि०) परोक्षा वृत्तिः क्वा ।
रहनेवाला ।

पर्यन्त, (पु०) पृथु सेवने-मौचन+अन्+उत्
इत् । मेघ । बादल । "यज्ञाद्भवति पर्यन्तः" इति
बादलका अर्थ ।

पर्ण, इतिमात्र । हट होना । पु० उ० इ०
पर्णवृत्ति-वे ।

पर्ण, (न०) पू+न । पुनः+अच् वा । पर (इत्)
(पर) । पलायका वृत्त (पु०) तन्मूढ (इत्)
पत्तवाला (त्रि०) ।

पर्णनर, (पु०) पर्णनिर्मितः नगकारः क्वा । पर्य-
हृत्वा मनुष्यके स्वरूपका मुद्रा । पञ्चके पर्य-
जिते हिन्दुलोग पलायका पता न मिलनेपर अनेक
जोड़ी पीठी मल शवका प्रतिनिधि समझकर रात
पर्णलता, (स्त्री०) पर्णानां लता । नगवृत्त ।
पानकी वेद ।

पर्णदाय्या, (स्त्री०) पर्णानां शय्या । पर्य-
विछाना (छेज) ।

पर्णदाय्या, (स्त्री०) पर्णनिर्मिता शय्या । पर्य-
निर्मित कुटीर । पत्तोंकी बनी हुई उटिया ।

पर्णास-क्ति, (पु०) पर्णानि अस्मति । अम्+अच्+क्तिप्
पत्तोंके कटी है । गुलकी ।

पर्ण, अपानवायुक्रिया । नीचेसे हवा छोटना । पर्य-
ध्या० आत्म० अह०+सेद् । परदे । अर्धदि ।

पर्यणी, (स्त्री०) पर्य+करणे लुट् शिवां ङीर् । पूर्व-
दिन । नये चंद्रमाका दिन । उल्लवदिन । सोमदिन
(बीमारी) मरना ।

पर्यट, (पु०) पर्य+अट् । पाप नामसे अर्धदि
पतला बटकेनेद ।

पर्यट, (पु०) परिगतः अट् । प्रा० । लट् । इ-
मजा । पलंग । एक प्रकारका अंगन जो पलंग
अन्वाय करते हैं । योगपट । बीरसन । सोम
पीठ जानु और सानोंको बाँधना वा कच्चा बान ।

पर्यटन, (न०) परितः अटनं । चारोंओर घूमना ।
घूमना घेर करना । गुन पुत्रभ्रमण ।

परिसर्ग, (पु०) परितः सञ्चरते । सञ्चरन् । चारों ओर से घेरेटना (परितो घेटना) । चारों ओर जाना (समन्तात् गमन) ।

परिसर्गा, (स्त्रि०) परितःसञ्चरन् । चारों ओर जाना । घेरा ।

परिसंख्या, (स्त्री०) परितःसञ्चरन् । गिनती । गणना । जमा । नम्बर ।

परिसंख्यात, (त्रि०) परितःसञ्चरन् । गिनाया । समझाया ।

परिम्यन्द, (पु०) परितःसञ्चरन् । चारों ओर चलना । कपना फूल और पत्तेशादि की रचना । सफाई । चाकर । नौकर । परिवार ।

परि(री)हार, (पु०) परितःसञ्चरन् वा वीथिः । लगाना । दोषासफाई । दोष दूर करना । खनादर (वेद-व्यती) । छोटना । तोटना ।

परि(री)हार, (पु०) परितःसञ्चरन् वा वीथिः । क्लेश । मरौल । टारा ।

परीक्षक, (त्रि०) प्रमाणे परीक्षते । परितःसञ्चरन् । प्रमाण (स्यूती) की रचनासे निषेधको जाचनेहाय । परीक्षा करनेहाय । इम्तिहान करनेहाय । मुन्वहिन ।

परीक्षण, (न०) परितःसञ्चरन् । प्रमाणसे बन्नुका निरूपण करना । परखना ।

परीक्षा, (स्त्री०) परितःसञ्चरन् । दुष्टादुष्टतावरोधन । सुखई भलाई देखना । प्रमाणसे बन्नुको पहिचानना । "स्यूतिमें" सुखे भलेको दिखानेहाय तुला (तकरा) धारिक प्रमाण (माप) ।

परीक्षित्, (पु०) परितःसञ्चरन् । परीक्षा करनेवाला । अनिमन्नुका पुत्र और अनुक का पाप (पाता) एक राखा ।

परीक्षित, (त्रि०) परितःसञ्चरन् । परीक्षा किया गया । इम्तिहान किया गया ।

परदन्, (अव्य०) परितःसञ्चरन् परधन्नादेशः । गत-बन्तर । निष्ठता बरिस । निष्ठता सत्त ।

परदन्, (त्रि०) परदन्+तन् । गतवर्तन परदर्थ । निष्ठते सत्त । निष्ठते बरिसका ।

परदन्, (न०) परितःसञ्चरन् । निरूपण । मेरतकडम । पुण केटना । सती । विरवनी (रोगवर्ती) । और कठोर (सखत) (त्रि०) ।

परदन्, (न०) परितःसञ्चरन् । प्रत्ये (सत्त) और परे (विरद) ।

परदन्, (त्रि०) परितःसञ्चरन् । गत । मरगता । दूर-कटकर ।

परैतराज-न्, (पु०) स० । टन् । स० । राजते । राज+अन्+क्तिप् वा । मरेदुजेद ... मरेदुजेमिं प्रकामना है । यमराज । दम । परेसुम्, (अव्य०) परितःसञ्चरन् । दमय दिन ।

परैत, (अव्य०) अक्षयः परम् । (अव्य०) परे धारणसे परे । अक्षयस्य । छिनहुआ । जो " परैत छिट् " सि० कौ० ।

परैतवृत्ति, (त्रि०) परैतः इति । रत्न । रहनेवाला ।

परैतन्, (पु०) श्रु मेचने-मीचन+अक्षय-रत्न इत् । मेर । बादल । " यथाद्वयति परैतन् " इति बादलका शब्द ।

परैत, इतिभाव । हय होना । पु० स० । परैत-परैत-वृत्ति-ने ।

परैत, (न०) परितः । परितःसञ्चरन् वा । पर (पर) (पर) । परितःसञ्चरन् इत् (पु०) स० । परितःसञ्चरन् (त्रि०) ।

परैतन्, (पु०) परैतनिमित्तः नयकारः इत् । परैत-हुआ मनुष्यके सहकार मुदा । परैतके लोके जिसे हिन्दुलोग परैतका वता न निष्ठनेर जे जेकी पीरी मल सवका प्रतिनीति समझत तरे परैतता, (स्त्री०) परैताना । नगरी । पानकी बेल ।

परैतव्या, (स्त्री०) परैताना । परैत-विद्यता (छेज) ।

परैतशाला, (स्त्री०) परैतनिमित्त काय । परैत-निमित्त कुटीर । परैतकी बनीहुने कुटीर ।

परैतस-रि, (पु०) परैतानि अव्यति । अव्य-परैत-परैत केरनी है । नुठकी ।

परैत, अपानवायुक्रिया । नीचेमे हवा छोटना । स० । अव्य० । अव्य० । स० । परैत । अव्यति ।

परैती, (स्त्री०) परैतकरने लुट् । परैती । परैत-दिन । नये बरमाका दिन । उन्वदिन । परैती (बीमारी) मरना ।

परैत, (पु०) परैत+अटन् । परैत नयने परैत-परैत-वृत्ति-ने ।

परैत, (पु०) परैतः अक्षयः । स० । स० । परैत-मना । परैत । एक प्रकारका अव्यय जो परैत-अव्यय करते हैं । योग्यता । बीरपुत्र । परैत-पीठ जन्तु और लोकोको बांधना वा कन्व ।

परैत, (न०) परितः अक्षयः । चारोंओर परैत-परैत-वृत्ति-ने । पुत्र पुत्रमेव ।

ग, (पु०) परितः अनुयोगः (प्रभ.) । अच्छी-
हटना । सवाल ।
(पु०) परिगतः अन्तं (सीमा) । दरतक पहुंच-
आ । गोब बा वनआदिकी दोष सीमा ।
, (स्त्री०) पर्वन्तस्य भूः । भ्रान आदिकी दोष
। स्थान । परितर । हड़की जगह ।
(पु०) परित्यज्य शास्त्रलौकिकमयोर्दो अयः ।
। एगा आचार (चालचलन) कि जो शास्त्र
शेखर्यवहारसे बाहिर है । समबस खोना । बर्त-
भूलना ।
, (स्त्री०) परि+अव+स्था+अर् । विरोध ।
। बलिबाक टहरना । (गिच्) हएक ज-
होना । सापित करना ।
(त्रि०) परि+अर्+केंचना+क । विहित (फेवा
। पनित । गिराहुआ । हत (मारहुआ) ।
(न०) परि+या+स्तुद् । पृ० । अभसवा (पो-
काठी) । पलवयन (जीर्) । “ इण्+स्तुद् ” ।
एणम्” यही अर्थ ।
(न०) परि+आर्+भावे क् । यथेष्ट (इच्छा-
। पूरा २ । सुति (रजना) । सामर्थ्य (ताकत) ।
। और योग्यता (लायकपन) ।
(पु०) परि+इण् पम् । अनुक्रम (गिलगिला) ।
(तरीका) । निर्माण (रचना) । सम अर्थकी
करनेहारा शब्द । एक जेठे अर्थबाला लफज (शब्द) ।
न, (न०) पर्युद्व्यते (उद्भिद्यते) कर्मणि ल्युट् ।
। टाया (चुकाया वा उतारा) जाय । क्रम । क्रम ।
, (त्रि०) परि+उद्+अगु+क । निवारित । हटाया
, (पु०) परि+उद्+अगु+पम् । निवारण । एक
। हटाना ।
, (त्रि०) परिक्रम्य (स्वकालं शतिक्रम्य) क-
। वगु+क । अपने समबको विलाकर रदा । बारी ।
। बह पदार्थ कि जिसे बने एक पहिरये ऊपर
।
, (स्त्री०) परितः (तर्कादिना एषणा (परीक्षा) ।
द्वारा पदार्थकी परीक्षा । दलील बंगरहसे दिखी
की पहिचानना । अन्येषणा (तालाश) ।
गति जाना) भ्या० पर० एक० सेट् । पर्वति ।
।
। भ्या० पर० एक० सेट् । पर्वति ।
।
, (पु०) पर्वणि गच्छति+गम्+णिनि । शमाबा-
। शास्त्रनिषिद्ध रितीमें स्त्रीसंग करनेवाला ।

पर्वत, (पु०) पर्व+अतच् । पर्वति (भागः) सन्ति
अस्य त वा । जितके हिस्से हो । गिरि । भूपर । पहाड़ ।
एक मुनि । एक मच्छी । वृक्ष । एकप्रसरका साग ।
पर्वतीय (पु०) पर्वते भवः (छ) । एक प्रसारकी जाति ।
पहाड़िया ।
पर्वेन्, (न०) पृ+वनिच् । उदाय । ग्रन्थि (गाँठ) । पु-
। राकमें विधामका स्थान । पौष (चतुर्वेदी, अष्टमी,
शमावास्ता, पूर्णिमा और सूर्यका संक्रमण) बाल (ध-
मैसाधमें) ।
पर्वभाग, (पु०) पर्वणः भागः मणिवंधः । आंकड़ी ।
पर्वसन्धि, (पु०) पर्वणः सन्धिः । पर्वका मेल । पूर्णि-
मा और शमावास्ताका मेल । पंद्र और सूर्यग्रहणका बाल ।
पर्वुका, (स्त्री०) पर्वुः इव पर्वणि (प्रकाशते) क्+क ।
। जो पुल्हासीकी नाई प्रकाशती है । पार्थस्यअस्थि ।
पयलीसी हड्डी ।
पर्वु, सेह । पियार करना । भ्या० आत्म० एक० सेट् ।
पर्वते । अपर्वित् ।
पर्वद्, (स्त्री०) पृप्+अदि । सभा । धर्मको उरदेख
करनेहारा पण्डितका समाज । “ उस्ते अस्थि अर्थमें
बलच् ” । समावाद (त्रि०) ।
पर्व, गति जाना । भ्या० पर० एक० सेट् । पठति ।
अपठित् ।
पर्व, रक्षण (बचाना) । पु० उभ० एक० सेट् । पाल-
यति-ये ।
पर्व, (न०) पर्व+अप् । गाँठ । एक प्रकारके समदका
पाप । चार कर्भर बजन । धमीका साठवाँ हिस्सा ।
पर्वगण्ड, (पु०) पर्वं (मांसं) गण्डति (गण्डमित्र)
। करोति । जो मांसको गालकी नाई कर्ता है । टेप करने-
हारा । राजा । बारीगर ।
पर्वल, (न०) पर्व+कलच् । गाँठ । पड़ (कीचड़) ।
। गिलोका चूर । “ जो मांसको मर्दन कर्ता है ” ल+
क । रासय (पु०) ।
पर्वलण्डु, (पु०) पर्वं (मांसं) अण्डति । अण्ड-उ ।
। पियार । मूजसेद । एक प्रकारकी जड़ ।
पर्वलयन, (न०) पर्व+अर्+स्तुद् (रणे छ होता है) ।
। हर आदिसे एक जगह छोडकर दूसरी जगह जाना ।
भागना ।
पर्वलाल, (पु० न०) पर्व+कालच् । शस्त्र । पन्थ । धन्य-
। सोना । नाश । पोभाक ।
पर्वलार, (न०) पर्व गति (जाना)+क । पर्वं (बलनं)
। अर्धते । अपने नामका बस । “ नवपलकपलकपलनम् ”
। इति भाषः । हए रंग (पु०) ।

पथं, (पु०) अवर अर्थ (पथका आदेश) । रोपाथं ।
सरीका आथा । अवर भाग । दूसरा (सिधला) दिग्गह ।
“पथार्थेन प्रविष्ट ” शाकुन्तल.

राग. (त्रि०) पथान् भव । दिग्गह । रोपभव ।
रिचो । प्रतीति । अस्ताचलके पासकी रिता (मगरव)
शी०)

प्रमायस्था, (स्त्री०) पथिना अवस्था । पिठनी
व्यवस्था (हालन) । स्युक्तः समय । पथिम रितावाली.

रतोदर, (पु०) पररतं अनाहल हरति । ह्+अच् ।
अट् ६ त० । जो देरत २ सेजाना है (सुराता है) ।
एक प्रकारका घोर । गाँठ काटनेहारा । मुनार.

रन्ती, (स्त्री०) ह्+रावृ+दीप् । “ परा ” आदि
कर प्रक्षरके शब्दोंमें एक प्रकारकी (बानी) .

, बाध । रोहना और प्रत्य गाँठना । भ्वा० उभ० राट्०
सेट् । परति-वे । अपठीत्-अपठीत् । अपठिष्ट.

रम् (न०) पर+रम् पर । निवासस्थान-रत्ना
(स्त्री०) परके कामकाजकी देवता.

र, (पु०) रम्भुभारि म्बेच्छ जानिनेद् । दाहकी रस-
नेहारी म्बेच्छकी जानि.

रान । पीना । भ्वा० पर० राट्० अविट् । पिबति ।
अपाट् । निच् । पावयति.

रक्षण । बचाना । अदा० पर० राट्० सेट् । पारि ।
अपासीत् । (निच्) पावयति

रु-रु, (पु०) पश् पश् वा कु० घृ० । घृष्टि । घेरीके
रिचे देरने दहा कियाहुआ सूर्या गोमय (गोभ्र) ।
एक प्रकारका कपूर.

मुल, (पु०) पांशु (पाशुन्वं पापं) अस्य अस्ति ।
सहीके समान पापबाल । पानी । बुलटा (बदमाश
ओरत) (स्त्री०) । विभूतिवाला । महादेव (पु०) । भू-
बाला (त्रि०)

क, (पु०) पच्+भावे घञ् । पचन । पकाना । परिणाम
(मलीजह) । एक दैत्य । “ आपारे घञ् ” स्थानी
(बानी) आदि “ पिबति स्तनम् ” पाक बधा (त्रि०) .

कज, (न०) पाकाजायते । जन+ट् । जो पकानेसे उप-
जता है । बाचलवण.

कल, (न०) पाकं लाति । ला+क । कुटीवधि । आग
ओर हवा । बुड.

कदाला, (स्त्री०) ६ त० । पाकस्थान । पकानेकी ज-
गह । रणोईखाना “ पाकगृह ” । “ पाकस्थान ” बही अर्थ.

कदालान, (पु०) पाकं (लफामापुरं) लाति । ला+च्
ल्यु । जो पाकजामी दैत्यके ऊपर हुबन बलाताहै । इन्द्र ।
देवताओका राजा.

पाकाभिमुग, (त्रि०) पाकस्य अभिमुगः । पकनेके
रामने हुआ । पाकगया.

पाकिन, (त्रि०) पाकेन निर्दूतं+इमन् । पाकनिष्पन्न । पककर
तयार हुआ.

पाह, (त्रि०) -पाही- (शी०) पशो भवः+अच् । शूद्रपश-
बाला । पतनादेवाला । पाटीको बतानेवाला.

पाहापातिक, (त्रि०) -शी (शी०) पहापातं करोति+ट्
+इक । पहापात (लिहाज) करनेवाला.

पासिक, (त्रि०) पशतः प्राप्तः+ट् । पशते प्राप्तहुआ ।
एकतरफने आया प्राप्ति और अप्राप्ति सम्भावनाका
विषय । दोनोमेंसे एक पश । हाथ देनेहारा । नियम ।
पशका । पशवाडेका.

पापण्ड, (पु०) पापि इति पाः=वेदादिशास्त्रं-तत् सण्ड-
यति । वेदकी आशाको तोडनेवाला पापगमी । मकर करने-
वाला.

पापेय, (त्रि०) पशो भवः वा पशो योजयः । योजय
एक पंक्ति (कतार) में बैठनेलाजक संबंध करनेयोग्य ।
मिलानके लायक.

पायक, (पु०) पचति । पच्+प्युल् । वहि । आग-
पकानेहारा सूद आदि । रावेगये अमबो पचानेहारी
औपधि (त्रि०) । पितपातु (न०) .

पाचन, (न०) पच्+भिच्+ल्युट् । पित आदि रोपको
नाश करनेहारा बैरकमें कहाहुआ एक प्रकारका बाप
(काटा) । और प्रायधित (पछशाका) । “ पच्+भिच्
कनैरि ल्यु ” । वहि (आग) । अम्ब (यशरस) ।
ओर हाल एण्ड.

पाञ्चजन्य, (पु०) पञ्चजने (दैत्यनेदे) भवः+यञ् ।
पञ्चजन नामी दैत्यमें हुआ । विष्णुका शंख । “ पाच-
जन्वं हृषीकेशः ” गीता.

पाञ्चनद्, (त्रि०) पचनदीभिः निर्दूतः । पांचनदिभोंसे
बना (प्रविष्टहुआ) । पंजाबादः (पु०) पंजाबका राजा ।
(बहुवचन) पंजाबके बासी (लोग) .

पाञ्चभौतिक, (त्रि०) पचमिः भूतैः निर्दूतः+ट्+इक ।
पृथिव्यादि पांच भूतोंसे निर्दूतहुआ.

पाञ्चाल, (त्रि०) पञ्चालदेशे सक्तः+अच् । पञ्चाल देशमें
हुआ । त्रिषां शीप् । पायाली.

पाटघर, (पु०) पटघर एव+स्तार्थे अण् । चोर । घोर.

पाटल, (पु०) पाटपति । पट्+भिच्+कल् । घेनरक-
बर्ष । सिद्ध और लाल रंग । गुलाबी । उषवाला (त्रि०) ।
पाटलीपुत्र । गुलाबका फूल.

पाटलिपुत्र, (न०) पटना नामसे प्रविष्ट एक नगर.
पाटव, (न०) पशोभांवा+अच् । पशुगा । क्रियायोग्यता ।
होसियायी । आरोग्य । तन्पुरली.

पाठ, (५०) पठ+धन् । अक्षरोंका उच्चारण करना । और
 शुरूके मुखसे मुन कर बोलना । पठना । सबका पठा पढ़-
 पाठक, (५०) पठति-पाठयति वा+णुल् । पठनेहारा ।
 पठानेहारा ।
 पाठशाला, (स्त्री०) ङ त० । पठने पठानेका स्थान ।
 पाठमन्दिर । स्कूल ।
 पाठिन, (५०) पठ+इति । चित्ररत्न । पाठक (पठानेहारा)
 (त्रि०) ।
 पाठीन, (५०) पाठिं (पृष्ठं) नमयति । नम्+उ दीर्घः ।
 जो पीठको झुका दे । गुग्गुलुका वृत्त । मत्स्यमेद । एक
 मठकी । "पठ+इन्ण्" पाठक (पठानेहारा) (त्रि०) ।
 पाणि, (५०) पण्+इण् -आमाभावः । कर (हाथ)
 इलिक वृत्त ।
 पाणिगृहीती, (स्त्री०) पाणिः गृहीतो यस्माः+धीप् । हाथ
 पकडा है जिसका । भार्या । औरत । स्त्री ।
 पाणिग्रहण, (न०) पाणिः गृह्यते अत्र । ग्रह्+आधारे
 लुट् । हाथ पकडा जाता है जिसमें । निवाह । शादी ।
 पाणिघ, (५०) पाणिं हन्ति । पाणिना वा हन्ति (वाद्-
 यति) हन्+टक् इत्त्वम् । हाथ वजानेहारा । और
 हाथसे मूदना धारि यात्रा वजानेहारा । पाणिताडक ।
 और मूदनादिवादक ।
 पाणिलम्, (न०) पाणेः तलम् । हाथकी तली ।
 पाणिधर्म, (५०) पाणेः=पाणिग्रहणस्य धर्मः । विवा-
 हस्य दधार्पणस्य ।
 पाणिनि, (५०) पणनं (पणः) ततः अस्त्यर्थे इति ।
 हणन्यं+अन् तस्य ह्यस्त+इन् । अष्टाध्यायीरूप व्याकरणके
 बननेहारा काशीका पुत्र । शालाबुकीय नामी गाँवमें
 उत्पन्न हुआ एक मुनि ।
 पाणिनीय, (त्रि०) पाणिनिना श्रेष्ठं, तस्यैर्दं वा+उ ।
 पाणिनि मुनिके बनायागया अष्टाध्यायीरूप व्याकरण ।
 पाणिपहण्य, (५०) पाणिः पकव इव+उय स० । पतेके
 हणन (जाम) हथ डंगलिये ।
 पाणिपात्र, (त्रि०) पाणिः एव पात्रम् । हाथकी पात्र है ।
 हाथसे कीयेकल ।
 पाणितार्या, (स्त्री०) पाणिना यावत्ते अर्णा मृत्+अन् ।
 जो हाथसे बनने वाली है । रसु । कमी ।
 पाण्डुर, (५०) पण्+धृ ट् दीर्घः । सरस वृत्त । श्वेत
 बर्ण (विश्व रथ) । कृष्णता (त्रि०) । कृष्णता वृत्त
 ईन् ङीक (नेत्र) (न०) ।
 पाण्डुर, (५०) पण्डोः कल्प्यं+अण् । पण्डु ही कल्पना ।
 कल्पनाके एक कल्पके प्रियने टाका कुण्डिका अर्थात् ।
 पाण्डुरत्वम् (न०) पण्डोः कल्प्यं+अण् । पण्डुरता ।
 कल्पनाके । कल्पितम् ।

पाण्डु, (५०) पण्डि+ङु-नि० दीर्घः । पण्ड-
 राना । विश्वरथ । श्वेतवर्णकाला एक कल्प ।
 एक रोग । और पटोलका वृत्त (५०) ।
 पाण्डुपुत्र, (५०) पाण्डोः पुत्रः । पण्डो
 एक ।
 पाण्डुर, (५०) पाण्डुः वर्णः कल्प्यं+अण्-
 धित वर्णं । विश्व पीत्य मिलदुका तं
 (त्रि०) कामलेका रोग (न०) ।
 पाण्ड्या, (५०) बहुवचन एक नगरका नाम
 निवासी ।-अः (५०) उसी देशका एक-
 पात, (५०) पन्+धन् । पतन । शिब ।
 रक्षित । बचावा हुआ । (त्रि०) पत-
 (ज्योतिषमें) ।
 पातक, (न०) पातयति (अपयोगवति) प-
 णुल् । नीचे ले जाता है । नीचे गिरने
 पातनक । प्राणियोंका बध करना ।
 पातशय, (न०) पतञ्जलिना प्रोक्तम्+अन् ।
 रचेहुए सूत्रोंपर व्याख्यान । "अथ पत-
 श्यादि महाभाष्यम् । "अथ पत-
 श्यादि योगशास्त्रम् ।
 पातन, (त्रि०) पन्+मिच्+लुट्+लुट् कति
 काटनेवाला ।-नं (न०) गिराना । घेरना ।
 पाताल, (न०) पन्+आलन् । पृथिवीके नीचे
 लमके ४ बी राती ।
 पातालगङ्गा, (स्त्री०) पातालस्य गङ्गा । पत-
 पातालनिलयः, निवास-वाग्निम् (५०) प-
 लयः=निवासस्थानं यस्य । पातालके राक्षसका
 पातित, (त्रि०) पन्+मिच्+अण् । गिरना वत्
 (ऊपरसे) ।
 पातुक, (त्रि०) पन्+उठक् । पतनकीज । गिने
 पात्र, (न०-स्त्री०) पात्रि (रक्षति अर्थे) ।
 (बीचमें आरहेहुए बीज) को बधना है ।
 अनेक वा पा+पून् प्रिबी दीर्घः । जो जनेके
 भोजनके योग्य बनने । जिसे अतिरथ का
 भाष्यम् । यदस्य धृमा आदि । दीनों गिरनेके
 बीचमें जो टिकनेका स्थान । नष्टकी वत्
 (न०) ।
 पात्रीय, (त्रि०) पात्रि (यदुपाये) बीज (बी-
 ज्य) । "अथै च" योग्य (ऊपरके) ।-
 प्रियन्" इति शास्त्रिः ।
 पात्रिगणित, (त्रि०) पात्रे (भोजनके
 एक) गणितः (गणना) । भोजनका वत्
 ही पदुवः । भोजनके विना न चहुँबोला
 बन्दु बन्धु ।

(न०) पीयूषे अदः (य) । त्रिणे पीयाम्ना ।
। (पानी) । "पाणि (रक्षति) (य)" ओ
जाना है । धामि (काम) और शूर्य.

५. (न०) पाणि (रक्षति) । पीयूषे वा । पा-पीना ।
बचाना । शमुन् (भुङ्) । जल । पानी । अन्न (दूध-
सामेने पारिबी रक्षा होती है).

६. (द्वि०) पयि द्विने+इय । शब्देमें लनेके लक्षक
जि । गवर्गि जाना । पयि भोजनोपेय द्रव्य.

(पु०) पद+पिब+क्तिव । परण । पाद । पैर । पीब.

(पु०) पयने (गवर्गि) शनेन+परने पम् । शिगे
पि है । परण । पीब । पयुर्भांत । पीया द्विगद् ।
स आदिवा मूल.

पादक, (पु०) पादस्य कटक इव । पीबवा मानो कटा
इ । नुपुर । पीबेक । डोकर.

पुष्पस्य, (पु०) पार्श्व इतः (ययुर्भांत इव) पुष्पस्य ।
कटक । एक भागमें आया हुआ पुष्प (मी) । एक
भवारका मद् । एक दिनका उपवास । एक दिनका पाबह.

प्रदण, (न०) पादयोः प्रदण इव । शिगेमें पीर-
को पकड़ने है । पीब पकड़कर विद्याया प्रणम । "शमुन्
पादपदं प्रार्श्वं जामिवाहं" मनु..

प्यायिन्, (पु०) पादेन पारि । चाम्पिणि । ३ न० ।
पीयूषे चलता है । पदाति । पीदक । पीयूषे चामेदारा
(य०)

प्यायन्, (न०) पार्श्वं प्रयेने क्वेन । शिखरणे नुपुर ।
ओ पीबको बचाना है । पयुवा । ली । गवर्गे

प्य, (पु०) पदेन (दूनेन) पिबति (शिगे जने)
पायक । ओ पीयूषे पानीको जडो पीता है । पय
(दारण) । पदं पाणि (रक्षति) पयक । पीबको
बचाना है । पादपीठ । पीबवा पीना । दण । पीब
सामेना अमन.

प्युन्, (न०) ३ न० । चाम्प्योभय । पदके पीयूषे
द्विगद् । पीबी ली.

प्युर्षी, (पु०) पदयो रपी । पीबी ली । उदण्ड ।
ली । इर.

प्यिक्, (द्वि०) पदो पीयूषे+इय । शब्देमें लनेके लक्षक
है । पयिक् । शब्देमें चामेदारा । पीबपक । कट
पिबती ओ पीयूषे चामे है । र्दण.

प्याम्य, (न०) पदस्य अम्य । पीबः कण्ठे । पी-
बी पीब (शि)

प्याद्, (पु०) पदस्य अद् । पीबः शिक् (शिक्-क)

प्याद्, (न०) पदस्य अद् इव । पीबः शिक् (शिक्-क)
है । इण । पीबे । इण.

पादाङ्गुष्ठ, (पु०) पदस्य अङ्गु । पीबक अङ्गु.
पादान, (न०) पदार्थोन्म सुम् । पीबेका इव ।
शुभ्रमुदाय । कटुली शिगे । "पादानं कटु-
(गच्छति) अयु" । पीबो कटुली है । पीब कटु-
ली शिगे । "पादो" "पादिक".

पादपन्दन, (न०) पादयोः पन्दनं-पंद+इय । चाम्प्यं-इय ।
पादस्य पंदन कवन.

पादगोचर्यम्, (न०) (पादयोः गोचरं) । पीबका पी-
(गवर्गि)

पादोपयन्मन्त्रेण, (न०) पी० । पादयोः ऐवम् । पी-
बी शिगे । चाम्प्यं-इय अद् शिक् ।

पादुवा, (शि०) पद-पिब+इय । पादो वदु इव ।
अमने आदिवा पीबो चाम्प्यं-इय चामेका कटुली ।
ली । चाम्प्यं.

पादोदकं जम्, (न०) पदस्य उदकम् । पीबका उद
(पानी) । पीबकेके शिगे चाम्प्यं-इय । चाम्प्यं-इय
चाम्प्यं-इय चाम्प्यं-इय (कटुली पीबका चाम्प्यं-इय)

पाद्य, (न०) पदस्य (पादपयान्) चाम्प्यं-इय । ओ
पीब सामेने शिगे अमन है । पाद पीबके शिगे चाम्प्यं-इय

पाम, (न०) पादपुट । इवाम्प्यं-इय चाम्प्यं-इय ।
शिगी कटुली (पी) पीबो चामे पीब के
का । पीब कटुली । "पादो इणु" । "पादपयान्"
पीबेका चाम्प्यं (पीब)

पामगोष्ठी, (शि०) पादयोः गोष्ठी (शिक्) । (पद)
पीबके शिगे चाम्प्यं-इय । पाद पीबके शिगे चाम्प्यं-इय

पामभाजम्, (न०) पीबके अमन । पादपयान् ।
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय

पानीय, (न०) पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् ।
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय
(शि०)

पानीयार्थिका, (शि०) पीबके अमन । पादपयान् ।
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय

पाद्य, (पु०) पदस्य अद्य । पीबके चाम्प्यं-इय ।
पादपयान् । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय

पाद्य, (न०) पाद (शिक्) चाम्प्यं-इय । पा-
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय
(शि०)

पादपद्, (पु०) पादपयान्-इय । पादपयान् ।
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय

पादपद्, (पु०) पादपयान् । पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय ।
पादपयान् । पीबके चाम्प्यं-इय

पार्श्वंग, (पु०) पार्श्वे गच्छति+गम्+ङ । पाग जानेवाला ।
 शेषक । परिचारक ।
 पार्श्वनाथ, (पु०) पार्श्वे नाथः । पाग रहनेवाला गामी ।
 जनोंकी देवता ।
 पार्श्ववर्तिन्, (त्रि०) पार्श्वे वर्तते । पाग रहनेवाला ।
 परिचारक । शेषक ।
 पार्श्वशय, (त्रि०) पार्श्वे शयते+शय+ग० स्त्री+श्च । पाग
 सोने (शयन) वाला ।
 पार्श्वस्थ, (त्रि०) पार्श्वे स्थिति+स्था+क्+श्च । पाग रहने-
 वाला । गहर । साधी ।
 पार्श्वस्थित, (त्रि०) पार्श्वे स्थितः+स्था+क् । पाग ठहरा
 हुआ । अनुचर ।
 पार्श्विक, (त्रि०)-स्त्री (स्त्री०) पार्श्वेभव+भृ+क्+ङ्क । पाग
 हुआ । निकटवर्ती । पाग रहनेवाला । कः-(पु०) गह-
 र । साधी । जादूगार । चोर ।
 पार्पद्, (पु०) पार्पदि भवः, तत्र स्थितो वा+अण् ।
 समास्थ । समाने बैठाहुआ । भैम्बर । सभ्य । नीर-
 मजलिस् ।
 पार्णि, (पु० स्त्री०) पृष्+णि । नि० । श्रुतिः । गुल्फा-
 योभाग । गिठके नीचेका हिस्सा । एमी । अंग ।
 सेनाकी पीठ ।
 पार्णिप्राह, (पु०) पार्णि (शृष्टपदं) श्रुति+अण् ।
 पीठ । पीठे आज्ञा देनेहारा । पीठे रहनेहारा । शत्रु ।
 (दुश्मन) ।
 पार्णिघात, (पु०) पार्णी घातः । पासकी चोट । लता ।
 लात मारना ।
 पाल्, रक्षण (बचाना) पु० डभ० सक० सेट् । पालयति-ने ।
 पाल, (त्रि०) पालयति (पाल्+अच्) । जो बचाता है ।
 रक्षक ।
 पालक, (पु०) पालयति । पाल्+ण्युल् । अक्षरक्षक ।
 पोथेका रखवाला और चित्रकृष्ट । बचानेहारा (त्रि०) ।
 पालकाप्य, (पु०) एक ऋषि का नाम । करेणुका पुत्र ।
 जिसने पहिले पहिले गजविद्या (शर्पाके वराकरनेकी)
 सिखाई ।
 पालङ्क, (पु०) पाल्+ङ्किप्-वाला+अङ्कते । अङ्क+ण् ।
 पलंग । एकप्रकारका साग । कुन्दुकरु (स्त्री) ।
 पालन, (त्रि०) पाल्+भावे ल्यु+न्पुट्वा+भान । रक्षा
 करनेवाला । बचानेवाला ।-नं (न०) रक्षा करना ।
 बचाना । बचाव ।
 पालनीय, (त्रि०) पाल्+अनीय । रक्षा करनेके योग्य ।
 बचानेलायक । पालनेलायक । यवाल करनेलायक
 (प्रतिशक्ति) ।

पालयित्, (पु०) पालयति । पालने
 वाला । रक्षक ।
 पाल्याग, (न०) पालनं (त्रि०) अने
 नेजारा । "उग मयाग" इग मः ।
 गम्बगी (त्रि०)
 पालिन, (त्रि०) पाल+क् । पालने-
 पूरा दिवागवा ।
 पायक, (पु०) पुनाति । पु+ण्युन् । इति
 षक् (आग) । वेपुनाति । विरनेके कर
 पायकारमज, (पु०) पयारम्य करण्ड । इति
 कर्निदेव । गुदयेन ऋषि का नाम ।
 पायकी, (पु०) पयारक+आ+अण् इत् । इति
 कर्निकेय (बहू विवर्तीके कर्निने सते इ
 उपजा) पुराणमें ।
 पायन, (पु०) पययति । पु+ण्युन् । इति
 हे । अग्नि (आग) । पयानेव । वेपुना
 (मोहा) । प्रायश्चित्त । कर्निकेय इति
 (न०) "पायने वनवा+सुपुट् कर्" । इति
 दिवाजय । गम्हा । इति की । इति मः
 (स्त्री० पयिप्रताको सिद्ध करनेहार (त्रि०)
 पायनच्यनि, (पु०) पायनः च्ये । इति
 च्छ । (विषका आवाज पावन है) ।
 पाश, (पु०) पश्यते (बन्दते) बन्ने ।
 पशु और पक्षियोंको बांधनेहार एक प्रकार
 कांद् । कंद् । हर एक प्रकारकी लकी ।
 परे यह शब्द शोभाके लिये स्थाना उपर
 पाशः" (अछे स्थानवाला)
 पाशक, (पु०) पश+ण्युल् । पूर्यककाल ।
 खेतका साधन । गुटिका आदि । पशु । पशु-
 पाशपाणि, (पु०) पाशः पाणी दस (त्रिने
 कांद् है) । बण । "पाशदन्" इति बर्निने
 पाशय, (त्रि०)-वी (स्त्री०) पशो- इति
 पशुके साथ संबंध रखनेवाला । पशुने वि
 वाला ।-नं(न०) पशुओंका समूह (गट) ।
 पाशिन, (पु०) पाशः अग्नि बलभरने ।
 बधयदेवताका नाम । यमराज । कंद्क । ग्य
 पाशुपत, (पु०) पशुपतेः इति । स. सम्यक्
 पशुपति का । वा पशुपति विषका देवपुत्र ।
 एक शस्त्र । औजार (न०) महादेवका शस्त्र (त्रि०)
 पाशुपतास्त्रम्, (न०) पशुपतेः इति
 देवका शस्त्र जो अशुनेन काम किया
 पाशुपाल्य, (न०) पशुन् पालयति+अण्+ल्य
 पशु । पशुओंका पालना । बैरायने । बैरायि

१. रूप, (त्रि०) पयाद् भवः । पथिम वेत्तमव । प-
म देताम ।
२. (स्त्री०) पाशानां समूहः+भट् । पाशोंका समूह ।
तयो कट्टे ।
खण्ड, (पु०) पाति (रहति इति) । पा+
प । पाः (वेदधर्म) तं ख(प)ण्डयति (मिथ-
करोति) । जो कुपाशों (पाशों) से बचना है वेदा
न है वेदका धर्म उसे जो तोड़ता है वा फट्टादि
ना है । वेदाचारव्यापी । वेदके शास्त्रको छोड़नेवाला ।
खण्ड, (पु०) पा (वेदधर्म) पण्डयति । पण्ड+
त्+इति । जो वेदके धर्मको तोड़ता है । पण्डय-
ण, (पु०) पितृति । पितृ-संबुधौ । पूरा ३ करना ।
पीगना) शानच् । इ० । जो पीग बालना है । प्रणर ।
एट ।
पण्डारण, (पु०) पापानां दारणी । दंशुत् ।
काय । टंक नागी आंशर (छिनी-पथरको काटने-
वाली)
गति (जाना) । इ० गच० पर० आदिद् । विगति ।
६. (पु०) अवि+वायति । वं+क । वायिके "अ"-या
भेद होगा है । सीटा चन्द्र बनी है । बोधिल । बोदत ।
विगन्तु, (पु०) ६ त० । विच (बोडत) वा वंघु ।
भायका एव ।
७. (पु०) विजि-वर्ण (रंगना)+भच् । मूयव । मूया ।
वीचिटी हाट (शिवा) के समान पीला रंग । उचकारण
(त्रि०) हरितान (न०)
मूजट, (पु०) विजा जटा दम्यन्० ग० । पीनी
जटावला । मद्रादेव ।
मूजट, (पु०) विर्ज लाति । ल+क । विजि+भट् कू
वा मूजम् । एक मण । हर । मूर्धके पात रहनेवाला ।
बानर । एक मिथि (खजाना) । एक मुनि । मगल-
मह । प्रकृत भवामे छारोमन्वबो बननेवाला सांपके
सन्धमें एक मुनि । एक सारी । राजनीति । और एक
धरवा (स्त्री०) ।
मूजट, (पु०) विजे अदिणी दम्यन्वच् वमा० ।
शितकी पीली आँसे है । शिबकी । (हसकी सीपती
आँस आगवा दम्य है) । "विरोध" रही अर्थ है
वेद्यण्ड, (पु०) अवि+वम+ट । "अवि" के "अ" का
भेद होगा है । हर । वेट । वट्टा अचदव (अव)
इ० "इ" की होगा है । "विजि" रही अर्थ ।
वेद्यु, (पु०) वद+उ इ० । वदन्त (वदन्त । वद) ।
वै । एकजनाका बोध (वृत्त) ।
विद्य, वेद (काटना) । इ० वच० वच० वेद । वि-
वसति वे । अवि+वदन्त ।

विद्यट, (न०) विन्+भट् । सीगक । सीगा । वि-
सीगविद्येव । आंगकी सीमागी ।
विद्यट, वाय (रोचना), मोटला । इ० प० वच० वेद
विद्यति । अवि+वदन्त ।
विद्यट, (न०) विद्य+भच् । मयुपुण्ड । मोरकी पूं-
कीर बुदा (कोटी) । लकून (वृत्त) (पु०) । विद्य
वेद । मुगती । बनर । खजना (बने) ।
विद्य, धीमि-वमकना । वाप-भट् । वच-अर वचन
अक० । शिवा (मातका) और वच (देना) । वच
पु० उम० वेद-इति । विजयति वे ।
विज, (न०) विजि+भच् । वच (बने) । एट
बनर (पु०) । अट्टल (बचमाना वृत्त-रैतन) (त्रि०)
एल (बने) । हरिता (हरती) । अट्टल (स्त्री०) ।
विजट, (पु०) विजि+भट् । वेदमल । आंगकी देव
(विबुदी) ।
विजट, (न०) विजि+भट् । हरिता (हरिता)
खर्ण (गोंजा) मगवेर । पानी आदिके बचन
खान (विजटा) । वेदविद्युत् । हरिताकी देवकी
समूह । एटप्रवरा पीठा (पु०) । वच० और वच
रंग (पु०) । उगवला (त्रि०) ।
विट, वृद्धि-वचन सीमा । अवि एटवचन । अक० वच
गच० वेद । विटि-अवेटीर ।
विटक, (पु०) विट+क । बगले वने अक० का
वृथा वच (बर्तन) । विः । मद्रा । विजे
(पीठा) । "मद्रा वच" रही अर्थ ।
विट, जंगलकीक वचन । अक० । वच-वचन । वच
अक० वच वेद । वेद । अवेटीर ।
विट, (पु०) विट+भट् । एटप्रवरा वच । वृत्त
बोधा । बचन वच (मद्रा विटवचन वच) (व०)
बनी । (पु० स्त्री०)
विट, वच-वचन (एट वच) । अक० वचन
वच० वेद । विटने । अविज । वच वचन है
होगा है " वच० । विजवचन वे ।
विट, (त्रि०) विटि+वच्-वच् । वच (वचन)
आँ और वच । हरिता । हरिता वच अक० वच
एक इलाहा । एटवेद वचनेके लिये-वेदके वेद
मन्त्रके लिये अचकारके अक (अवेटीर) । अट्टल
विज । वेद । विटव । वच । वच (वचन) है ।
एटकी वचन (वच) और वच वच (मद्रा
वचन) (पु०) । अट्टल (वचन) । वेद । वचने
के लिये-वेदके वेदवेद वचन है वच अक०
वच (व०) ।

२. (न०) पित्तं कृति । लम्बक । तत्कारिज्जाथापु-
 लेप । तन्मे आरित्ते बन्धुसा एक प्रकारका धनु ।
 पल । गरमी स्वभावका (वि०).
 पित्त, (वि०) पित्रा शक्ति+भू+त० । पित्तसे लाभ
 या नश (बन्धाया गया) पैनुकचंपति.
 ३. (वि०) विदुः इदं, प्रियं वा, विदुत आगमं वा
 ह । विदुगम्बन्धी । पित्तका । पित्तसे आया । विदु-
 र्थे । मयु (राहत) । और मया नक्षत्र (तारा) । पि-
 त्तोका पित्तार (माच-ना) (पु०) अमाकासा क्षिपि
 - स्त्री०).
 पित्त, (पु०) पद+भन्+उत् । पत्नी । गिरनेकी
 रूपावाला (वि०).
 पित्त, (न०) अपि+धा ल्युट् (अका छेप) । छन्द ।
 पददा । उदयन । टकना.
 पित्त, (वि०) अपि+नह+क । अका छेप । परिहित
 बन्न आदि । परिहाहुका रूपका आदि । बंधाहुभा.
 पित्त, (पु० न०) पाति । पा+आत्+न् । नि० । पित्र-
 जीका धनुष् (बन्धान) । पित्रकीका दलरूपी औंकार ।
 धृतिका बसना.
 पित्त, (पु०) पिनाक (अरत्यर्थे)+इति । पिनाक-
 वाया महादेव.
 पित्त, (स्त्री०) पातुं इच्छा । पा+तन्+भ । पानेच्छा ।
 पीनेकी चाह.
 पित्त, (वि०) पातुं इच्छुः । पा+तन्+उ । पीनेकी
 इच्छवाला । पियाला.
 पीपीलक, (पु०) अपि+पील+भ्युल् । अका छेप । एक
 प्रकारका बीडा । "पिपीलिका" काला बीडा वा काली बीडी.
 पीपल, (न०) पा+शलच् । (पु०) । जल (पानी) ।
 और एक रूपकेका टुकडा । अथापास (पीपलका पेड) ।
 और पत्नी (पु०).
 पीपल, (पु०) पी+पान-पीना+आत् । पेदागल गुरगो ।
 एक वृक्ष.
 पील, प्रेरण-बलना । पु+उभ० सक्त० सेट् । पेलयति-ते.
 अभीपलन्त.
 पीयू, सेचन-सीचन । भ्या० पर० सक्त० सेट् । पिन्वति ।
 अभीन्वीट् । "इरिट्".
 पीडा, अवयव (हिसा करना) मु० पर० सक्त० सेट् ।
 पिठति । अपेरीट्.
 पीडाह, (पु०) पिना+आत् । कमलदूधकी धृष्टिके समान
 पीडा रंग । उलकावा (वि०).
 पीडाच, (पु०) पिशितं अथाति । अत्+अण् । घृ० । जो
 मांसको खाया है । देवोनिभेद । एक प्रकारकी देवता ।
 और प्रेत । भूत.

पीडाचभाषा, (स्त्री०) (पीडाचानो भाषा) । भूतोधी
 भाषा (जवान) । बहुत निचही प्रकृत.
 पीडाचरसम्, (न०) पीडाचानां रसा । पीडाचोधी
 रसा (मण्डली).
 पीडाचालय, (पु०) पीडाचानां आलयः । भूतोद्या पर ।
 अत्यन्त अपवित्र स्थान.
 पीडित, (न०) पिश+क । मांस । जटामांसी । (स्त्री०)
 वा बीप् ।
 पीडुन, (न०) पिशु+उनन् । कुडुम (केसर) । नारद
 और बीभा (पु०) सूचक (गुणलसोर) । क्रूर (निर्द-
 य-बेहम) (वि०).
 पीपू, पूर्व-पीपना । इ० पर सक्त० अनिट् । पिनिष्ठि ।
 अपिपट्.
 पीपू, (न०) पिशु+क । सीसक । पीपक । सीया । पीठी ।
 धूमित (घूरा किया हुआ) । दलागवा (वि०).
 पीपूक, (पु० न०) पीडानां (तण्डुलपूर्णां) विकारः+
 कन् । पारलोकके घूरेका बना हुआ पीठी । एक प्रकार-
 का राना.
 पीपू, (पु० न०) निरयते, पिन्वते वा+अण् । पिपू+उप-
 न् । भुवन । जगन् । सर्ग.
 पीपूत, (पु०) पिशं अतिरि । अत्+अण् । वपशोधी गुण-
 निधके लिये खाहुआ किसी प्रकारका गंध । केसर
 आदि । अस्ता.
 पीपू, जाना-बनकना गुणनिधतमाना-भोरकरना-भारना-और
 देना । भ्या० पर० सक्त० सेट् आदि । पेयति । पिप-
 यति । पेययति-ते । अभीपयत् । त.
 पीपूत, (वि०) अपि+धा+क । अका छेप । निरोहित ।
 आच्छादित । बंद कियाहुआ । टिपाहुआ.
 पी, पान-पीना । दि० आ० अनिट् । पीयते । अपिष्ट ।
 "स्वपू" नि शीय.
 पीट, (पु० न०) पीयते (पिज्यते वा अत्र) । पा+ट् ।
 पिट्+क वा । घृ० शीपं । पीडा (टुकडा) । एक प्रकारका
 आसन । प्रतिभांसा आसन । पेठी । पीडी । वह मगर
 जटार देवीके शरीरसे कई एक राण्ड (टुकडे) गिरेहो.
 पीटार्थिका, (स्त्री०) पीट-नामिच्छयाः शालवं मर्दयति+
 ट्+इत्+अभ । नाशिकाके पास रहकर उसके नासके
 साथ मिला देनेमें सहायता करनेवाली एक स्त्री । सुन्दरि-
 ओंको मूलविद्या (नाच) सिखानेवाली.
 पीट, बध-भारना-पिलोहन-प्रवेश करनेवाली । पु०
 उभ० सक्त० सेट् ।
 पीटन, (न०) पीटनेका भाव ।
 पीटन, (न०) पीटनेका भाव ।
 पीटन, (न०) पीटनेका भाव ।

पाआरित्ते अमि-
 आरमण (

पीडा, (स्त्री०) पीड्+अ । व्यया । दुःख । दरद । त-
क्षीक । तरस ।

पीडाकर, (त्रि०) पीडं करोति+कृ+अच् । कष्टदायक ।
तक्षीक देनेवाला । दर्दनाक ।

पीडित, (त्रि०) पीड्+क । मर्दित । मलाहुआ । निचो-
बाहुआ । यन्त्रित । तक्षीक पहुंचायाहुआ । दुःखित ।
दुःख दियागया ।

पीत, (न०) पी+क । पान । पीता । और हरिता० ।
हरिदावर्ण । हल्दीका रंग (पु०) । "कर्मणि क्" ।
(पीनेका काम) पीले रंगवाला (त्रि०) ।

पीतक, (न०) पीत+कर्मणि कच् । कुडुम । केसर । और
हरिताल । पीतल ।

पीतवासस्, (पु०) पीतं वासो यस्य । जिसका कपडा पीला
है । श्रीकृष्ण ।

पीताम्बर, (पु०) पीतं अम्बरं यस्य । पीले वस्तुवाला ।
विष्णुका नाम । श्रीकृष्ण ।

पीन, (त्रि०) प्याप्+क सम्प्रसारण । स्थूल । मोटा ।
बृद्ध । बूढाहुआ । सम्पन्न । भरपूर । घन आदिसे पूर्ण ।

पीनस, (पु०) पीनं (पीनतां) सति । सो+क । जो
मोटाईको नाश करता है । नासिकाका रोग । शुकाम ।
खांसी ।

पीनस्तनी, (स्त्री०) पीनो स्तनौ यस्याः । मोटे स्तनों-कुचों-
वाली स्त्री (औरत) ।

पीनोष्ठी, (स्त्री०) पीने ऊधः अस्या+कीप् । अन्तमें
"अनङ्" का आदेश । पीवरोधस्तका गाँ । बहुत मोटे
पनों-वाली गौ ।

पीप्, प्रीणन-प्रसन्न होना । पर० सक० सेट् । पीयति ।
अपीयीत् ।

पीप्य, (न०) पीय+ऊपन् । देवताओंके पीनेकी एक
पीज । अमृत । दूध ।

पीत्, रोध-रोकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पीतति ।
अपीतीत् ।

पीत्तु, (पु०) पील्+उ । परमाणु । "पीलुपाक" "पितर-
पाक" (वैद्यकेकोछा भेद) । हाथी । हाथियोंका टुकड़ा ।
और पूल ।

पीत्, स्थौल्य-मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । पीयति-
अपीयीत् ।

पीयन्, (त्रि०) प्ये+कनिप् । स्थूल । मोटा । और बल-
वाला । औरकाल । कपु (पु०) ।

पीयत्, (त्रि०) प्ये+अवर्त् । स्थूल । मोटा "पीप्" अथ-
गन्था । "दाप्" एतन्वी । "पीप्" तरणी गौ । जवान
गौ । छतमूडी शतवर्णी ।

पुष्टि, (न०) पु० । पुष्टयति । पु-
अङ् । जिसका पुष्टयही नाई तिष्ठ होना ।
रणमें कदाहुआ मंत्रकारविशेषका एक
शब्द (पु०) ।

पुंश्चाली, (स्त्री०) पुंगः (मनुं) गङ्गायुक्ती
पान्तरं) गच्छति+अन्वी कीप् । जो अपने
दूरे पुष्टयके पास जाती है । अग्रणी स्त्री (सरिता
स्त्री) । वदमात्र औरत ।

पुंस्, मर्द-मलना । पु० उभ० सक० सेट् । पुंस्-
अपुंस्वत् ।

पुंसघन, (न०) पुमान् मृपने अनेन मन्सुत् । विने-
उपजता है । एक प्रकारका गर्भना संस्कार । यौ-
पुंस्वत् ।

पुंस्य, (पु०) पुंगः भावः (विभं वा) पुं-
पुष्टयका निदान । एक प्रकारका शंग । उभ०
शुक्र (वीर्य) । पुंस्त्रिपना ।

पुकास, (त्रि०) (पु०) पुक् (कुरियन्) कर्त्तु । कर्त्तु
जाना । अच् । पु० वा श । जो बुरी चीजसे नेत्र त
है । चाण्डाल । अधम (नीच) (त्रि०) ।

पुह, (पु०) पुमांस खनति । सन्+उ । जो पुं
रोदता है । चाणमूल । तीरका छिरा । निंदन के
गया तीरका हिस्सा । पुष्कल । पूरा । कापी ।

पुह्व, (पु०) पुमान् गां । कर्म० वद-मना ।
(बेल) "उत्तरपदमें आनेसे श्रेष्ठ (अच्छे) का
है । "जैसे" "नरपुह्व" "नरः पुह्व इव" नर लोको
समासका वाक्य "मनुष्योंमें अच्छा" इस अर्थमें है ।

पुच्छ, प्रमाण (मापना) । भ्वा० पर० अक० सेट् । पु-
ति । अपुच्छीत् ।

पुच्छ, (न०) पुच्छ+अच् (पथाङ्गाग) । पीछेका हिस्सा
और पंछ ।

पुञ्ज, (पु०) (उन्नत्या) पुमास जयति । जिभ् । जो
इसे पुष्टयको जीत लेता है । राशि । चप । कपु
वीर्य । डेर ।

पुद्, पीति-चमकना । अक० पूर्णन पीमान-अक० पु-
उभ० सेट् । पीयति-ने । अपुपुटत् ।

पुद्, श्लेष-जुटना मिलना । पुटति । अपुटीत् । पुणेत् ।

पुट्, (न०) पुट्+क । जातिकल (आवक) । पु-
पकनेके लिये मदी आदिके रथेदुए दो पात्र (त्रि०)
त्रिनको नीचे ऊपर पर बीचमें दवाई रख आदि करने
जाती है । आम्नादन (ढकना) । (पु०) । पत्तों बन्द
बनाहुआ दूध आदि पीनेका पात्र । सोना (सोना) (त्रि०) ।

पुट्मेद, (पु०) पुटं (संश्लेषं) मिनात्त+अच् । जो दो
को पाककालताहै । नदी आदिका परिषेके लाने
जलावर्ष (पुंश्चरपर) । नगर । बाबा ।

रु, (सी०) (न०) पुरी (देहं) तनोति । तन्+किर ।
 'दरीरको फैलाती है । देहको आरम्भ करनेवाली नादि-
 । आदरी।

र, (न०) प्र० सीपे+ईपन् । विष्ठा गूद । (वेदमें)
 ल (पानी) ।

(पु०) प्र+ङ् । क्याति राजाका छोटा पुत्र । जिसके
 राज कुड़भोंकी पौरव संज्ञा हुई । लगे । एक देव ।
 क नयी । प्रचुर (बहुत) (वि०) ।

र, (पु०) पुरि=देहे+सी+ठ प्रो० पुर आगे जाना+
 यन्+ ष्य । मनुष्य । देहरूपी शहरमें सोताहै
 । सखे आगे रहताहै (बुद्धिमें) । आदमी । आत्मा ।
 ह ।

रकार, (पु०) पुरदस कारः । कृ+षम् । पौरव ।
 रयका दल । हिम्मत । सिद्धता । उद्योग । पुरवार्य ।
 रयका जान ।

रिसरिन्, (पु०) पुरयः कैवरीव । पुरयसिंह (सोर
 आदमी) सिन्धुका नाम (युधिष्ठि) सीपे अवतारमें ।

रसिंह, (पु०) पुरयः गिह इव । उपमि० । पुरय मानों
 र है । पुरयोंमें भेठ (बहुत अच्छा) । "पुरयनाम"
 ही अर्थ ।

राधम, (पु०) पुरवेपु अधमः । पुरयोंमें नीच । बहुत
 र्च आदमी ।

राधे, (पु०) ६ त० । पुरयका अर्थ । धर्म, अर्थ, काम
 तीर मोधारूप पुरयका प्रयोजन (मतलब) ।

रोत्तम, (पु०) पुरवेपु उत्तमः । धर्म० वा । पुरयोंमें
 लन । विष्णु । और उत्तम पुरय ।

रुत, (पु०) पुरणि (प्रचुरणि) दूतानि (नामानि)
 लस । जिसके बहुत नाम हो । इन्द्र । देवनोंका राजा ।

रयख, (पु०) बुधसे इलामें उत्पन्न कियागया उर्वेहीका
 फल (पियारा) । चन्द्रवैही राजा ।

रु, (वि०) पुरः (अग्ने) गच्छति । गन्+ङ् । अग्ने-
 मयी । आगे जानेवाला । और प्रथम । बड़ा । "अन्"
 पुरोगमः । "सिनि" पुरोगामी ।

रुदा-रु, (पु०) पुरो दास्यते । दास्य+कर्मणि क्तिप्
 एम् वा । जो आगे दिया जाता है । इति । जो आदि
 यज्ञका इत्य । षट् ।

रिष, (पु०) पुरः (अग्ने) पीयते । पा+धत्ति । जो
 आगे दिया जाता है । पुरोहित ।

रिमासिन्, (वि०) पुरः (पूर्वं) भवते । भञ्+सिन् ।
 प्रणको छोड़कर केवल रोपको प्रण करनेवाला । अग्ने-
 भागी । पहिले दिसेबासा (वि०) ।

पुरोहित, (पु०) पुरः (अग्ने) दृष्टव्यकलेपु क
 पीयते भागी । पा+ध । धार्मिक वा पारलौकिक क
 में जिसे आगे किया जाता है । राजाओंके परलौ
 कयोंमें आगे कियाहुआ जन । आगे कियाहुआ
 आदि कर्म करानेवाला ।

पुर्ये, पूर्ति-भरना । पूरा करना । भ्वा० पर० सङ्० षे
 पूर्ति । अपूर्वीक ।

पुल, उच्छिन्नि-कंथा होना । पु० उभ० पक्षे पु० क
 सेद् । पोलयति-वे । पुलति । अपुपुल्यन्-त् । अगोली

पुल, महत्त्व । बड़ा होना । भ्वा० पर० सङ्० सेद् । प
 ति-वे । अगोलीक ।

पुलक, (पु०) पुलक+स्वापे बन् वा । रोमा
 रोंआंकी फूट । अंगुठा । कीटा । मणिका चिह्न । छल
 पिआला । हाथीका भोजन । राई । एक प्रकार
 पर्वतकी मद्ये । विपुल (बड़ा) । पुल (सेव) ।

पुलकित (वि०) (पुलक+इत्+पुलकाः) आता आ
 जिसके रोंगटे खडे होगये हैं । बड़ा प्रसन्न हुआ ।

पुलकोद्गम, (पु०) पुलकानो वद्गमः । दरीरके पुल
 (सूत्रों वा रोंगटों) का खडा होना । खंडे होना ।

पुलस्ति-स्त्व, (पु०) मुनिका नाम ।

पुलह, (पु०) एक मुनिका नाम । धान्य (धान
 क्षिप्र । जम्बी ।

पुलाफ, (पु०) पुल्+अफ+अण् । संक्षेप । दक्षयत्य । अ
 जके विना ।

पुलिन, (न०) पुल+इन् । होरोदिवन छट । पान
 निचला हुआ किनारा । बड़ा । जमीरा ।

पुलिन्द, (पु०) पुल्+किन्द् । एक प्रकारका पाण्डाल ।

पुलोमजा, (स्त्री०) पुलोमा (अमुरभेदः) तस्मान्
 यते । जन्+ङ् । पुलोमा नाम देवसे उत्पन्न हु
 इन्द्राणी । इन्द्रकी स्त्री । रावी ।

पुल्ल, पुष्टि-पालना । अक० पोषण-पालना । सङ्० षि
 पर० अदिद् । पुष्पति । अपुल्लत् ।

पुल्लित, (वि०) पुल्+क । पुष्ट । फलाहुआ । परलौ
 किबहुआ ।

पुल्लार, (न०) पुल्+अरन् । गच्छरत्न । दारीकी ल
 के आगेका सिप (लोह) । एक प्रकारका काना । मुण
 धनी । शङ्खलक (निधान) । चन्द्र । एक टीर
 एक जमीर (हीर) और बगई । एक रीत । एक हर्ष
 एक टक । एक पहाड (पु०) ।

पुल्लारसिद्धा, (स्त्री०) पुष्करसिद्धा । चन्द्रकी क
 पुल्लारसिद्ध, (स्त्री०) पुष्करणी शब्द । अमनीकी शब्द ।

पत्नी, (स्त्री०) पूज्यता (इन्द्रस्य) पत्नी+श्रीप् ।
 इन्द्र । इन्द्रकी श्री राक्षी । इन्द्राणी ।
 पत्नी, (पु०) कर्तुनिः पूतः । “बहोति पवित्र” । पूताः
 विप्रतासम्पादकाः कर्तव्यः (यज्ञाः) यस्य वा । जिसके यज्ञ
 विप्रताको सम्पादन करते हैं । इन्द्र । देवताओंका राजा ।
 पत्नी, (स्त्री०) पूज्य करोति । पूत+पिच्+भुच् । पवित्र
 तां है । इरीतकी । इरीत । एक राक्षसी (जो पिघले
 डेपेटेहुए दूधको पिताती हुई भीष्मजीके मारी गई) ।
 एक रोग ।
 पत्नी, (स्त्री०) पू+किञ् । पवित्रता । पाकीजगी । दुर्गन्ध ।
 बदबू । रोषिपपास (न०) ।
 पत्नी, (न०) पूत्या (दुर्गन्धेन) कायति । कै+क । त्रि-
 सप्तमें बरी बदबू चलती है । पिछा । गूँह । पूतिकरजनानी
 बस । (पु०) । एक साग (स्त्री०) ।
 पत्नीगन्ध, (पु०) पूतिः (पुष्टः गन्धः) यस्य । जिसकी बुती
 गन्ध हो गन्धक । और इहरीका बस । दुर्गन्ध (बदबू) ।
 पत्नी, (पु०) पू+भ्यक् । पिष्टक । बसा । पीठीका बनाहुआ पूसा ।
 पाष्टका, (स्त्री०) अष्ट परिमाणं दद्यात्+कञ् । अष्टका
 (अष्टमी) उपचारार्थं तत्कर्मण्यं धादम् । पूष्टकसाधना-
 ष्टका । कर्म० । अगहनवदि अष्टमीके दिन विषाल किया-
 हुआ धाद । पीठीके बर्सेसे पिष्ट होनेहायी अष्टमी । बर्से
 (पूष) की अष्टमी ।
 पत्नी, दुर्गन्ध-बदबू चलना । अक० । मेदन-पडना । सक०
 रिवा० आत्म० सेद् । पूज्यते । अपुषिट ।
 पूष, (न०) पूष्+भ्यक् । प्रय (पाव-ना पीडा) आरिषे
 निरुत्साह्वा छोटाका विचार । पूष । पीर ।
 पूष, पूर्ति-भरना-पुष्ट होना-प्रीणन । रिवा० आत्म० सक सेद् ।
 पूषते । अपुषि ।
 पूष, (पु०) पूर+क । जलका समूह । एक प्रकारका पाना ।
 पावकी सभ्यई ।
 पूषक, (पु०) पूर+भुक् । बीजपूर । एक प्रकारका नींद ।
 अंशुप्राप्तमें प्रसिद्ध (गुणक) गुणनेहाय । एक प्रकारका
 प्राणायाम । एक नाथिकासे प्राणोच्छा ऊपर खेचना । पूरा
 करनेहाय (प्रि०) प्रेनके शरीरको बनानेहारे दस
 पिण्ड (न०) ।
 पूष्य, (पु०) पूर+उप्यत् । पूर्य । नर । आदमी ।
 पूष्य, (प्रि०) पूर+क । नि० । पूरित । भराहुआ । खरत ।
 घारा । ज्योतिषमें दोनों पक्षोंकी पंचमी, दशमी और पूर्वमा
 तिथियों । (स्त्री०) ।
 पूष्यपात्र, (न०) कर्म० । भराहुआ पात्र (बर्तन) । हर्षका
 समय । पुत्रकी उत्पत्ति आदि हर्षके समय खरकर बस
 आदिका घेना । होमके अन्तमें ब्राह्मकी दक्षिणाके स्वरूपमें
 पार पुष्कल अर्थात् १५६ मुनी कर्षणसे भराहुआ एक पात्र ।

पूर्वमास, (पु०) पूर्णमासां निहितः+अण् । पूर्णमासे
 दिन करनेयोग्य एक प्रकारका यज्ञ । “दशपूर्णमासाभ्यां
 यजेत” श्रुतिः ।
 पूर्णमासा, (स्त्री०) पू+किञ् । नि० । पूर्णि (पूर्णं) चन्द्र-
 कलापूर्णं सिनीते मा+क । चन्द्रमाकी चन्द्रहवी कलाको
 भरनेहायी तिथि । पूर्णमासी ।
 पूर्व, (न०) पु+क । नि० । रातादिकर्म । तालाव, लुआं
 आदिका काम । विश्वजन (सब लोग) के उदरसे जल-
 शय (तालाव) आदि बनवाकर दान करना । “भाये क”
 पूरण भरना (न०) काल (समय) । छत्र (ढकानुभा) ।
 पूरित (भराहुआ) (प्रि०) ।
 पूर्वकाय, (पु०) कायस्य पूर्वः । शरीरका अगला भाग ।
 हिस्ता (विशेषतः पशुओंका) ।
 पूर्व-वै, -विचार-बचाना । अत० । निमग्न-बुधना । सक०
 पूरा० उभ० सेद् । पूषे । भना० । पर० । पूर्व- (वै)-
 यति । पूर्व (वै) नि ।
 पूर्व-वै, (प्रि०) । पूर्व (वै) +अच् । प्रथम । पहिल्य ।
 रामस्य । साय । ज्येष्ठ भ्राता । बड़ा भाई । (यह छन्द
 सर्वनाम है) ।
 पूर्व-वै-ज, (पु०) पूर्व (वै) जयते । जन्+ङ । ज्येष्ठ
 भ्राता । बड़ा भाई । जो पहिले उरजता है । बरी भगि-
 नी (बहिन) (स्त्री०) ।
 पूर्व (वै) देव, (पु०) पूर्व (वै) देवः (पश्चात् पागाव-
 रणात् प्रष्टः) । पहिल्या देवका पीछे पाव करनेसे निर-
 गया । अयुर । देव । अथवा पूर्वः (वै) धेठो देवः ।
 अथवा देवता ।
 पूर्व (वै) देवा, (पु०) कर्म० । पूर्वका देव । पूर्वा देव ।
 प्राण्यो अवस्थित जनपद ।
 पूर्व (वै पश्च), (पु०) कर्म० । पहिल्य पश्च । अगस्त
 प्रकारका विवाद (शगडा) रूप व्यवहार । प्रतिशस्त्र पहि-
 ला अथवाक (भाग) । पहिली तरफ । (सीमागर्भे)
 विद्यान्तसे विद्वत् शोरको प्रतिपादन करनेहाय काल ।
 पूर्व (वै) पद्, (न०) कर्म० । समान वा समरथा पहिल्य
 भाग । पहिल्य पद । जिकरे अन्तमें सुर् वा निरु हो ।
 पूर्व (वै) पर्यंत, (पु०) कर्म० । पूर्वका पहाड । उदका-
 बत । बड़ा सुर्का पहिले दर्शन होता है बराहा पर्यंत ।
 “ पूर्वैत” रही अर्थ ।
 पूर्व (वै) पः (पत्र) स्मृती, (स्त्री०) अधिनीते म्पारका
 मन्त्र (छारा) ।
 पूर्व (वै) माद्रपद्, (पु० स्त्री०) अधिनीते बर्षेहवा
 मन्त्र (छारा) ।
 पूर्व (वै) राग, (पु०) रन्+क । नका होन कर्म० ।
 श्री और सुरबके आरगमें मेठमें पहिली दारा । पहिल्य क्रम
 (सुहस्रत) ।

(पु०) दृष्टु उदरे यस्य । जिसका बड़ा पेट हो ।
 मेघः । बड़े पेटवाला (त्रि०) ।
 श्री०) दृष्टुचतुष्पुष्पा । जिसकी चौप् । भूमि । जमी-
 की इलाहची । काला जीरा ।
 (पु०) पदं-गति+काङ्-सम्प्रसारण । सपं । सांप ।
 । विच्छ । व्याघ्र (भेड़िया) । गज (हाथी) ।
 ५ दश ।
 त्रि०) दृष्टु+नि । प्रच्छ+गिवा दृ० । खर्व । बीना ।
 । पतला । दुर्बल । बमजोर । और खल्ल (घोडा) ।
 । (दृष्टुजीकी माता) (स्त्री०) ।
 र्म, (पु०) १ त० । दृष्टिश्च गर्भे । देवकीसुतु । देव-
 । बेटा । भीष्मण् ।
 क-सीबना । भ्या० आ० सक० सेट् । पर्यते । अपविष्ट ।
 (न०) दृष्ट्+अति । विन्दु । (दाग) बूंद (त्रि०)
 नेहाप ।
 (पु०) दृष्ट्+अतच् । विश्वे विन्दुवाला एक प्रकारका
 प । भेतविन्दुयुक्त मृग । और बूंद ।
 (पु०) दृष्टपत्+ (संज्ञादी) कन् । बाण । चीर ।
 द, (पु०) दृष्टतो विन्दोः अथ इव (बाहकत्वात्) ।
 । मानो घोडा है (उठानेसे) बापु । हवा ।
 ज्य, (न०) दृष्ट्-युक्तं (दधिबिन्दुयुक्तं) दधिसेक-
 का भाग्यं । घाक० । दहीकी बूंदोवाला वा दहीसे
 एकधा घृत (घी) । दहीसे मीठीहुई घी ।
 त, (पु०) दृष्ट्+सिच् । विन्दु । बूंद ।
 त, (त्रि०) दृष्टत् उदरे यस्य । दृष्टो- नि० ।
 उके पेटपर विन्दुवा हो । विन्दुगमित । विन्दुवाला ।
 गोंवाला ।
 (न०) दृष्ट्+षक् । घरीरके पीठेका भाग । पीठ ।
 प्रविशेष ।
 त्, (अम्ब०) दृष्ट+तसिच् । पथात् भाग । पीठेसे ।
 ३ २ ।
 टि, (पु०) दृष्टे (पथात्) दृष्टिः यस्य । जिसकी
 र पीठेकी हो । भद्रुक । भाद । रीठ ।
 त्स, (न०) दृष्टस्य मांसम् । पीठका मांस ।
 श, (पु०) १ त० । पीठका बाँत । पीठकी (उन्हे-
 काकलमें) दही ।
 (न०) दृष्टानां (शोषाणां) समूह+यद् । शो-
 का समूह । एक यज्ञ । दृष्टेन बद्धि+यद् । पीठपर
 गला है । घोडा बेल आदि (त्रि०) ।
 त, (पु०) पव्+पुनृ इच् । उद्कृ । उच् । हाथीकी
 उग्र छिटा । पर्यद् । चारपाई । जे (घूसा) । और
 प । बादल ।

पेटक, (पु० न०) पिद्+भृण् । पुस्तक आदि पदापोंके
 टिकानेके लिये चित्र (बँत) आदिवा बनाहुआ पदाय ।
 और समूह । पठार । टोकरी । संकृ । पैला । डेर ।
 पेय, (त्रि०) पा-पीना+कर्मणि यद् । पान करनेयोग्य ।
 पीनेलायक । (सं-न०) जल । पानी । दूध । या
 (स्त्री०) चावलकी छिचकी ।
 पेल, कम्प । कांपना । अक० जाना० । सट० भ्या० पर०
 सेट् । पेलति । अपेक्षीत् ।
 पेल, (न०) पेल+अच् । पुरपदा विद् (निरान) ।
 एक अंग । अणुबोध । पताल ।
 पेलय, (त्रि०) पेल+यच् । पेलं वाति । का+क । कोमल ।
 कृष । विरल । नाजक । नरम । कंदा । सुंदर ।
 पेश(स)ल, (त्रि०) पिश् (ए)+अलच् । सुंदर ।
 दश । चतुर । और कोमल । नरम । नाजक ।
 पेशि-सी, (स्त्री०) पिर+रन्त् वा । बीप् । अण्य । मांगपिण्ड ।
 मांसका गोला । तलवारकी मिथान । एक नदी । पिशाची ।
 एक राक्षसी । इन्द्रका वज्र (पु०) । ज्वा ।
 पेषु, सेवाकरना । मिथयकरना । भ्या० आ० सक० सेट् ।
 पेषते । अपेष्टि ।
 पेषण, (न०) पिय+स्यु । शूलन । पीछना । “ स्तुद् ”
 खल (नीच) ।
 पेषणी, (स्त्री०) पिष्यते अनया । अग्नि वा बीप् । पेषण-
 शिला । पीतनेकी पिला ।
 पेश, जाता । भ्या० पर० सक० सेट् । पेषति । अपेक्षीत् ।
 पीठीनसि-सी, (पु०) मुनिभेद । एक मुनिश्च नाम ।
 पितृक, (न०) पितृतः आगतम्+अण् । पितासे प्राप्त
 हुआ । दाय (जायदाद) वा विरला ।
 पितृष्यसेय-सीय, (पु० स्त्री०) पितुः स्वयः अपरसं-
 टक् छन् वा । पिताकी बहिन (भूला) का बेटा ।
 पितृ, (न०) पितुः इदं । पिता देवता अस्य का+अण् ।
 पिताका वा पिता जिसका देवता है । तर्जनी और
 अंगुठेके बीचका स्थान । पितृदीर्घ । पितरोका । पितृ-
 सम्बन्धी । पिताका (त्रि०) ।
 पिशाच, (पु०) पिशाचैव निर्मित+अण् । एकप्रकारका
 विकार । जिसमें बरछोटी, वा मटकरी आदि रूपमें
 कम्बोके न चारनेपर की पकड़लेता है (यह आठ प्रकारके
 विकारमें बहुतरी निर्दिष्ट है) । एकप्रकारका दैत्य ।
 पितृनृ-स्यम्, (न०) पितृनस्य भाव+अण्+स्यच्+क ।
 पुण्डरीकी । गुरुजनन । निन्हा ।
 पीठी, (स्त्री०) पितृस्य पितरान्+अण्+पीठ् । जठरेसे नि-
 काकी हुई पटाच ।



प्रक(का)ण, (पु०) प्र+कृ+ण्+थप् थम् वा । वीनकी
 अवाज । वीणाका शब्द.
 प्रक्षेडन, (पु०) प्र+क्षेड+ल्यु । नाराचात्र । विप्रथित
 लोहेका-तीर.
 प्रखर, (त्रि०) प्रकृष्टः खरः । प्रा० सं० । अत्यन्तोप्र ।
 बहुत सीधा । हयमन्त्रा । घोड़ेका साज । कुटुड । कुत्ता ।
 अशतर (खपर) (पु०).
 प्रखया, (स्त्री०) प्र+ख्या+ञ् । साहस्य । धरावरी । उ-
 : सारपूर्वमें रहता है । उक्त्य अर्थमें " विनृप्रत्ययः " ऐसे
 ही " निभ " आदि होते हैं.
 प्रगण्ड, (पु०) प्रकष्टः गण्डः (अथयवः) । अच्छा गण्ड
 (कपोल) । कोहनी (कूर्पर) से ले कष्ट (बगल).
 तक भुजा । दुर्ग (किले) की सीवार.
 प्रगल्भ, (त्रि०) प्र+गल्भ+ञ् । प्रत्युत्पन्नमति । जिस-
 की बुद्धि समयपर हाट फूटी है । प्रतिभावाला । हाजिर
 अवाज । एक प्रकारकी नायिका (स्त्री०).
 प्रगाढ, (त्रि०) प्रकथं गार्ढं । गाढ+क्त । बहुत गाढा ।
 अत्यन्त । मृदा । दूध । मजबूत.
 प्रगुण, (त्रि०) प्रकृत्यो गुणो यस्य । सीधे स्वभाववाला ।
 दक्ष । चतुर.
 प्रगृह्य, (न०) प्र+ग्रह+क्यप् । व्याकरणमें खरखनिध न
 होनेलायक पद.
 प्रगो, (अथ०) प्रगीयते अत्र । प्र+गै+के । अतिप्रातःकाल ।
 बहुत रावेर.
 प्रगोपन, (न०) प्र+गुप्+अन । रक्षण । बचाव.
 प्रग्रथन, (न०) प्र+ग्रथ्+अन । गुथना । गुप्ता । एक
 दुमरेको इकट्ठा करना.
 प्रग्रह-ग्राह, (पु०) प्र+ग्रह्+अप्+थप् वा । ग्रहण । पक-
 ढना । घोड़े आदिकी रस्सी । लगान । किरण । बन्दी ।
 भाट । भुज । बाजू.
 प्रघण, (न), (न०) प्र+हृन्+अप् । बाहिरके दवांजेका
 कमरा । बरानडा । लोहेका मूसल (मोला).
 प्रचण्ड, (त्रि०) प्रकथं गण्डः । प्रा० । दुर्धरं । दुर्बल ।
 दुरन्त । मुन्द । प्रतापी.
 प्रचण्डघोण, (त्रि०) प्रकथं घोणा यस्य । बड़े नाक-
 वाला । ऊंची नाकवाला.
 प्रचण्डसूर्य, (त्रि०) प्रचण्डः सूर्यः यत्र । तीर्थ (तीर)
 सूर्यवादा (देव-स्थान).
 प्रचण्डाक्षय, (पु०) प्रचण्डः क्षयः । भीषण (बघारनी)
 गारनी (धूप).
 प्रचप, (पु०) प्र+चि+अप् । चम्पू । बरना । लिखित
 (हांश) नानी संयोग.
 प्रचुर, (त्रि०) प्र+चुर+ञ् । बहुत । बहुत.

प्रचेनम्, (पु०) प्र+चि+अप् । ल
 अन्तर्दिनवाला (त्रि०).
 प्रच्छ, त्रिधाया । पुत्रा । पु० पर द्वि
 अप्राप्तीन्.
 प्रच्छन्न, (न०) प्र+च्छ+ण् । पुनर्वा ।
 इ । अन्तर्द्वार (भीतरका दवांज) ।
 प्रच्छन्नस्वप्न, (पु०) प्रच्छन्नः स्वप्नः
 (नजानागया) नीर.
 प्रच्छदिका, (स्त्री०) प्रच्छदयति । छंद-
 रोग । दाहीकी सीमारी.
 प्रच्छादन, (न०) प्रच्छादते अनेन । छ-
 जिम्मे ढोपते हैं । उदासीन वृत्त । छाते में
 प्रजन, (पु०) प्रजायते अनेन । प्र+जन्+ञ्
 दिपु पुंगव्य संयोजनम् । पहिले गन्धे की
 बेल आदिसे मिठाना । पशुओंके बने छ-
 उत्पत्ति.
 प्रजा, (स्त्री०) प्र+जन्+ञ् । सन्तति । प्रजा-
 रक्षयत.
 प्रजाद, (त्रि०) प्रजां ददाति+दा+ङ ।
 वाया । बंध्यापनको दूरकरनेवाला.
 प्रजानन, (त्रि०) नी (स्त्री०) प्र+जन्+ञ्
 करनेवाला । उत्पादक.
 प्रजान्तक, (पु०) प्रजा अन्तयति-ना, प्रज-
 यमराज । सृष्टिकी देवता जो उत्पादनरूप
 बालता है.
 प्रजापति, (पु०) ६ त० । प्रजाका पति ।
 प्रजा । प्रजा रचनेहारा । दक्ष आदि नौठों
 जामाता (बकाई) । सूर्य । अग्नि । लक्ष्मी ।
 प्रजावती, (स्त्री०) प्रजा विद्यते अस्या +ञ्
 है । जिसकी सन्तान हो ऐसी स्त्री । माई
 पुत्र भी अपना होनेसे) .
 प्रजेष्णु, (त्रि०) प्रजायाः ईष्णु = अन्नं ईष्णु
 उ । प्रजाकी इच्छा करनेवाला.
 प्रज्ञा, (स्त्री०) प्र+ज्ञा+ञ् । बुद्धि । खरखती ।
 प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+भ्युद् । बुद्धि । "ज्ञानं
 (विद्या) " "आत्म्".
 प्रज्ञु, (त्रि०) प्रजते (विरले) जानुनी बस
 के स्थानमें "जु" होता है । विरले पुत्रों (पु-
 प्रहीन, (न०) प्र+ही+ञ् (तथो न) ।
 (गी).
 प्रणय, (पु०) प्र+नी+अप् । प्रीति । प्रीति
 उत्पत्ति । छेद (विचार) । विषय (बले
 निर्माण) कायित.

प्रेम- (पु०) प्रणयः (प्रेम) अग्नि अस्त्र+इति । प्रेम
- वाद्य । मतो । नायक.

प्रेम- (पु०) प्रकषेण नृत्यते अनेन । प्र+नृ+अप् । जिसे
। सुनि की जाती है । ओंकार । वेदके आदिमें पढ़ने-
- के शब्द.

प्रेम- (पु०) प्र+नम्+पम् । ऊंचापाद । कानका रोग.
- (पु०) प्र+नम्+पम् । प्रणति । शुद्धता (आठ अंगों-
- व्यापारविशेष) .

प्रेम- (वि०) प्र+नी+भ्यत् । अद्यत्मत । प्रेम्प । प्रीति-
- य । दुःखमन । प्रीतिरहित । साधु और पिपासा (प्रिय) .

प्रेम- (म०) प्रणिपीयते । प्र+नि+धा+भ्युद् । प्रयत्न ।
- विद्या । अभिनिवेश । एक बातपर दुःखजाना । योगसाध-
- "ध्यान" खयाल बांधना.

प्रेम- (पु०) प्रणिपीयते । प्र+नि+धा+फि । घर । दूत
- प्रत-प्रतिभा) । अनुसर (मौंकर-वाकर) । बापन
- मांगना) और अक्षयान । सत्यता.

प्रेम- (म०) प० । पतति । अपातीत् । सिद्धीके लाने
- करना । प्रणाम करना । आदरसे चरणोंपर गिरना ।
- कर्म करना.

प्रेम- (पु०) प्र+नि+पत्+पम् । शुद्धता । प्रणाम ।
- 'तद्विद्धि प्रणिपातेन' शीता.

प्रेम- (म०) प्रणिपातः पुरः सरति यथा
- उपा । नमस्कारके धार.

प्रेम- (म०) प्रणिपातस्य विद्या । प्रणाम
- करना । शिक्षकता । शुद्धनेकी विद्या (इत्य) .

प्रेम- (वि०) प्र+नि+धा+फ । प्राप्त । पाया । स्थापित ।
- रक्तादुष्ठा । सामर्थ्यमें लगादुष्ठा.

प्रेम- (वि०) प्र+नी+फ । वह पदार्थ जि जिसका रूप
- रण आदि पढ़नेसे बढ़त गया हो । शिष्य । पंचादुष्ठा ।
- रक्तादुष्ठा । और विद्यादुष्ठा । यज्ञ । संस्कार की गई अग्नि
- (पु०) । यज्ञका पादविशेष (मी०) .

प्रेम- (पु०) प्र+नी+भृच् । नायक । डेजनेबला ।
- बनानेवाला । उपन करनेवाला । शिक्षा देनेवाला.

प्रेम- (वि०) प्र+नी+भृच् । बदर । कपील । बाबूने
- आदुष्ठा.

प्रेम- (मी०) प्र+तन्+फिन् । विस्तार । फैलाव । बड़ी ।
- कथा । डेज.

प्रेम- (पु०) प्र+तन्+भृच् । दुःखमन पदार्थ । दुःखाली की
- ताल । (म०) प्र+तन्+भृच् । दुःखमनविशेष । "प्र+तन्+भृच्+
- वैशुभोर् अङ्गुलिभोजनस्य इत्य । कवेर (पु०) .

प्रेम- (पु०) प्र+तन्+भृच् । शेष और दम्भसे उपन लेव ।
- उपचार । कर्मी । अक्षय इत्.

प्रतारण, (न०) प्र+तु+निन्+भ्युद् । बंधन । ठगना "तुन्"
- प्रतारण.

प्रति, (अन्त्य०) व्यति । पैठाना । अग्रम भाग । उलटकर
- देना । जो । और । फिर.

प्रतिकर्मन्, (म०) प्रति+ह+मनिन् । इतिम भूया । बन-
- वटी सजावट । राजाना.

प्रति(ती)काट, (पु०) प्रति+हृ+पम् वा टीपं । बेरि-
- योतन । बदला निकालना । विवेकपूर्ण अक्षरका बंधनी
- अक्षर करके शोधन करना । रोग आदिकी चिकित्सा ।
- इलाज । हठाना.

प्रति(ती)काटा (ग), (वि०) । प्रतिभ्यं बालने । काट+
- पम् वा टीपं । तुल्यता । गरम । समक । एक पैसा.

प्रतिकूल, (वि०) प्रतिभ्यं कूलं पदाः अन्व । विरुद्धपदा-
- का । अनुकूल । विरुद्ध । बरवण । विरुद्धपदाके अक्षय्य
- करनेवाला

प्रतिष्ठति, (मी०) प्रति+ह+फिन् । प्रिया । उपारव ।
- तगवीर । मुभाफिक्त । प्रतिनिधि । इबरी । बगवती.

प्रतिक्षण, (अन्त्य०) क्षणं क्षणं व्याप्य । व्याप्तौ अन्त्यो० ।
- अक्षीरण । बार बार.

प्रतिक्षिप्त, (वि०) प्रति+क्षिप+फ । प्रेषित । भेजदुष्ठा ।
- अधिक्षिप्त । शिक्षकागता । बालित । हटगना । विरुद्ध ।
- विरुद्ध विद्यादुष्ठा.

प्रतिपूजम्, (अन्त्य०) पूर्यं पूज्यं म० । प्रीति । हर-
- एक परमं.

प्रतिपद, (पु०) प्रति+पद्+अप् । शीघ्रतर । बड़का । सर्व
- रियेगसे दम्भका देना । ऐनकी पीड । हाथ देना । सर्व

प्रतिपातन, (म०) प्रति+हृ+अर्थे निच् भ्युद् । क्षय ।
- मारना.

प्रतिपद्यन्, (म०) ऊर्ध्व- अक्षिप्य । प्रतिपत् ऊर्ध्व-
- अभिप्रदुष्ठा । आदरके अनुसर । हरेके दुःखविष ।
- प्रतिभ्य । तगवीर

प्रतिपदाया, (मी०) प्रतिपत् ऊर्ध्व । म० । प्रतिपत् ।
- तगवीर । एवही ऊर्ध्व । प्रतिपत्ता । बालर । एवही
- उपनका होय.

प्रतिपत्ता, (मी०) प्रति+हृ+अ । सर्व-अक्षिप्येते । इत्यम् ।
- अक्षय्येते पर-विदित । अक्षय्येते इत्युक्ते इत्यम् ।
- "पदं वक्षिप्यते" (यत्) वक्षिप्यते सर्व-अक्षिप्येते
- शिवा है) । अक्षय्य (एत) में से जाने से अक्षय्य
- पदार्थ विद है देना अक्षय्य "अक्षय्य" "प्रतिपत्ता".

प्रतिपत्ता, (वि०) प्रति+हृ+अ । इत्यम् । अक्षय्येते इति-
- इत्वा विद । इत्यम् । अक्षय्येते.

प्रक(का)ण, (पु०) प्र+कृ+अप् घम् वा । धीनकी
 खवाज । वीणाका शब्द.
 प्रक्षेडन, (पु०) प्र+क्षेड+ल्यु । नाराचात्र । विपठित
 लोहेका-सीर.
 प्रखर, (त्रि०) प्रकृष्टः खरः । प्रा० ग० । अत्यन्तोप्र ।
 बहुत तीखा । हयमन्त्रा । घोडेका साज । कुहुट । कुत्ता ।
 अथतर (यथर) (पु०).
 प्रक्ष्या, (स्त्री०) प्र+क्ष्या+अ । साहस्य । धरापरी । उ-
 : तत्परमें रहता है । तुल्य अर्थमें " पितृप्रक्ष्यः " ऐसे
 ही " निम " आदि होते हैं.
 प्रगण्ड, (पु०) प्रकृष्टः गण्डः (अथययः) । अक्ष्य गण्ड
 (कपोल) । कोहनी (कूर्पर) से छे कछु (बगल).
 तक भुजा । दुर्ग (फिले) की सीपार.
 प्रगल्भ, (त्रि०) प्र+गल्भ+अच् । प्रयुज्यप्रमति । जिम-
 की बुद्धि समयपर सट पूर्ती है । प्रतिभावाला । हाजिर
 बवान । एक प्रकारकी नायिका (स्त्री०).
 प्रगाढ, (त्रि०) प्रकषेण गाडं । गाह+क । बहुत गाढा ।
 अत्यन्त । ग्या । हड । मजबूत.
 प्रगुण, (त्रि०) प्रकृष्टे गुणे यस्य । सीधे खभाववाला ।
 दस । चतुर.
 प्रगृह्य, (न०) प्र+ग्रह+अयच् । व्याकरणमें स्वरसन्धि न
 होनेकायक पद.
 प्रगो, (अन्त्य०) प्रगीयते अत्र । प्र+गो+के । अतिप्रातःकाल ।
 बहुत गवेर.
 प्रगोपन, (न०) प्र+गु+अन । रक्षण । बचान.
 प्रग्रयन, (न०) प्र+ग्रय+अन । गुयना । गुना । एक
 दुगरोको इच्छा करना.
 प्रग्रह-पद, (पु०) प्र+ग्रह+अप्+घम् वा । ग्रहण । पक-
 रना । घोडे आदिकी रखी । लगाम । फिरण । बन्दी ।
 भट । मुख । बाह.
 प्रघन, (न), (न०) प्र+घ्न+अप् । बाहिरके दवाजेका
 चमरा । बगोरा । लोहेका मूलक (मोला).
 प्रघण्ट, (त्रि०) प्रकषेण कण्ठः । प्रा० । कुपेरे । कुपेड ।
 दुग्न् । दुग्न् । प्रगती.
 प्रघण्टघोष, (त्रि०) प्रकण्ठा घोषा यस्य । बडे नाक-
 बन्ध । छेकी नाकवाडा.
 प्रघण्टमूर्ध, (त्रि०) प्रकण्ठः सूर्यः यत्र । तीक्ष्ण (तेज)
 सूर्यकः (देव-अनन).
 प्रघण्टानर, (पु०) प्रकण्ठः अन्तरः । भीयन (हउरनी)
 वाली (घृ).
 प्रघस्य, (पु०) प्र+घि+अच् । लघुर । बरना । विविध
 (टाड) बन्दी करने.
 प्रघुट, (त्रि०) प्र+घु+अच् । बहुत । बहुत.

प्रचेतस, (पु०) प्र+चिन्+अन्ति । तत्-
 अचछेदिलवाला (त्रि०).
 प्रच्छ, निमासा । पृथना । पु० पर द्वि० २० ।
 अग्रशीन्.
 प्रच्छन्न, (न०) प्र+छन्+क । (का० १०)
 ह । अन्नद्वार (भीतरका दवाजे) ।
 प्रच्छन्नतस्कर, (पु०) प्रच्छन्नः तन्म-
 (नजानागया) चोर.
 प्रच्छदिका, (स्त्री०) प्रच्छदयति । छदं-
 रोग । दाहीकी बीमारी.
 प्रच्छादन, (न०) प्रच्छाद्यते अनेन । ह-
 जिसे धांपते हैं । उत्तरीय बत्र । कपड़े की
 प्रजन, (पु०) प्रजायते अनेन । प्र+जन्-
 दिपु पुंगस्य संयोजनम् । पढ़िछे कपड़े की
 भेट आदिसे मिलाना । पञ्जोके कने मिलने
 उत्पत्ति.
 प्रजा, (स्त्री०) प्र+जन्+अच् । सन्तति । जन ।
 रयत.
 प्रजाद, (त्रि०) प्रजां ददाति+दा+क । द-
 वाला । बंधापनको दूर करनेवाला.
 प्रजानन, (त्रि०) नी (स्त्री०) प्र+जन्+अच् ।
 करनेवाला । उपायक.
 प्रजान्तक, (पु०) प्रजां अन्तयति-क, प्रज-
 यमराज । सृष्टुकी देवता जो उत्पत्तिनरक
 हारना है.
 प्रजापति, (पु०) १ त० । प्रजायते । प्र-
 ज्ञा । प्रजा रखनेवाला । दस आदि नोके
 जानाना (जगई) । सूर्य । अग्नि । तप ।
 प्रजावती, (स्त्री०) प्रजा विजयते अन्त्य-
 है । जिमकी सन्तान हो ऐसी स्त्री । नईकी
 पुत्र भी अपना होनेके).
 प्रजेपतु, (त्रि०) प्रजायाः ईप्सु = अर्पण इप्सु
 उ । प्रजाकी इच्छा करनेवाला.
 प्रजा, (स्त्री०) प्र+ज+अ । बुद्धि । मागनी ।
 प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+अप् । बुद्धि । " ज्ञाने
 (विद्या) " अथ".
 प्रज्ञ, (त्रि०) प्रजने (जितने) जनुकी अर्थ ।
 के अर्थमें " ज्ञ " होगा है । मिले बुद्धि (ज्ञान)
 प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+अ (लो न) ।
 (गति).
 प्रजाय, (पु०) प्र+जी+अयच् । प्रीति । प्रीति हो
 टगति । छेद (विवर) । विषय (बडे)
 विषय । अग्नि.

व, (पु०) प्रलयः (प्रेम) अग्नि अस्व+इति । प्रेम
यात् । भाग । नाशक ।

(पु०) प्रक्षेपेण नूदने अनेन । प्र+नू+क्षप् । शिरो
। क्षुति की जाती है । शोकार । पेदके शक्तिमें बदने-
के शब्द ।

(पु०) प्र+नम्+पम् । खेपाशब्द । कानका रोग ।

प्र, (पु०) प्र+भम्+पम् । प्रगति । हुकना (आठ अंगो-
व्यपारविशेष) ।

प्र, (प्रि०) प्र+नी+ष्यत् । अगम्यत । द्वेष । प्रीति-
य । दुस्मन । प्रीतिरहित । माधु और विषादा (प्रिय) ।

प्रान, (न०) प्रविधीयते । प्र+नि+धा+ङ् । प्रमत्त ।
चित्त । अस्मिनिवेश । एक कानपर हुकना । योगशास्त्र-
"ध्यान" शब्दात् बोधना ।

प्रि, (पु०) प्रविधीयते । प्र+नि+धा+ङ् । चर । दृढ
गुण-वृत्तिभा । अनुचर (नौकर-वाकर) । वाचन
सांगना) और वाचपान । वाचाल ।

प्रन्, भ्वा० प० । पतति । अवातीत् । टिठीके आगे
। प्रनाम करना । शादरसे चरणीचर गिरना ।
। लम्ब करना ।

प्रपात, (पु०) प्र+नि+पत्+पम् । हुकना । प्रणाम ।
"तद्विद्धि प्रविपातेन" श्लोकात् ।

प्रपातपुरःसर, (अन्व०) प्रविपातः पुरः पठति यथा
उवा । नमस्कारके शेष ।

प्रपातशिखा, (स्त्री०) प्रविपातस्य शिखा । प्रणाम
करना । शिखरना । हुकनेकी शिखा (इत्यम्) ।

प्रदित, (प्रि०) प्र+नि+धा+ङ् । प्राप्त । पाप । स्वार्थिन ।
रक्षताहुआ । समाश्रितमें लगाहुआ ।

प्रित, (प्रि०) प्र+नी+ङ् । वर पदार्थ कि विषयका रूप
रण आदि करनेसे बद्ध गया हो । शिष्य । कैलाहुआ ।
रचना हुआ । और कियाहुआ । यह । संस्कार की गई अग्नि
(पु०) । यज्ञका पात्रविशेष (स्त्री०) ।

प्रोन्, (पु०) प्र+नी+ङ् । नाशक । खेपानेवाला ।
। बनानेवाला । उत्पन्न करनेवाला । शिक्षा देनेवाला ।

प्रोय, (प्रि०) प्र+नी+यत् । वरप । अपीन । काचमें
आयाहुआ ।

प्रति, (स्त्री०) प्र+सन्+ङ् । विचार । फैलाव । बारी ।
। कना । बेल ।

प्रितन, (पु०) प्र+सन्+ङ् । पुरातन पदार्थ । पुरातनी चीज ।

प्रितल, (न०) प्रहृष्टं तलं । पातालविशेष । "प्रहृष्टं तलं अस्व"
फैलीहुई अंगुलिजोवाला हाथ । चपेट (पु०) ।

प्रिताप, (पु०) प्र+तप्+पम् । बोध और दग्धसे उपजा लेज ।
। चपटाप । गमी । आठका शृङ्ग ।

प्रितारण, (न०) प्र+तृ+मिन्+ङ् । पंचन । ठगना "तुष्"
प्रितारण ।

प्रिति, (अन्व०) अग्नि । फैलाना । अशुभ भाग । उलटकर
देना । बो । शोर । फिर ।

प्रितिकर्मन्, (न०) प्रति+ङ्+मनिन् । इष्टिम भूया । बना-
वती सजावट । सजाना ।

प्रिति (स्त्री) काट, (पु०) प्रति+ङ्+पम् वा शीपः । वैरनि-
सांगन । बदला निकालना । मियेहुए अचवारना वैसाही
अचवार करनेके सोचन करना । रोग आदिकी चिकित्सा ।
। हलाक । हटाना ।

प्रिति (स्त्री) काटा (णि), (प्रि०) । प्रतिकल्प काशते । कासा-
पम् वा शीपं । गुल्बण । सरस । चमक । एक शैला ।

प्रितिशूल, (प्रि०) प्रतिकल्पं कूलं पशुः वास्य । विरहपशुवा-
ला । अनगुहूल । विरह । बरपत । विरहपशुको अवलम्बन
करनेवाला ।

प्रितिशक्ति, (स्त्री०) प्रति+ङ्+ङ्किन् । प्रतिमा । शादरप ।
। तसवीर । मुआफिक । प्रतिनिधि । इबनी । बराबरी ।

प्रितिक्षण, (अन्व०) शपं शपं व्याप्य । व्याप्तौ अन्वयी० ।
। अगीक्षण । बार बार ।

प्रितिक्षित, (प्रि०) प्रति+ङ्किन्+ङ् । प्रेषित । मेआहुआ ।
। अविशित । शिष्टकागया । बाधित । दृष्टगया । तिरस्कृत ।
। निरादर कियाहुआ ।

प्रितिशुद्धम्, (अन्व०) शुद्धं शुद्धं-अन्व० स० । प्रतिपर । हर-
। एक परमें ।

प्रितिमह, (पु०) प्रति+मह+अप् । स्वीकार । बहूल । धमांयं
। दिवेगये इत्यथा लेना । सेनाकी पीठ । दान लेना । सर्व ।

प्रितिपातन, (न०) प्रति+ङ्+साधे णिप्+ङ् । मारण ।
। मारना ।

प्रितिच्छन्दस्, (न०) छन्दः अभिप्रायः । प्रतिपत्तः छन्दः ।
। अभिप्रायात्तरूप । आशयके अनुपार । इरादेके मुआफिक ।
। प्रतिरूप । तसवीर ।

प्रितिच्छाया, (स्त्री०) प्रतिरूपा छाया । प्रा० । प्रतिमा ।
। तसवीर । एकही छाया । प्रतिरूपता । शादरप । एकत्रैही
। एकत्रैही शब्दका होना ।

प्रितिक्षा, (स्त्री०) प्रति+ङ्+अ । कर्तव्यतयोपदेना । इकरार ।
। छाप्तरसे पक्षनिर्देश । सम्भवतसे पक्षको कहना ।
"पर्वत बहिवाला है" (यहाँ बहिमन्षसे पर्वतका निर्देश
किया है) । व्यवहार (दावा) जैसे इन्से मेरा अनुक
पदार्थ लिया है देना नहीं "स्तुद्" "प्रतिज्ञानम्" ।

प्रितिसात, (प्रि०) प्रति+ङ्+अ । पहिला कहाहुआ प्रति-
। शाका विषय । इकरार कियागया ।

प्रतिदान, (न०) प्रतिरूपं (तुल्यरूपं) दानं । प्रा० स० ।
विनिमय । बहदा । तुल्यरूप दान । एक चीज देकर दूसरी
देना । न्यस्त द्रव्यका फिर अर्पण करना । समानत हवाले
करना ।

प्रतिध्वनि, (पु०) प्रतिरूपः ध्वनिः । प्रतिशब्द । एक जैसी
धावात्र । गूंज ।

प्रतिध्यान, (पु०) प्रति+ध्+यन्+घञ् । प्रतिशब्द । गूंज ।
उलटाहुआ शब्द ।

प्रतिनमु, (पु०) प्रतिनिहितः नत्ता । पीत्रः । प्रा० । पोतेका
पोता । पदपोता । प्रपौत्र ।

प्रतिनिधि, (पु०) प्रति+निधीयते । तुल्यरूपतया स्थाप्य-
ते) । प्रति+नी+धा+क्ति । प्रतिरूप । वैसी शकलवाला ।
अरनी जगह बैसाही कामम करना । इबनी । प्रतिमा ।
तस्वीर ।

प्रतिनिर्यातनम्, (न०) प्रतिकूलं निर्यातनं । लौटादेना ।
बुकादेना ।

प्रतिनिविष्ट, (त्रि०) प्रति+नि+विष्+क्त । अनिमानी ।
सहस्रसमावकाश । उलटा । बुटिल ।

प्रतिपक्ष, (पु०) प्रतिकूलः पक्षो यस्य । विरुद्ध पक्षवाला ।
घुबु । ध्वनहार । विरुद्ध प्रतिवादी । बाँधकाफ बोलेनेहाय ।
प्रा० स० । समान ।

प्रतिपक्षि, (स्त्री०) प्रति+पक्ष्+क्तिन् । प्रवृत्ति । प्रागल्भ्य ।
पीरख । चतुर्धरं । गौरव । प्राप्ति । पदकी प्राप्ति । कर्त-
व्यका हन ।

प्रतिपद्, (स्त्री०) प्रतिपद्यते (उपकल्प्यते) पद्म । अनया ।
प्रति+पद्+क्तिप् । पक्षको धारम्भ करनेवाली त्रिपि । प्रति-
पदा । पदा । एवम ।

प्रतिपद्य, (त्रि०) प्रति+पद्+क्त । अवगत । जानाहुआ ।
लौहव । मानहुआ । विकल्प । बलवाला ।

प्रतिपादन, (न०) प्रति+पद्+भिच्+भ्युद् । दान देना ।
सम्पन्न । बहदा ।

प्रतिपसय, (पु०) प्रति+प्र+मु+अच् । निविदकी फिर
प्रतिनी सम्यक्ता । फिर बैदा होना ।

प्रतिपद्य, (पु०) प्रति+पद्य+घञ् । कार्यप्रतिपात । कामका
बहदा+भ्युद् । प्रतिपद्ये । सोचनेवाला (त्रि०) ।

प्रतिपद्य, (पु०) प्रति+पद्ये बर्ध दद्य । विरुद्ध बहदाका घुबु ।
“प्रतिपद्ये बर्ध दद्य” । समान बहदाका (त्रि०) “दो मे
द्विपद्ये बोधे” कर्त्त ।

प्रतिपद्य, (न०) प्रतिपद्ये विभ्यं । विरुद्धपक्ष । परछ-
टा । प्रतिपद्य ।

प्रतिपद्य, (त्रि०) प्रतिपद्ये मर्धे अकार । मर्ध देनेहाय ।
१ । बहदा ।

प्रतिमा, (स्त्री०) प्रति+मा+अ । बुद्धि ।
कृतीकी अक्ति ।

प्रतिभू, (पु०) प्रतिनिधिः भवति । मूर्तिः
है । लम्क । जामिन ।

प्रतिमन्दिरम्, (अथ०) मन्दिर-मन्दिरं
एक) मन्दिर (घर) में ।

प्रतिमा, (स्त्री०) प्रति+मा+अ । सहस्रसमा
करना । मूर्तिशालिकारिमूर्ति । मूर्ति वा स्तुति
वीर । सहस्र (समान । एक बैसा) (त्रि०)
“द्विप्रतिमा” ।

प्रतिमान, (न०) प्रतिमीयतेनेन । प्रतिमानं
प्रतिविम्ब । परछाही । प्रतिमा ।

प्रतिमुक्त, (त्रि०) प्रति+मुक्+क्त । परदेहा
कोर छोडाहुआ । बाँधगया । बहदाका ।

प्रतियज्ञ, (पु०) प्रति+यज् । नद् । बहदा ।
मद् । निमद् । रोचना । एक चीजको दुसरा
बाधना । संस्कार । देना मेटनेकी । “प्रतिपद्ये
म० । एक बैसा यज्ञ करनेहाय । (त्रि०)

प्रतियातना, (स्त्री०) प्रति+यात्ने कर्त्त ।
घुबु । प्रतिमा । तसवीर । प्रा० स० । तुल्य
एक जैसी पीटा ।

प्रतियोगिन्, (त्रि०) प्रतिष्ठां युजते ।
तुम् । विरुद्ध बुझना है । प्रतिवृत्त कल्पना
अभावका प्रतिकूल संबंधवाला होनेके
प्रतियोगी है । विरुद्ध पक्षवाला । विरोधी ।

प्रतिक्रय, (न०) प्रतिगतं रूप । प्रतिक्रय
तसवीर । परछाही “प्रतिगतं का कर्त्त” ।
(समान एक जैसा) (त्रि०) ।

प्रतिलोम, (त्रि०) प्रतिगतं लोम (अनुप
प्रति+लोमन्+अच् । जो अनुपलब्धने निर
विवरीत । उलटा ।

प्रतिलोमज, (पु०) प्रतिलोमान् जन् ।
बर्धकी स्त्रीमें नीच बर्धमें उगव हुका ।
मंहर । दोगला ।

प्रतियचन, (न०) प्रतिष्ठां वचनं । वैसी
बाध । उत्तर । अभाव विरुद्ध बाध ।
उलटा बोलेना ।

प्रतिपात, (त्रि०) प्रतिपत्तो कर्त्तव्यं ।
उलटा हुआ । त्रिग कोरये वाबु कोरका ।

प्रतिपादिन्, (पु०) प्रतिपद्ये कर्त्त ।
विरुद्ध पक्षवाला ध्वनहार । प्रपौत्र ।
बोलेनेवाला (त्रि०) ।

ती (वेत्ति) न्, (प्रि०) प्रत्यासन्नं वपति (वि-
प्रति+वप्+विन्) वा विनि । पाठ रहनेदार ।
। पृष्ठासन्नवाची । परके निकट वाच करनेदार ।
या ।
वान, (न०) प्रति+वि+धा+व्युद् । प्रतीवार ।
। बदलावेना ।
वेष, (पु०) प्रति+वेष+भावे पन् । वाप ।
। प्रतिबंध । विप्र । निरोध । विरस्कार । और
(चोरी) । " अन् " ।
श, (पु०) प्रति+विष्+पम् । प्रतिवेरी । पकोरी ।
श्या ।
दिान् (प्रि०)-नी (स्त्री०) प्रति+विष्+गिति ।
षी । हमसाया । परके साथ विवाह करनेवाला ।
गसन, (न०) प्रति+सास+व्युद् । निवृष्ट भ्रूलादि-
आदा करना । हुकम करना । विद्व आदा । बदि-
ह हुकम । " अप्रतिशयनं जगत् " रयुः ।
प्या, (स्त्री०) प्रति+प्ये+अच् । प्रीतकी व्याधि ।
ला । "प्रतिश्यान", "प्रतिश्याव" गी इषी अर्थने ।
प्रय, (पु०) प्रतिप्रीयते । प्रति+प्रि+अच् । यहा
। सभा । घर । आसय ।
प्रय, (पु०) प्रति+प्रु+अच् । खीकार । कपूल कर-
। मान केना । गुंन ।
धुन, (स्त्री०) प्रतिरूपं भूयते । धु+प्रिप् । एक बेगा
ना जाता है । प्रतिशब्द । प्रतिध्वनि । गुंन । प्रतिज्ञा ।
कार ।
वेष, (पु०) प्रति+विष+पम् । निषेध । रोचना ।
"मन कर" ऐसा इतना ।
एधम्, (पु०) प्रति+साध्म+पम् । प्रतिबंध । छेक ।
। हावट । विप्र ।
प्रा, (स्त्री०) प्रति+स्था+अच् । सिधि । श्रुतकी । मन
हा दह आदिकी समाप्ति । कर अक्षरोंके पादकाल
एक छन्द । ह्य आदिवा शेरकार । मन आदिकी समाप्तिमें
बर्तभव बर्त । इत्यन । आभय । आसय । " अक्षरप्रति
प्रतिज्ञा " इति धृतिः ।
प्रेषापयिद्, (प्रि०) प्रति+प्रेष+अच्+पुण्यम् ।
। निदत्त करनेवाला । बन्धन करनेवाला ।
प्रेषित, (प्रि०) प्रति+प्रेष+क । बन्धनगया । विदर
दिवागया । रक्षतागया । राजीबक दिवागया । समस्त
विवागया ।
प्रेषर, (पु०) प्रति+प्रेष+अच् । रोचना विद्वत् भय ।
। इत्ययं सुत्र (संभव) । इत्ययं ।

प्रतिस्वर्ग, (पु०) प्रतिरूपः प्रतिबुद्धो वा स्वर्गः । प्रत्यापी
एथिके पीछे दस आदि प्रजापतिओंकी सृष्टि । विद्व
रचना । प्रलय ।
प्रतिसीरा, (स्त्री०) प्रति विनोति नियते वा । रह र्थेय ।
जबलिका । कनात । पम्दा ।
प्रतिमूर्त्यक, (पु०) प्रतिरूपः सूर्य+मूर्त्ये कन् । सन्मूर्त्य-
कमन्दल । सूर्यकी सभा । उसके गमान रणकाल इतकाल
(किरदा) ।
प्रतिवृष्ट, (प्रि०) प्रति+वृष्+क । प्रलयकाल । विरस्कार
विवागया । मेवागया ।
प्रतिवृष्ट, (प्रि०) प्रति+वृष्+क । मेवागया । इकर
(निषेध) कर दिवागया । दिवागया । मन होगया ।
प्रतिवृष्ट, (प्रि०) प्रति+वृष्+क । वैर विवागया । रोका-
गया । टककर भाउहुभा ।
प्रति (ती) दार, (पु०) प्रति+ह+पम् वा र्थेयः । उलटकर
चोट करना । दबांवा । "अन्" । द्वारपाल । दबांन ।
(प्रि०) । "सिनि" प्रतीहारी "मादाचरी" इतिह ।
प्रतीक, (पु०) प्रति+कन् । नि० र्थेयः । अवयव ।
दिसा । प्रतिरूप । दगरी सक्त । विरोध । बरषण ।
(प्रि०)
प्रतीक्षा, (स्त्री०) प्रति+ईक्ष+क । अवेला । इगिअरी ।
। जहरत । आशा ।
प्रतीक्ष्य, (प्रि०) प्रति+ईक्ष+अच् । वृत्त । इत्यनेके ल-
यक । प्रतीक्षा विवागया ।
प्रतीक्षीन, (प्रि०) प्रतीक्ष्यां भव +क । रथिपरिलेने
होनेवाला । "अन्" "प्रतीक्ष्य" गी अर्थ ।
प्रतीत, (प्रि०) प्रति+हृ+क । कल्प । प्रसिद्ध । सच-
हृ । इत । जनहुभा । एत । सुप्त होगया । अदर-
सहित । कीनहुभा । मनहुभा । विषय विदग्धता ।
प्रतीति, (स्त्री०) प्रति+त्ति+अच् । इत । कल्प ।
इति । अदरणी । अदर । इत । निरस ।
प्रतीप, (प्रि०) प्रति+अप्+वर्द० । अन् प्रि० । प्रीपुठ ।
बरषण । बन्धनगया एक छन्द ।
प्रतीपवृत्तिनी, (स्त्री०) प्रतीपे (प्रीपुठे) वृत्तिनि ।
एत+अच् । जो विद्वत् कर्तकी दिवाग देती है । "सिनि"
अर्थ । स्त्री । औरत ।
प्रतीपवृत्तमान्, (न०) प्रतीपे वृत्तने । विद्वत् वरष । अ-
दरके कोऊन ।
प्रतीर, (न०) प्रतीरिणे । प्र-तीर+क । एत । विदग्ध ।
। जो लरकव ।
प्रतीर, (पु०) प्रतीरते अवेव । प्र-र+अच् । शिरो र्थेय
होती है । जोके आदिके लरक करनेके लिये एक । अन्पुठ-

प्रतीक, (स्त्री०) प्र+भृत्+अच् । औष् । रम्भा । गर्भ-
कृत्वा । साहचर्ये बीचका भाग । हृद् धारिके पामका रासा।
प्रत्न, (त्रि०) प्र+क्ष+क् । दियगया । देवालयया । मेदा
दियगया । विवाहमें दियगया । विवाहागया।
प्रत्न, (त्रि०) प्र+क्ष । पुरातन । पुराना।
प्रत्यक्ष, (अव्य०) प्रतिरूपं अक्षः । अव्ययी० अच् । आंके
सामने । इन्द्रियोंसे उत्पन्न हुआ ज्ञान । इन्द्रियजन्य ज्ञान ।
“अच् उसवाला” (त्रि०) ।
प्रत्यक्षकृता-कृत्, (स्त्री०) प्रत्यक्षं कृता । साक्षात् देव-
ताको संबोधन करनेवाला सूक्त (गीत) ।
प्रत्यक्षज्ञानम्, (न०) प्रत्यक्षं ज्ञानं । साक्षात् अनुभवसे प्राप्त
हुआ ज्ञान।
प्रत्यक्षदर्शन-दर्शिन, (पु०) प्रत्यक्षं पश्यति+इच्छ्+अन+
वा इत् । साक्षात् देखनेवाला । आँखोंसे देखनेवाला।
प्रत्यक्षदृष्ट, (त्रि०) प्रत्यक्षं दृष्टः । साक्षात् (आँखोंके
सामने) देखागया।
प्रत्यक्षपरीक्षणम्, (न०) प्रत्यक्षं परीक्षणं । साक्षात् परीक्षा
करना (परपना । हम्मिदान लेना) ।
प्रत्यक्षप्रमा, (स्त्री०) प्रत्यक्षं प्रमा । इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष हुआ
कोई ज्ञान । निश्चित ज्ञान।
प्रत्यक्षप्रमाण, (न०) प्रत्यक्षं प्रमाणम् । प्रत्यक्ष होनेका
प्रमाण (सबूत) ।
प्रत्यक्षफल, (त्रि०) प्रत्यक्षं फलं यच्च । व्यक्त (प्रकट-जा-
हिर) फलवाला।
प्रत्यक्षभोग, (पु०) प्रत्यक्षः भोगः । इन्द्रियोंके सामने
खाया हुआ भोग।
प्रत्यक्षवादिन्, (पु०) प्रत्यक्षं वदति+मिति । नेत्र आदि
इन्द्रियोंसे आनीकई बात (सबूती) को स्वीकार करने-
वाला । एकप्रकारका बौद्ध धर्म केवल प्रत्यक्ष प्रमाणही
मानताहै।
प्रत्यक्षविहित, (त्रि०) प्रत्यक्षं विहितम् । साक्षात् विधान
दियगया । वेदसे साक्षात् आशा दियगया।
प्रत्यक्ष, (त्रि०) प्रतिगन्तं अर्थ (अप्रवम्) प्रा० । आगेहुआ ।
नृत्य । नया । साहचर्य।
प्रत्यक्ष, (त्रि०) प्रति+अव+ङिन् । पश्चिम काल । पितृव्य
समय । पश्चिमका देश । पश्चिम दिशा “पश्चिमी” ।
प्रत्यक्षीक, (पु०) प्रति+ङिन् । अनीक वच्य । त्रिपक्षी सेना
दियग हो । घण्टु । मित्र । शोक।
प्रत्यक्ष, (पु०) प्रतिगन्तः अर्थः । प्रा० । अन्तर्गत गया ।
अन्तर्गत देश । अन्तर्गत देश । पश्चिम देश (त्रि०) ।
प्रत्यक्ष, (पु०) प्रतिगन्तः (अन्तर्गतः) पश्चिम ।
अन्तर्गत देश । अन्तर्गत देश ।

प्रत्यक्षकार, (पु०) प्रतिगन्तः अर्थः । अन्तर्गत
देश । अन्तर्गत अर्थकार (पुण्ड्र) अर्थ।
प्रत्यक्षिमा, (स्त्री०) प्रति+अभि+ङिन् । अर्थ
चात्रा।
प्रत्यक्षियोग, (पु०) प्रतिरूपोपमियोगः ।
सवाल । अभियुक्त (मुद्दालय) ने ने
(सवाल)-
प्रत्यक्षिवाद, (पु०) प्रति+अभि+ङिन् । अर्थ
टकर बंदना करना । आधिपत्य बचन । “हृद्
निवादन” (न०) ।
प्रत्यक्ष, (पु०) प्रति+ङिन्+अच् । अर्थ । अर्थ
जाया । विधान । अधीन । शब्द । अर्थ (अर्थ)
आधार । निधय । साधु । मनेदार । अर्थ।
घातु वा नामको निमित्तकरके विधान करने
प्रकारका शब्द।
प्रत्यक्षकारिन्-कारक, (त्रि०) प्रत्यक्षं कर्ते
ष्वल् वा । निधय करने वा करनेवाला।
प्रत्यक्षित, (त्रि०) प्रति+अच्+क् । प्रत्यक्षं
नेदारा । विधायी । प्रतिगत । अन्तर्गत का ।
प्रत्यक्षिन्, (त्रि०) प्रत्यक्षं गते । प्रति+अर्थः । अर्थ
विति । साधु । दुस्मन् । “प्रतिगन्तं अर्थवर्ते” अर्थ
हारेमें प्रत्यक्षी । मुद्दालय।
प्रत्यक्षिण, (न०) प्रति+अच्+निच् । अर्थ+अर्थ
किरदेना । निवेद्युष्ट धनका किरदेना । अर्थ-
प्रत्यक्षययम्, (अव्य०) अवयवं अवयवं (अर्थ)
प्रत्यक्ष (हरएक) भागमें । विल्लासे।
प्रत्यक्षस्तान, (न०) प्रति+अव+तो+अन् ।
स्तान।
प्रत्यक्षस्तित, (त्रि०) प्रति+अव+तो+अन् । पुण
दिया । साधिया।
प्रत्यक्षस्तान्, (पु०) प्रति+अव+तो+अन् ।
(धर्मशास्त्र-कानून) में चार प्रकारके अन्तर्गत
एक प्रकारका औपध (न०) ।
प्रत्यक्षस्तान्, (त्रि०) प्रति+अव+तो+अन् । अर्थ
है । प्रतिपक्षपाटी । अर्थका कोलनेनका । अर्थ
प्रत्यक्षाय, (पु०) प्रति+अव+तो+अन् । अर्थ
गुनाह । अर्थ । अर्थ।
प्रत्यक्षिण-प्रत्यक्षिण, (न० स्त्री०) प्रति+अव+तो+अन् ।
+अर्थ । अर्थको अर्थका । अर्थका अर्थका । अर्थका
प्रत्यक्षिण, (त्रि०) प्रति+अव+तो+अन् । अर्थ
प्रत्यक्षिण, (न०) प्रति+अव+तो+अन् । अर्थ
अर्थकार । अर्थकार।

प्रथमप्रदानमनम्, (पु० क०) प्रति-आ+गम्+अ
 भा । संज्ञा । पीठे भाषा । पदुषणा ।
 प्रिण, (त्रि०) प्रति+आ+णि+अ+ । निर्या । नि-
 ता निर्याता । इतिरिच प्रिययाता । जीतयाता
 प्रिणा, (पु०) प्रति+आ+णि+अ+ । निराहरण ।
 रक्षणता । हुषण । इतिरि । इन्कार करना ।
 प्रानपन, (क०) प्रति-आ+नी+अन । लोटका । पीठे
 रण । विर मिलान
 प्राणित, (क०) प्रति+आ+णि+अ+ । अनुप्राणित-
 किये । कर्मे संस्कारे हीनोत्तर इतिने संस्कारे कर्तव्ये
 हीनोत्तरा वा होना । अनुप्राणितक पितया । आन्वहित ।
 प्राणित (त्रि०) "आणित" मे उटा ।
 प्राणित, (त्रि०) प्रति+आ+गम्+अ । आनिवृत्तय ।
 कृत नष्टिक ।
 प्राणित, (पु०) प्रति+आ+इ पम् । पीठे संपना । रोग-
 कर्म "प्रिणितो अने २ विपरीते निवृत्तय उटाता" ।
 किये होना । अन्वितमे "अण्" आदि ।
 प्राणित, (पु०) प्रति+उद्+अपम् । युद्धके विषे उद्योग
 (हिम्मत) । प्रथम प्रदीपनके उत्तरमे अत्रपानका आरम्भ
 करना । प्रवेष्ट कर्तव्ये जो पड़िठे पड़िठे करना उचित है ।
 काम करना
 प्राणित, (क०) प्रति+अ+उत्तर अन्व । त्रिपदा ठीक उत्तर
 हो । उत्तर उत्तर बनन । जब-जब जवाब ।
 प्राणित, (क०) प्रति+उद्+अपम्+अपुद् । अभ्युपान ।
 आगे हुएके सम्मानके विषे आचरण उटना । आगे
 उटना ।
 प्राणित, (त्रि०) प्रत्युप्रा (तन्कालेचिता) मनि-
 मन् । उचकाटमें उचित बुद्धिवाला । त्रिपदी अक्षि
 समपर पूर्ती हो ।
 प्राणित, (क०) प्रति+उद्+अपम्+अनीयद् । आगे
 उटनेलायक । पीतवस्तुम । धीरेहुए हो कपडे । उपस्था-
 नके लायक । पूजाकरनेके योग्य (त्रि०) ।
 प्राणित, (पु०) प्रत्युपनि (इति) कानुमान् । उपरोगी
 होना+क । प्रमाण । गवेर । दिनका मुख । कामिभोको
 पीरा देना है । आठ कपुभोमेंसे एक ।
 प्राणित, (पु०) प्रति+उद्+अपम् । विप्र । उपावट ।
 प्रय, प्रसिद्ध होना । अन्वा । आ० एक । वेद । प्रयवे । अ-
 पिट । "अह्" प्रया ।
 प्रथम, (त्रि०) प्रथ+अम् । प्रथम । बडा । भाष ।
 पहिला । "जम्" में सर्वनाम ।
 प्रथमकल्पित, (त्रि०) प्रथमे कल्पितः । पहिले चिन्तन
 (चयाल) किया गया ।

प्रथमगर्भ, (त्रि०) प्रथमः गर्भः । पहिला गर्भ । पहि-
 लीन गर्भवासी ।
 प्रथमद्विपत्तः, (पु०) प्रथमः द्विपत्तः । पहिला द्विपत्तः ।
 प्रथमपुत्र, (पु०) प्रथमः पुत्रः । पहिला पुत्र (अंम-
 मे हीनतापुत्र) ।
 प्रथमप्रायन, (क०) प्रथमे कीर्तनम् । पहिली जवानी
 जवानीकी दाख । पुत्रावस्था ।
 प्रथमपत्त, (क०) प्रथमे पत्तः । पहिली पत्त (आनु
 प्रथमपत्त, (पु०) प्रथमः पत्तः । पहिला पत्त (ने
 पितो) ।
 प्रथमपुत्रान्त, (पु०) प्रथमः पुत्रान्तः । पहिली क-
 (दाख) । पहिली अवस्था ।
 प्रथमपुत्र, (क०) प्रथमे पुत्रम् । पहिला पुत्र (ने
 कान) । पहिली मिहरवानी (दया) । पहिली सेवा ।
 प्रथमाधम, (पु०) प्रथमः आधमः । पहिला आधम
 ब्रह्मवांभम ।
 प्रथमेतर, (त्रि०) प्रथमात् इतरः । पहिलेसे दूसरा ।
 प्रथित, (त्रि०) प्रथ+अ । एवात । मशहूर । प्रसिद्ध
 आदि ।
 प्रथित, (पु०) प्रथोर्भावः । बडेका होना । प्रथित
 निष् । स्थूल । मोटाई । मोटापन ।
 प्रथित, (पु०) प्र+अ+अपु । विचारण । फाटना । अत्र
 तोरना । एक प्रकारका बीनिका रोग ।
 प्रथित, (पु०) प्र+अ+अपु । पीप । पीपा । पीपा । लेप
 प्रथित, (पु०) प्रथितपति जटारि । प्र+अ+अपु+अपु
 जो पेटकी भागको भडकाना है । एक प्रकारका विप (अ
 हिर) । बलवानेहारा (त्रि०) ।
 प्रथित, (त्रि०) प्र+अ+अपु । जगाका हुआ । रीतान किया
 गया ।
 प्रथितप्रथ, (त्रि०) प्रथिता प्रथ बस । जमीट्टई बुद्धि
 वाला । हीन बुद्धिवाला ।
 प्रथित, (त्रि०) प्र+अ+अपु । विगहया । नीच । बर
 माता । पापी । बुरा ।
 प्रथित, (पु०) प्र+अ+अपु । एकदेश । एक जिलह
 देश । मुक्त । मिति । पीवार ।
 प्रथित (त्रि०) प्र+अ+अपु । प्रथितमे अनया । प्र+अ+अपु
 करने लुद्ध-पीप । तजनी (अंगुठेके सापटी अंगुली) ।
 हीने बलुका निर्देश किया जाता है । मिति "प्रथितनी"
 वही अर्थ ।
 प्रथित, (त्रि०) प्र+अ+अपु । बडे दोष (ऐव)
 वाला । बूक । भूत । शायकान । रजनीमुग । रातका
 प्रारंभ । प्रथोय ।

प्रयुज्, (पु०) प्रकृतं युजं (बलं) यस्य । जिसका बल बल हो । कंदर्प । कामदेव । श्रीकृष्णजीका पुत्र (बेटा) ।
 प्रयुज्, (पु०) प्र+इ+अच् । पलायन । भागना । यम् "प्रयुज्-व" यही अर्थ है ।
 प्रयुज्, (न०) प्र+या+क्यु । युद्ध । लड़ाई । जंग ।
 प्रधान, (न०) प्र+धा+क्युट् । सर्वप्रथममें स्थित होगई सत्त्वराजसोमोक्ष तीन गुणोंवाली प्रकृति । उसका कार्य बुद्धितत्व । परमाणु । प्रधान । बहुत अच्छा । और सखिब (बगीच) । सेनापतिवर्गका अध्यक्ष (माणिक) (पु०) । श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) (वि०) ।
 प्रधानपुरुष, (पु०) प्रधानः पुरुषः । राज्यमें बड़ा प्रसिद्ध का मुख्य पुरुष । मंत्रका नाम ।
 प्रधानमन्त्रिन्, (पु०) प्रधानः मन्त्रः । मुख्य मन्त्री (बगीच) ।
 प्रधानामात्य, (पु०) प्रधानः अमात्यः । मुख्य मन्त्री । राज बगीच ।
 प्रधि, (पु०) प्रधीयन्ते काठानि अथ । प्र+धा+कि । जहाँ लकड़ियें रखी जाती हैं । पहियेके भागके लकड़ियोंके जुड़नेका स्थान । रखी जाति । पहिया । घुस ।
 प्रध्यान, (न०) प्रकृतं ध्यानं । गाढा खयाल । मनका पूरा २ एक धोर लग जाना ।
 प्रपञ्च, (पु०) प्र+पञ्चि-केलाना+अप् । फैलाव । संसार । व्यापन । इच्छा । संबन्ध । प्रसारण । टगना ।
 प्रपञ्चयुक्ति, (वि०) प्रपञ्च-करते बुद्धिः यस्य । धूर्त । बंचक । टगनेवाला । सचरा ।
 प्रपञ्चित, (वि०) प्र+पञ्चि+त् । विस्तृत । फैलायागया । पूरा बर्णन कियागया ।
 प्रपन्न, (न०) प्र+पन्+अन । गिरना । मृग्यु । मौन । लज्ज ।
 प्रपन्नित, (वि०) प्र+पन्+त् । गिराया । मज्ज होगया । मारना ।
 प्रपन्ना, (स्त्री०) प्रकृष्टा पन्ना । प्र० । सना । बहुत हित-करनेवाली । हरिनी । हरिण ।
 प्रपद्, (न०) प्रपद्ये पदं । प्र० । प्र० । पवित्रे भागेका अंग । पादप्रमाण ।
 प्रपद्य, (वि०) प्र+पद्+त् । प्रपन्नान् । प्रपन्नमें आगया । "प्रपद्यते देवे" काही ।
 प्रपद्य, (स्त्री०) प्रपद्यते अर्थात् । बहुत सीने हैं इसमें । प्र० । प्र० । प्र० । प्र० ।
 प्रपद्य, (पु०) प्रपद्यते अर्थात् । प्र+पद्य । बहुत गिरना है इसमें । प्र० (वि०) के प्रिद्य । अर्थप्रदान । बर्णना अर्थ । प्र० । प्र० । प्रिद्य । प्र० । प्र० ।

प्रपितामह, (पु०) प्रपितः पितामहो न्यून पितामहो वा । प्रिद्य बाबा (बूढ़ा) । अथवा अच्छा यात्रा प्रजाके जनक उत्पन्न करनेवाला चार मुखवाला ब्रह्म । पदवाचा उसकी । स्त्री । श्री (श्री) ।
 प्रपीय, (पु०) प्रगतः कारजनस्य पीने । पीनेका पुत्र । पदवाला ।
 प्रफुल्ल, (वि०) प्र+फुल्ल-विक्रान्त+अच् । सिलाहुआ । "प्रफुल्ल" यही अर्थ । प्रफुल्ल ।
 प्रपञ्च, (पु०) प्र+पञ्च+अच् । मंदनं । प्रपञ्च ।
 प्रपञ्चकरूपना, (स्त्री०) प्र० । प्रपञ्च । बोधासा खल और बहुतही मिथ्या (झूठ) रचना ।
 प्रपाल, (न०) प्रकरेण बलति । शासनो कार्यता है । नवपञ्च । नया पसा । लवण । मृगा । गीनका उगडा ।
 प्रपुञ्ज, (वि०) प्र+पुञ्ज+त् । जगहुआ । पुञ्ज विधित । बहुत ।
 प्रयोध, (पु०) प्र+पुञ्ज+अप् । प्रकृतं ध्यानं । जगना । नीरसे रहित होना ।
 प्रयोधन, (न०) प्र+पुञ्ज+निष्+सुट् । हा जोसे पहिली गन्धके म्यून हो जानेपर उसे उहीन करना । जगना । होठमें भर भरकरना ।
 प्रयोधनी, (स्त्री०) प्रपुञ्जते अन्वया । प्रपुञ्जिते जगता है । दुपलना । "प्रपुञ्जते इति समय मिथु जगता है । कर्मिष्टुनेकरी (कनक) के उग्रपक्षी एकदरी । "प्रयोधनी" अर्थ "प्र+पुञ्ज+निष्+निनि+कीट् ।
 प्रपञ्चन, (न०) प्रपञ्चति लृङ्गदीर्घ । प्रपञ्चिते आदिही लोचना है । क्यु । प्र० ।
 प्रपद्, (पु०) प्रकृतं पदं अर्थात् । प्र० । प्र० । कदापि होता है । नीमका इष्ट ।
 प्रपद्य, (पु०) प्रपद्यति अर्थात् । प्र+पद्य है इसमें । पहिली प्रकृतका लय । टगना हा । प्र० बर्णनेमें एक । "प्र+पद्यते अर्थ । प्र० । प्र० । प्र० ।
 प्रपद्यिन्, (पु०) प्र+पद्यन् । प्रपद्यते अर्थात् । प्र० । प्र० । प्र० । प्र० ।
 प्रपद्यिन्, (वि०) प्र+पद्यन् । प्रपद्यते अर्थात् । प्र० । प्र० । प्र० । प्र० ।

(पु०) प्रभी करोति । कृ+अच् । प्रकाश कर्ता ।
 प्रभु । एक मीमांसाशास्त्रके बनानेहारा ।
 प्रभा+क । प्रहृष्टं भातं अन्न । जिस समय
 प्रकाश होता है । प्रातः काल । सवेर । सुबह ।
 प्रभू+पम् । राजाओंका कोष (राजाना)
 प्रण (राजा) से उत्पन्न हुआ तेज । तेज । सामर्थ्य ।
 ताकत ।
 प्रभृ+क । एकप्रकारका शीर्ष । "प्रभासे पुष्करलि च"
 प्रभृ ।
 प्र+निदृ+क । धनन्मदगज । यह हाथी
 की मछली बू रही हो । मद बहानेहारा हाथी । प्रनेद-
 फरकवाला (वि०) ।
 प्र+भृ+ङ् । विष्णु । शब्द । पारद (पाठ) ।
 भी (अधिरवि) (वि०) ।
 प्र+भृ+क । प्रवृत्त । बहुत । उन्नत । (विक-
 हुआ) कच्चा ।
 प्र (अव्य०) तदारभ्य । सबसे डेकर । "बहुभूहि
 शतमे यह शब्द पीठे रहता है" । "इन्द्रप्रयत्नयो देवाः"
 प्र (वि०) प्र+मद्+क मर्या होगया । जिसको भारी
 या चढगया है ।
 प्र (पु०) प्र+मप्+अच् । शिवजीका एक अनुचर
 नौकर । और घोडा । हरीतकी (हरीट) (स्त्री०)
 धन, (न०) प्र+मप्+स्तुद् । बच । मारना । हेरा पशु-
 धाना । विलोडन ।
 प्राधिप, (पु०) १ व० । प्रमथोका स्वामी । शिवजी
 महादेव ।
 प्राधिन्, (वि०) प्र+मप्+गिति । लापार कर देनेवाला ।
 हेरा देनेहार ।
 प्राधित, (वि०) प्र+मप्+क । लापर कियागया ।
 बच पशुंवाया गया ।
 प्रमदन, (न०) प्रमदस्य (हर्षस्य) बर्नं । राजके अन्त पुर
 (कोशिक) का बन । राजके विद्यार्थ करनेके लिये
 एक बाग ।
 प्रमादा, (स्त्री०) प्रमादति अनया+अच् । जिससे बहुत
 मर्या हो जाताहै । उल्लस कोरिता । बलन स्त्री । बहुत
 सुन्दर स्त्री ।
 प्रमानर, (वि०) प्रहृष्टं मनो दस्य (इष्ट पदका श्लेष होना
 है) । जिसका मन बहुत उत्पन्न होता है । प्रहृष्टित
 उत्पन्नित ।
 प्रमा, (स्त्री०) प्र+मा+अच् । जिससे पदार्थका शिथल हो ।
 पदार्थ हान । छीक जाणा । अमरद्वित हान । देना ।
 कि संदेह न रहे ।

प्रमाण, (न०) प्रमीयते अनेन । जिसमे तथा ज्ञान हो ।
 यथार्थ ज्ञानका साधन । इन्द्रिय आदि । मर्यादा । साध ।
 सच बोलनेवाला । हेतु । कारण । प्रमाता । "भावे ह्युद्"
 तथा ज्ञान ।
 प्रमातामह, (पु०) प्रारब्धो मातामहो येन (आरम्भ पदका
 श्लेष होता है) । जिससे "नाना" का प्रारम्भ होता है ।
 पञ्चानाना । नानेका पिता । उगकी स्त्री "शीप्" प्रमातामही
 (पञ्चानानी) ।
 प्रमाद, (पु०) प्र+मद्+पम् । अनवधानता । बेपरवाही ।
 कर्तव्यको अकर्तव्य समझकर न करना और अकर्तव्यको
 कर्तव्य समझ करना ।
 प्रमापण, (न०) प्र+मीम्-द्विषा+भारता+स्वायं निच्-आत्वं
 पुष्+स्तुद् । मारण । मारना ।
 प्रमिति, (स्त्री) प्र+मा+किन् । प्रमा । पदार्थहान । तथा-
 जाणा । छीक २ जाणा ।
 प्रमीत, (वि०) प्र+मीम्-द्विषा+क । मृत । मरगया । दशके
 लिये मारागया पशु ।
 प्रमीला, (स्त्री०) प्र+मील्+अ । तन्ना । कंपना । आंघ
 मूंदना ।
 प्रमुक्त, (वि०) प्र+मुक्+क । सोल दियागया । सतक
 कियागया ।
 प्रमुक्त, (न०) प्रहृष्टं मुखं (आरम्भः) । अच्छा आरम्भ ।
 वस्त्रे डेकर । बहुभूहि शतममे यह पीठे रहता है । उल-
 वाला । मान्य । पहिला और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) जिसका
 सु सामने हो (वि०) समूह । सुगति (पु०) ।
 प्रमुदित, (वि०) प्र+मुद्+क । हृष्ट । हर्षयुक्त । उत्पी ।
 प्रसन्न । उत्प दुर्भ्य+विष+अच्+स्तुद् । समाह ।
 प्रमेद, (पु०) प्र । जेर । भेरा । भेरा । "दले ह्युद्दे-
 प्रमोद, (पु०) गी । शीप् ।
 प्रयत्, (वि०) प्र+यत्+क । प्रयापनस्य विधिः । समापनका
 नियम (संघ) । समापन ।
 प्रयत्, विरोध, (पु०) प्रयापनस्य विरोधः । विरोध-
 कोष (समापन) । भागी समापन ।
 "विषा, (स्त्री०) प्र+विष्+विच्-शुच्+शीर्-र् ।
 उरुदेवकी । संस्कार करनेवाली । किसी कीकी परि-
 कारिका ।
 प्रमापित, (वि०) प्र+विष्+विच्+क । अवंहृष्ट । सहा-
 कागया । पूरा कियागया ।
 प्रमात्, (पु०) प्र+मृ+पम्+अ । कैटन । मूला शोतन ।
 शिथल ।
 प्रमात्प, (न०) प्र+मृ+पम्+स्तुद् । शिथलकर
 कैटन ।

द्र, (पु०) बल+अच् । बलो बलवानपि भद्र । (लो-
 २) । बलवाला होकर भी भय है । बलदेव और गवय
 . येद) ।
 राम, (पु०) बलेन रमते । रम्+अर्त्तरि षम् । कृष्णका
 ग भाई । रोहिणीका मन्दन (त्रियपुत्र) । "संकर्यण"
 "राम" ।
 र्त्, (अन्व०) बल+अतिराये मनुष्य "म" बो "न"
 ता है । अतिराय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवात्य)
 त्रि०) ।
 र्धन, (त्रि०) बलं धर्षयति । बलको बढानेवाला ।
 शैष्टिक धर्मका धर्मि । "शैष्टिके बलधर्षन" ।
 चिन्त्यास, (पु०) बलनां (सेनानां) विरोधेण न्यासः
 स्थापनम् । म्यूर । एक प्रकारका सेनाको खडा करना ।
 नाकी रचना ।
 दालिन्, (त्रि०) बलेन धालते । दाल्+निनि । बलसे
 शोभता है । बलविशिष्ट । बलवात्य । ओष्ठर ।
 सूदन, (पु०) बलं (लक्ष्मणकं) समुरे । सूद+भ्यु ।
 बल नानी दैत्यको नाश करना है । इन्द्र । "बलनिपूरनः" ।
 रा, (स्त्री०) बलं अस्ति रासाः । बलवाली । विषामित्र
 मुनिसे रामचन्द्रको पीगई एक प्रकारकी अश्रुविषा ।
 टाका, (स्त्री०) बलं (बम्पनं) अटति (गच्छति) ।
 अन्+अच् । जो कांप जाता है । बलमेद । एक प्रकारका
 बगसा । बलधेनि । बगलेंडी कतार । पिपायी स्त्री ।
 प्रयिनी ।
 टाट, (पु०) बलं अटति (ददाति) अट्+अच् । जो
 बल (जोर) देती है । मुत्र । भूंगी ।
 टाह, (अन्व०) बल+अत्+किप् । इटाह । जोसे ।
 जोरावरी । अच नक । (पद्यमन्त्र " बल " टाहके
 धाय इसकी गणार्थना नहीं बरोंकि "बलटघर" इत्या-
 रिही सिद्धिके लिये इसे अचर्य सौकार करनाही पड़ेगा) ।
 इलाकर, (पु०) बल ह+ह+अच् । बलपूर्वक करण ।
 जोसे करना (इलाकरण) ।
 बलानुज, (पु०) अयु जयते । अयु+अन्+ङ । ६ व० ।
 ब०भद्रका छोटा भाई । धीहृष्यशी ।
 बलाय, (पु०) बलस्य भयः (स्थानं) । भय+अच् । बल-
 की जगह । बलननामी इत ।
 बलाप्राप्ति, (पु०) बलस्य (लक्ष्मणपुरस्य) अप्राप्तिः ।
 बलनामी दैत्यका कपु । इन्द्र । "बलरपु" वही सर्व ।
 बलाहक, (पु०) बलं (कर्णनं) आह्वयति । अ+ह
 हुन् । जो नहीं बोधता है । मेघ (बरक) । मुलक ।
 मुषा । मोषा । पर्यंत (पहाड) । और कानवेदः प्रभ-
 कालके बाल मेघोमेधे एक । विष्णुके चर लोकोमेधे एक ।

बलि, (पु०) बल-न् । पूजोपहार । पूजाकी भेट । राज
 खेने योग्य माग (कर-खिटाज) । उपद्रव । उपर
 चामरदण्ड । पांरी । एहस्यवे करनेलायक पांचपशोंमें
 "भूगयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कर्वाव" इति स्मृति
 एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (मुद्रापा) से बने
 सि.पेल होना (स्त्री०) का बीप् । सिद्धि । "एहस्य
 यदा पर्येत बनीरहितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदर
 यष । पेटका अंग । "बलिन्यं चाह बभार बाना" इ
 पुनारः । पुनारं अङ्गुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड ।
 बलिप्यंसिन्, (पु०) बलिं प्ययति । स्वस्थानात् प
 यति । अन्+पिप्+निनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थान
 गिराता है । विष्णु (कामनस्वरूपमें उपद्रव ऐसा न
 हुआ) ।
 बलिन्- (भ०) (त्रि०) । बलि+प्रत्यये इन् भ वा । वा
 बाल । जरा (मुद्रेवा) से दीले कमरेवाला ।
 बलिन्, (त्रि०) बलं आक्षि अस इति । बलवात्य । जो
 बाल । ऊंट । भैंसा । बैल । घावर (एयर) । बलवा
 बलिनन्दन, पुत्र=पुत्र, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलि
 पुत्र । काय नामा दैत्य ।
 बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारप्रत्येय) पुष्टः । पुष्ट
 क । पूजाकी भेटाके इत्ये पठगया । काक । बोभा । ब
 बलिमुत्र, (पु०) बलि (पूजोपहारप्रत्येय) एहस्यरा
 बलि का भुत्रे । त्रिप् । पूजाके साधनरत्न पदार्थ का परत
 पीगई बलिपो खाता है । काक । कापत । बोभा । कां ।
 बलि(स्त्री)मुख, (पु०) बलि (स्त्री) मुखं मुखं अस्य
 वाक० । जियका मुख बलि (हित्ति) बाल्य है । का
 र । बन्दर ।
 बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+इहन् । बल
 बलवात्य । अत्यन्तबलवान् । वृत् । ऊंट (पु०) ।
 बलिसरन्, (न०) ६ व० । बलिषा पर । पलाय
 " बलिपुर " ।
 बलिहन्, (पु०) । बलि हन्ति । बलिहो मारनेवाला
 विष्णु ।
 बलीयस, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईदन्
 बहुत जोरावात्य ।
 बलीयर्द, (पु०) बृ+विप्+बर् । ई (कर्णवीच) बन्नी
 बरी ली ददाति । वा+क ईवरी । बली कली ईवर्द्वि
 वृ । बैड ।
 बलय, (न०) बलय हिनं । बल+न् । प्रत्ये वन्
 बरी ईव । टुक । दीर्घ । मुगदह । और बलया रूपके
 अतिबल (बैड) (स्त्री०) ।
 ब, ब, दुदि-बका । अन्व० आत्य० अट० डेर् । ई
 ट । वं । रं) र्ते ।

बध्यभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे बद्ध-बधादेनाः । बध्यस्य भूमिः । मारनेच्छक जगह (स्थान) । इमशान । मघान । बधका स्थान । "बध्यस्थान" ।

बध्न, (न०) बन्ध+धृत् । " न " का लोप । सीसक । सीसा । चमटेकी रस्ती (तसमा) (स्त्री०) ।

बध्न्, बाचन । मांगना । तना० आराम० द्विक० सेट् । बधुते । अचनिष्ट । पत्ता वेद् ।

बन्ध्, बन्धन । बांधना । क्राया० पर० सक० अनेट् । बन्धति । अभान्सीत् ।

बन्ध, (पु०) बन्ध्+पञ् । संयमन । रोचना । निगड (संकडी) आदिसे किसीकी गति (चल) को रोचना । बांधना । "कर्मणि षच्" देह । शरीर । ऋण (कर्ज)

शोधन (चुकाना) के विनासके लिये रखा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि ।

बन्धक, (पु०) बन्ध्+भृत् । विनियम । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्तन) आधि । (न०) गिरवी रखी हुई चीज । जुंघनी । अघती स्त्री । व्यवभारिणी । छिनार मोरत । त्रियां धीप् ।

बन्धन, (न०) बन्ध्+भावे ल्युट् । निगड आदिसे संयमन (रोचना) बांधना । और बध (मारना) । " करने ल्युट् " रभु । रस्ती ।

बन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका यंमा (यंमा) हस्तिसंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकड़ी । आलयन । गजबंधन । छिन्न ।

बन्धनवेदनम्, (न०) ६ त० । बांधनेका पर । जेहराना । वेदखाना । "बाणपर" "बंधनापर" आदि हठी अर्थमें है ।

बन्धिन, (पु०) बन्ध्+इत् । प्यारका देवता । कामदेव । चम-देवा पंथा । चर्नयत्रन । दाग । निशान ।

बन्धु, (पु०) बन्धति मतः (वेदादिना) । बंध+उ । जो पिता आदिसे मनको बांध लेता है । हात । जात । मा-दुशुनादि । मांसेके बेटा आदि । बांधर । मित्र । पिता । मत्ता । भाई । एक दूध ।

बन्धुता, (स्त्री०) बन्धु+भावे लट् । ना समूह । बंधुता । बंधुओंका समूह ।

बन्धुद, (न०) बन्ध्+उत् । मुकुट । स्त्रीका निह । निजोंका बंध । बधिर । बधिर । सोरा । हंस । बगडा । और बली । मन्नेहर । तप । हठीय । उद्वन्तन (कंकानीया) (वि०) बेरका । बंधरी । लट् । लृट् (स्त्री०) ।

बन्धुद, (वि०) बन्ध्+उत् । आसन । एक दुभा । उद्वन्तन हस्तेः । हठीय । सुन्दर । वेदबधरका एक देव । दराध ।

बन्ध्, (पु०) (वि०) बन्ध्+वृत् । मना प् फलसे अन्य वृत्त । निष्कल । फलहित । नीय (रुकनेलायक) (वि०) । पुण्ड्र (जिसे पुत्र नहीं होता) त्रियां टाप् ।

बन्ध्याककौटी, (स्त्री०) बध्याका बन्धन (रान्) ककौटी । पुत्र देनेसे बांझ बन्ध्याका नैवाली ककौटी (बांझ करोड) वृद्धी । " सं अत इत्यम् " । यही अर्थ ।

बध्न, गति । जाना । म्ना० पर० सक० ने अघधीत् ।

बध्, (पु०) बद्ध (द्विवं) । बद्ध द्वा विष्णु । नकुल । नेबला । बद्धि । अघ । हर्ष देस । उस देशके वासी । ब० व० । त्रियां रंग । (पु०) । पीलेरंगवाला (वि०) ।

बधुधातु, (पु०) कर्म० लार्ण० होना । पुत्र और गेरी (टालबाक) ।

बधुधाहन, (पु०) अर्जुनका बेटा (विजयसे) पर, (न०) बृ+अप् । कुडुम केसर । बृ+अप् । अदरक । "कर्मणि अप्" । जमना (बर्बर देवता आदिसे आधा करनेलायक । पूर्वे मे वा "भावे अप्" बरण । कुबूल करना । मीसरा ।

बध्, गति । जाना । म्ना० पर० सक० दे । अघधीत् ।

बध्, देना । मारना । रभुति करना । मौर हंस्ट आत्म० सक० सेट् । बहते । अवर्द्ध ।

बध्, (न०) बध्+अच् । मयूतपिच्छ । मोरका पत्र । परीकर ।

बध्, जीना । मांगना । निष्पन्न-बचन । हर्षण म्ना० उभ० सक० सेट् । बध्ति-ले । अघधीत् ।

बध्, (न०) बन्ध्+अच् । संयम । सेनाके डेवा । स.मार्थ (त.रुन) । स्व स्व । मोशई । बंधाल की बंधाला (वि०) । कौजा । बंधन । बंधन । देल (पु०) ।

बध्, (पु०) बल क्षायति अस्मात् । पै+इ । जिने (जोर) घटना है । उद्वन्त । निरुध । बाला (वि०) ।

बध्, (पु०) बल वराति । बन्धक । छरीटी पुत्र । रनेवाला काम । एक प्रकारकी आत । बध्ना । केनेहृ (वि०) ।

बध्, (पु०) बधेन हीयति । रि+अच् । लोका कना है । बंधेदिनी देवी का । सक० । लृट् । एक देवता । बध्ताम । अर्जुनदेवका बन्धु ।

द्व., (पु०) बल+अच् । बलो बलवानपि भद्रः । (लो-
कः) । बलवाला होकर नी भल है । बलदेव और गवय
गोवन्द) ।

म, (पु०) बलेन रमते । रम्+अर्त्तिरि षम् । कृष्णका-
-ग भई । रोहिणीका नन्दन (मिथुन) । "संकल्पण"
-रम" ।

त्, (अञ्च०) बल+अग्निनाये मनुप् "म" को "ह"
ता है । अग्निनाय । बहुव्रीही बलविशिष्ट । (बलवाला)
वि०) ।

वर्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढानेवाला ।
शिशु कर्मका अग्नि । "प्राणिके बलवर्धन" ।

चैत्र्यास, (पु०) बलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यास-
स्यानम् । व्यूह । एक प्रकारका सेनाको राग करना ।
नाथी रचना ।

शालिन्, (त्रि०) बलेन शालते । शल्+णिनि । बलसे
तेमला है । बलविशिष्ट । बलवाला । जोरावर ।

सूदन, (पु०) बलं (सहायकं अमुरं) सूद+न्त्यु ।
उ नामी देलको नारा करना है । इन्द्र । "बलनिपूदनः"
।, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवाली । विश्वामित्र
निते रामचन्द्रको सींगई एक प्रकारकी अश्रुविया ।

बा, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकृति (गच्छति) ।
रम्+अच् । ओ कांय जाता है । बकमेद । एक प्रकारका
गन्ध । बकप्रेमि । बगलोंकी बजार । पिशाची स्त्री ।
गन्धिनी ।

द, (पु०) बलं अटति (एदाति) अद्+अच् । जो
ल (जोर) देती है । सुत्र । मूंगी ।

द्व, (अञ्च०) बल+अद्+किप् । द्वाद् । जोरसे ।
जोरावरी । अचानक । (पद्यमयन्ते " बल " शब्दके
गद्य इसकी गतार्थता नहीं बढीकि "बलघार" इत्या-
देकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पडेगा) ।

द्वकार, (पु०) बल द्+हृ+अच् । बलपूर्वक करण ।
मोक्षे करना (द्वाकारण) ।

द्वज, (पु०) अद् अजये । अद्+अच्+इ । ६ ४० ।
बलमद्वय छोटा भई । धीहृगन्धी ।

द्वय, (पु०) बलस्य अयः (स्थानं) । अय+अच् । बल-
की जगह । बरजनामी द्वय ।

द्वाराति, (पु०) बलस्य (तन्नामपुराण्य) आरातिः ।
बलनामी देलका धनु । इन्द्र । "बलधनु" बली अर्ध ।

द्वारक, (पु०) बलं (कम्पनं) भावजाति । अ+दा
हृन् । ओ नहीं बांधता है । मेघ (बादल) । मुलक ।
मुषा । मोषा । पर्वत (पहाड) । और भागमेद । प्रब-
काके धान मेघोंसे एक । मिथुके बार जोषोंसे एक ।

द्वारि, (पु०) बल-द् । पूजोपहार । पूजाकी मेढ । राजासे
लेने योग्य भाग (कर-खिराज) । उपह्व । उपह्व ।
धामरद्व । चौरी । एदस्थसे करनेकायक पांचयशोंमेंसे
"भूतयश" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः ।
एक देल । पिरोवनका पुत्र । जरा (बुढापा) से चर्मका
शियेल होना (स्त्री०) वा बीप् । सिद्धि । "एदस्थस्य
यदा पर्येत् बलीवडितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदरा-
यव । पेटका अंग । "बलिप्रयं चाह बभार बान" इति
कुमारः । गुदामे अङ्कुरके लक्ष्मका मांसका पिण्ड ।

द्वारिभ्यंसिन्, (पु०) बलि भ्यंसयति । स्वस्थानात् पात-
यति । धनस्य+सिन् विनि । जो बलि देलको अपने स्थानसे
गिराता है । विष्णु (ब्रह्मनक्षरूपमें उगया ऐसा नाम
हुआ) ।

द्वारिन्- (भ), (त्रि०) । बलि+अस्त्वर्थे इन् भ वा । बलि-
वाला । जरा (बुढेपा) से बीके चमडेवाला ।

द्वारिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस् इनि । बलवाला । जोर-
वाला । ऊंट । मैला । बैल । द्वाकर (एकर) । बलघाम ।

द्वारिनन्दन, पुत्र=पुत्र, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिघा-
पुत्र । बाण नामा देल ।

द्वारिपुत्र, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्वयेण) पुत्रः । पुत्र+
त् । पूजाकी मेढाके द्वयसे पलगया । बाक । चौथा । बां ।

द्वारिभुज, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्वयं) परस्परत-
बलिं वा भुजे । किप् । पूजाके भाषनरूप पदार्थ वा परस्परसे
सींगई बलिओ वाला है । बाक । बायस । चौथा । बां ।

द्वारि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) मुखं मुखं अस् ।
शाक० । जिसका मुख बलि (मित्रिणि) बाय है । बज-
र । बन्दर ।

द्वारिष्ठ, (त्रि०) अग्निशयेन बली । बलिन्+इष्टन् । बहुत
बलवाला । अचन्दबलवान् । उहू । ऊंट (पु०) ।

द्वारिस्वयन्, (न०) १ त० । बलिघा पर । पाठाड ।
" बलिपुर " ।

द्वारिहन्, (पु०) । बलिं हति । बलिओ मारनेवाला ।
विष्णु ।

द्वारिपत्, (त्रि०) अग्निशयेन बजे । बलिन्+ईप् ।
बहुन जोरावाला ।

द्वारिपद, (पु०) द्वा+विप्+द् । ई (कन्वीच) द्य=ई-
बरी ली दराति । द्वा+क ईबर्दः । बली बली ईबर्दयेति ।
द्वय । बैड ।

द्वार्य, (न०) द्वार्य द्वितं । बल+अच् । प्रपन्न एतु ।
बली धीयं । द्वाक । बीर । गुणदर । और बलघा द्वापव ।
अतिबल (बैड) (स्त्री०) ।

द्वार्य, द्वि-बरा । अन्तः अन्तः अन्तः देद । द्वि-
द्व । ब(ब) रते ।

व्यथभूमि, (स्त्री०) इन्+भावे वद्-वधादेशः । व्यथ्य भूमिः । मारनेलक्षक जगद् (स्थान) । इमस्थान । मघान । व्यथ्य स्थान । "व्यथस्थान".

यथ, (न०) वन्ध+धृत् । " न " का लोप । सीगक । सीता । चमदेकी रस्ती (तयमा) (स्त्री०) .

यन्, याचन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेद् । यनुवे । अचनिष्ट । कला वेद् ।

यन्व्, यन्धन । बांधना । क्या० पर० यक० अनेद् । यन्नाति । अमानसीत् ।

यन्ध, (पु०) वन्ध्+धम् । संयमन । रोचना । निगट (संकटी) आदिसे किसीकी गति (चल) को रोचना । बांधना । "कर्मणि धन्" देह । शरीर । फण (कर्ज)

योधन (बुझाना) के निश्वासके द्विये रक्छा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

यन्धक, (पु०) वन्ध्+ञ्चुल् । विनिमय । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्तन) आधि । (न०) गिरवी रखी हुई चीज । पुंशब्दी । अचती स्त्री । व्यभिचारिणी । छिनार भीत । द्वियां स्त्रीपु.

यन्धन, (न०) वन्ध्+भावे ल्युट् । निगड आदिसे संयमन (रोचना) बांधना । और वध (मारना) । " करने ल्युट् " रजु । रस्ती.

यन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (संभा) हाँससंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकड़ी । आखन । गजबंधन । किल्ला.

यन्धनवेदनम्, (न०) ६ त० । बांधनेका धर । जेठखाना । वेदखाना । "काणगर" "बंधनागर" आदि इसी अर्थमे हैं.

यन्धिप्र, (पु०) बंध्+इत् । प्यारका देवता । कामदेव । चमदेका पंथा । चर्मव्यत्रन । दाग । निशान.

यन्धु, (पु०) यन्नाति मनः (चेहादिना) । बंध+उ । जो पिपार आदिसे मनको बांध लेता है । क्षति । जात । मा-तुल्युप्रादि । मानके वेदा आदि । बांधव । मित्र । पिता । मता । भाई । एक दृष्ट.

यन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे तल् । का समूहे । बंधुन । बंधुओंका समूह.

यन्धुत्, (न०) बंध्+उत् । मुटुट । सीधा बिह । टिलोंका बूग । बधिर । बहिर । सोप । हंस । बगला । और पक्षी । मनोहर । नम्र । हठीम । उग्रतानत (कुंभानीया) (त्रि०) वेदया । कंत्री । लणु । लृ (स्त्री०) .

यन्धुत्, (त्रि०) बन्ध्+उत् । अचनन । छुछा हुआ । प्रथम करनेका । हथियार । सुन्दर । वेदयादृक्का एक सेवक । दृष्टात्.

यन्ध्व, (पु०) (त्रि०) वन्ध्+धृत् । क फटने शून्य हुआ । निगडन । फटाई

मीय (हकनेलायक) (त्रि०) । पुन (जिसे पुन नहीं होता) त्रिंशं द्वा-

यन्ध्याककौटी, (स्त्री०) बध्याका दार (धार) ककौटी । पुन देनेसे बाँधनेका नेशायी ककौटी (बाँध करीब) हूटी । अथ इयम् । वही अर्थ.

यन्न, गति । जाना । म्वा० पर० सक्० अचधीत्.

यत्, (पु०) य्+उ (द्विषं) । वन्ध्+विष्णु । नङ्कल । नेबला । बर्झ । अप । ए देस । उम देसके वासी । व० व० । त्रि-रंग । (पु०) । पीलेरंगमाला (त्रि०) .

यत्तुधातु, (पु०) कर्म० गर्व । घेना । पु और गेरी (बालकाक) .

यत्तुधाहन, (पु०) अजुनका वेदा (निगडनं) यत्, (न०) य्+अप् । कुजुन केसर । कुम्ह अदरक । "कर्मणि ध्व्" । जमना (अर्द्ध देवना आदिसे आधा करनेलायक । पूर्ण देव का "भावे ध्व्" वर्ण । कवूल करना । कौला । त्रिफला । मेदा । प्राग्नी । हरिदा (स्त्री) .

यत्, गति । जाना । म्वा० पर० सक्० देह । अचधीत्.

यद्, देना । मारना । स्तुति करना । और देह आत्म० सक्० सेद् । बहते । अवर्द्ध.

यद्, (न०) बह्+अच् । मयूषविन्द । मोरका पत्र । परीवार.

यद्, जीना । मानना । निष्पन्न-यमान । बहने म्वा० उम० सक्० सेद् । बर्द्धिते । अचधीत्.

यद्, (न०) बह्+अच् । सैन्य । सेनाके सेवक । सामर्थ्य (ताकत) । स्वत्त्व । मोशई । बंधाला म कीये । देह । शरीर । पत्र । पत्र । और लव (ल बलवाला) (त्रि०) । कौत्रा । बहदेव । बरन । देल (पु०) .

यद्, (पु०) यत् क्षायति अस्मात् । धैम् । त्रिंशं (जोर) घटता है । शुद्धवर्ण । विहरेत् । त्रिंशं कथ्य (त्रि०) .

यद्, (पु०) बह् देदाति । धम् । शरीरके पुंशब्द रनेकाय काम । एक प्रकारकी भाग । बहने देनेकर (त्रि०) .

यद्, (पु०) बहने कीव्यति । रिह्+अच् । लो कना है । बयोदिनी देती वा । उक्० । लो देती एक देवता । बहताय । श्रीकृष्णदेवका बग मी.

द्, (पु०) बल+अच् । बलो बलवानपि भद्रः । (सी०) । बलबाला होकर भी भद्र है । बलदेव और गरव भोईद) ।

रम्, (पु०) बलेन रमते । रम्+कर्मिदि घम् । कृष्णका । भाई । रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र) । “संकर्षण” नाम ।

म्, (अव्य०) बल+अतिशये म्नुप् “म” को “ब” ला दे । अतिशय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलबाल) प्रि०) ।

वर्धन्, (प्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढ़ानेवाला । शिष्ट कर्मका अग्नि । “पंथिके बलवर्धनः”

वेन्यास, (पु०) बलनां (सैन्यानां) विशेषेण न्यासः स्थापनम् । व्यूह । एक प्रकारका सेनाको रण कराना । नाकी रचना ।

वालिन, (प्रि०) बलेन चालते । चल्+भिनि । चलते भला है । बलविशिष्ट । बलबाल । जोरकर ।

इन्दन, (पु०) बलं (तथात्मकं अमुरं) सूद+स्यु । उ नामी देवको नाथ बना है । इन्द्र । “बलनिपुदनः” ।

; (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवती । विधामिप्र विशेषे रामचन्द्रको सीमाई एक प्रकारकी अश्रुविद्या ।

बा, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकृति (गच्छति) । इ+अच् । जो बाँध जाता है । बलमेद । एक प्रकारका गला । बलप्रेणि । बगलेंही बनार । पियायी स्त्री । अश्विनी ।

ट, (पु०) बलं अदति (ददाति) अद्+अच् । जो ल (जोर) देती है । मुद्र । मूंगी ।

द्, (अव्य०) बल+अत्+किप् । हटात् । जोरसे । गिरावती । अचलक । (पद्यमन्त्रं “ बल ” शब्दके पाप इसकी गतार्थता नहीं क्योंकि “बलाघर” इत्यादी सिद्धिके लिये इसे अत्यय सीधार करानाही पड़ेगा) ।

त्कार, (पु०) बल व+ह+वम् । बलपूर्वक करण । रोते कराना (इकारण) ।

नुज, (पु०) अतु जयते । अतु+जन्+ङ । ९ त० । लभदका छोटा भाई । धीहृषगी ।

य, (पु०) बलस्य भवः (स्थानं) । भव+वच् । बलकी जगह । बलपनामी बृष ।

रासि, (पु०) बलस्य (तन्नामापुरस्य) अरातिः । बलनामी देवका छत्रु । इन्द्र । “बळशत्रु” यही अर्थ ।

गहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आश्रयति । आ+हा हुन् । जो नहीं क्षयता है । मेघ (बादल) । मुलाक । मुषा । मोषा । पर्वत (पहाड़) । और मापमेद । प्रबकालके घाल मेघोर्मिसे एक । विष्णुके चार घोडोंमेंसे एक ।

बलि, (पु०) बल+इन् । पूजोपहार । पूजाकी मेद । राजाके सेने योग्य भाष (कर-विप्राज) । उपद्रव । उपश्रव । शामरण्ड । चोरी । यहस्थले करनेलायक पांचमहोर्मिसे “भूयस्य” । “बलिकर्म ततः कर्पात्” इति स्मृतिः । एक देव । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढ़ापा) से बर्मेक शि.पेल होना (स्त्री०) का बीप् । सिद्धिदि । “यहस्थलु यदा परनेत् वनीरलितमात्मनः” इति स्मृतिः । उदरव-यव । पेटका अंग । “बलिपुत्रं वाह बभार बाना” इति इमारः । पुत्रांमें अंडुरके स्वरुपका मातका पिण्ड ।

बलिर्ध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति । स्वस्थानात् पातयति । ध्वंस+ल्+भिच् भिनि । जो बलि देवकी अपने स्थानसे गिराता है । विष्णु (शम्भुनस्वरुपमें उतका ऐसा नाम हुआ) ।

बलिन्-(भ), (प्रि०) । बलि+अस्त्यये इन् भ वा । बलि-बाल । जरा (बुढ़ेपा) से दीडे कमठेवाला ।

बलिन्, (प्रि०) बलं अस्ति अस्य इति । बलबाल । जोर-बाल । कंड । भैंसा । बैल । शहर (शहर) । बलराम ।

बलिनन्दन, पुत्र=पुन, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिचा पुत्र । बाण नामा देव ।

बलिपुष्ट, (पु०) बलित्ना (पूजोपहारम्येण) पुष्टः । पुत्र+क । पूजाकी मेदाके इत्ये पठगया । काक । बीआ । कां ।

बलिमुञ्ज, (पु०) बलिं (पूजोपहारम्यं) यहस्थल-बलिं वा मुञ्जे । शिप् । पूजाके साधनरुप पदार्थ वा यहस्थले सीमाई बलिको जाना है । काक । वापस । बीआ । कां ।

बलि(स्त्री) मुख, (पु०) बलि (स्त्री) मुखं मुखं अस्य । पाक० । जिसका मुख बलि (सिद्धि) बाध्य है । बान-र । बन्दर ।

बलिष्ठ, (प्रि०) अनिशयेन वनी । बलिन्+इहन् । बहुत बलवाला । अत्यन्तबलवान् । उष्ट्र । कंड (पु०) ।

बलित्तमन्, (न०) ९ त० । बलिका पर । पाताल । “ बलिपुर ” ।

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला । विष्णु ।

बलीयस्, (प्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयप् । बहुत जोरवाला ।

बलीयर्ष, (पु०) वृ+शिप्+वर् । ईं (उदीय) बन्-ई-वरी तो ददाति । श+क ईबरी । बनी कावी ईबरीयेति । वृ । बैड ।

बलय, (न०) बलाय दितं । बल+वच् । प्रपन्न पन् । बनी भैंड । टुक । बीर । मुगडह । और बलाय कापन । अतिबल्य (बैड) (स्त्री०) ।

ब(ब)ट, बुद्धि-बटना । म्ना० आत्वं । अहं । छेद् । इति-व । बं(बं)रते ।

बन्धभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे बन्ध-बधादेयः । बन्धभूमिः । मारनेलक्षक जगह (स्थान) । श्मशान । मयान । बंधका स्थान । "बन्धस्थान".

बध्न, (न०) बन्ध+धृत् । " न " का लोप । चीगक । सीसा । चमड़ेकी रस्सी (तयमा) । (स्त्री०) .

बन्, यावन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेद् । बनुवे । अवनिष्ट । क्त्वा वेद्.

बन्धू, बन्धन । बांधना । क्त्वा० पर० सक० धनिद् । ब्र्भाति । क्षमान्सीत्.

बन्ध, (पु०) बन्धु+धम् । संयमन । रोचना । निगट (संकटी) आदिसे किसीकी गति (चल) की रोचना । बांधना । "कर्मणि ध्व्" देह । शरीर । ऋण (कर्ज) घोषन (बुझाना) के विश्वासके लिये रक्खा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

बन्धक, (पु०) बन्धु+भ्युलु । विनिमय । बदला । मुल्यम्प द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्तन) आधि । (न०) गिरवी रखी हुई चीज । पुंशब्दी । अस्वी स्त्री । व्यभिचारिणी । छिन्नार औरत । धियां बीप्.

बन्धन, (न०) बन्धु+भावे ल्युट् । निगट आदिसे संयमन (रोचना) बांधना । और बध (मारना) । " करणे ल्युट् " रन्तु । रस्ती.

बन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (खंभा) हस्तिबंधनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकड़ी । आलन । गजबंधन । क्लृप्त.

बन्धनवेदन, (न०) ६ त० । बांधनेका धर । जेठखाना । कैदखाना । "काधगर" "बंधनागर" आदि इसी अर्थसे हैं.

बन्धिघ्न, (पु०) बंधु+घ्न । प्यारका देहता । कामदेव । चमड़ेका पंखा । चर्मव्यजन । दाग । निशान.

बन्धु, (पु०) ब्र्भाति मनः (जेहादिना) । बंधु+ठ । जो पियार आदिसे मनको बांध लेता है । शक्ति । जात । मन्तुल्युभाति । मामके बेटा आदि । बांधव । मित्र । पिता । मता । भाई । एक वृश्.

बन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे क्तल् । वा गणुदे । बंधुगन । बंधुश्रीका समूह.

बन्धुत्, (न०) बंधु+उत् । मुकुट । शीघ्र विह । त्रिलोक्य वृष्ट । बधिर । बहिष् । घोष । हंस । बगला । और परी । मनोहर । मय । हलीम । उपकानन (लंकातीथा) (वि०) वेदवा । संजयी । एतु । सन् (स्त्री०) .

बन्धुल, (वि०) बन्धु+उत् । अवनन । शुभ द्रुमा । प्रथम कर्तव्यता । हर्षित । सुन्दर । वेदकण्ठका एक सेवक । एकाह.

बन्धु, (पु०) (वि०) बन्धु+धृत् । मनः कल्पने शून्य वृत्त । निगट । कर्तव्यता । मीय (दृक्नेत्रायक) (वि०) । पुण्ड्र (जिसे पुत्र नहीं होता) शिर्षी धनुः ।

बन्धुकाकफोटी, (स्त्री०) बन्धुका बन्धन (रस्सी) कफोटी । पुत्र देनेसे बन्धु शब्दका नैवाची कफोटी (बांझ बगोड) बूटी । " बन्धु अत इयम् " । वही अर्थ.

बन्धु, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेद् । अवप्रोत्.

बन्धु, (पु०) धृ+ठ (द्विषं) । बन्धु+धा । विष्णु । नहुत । नेबला । बर्हि । अग । एक वृश् । उम देवके बासी । व० व० । विष्णु रंग । (पु०) । पीलेरंगकाल (वि०) .

बन्धुधातु, (पु०) कर्म० स्वर्ग० सोना । उल और गेरी (डालवाक) .

बन्धुवाहन, (पु०) अजुनका बेटा (पितासे) वर, (न०) धृ+अप् । उजुन केसर । धृ+अप् । अदरक । "कर्मणि ध्व्" । जनता (उदरदेवता आदिसे आचा करनेलायक । धूर्त दोष । "भावे ध्वप्" वरण । कबूल करना । स्वीकार । विच्छा । मेदा । मानी । हरिदा (स्त्री) .

बन्धु, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेद् । अवकीट.

बन्धु, देना । मारना । स्तुति करना । और देकर आत्म० सक० सेद् । बहवे । अवर्हिष्ट.

बन्धु, (न०) बन्धु+अच् । मयुपविष्ट । मोरका पंजा । परीकार.

बन्धु, जीना । मांगना । निष्पन्न-बगन । बहने भ्वा० उम० सक० सेद् । बन्धु-वे । अवप्रोत् ।

बन्धु, (न०) बन्धु+अच् । सन्ध । सेनाके डेरा । समर्थ (ताकत) । स्व. स्व. मोरारी । मंगल । वीथं । देह । शरीर । पत्रा । पत्र । और रथ (बन्धुबलाला (वि०)) । कीजा । बन्धेव । राणा । दैल (पु०) .

बन्धु, (पु०) बन्धु श्रायति अस्मात् । उभक्त । विने (जोर) पटता है । सुकर्म । विद्वान् । विद्वान् कथा (वि०) .

बन्धु, (पु०) बन्धु वदाति । दम्भ । शरीरकी पुनः रनेवाला काम । एक प्रकारकी भाग । बहने । बन्धु (वि०) .

बन्धु, (पु०) बन्धेन संव्यति । रिपु+अच् । रणे कर्ता है । कर्मदिनो देतो वा । एक० । बन्धु शब्द एक देवता । बन्धुगन । श्रीकृष्णदेवता का नाम.

द्र, (पु०) बल+अच् । बलो बलवानपि भद्रः । (सो-
-) । बलवाला होकर भी भय है । बलदेव और गवय
- रोहद) ।

म, (पु०) बलेन रमते । रम्+वर्तरी घञ् । वृष्णका
- भाई । रोहिणीका मन्दन (त्रियपुत्र) । "संकर्यण"
- नाम" ।

म्, (अन्व०) बल+अतिराधे मनुप् "म" को "म्"
- ता है । अतिराय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवाला)
- त्रि०) ।

र्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढ़ानेवाला ।
- शिष्टकर्मका अमि । "पंशिके बलवर्धनम्"

धेन्यास, (पु०) बलानां (धैर्यानां) विशेषेण न्यासः
- स्थापनम् । व्यूह । एक प्रकारका सेनाको रण करना ।
- नाची रचना ।

नालिन्, (त्रि०) बलेन धाळते । धाल्+णिनि । बलसे
- गेभता है । बलविशिष्ट । बलवाला । जोरावर ।

सूदन, (पु०) बलं (तत्तामकं अमुरं) सूद+भ्यु ।
- तल नामी दैत्यको नाश करना है । इन्द्र । "बलनिसूदनः"
- ग, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवाणी । मिथामित्र
- मुनिसे रामचन्द्रको सींगई एक प्रकारकी अन्नविद्या ।

गदा, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकृति (गच्छति) ।
- अच्+अच् । जो कीर जाता है । बलवेद । एक प्रकारका
- बमला । बलप्रेषि । बगलोकी कनार । पियायी स्त्री ।
- प्रणयिनी ।

डाट, (पु०) बलं अटति (ददाति) अट्+अच् । जो
- बल (जोर) देती है । मुद्र । मूंगी ।

टाट्, (अन्व०) बल+अत्+किप् । टटाट् । जोरसे ।
- जोरावरी । अच.नक । (पद्यमयं " बल " शब्दके
- साथ इसकी गतायना नहीं क्योंकि "बलारकार" इत्या-
- रिकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पड़ेगा) ।

लालकार, (पु०) बल द्+हृ+पञ् । बलपूर्वक करण ।
- जोरसे करना (दृष्टाकरण) ।

लानुज, (पु०) अनु जायते । अनु+ञ्+ङ । १ ए० ।
- बलभद्रका छोटा भाई । धीहृषनी ।

ललाय, (पु०) बलस्य अयः (स्थानं) । अय+पञ् । बल-
- की जगह । बलनानी इव ।

ललाराति, (पु०) बलस्य (ललामामुरस्य) अरातिः ।
- बलनामी दैत्यका शत्रु । इन्द्र । "बलराजु" यही अर्थ ।

ललाहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आह्वयति । आ+हृ
- कुन् । जो नहीं क्षीयता है । मेघ (बारन) । मुलक ।
- मुषा । बोवा । पर्वत (पहाड़) । और कापवेद । प्रवर-
- काकके घाल भेषोमेंसे एक । विष्णुके चार घोड़ोंमेंसे एक ।

बलि, (पु०) बल-दत् । पूजोपहार । पूजाधी भेट । राजासे
- देने योग्य भाग (कर-विराज) । उपद्रव । उपद्रव ।
- चामरपट्ट । शौरी । गृहस्थसे करनेलायक पांचयज्ञोंमेंसे
- "भूतयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः ।
- एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढ़ापा) से चर्मका
- शि.येस होना (स्त्री०) वा शीप् । सिद्धि । "गृहस्थसु
- यदा परयेत् बलीपलितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदराव-
- यव । पेटका अंग । "बलित्रयं चाह भमार बान्ध" इति
- दुस्मारः । युद्धमें अंजुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड ।

बलिर्धंसिन्, (पु०) बलिं ध्वसयति । ध्वसयानात् पात-
- यति । ध्वन्+सिन्+णिनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थानसे
- गिराता है । विष्णु (चाग्रतस्वरूपमें उषका ऐसा नाम
- हुआ) ।

बलिन्-(म), (त्रि०) । बलि+अत्यर्थे इन् भ वा । बलि-
- बाल । जरा (बुढ़ेपा) से ढीले चमड़ेवाला ।

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इति । बलवाला । जोर-
- बाल । ऊंट । भैंसा । बैठ । दूधर (सूअर) । बठराम ।

बलिनन्दन, पुत्रः=मुत्र, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिका
- पुत्र । बाण नामा दैत्य ।

बलिपुट, (पु०) बलिना (पूजोपहारप्रभेण) पुटः । पुत्र+
- फ । पूजाधी भेटाके इत्येसे पठगया । काक । कौआ । कां ।

बलिभुज्, (पु०) बलिं (पूजोपहारप्रभं) गृहस्थदत्त-
- बलिं वा भुजे । कृप् । पूजाके साधनका पदार्थ वा गृहस्थसे
- सींगई बलिको खाता है । काक । बायग । कौआ । कां ।

बलि(स्त्री)मुख, (पु०) बलि (स्त्री) मुखं मुखं अस्य ।
- शक० । त्रिषका मुख बलि (शिशुवि) बाल है । बल-
- र । बन्दर ।

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+भृष्ट् । बहुत
- बलवाला । अत्यन्तबलवान् । उर्ह । ऊंट (पु०) ।

बलिसमन्, (न०) १ त० । बलिका घर । पाठाळ ।
- " बलिपुर " ।

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला ।
- विष्णु ।

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयस् ।
- बहुत जोरवाला ।

बलीयर्द, (पु०) बृ+विप्+वर् । ई (हृषीय) बल-ई-
- बरो ती दराति । दा+क ईवर् । बजी कासी ईबर्देयि ।
- वृ । बैठ ।

बलय, (न०) बलय हितं । बल+यत् । प्रपन्न धनु ।
- बली धन । छक । कीर्त । मुनकर । और बलय कापन ।
- अतिबल (बैठ) (स्त्री०) ।

बल, बुद्धि-बलना । म्ना० आत्म० अक० सेह । इदि-
- द । बं(ई)रते ।

घ(व)हु, (त्रि०) वं(वं)ङि+ङु-न लोपः । तीन धादे अनेक संख्यावाला । विपुल । बहुत । "प्रियां वा वीप्" । बड़ी (बड़ी) । बहु ।

घ(व)हुकर, (त्रि०) व(व)हृनि किरति । कृ+अच् । बहुतौको फेंकती है । (फराय) मार्जनकर । साफ करनेवाला । साहूदेनेहार । संमार्जनी (स्त्री०) सुहारी । कृ+अच् । ६ त० ।

यहुक्षम, (त्रि०) बहु क्षमा यस्य । बड़ी क्षमा करनेवाला । सहारनेवाला ।

यहुतिथ, (त्रि०) व(व)हृतां पुराणः । व(व)हु वृत्तिपुत्र्य । अनेक संख्यात । बहुत संख्या (गिनती वाला) । "काले गते बहुतिथे" इत्युद्धृतः ।

यहुप, (अव्य०) व(व)हुपु प्रल् । बहुतामें । बहुतसे समय धादिमें ।

यहुत्वच्, (पु०) ६ व० । बहुतसी लवावाला । भूने-मो-जपतंका पेट ।

यहुदर्शक-दर्शिन, (त्रि०) । बहु पश्यति । बहुत देखने-वाला । चतुर ।

यहुदायिन्, (त्रि०) बहु ददाति । बहुत देनेवाला । उदार । क्रिभाज ।

यहुधन, (त्रि०) बहु धनं यस्य । बड़े धनवाला । धनी । दौलतमंद ।

यहुधा, (अव्य०) व(व)हु+प्रकारे भाच् । अनेक प्रकार । कई तरहसे ।

यहुपुत्र, (पु०) व(व)हृवः पुत्रा इव पर्णानि अस्य । बहुतसे पुत्रोंमें नाई जितसे पत्ते हों । घसच्छद् । सतनेका वृत्त ।

यहुरलीक, (पु०) बहुपः पत्न्यः यस्य । बहुत स्त्रियों-वाला ।

यहुप्रज्ञ, (त्रि०) ६ व० । जितकी बहुत छान्तान हो । शर (स्वर) (पु०) । प्रजाके समान बहुत लृणवाला होनेसे सुंरका लृण ।

यहुप्रज्ञरी, (स्त्री०) ६ व० । संज्ञा होनेसे कर् न हुआ । बहुत निश्चितीवाला । मुठकीका वृत्त ।

यहुमल, (पु०) ६ व० । बहुत मलवाला । सीपक । सीपा ।

यहुकर, (पु०) ६ व० । सनेरस (पुत्रा) । सिव । विष्णु । द्विस्थगर्भ । कामदेव और केच (काच) । मान-रुनरू । बहुत मलवाला (त्रि०) ।

यहुल, (त्रि०) व(व)ङि+ङु-न लोपः । "न" का लोप । अनेक संख्यावाला । प्रचुर । बहुत । बहुति छानि । कृ+अच् । कृ+अच् । अण । और काला ईग (पु०) वसवाला (त्रि०) वृषवाण (पु०) ।

यहुयिग्रम, (त्रि०) बहु विग्रमः कर्णवाला । यज्ञयद्वाद् । बड़ी शक्तिवाला ।

यहुव्ययिन्, (त्रि०) । बहु व्याय (व्ययं) वाया । बाहर खर्च करनेवाला ।

यहुवीहि, (त्रि०) ६ व० । नेत्र धानवाला । व्याकरणमें कहाहुआ । (जिसमें प्रायः अन्यही पद प्रकृत होते) ।

यहुदास, (अव्य०) । व(व)हु+अच् । बहुतवार । कईवार ।

यहुदाल्य, (पु०) ६ व० । रक्षवर्तार । अनेक कीलोंवाला (त्रि०) ।

यहुसृति, (स्त्री०) ६ व० । अनेक प्रकृत संतानवाला (त्रि०) ।

यहुस्वामिक, (त्रि०) बहुः स्वामि स्वामिभ्यो (माडिको) वाला ।

यहुदक, (पु०) (बहुनि उदकानि सन्ताने रका संख्यासी जो एक स्थानपर न रहें) का जल पीताहै ।

यहृथे, (त्रि०) बहुवः अयोः यस्य । बहुत पदायवाला । अयाधारण । बाहर ।

यहृशिन्, (त्रि०) बहु भ्राष्टि । बाहर ।

य(व)हुव, (पु०) ६ व० । अच्-समानवाला । क्रमवेद । सूक्त (गीत) (न०) (त्रि०) । उषकी स्त्री (स्त्री०) ।

याडय, (न०) बडवानां समूह+अण् । बहुत छोटे । माझण (पु०) । बडवाण पोरीमें उपजा । भाँवे । समुद्रकी भाँप (पु०) यही अर्थ ।

याडयेय, (पु०) (द्विव०) बडवाणाः भाग्यं कुमार (दोनों) ।

याडय्य, (न०) बाडव+संघे यद् । विष्णु का समूह ।

या(वा)ण, (पु०) बण्+वाच्य करना । संज्ञायो वर्तते यन् । घर । तीर । बीघा विरोचनका पुत्र । एक देल । एक की ओर । पुङ् (काणका पर) (स्त्री०) ।

याणिग्य, (न०) बणिजो भावः कर्म । यन् पन वा बनिवेका काम । कवविहारी । योगरह (गोल डेना और मेचना भाँरे) ।

यानि-गी, (स्त्री०) । बण्+अच् । बण् कर्णका भाँरे सुनेका काम । बाणव । बनेका बचनकी देती ।

बाहुज, (पु०) बाहुभ्यां (मध्यबाहुभ्यां) जायते । जन् + उ ।
 मन्नाडी मुजाओधे उपजा । क्षत्रिय । रात्री "बाहु राजन्यः"
 इति युक्तिः ।

बाहुज, (पु० न०) बाहुं प्रायते । प्रै + क । अत्र (धो-
 जा) की चोटये बचनेके लिये हाथमें बंधाहुआ रोंडा
 वा चमड़ा आदि ।

बाहुमूल, (न०) १ त० । मुजाओ धे जड । कण । कौच ।
 कच्छ ।

बाहुयुद्ध, (न०) १ त० । मुजाओधे लडना । मध्युद्ध ।
 पहलवानोंकी कुस्ती ।

बाहुल, (पु०) बहुलानां (कृतिदानां) अयं (स्वामी) +
 लृप् । जो कृतिदाओं (कई एक तारे) का मानिक दे ।
 बहि । भाग । "बहुलाभियुक्ता पौर्यमाधी + अण्" कार्तिक
 (कतक) की पूर्णिमा त्रिवि (स्त्री०) "सा अय माये
 पुनरण्" । कार्तिकका महीना (पु०) ।

बाहुल्येय, (पु०) बहुलानां अयत्वं + इच् । कृतिदाओंकी
 सन्तान । कार्तिकेय । महादेवका बड़ा पुत्र ।

बाहुल्येयम्, (अन्त्य०) । बाहोः उत्तरेपः यया तथा ।
 मुजाओकी टटाहर ।

बाहुशिखरम्, (न०) बाहोः शिखरम् । मुजा (बाँह)
 का ऊपरला भाग (चोटी) । कंधा ।

बि (वि) द्, आक्रीड । जिज्ञाना । कथम खाना । चाप देना ।
 म्ना० पर० सक० सेद् । वेदति । अवेदीत् ।

विद्, अवपव बुदा २ करना । म्ना० पर० सक० सेद् ।
 इदित् । विन्दति । अविन्दीत् ।

विन्दु, (पु०) विदि + उ । विद् + उ - नि वा । अलयां ।
 योग द्विस्वद ।

विन्द, मेदना । वा सुप० उम० पक्षे तु० पर० सक० सेद् ।
 मेळयति - ते । वेदति । अविन्दत् । अवधीत् ।

विस् - क्षेप, फेंकना । दि० पर० सक० सेद् । विस्रति ।
 अविषत् अवेसत् ।

वीमत्स, (त्रि०) वृत् विन्दाकरना + म्नायें सन् - र्मनि पच् ।
 पापी गुनाहर । जुगुप्सित् । विन्दा कियाहुआ । और
 धुगाका विषय (पितके लायक) । अह्न (पु०) ।
 एक रस ।

वुद्, उदुपदि शब्द । कुत्ते आदिकी आवाज करना । और
 करना । पु० उम० पक्षे म्ना० पर० सक० सेद् । बुद्ध-
 यति - ते । बुद्धति ।

बुद्ध, (न०) बुद् + भच् । इदयत्यर्थावपिण्ड । इदयमें एक
 भागका मोला (टुकड़ा) । और इदय ।

बुद्ध, (पु०) बुद् + भच् । मगलदत्तारमेद् । मगलान्ता
 नरय (९ वां) अक्षर (जिसमें देवीकी मोहनेके लिये
 वेद और उपनिषद्देगये कर्मोंकी विन्दा की है) । जग-
 द्गुहा (जगद्गुहा) (त्रि०) ।

बुद्धि, (स्त्री०) बुद् + भिच् । इत् । इत् ।
 मोहमें बंदीगया गुण दृग् अर्थात् बुद्धि
 निरा परिकल्पितमेव । धनः इत् ।
 बुद्धिना अ धनः इत् ।

बुद्धिपूर्व, (त्रि०) बुद्धि पूर्वं इत् । इत् ।
 भाष । इत् । इत् ।

बुद्धिशालिन् - गणप्र, (त्रि०) बुद्धि शालिन्
 दिने शोभायमान । बुद्धिमन् । अविन्दते
 बुद्धिहीन, (त्रि०) बुद्धि हीनः । बुद्धि
 वेधहित । मूढ । वेधदृष्ट ।

बुद्धिमन्, (त्रि०) बुद्धि + मन् । बुद्धि
 बुद्धिन्द्रिय, (न०) १ त० । बुद्धि हीन
 मन, धन, नेत्र (आंग) , रमना (जैन
 गिद्या (नाक) , ये सब इनकी इन्द्रियें हैं
 बुद्बुद्, (न०) बुद् + क० ए० । पाणीका
 विकार । बुलबुल ।

बुध्, इन - गणना म्ना० उम० सक० सेद् ।
 अवेपीत् - अयोनि । अयोपिठ । बोपः । बु
 बुध्, जामा । दिया - धानन० मङ्क० अविद्
 बुध, (पु०) पठित् । समजनेवाला । इन
 ओ तारामें चन्द्रमाते लग्न हुआ पुन ।
 बुधजनः, (पु०) बुधः जनः । दान्त वा
 पठित् वा शिक्षितलोय ।

बुधरत्न, (न०) बुधप्रियं रत्नं । शक० ।
 रत्न । मरकतमणि । पत्ता ।

बुधार्थमी, (स्त्री०) बुधार्थयुता अर्थमी ।
 रमदित् अर्थमी । शुक्ररसकी अर्थमी । और
 लायक एक मन ।

बुधिन, (त्रि०) म्ना० उम० बुद् + क० ए०
 यथा ।

बुध्, (न०) बंध + नक् - "न" का लोप ।
 आदेश । वृद्धका मूल (जड) । और मूलम
 विन्दी (पु०) ।

बुधुभा, (स्त्री०) बुध् + भन् + भ । मो
 धुया । भूय ।

बुधुक्षित, (त्रि०) बुधुका + नार० इत्
 जिये म्ना लय आर् । "बुधुक्षितः कि ।
 बुधुमन्ता, (स्त्री०) बुधुं इच्छा - बुधु + भन् + भ
 इच्छा (चाहित) ।

बुधुया, (स्त्री०) अविभुं इच्छा + भन् + भ + भ
 बुध् - (य), (न०) बुधुते (उद्यमने)
 (छोडना) + क० ए० वा कन्म् । बुध् पन्
 धान । अर्थो विना धान । "बुध्" उच्छ
 बुद्, तु० प० बर्दति - वृत्ति । करना । फेंकना

१, (त्रि०)-ती (स्त्री०) वृद्ध+अति । बडा । बाँडा । लडा । ताकतबल्य ।

शरण्याकम्, (न०) वृद्ध आरभ्यकम् । बडा बनमें देनेलायक । प्रतिद उपनिषद्का नाम । शतपथ ब्राह्मणके अन्तिम छ अध्याय ।

२, (त्रि०)-स्त्री (स्त्री०) वित्वस्य इदं+अण् । वित्व (विभ) वृद्धा बना हुआ । वित्व वृद्धो ढका हुआ ।

३, (पु०) वृध्+घन् । हान । अघा । और जागरण (जागना) । "वृध्+घ्" हानकाट्य (त्रि०) । "वृध्" बोधक । जागेहारा (त्रि०) ।

वृकर, (पु०) बोधं (निसान्ते जागरणं) करोति । वृ+अच् । जो रात पीत जानेपर जगता है । रात्रीके अन्तमें जगनेहारा वैतालिक भाट । जतानेहारी (स्त्री०) ।

वृन, (न०) वृध्+णिव्+स्तुद् । विज्ञापन । जताना । इतिहास । मोटिस । जागरण । जगना ।

वृनी, (स्त्री०) बोधयते अनया । वृध्+णिव्+स्तुद्+घीप् । पिण्ठी । मध । (इससे मूर्छित हुआ जगया जाता है) । कार्तिककी एकादशी ।

वृ, (पु०) वृध्+इन् । अध्यायवृत्त । पीपलका दरहत । समाधिविषेय । जागेहारा (शता) (त्रि०) ।

वृ, वृध्+अण्+वृषल्य अपत्य । वृद्धदेवका पुत्र । पुहरवाका नाम ।

वृ, (न०) वृद्धेन प्रोक्तं+अण् । वृद्धसे रयागया निरीश्वरवाद (जिसमें ईश्वरको नहीं माना जाता) शास्त्र । बाँद शास्त्रके पढ़नेहारा (त्रि०) ।

वृ, उत्सर्ग-रोहना और विभाग-शुद्ध करना । पु० उभ० एक० सेद । व्योपवृत्ति-ते । अणुशुद्धत् ।

१, वाक् करना । ध्वा० पर० सक० सेद । वृणति । अन्धीव-भ्रमणीव ।

वृति, (स्त्री०) प्रतनोति । प्र+तन्+णिव् । वृ० । "वृ" को "वृ" होता है । वृता । बेल । बहु विस्तार । बहुल फैलाव । "वृताली" भी ।

२, (पु०) वंघ्नन्- "वृध्" का आदेश होता है । सूर्य । आरवा वृष । शिव । इसका मूल । वृध् "मी" होता है ।

वृहत्कूर्च, (न०) एक प्रकारका वृन (जिसमें पीपली-मासीको दिन रात उपवास करके दूगरे दिन प्रतः-काल वृष, दही, भी, गोमूत्र और गोबर मिलाकर पीते हैं) ।

वृहत्कर्ष, (न०) ब्राह्मणे (वेदकामाय) कर्षते चर्ध्+यत् । वेद पढ़नेके लिये अचरण कर्ता है । वेद जाकेके लिये दक्षीणवीत ढा-नेके अनन्तरका आधम । हीतभोगसे रहित होना । मयुनराहित्य । त्रिप्रेन्द्रिका संदम (रोहता) ।

ब्राह्मचारिन्, (पु०) ब्र(म)द्रणे (वेदाय तद् ब्राह्मणाय) चरति चर्ध्+णिवि । वेद पढ़नेके लिये कर्ता है । यज्ञोपवीत (जनेउ) के अनन्तर पहिले आधमवाले ब्राह्मण आदि तीन वर्ष । स्त्रीका संग न करनेहारा । ब्राह्मचारीके प्रतको करनेहारी स्त्री (स्त्री०) धीप् ।

ब्र(म)ह्यस, (त्रि०) ब्र(म)द्र (वेदे), सुरीयं वृद्धवै-तन्यं वा जानाति वेत्ति । ह्य+क् । वेद वा वृद्ध चेतन्यकी जागेहारा ।

ब्र(म)ह्यसान, (न०) ६ त० । त्रिगुणवर्णितप्रतीतसुरी-यवृद्धचेतन्यपियज्ञान । तीन गुणोंवालेसे परे चाँये वृद्ध चेतन्यका जासा ।

ब्र(म)ह्यण्य, (न०) ब्र(म)द्रणे (वेदाय) प्रभवति । वृद्ध चेतन्यज्ञानाय वा साधु । ब्र(म)द्रणे हितो वा यत् । ब्राह्मण और वेदोंकी रसा करनेहारा । विष्णु । ब्राह्मणका धर्म ।

ब्र(म)ह्यतीर्थ, (न०) ६ त० । ब्रह्माका तीर्थ । पुष्कर-तीर्थ । पुष्करराज । कमलकी जड़ ।

ब्र(म)ह्यान्य, (न०) ब्र(म)द्रणो भावः । त्व । ब्रह्म-पन । ऋत्विग्विषेय । ब्रह्माका धर्म । वृद्धसुतीय ब्रह्मभाव । निर्विकार ब्रह्मकी प्राप्ति ।

ब्रह्मदण्ड, (पु०) ६ त० । ब्रह्मका दण्ड । ब्रह्मणसे किया गया अभिसाररूप दण्डन (सजा) । ब्राह्मणकी बदतुआ । ब्राह्मणकी बधि (काठी) ।

ब्र(म)ह्यदाय, (पु०) ब्र(म)द्रणि (वे) वा वेदाय-यनसमाप्तं विप्राय वा राक्ष्णीयते । दा+धर्मिणि षच् । पुष्करे घासे विद्या पढ़के आवेहुए ब्राह्मणको जो धन दिया जाता है । सामान्यविश्राय देवे धने । छौंटे हुए ब्राह्मणको देनेलायक धन ।

ब्र(म)ह्यन्, (न०) वृह्+णिविन् । वेद । तपस्या । शल्य । सव । दण्ड । अगती । कथार्थ । टीक ० । तुगिव (बाँदी रयावा) सर्वगुणतीन (सब गुणोंसे परे विशुद्ध) वि-ब्र-वृध् सक और वित्तरूप (इनलक्ष्य) । हिरण्यधर्म । विप्र । ब्राह्मण । ऋत्विग्विषेय (एक प्रकारका पुरोहित) (पु०) ।

ब्र(म)ह्यनाल, (न०) बासीमें मणिकर्णिकाके पत्त ली-विषेय ।

ब्र(म)ह्यनिर्याण, (न०) ब्र(म)द्रणि निर्याणं (निर्दिष्टिः) । ब्रह्ममें विभ्रम (आताप) । ब्रह्मस्वरूपा पाना । सम्पूर्ण अनर्थाका निरहण (हट) होना । परमानन्द (बहुत सुखी) ।

ब्र(म)ह्यपुत्र, (पु०) ब्रह्मणः पुत्र इव (कवित्ववर्धकत्) । वीर्य रंग होनेसे मानो ब्रह्मका पुत्र है । शिव (अरर) । उत्तर देशमें प्रसिद्ध एक नद (बडा रसां) । एक क्षेत्र (खाद्य उगइ) । सरस्वती नदी (स्त्री०) । वट ब्रह्मर्ष से बरपम हुई है ऐसा कथिद्ध है ।

मा)ल, (म०) मद्रण इदम् । मद्रका । मद्रते
 इदाम् । वा अर् टीका लोप । अंगुठेका मूठ (एक-
 तीर्थ) । एत तीर्थे मद्रणोको आचमन करनेका विधान
 है । पुराण । विवाहभेद । पाठ (पु०) । राधाका
 धर्म (पु०) ।

मद्रु, (त्रि०) अनिश्चयेन मद्रु=वेदं जानाति+इठन् । वेद-
 शास्त्रका पूर्णज्ञानी । बड़ा पण्डित । पवित्र ।

मद्र, (त्रि०)-झी-झी० मद्रण इदं=वेन प्रोक्तं वा+अन् ।
 मद्रा (कर्ता)का अपवाद परमात्मका । मद्राणोका । इन-
 का । बैरिण । दिव्य । पवित्र । -मद्रः (पु०) आठ प्रकारके
 विवाहोंमें एक जिसमें कन्या अलंकृत करके बरको सीजाती
 और कोई भेडा बरसे नदी सीजाती संबंधन ।

(मा)लण, (पु०) म-(म)ल (वेदं) द्रुष्टं परवेतन्वं
 वा वेति आपीते वा अर् । जो वेद वा द्रुष्ट परम् पित-
 न्यको जानता वा पढ़ता है । " मद्रणः अत्यन्त+अन् "।
 मद्राकी सम्मान (मुखसे उपजा है) । विप्र । मद्रण
 जाति । " म (म)म जानाति मा (मा)लण । परम (म)
 लोको जन्मेदात् (त्रि०)

(मा)लणमुच, (पु०) मा (मा)लणं (जातिमात्रेण
 आत्मन) मूये । जो केवल जातिसे अपनेको मद्रण
 कहता है । बदाचारवान् । विप्र । बुरे आचारवाला मद्रण ।

मद्रणसाध, (अन्य०) मद्रण+साठिच्+आपीनाभे ।
 मद्रणके आपीन (कावर्मे) ।

म(मा)लण्य, (न०) मा (मा)लणानां समूहः भवो वा+
 अन् । मद्राणोंका समूह वा होना । विप्रसमूह । मद्रा-
 णोंका धर्म । विप्रत्व । मद्राणपन ।

म(मा)लणमुत्ते, (पु०) मद्रा देवता अस्य+अन् ।
 कर्म० । अरणके उदय होनेसे पहिली दो पक्षियों । रातके
 पिछले पहिरकी बाकी दो पक्षियां ।

म, कपन । बहना । बदा० उभ० शिक० छेद् । प्रवीति-
 आह । मूये । अशोचत्-अशोचत् ।

भ

भ, (म०) भा+क । नक्षत्र (टारा) । मेघ आदि राशि
 और ग्रह । शुक्राचार्य (पु०) भग्+क । भ्रमर (भौर) ।
 भ्रमिष्ठ । भ्रम भूल । आदि गुणवाला " भगण । "

भक्त, (पु० न०) भग्+क । भक्त । खाना । और ओदन
 (भात) । भक्तिबुद्धि । भक्ति करनेवाला । विभक्त
 (बाँटगया) (त्रि०) ।

भक्तकंस, (पु०) भक्त्य कंसः । भगनी दासी (रक्षणी) ।

भक्तदास, (पु०) भजेन (अथमात्रलाभेन) दासः
 (अंगीकृतदासभावः) । केवलभोजनपराही जो दास होता
 सीकार कर्ता है । पन्हा प्रकारके दशोंमेंसे एक ।

भक्तमण्ड, (पु० न०) १ त० । पावलोंकी मांड । चाव-
 लोंकी पीठ ।

भक्तारथि, (धी०) भक्त्य रथिः । भक्त (भोजन) की
 इच्छा । भूत ।

भक्तयत्नरत्न, (त्रि०) भक्त्य बहात् । भक्त (भजनकरने-
 वाला-पूजक) का विपारा । भक्तोंपर दया करनेवाला ।

भक्तशाला, (धी०) भक्त्यं शाला भोजनगृह । खानेका
 बड़ा कमरा ।

भक्ताभिलाप, (पु०) भक्त्यन्=अप्रत्य भक्तिलापः । भक्त
 (पुराण)की इच्छा । शुधा ।

भक्ति, (धी०) भग्+कित् । भजन । सेवा । आराधना ।
 वित्तको आराधनामें लगाना । विभाय (बाँट) । गौणी
 वृत्ति । उपकार । अवयव । भंगी । रचना । भद्रा (विधात) ।
 " भवति विरक्तभक्तिः " रघुः ।

भक्तिभास्, (त्रि०) भक्तिं भजति-भग्+भि । भक्ति
 करनेवाला ।

भक्तियोग, (पु०) भक्तिरेव योगः (एकप्रवृत्तइतिभेदः) ।
 येनसे वित्तका एकही ओर लगवाना । भक्तिरूपी योग ।

भक्त्यु, (त्रि०) भग्+वृच् । भक्ति करनेवाला । सुति करने-
 वाला । पूजा करनेवाला ।

भक्त्यु, भदन । खाना । पु० उभ० सक्त० छेद् । मद्यपति-
 ते । " भसति । "

भक्त्यु, (त्रि०) शिखा (धी०) भग्+शुल् । खानेवाला ।
 गार्ह ।

भक्षण, (त्रि०)-धी (धी०) भग्+अन् । खानेवाला ।
 -ण- (न०) (भावे ल्युट्) खाना ।

भक्षणोप, (पु०) भक्षण्य रोषः । खानेसे बचा हुआ ।

भक्षित, (त्रि०) भग्+क । खाना गाना । लै- (न०) खाना ।

भक्ष्य, (त्रि०) मत्+कर्मणि बह् । खानेवाला । भोजनके
 योग्य । -य (न०) कोई चीज खानेलायक । खानेका
 पदार्थ । खाना । भोजन ।

भग, (पु० न०) भग्+ग । सुवे । कर्मिणा आदि आठ
 प्रकारका ऐश्वर्य । बीर्य । और बरा । छपी । इन ।
 बैराग्य । योगि । इच्छा । काश्चित् । दन । धर्म । मोक्ष ।
 शीमाग्य । शक्ति । और बन्दना । गुण और सुखके
 बीचका स्थान (बुद्ध) ।

भगदत्त, (पु०) महाभारतमें प्रसिद्ध कामरूप देवका राजा ।

भगन्दर, (पु०) भगं (गुणमुष्णमप्यस्त्वं) दर-
 षि । " द+यच् मुत् " । एक प्रकारका रोम (जो भगको
 पावता है) ।

भगपत्, (त्रि०) भगं (ऐश्वर्यं) अति बल । म-
 गुर् । " म " को " ह " होगा है । ऐश्वर्य आदिबल करने-
 शर । दुर्गं (धी०) शीघ्र ।

भगाकुर, (पु०) भग (शुद्धस्थाने) भंडुर इव । शुद्ध-
पर मनो भंडुर है । अशरीर । वक्ताशरीरकी सीमारी ।

भगिनी, (स्त्री०) भगं (दशः) विभक्तिगो दश्यादाने
शक्ति अन्वयभक्ति । निता आदिगो दश्य क्षेत्रमें विषे
व्यय करना पड़ता है । सोदर । भ्राता । बहिन भ्रमिन ।

भगीरथ, (पु०) स्वर्गमें शिवोत्सवका पुत्र एक राजा
(विष्णुने कल्पको प्रथिवीतर उतरा है) ।

भग्न, (वि०) भङ्गक । पराजित । हारपना । और रागिष्ठ
(इष्टपना) । "भग्नं शम्भुपदुर्गैराह्वयं" इति नाटकम् ।

भग्नप्रकाम, (पु०) भग्नः प्रकमो भव । जहाँ प्रारम्भ इष्ट-
पना है । कर्त्तव्यमें कहनुना एक कल्पका दोष ।

भग्नप्रतिभ, (वि०) भग्न प्रतिभा येन । प्रतिभा (इच्छार-
को होइनेकला ।

भग्नमनोरथ, (वि०) भग्नः मनोरथः दश्य । विगका मनो-
रथ (दुःख) पूरा नहीं हुआ (इष्ट गया) । निरुत्साह ।

भग्नप्रय, (वि०) भग्नं प्रयं देन । आने या (नियम) को
भंगकरना ।

भग्नमंथल, (वि०) भग्न-मंथलः दश्य । विगका मंथल
(हाथ) इष्टपना ।

भङ्ग, (पु०) भङ्गकम् । पत्रक । हार । सिद्धता । वाग्द ।
दुःख । वेद । कष्ट । मरु (लहर) । कैटिल ।
शिक्षण । भव । इष्ट । पररथनाभेद । एक प्रकारकी
रानीकी कल्पना । पत्रक । भग्न और भग्ननिर्गम (पानीका
निर्गम) । मरु । मरुती (विष्णु) और भाग (स्त्री०) ।

भङ्गा, (स्त्री०) एक प्रकारकी मरु देनेवाली बूटी ।

भङ्ग-शै, (स्त्री०) भङ्गकम् । पु० का शीर्ष । विगिष्ट ।
दुःख । कैटिल । शिक्षण । कष्ट । भिन्नाय । रचना ।
कल्पना । कष्ट (मरु) । वेद । कष्ट । व्याज ।
मरु । कल्पना ।

भङ्गुर, (वि०) भङ्गकम् । कुटिल । शिक्षण । भागी
इष्टपना । कल्पना ।

भङ्गुर, (न०) भङ्गकम् । भग्नं (भिन्न) भव । भोग
भंगकरना । कष्ट ।

भङ्ग, (न०) भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।
भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।

भङ्ग, (न०) भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।
भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।

भङ्गक (पु०) भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।
भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।

भङ्गक (पु०) भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।
भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।

भङ्गक (पु०) भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।
भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् । भङ्गकम् ।

भट्ट, पोषण पालना । भ्या० पर० मरु० मरु० ।
अभावीरु अमटीरु । "बोला" सिद्धि मरु० ।

भट्टिय, (न०) मरु० मरु० । दुःखक मरु० ।
पराहुआ मांग आदि । क्वार ।

भट्ट, (पु०) मरु० मरु० । सुविगिष्टादि । लो०
(तारीक) का पाठ करके जीनेकला । मरु०
स्थानिक । मरु० मरु० । वेदको कष्ट ।
(चतुर साधवेत्ता) ।

भट्टार, (पु०) मरु० (स्थानिक) कल्पी (मरु०)
पुत्र । पुत्रको लापक । "मरु० मरु०" ।

भट्टारक, (पु०) मरु० भाग बोला । वि० मरु०
पुत्र । कर्म० । नाजोपिने राजा । पुत्रको मरु०
पदाहुआ ।

भट्टिनी, (स्त्री०) मरु० (स्थानिक) कल्पी (मरु०)
पुत्र । मरु० मरु० स्त्री । मरु० मरु० । मरु० मरु०
अभिषेक नहीं मिला । मरु० मरु० मरु०
मरु०, परिभाषण, बहुत बोला । भ्या० मरु० मरु०
भग्नते

भण, कथन कहना । भ्या० पर० मरु० मरु० ।
भागीरु । अभागीरु । अभागीरु । मरु० मरु०

भणिति, (स्त्री०) मरु० मरु० । कथन । मरु०
मण्ड, (पु०) मरु० मरु० । अभागीरु । मरु० मरु०
कथन बोलावेकला । मरु० । "मरु० मरु० मरु०"
नेविगाकका " इति कर्त्तव्यम्

भण, मरु० मरु० होना । दुःख कथन । मरु० मरु०
प्रणय होना । भ्या० मरु० मरु० मरु० मरु०
अभागीरु ।

भण, कथन करना । पु० मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० ।

भण्य, (पु०) मरु० मरु० "मरु०" का मरु० मरु०
पुत्र गया (वि०) ।

भण्य, (न०) मरु० मरु० मरु० "मरु०" का मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० (मरु०) । मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०

भण्यक, (वि०) मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०

भण्यक, (पु०) मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०

भण्यक, (पु०) मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०
मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु० मरु०

य, (प्रि०) भाजते विभज्यते । भाज्+भर्मि यत् ।
 भाजनीय । बाँटनेलायक ।
 ख, (न०) भद्र-पोरण-याचना+अण् । इमरेके पर वा
 त्परी शारिको भोगनेके लिये उपाके स्वामीको देनेलायक
 ल । भाद्र । किराया ।
 ङ, (पु०) भस्व अनुयायी+अण् । भद्र (बुनारिल
 ङ-मीमांसादर्शनका कर्ताका अनुसरण करनेवाला ।
 ट, (पु०) भण्+धञ् । दृष्य (देखनेलायक) काञ्च्य
 ङेद ।
 ङ, (न०) भा+अण्डच् भण्+ङ् स्वार्थे अण् वा । पात्र ।
 नौडा । बर्तन । तेल रखनेका पात्र । एक प्रकारका घर ।
 नौडार । बगिओका मूलपत्र । पूंजी । नदीके दोनों किनारोंके
 बीचका । मण्डस्य भावः+अण् । भांडका चरित्र (न०) ।
 ङ्ङात्वा, (स्त्री०) भाण्डानां शब्दात् । भांडो (बर्तनो
 और तरह-रूपान पानके पदार्थ) का घर ।
 ङ्ङारिन्, (पु०) भाण्डं ङ्ङारि । ङ्ङ+निनि ।
 मन्त्रादी । जिसे अन्न आदि द्रव्यवाले घरोंका अधिकार
 देयागया है ।
 पेड्याद्, (पु०) भाण्डि (धुरादापारं) वहति+अण् ।
 जो गुच्छी रखताहै । वापित । नाई । नौआ । भाण्डि+अ-
 ल्त्थपे लच् । “भाण्डिल” इही अर्थ ।
 ते, (स्त्री०) भा+किन् । घोषा । चनक । मनोहरता ।
 द, (पु०) सद्रामियुंका पौर्णमासी भारी सा यस्मिन्
 मासे+अण् । चैतसे छटा महीना (भादों) उस मही-
 नेकी पूर्णिमा (स्त्री०) बीप् । “भद्रेश स्वार्थे अण्” पूर्व
 और उत्तर भाद्रपदादारे (न०) ।
 द्रमानुद, (पु०) भद्रायाः सलाः मानुः अपत्यं+अण्
 इरच् । सतीका पुत्र ।
 नु, (पु०) भा+नु । सूर्य । आरुका इत् । किरण ।
 स्वामी । राजा ।
 नुमद्, (पु०) भातु किरणः अस्ति अयम् । मनुप् ।
 किरणवाला । सूर्य । “भातुमाली” इही अर्थमें ।
 नुमती, (स्त्री०) विष्णुमारिख राजाकी पत्नी (स्त्री०) ।
 न्, बोध । गुस्ता करना । सफा होना । ज्या० भा०
 अङ्० सेट् । भागते ।
 म, (पु०) भाग्+पञ् । बोध (गुस्त) और वीति
 (बमक) । “कनरि अच्” सूर्य । बोधवाली औरत
 भाग्नीनी (स्त्री०) ।
 मिनी, (स्त्री०) भाग्+मिनि । बोधवाली स्त्री । बोध
 करनेवाली स्त्री । स्त्रीमात्र । हरएक औरत ।
 ट, (पु०) श्+पञ् । गुणत्वपरिमाण । बोधोवाच्य माप ।
 बोधोवाच्य इत्य । बीध गुणत्व माप । भाट इकार दोषेण
 परिमाण । बोधा ।

भारक, (पु०) भारं वहति । भार+ठह । भारवाहक ।
 बोला उठानेहारा ।
 भारत, भरतान् (भरतवंस्तान्) अधिष्ठत्य कृतो प्रन्थः+
 अण् । भारः (वेदादि शास्त्रेष्वपि सारंशः अस्ति अस्य
 वा) वह प्रन्थ कि जिसमें भरतवंशके लोकोंका वर्णन
 है । सपका जिसमें वेदादि शास्त्रोंसे गी सारमाग लिया-
 गया है । वेदव्यासका बनाया हुआ छत्र श्लोकका प्रन्थ ।
 “भरतेन विहितं तस्येदं वा+अण्” । भरतसे निरान लगा-
 गया वा भरतका । जम्बुद्वीपके भीतरका एक बर्ष (भारत-
 बर्ष) । “भरतस्य गोत्रात्पत्यं+अण्” भरत राजाके बंशमें
 हुआ । “भरतेन मुनिना प्रोक्तं अण्” भरत मुनिसे बना-
 यागया नाटकशास्त्र आदि (न०) “तदधीयते+पुनरण्”
 उधे पडतेहैं । नट । और भाग ।
 भारती, (स्त्री०) श्+अतच् । स्वार्थे अण् । वाच्य (बचन) ।
 बचनकी अधिदेवता (जिसके आश्रय बचन रहता है) ।
 सरस्वती । पक्षिविशेष । अलंकारमें एक प्रकारकी इति ।
 संस्कृत भाषा
 भारद्वाज, (पु०) भरद्वाजस्य गोत्रात्पत्यं+अण् । भरद्वाजके
 गोत्रमें हुआ । गोत्रको चलानेहारा एक मुनि । श्रोत्राचार्य ।
 अपस्तम्बमुनि । व्याघ्रट पत्नी । और बृहस्पतिका पुत्र ।
 बनकी कपास (स्त्री०) बीप् ।
 भारव्यष्टि, (स्त्री०) भारस्य बहनायां यष्टिः । शाक० । बोझा
 उठानेके लिये छाठी । भारबहनदण्ड । भार उठानेका दण्ड ।
 भारव्याह-द्, (पु०) भारं वहति । अण्+धिः वा ।
 भार उठानेवाला । भारवाही । णुल् । “भारवाहकः”
 इही अर्थमें है ।
 भारवि, (पु०) किरणानुंतीय वाच्यके बनानेवाला ।
 एक इति ।
 भारवन्तान्, (प्रि०) भारेण आक्रान्तः । भार (बोझ)
 दबातुका (उदा हुआ) ।
 भारोपजीविन्, (प्रि०) भारेण उपजीवति । बोझा बोध
 जीविका (रोजी) कमानेवाला ।
 भारीय, (पु०) श्गोरपत्यं तद्रोत्रात्पत्यं वा+अण् । श्गुकी
 संतान वा उसके गोत्रमें हुआ । श्गुकाचार्य । परशुराम ।
 धन्वी । शीर चकनेवाला । और हाथी । “तिव प्रोच्य,
 सेनाधीना, इना वा अण्” । उससे बहीयई, पडीयई वा
 जानीयई । वेदमें प्रसिद्ध एक प्रकारकी विद्या । पार्वती ।
 लक्ष्मी । और हवां (दूब) । शिवां बीप् ।
 भार्या, (स्त्री०) श्+भ्यच् । विधिये विवाहीयई स्त्री । पालन
 करनेके लायक (प्रि०) ।
 भार्याट, (प्रि०) भार्यया अटाति । अपयी स्त्रीको वेरदा-
 बनाकर जीनेवाला ।
 भाट, (न०) भा+लच् । लकट । मटाक । चप्पा । भरोका
 ऊपरका हिस्सा ।

मालचन्द्र, (पु०) माले चन्द्रः यस्य । जिवके मल्ल-
(माये) पं चन्द्रमा है । सिन्धीका नाम ।

मालदर्शन, (न०) माले दृश्यते+कर्मणि ल्युट् । माये-
पर दिग्दर्श देना है । सिन्धु । धियूर ।

मालनेत्र, (पु०) माले नेत्रं अस्य । जिवके मायेपर अर्थ
है । शिबजी । "माललोचन" धारि इसी अर्थमें ।

मालाङ्ग, (पु०) मालम् इव अङ्गो यस्य, माले अङ्गो यस्य
वा । मायेद्ये नाई निमानवाला, वा जिवके मायेपर
निमान है । ऊरुमेद । एक प्रकारका साग । करपत्रनामी
अत्र (औजार) । संघासी । रोहितनामी मच्छ । महापु-
रके चित्रवत्य । शिव । और बहुधा । मायेका निमान ।
सिन्धुवाला आदमी ।

मालु(लृ)क, (पु०) मालू+भक्षार्थे अल् । वा पु०
हन्तः । एक जीव । मल्ल । मृग । रीठ । "मालुक"
रही धर्म ।

माघ, (पु०) माघपति (चिन्तपति) पदार्थान् । पु० मू० अच् ।
मल्लभे मलय पदार्थचिन्तक (कई तरहके पदोके
कर्मोके लेखनेवाले) परिगत । "माघपति (इप-
यति) इदमपत्तं+भू+निच्+अच्" इदयद्ये अवयवा
(एता) यो जगज्जनेहाय मानस विचार (मनके बन्-
ननेके द्वारा) और (परीक्षा) और संघ (सोचना)
कर्म इति+अर्चि+मच् । मू+पप् । घास्य, सिद्ध, वा कि-
रण्य बहुधा अर्थ । टण (सुरम्भ) और आशय ।
कर्मणः ।

माघक, (पु०) माघ+भक्षार्थे क्त् । मल्लभ विचार । पता-
दीके लेखनेवाले । और टण, टट (टणमायेहाय)
(वि०) ।

माघात्मन्, (वि०) माघेन तन्मन्ः । अन्वे अर्थकायक ।
हन्ते अर्थकेवाले ।

माघात्मनिन्, (वि०) अन्वे एकात् । मलयके (मल्लव)
के कर्मकेवाले ।

माघाच्छ, (पु०) मलयोर्जन्+च्छ । मलयमन्थनी । अन्-
व । अन्वच्छ । इदच्छ ।

माघना, (न०) मू० निव+भ् । कल्याणी एव कर्त् ।
"मले मूद" इत्यनुप । चिन्ता । विचार । ध्यान ।
कर्मणः । कर्मकेवाले । अन्वच्छ । वैजयंते अन्वच्छ
कर्मणोर्जन् (क०) ।

माघावोपच, (पु०) मलय (मले) कोपच । अनु-
भावक । मू० (मलय) कर्मोके कर्मकेवाले । अन्वच्छ
कर्मणः कर्म । कर्मकेवाले कर्म (इदं) । मू० कर्म कर्म
इत्यनुप ।

माघावोपच, (क०) मलय+कर्मणोर्जन् । मलयके क-
र्मकेवाले । कर्मकेवाले ।

माघस्थिर, (वि०) माघे स्थिरः । मन्वे क०
जड पकड़ गया (जम गया) ।

माघाङ्कितम्, (न०) माघे अङ्कितं । मन्वे क०
उपदान कारण । (जैसे मूय कर्मकेवाले) ।

माघानुगा, (क्री०) माघं (पदार्थं) कर्त्तुं
च्छति । मू०+उ । पदके अर्थ क कर्म
कर्मो है । छाया । टीका अभिप्रेतक
पीठे रहनेवाला (वि०) ।

माघान्तरम्, (न०) अन्वो भावः । इति क०
द्वय स्यात् । दुयय भावः ।

माघामास, (पु०) भावस्य कामः । मन्वे क०
इति मल्लव ।

माघार्थे, (पु०) भावस्य अर्थः । मन्वे क०
किञ्चि शब्द वा वाक्यका साधार्थे । बहुवचने ।

माघित, (वि०) मू०+निच् । कर्त्तुं (पु०)
प्रप्त (पाया) । हुक् । छाह । चिन्ता । लेख
और निजकुशा । पैदाकिया । बन्दिर हुआ । इति क०

माघिप्रम्, (न०) मू०+नि+प्रन् । टीको देके (मन्वे)
पालक) ।

माघिनी, (क्री०) माघः (इदमपत्तं) क०
अभ्या+दन्तिः । एक प्रकारकी क्री । जिवके हाथके
कारकी पोछा होती है । और इत्येक श्रेण । मन्वे क०
अभियन्त्याकाशनी (आगेके समयमें होनेवाले) ।

माघुक, (न०) मू०+वृक् । मन्वे क०
(वि०) । (जिवे काय पावेना एतदे) मन्वे क०
रहिवा मुधि माघुका" इति मन्वे क० ।

माघ्य, (वि०) मू०+यच् । होनेवाले ।

माघू, कवन-बोचना । मन्वे क० । मा०+घृ०+कै०
अभयिच ।

माघक, (वि०) माघ+भ्+लृ । मन्वे क०
कर्मकेवाले ।

माघण, (न०) माघ+भ्+लृ । मन्वे क०
कर्म ।

माघा, (क्री०) मू०+भ । कर्मणः कर्मणः । मन्वे क०
इति क० । मन्वे क० । मन्वे क० । मन्वे क० । मन्वे क० ।

माघात्मन्, (न०) अन्वे मन्वे क० । मन्वे क० ।

माघाणात्, (पु०) कर्मो । मन्वे क० । मन्वे क० ।

माघिन, (न०) मू०+नि । मन्वे क० । मन्वे क० ।

इत, (त्रि०) भास्+तिनि (समासके अन्तर्गते)
 लनेकाला । इत्ता ।
 इ, (म०) सूर्योदी भास्वया बरनेहार प्रत्ययविशेष ।
 अनीय (बहनेलायक) (त्रि०) ।
 इ, षीति वमवना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भागते ।
 र्भाषित् ।
 इ, (स्त्री०) भास्+किप् । षीति । रीशनी । मयूर ।
 मेरु । इच्छा ।
 इ, (पु०) भास्+पम्+अच् वा । षीति । वमक । गोष्ठ ।
 गोवाग । कुपूर । कुत्ता । और छुक् ।
 इक, (त्रि०) भास्+णुल्+अक । प्रकाश बरनेवाला ।
 वनवानेवाला ।
 इर, (त्रि०) भास्+पुरच् । षीतिशील । वमकने-
 वाला । और हरटिक (अरौर) । वीर (बहादुर) (पु०) ।
 इर्येष (न०) ।
 इकर, (पु०) भास् बरोरि । भास्+कृ-उच् । जो प्र-
 काशको बना है । सूर्य । अग्नि (भाग) । वीर (ब-
 हादुर) । आकृष्टा इश । सिद्धान्तशिरोमणि नाम ग्रन्थ-
 के बनानेहार पण्डित ।
 इस्करप्रिय, (पु०) इ त० । सूर्यका पिता । पप्राम-
 म्नि (पुनि) ।
 इस्वर, (त्रि०) भास्+वरच् । षीतियुक्त । वमकने-
 वाला । सूर्य । दिन । आकृष्टा इश । अग्नि (भाग)
 (पु०) ।
 इस्वच्, (पु०) भास्+असि अर्थे मनुप् "म" को "व"
 होता है । सूर्य । आकृष्टा इश । और वीर (बहादुर) ।
 वमकनेवाला (त्रि०) ।
 इत्त, छेभ । कालवकला । शक० मांगना-द्विक० । हेरा ।
 तद्विक देना । अक० भ्वा० आण्य० सेट् । मिसते । अमि-
 क्षित् ।
 इत्ता, (स्त्री०) मिश्र+अ । राजा । मांगना । प्रार्थना
 करना । मीच ।
 इत्ताक, (त्रि०) मिश्र+आकृ । मिश्राकारक । मीच
 मांगनेहार । संन्यासी । भियां बीप् । "मिशाकी" ।
 इत्ताटन, (न०) मिश्राय अटनम् । मिशा (मीक) के
 लिये घूमना ।
 इत्ताशिन, (त्रि०) निशालब्धे अध्यानि । अस्+तिनि ।
 जो मीच पाकर जीता है । मांगनेवाला फकीर । संन्यासी ।
 इत्तु, (पु०) मिश्र+उ । फकीर । संन्यासी । चौथे आ-
 धमकाल ।
 इत्तुक, (पु० स्त्री०) मिश्र+उकृ । मिश्रपत्रीवी ।
 मीचपर जीनेहार । फकीर । संन्यासी । "मिश्रुवी"
 (स्त्री०) ।

मिश्र, (म०) मिद्+क० नि० । राण्ड । टुकड़ा । शिरछ
 बीवार ।
 मिश्र, (म०) मिद्+क०नि लय ल मः । भाग । टुकड़ा
 बीवार ।
 मिश्रि, (स्त्री०) मिद्+किन् । तोड़ना । मिश्र-करना
 बीवार ।
 मिश्रि, (स्त्री०) मिद्+किन् । पर आदिषी बीवार
 तोड़ना । विभाग करना । मीच । अक्षर ।
 मिद्, द्विभाकरण । दो टुकड़े करना । विशेष करण जियादा
 करना । इषा० उम० एक० अनिद् । मिनति । मिनते ।
 अभिरत्-अभैरीत्-अभित् ।
 मिद्, (स्त्री०) मिद्+अर् । विदारण । फाटना द्वेषीक
 रण । दो टुकड़े करना । विशेषकरण । जियादा करना ।
 मिद्दु, (न०) मिद्+डुर्च् । वज्र । "इरच्" मित्ति
 (यही अर्थ) । द्वादश । पाकडका दरस्त । तोड़ने
 वाला (त्रि०) ।
 मिन्दिपाल, (पु०) मिदि-काटना+इन्=मिन्दि-मेदन्
 पालयति । पाल्+अण् । हाथसे फेंकनेलायक जातीके
 स्वरूपका अन्न (औजार) । हस्तप्रमाण । एक औजार ।
 जो हाथके मापका हो । हाथसे चलानेका तीर ।
 मिश्र, (पु०) मिद्+क । विदारित । फाड़दिया गया
 मिश्रित । मिटाया गया । राखत । मिलाहुभा । अन्य
 और प्रकटित । फूटगया । तोड़ दिया । जुदा किया ।
 मिश्रमिध्रात्मन्, (पु०) मिश्रः प्रकारः । प्रकारे द्विवम् ।
 तादा आत्मा यस्य । जिसका स्वरूप जुदा २ हो
 वणक । छोटे ।
 मिश्रोद्, (पु०) मिश्रं उदरे यस्य । इसरी (मिश्र)
 द्वितीयादे उल्लस हुभा । सोतेका भाई ।
 मिश्रप्रम, (त्रि०) मिश्रः कम. येन । निपमसे बाहिर
 हुभा ।
 मिश्रप्रति, (त्रि०) मिषा गतिः यस्य । टटीहुई कालवाक्य ।
 मिश्रदंशिन, (त्रि०) मिश्रं परयति । मेद देखनेवाला ।
 पशुवाली ।
 मिश्रदेश, (त्रि०) मिश्रः देशः यस्य । मिश्र २ देशमें
 रहनेवाला ।
 मिश्रमयां, (त्रि०) मिश्रा मयोदा येन । उचित निपम
 (कायस) को तोड़नेवाला ।
 मिश्रदधि, (त्रि०) मिश्रा दधिः यस्य । मिश्र (दुदा)
 रुचि (साद) वाला ।
 मिश्रमन्, (त्रि०) मिश्रं मने यस्य । मने (जोरोना
 खान) पर पाव लगाया गया ।
 मिश्रम्य, (त्रि०) मिश्र. लारः यस्य । मिश्र (दुदा) खर-
 वाला । बट्टी हुई आवाजवाला ।

मिह, नेदन (माउना) पु० । पक्षे तु० पर० सक० सेट् ।
 नेहपतिन्वे । मिहति । क्षपीमिहत्-त् । क्षमेतीत् ।
 मिह्, (पु०) मिह्+इत् । श्लेच्छजातिनेद । एक जंगली
 कृमि । नील । लोपका इत्यम् ।
 मिह्, रोगप्रदीकार-रोगका उपाय करता । पर० सक०
 सेट् । नेपति । क्षमेतीत् ।
 मिहत्, (पु०) मिपति (विक्रियते) । मिह्+अविक् ।
 जो रोगका इत्यत्र कर्ता है । वैप । हकीम । रोगप्रती-
 कार । इत्यम् ।
 मिहसदा, (स्त्री०) मिहसां (क्षत्रं) टीक्षते । टीक्ष्+इ-
 ट् । इत्यात् । घञ्ङुभा अक्ष । "मिहिया"
 "मिहिया" "मिहिया" मिहिक्षा ।
 मी, मन्-वत्या । लङ् । मरण-कालना-सक० क्वारि० पर०
 कटिच् । नीवति-मिवाति । क्षमेतीत् ।
 मी, (स्त्री०) मी+किच् । भय । वरना । सौक ।
 मीनि, (स्त्री०) मी+किच् । भय (वर) । कम्प ।
 वीर्या । "क" मीतः । मय्युक्त । इराहुभा ।
 मीन, (वि०) विनेति अस्मात् । मी+मह् । त्रिसे
 वता है । मन्वेत् । मन्वन् वारण । इत्यात् । मया-
 म्भ एण । मन्वेत् । मीमणेन । अम्भयेतस (मन्व-
 ट्) (पु०) । इमां (देरी) (स्त्री०) । "मीमा देवीति
 विद्वत्सं ह्यभे क्व भविष्यति" इति वगी ।
 मीनदण्डम, (वि०) मीनः पण्डमः दण्ड । इत्यानी
 ट्+इत्+इत् ।
 मीनरोम, (पु०) मुनिपिपा अत्रुत् (छोटा माई) ।
 इत्यम् इत्यम् । एक प्रकारका कर् (कर्) । कुन्तीके
 इत्ये इत्युत्ता इत्यत् इत्या इत्या पाठम् ।
 मीनिकाहारी, (स्त्री०) मीनेनेताया एकदरी । घञ् ।
 मीने इत्याहरी इत्याहरी (विने मीने ताया) ।
 मीट, (वि०) मी+इत् । मयतीत् । इत्येनेताया
 इत्यात् । इत्याहरी ।
 मीरह, (पु०) मी+इत् । मरह । मीरह । मीरह ।
 मरह । मीरह । एक प्रकारका इत् (मरह) । इत्या-
 म् (वि०) ।
 मीरह, (पु०) मी+इत् । मी+इत्+इत् । मीरह ।
 इत्यात् । इत्याहरी । मीरह । मीरह ।
 मीरह, (पु०) मी+इत् । मी+इत्+इत् । मीरह ।
 इत्यात् । इत्याहरी । मीरह । मीरह ।
 मीरह, (पु०) मी+इत् । मी+इत्+इत् । मीरह ।
 इत्यात् । इत्याहरी । मीरह । मीरह ।
 मीरह, (पु०) मी+इत् । मी+इत्+इत् । मीरह ।
 इत्यात् । इत्याहरी । मीरह । मीरह ।

मीष्माष्टमी, (स्त्री०) १ त० । मीमहे इत्यं
 शरीर छोडनेका दिन माफके इत्यने
 (इगलिये इस दिन सब बर्णोको उरर
 चाहिये) ।
 मुक्त, (वि०) मुक्+अविकि क् । मी ।
 "मावे क्" मक्षण । घाना (म०) ।
 जन । भोग । एक कवचा ।
 मुक्तसमुद्भित, (वि०) पूर्ण मुक्त इत्यात्
 (लङ्) । भोजनोत्तर लङ् अर्थात् ।
 छोडा गया अन्न आदि ।
 मुक्तिप्रद, (पु०) मुक्ति (मोक्ष) मोक्ष द
 (स्वस्वायाममद्यथात्) । जो मोक्ष द
 है (मोक्ष दनेसे ज्ञानागत है) । इत्यात् ।
 मुञ्ज, (वि०) मुञ्ज-भोजन-मुञ्जना । क ।
 इति क् । मयात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्ज, मक्षण-ज्ञाना । क० । पाठ्या । पर० ।
 अर्थात् । मुक्तं अन्नं । अर्थात् । मुने इत्यात्
 यति । "दिवं मन्वन्ति मोक्षते इत्यात्"
 मुञ्जः ।
 मुञ्ज, (पु० स्त्री०) मुञ्जतेनेन । मुञ्ज+अविकि
 मुञ्ज । क । हात् । लीलापतीने प्रथम इत्यात्
 खोनाया खोनाया रेसापिठे । इत्यात् ।
 मुञ्ज । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्ज, (पु०) मुञ्ज-वर्ण-देशेने । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जगान्तक, (पु०) १ त० । लीलापतीने
 इत्यात् ।
 मुञ्जगान्त, (पु०) मुञ्जान् अर्थात् ।
 मीनेने घाना है । मरह । "मुञ्जगान्त"
 मुञ्ज, (पु०) मुञ्ज । क । मरह । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रथम, (म०) मरह अर्थात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रम, (पु०) मुञ्ज (इत्यात्) इत्यात् ।
 मयभान् इत्यात् । जो इत्यात् । इत्यात् ।
 मयभान् इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रम, (पु०) मुञ्ज । इत्यात् । इत्यात् ।
 मयभान् इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रथम, (म०) मुञ्ज । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रथम, (म०) मुञ्ज । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रथम, (म०) मुञ्ज । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।
 मुञ्जप्रथम, (म०) मुञ्ज । इत्यात् ।
 इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् । इत्यात् ।

अन्तर, (न०) भुजमोतरं (मयं) । बाहुभोका
त्व । कोट । कुच्छट । गोद.

अप्य, (पु०) मुञ्ज+किप्यन् । दाघ । रोग । सतप्य ।
त्व । हस्तपत्र । हापका एत (घोष) । दाही (गोली)
नेर वेद्या (बंचनी) (स्त्री) .

अन, (न०) भवति अत्र । भून्वयुन् । होगा है हयमे
गान् । दुनिर्भी । लोभ । आकाश । आस्थान । १४ की
रूपा.

अनकोप, (पु०) भुवनस्य कोप इव । मानो संसारका
ब्रजाना है । भूगोल । पृथिवीका गोला । ज्योतिषका एक
व्यय.

अनिदा-ईश्वर, (पु०) भुवनस्य ईश । पृथिवीका
स्थानी । राजा.

अनिश्रय, (न०) भुवननां प्रथं । सीनो भुवन (स्वयं,
भार्यं, पाताल) .

अनिपायनी, (स्त्री०) भुवनं पावयति । संसारको पथिप्र
करनेवाली । भीष्माजीका माम.

अनिमर्ष, (पु०) भुवनं विभ्रति । पृथिवीको पाळने-
वाला (आश्रय) .

अनिदासिन्, (त्रि०) भुवनं दासि । पृथिवीपर गाहा
बनानेवाला.

अनियर, (अन्य०) आकाशसम्पद् द्युरा भोक्त.

अन्याति । पाना । पु० आ० राक० सेट् । भावयते । अरी-
मवत्.

अन्याति । पाना । ध्वा० उभ० राक० सेट् । भवति-ले । अमूर-
अमयिष्ठ.

अनुदि पाठ करना । अक० । शोचना और भिन्नाना । राक०
पुत्र० उभ० सेट् । भावयति-ले । अवीगवत्-न.

अनु, सत्ता होना । ध्वा० पर० अक० सेट् । भवति । अमूर.
अनु, (स्त्री०) भूभक्तिः । पृथिवी । जमीन । एषधी संख्या ।
स्थानमात्र । और बहूधी अग्नि (आग) .

अनुत्प, (पु०) भुवः वम्पः । पृथिवीका वीपना । भूकाल.

अनुतेना, (पु०) भुवः (पृथिव्याः) वेग इव । पृथिवीका
मानो वात है । बट । बट और वेहन । सेवान.

अनुगोल, (पु०) भूगोल इव । गोलमकल्पवाला पृथिवी-
का मण्डल (दावा) । "अथे समस्तदृग्मस्य भूगोले
अधोत्रि शिष्टिः । शिष्ट्याः वरमा एतच्छ्रद्दमप्यो धारणा-
मिवा" इति श्रुतिश्रुत्याः.

अनुष्वाया, (स्त्री०) भुवराजका । भूभिरवरापरंस्वत्
पृथिवीकी राजा (भूगोली विरगोके समस्तको उदर
हुवा अनुषट् कादी अंधकार) । लक्ष्म.

अनुजम्बू, (स्त्री०) भुवो जम्बूदि (अनुजम्बू) । अग्नी
पृथिवीका अयन है । लोपूष । सेट् । निरहृत्पञ्च.

भून, (न०) भूभक्त । न्याय । मुनातिव । उचिन । पृथिवी,
जल, तेज, वायु, और आकाश रूप, गंध अदि विदेप
गुणवाले इत्यं । यथायं । टीक । वासतिव । अगनी ।
और तत्त्वका अनुगन्भाव । पिताव आदि । इमर । दोषि-
औंका राजा । इण्यरथ (पु०) । अग्नीन (भीतगदा) ।
सदा । गल (त्रि०) । इण्यपत्नी वदुंदरी । शिवां टात्.

भूनप्र, (पु०) भूयं इति । इन्+उच् । भूयंय (भोज-
पत्र) । इसके धारण करनेके बालकोके प्रद भूयं कादि
भागवाते है । "भूयं (प्रायं गन्) इति (अथ
बरोहि)" जो अथगी गंधका शिस्कार कर्ता है । अनुग-
लभुन । और उष् (उंड) । भूनायक (भूगोके मया
करनेहारा) (त्रि०) । पुत्रकी (स्त्री०) लोत्.

भूनचतुर्दशी, (स्त्री०) भूभ्रिया वदुंदरी (ददुरेवेव
तसां शीपदानान्) । यमकी पिताकी वदुंदरी । इसके
उदरेमे उगमें शीपक दिया जाता है । कार्तिधन (आगु)
के इण्यपत्नी वदुंदरी । यमवदुंदरी । कर्त्तव्यदुदि
पौत्रम । कार्तिवृष्णवदुंदरी.

भूनधारी, (स्त्री०) भूभ्रि (जम्बू) धारणी । अ-
नु लोपू । जो जीवोको धारण कर्ता है । पृथिवी । अग्नीन.

भूनाय, (पु०) । त० । भूगोका मय । टिकनी । और
बटुभोष । "नेरो भूनायक" इति बटुभोषम्

भूनायान, (न०) भूभ्रि नवरादि । अन्+निष्+भुन् ।
जो भूगोको मय कर्ता है । ददात् । तंवर । (भूगोके
नाम करनेहारा ददात्) । सारणी । अजन्व (पु०) .

भूनपश, (पु०) भूभ्रिः पश (अंधकारवत्) ।
अधिस होनेके पश भूगोका विचार है । इण्यपत्.

भूनभाषन, (पु०) भूभ्रि (पृथिवीकी अथरणी
(अजदति) भूभ्रिष्+भुन् । जो पृथिवी अन्तिके हव-
जाता है । "भूभा (ताया दवच) अथरत् इत्यं" । शिष्टकी
भाषना लकी वा टीक है (शिष्णु) और बटुभोष ।
उनका शोष.

भूनपक, (पु०) भूभ्रि (प्रकीर्णो वदुंदरी इत्यं)
एव (वरिः) । कोक अदि उदरेके शिष्टे बंड देना ।
प्रतिष्ठित एतत्के वदुंदरीके शिष्टे वदुंदरीके वरि (देवो-
वका वर्ये) । "भूभ्रिःको वरि-इत्यं भूभ्रिः" इति श्रुतिः.

भूनर, (न०) भूभ्रिः एव । पृथिवी । त० । अजन्व ।
पृथिवीका मय.

भूनशक्ति, (स्त्री०) भूभ्रि (देवायकवदुंदरीके
पृथिवीका शक्ति (शिष्टेवत् शोषणम्) । एतत्कालके
प्रतिष्ठित देवके अयन कालके शिष्टेवत् एतत्कालके
शिष्टेवत् एतत्कालके देवका अयन । एतत्कालके शिष्टे
अयने होनेका शिष्टेवत् काल । शिष्टेकी अयनी

मण्डन राजाना । पु० उभ० पक्षे भ्वा+पर० सक०
 १ट् । भूयसि-से । भूपति ।
 ण, (न०) भूयतेऽनेन । भूरु+करणे ल्युट् । जिससे
 जाना जाता है । अलंकार । जेवर । गहना । मुद्रुट् ।
 प्राक् ।
 ण, (स्त्री०) भूयु+अ । मण्डनक्रिया । राजावट ।
 देत, (त्रि०) भूरु+क । अलंकार । राजाना गया ।
 राजाहुआ ।
 णु, (त्रि०) भू+म्भु । भवनसौल । होनेवाला । होनहार ।
 स्वर्ग, (पु०) भुव० स्वर्गः । पृथिवीका स्वर्ग (बहिरन्) ।
 सुमेरुपर्वत ।
 र, भरण-पालना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । भरती-से ।
 अनापीद ।
 धारण करना । पोषण पालना । जु० उभ० सक० अनिट् ।
 विमर्ति । विभृते । अनापीद । अयत्न ।
 हुंस्त-घ, (पु०) । भुक्ता हुंसा (शा) इक्षितक्षापने
 यस्य । घृ० । "घु" को सम्प्रसारण होता है । जो भीसे
 अपने हृदयकी केशिका प्रकट करता है । स्त्रीका वंश
 धारण करनेहारा नट ।
 कुटि-टी, (स्त्री०) भुवः कुटिः (भङ्गि) सम्प्रसारणम्
 वा शीष् । भौका विपद्या करना । धूम्र । भौका चढाना ।
 गु, (पु०) भृग्+कृ-वृ । एक मुनि । शिव । शुभ्रभट्ट ।
 पर्वतस्थान । पहाड़की चोटी । अन्दरि । और ऊंची जगह ।
 शृगोर्गोत्रापरयं+अण् (बहुवचनमें ल्येप ही जाता है) ।
 शृगुके वंशका (व० व०) ।
 शृगु, (पु०) एक ऋषिका नाम । शृगुवंशके चलनेवाला ।
 अग्निही शरके साथ उत्तम होनेसे शृगका नाम शृग हुआ ।
 शृगुननय-नन्दन, (पु०) शृगोः ननयः । शृगुका पुत्र ।
 शृगुचार्य । परशुराम ।
 शृगुपति, शृगुणा (भार्गववंशस्य) पतिः । शृगुके वंशका
 पति । परशुराम । उनकी इष्टने दैत्यपति (कार्तवीर्य)-
 से रक्षा की थी ।
 शृगुसुत, (पु०) १ तः । परशुराम । और शृगुचार्य ।
 शृङ्ग, (पु०) शृ+गन्+ङ्+व । अमर । भौर । कलिङ्गपत्नी ।
 शृङ्गाय । जार । यार । शृङ्गर (सोने आदिका पात्र)
 और शृङ्गरोल । अबरक (न०) ।
 शृङ्ग, (पु०) शृ+गन्+ङ्+ङ्+व । बड़ी खाड़ी मक्खी ।
 एक प्रकारका कीड़ा । बड़ा काला भौर ।
 शृङ्गदण्ड-टि, (पु०) शृङ्ग इव दण्डि+अच् । इन् वा घृ० ।
 अल इत्यम् । शिवपार्ष्वरमेद । शिवजीके पास रहनेवा-
 लोंमेंसे एक शिवजीका द्रापण । शिवजीका दरवान ।
 "शेट" ।

भृङ्गाभीष्ट, (पु०) शमि+श्+क । १ तः । भौरका
 पियाया । आमवा इश ।
 भृङ्गि, (पु०) शृ+गिक्+मुट् । शिवजीके पास रहनेवालों-
 मेंसे एक ।
 भृङ्ग, भर्जन-भूषा । भ्वा० आ० सक० सेट् । भर्जते । अम-
 विट् । शृङ्गः ।
 भृङ्गक, (त्रि०) शृ+क । स्वार्थे कन् । वेदनद्वारा कर्मकर ।
 मजदूरी लेकर काम करनेहारा । मजदूर । "भृङ्गकाप्यापको
 यथ" इति मयुः ।
 भृति, (स्त्री०) शृ+क्तिन् । गरण । पोषण । पालना ।
 "करणे क्तिन्" वेत्तन । मजदूरी । और मूल्य । मोल ।
 भृतिभुङ्ग, (त्रि०) भृति (वेत्तनं) भुङ्गे । भृङ्+क्तिप् ।
 वेत्तनोपजीवी कर्मकर । मजदूरी लेकर काम करनेहारा
 मजदूर ।
 भृत्स्य, (पु०) शृ+भ्यप्+लुक् । दास । गुलाम । भरणीय
 (पालन करने लायक) (त्रि०) । "भावे क्यप्"
 पालना (स्त्री०) टाप् "भृत्सा" ।
 भृत्याध्यापन, (न०) शृन्वेन अप्यापनम् । नौकर बनके
 पढाना । पीस लेकर वेद पढाना ।
 भृत्यवर्ग, (पु०) शृत्यानां वर्गः । बहुतसे श्रव । बहुत
 नौकर । नौकरोंकी जमात ।
 भृ (घृ) मि, (पु०) भृम्+इन् । घृ० वा सम्प्रसारणम् ।
 वर्णा । वायुमेद । दाबरोल । पानी आदिका घूमना ।
 घूर ।
 भृश, अधःपतन । नीचे गिरना । रिवा० पर० अक० सेट् ।
 श्रयति । अश्रय-अभर्ताद । कला वेद ।
 भृश, (न०) शृ+क । अत्रिणय । जिमाया । बहुत । उष-
 काला (त्रि०) ।
 भृष्ट, (त्रि०) भृष्ट+क । जलोपसेक (पानी सीकने)के
 बिना रेत और आगके संयोगसे पकाहुआ । भुनहुआ ।
 भृ, भर्जन-भूषना-भर्त्सन-शिक्षकना-भरण-पालना । कदा० पर०
 सक० सेट् । शृणाति । अभाषीत् ।
 भेक, (पु०) गी+कन् । मेदक । डडु । और भेष(बादल) ।
 भेड, (पु०) भी+ड । भेष । मैदा । मेदा । एक ऋषिका नाम ।
 भेष्ट, (त्रि०) भिद्+भृच् । काढनेवाला । तोढनेवाला ।
 भेद, (पु०) निद्+भृच् । पृथक्करण । छुटा करना ।
 परक । छुट्टा कर देनेके बार उत्तरोंमेंसे छीछण । मेदके
 तोढ डालना । पारना । म्वायमत्रमें अन्दोन्माभव (एकका
 रूपमें न होना) । जैसे पटये पटका मेद है अर्थात्
 घटमें पट नहीं रहता ।
 भेदक, (त्रि०) निद्+भृच् । काजी करनेवाला । मिदरक ।
 काढनेवाला । मेद करनेवाला । छुटा करनेवाला । दैन्यकरक ।

अन्त्याग, (पु०) भोजनस्य स्थानम् । भोजनका छोटना ।
 त रचना । रोजा रराना ।
 अनुभूमि, (स्त्री०) भोजनस्य भूमिः । भोजनस्थानम् ।
 भोजनशाला । खानेका कमरा ।
 अनुव्यय, (त्रि०) भोजने व्यवहृतः । भोजन (खाने) में
 गया हुआ ।
 अनुव्यय, (पु०) भोजनस्य व्यवहृतः । भोजनका व्यव
 हृतकारणात् सार्धम् ।
 अनुवीय, (त्रि०) भुञ्ज+अनीयत् । खानेयोग्य । भक्ष-
 णीय । खानेलायकम् ।
 अनुवीय, (त्रि०) भुञ्ज+गिञ्+तृच् । खानेनेवाला ।
 खानेनेवाला ।
 अनुजि, (त्रि०) भुञ्ज+जिनि+इन् (समासके अन्तमें
 आतादे) खानेवाला । खानेनेवाला ।
 अनुज्य, (त्रि०) भुञ्ज+ज्यत् । भक्षणयोग्य इत्यभाव । खानेकी
 कोई चीज ।
 अनुक, (पु०) भोजनम् । एक देशका नाम ।
 अनुक, (त्रि०) भूतानि (पृथिव्यादीनि-पिशाचाञ्च वा
 अधिपत्ये जातानि) । भूत+उक् । पृथिवी आदि वा पिशा-
 चांसे आयेहुए उपद्रव । व्याधि (बीमारी) आदि ।
 अनुम, (त्रि०) भूमी (स्त्री०) भूमेरुपर्यन्तम् इदं वा+अण ।
 पृथिवीसम्बन्धी । पृथिवीका । जो पृथिवीपर हो । पृथि-
 वीका बनाहुआ ।-मः । मंगलप्रद । सारकनामी दैत्य ।
 पानी । शैतनी । आकाश । अत्रिकृषिका नाम (पु०)
 भूमी । जनककी कन्या । सीता (स्त्री०) ।
 अनुमर, (न०) भूमिपरिचरं रत्नम् । शाकम् । मंगलका
 पिशाच रत्नम् । प्रवालम् । मूंगा ।
 अनुमिक, (त्रि०) भूमौ अधिपत्ये+उक् । भूमिपर अधिपति
 रत्नागया । पृथिवीपर जीनेदास । जिमीदार ।
 भूम्यधिकारी ।
 अनुमिर, (त्रि०) भूमिनि (स्त्री०) अधिपत्ये+उक् ।
 स्वगणान्यस्य । राजाके राजानेमें छोत्रेपर अधिपति रत्नने-
 दास । खानेनेका अधिपति । खोराप्यस्य । खाननेची ।
 अनुम्य, अण-करणम् । भ्वा० आ० अक० सेट् । अण्यसे ।
 अभ्यविष्टम् ।
 अनुप, अण-करणम् । भ्वा० पर० अक० सेट् । अण्यति ।
 अत्राणीत्-अत्रणीत् ।
 अनुपुत्राण, (पु०) पुत्रा इति (वा) या यस्य । पु० नि० ।
 स्त्रीका वेध (भेद) कारणे करके नावनेदास नद ।
 अनुपुटि-टी, (स्त्री०) अनुपुः कुटिः (भंग) पु० वा स्त्री ।
 अनुपुत्र । भोजन शाला ।
 अनुपु, अण-करणम् । भ्वा० पर० अक० सेट् । अनुपति । अनुप-
 अत्रणीत् ।

अनुपु, अण-करणम् । भ्वा० पर० अक० सेट् । अनुपति-
 अनुपति ।
 अनुप, (पु०) अनुप+अण् । शिवाहाणम् । हाडी समज । और
 खानसे स्थित पदार्थका मिठी औरही खानसे जाना ।
 अनुपनिगमस्थानम् । पानीके निकलनेकी जगह । पानीका
 सरना । कुन्द (फूल) । अनुपण (घूमना) ।
 अनुपण, (न०) अनुप+अण्+अण । घूमना । चकर लगाना ।
 इधर उधर टहलना ।
 अनुपतर, (पु०) अनुप+तरत् । मधुकर । मौप ।
 अनुपतर, (पु०) अनुप इव कायति । कै+क । मायेपर
 लटक रही औरके समान चूर्णकुन्तल (जुन्के) ।
 अनुपराभिलीन, (त्रि०) अनुपरेः अभिलीनः । औरसे पिर-
 हुआ (व्याप्त) । अनुपरेसे आक्रान्त ।
 अनुपकरण्डक, (पु०) अनुपराणां करण्डकम् । औरसेका संदुक ।
 औरोंकी मरीहुई छोटीकी संदुककी (चारोंके पाप होकी
 है प्रकारा (रोशनी) को बुझानेके लिये औरों (म-
 निराओं) को छोड़ देते हैं ।
 अनुपराधा, (स्त्री०) अनुपराणां बाधा । अनुपरोकी बाधा
 (लकलीक) ।
 अनुपराविलसित, (न०) अनुपराणां विलसितम् । अनुपरो-
 औरोंकी धेत । एक प्रकारका छन्द ।
 अनुप, अण-करणम् । नीचे गिरना । भिवा० पर० अक० सेट् ।
 अनुपति । अनुपरीत्-अनुपरीत् । बला वेद ।
 अनुप, (त्रि०) अनुप+अण् । अण्युत् । गिरना । अण्यपति ।
 पुट । लुभा ।
 अनुपत्, पाठ (पकाना) । पु० व० अक० अनिट् ।
 अनुपति । अनुपरीत् ।
 अनुप, शीति-चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । अनुपते ।
 अनुपति ।
 अनुपिष्णु, (त्रि०) अनुप+इष्णुन् । शीतिशील । चमकने-
 वाला ।
 अनुप, (पु०) अनुप+अण् । पु० । एक पितासे हुआ ।
 अनुप । सगाभाई ।
 अनुपगन्धि-गन्धिक, (त्रि०) अनुपः गन्धः यत्र व० स ।
 अनुपकी गंधशाला । मान मान अनुपशाला (वास्तविक अनुपका
 धर्म छोड़नेवाला अनुप) ।
 अनुपुज, (पु०) अनुपुज+अण् । अनुपुज । अनुपुज ।
 अनुपुजाय, (स्त्री०) अनुपुः अया । अनुपुकी स्त्री । अनुपु-
 अनुपुस्त्रीया, (स्त्री०) अनुपुके अनुपुस्त्रीयि ।
 अनुपुस्त्रीया । इति अनुपुस्त्रीया भी कहते हैं ।
 अनुपु, (पु०) अनुपुः पुत्रः । अनुपु+अण् । अनुपु-
 अनुपु । और अनुपु (पुत्रनम्) ।

भ्रातृत्व, (न०) भ्रातृत्व । भ्रातृभावः । भाइपन । भाईचाप ।
 भ्रातृश्वशुर, (पु०) भ्रातापि (पत्युज्यैष्ठभ्रातापि) श्वशुरस्थानीयः । पितृश्वशुरत्वात् । सामीका वदा भाई (पिताके समान होनेसे वह भी श्वशुर माना जाता है) ।
 भ्रात्रीय, (पु०) भ्रातृः शपत्यं, इदं वा छ । भ्रातृश्वशुरः । भाईका छहका । भाईका (भ्रातृसम्बन्धी) (वि०) ।
 भ्रान्त, (न०) भ्रम्+भावे क् । भ्रमण । घूमना । "कर्म-रि क्" (भूलादुवा) सिव्या ज्ञानवाला । घूमनेवाला (वि०) ।
 भ्रान्ति, (स्त्री०) भ्रम्+क्तिन् । भ्रमण । घूमना । अयथाप-ज्ञान । झूठी समझ ।
 भ्रान्तिमत्, (भ्रान्तिवाला) अलंकारमें अर्थालंकारभेद ।
 भ्राम, (पु०) भ्रम्+अन् । इधर उधर घूमना । मोह । भ्रम (गन्ती) भूल । धुक ।
 भ्रामक, (पु०) भ्रामयति । भ्रम्+भुक् । शृगाल । गीदट । शिकार । घुमानेवाला (वि०) । (भ्रमानेवाला) ।
 भ्रामर, (न०) भ्रमरेण सम्पादिते, अस्वेदं वा+अन् । भौरेने बनाया । मधु । सहत । भ्रमरसम्बन्धि (भौरेका) (वि०) । अमरकान्त (पुम्बक पापर) (पु०) ।
 भ्राष्ट्र, (न०) अष्टुः इदं+अन् । क्षाम्पान (आकाश) । भवेनवाप (सुषेधा पाप-कडाही) (पु० न०) ।
 भ्रु (भ्रु) कुम्भ, (पु०) भ्रुवः कुंभा यस्य । पु० वा ह्रस्वः । शीघ्र रूप बनाके भाचने-वाया पुरव ।
 भ्रु (भ्रु) कुटि (स्त्री०) १ त० । पु० वा ह्रस्वः । शोषणे भा बहाना ।
 भ्रु, (स्त्री०) भ्रम्+इ । नयनोपरोमरात्री । शीशोके कण-रोम (बालों) की कणार । भौ । भवै ।
 भ्रुणप, (पु०) १ त० । भौका बहाना । संचेत (स्वारर) -शो जनावेके शिष्य भौका टेडा बहाना । भौका फेंकना ।
 भ्रुण, भाण-उन्मीद करना । निधय करना । चाहना और करना । भ्रु० अन्त० गृह० शेट् । भ्रुणयवे ।
 भ्रुण, (पु०) भ्रुण+वन् । शिशोका गर्भ । और बालक ।
 भ्रुणप्र, (वि०) भ्रुणं (गर्भं) हन्ति । हन्+ट् । गर्भे ही हत्या करनेवाला । " शिष् " " भ्रुण " यही धर्म ।
 भ्रुण, बमरना । भ्रु० आ० अह० शेट् । भ्रुणते । भ्रुण-शिर ।
 भ्रु (भ्रु) ण, शीका बहाना । अह० भ्रु० टभ० शेट् । भ्रु (भ्रु) हन्ते ।
 भ्रु, (पु०) भ्रुण+वन् । उचित स्थानसे शिरना ।
 भ्रुण, बहाना । भ्रु० टभ० अह० शेट् । भ्रुणति ने ।
 भ्रुण, बमरना । भ्रु० अह० भ्रु० अह० शेट् ।
 भ्रुणते । भ्रुणते ।

म
 म, (पु०) मन्+क । बन्द । बाँद । गिरा । म समय । मधुगन्धन । मिय ।
 मक्, भृग-जाना-मन्त्रि-जाना । म्ना० अ० ग० इदित् । महुवे ।
 मकर, (पु०) मनुष्यं कृणाति (द्विनधि) इन्-जलजन्तुभेद । मगरमच्छ । कामदेवके शिष्य । बारह राशियोंमेंसे दूसरी । द्वादशराश्यात्मक " मं (विषं) किरति " ।
 मकरकुण्डल, (पु०) मकरराशि कुण्डल (मं एक कानका गहना । त्रिमन्त्र मकर मकर मकर)
 मकरकौलन, (पु०) मकरः (मकरविधि) (खनो) यस्य । त्रिमन्त्र तंदा मच्छके त्रि-कामदेव । " कर्दप " " मकरकेतु " यही बी ।
 मकरध्वज, (पु०) मकरः ध्वजः यम । ध्वज-वाला । कामदेव ।
 मकरन्द, (पु०) मकरं अपि धति (कर्ण-शो-अवयवगने । तोडनामक पु० पुन । पुन गहल । फूलका रस । कुंदाहल । मिष्ठान (मकरसंक्रमण, (न०) मकरे संक्रमणं । राशिमें परिवर्तन (जाना) ।
 मकरिन्, (पु०) मकरः मन्दप्रभृतिः । मधुम ।
 मकुट, (न०) मक्ति-जाना-भूरा+उट पु० । मुकुट । तान ।
 मकुर, (पु०) मक्ति+उरत् । पु० । दान । वा पुत्र । इलाहदण्ड । पुनारही छहरी ।
 मकु, गति-जाना । म्ना० आ० गह० शेट् । मिय ।
 मत्, शीघ्र-गुराण करना-मत्ता होना-इका-इका अह० शेट् । मयति । अमलीप ।
 मत्तवीर्य, (पु०) मत्तं (मंदते) कीर्तयति । त्रिभुं वीर्यं हृद्य हो जाता है । शिवका शिष्य वीर्य हृद्य हो जाता है । शिवका शिष्य ।
 मत्ति (स्त्री) का, (स्त्री०) मय+भृत् । पु० वा शीघ्रः । एक प्रकारका बीजा । मत्ति ।
 मा, गर्ण-मदंज शीघ्रता-जाना । म्ना० आ० मयति । अमलीप, अमलीप ।
 मय, (पु०) मय+व । बह । काय । (मयः) मयि । मयिमादिषु पूजाके लयक । मय (वि०) ।
 मय, गर्भना । म्ना० अ० गह० शेट् । मयती ।

१. (पु०) मंगले (अथो मन्वते) अनेन । मणि+
 च् । प्र० । त्रिभ्यो नीच जाता है । मणं (दोषं) पापं
 दधाति । धा+क । जो दोष वा पापको धारण करता है ।
 क देश । उस देशके लोग (व० व०) ।
 मञ्जर, (पु०) मगधका राजा । जरातन्वराजा । वेदा-
 का सुवह ।
 मञ्जुष्या, (स्त्री०) मगधदेशो बहुव्ययेन उद्भवति ।
 म् । पिप्लो । मय इम देशमें बहुत होती है ।
 मञ्जु-सल करना । जूएडी सेत आदि करना । अक० ।
 गि-जाना । निन्दा करना । और आरम्भ (शुरू करना) ।
 इक० भ्या० आत्म० सेद । इति । महुते । अमह्विद ।
 मञ्जुष्य । सजाना । भ्या० पर० एक० सेद । इति ।
 नदति-अमह्वीत ।
 मञ्जु, (पु०) मङ्+क । "ह" को "य" होता है । मयः
 (पूजा) । अस्त्वर्थे मञ्जु । "म" को "य" होता है ।
 इन्द्र । मयवन्ती । मयवतः । वगकी स्त्री । शेष "मयवती" ।
 मञ्जु, (पु०) मङ्+कनिन् । नि० । इन्द्र । मयवा । म-
 यवानी । मयोनः । उदार (सुलारित) (त्रि०) । उत-
 की स्त्री "मयोनी" स्त्री ।
 मञ्जु, (स्त्री०) मङ्+य । "ह" को "य" होता है । अधि-
 नीसे दसका मञ्जु (तारा) । ये पाँच तारोंके स्वरूपमें
 होनेसे बहुवचन भी होता है । "भितरः सृष्टवन्त्यममट-
 काय मयायु च" सृष्टि-
 मञ्जु, (पु०) मङ्+उरच् । दर्पण । पीछा । आईना ।
 मञ्जु, (अन्य०) मणि+उन् । चीप्रता । जल्दी । मृश ।
 बहुत । प्र० । "ल" "ल" भी होता है ।
 मञ्जु, (पु०) मणि+अलच् । भूमिसुत । शृण्वीका पुत्र ।
 एक मङ् । प्रसन्न । अच्छा । चाहेहुए अर्थकी निधि ।
 उसवाला (त्रि०) दुर्गा । कुशा (स्त्री०) ।
 मञ्जुकाल, (पु०) मङ्गलका काल । मङ्गलका समय ।
 सुधीका वक्ता ।
 मञ्जुलच्छाय, (पु०) मङ्गल छाया वस्य । जितकी अच्छी
 छाया हो । बहुरूप । बहुधा इत्यन्त ।
 मञ्जुलपाठक, (पु०) मङ्गलार्थं स्तुतिं पठति । पठ्+ण्युल् ।
 मङ्गलके लिये प्रशंसाओंकी पठता है । स्तुतिपाठक ।
 मञ्जुलप्रदा, (स्त्री०) मङ्गलं प्रददाति । प्र+दा+क । मङ्गल
 देती है । इति । इन्दी ।
 मञ्जुलयाघ, (न०) मङ्गलकर वाद्यम् । मङ्गलके सम्बन्ध
 का । सुरी-नृतिये ढोल ।
 मञ्जुलसूत्र, (न०) मङ्गलकर सूत्रम् । परिके जीवन-
 पथंत विवादिता स्त्रीसे धारण किया गया मङ्गल (सुरी)
 का सूत्र (मंगन) ।

मङ्गल्य, (न०) मङ्गलाय हितं यत् । चंदन । गोप्रा ।
 गिर । और दही । इषिर (सुंदर) । और मंगल कर-
 नेवाला (त्रि०) । बोट । विज्ञ ।
 मङ्ग, उष्णाकरण-ऊषाकरण । ठगना । अभिमानी होना ।
 पूजःकरना । पकड़ना । एक० । बगड़ना । अक० भ्या०
 आत्म० सेद । इति । मयते । अमघिष्ट ।
 मङ्गचिंका, (स्त्री०) वह शब्द संज्ञावाचक शब्दके पीछे
 रहता है । और अपनी जातिमें अच्छेको सिद्ध करता है ।
 जैसे "मोमचिंका" एक बहुत ऊँचा गौ वा बैत ।
 प्रसन्न । बहुत अच्छा ।
 मञ्जन, (न०) मङ्ग+उन् । ज्ञान । नहाना ।
 मञ्जसमुद्भय, (न०) मन्वात् समुद्भवति । सम्+उद्+भू+
 अच् । ५ त० । मन्वाथे उपजता है । शुक्र । वीर्य ।
 रेत । मनि ।
 मञ्ज, (स्त्री०) मञ्+अल्+टाप् । अस्थिसार । हड्डिओंका
 सार । कृशका सार अंग ।
 मञ्जाङ्ग, (न०) मन्वातो जायते । जन्+ङ् । जो मन्वाथे
 उत्पन्न होता है । भूमिसे उपजा गुग्गुलु ।
 मञ्जोरस, (पु०) मन्वायाः रसः (परिपाकः) । मन्वाका
 रचना । वीर्य । मनि ।
 मञ्ज, (पु०) मञ्जि-उच्छ्राय । ऊंचा होना+पम् । खड़ा ।
 मञ्ज । बाँसका बनाहुआ ऊंचा आसन । उच्च मञ्जप-
 त्रियेव ।
 मञ्जुरि-नी, (स्त्री०) मञ्जु नञ्जति । नञ्+इन्+वाङ् ।
 पर० वा स्त्री । मङ्गे उत्पन्न हुई कोमल पत्तोंके अङ्कुर-
 स्वरूपकी बसरी । मिजरा । मुष्का । मोती । द्रिल नामी
 लता (पेड़) और तुलसी ।
 मञ्जिष्ठा, (स्त्री०) अतिघनेन मञ्जिमनी+ईष्टम् । एक बेल ।
 मञ्जीठ ।
 मञ्जीर, (न०) मञ्जु शब्द करना+इरन् । मूपुर । शंजर ।
 पजेव । पाँचमें पहिरनेका जेवर । दधिमन्चनदृष्टः । चण्य ।
 दाम्भ । मया (धा, नीधी रसो बांधनेका संज्ञा ।
 मञ्जु, (त्रि०) मञ्जु+उन् । मनोहर । दिलको अच्छा लगने-
 वाला । सुवर्णत ।
 मञ्जुधोप, (पु०) तन्त्रमें एक उपासना करनेकायक
 रहता । अच्छे शब्दवाला (त्रि०) अक्षर (स्त्री०) ।
 मञ्जुभाषिन्, वाक्-कारिन्, (त्रि०) मञ्जु भाषते-बदली
 बलि वा । मधुरभाषी । मीठा बोलनेवाला ।
 मञ्जुल, (त्रि०) मञ्जु+उलच् । मनोहर । सुवर्णत । जल्-
 रक पशी (मनोमय) (पु०) वह स्थान जो लताओंसे
 आच्छादित हो । विदुष (न०) ।
 मञ्जुवक्त्र, (त्रि०) मञ्जु वक्त्रं वस्य । सुन्दर मुखवाला ।
 सुन्दर ।

१५. (पु०) मधु करोति (संविद्य निष्पादयति)
ए० । राहन् (छाता) बनाता है । अमर । भौरा ।

१६. (पु०) मधु (मधुर) शीरे वस्य । मीठे दूध-
। राहुरका दरहन ।
(न०) मधुनो जायते । जन्+उ । राहुरसे उप-
दे । विषयक (मोम) । मधुरैल । मेदधे उपयी
(श्री०) ।

१७. (पु०) मधुनामधुरं जितवान् । जि+भूते किर ।
नि मधु नामी देलको जीतलिया । विष्णु ।

१८. (न०) मधुना (मधुराणां) प्रवर्त्त । हीन मीठे ।
१९. पूत (धी) और मितरी ।
(पु०) मधु पिबति । पा+क । राहन् (रघ) पीता
। अमर (भौरा) । राहन् पीनेवाला (वि०) ।

२०. (न०) पृच्+पम् । मधुनः पर्वो योगो यत्र ।
पर्वे राहन्का मेठ हो । बांकीके पात्रमें रजसादुभा
। जितमें राहन् मिलावे और ऊपरसे बांकीके पात्रसे
गहो । दही, पी, पानी, राहन् और मीठरी से ५ चीजें ।
२१. (श्री०) मधोर्देलस्य पुरी । मधु नामी देलकी
। मधुरा ।

२२. शिवा, (श्री०) मधुतथापिका मरिका । राहन्
था करनेवाणी मन्थी । राहन्की मापी । एक प्रकारका
ला

२३. (वि०) मधुः (मधुरा) मरिचि क्षय+मधुए ।
डि राहन्का । मधुर्वचन् । एहनरी । योग्याक्रमे
। शिवा योगिभोधि एक प्रकारकी चित्ती वृत्ति । वेदमें
विद्य "मधुवागा" इत्यादि तीन ऋचा । तन्त्रमें एक देवी
श्री०) ।

२४. (श्री०) मधुरा वरिः (कण्ठं) । मीठी छगी ।
पुनी । गणा ।

२५. (पु०) मधु (मधुरं) वृत्ति । रा+क । अरिण
अर्थ "र" वा । पुत्र आरिका मीठा वृत्त । (मीठे रत-
वाला) । इधु (गणा) अरि । मनोहर (अरु वृत्त) ।
और शिव (विवाह) (वि०) । शाल गणा । पुत्र ।
कानि (धान) । और जीव (पु०) ।

२६. (पु०) मधुन एव एगो वस्य । एहन्से समक
प्रतिवसा एव है । इधु । गणा । और अज (पानी) ।
मृत् । दुश्चिदा । मन्थरी (श्री०) ।

२७. (श्री०) मधुरं वरुति । सु+अच् । मीठेको
बनाती है । शिवाकर । शिवाकर ।

२८. (पु०) मधु केशि (अक्षरवर्ण) । गृह-
। एहनको बरता है । अमर । भौरा । "शिवि"
मधुरैः ।

मधुपन, (न०) मधुरैलापिष्टिनं वनं । दह वन जहाँ
"मधु" देल भिवाग कर्ता है । मधुरा क्षेत्रमें एक वन
है । शिवाका मन्थरीमें बहुत मधुबला एक वन ।

मधुवीज, (पु०) मधु (मधुरं) वीजं वस्य । मीठे वीज-
वाला दारुन । वनार ।

मधुघार, (पु०) मधुनो मद्यस्य वारः (वनः) दर १
मद्यका पीना । राहन्की बापी ।

मधुदोष, (पु० न०) मधुनः दोषः (वरिष्ठम्) ।
राहन्का बापी (दूध) । शिवाक । मोम ।

मधुमरद, (पु०) मधोर्वेगनाय गणा (राहुरः)+अच्
ग० । बरानका मित्र वामदेव । "मधुमरवि" ।

मधुमूदन, (पु०) मधु (तक्षामागुर्) मूदयति । मधु
(जीवानां दुःखमुन्मथने, हान्दनेन) मूदयति वा ।
एह+मूद । मधुनामी देलको मूद कर्ता है । मधुका
जीवोंके अन्धे और बुरे बर्तको हान देकर काट देता है ।
धीरुण । "मधु" मापीक मूदयति मधुयति । जो
राहन्के रसको पीता है । अमर । भौरा । "मधु इव
एवमे (मधुवै) मूद एव" मधुपी कर्ता तक्षामागुर् है ।
पात्रकी काक ।

मधुखर, (पु०) मधुः (मधुरः) खरः अन्व । मीठी
आवास है शिवा । शोचिन । शोच । मीठी आवास-
(खर) गणा (वि०) ।

मधुदन्, (पु०) मधुनमधुर्नदीनां क हान्दना इति ।
इह+मिप् । मधुनामी देल वा हान्दने कर्तके बन्धो
नाता कर्ता है । विष्णु । मन्थर ।

मधुकिण्ड, (न०) मधुनः इविण्डं (अरिण्डं) । रा-
तना कपी । मोम । शिवाक । "मधुकिण्ड" इति
अर्थमें ।

मधुपान, (पु० न०) मधुरैवस्य वरुणं (अक्षरः) ।
मधुरैलाका अक्षर (वरुणका स्वर) मधुरा पुनी ।
मधुरा गणा ।

मद्य, (पु०) मधु+अच् "म" को "य" देना है । हीन ।
हीनका । हीनका वृत्त । (हीनका) वर । हीनका
शिला । हीनका हीन (मद्य) । देव (वर) । शिवा
बहुधा हीन का हीनका अर्थ । हीनकी मधुनी । मद्य
(मद्य) अर्थ मद्यक और हीनका शिव मद्य । पू
और शिवाकी हीनका हीन । वरुणं हीनको हीनका
अर्थमें मद्यकी शिवाका (श्री०) । एव शिवाका
मद्य (पु०) । मद्य (इलाकसे मद्यका) । और
हीनके मद्यका (दुःख-आनन्द) (वि०)

मधुपान, (पु०) मद्ये (अक्षरः) मद्ये वद । वरुणं
हीनके शिवाका वर है । अक्षर । अक्षर वर

मध्यतस्त, (न०) मध्य+तगिन् । प्रथमा, पयमी और सप्तमीके अर्थमें वर्तमान मध्यशब्दका अर्थ । बीच, बीचमें और बीचमें.

मध्यदेश, (पु०) कर्म० । किसी बीचका बीचका भाग । कमर । हिमालय और विन्ध्य पर्वतका बीच, उरुक्षेत्र (विनयान) से पहिले और प्रयाग (अलाहाबाद) के पश्चिमकी ओर "मध्यदेश" कहा है । एक देश.

मध्यद्विन, (न०) मध्यं दिनम् । अर्धरु समा० । दिनका बीच । मध्याह्न (दुपहरि).

मध्यम, (त्रि०) मध्ये मयः । म । मध्यमव । बीचमें हुआ । बीचका । बिचला । सात खरोंमें पांचवां खर (पुर) (पु०)

मध्यमपदलोपिन्, (पु०) मध्यमपदस्य लोपः अस्ति अल्प+इति । जिसके बीचमें आवे पदका लोप होता है । व्याकरणमें प्रसिद्ध "शाकपाथिव" (शाकपथिवः पाथिवः) आदि समात विशेष.

मध्यमपाण्डय, (पु०) कर्म० (पहिले और पिछडे दोनोंके बीचमें होनेसे) अर्धेन । बिचला पाण्डुका पुत्र.

मध्यमभृतक, (पु०) कर्म० । "मध्यमस्तु हृषीकला" खेती करनेवाला नाकर । किसान.

मध्यमलोक, (पु०) कर्म० । पृथिवी । (यह पाताल और स्वर्गलोकके बीचमें है) । "मध्यमलोकपालः" इति रघुः । बीचका लोक.

मध्यमवयस्क, (त्रि०) मध्यमवयः यस्य । मध्यम (बीचकी) आयु (उमर)वाला । मझनी (जवानी) अवस्थावाला.

मध्यमसंग्रह, (पु०) कर्म० । दूसरेकी खींचो गुणमिथ्याली माला, भूय और वस्त्र मेजान एवं खाने पीनेकी चीजोंसे लोभ दिखाना । मध्यम (खींचा पकड़नारूप) विनाश.

मध्यमसाहस्य, (पु०) कर्म० । बिचला साहस्य (दिलेरी) बिना खोचे काम करना । दूसरेके कपडे आदिको पहनना । फेंचना आदि । जोरसे बोई काम करना । पांच पगका दण्ड (गजा) विशेष (पु०).

मध्यमा, (स्त्री०) मध्य+म । हृत्परिका नारी । वह स्त्री कि जिसे महीनेका ऋतु (रज पूर) आयुका हो । बीचकी अंगुली । कमल आदिकी कर्णिका (टण्डी) । हृदयमें उभयत्र हुई बेनर्ग आदिमें एकरकारकी कापी । एट प्रकारकी स्त्री (बीरव) । नायिकाविशेष.

मध्यमाहरण, (न०) बीचगणितमें प्रसिद्ध अक्षयक (नमःपुत्र) मान (मान)की जगनेहाही गणना । (दिनकी).

मध्यरात्र, (पु०) मध्यं रात्रेः । एकदेशि म० अर्धु समा० । हृत्पद बीच । दिलीप । अर्धरात्र । आधीरात्र.

मध्ययानिन्, (त्रि०) मये वर्तते । इति रहना है । कादिप्रतिपत्ती का और हिंदू तीर्थ प्रतिपदोंके नियमको मितार कर तात्पर्य करनेहाला । अपने अर्थको न बिलकुल अर्थको गम्यादन करनेहाला । कर्मोंके (मध्यस्थ) । बीचमें पडा । मुनिवृत्त.

मध्यस्थ, (पु०) मये निष्ठति । स्था+इति है । मध्यवर्ती । उदासीन । "मध्यस्थं तेषु" कुमारः.

मध्या, (स्त्री०) त्रिधां दारु । तीन वर्णों एक छन्द । नायिकाविशेष । मध्यमा मध्या अंगुल.

मध्याह्न, (पु०) मध्यं अह्नः । एक० न० मध्य अह्नदेश । तीन भागमें बँटिये दिनका पांच भागमें बँटिये दिनका तीसरा भाग (दुपहरि । कुत्रुपकाल.

मध्यामय, (पु०) मधुना (पुष्पलेन) इति मधु (दान) पत्रके फूलोंके रखे मधु (चराय).

मन्, पूना करना । मन्० । अहंकार करनेपर० सेट् । मनति.

मन्, अहंकार करना । अह० पु० आ० सेट् । अमीमनत.

मन्, बोध-जाज्ञा । तना० आ० सह० सेट् । न्यो निट.

मन्, जाज्ञा-दिया० आ० सह० अनिट् । मनो । मनःपति, (पु०) मनसः पतिः । मनका स्वामी (निक) । विष्णुका नाम.

मनःपूत, (त्रि०) मनसा पूतः । मनमें पतित और मनमें शुद्ध चिन्तन कियाया । हृदयमें अल्प.

मनःशिला, (स्त्री०) मन शब्दकाया शिला । काल रंगका एक प्रकारका पत्थु (नेरी) । "मनःशिलानि निवेदुः" इति कुमारः । (पु०) नै.

मनस्, (न०) मन्यते अनेन । मन्+प्रति । इमे । सर्वेन्द्रियप्रवर्तक अन्तर्निष्ठ । मनस्वलेनवाला भीतरका इन्द्रिय । (यह वेदव्यवस्थाशक्तिरूपका प्रतिपाला अंत हृदय-पुत्र को आधार, न्यायमगर्भ यह शक्तका साधन है) । मनसो मंडित.

मनसा, (स्त्री०) मनसं मानं स्मरि । मो+इति । निधी माना । वायुकीही मजिनी (बहिन) । मनसा पत्नी.

ज, (पु०) मनसि जायते । जन्+ङ । सप्तमीका
रूपे आउह् । मनमें उतरना है । कामदेव । “मनो-
यही अर्थ है ।

प्राय, (पु०) मनसि रोने । अच् वा आउह् । मन-
तोना है । कामदेव । “मन+प्राय” यही अर्थ होता है ।

वृष्टि, (स्त्री०) मनसः वृष्टिः । मनधी रचना (दुनि-
) । मनके पुकार ।

क्रार, (पु०) कृ+पम् । मनसः कारो म्पापारमेद् ।
सका सुतमें तपार होना । दिक्का सुप्त पाहना ।

ताप, (पु०) मनसस्थापः (अतुतापः) । मनका
पना । मनकी पीडा ।

स्यन्, (त्रि०) प्रसस्ते मनः अस्ति अस्य । अच्छा
न है इसका । प्रसभामनरक । अच्छे मनवाला । “विनि”
ना । पण्डित । बडे दिक्कावा । और पडे निस्तवाला
‘समनामी पयु’ (पु०) । “स्त्रीतिष्ठमे रीप् होता है”
डे दिक्काली अथवा सगस्तर (अहंकार करनेवाली)
रीरत । दाना अथवा धर्मात्मा स्त्री । दुर्गाका नाम ।
गंदकी मा ।

ह्, (अय्य०) ईप्त् (थोडा) । मन्द् (धीरे) ।
गोडासा ।

धी, (स्त्री०) मनोः पत्नी । वा धीन्-और् य ।
तुधी स्त्री ।

स्त, (त्रि०) म्वा० मन्+क । ज्ञात । जानाहुआ ।

रेपा, (स्त्री०) ईप्+अर् । मनस ईया । सक० । बुद्धि ।
अकिल । इच्छा । चाह । समस । सदाज । (वेदमें)
पूक (गीत) ।

पेपिन्, (पु०) मनीषा अस्ति अस्य+दिक् । मनीषा-
वाला । पण्डित । बुद्धियुक्त । अकिलवाला (त्रि०) ।

, (स्त्री०) मन्+उ । मनुधी स्त्री । एक प्रजापति ।
धर्मशास्त्रके बनानेवाला । और स्वयम्भु (मन्ना) से उतरा
हुआ सुनि (पु०) ।

ज, (पु०) मनो (स्वयम्भुवात्) जायते । जन्+ङ ।
मनुषे हुआ । मनुष्य ।

व्य, (पु०) मनोरथलं । यद्-सुक्व । मनुधी संता-
न । मानव । मनुष्यकी जाति । त्रियी जानी धीप् ।

व्यधर्मन्, (पु०) मनुष्यस्य इव धर्मो यस्य (नरवाहन-
त्वात्) । अनिच् समा० । नरवाहन (मनुष्योर चरने-
द्वारा) होनेसे मनुष्यके समान है धर्म जिसका । कुबेर ।
धरहा राजा ।

योगज, (त्रि०) मनः यतं । मनमें गया हुआ । मनमें
रहनेवाया । मनका । इश्यमें ठिगा हुआ । भीतरका ।
गुप्त । छिपा हुआ ।

मनोप्रादिन्, (त्रि०) मनः एकाति । मनको पकड़नेवाला ।
आकर्षण करनेवाला ।

मनोजय, (त्रि०) ज्+अच् । मनोजयं वेगवत् नमनाय
यमिन् । विगुण्य । पिनाके समान । “मनस इव जयो
यस” मनके समान है वेग जिसका । बडे वेगवाला ।
(त्रि०) आगकी जीभ (स्त्री०) ।

मनोजवृद्धि, (पु०) मनोजस्य (कामस्य) वृद्धिर्यस्याद्
५ ब० । कामदेवकी वृद्धि (बढती) होती है जिससे ।
कामवृद्धिरथ ।

मनोह, (त्रि०) मनो जानति (ज्ञापयति) बोधनाय
प्रवृत्तीरोति अन्तर्भाषितव्यर्थे ज्ञा+क । मनको जताता
है वा समझनेको हुकाता है । मनोहर । मनको रोकने-
वाला । सुन्दर । मन शिखा । मदिरा (स्त्री०) ।

मनोभय, (पु०) मनसि भयति । भू+अच् । मनमें होता
है । कामदेव । “मनोज” “मनोभू” इत्यादि-यही अर्थ ।

मनोरथ, (पु०) मन एव रथः अत्र । मनसो रथ इव वा ।
मनही है रथ यही । मनवा मानो रथ है । इच्छा ।
रुहादिस ।

मनोरम, (त्रि०) मनो रमयति । रम्+णिच् । अच्-उप०
मनको प्रव्रध कतां है । मनोहर । सुन्दर । गोरोजना ।
(स्त्री०) ।

मनोहर, (त्रि०) मनो हरति (स्पर्शनाय) ह्+अच् ।
अपने देतनेके लिये मनको रोकता है । हथिर । सुन्दर ।
मनोहर । कुंरका वृस (पु०) । सोना (म०) ।

मन्त्र, मार्जन-पौडना । सक० । ध्वनि-राध्य करना-अक०
भ्वा० पर० सेद् । मन्त्रति । अमजोद् ।

मन्त्रु, (पु०) मन्+क-उद् । अवरथ । करार । मनुष्य
आत्मी । और प्रजापति (प्रजाका मातृक) ।

मन्त्र, (पु०) मन्त्रि+अच् । गुप्तभाषण । छिपाहुआ बोलना ।
गढाह । रचना वादिछे छिद् करनेके लिये तन्त्र आदि-
में कहाहुआ शब्दविशेष । वैदिक हिस्साह ।

मन्त्रकुण्डल, (त्रि०) मन्त्रे कुण्डलः । उपदेश (सता)
देनेमें बगुर (छिपाना) ।

मन्त्रजिह्व, (पु०) मन्त्र एव जिह्वा (आत्मादनसाधनं)
यस्य । मन्त्रही है जीभ (स्वाद् देनेका साधन) जिसकी ।
अति (आग) । (मन्त्रसे दिवेहुए हथिछे सेता है) ।

मन्त्रस, (त्रि०) मन्त्रं जानाति+ज्ञा+क-अ । मन्त्रको जाने-
द्वारा । बुद्धिका हाता । उपदेश देनेवाला । नेक सदाह-
दनेवाला ।

मन्त्रणं प्वा, (न० स्त्री०) मन्त्र+ण्युद् । शन विचार ।
छला । उपदेश ।

मन्त्रदर्शिनः, (त्रि०) मन्त्रं पश्यति । वैदके सूक्तों (गीतों)-
को देखनेवाला । वैदको अभी भान्ति जानेद्वारा मन्त्रण ।

मरुत्सख, (पु०) मरुतः (वायोः) सखा (टच्) । वायुका मित्र । इन्द्र । अग्नि (भाग) । और चित्रक नामी दवाका वृक्ष ।

मरुद्बान्दोल, (न०) मरुतं आन्दोलयति अनेन+करणे घम् । हवा (वायु) को हिलाता है इसे । व्यजन । पंखा ।

मरुदधि, (पु०) मरुतां (देवानां) दध् । देवताओंका पियारा । गुग्गुलु । गुग्गुलु ।

मरुभू, (पु०) ७ ब० । मरुभूमियंत्र । मारवाड देश । कर्म० । निजंलभू । जलरहित पृथिवी ।

मरुस्थलं-स्थली, (न० स्त्री०) मरोः स्थलं । निजंल-प्रदेश (जंगल) का स्थान । मारवाडकी भूमि ।

मरुं, गति । जाना । पर० सक० सेट् । मरुंति । अमरुंति ।

मरुं, (पु०) मरुं+अटन् । वानर । बंदर । ऊर्णनाभ । मरुडी । एक पक्षी ।

मरुंटीजाल, (न०) छन्दोग्रन्थमें एक प्रस्ताव जिसमें सधु और गुरुके विचारको जाभेके लिये एक चक्र ।

मरुं, (पु०) मरुं+अरच् । मृदुराज वृक्ष । भांड । बांस औरत (स्त्री०) ।

मरुं, मरण (पकडना) पु० उभ० सक० सेट् । मरुंचयति-ते । अममचैत्-त् ।

मरुं, (पु०) मरुं+तन् । मनुष्य । और पृथिवीका लोक । "बदाहुआ" यत् । "मरुंः" मनुष्य ।

मरुं, (न०) मरुं+स्युद् । गात्रपादादिसेवाहन । मुठी चापी करना । चूर्णन । घूरा करना । पीसना । मलना ।

मरुं, (त्रि०) पु० मरुं+क् । चूर्णित । मलागया । पीसा-गया । और गुधागया ।

मरुं, गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । मरुंति । अमरुंति ।

मरुंछिद्-भिद्-छेदिन्-मेदिन्, (त्रि०) मरुंछि छिनत्ति जीवनस्थान (जिरा) को काटनेवाला । जोड़ोंकी जगहको फाटनेवाला ।

मरुं, (त्रि०) मरुं जानाति । छिपीहुंरुं बातको जाभेवाला । दुमरेकी निबंठ बातोंको जाभेद्वारा ।

मरुं, (पु०) मरुं जानाति । हा+क् । तरवस । छिपी-हुंरुं बातको जाभेद्वारा । दाना । रहस्यके जाभेद्वारा । "मरुंतिन्" यही अर्थ ।

मरुं, (न०) मरुं+मतिन् । जीवनस्थान । जीनेकी जगह । स्थितिस्थान । जोड़ोंकी जगह । और तापयं । मतलब । घर । भेद ।

मरुं, पूर्ण भाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मरुंति । अम-रुंति ।

मरुं, (पु०) मरुं+मरुन्-सुद् च । बरतों और पत्नोंकी अरुच (सखसखाट) । मरुंमड । हलदी (स्त्री०) ।

मरुं, (त्रि०) मरुं (प्राणस्वानं) मरुंति । जो जीवनके स्थानको हटा है । मरुं मरुंपीडक ।

मरुं, (अज०) म्रियते (अश्रियते) वा । यत् । सीमा । हद् । (छीलित सी होता है) "यत्" मनुष्य (पु०) ।

मरुं, (स्त्री०) मरुंयां (सीमायां) ईरे । अच् । परि आधीयते वा । परि+आ+दा+अच् । "प" को "म" । न्याय्यपथस्थिति । (उचित-दस्ताफवाले) मार्गमें रहना । सीमा । और कूल । तट ।

मरुं, धृति-पकडना-काबूकरना । भ्वा० सा० इ० मलते । अमलित् ।

मरुं, (पु०) मरुंयते (शोष्यते) मरुं+अच् । जो (प्रायश्चित्तद्वारा) साक कियाजाता है (गुनाह) । पुरीय । विद्या (गूह) यत् । कियाजाता है । लोहे आदिका मल । कर्मक । वत्समहुआ पसीना और श्लेष्म (खलार) को कृपण । सू। वात पित्त और कफ । बल ।

मरुं, (पु०) मरुं (विद्यां) हन्ति (रेचयति) क । मलको खाली करनेवाला । शास्त्रात्मक "मरुं" यही अर्थ ।

मरुं, (पु०) मरुं द्रावयति (रेचयति) । म्रिच्-अण् । मलको पिघलाता है । उच्यते । मरुं गोटा ।

मरुं, (पु०) मरुं धारयति । मलको उच्यते जैनमतको एक धार्मिक संन्यासी ।

मरुं, (पु०) मरुं (दुष्टः) माम् । मरुं (मरुं) मरीना । स्वर्गकी संज्ञानितसे मरुं (पडवा) से अमावास्यातक चन्द्रमासमें मरुं अधिकमास । बडाहुआ मरीना । लौंदा मरीना ।

मरुं, (पु०) मरुं+कयन् । दक्षिणमें एक पर्वत (मरुं) चंदन उपजता है । उस पर्वतके पागडा रेचयति । उपवन (छोटानवन) । नन्दनवन । जो मरुंने एक ऋषभदेवका एक पुत्र ।

मरुं, (न०) मरुं (पर्वते) जायते । मरुं । मरुं पहाड़में उपजता है । चंदन । मरुं (इना) (पु०) । उस देशमें उपजा (त्रि०) ।

मरुं, (पु०) मरुं आकर्षति । मरुंके हलके चामराल । मरुं ।

मरुं, (पु०) मरुं (मरुंके पर्वते) मरुं । मरुं (इना) (पु०) । उस देशमें उपजा (त्रि०) ।

मरुं, (पु०) मरुं (मरुंके पर्वते) मरुं । मरुं (इना) (पु०) । उस देशमें उपजा (त्रि०) ।

माशय, (पु०) मलस आशयः । मलके रहनेका स्थान ।
 पेट.
 लेन, (त्रि०) मल+अस्त्वर्थे इन्च् । मलमुक्त । मल-
 काला । मला । इपित । और काला । इनि "मली"
 यही अर्थ । गुहागा.
 लेनमुत्त, (पु०) मलिनं मुखं यस्य । जिसका मूला
 मुख है । बहि (आग) । उतका पहिले धूम-भूआं
 होनेसे काला मुख होता है । और कानर (बंदर) ।
 दूर (बेरहम) और नीच (त्रि०).
 लिम्बुच, (पु०) मली (बेरिबकमानंतलेन दुष्टः)
 यन् म्लोचति (गच्छति) । म्लुच्+क । वेदमें बहेदुए
 कर्मके अयोग्य होनेसे चला जाता है अर्थात् इतमें
 शुभ कार्य नहीं हो सके । मलमात । बायु (इवा) ।
 अग्नि (आग) और तरहर (चोर).
 लीमस, (त्रि०) मल्+ईमयच् । मलिन । मूला । लोहा.
 लोपहस्त, (त्रि०) मलेन उपहतः । मलसे माराहुआ
 (शिखा हुआ).
 लु, प्रति-पकडना । भ्वा० आ० अक० सेट् । मलते ।
 अमलित.
 लु, (पु०) मल+अच् । बाहुयुद्धकारक । मुजाओसे
 लड़ाई करनेवाला । पहिलवान । बलवान । बर्तन ।
 (पात्र) । कपोल (माल-माल) । देशविशेष । जानि-
 विशेष.
 मलिभू, (स्त्री०) मलकीडनस्य (बाहुयुद्धस्य) योग्या भूः
 (स्थानम्) । मुजाओसे लड़ाई करनेके लयक जगह ।
 अयास । एकदेश । पहिलवानों (पटों) के लड़नेकी जगह.
 महयुद्ध, (न०) ६ त० । पहिलवानोंकी लड़ाई । बाहु-
 युद्ध.
 मह्यार, (पु०) मह इव ऋच्छति । ऋ+अच् । पहिल-
 वानकी तरह जाता है । रागविशेष । एक रागिणी ।
 बसन्तरागकी रागिणी । मेघरागकी रागिणी.
 महिषी, (स्त्री०) मल् इन्-वा ङीप् । महिषा (मालती-
 की बेल) । संझायां कन् । एक प्रकारका इंस (जिसका
 शरीर बाण्य और खोब एवं बरग लाल होते हैं).
 मश, अग्नि । आताज करना । अक० । बोध करना । सट०
 पर० सेट् । मशति । अमशीत्-अमाशीत्.
 मशक, (पु०) मश्+भुन् । एक प्रकारका बीडा । मच्छर.
 मशि-यी, (स्त्री०) मश (म्)+इन् वा ङीप् । पत्र
 जिसनेका इत्य । स्त्री । शरी.
 मश, १) मारना । भ्वा० पर० सट० सेट् । मशति । अम-
 शीत् । अमाशीत्.
 मश, परिणाम-बदलना-पकना-परिमाण-मापना । दि० प०
 अक० सेट् । मशति । अमशत् । अमशीत्-अमाशीत्.
 पृ० ४८

मसिधान, (न०) मसिः पीयते आद्र+आधारे लुच् ।
 जहां स्त्रीकी डाली जाती है । द्यात । द्यात (स्त्री०)
 भी होता है । ङीप्.
 मसिपण्य, (पु०) मसिः (तदुपलक्षितं अक्षरं) एव
 पण्यं (विक्रयं) यस्य । स्त्रीके पहिले पहिलेका अक्षरही
 जिसका सौदा है । लेखनोपयोजिन् । लिखनेकी जोयिष्य
 करनेहार । मुनशी । बाच्.
 मसूरा, (स्त्री०) मस्+अरच् । मसूर । मसूर (मसुरी)-
 की दाल.
 मसूरिका, (स्त्री०) मसूरेव+इकार्ये कन् । कुहनी (द्वारे
 पुराणोंके साथ पराई शिखोंको मिलानेवाली भीतर) । पेश-
 ककी बीमारी.
 मसूण, (त्रि०) मग्=क्षण । क्षिण्य । चिकना । और अक-
 रंदा । नरम.
 मस्क, गति । जाना । भ्वा० पर० अक० सेट् । मस्कति ।
 अमस्कित.
 मस्कट, (पु०) मस्क+अरच् । बंग (बांग) । छेड़वाला
 बांग । "भावे अरच्" गति (जाना) । और ज्ञान
 (जाना).
 मस्कतिन्, (पु०) मस्करो (ज्ञानं) गतिर्वाप्ति अस्य
 इति । ज्ञान वा गतिवाला । "माश्चुं (कर्म निवेदुं)
 शीलं अस्य । मा+कृ+इनि" । जिसका स्वभाव कर्मको
 निवेध करनेका है । "मरकरमस्कतिणो" इति नि० ।
 परिभाषक । संन्यासी । विभिन्ने कर्मका परित्याग करनेवाला
 भिक्षु (पकीर-राधु) । और बन्दना । चांद.
 मसृज, ज्ञान (नहाना) दु० पर० अक० अनिट् । मसृजति ।
 अमाहीत् । मस्रः.
 मस्तक, (न०) मस्+क । मलक (माया) । उच
 (ऊंचा) (त्रि०) । और शीर (संझामें कन्).
 मस्तकछेद, (पु०) ६ त० । मायेकी चिकनाई ।
 शिर-स्थित मस्त्रा । शिरकी मस्त्रा (पीके स्तरमें चिक-
 नाई) । मस्त्रिक (मस्रक).
 मस्तमूलक, (न०) मस्तस्य मूलं इव (इकार्ये कन्) ।
 मायेकी मानों जड़ है । शिरोधरा । शिरको उठानेवाली
 गदं । गला.
 मस्तिष्क, (न०) मस+िष्च् । मसि (परिच्छिनेरं)
 मुच्छति । मुच्छ गति (जाना)+अच्+ट् । मस्त्रस्य-
 श्लेष्कार पदार्थ । मयेमें चिकने स्तम्भका एक पदार्थ ।
 मस्रक.
 मस्तु, (न०) मस+उ । इपिन्यत् । दहीका पानी । छः ।
 लही.
 मश, पृथ करना । भ्वा० पर० सट० सेट् । मशति ।
 अमशीत्.

रनाद, (पु०) महान् नदः अस्य । जिसका बड़ा घण्ट है । गज (हाथी) । गर्जन्मेघ । गजने (गजने) जाला कादल । सिंह (शेर) । और ऊँट ।

गानिद्रा, (स्त्री०) कर्म० । बड़ी नींद । मरण । मीन । (इतमें फिर नहीं उठते) ।

गानिद्रा, (स्त्री०) बड़ी रात । रात्रिके बीचले दो पहिर ।

गानुभाव, (पु०) महान् अनुभावः आशयो यस्य । जिसका बड़ा आभाव (सवाल) हो । महाभाव । नेक ।

हापथ, (पु०) कर्म० । बड़ा मार्ग । राजमार्ग । राजाकी सड़क । बड़ी सड़क । हिमालयके उत्तरमें स्वर्गके चउनेका रास्ता ।

हापथ, (पु०) कर्म० । आठ नागोंमेंसे एक । एक नाग (पाप) । कुबेरका खजाना (निधि) । अयुत छोटी संख्या । एक काम बड़ी गिन्ती (संख्या) । उस संख्या-बाला । एक राजा ।

हापातक, (न०) बड़ा पातक (पाप) । प्रदहरण । (माध्मको मारना) गुरापान (धाराबद्ध पीना) स्तेय (चोरी करना) गुर्वज्ञानाम (गुरकी धीके साथ संभोग करना) और इन चारोंके साथ मेल करना (तत्संयोग) ये पाँच "महापातक" हैं ।

हापुरण, (न०) सृष्टि आदि ग्यारह लक्षणोंबाला व्यास-मुनिका रघुहुआ पुराणविशेष ।

हापुण्य, (पु०) कर्म० । बड़ा पुण्य । मुख्य । देवता-धीमें बहुत अच्छा । और नारायण । "बड़े महापुण्य । ते चरणारविन्दं" इति भागवतम् ।

हापूजा, (स्त्री०) महती पूजा । बड़ी पूजा । विशेष अवसरोंपर की गई साध पूजा ।

हापृष्ट, (पु०) महत् पृष्टं यस्य । बड़ी ऊंची पीठबाला । वृद्ध । ऊँट ।

महाप्रतीहार, (पु०) महान् प्रतीहारः । मुख्य द्वारपाल । काम हबान ।

महाप्रपञ्च, (पु०) महान् प्रपञ्चः । बड़ा विद्या । बड़ी बुनियाँ । बड़ा जगत् ।

महाप्रभु, (पु०) महान् प्रभुः । बड़ा स्वामी ।

महाप्रलय, (पु०) कर्म० । बड़ी प्रलय । "महापो दिनावसाने जायमानः सर्वभूतशयः प्रलयः" (महापञ्च एक दिन समाप्त होजानेपर उपप्रभुआ सम्पूर्ण भूगोदा नाश प्रलय है) "तस्यैव स्वमानेन शतवर्षं ब्रह्मणे जायमानस्तु महान् प्रलयः" (उसीके अपने मापसे एक सौ वर्ष भीत जानेपर उपप्रभुआ महाप्रलय होता है) । वह समय कि जब उप-जेतुए पदार्थोंका बोईनी आधम नहीं रहगा । अथवा वह बाल कि जब उपजनेवायक भावका अधिकरण (अकारण आसवा) बोई नहीं । तीन सोईनों नाश । महाका एक ही बहिस ।

महाप्रसाद, (पु०) बड़ा प्रसाद । प्रसन्नता-सुखी । विष्णु आदि देवताओंको निवेदन कियाहुआ । देवनिवेद्य (देव-ताको निवेदन कर प्रसाद लेना उचित है) ।

महाप्राण, (पु०) महान् (बहुकालस्थायित्वान्) भेष्टः प्राणः अस्य । (बहुत समयतक रहनेसे) जिसका प्राण बहुत अच्छा है । शोण नामी एक प्रकारका काँवा । कर्म० । अक्षरके उच्चारण (बोलना) करनेका वाद्य प्रयत्नविशेष (एक प्रकारका बाहिरमें हुआ यज्ञ-कौशिक) ।

महाफल, (पु०) महत् (पत्रापेक्षया) बृहत् फलं अस्य । पत्तरी अपेक्षा (बनिस्वत) जिसका फल बड़ा हो । बिल्क-इश (बिल्कवा दरहत) । इन्द्रवाणी (स्त्री०) ।

महाफल, (पु०) महत् बलं यस्य । जिसका बड़ा बल (जोर) है । वायु (हवा) और बुद्ध (अवतार) । बलबाला (प्रि०) "महत् बलं यस्मात्" ५ ब० । सीसक (स्त्री०) (न०) ।

महायाहु, (त्रि०) महान् बाहुः यस्य । बड़ी मुखा (बाँह)-बाला । शक्तिमान् । ताकतमंद ।

महामाल्यण, (पु०) महान् माल्यणः । बड़ा वा विशिष्ट माल्यण । नीच वा निन्दाके योग्य माल्यण ।

महाभाग, (त्रि०) महान् भागः यस्य । बड़े भाग्यबाला । भाग्यशूर । धन्य । बड़ा शीलतमन्द ।

महाभाग्यत, (न०) महत् भाग्यवत्म् । बड़ा भागवत् । अद्भूतहमेंसे एक पुण्य ।

महाभारत, (पु० न०) "किसी समय सम्पूर्ण देवता-ओंने मिलकर साज गरहस्य चारों वेदों और भारतको तोलकर देखा तो यही सबसे अधिक (ज्यादा) हुआ तभीसे इसका नाम "महाभारत (बड़ा भारत)" हुआ । ब्यासदेवका रघुहुआ षाल श्लोकका एक ग्रन्थ ।

महाभाष्य, (न०) महत् भाष्यम् । बड़ा भाष्य (व्याख्या) । पाणिनीके सूत्रोंपर पतञ्जलि मुनिकी बड़ी व्याख्या ।

महाभीता, (स्त्री०) कर्म० । लज्जाजालता (एनेरोंसे सिद्ध जाती है इसे बहुत डरनेवाली है) । बहुत डराहुआ (त्रि०) ।

महाभूत, (न०) कर्म० । सभी पाँचका स्वरूप होनेसे मोटे हो गये बड़े पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच भूत । बड़ा भूत (त्रि०) ।

महाभूत, (त्रि०) महान् भूतः यस्य । बहुत मन (मनकाउ) होगा । बड़ाभूत ।

महाभनर, (त्रि०) महत् बदारं मनः (तपापरः) अस्य । जिसके मनका व्यापार बड़ा हो । महापण । सुमार्जित । दिलबर । फियार ।

महा-महावाणी, (स्त्री०) एक प्रकारका योग । शक्तिवर, शान्तिया नक्षत्र, एम योगवर्द्धन चक्रमण्डके इत्यनहरी नबोदरी ।

(पु०) नाति अवीचि (सुतं) यत्र । कर्म० ।
 नहि । सुसत्ते रहित । एक नरक ।
 (पु०) कर्म० । बड़ा बहादुर । गहड़ । हनुमा-
 (सेर) मन्त्री अग्नि (भाग) । यज्ञ ।
 श । कोकिल (कोइल) । धनुर्धर (तिरंदाज) ।
 (पु०) ६ व० बड़े कीर्यवाला (त्रि०) ।
 (पु०) कर्म० । बड़ी बीमारी । महारोग
 दि) ।
 ते, (स्त्री०) कर्म० । वेदमें "भूः" "भुवः"
 तीन मन्त्र ।
 (न०) कर्म० । कुष्ठरुण । बड़ा जराम । बड़ा पौदा ।
 (न०) कर्म० । अतिशयमन । बड़ा मन । शर-
 दुर्गायुजा आदि । बारह वर्षका एक मत ।
 (पु०) महती शक्तिः यस्य । बड़ी शक्तिवाला ।
 शक्तिकेय ।
 (पु०) कर्म० । तन्त्रमें एक प्रकारकी जप-
 जो मनुष्योंकी खोपरीसे बनावे जाती है । कान
 एके बीचकी हड्डी । बड़ा शंख । "पौण्ड्रं दम्भी
 " इति गीता ।
 (पु०) कर्म० । राजपत्नी । बड़ा धूर्त (त्रि०) ।
 (त्रि०) महान् शब्दः यस्य । बड़े शब्द (शा-
 लाला ।
 (त्रि०) महान् (उदारः) आशयः यस्य । बड़े
 शब्द । महाशुभावः । शिवाय । कैलाश । साहिब ।
 (पु०) महती शाला यस्य । बड़ी शालावाला ।
 ती पृष्टस्थ ।
 न, (त्रि०) महत् शसनं यस्य । बड़ी आशा
) वाला । बड़ी शक्तिवाला । -नं (न०) शर्कारकी
 झा (हुक्म) ।
 (पु०) कर्म० । आगीर (अहीर) बगच्छ ।
 ते ।
 रम, (न०) कर्म० । बारी । यहाँ सम्पूर्ण एक
 त सब जीवोंकी फिर उत्पत्ति न होनेके लिये
 आधार होनेसे ऐसा कहा है । बड़ा मसान ।
 र, (पु०) महान् श्रमणः । बुद्धदेवका नाम ।
 यासी ।
 (स्त्री०) कर्म० । आश्रित (अरत्) के छद्म-
 श्रमिनी ।
 रपन, (न०) कर्म० । एक मत जो सात दिनमें
 होता है ।
 (पु०) महती सेना अस्य । शक्तिकेय (जिमकी
 सेना है) । बड़ी सेनाका अधिपति (मालिक)
) ।

महाहविस्र, (न०) महाह हविः । बड़ा हविः । शुद्ध
 किया हुआ मन्त्रान । पी ।
 महि-ही, (स्त्री०) मह+इन् वा हीप् । पृथिवी । माल्य-
 देवामें एक नदी (मही) ।
 महिका, (स्त्री०) मण्डपे । मह+कन् । हिम । कर्म० ।
 महिन्, (पु०) महतो भावः । महत्त्व । बड़ापन । बड़ाई ।
 ईश्वरका एक ऐश्वर्य । आठ सिद्धिओंमेंसे एक ।
 म(मि)हिर, (पु०) मह(मिह) किरच् । सूर्य । सूरज ।
 महि(हे)ला, (स्त्री०) मह+इलच् । योषित् । औरत ।
 स्त्री । भियन्तुलता । रैषुका नामी गंधका इन्ध्र्य । मत्ता स्त्री ।
 मला औरत । "महेला" ।
 महिप, (पु०) मह+टिपच् । अपने नामसे प्रसिद्ध एक
 पशु । भैंसा । महिपामुर (भैंसेके स्वरूपका एक दैत्य) ।
 राजाकी श्नामिषेका (जिसका राजाके साथ अभिषेक
 हुआ) स्त्री । महिपजातिकी स्त्री । और एक भाँपण
 (द्वाइ) ।
 महिपघ्यज, (पु०) महिप घ्यजः (विद्-वाहनत्वेन)
 अस्य । जिसकी सवारी भैंसा है । यमराज । "महिप-
 वाहन" यही अर्थ ।
 महिपमर्दिनी, (स्त्री०) महिपं (महिपामुर) च्छ्रति ।
 सृष्ट्+मिनि+शीप् । १ त० । महिपको मल डालती है ।
 दुर्गामेद । एक देवी ।
 महिपामुर, (पु०) रम्भनामी दैत्यसे महिषीमें उत्पन्न
 कियागया एक दैत्य । महिषनामी गुग्गुलु ।
 महीक्षित्, (पु०) मही क्षयते (ईडे) । क्षि-ऐश्वर्यहृ-
 मल करणा । किप्+कृच् । पृथिवीपर इहमग (आजा)
 कर्ता है । वृष । राजा ।
 महीज, (न०) मद्वा जायते । जन्+ज । पृथिवीसे उत्प-
 जता है । आर्द्रक । अदरक । मन्त्रनामी मद् । और मर-
 कायुर (पु०) ।
 महीध्र, (पु०) मही धारयति । धृ+क । पृथिवीको धारण
 कर्ता है । पर्यंत (पहाड़) अच् । "महीधर" यही अर्थ ।
 महीप्राचीर, (न०) मद्याः प्राचीरं इव (आरधरकात्वात्) ।
 पृथिवीका मानो प्राचीर (शरीर) है (क्योंकि वह
 पृथिवीको ढकेहुए है) । समुद्र । समुन्द्र ।
 महीभृत्, (पु०) मही विभ्रति (धारयति-पालयति वा)
 धृ+विप् । पृथिवीको धारण वा पालन कर्ता है । पर्यंत
 (पहाड़) । और राजा ।
 महीयस, (त्रि०) अनियमेन महान् । महत्+ईदपु ।
 अति महान् । बहुत बड़ा । "नरतो महीयान्" इति श्रुतिः-
 महीयमान, (त्रि०) महीयते । मही+अप्+इत्+ङ्+
 नच् । पूज्य । पूजेके अदक । और बहुत अच्छा । भेट ।

न्य, (न०) मङ्गल एव मङ्गलाय हितं वा+भ्यम् ।
तु वा मङ्गलके हिते हितवारी । और मङ्गलप्र
थन । मलाईके हिते उपकारी.

का, (स्त्री०) मन्+क्युल् । मक्षिणः । मन्वरी.

ष्ट, (न०) मक्षिण्या एर्ण+अण् । मञ्जीठये रंगाहुआ
ल रंग । रंगपाला (त्रि०).

, (पु०) मन्+अरन् । टान्तादेशः । तनाः साथे
ण् । सूर्यस्य पारिपार्थं मटनि । अरन् वा । सूर्यका पारि-
षिक्त (आसपास रहनेवाला) एक गण.

ष्ट, (पु०) मनोः अपलं+अण् । अल्पार्थं पार्थं । अल्प-
तरक मनुष्य । छोटी उमरका आदमी । "साथं कन्" ।
छहार.

धीन, (त्रि०) माणवस्य इदं+रन् । बालकस्य ।
लक्ष्यमानधी.

व्य, (न०) माणवानां समूहः+अन् । बालशौच समूह.

पय्य, (न०) मानिषिक कायति । वै+क । साथे रन् ।
मिषिक । सात रंगका एक रत्न । टिपकारी.

मन्थ-मन्थ, (न०) मनिबन्ध (मन्थ) पर्यन्ते भव्+
ण् । मनिबन्ध (मन्थ) पहाडमें हुआ । सैषध लवण ।
पानोन.

ङ्, (पु०) मतङ्गस्य मुनेः अयम्+अण् । मन्त्र । हाकी ।
क प्रचारकी किरात (भील) की जाति । पीपलका
ल । दस महाविद्याभूमिमेंसे एक (स्त्री०).

रपितु, (स्त्री०) माता च पिता च । इन्द्रे मातृशं मा-
तादेशः । माता और पिता । पक्षे मातृपतर । उरुतीके
अर्थमें.

रिभ्यन्, (पु०) मातरि (आचार्ये) भवति (धर्म-
) । धि+कनिन् । अलुक् समा० । आचार्यमें बहता
। बापु (इवा).

ति, (पु०) मत्तं क्वापि । का+क । मत्तः तस्य
अपत्यं+इण् । मत्तलकी सेतान । इन्का सारकी (रथ
चपनेवाला).

ता, (स्त्री०) मा+अणक् । जननी-मा । "विद्येधरी विध-
माता" दुर्गास्तवः.

तामद, (पु०) मातुः पिता । मातु+तामद । माताका
पिता । माता.

तुष्ट, (पु०) मातृभोगा । मातु+तुष्टक् । माताका भाई ।
पिता.

तुष्टुङ्, (पु०) मातुले कल्पति । मत्+क्युक्+ण् । टीक-
र । मीठ् । दारिम । अन्तर.

तु, (त्रि०) मा+भुक् । प्रयत्नार्थं । क्रमेणः । लभे
एतन्नरः । धर्मकर्मद्वारे । कर्मकेवात् । कर्मदेवता ।

"मा+भृ" शिबजीके साथ रहनेवाली आठ मातारें (ब्राह्मी-
मादेधरी-चण्डी-वाराही-वैष्णवी-शैव्याती-वासुदेवा-और चर्चि-
का) । जननी (माँ) । प्रियिनी । मित्रि । स्वामी ।
रैवती । इन्द्रवाहणी । जटामांठी । बन्दीराटमें प्रसिद्ध
देवीकी शक्तियें (स्त्री०).

मातृका, (स्त्री०) माता इव वायति । ई+क । उपमात् ।
दाई । मद्रासी आदि बन्दीमें प्रसिद्ध देवीकी मूर्तियें ।
अक्षर आदि उच्चारण ४९ वर्ष जिनमें सम्पूर्ण राज्य बन-
जाते हैं । सर । मातृ+भ्यायं कन् माता । माँ.

मातृकानु, (पु०) १ त० । माताके कन्यु ("मातुः रि-
क्युः पुत्रा मातृमातृक्यु इत्याः । मातृमातृक्युनाच
विज्ञेया मातृक्युनाः" इती अर्थमें "मातृकानु" भी
होगा है.

मातृमण्डलम्, (न०) मातृणां मण्डलम् । स्वर्ग्य मन्त्राणां-
(देविभो०) का मण्डल (समूह).

मातृयग्यल, (पु०) मातुः यगलः । माता विचारा ।
कारिकेयका एक नाम.

मातृस्वरू, (स्त्री०) १ त० । माताकी अग्निनी । माती ।
"अलुक् समा०" मातृभवा.

मातृप्यश्रेय, (पु०) मातृक्यु अपत्यं+अण् । माताकी मती-
नीका पुत्र । मातीका लक्ष्य । "मातृक्युपीड".

मात्र, (न०) मा+अन् । सावत्य (सार-पुत्र) । और
अवधारणा (निश्चय) । लगान (अधिपदेश) । अण्य ।
धोडा । परिमाण । मात्र । धन । कपुर्णसे उधार
करनेके समय बर्नद एक अवसर (अण्य शिवा) । "त्रि-
तने समयमें दण्ड जन्ममन्त्र (गेयुंदा लक्षण) पर पुत्र-
वर आशयः । ब्रह्मिणीने उल्लेखे मात्र कदा है" इत्य-
लीर्ष-हण आदि (स्त्री०) । "मैदन्तं अवदा मिर-
वि-मा+अन्" । जिसने निश्चय धरि करने करने है देह देदी
वृत्तियें । "मातासर्गस्तु कौटोव वीरुज्जुगु-सर्ग"
गीता.

मात्राच्युतक, (न०) एक मात्रके हटा देनेसे होने अर्थको
प्रकाश करनेवाला एक प्रकारका काल

मात्राउन्दस्-वृत्तं, (न०) मात्रक्यु इत्य । मन्त्र (इत्य-
नरको बोधार्थे समय) से गिन कर कन्ड का हण्.

मात्राभवा, (स्त्री०) मात्रक्यु मन्त्र । ईं क० टी के से ।
बती हैत.

मात्राहपदां, (पु०) मात्रक्यु सारं । कतरके कर्तृ-
(विषयो) का सम्बन्ध । इतिरुपी इत्युक्ते विषयो
सारां (इत्यु).

मात्रदये, (न०) मात्रक्यु मन्त्र +अण्व । मातृक्यु । इत्येव
पुनरे वैर कान् । इत्येव । इत्येव । "मात्रक्यु मन्त्र-
कयो" इत्यु.

माध, (पु०) मघ+घम् । पश्या । मार्ग । रात्रा । बन् ।
मघ्यन । निठोना । रिडकना।

माधुर, (त्रि०) मधुरायां भवः । मधुरायाः आगतः वा ।
मधुराका वा मधुराये आया । मधुरानगरीभवः । तत्र
आगतो वा।

माद, (पु०) मद्+घम् । दपे । अर्हकार । गम् । और हरे ।
पुसी।

मादक, (त्रि०) मादयति । मद्+घिन्+त्यु । मग् कर्-
ता है । मतवारा करनेवाला पदार्थ । "मायति" कर्त्तरि
ष्टुत् । दात्युह (पपीहा) (पु०)।

मादन, (न०) मादयति । मद्+घिन्+त्यु । सवंग । लींग ।
कामदेव । और मदनवृक्ष (पु०) । रिजया (मांग)
(स्त्री०)।

मादक्ष-ध (स्त्री०) मम इव दर्शनं अक्ष । द्यु+
कृष्ट क्तिप् वा । ममत्वस्वदर्शन । जो मेरे समान दी-
खता है । मेरेसमान।

माद्री, (स्त्री०) मदे भवा+अण् । मदेदेशमें हुई । पाण्डु-
राजाकी दूसरी स्त्री (औरत) । और अतिविद्या।

माद्रीनन्दन, (पु०) मायाः नन्दनः । माद्रीका प्यारा ।
नकुल । सहदेव।

माधय, (पु०) माया धवः । लक्ष्मीका पति । नारायण ।
"मधु+स्वायेडण्" वसन्त । बहार । "मधुने पुष्परसाय
मवाय वा" हितः अण्" । वैशाखका महीना (इसमें बहुत
फूल होते हैं-इसलिये उनका रस निकालनेकी हितकारी
है) मधुकवृक्ष (मधुआ) । इसके फूलोंसे मय (शराब)
निकाली जाती है । "मधु बाहुल्येन अस्ति अस्याः
अण्" जिसका बहुतायतसे मधु होता है । वासन्ती
रता (स्त्री०)।

माधचीलता, (स्त्री०) बसन्ती बेल।

माधुकर, (त्रि०)-री (स्त्री०) मधुकर+अण् भ्रमर (भौरो)
का वा भ्रमरके समान । माधुकरी वृत्तिः । भ्रमरकी जीविका ।
भौरा जैसे प्रत्येक फूलसे मधु शहलको इकट्ठा कर्ता जैसेही
मिन्न २ द्वारसे प्राप्तकीर्णई भिक्षा।

माधुर, (न०) मधु राति (भ्रमरेभ्यो ददाति) । ण+क-स्वाये
अण् । भौरोंके तई बहुत फूलका रस देता है । मक्खिकाका
फूल । मालती।

माध्य, (त्रि०) मध्य+अण् । मध्यम । बीचका । मध्यमें
होनेवाला।

माध्यन्दिन, (न०) मध्यन्दिनं एव+अण् । मध्यमदिन ।
दिनका बीचका भाग । शुक्रमजुन्दकी एक शाखा।

माध्यम, (त्रि०)-मी (स्त्री०) मध्यम+अण् । बीचवाला ।
बीचका।

माध्यम्य, (न०) माध्यमे मां+अण् । म
रहना उदासीनमें) होता । पत्रपत्र
मीनता । मिगही हमारा न हज्जत।

माष्णीकफान्, (पु०) माष्णीके इ
माष्णीक (माशक)के समान जिनका बीज

मान्, विकार कर्ता । अन्० अन्० गन्० ने,
मीमांगने।

मान्, पूजाकर्ता । वा पुरा० उभ० पत्रे म
भेत् । मानयति-ने । मानति । मनीमन् ।

मान, (न०) मा+भ्युत् । परिमाण । मत ।
आरिसे इनको मानना । प्रमाण मीनका
क्रिया । मन्+घन् । अमिमान । अर्द्धार ।

मानप्रस्थि, (पु०) मानस्य प्रस्थिः (कर्त्त
जिम्में मान (इज्जत)का बंधन (रोक) हो
राध । गुनाह । भूल । बूह।

मानरन्धा, (स्त्री०) मानाय (काष्ठप्रकार
यस्याः । समयके प्रमाणको जांचके लिये नि
दिया है । तामेका बनाहुआ छेकाका समान
कारण एक प्रकारका पटीपत्र (घसी)।

मानय, (पु०) मनोरपत्वं+अण् । मनुष्य ।
त्रियां टीप्।

मानयधर्मशास्त्र, (न०) मनुना प्रोक्त धर्मशा
कदागया धर्मशास्त्र।

मानवराक्षस, (पु०) मानवः राक्षसः कर्त्त
प्यके सारूपमें राक्षस (बैल)।

मानस, (न०) मन एव+अण् । मन दिल । केंद्र
पास ब्रह्माजीसे रचाहुआ एक प्रकारका सरोवर ।

मानसवत, (न०) मनसा कृतं मानसं । धर्म-
क्रियाहुआ व्रत । अहिंसा (किसी प्राणीको न म
सल (सब बोलना) । अस्तेय (चोरी न करना)
(धीके निकट न जाना) अहुरूपता (लालच न

मानसालय, (पु०) मानसः आलयः यस । मन
ब्रह्माके संकल्पसे उपजा एक तालाब । जितना
स्थान है । हंस।

मानसोत्क, (त्रि०) मानसं उत्कण्ठते । मानसरोवर
उत्कण्ठित (चाहवाला)।

मानसौकस, (पु०) मानसं ओको यस । जो मानस
निवास कर्ता है । हंस (इसका उमी सरोवरसे ज

मानित, (त्रि०) मन्+घिन्+कृ प्रतिष्ठित । मान
गया । इज्जत किया हुआ।

मानिन्, (त्रि०) मान्+इनि, मन्+घिनि वा । क
करनेवाला । ध्यान करनेवाला । माझेवाला । समान
आना है।

ति, (स्त्री०) मान+इति । कवीश्वर । और मान कर-
ती (स्त्री) ।
मा, (पु०) मनोरथं अणु-गुह्व । मनुष्य । मानव ।
मासी " तनो जातो त्रियां षीप् " मानुषी । मारी ।
माय, (न०) मनुष्यस्य भावः+भ्यत् । मनुष्यत्व । मानु-
ष्य । आदमी ।
माय, (न०) मन्दस्य भावः+भ्यम् । घीमापन । मूर्खान ।
मयन । रोम । भीमारी । घुराहै । गुली । म्यूनना ।
मी ।
मायु, (पु०) मां (इन्द्रं) धयति । धे+गृष् । सूर्य-
की राजाका नाम । धुवनाथका पुत्र (इसके अपने
उछे निरुद्धा) । जब यह देवसे बाहिर भाया तो ऋषि-
तोंने कहा " कं एष धासति " (भिसे यह प्राप्त करेगा)
धी समय इन्द्रने स्वर्गके भीषे आकर कहा कि " मां
ताम्यति " (मुझे पान (दूध पीना) करेगा) तभीसे
मका ऐसा नाम हुआ ।
मय, (त्रि०)-धी (स्त्री०) मन्मथ+अण् । मन्मथ
कामदेव) काया वा मन्मथता । कामदेव (प्यास) से
शरणा हुआ ।
मय, (पु०) मां पूजाकरना+इति ष्यत् । पुत्र ।
पूजाके सायक ।
मय, (त्रि०) मम इहं । सम्पद्+भम्-भमादेशः । माग-
म्बन्धी । मुझसे संबंध रखनेवाला । मेरा+सम् ।
" मामकीन " ।
मया, (स्त्री०) मा+य । नेत्रं । कपट । एक । इन्द्रजाल
कटि । मिथ्याबुद्धि (इहे मर्यादा) का कारण । एक प्रकारका
अज्ञान । कृपा । दया । दम्भ । पापघ्न । सखी । सुदधी
माता (मां) । ईश्वरी उपाधि । अपठितपठनसाधिका
साक्षि । (एक ऐसी साक्षन जो व बन सबनेवाली साक्षी
भी बनावे)
मायाशुभ, (पु०) मायां (इन्द्रजालं) करोति । कृ+
शुभ् । इन्द्रजाल रखनेवाला । मदायी । बाजीगर ।
मायादेवीशुभ, (पु०) १ ७० । मायादेवीका पुत्र ।
सुदधेव
मायाप्रयोग, (पु०) मायायाः प्रयोग । छत्रको काममें
साका । बंधनका ।
मायापोषित, (त्रि०) मायया सुपत्ने । छत्रका सुत्र
करनेवाला ।
मायापचन, (न०) मायया बध् । छत्रका बध् । छत्रकी
बेगी । हठी बात करना ।
मायापाद, (पु०) मायायाः कपट । माया (इन्द्र मर्यादा
कपट) का नीचाप (बीहतेय ऐसा कपट है) ।
पृथ० ५१

मायादिन्, (त्रि०) माया+अक्षि अर्थे विनि । मायाकार
माया रखनेवाला । ऐन्द्रजातिक । मदायी । छत्रिया ।
मायिक, (त्रि०) माया अक्षि अण्य+इत् । मायाकार ।
मदायी । कपटी ।
मायु, (पु०) मा+भु । देहस्थपित । शरीरका तित ।
एक रोग ।
मायूर, (न०) मयूराणां समूहः । तस्येदं वा+अण् । मयूर-
संघ । मोरोंका समूह । मयूरगम्बन्धी । मोरवाला
(त्रि०) ।
मार, (पु०) मृ+भम् । मारण । मार । " मारयति " । मृ+
निच्+अण् । मार डालना है । कामदेव । विप्र । रोक ।
धरुवा ।
मारक, (पु०) मृ+निच्+भ्युत् । मृ+निच्+अण् अर्थे
बन् वा । मारण । मारना । कटल करना । एक बशो
(भाज) ।
मारकस्थान, (पु०) मारनेकी जगह । जन्मरूपे सातवीं
और द्वादश स्थान ।
मारण, (न०) मृ+निच्+भ्युत् । मारना ।
मारि, (स्त्री०) मृ+निच्+इत् । मारण । मारना । वा की
" मारी " । मार । बहा ।
मारिय, (पु०) रिप् शिगा । बलकरना । निरुपार्थकी
" मा " शब्दके साथ समाग होना है । मार्योक्तिमें
(अर्थ) शिगाको निवारण करनेसे उगे रोग बदाई ।
मारीच, (पु०) ताडका राक्षसीका पुत्र । राक्षसका अनुचर
(मोहर) । एक प्रकारका राक्षस ।
मारुतारामज, (पु०) १ ७० । कपुका पुत्र । इन्द्रज ।
और भीमसेन । " मारुतिः " इत् ।
मासति, (पु०) मरतः अपत्यं+इत् । भीरुपुत्रकी
नाम । कपुका बेटा ।
मासकण्ड, (पु०) मृकण्डोः अत्यं+अण् । पु० । दुर्क-
शुकी लगान । एक मुनि । बहू । एकः । " मासकण्डे "
श्री अर्थ ।
मासो, (पु०) अन्वेषक-सामान्य करना । खोजना । व पु०
उभय पक्षे म्भ० पर० लक्ष० हेत् । मासकण्डे ।
मासोति । अज्ञानार्थपुत्र । अज्ञानोत् " कृपेतामन् "
इति मी० । अण० अण० कर्त्तव्ये । कर्त्तव्यत् ।
मासो, (पु०) मृत्-इति-साक्षरता-अर्थे-अन्वेषक-इत् ।
बंसा । रक्षा । कपट ।
मासोत्त, (न०) मासो+भ्युत् । अन्वेषक । लालच । दण्डन ।
संभवा और प्रवृत्त । इन्द्रजाल करना । " कर्त्तव्ये म्भु " अण-
नेत्यत् (त्रि०)
मासोत्तरा, (पु०) मासोत्त इत्यत्र । कर्त्तव्य (एता) क
एतत् (एतत्) ।

मार्गशोधक, (पु०) मार्गस्य शोधकः । मार्गका. संस्कार (सफाई) करनेवाला.

मार्गस्थ, (त्रि०) मार्गं तिष्ठति । मार्गमें रहनेवाला । पथिक मुसाफिर.

मार्गशिर } (पु०) मृगशिरेण युक्ता पाणैर्मासी+धण् ।
मार्गशीर्षि } सा यत्र मासे । पुनः अण् । मृगशिर नक्षत्र-
वाली पूर्णिमा । जिस महीनेमें वैसी पूर्णिमा हो । अमहन् ।
शमहायण (मगर) । उसकी पूर्णिमा (स्त्री०).

मार्गित, (त्रि०) मार्ग+क्त । अन्वेषित । तलाश किया गया ।
हूँडागया.

मार्ज, मार्जन-साफकरना । सक० ध्वनि-शब्द करना-अक०
चुए० उभ० सेट् । मार्जयति-ते । अममार्जन्-त्त.

मार्जन, (न०) मार्जे+त्सुट् । पोछकर साफ करना । स-
म्मार्जनी (सुहारी) (स्त्री०).

मार्जना, (स्त्री०) संस्कार । सफाई । एक प्रकारका नाच
(बाजा) का शब्द.

मार्जार-ल, (पु०) मृज्+आरन् । वा रस्य लः । विडाल ।
विला । " ततः संताप्यं कन् " मयूर । मोर.

मार्जारी(ली)य, (पु०) । मार्जार+ (ल) साधे छ ।
मृज्+अर्पिच् । रस्य लत्वं वा । विडाल । विला और ह्य
(धोया बर्ण) । कायशोषन । शरीरकी सफाई (न०).

मार्जित, (पु०) मार्जे+क्त । शोधित । साफ किया हुआ ।
एक प्रकारकी रसा वा घटनी (जिममें दही, घी, मरिच,
हलत आदि चीजें मिला करकी गुणधि चीजाती है).

मार्जिण्ड, (पु०) मृजे भादे भव+अण् । सक० । मरेहुए
अदेमें हुआ । मृज् । शाकका वृक्ष । छहर । सुशर.

मार्जितक, (पु०) मृजित्या निर्मित+अण् । मरीचे बना हुआ ।
एरण । शुष्क । विषादा । मृजय । मरीचा (त्रि०).

मार्जितिक, (त्रि०) मृज्+ (तद्भादनं धिन्) अस्व+ट्ठच् ।
जो मृज् करनेवाला.

मार्जिय, (न०) मृजोर्भवः । होमलयन । मृज् । एतारेके
दु सधो न एतारेकेके विडवा विपल जाना.

मार्जि, (स्त्री०) मृज्+अण् । शोधन । छहरि.

मार्ज, (पु०) मृज्+अण्+वा पच् । एक प्रकारकी जाति ।
एकरस.

मार्जक, (न०) मृज्+अण् । बठका फूल (स्वताप) ।
मरीचका बनटका एक पत्र (बनेन).

मार्जनी, (स्त्री०) मृ (लयन्) धोना वा लयनि (वेदने)
कन+अण्+वा पच् । मरीचका । बठका मरीच । एक नदी ।
बठके । मरीचिका (स्त्री०).

मार्जनीक, (पु०) मृज्+अण् (मरीचकेभ्य) मरीचक्येत् ।
मरीचक । मरीच (मृज्) । " मरुज्नीकमरुज् ".

मालतीपत्री, (स्त्री०) मालिका इत संन
पत्ता मालतीके समान हो । जलवत्री । मालिनी

मालतीफल, (न०) मालिकाः (तदन्तर
जायफल.

मालभारिक, (त्रि०) मालायां मालेदे
पहिले पदको हस हो जाता है । मालभारिक

मालय, (पु०) अचन्तिदेश (मालवा देश)
राग । भैरव रागकी स्त्री.

मालवाधीशः-दन्द्रः-नृपतिः, (पु०) मालवा
मालवदेशका राजा.

मालविका, (स्त्री०) मालने भवा+इह । मालिनी
त्युही.

माला, (स्त्री०) मल्+संहायां कर्त्तरि पच् । म
मालाकार, (पु०) मालां करोति । इ+अण्+वा
है । माली । एक प्रकारका वणेशकर (देवकी)

मालादीपक, (न०) अलंकारमें अर्णोकरके
मालिक, (पु०) माला (तथिनामं) कर्त्तरि
मालाकार । माली । एक जाति । एक स्त्री

मानेवाला (त्रि०).

मालिका, (स्त्री०) माला इव कन् । अर्णोकरके
मालतीकी बेट । मालालंकरण । मालिका मालिनी

एक नदी । मुरा (शराव) । माली । मालिनी
माला । " पाशाक्षमात्रिकाम्मोत्र " ही मालिनी

मालिन्, (पु०) माला (मालिन्) कर्त्तरि
मालाकार । माला बनानेवाला । माली

(त्रि०) । मालीकी पत्नी (भीत) । एत
पादवाला एक छन्द । माली । बगनवाली

(आकाशकी गंगा) । कन्य कृषिके आनन्दके
नदी । अभिशिखापुत्र । दुर्गलभा (स्त्री०) ।

मालिन्य, (न०) मालिन्य भावः+अण् । मालिनी
पत्र । मालाजप.

मालूर, (पु०) मालि (माली परेवा) कर्त्तरि
विन्व । कर्त्तव्य.

मालेय, (त्रि०) मालायां मालु+अण् । मालिनी
वनुर । मालिनी माला बनानेवाला.

मालय, (न०) मालाये हिन्+अण् । मालाये की
पुत्र । कुल । " मार्थे ध्यम् " पुण्यपत्र । पुत्र

(शर) । मायेर मालेका शर । मालिनी

माल्ययन्, (त्रि०) माल्यं कर्त्तव्यं
को " व " । मालयनः । मालिनी

मालिनी (पत्र) । मालिनी
माला । एक लक्षण.

मालिनीक, (त्रि०) मालिनी कर्त्तव्यं
मालिनी बनानेवाला । " मालिनी कर्त्तव्यं " ।

(पु०) मय-संज्ञावाचकम् । महीनेन्द्र (उच्यते) । एक मास (मासा) । एक प्रकारका तोल । मूलं । एक प्रकारका रोग । मीं ।

मिथ्या, (पु०) मायं (मायतरीमितं स्वयं) बर्धयति अतिष्ठति-अपहरति । बर्ध-काटना+अनुत् । एतन्कार (उत्तर) । मायाभर मोना बाट देना है वा पुर देना है । य, (न०) मायावां भरनं (क्षेत्रं) +अच् । जित क्षेत्रमें इत उपभवे हो । मायमीहिमवनयोग्यं क्षेत्रं+माः । नर्भं" इती अर्थमें होना है ।

मिथ्या, (पु०) माति (परिच्छिन्नति) खगला वायम् । +अनुत् । अपनी गतिसे समयको माय देना है । चन्द्र । इ । चन्द्रमा । दीप दिनका समय । त्रिदशानामक जल । महीना ।

मिथ्या, (पु०) मा एव+अच् । चंद्र । चांद्र । त्रिदशानामक जल । दीप दिनका समय । चंद्र (गौर-भावना चांद्र और चायके नेदधे) चार प्रकारका होता है । चांद्रमाय । महीना । " मय-भावना+कारणे यम् " मायाभर ।

मिथ्या, (वि०)-मी (मी०) माधे भर +अच्+इक । मायके साथ संबन्ध रखनेवाला । प्रत्येक महीने होनेवाला । मायमें देनेयोग्य । मृति । तन्मातृ ।

मिथ्या, (वि०) मायेन देयः । एक महीनेमें देनेयोग्य । मय, (न०) मायं नयति । मी+इ । गोमठारीलना । चक्रवर्त ।

मिथ्या, (पु०) मागस्य प्रवेसः । महीनेका प्रवेस । मायका प्रवेश ।

मिथ्या, (पु०) मय-भावना+यच् । मायं (परिमार्थ) इति । उ+क । भयमण्ड । मी+इ । पीठ । चारणो (उच्यतेपुनः) । प्रवृत्त ।

मिथ्या, (पु०) मागस्य (गौरस्य) चांद्रस्य वा अगतः । गौर वा चांद्र मायका मय । महीनेका अवगान । मातृ । संक्रान्ति (सूर्यका एक तारिने दूसरीमें जाना) ।

मिथ्या, (वि०) मायं आहृतिः । एक महीने केवल एक बार जानेका ।

मिथ्या, (वि०) माधे भर +अच् । मायभर । महीनेका । अनेक दिने महीनेकी गिधि । इत्येक महीनेमें अमककालके दिन करनेकरके मातृ (न०)

मिथ्या, (वि०) माय+अच्+इत् । एक महीनेका पुनरा । महीनेका ।

मिथ्या, (मी०) मायं उत्तरगतिः । पूरे एक मासका या उपभवेकी मीं ।

मिथ्या, (अच्) मिथ्या । इत्यच् । रोचक । मय+अच्+इत् ।

मिथ्या, (मी०) मायं उत्तरगतिः । पूरे एक मासका या उपभवेकी मीं ।

माहाकुल, (वि०) महाकुले भर +अच् । महाकुलीकुल । बड़े कुलमें उपजा । " यम् " । " महाकुलीन " । मही अर्थ ।

माहारम्य, (न०) महामनो माय+अच् । महान । महिमा । महत्त्व ।

माहिय, (न०) महिष्या इदम्+अच् । महिषी (भिय) मयि-का रूप आदि " महिष्य इदम् " +अच् । टमका मय आदि (वि०) ।

माहिष्मती, (स्त्री०) एक नगरी । देहय राजजोटी पैतृक राजधानी ।

माहिष्य, (पु०) महिष्या मय+अच् । इतिपदे देहय जतिषी बन्धुमें टमका त्रियपुत्रका संकर । देहय ।

माहेन्द्र, (पु०) महेन्द्रस्य अर्थ+अच् । इन्द्रका । उलोपिपदे महेन्द्रसमन्वी एक समय (इन्द्रसिंघ) । पूरे दिन । इन्द्रकी स्त्री (तपती) । गौर मीं (मी०) मीच् ।

माहेय, (पु०) मया अयम् । मही+इत् । इतिपदे ताम्ना । मंगल मद्र । और मद्र मगी काल (देह) । मी (मी०) मीच् ।

माहेभ्यर, (वि०) महेभ्यर अतिमं हम् अयम् + अच् । महेभर (तिपती) मी कदा इतिप विद् । दक्षिणा (अया मीच्) " महेभं अच् " मयुदेह । एक प्रकारकी माता । महेभ दुर्गा (देवी) (मी०) मीच् ।

मि, क्षेत्र-वचना । मा० उभ० उच० इत् । मी+इ+इत् । मी+इ+इत् । मी+इ+इत् । मी+इ+इत् । मी+इ+इत् ।

मिच्छ, वच मारक । अ० उ० उच० इत् । मी+इ+इत् । अतिपदीत् ।

मित, (वि०) मिक-व च । लक्ष्मी । मयपुत्र । इतिप । दोलका । अतिप । मयपुत्र मी मय । पैतृकुला ।

मितमाम, (पु०) मीं (पक्षिणं) मयु-अच् । मय-अच्+इत् । मयपुत्रका अर्थ बोधक । मीं वचन है । मय । मही । पक्षिणमानी । मयपुत्र वचन है (म०) ।

मित्तु, (पु०) मीं इति-वर्ति का म० । मयु । मयु ।

मित्तपच, (पु०) मीं वचति । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् ।

मित्तयुक्त, (वि०) मीं युक्त देव । मित्तयुक्त कनेरक । मित्तमे अत्रक वचनेका ।

मित्तयपिद्, (वि०) मीं-इत्-अच्-इत् । मित्तयुक्त (मयं) इतिप । मीं इत्-अच्-इत् । मित्तयुक्त (मयं) इतिप । मीं इत्-अच्-इत् । मित्तयुक्त (मयं) इतिप । मीं इत्-अच्-इत् ।

मित्त, (मी०) मीं इत्-अच्-इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् ।

मित्त, (म०) मीं इत्-अच्-इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् । मय-अच्+इत् ।

मित्रघ्न, (त्रि०) मित्रं हन्ति । मित्रको मारनेवाला । मित्रघ्नी हत्या करनेवाला ।
 मित्रयु, (पु०) मित्रं याति । या+ङु । मित्रयत्साल । मित्रका पियारा
 मित्रलाम, (पु०) मित्राणां लामः । मित्रोंकी प्राप्ति (मिलन) ।
 मिथ्, पथ-मारना । मिलना । सक० भ्या० उभ० सेट् । मेपति-ने ।
 मिथस्, (अन्व०) मिथ्+अयुन् । रहति । अकेले । एका-
 न्तमें । धापसमें ।
 मिथिला, (स्त्री०) मिथ्+किलच् । अपने नामसे प्रसिद्ध राजधानी निरहुत । जनक राजाकी पुरी ।
 मिथुन, (न०) मिथ्+उनन् । स्त्री और पुरुष (जोड़ा-मर्द और औरत) । मेपसे तीसरी राशि । विषयके लिये मिलना । जोड़ा ।
 मिथ्या, (अन्व०) मिथ्+क्यप् । शय्यार्थं । जो ठीक नहीं । अगल । झूठ ।
 मिथ्यादृष्टि, (स्त्री०) मिथ्या-सफलस्यापि अफलत्वेन दृष्टिः । फलकाते पदार्थको भी फलरहित देखना । नास्तिकता । नास्तिकपना । फलवाले भी वेदमें कहेहुए कर्मको फलरहित जाना । भूल ।
 मिथ्यानिरसन, (न०) मिथ्या निरस्यतेऽनेन । निद्र्+अन् । फेंकना । करके ह्युद् । शरथ । कगमरौ । कसम गाकर इन्कार करना ।
 मिथ्याभियोग, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्त्वेन) अभि-
 योगः (शास्त्रोन्तिके वेदनम्) । राजाके पास हाथ सवाल देना । मिथ्यावाद । झूठी नास्तिक । अभि+युञ्+थम् । “इतने मेरा ही रखा देना है” इस प्रकार झूठ बनाकर एमके फल सवाल करना ।
 मिथ्याभिदांगन, (न०) मिथ्याभूतेन (असत्त्वेन) अभि-
 दांगन् (अपवादः) । हाथ कलंक । “ गुने मेरा गीना गुणवा ” ये दोष छानना ।
 मिथ्याभिराध, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्त्वेन) अभि-
 राध (अपवादः) । मिथ्यावाद । झूठा कलंक (तोहमत) ।
 मिथ्यामति, (स्त्री०) मिथ्याभूतस्य मतिः । मन्+चित् । हाथ मिथ्य । प्रमत्ति । घम । भूल । औरमें औरका जाना ।
 मिद्, सेट्-रिक्त करना । भ्या० वा० टा० में पर० सेट् । वेदने । अमिद् ।
 मिद्, मिक्त । पु० टव० सट्० सेट् । मिटति । अनेनीय । अनेनीय ।
 मिद्, सेट्-दीकन । भ्या० पर० सट्० सेट् । इति । अनेनीय । अनेनीय ।
 मित्र, सक्कल-और दोन (पुण्य) हाका । पु० व० अट्० सेट् । मित्रि ।

मिथ्र-स, योजन-मिलाना । युए० उभ० इ मिथ्र(स)वति-ते ।
 मिथ्र, (त्रि०) मिथ्र+अच् । संयुत । द्वैय (अगला) पदमें आयाहुआ शेट् (सु) अर्थमें होता है । जैसे “आर्यमिश्रः” । एक प्रकारका हाथी । ज्योतिषमें हतिघ्न है । (तारा) का गण (समूह) (पु०) । मिथ्र (त्रि०) ।
 मिथ्रकावण, (न०) मिथ्रकनामकं वनं । त्रिं और णल होता है । इन्द्रोयान । इन्द्रक का-
 मिथ्रव्यवहार, (पु०) षीलवर्तीमें बहुरूप (एक प्रकारकी गिनती) ।
 मिप्, ऐचन-सीचना । भ्या० पर० सेट् । वेदने । “कला वेट्” ।
 मिप्, परामिभवेच्छा-द्वारेको दबानेकी इच्छा । पर० सक० सेट् । मिपति । अनेनीय ।
 मिप, (न०) मिप्+क । छल । बहाना । हाथी (पु०) ।
 मिपिका, (स्त्री०) मिपो+कन् । जगमांती । हाथी की औपथ ।
 मिप, (त्रि०) मिप्+क । शिफ । सीचन । कियाहुआ । मधुरता (मीठा रस) (पु०) । (त्रि०) ।
 मिह्, ऐचन-सीचना । भ्या० पर० सक० अनेनीय । अभिशत ।
 मिहिका, (स्त्री०) मिह्+कन् । आ इय । पाका । बरफ ।
 मिहिर, (पु०) मिह्+धिरच् । सूर्य । अदृश्य । बादल (मेघ) । वायु (हवा) । बर (वर्षा) । दिलकी सभाका एक परिजत ।
 मी, पथ-मारना । रिवा० वा० सक० अनेनीय । मी, मारना । क्या० उभ० सक० सेट् । अनेनीय । अमाथीत् । अमाल । मीनः ।
 मीह, (त्रि०) मिह्+क । मृत्ति । मृत्पुत्र ।
 मीहुष्टम, (पु०) मीहुष्टमस्य मि० । मित्रि । हाथी ।
 मीहुष्ट, (पु०) मीह्+क्यप् । मि० । मित्रि । हाथी ।
 मीन, (पु०) मी+नच् । मत्स्य । मत्स्य (मछली) । १२ की टापी । अमरान्ता अमरान्ति । “कर्मणो मीनकेतन, (पु०) मीनः केतनो वसः । कर्मणो निदानं है । कर्मणो कर्मदेव । “कर्मणो मीनो मीनाच्छा, (स्त्री०) मीनस्य अन्तः (अन्तः) अन्तः अन्तः । अन्तः मीनः । मित्रि । हाथी । अन्तः मीनः । मित्रि । हाथी ।

रु, शब्दहरना । अक० जला । एक० भ्या० पर सेद् ।
 शीमति ।
 मांसक, (पु०) मीमांसा वेत्ति-अपीये वा पुन् । मीमां-
 साको जानता वा पदका है । मीमांसाशास्त्रको जनेहारा
 और उवाचो पदनेहारा । "मान्+स्सार्थे चन् षुल्" । परी-
 क्षक । सिद्धान्तकारक । फैसला करनेवाला । अणक बह-
 नेवाला ।
 मांसा, (की०) मान्+स्सार्थे चन्-अ । विचारये तत्त्वका
 निर्णय (फैसला) करना । उसे प्रतिपादन करनेहारा एक
 प्रकारका ग्रंथ । इस ग्रन्थके दो भाग हैं (एक भाग
 कर्मको प्रतिपादन कर्ता है वह जैमिनिमुनिका रचाहुआ
 है और पूर्वमीमांसा नामये प्रसिद्ध है । एवं द्वारा भाग
 महाविषयको निरूपण कर्ता है और वेदान्त नामये प्रसिद्ध
 है वह व्याख्येयने वर्णन किया है) । विचार । इत्याक ।
 परीक्षा ।
 मीमं, मीमं-मीटका-बंदकरना (जैमा कि शीघरा) । भ्या०
 पर० अक० सेद् । मीलति । अमीलीत,
 मीटन, (न०) मील्+स्सुट् । मुटन । बंदकरना । मीटगा ।
 शिबोडना ।
 मीलित, (त्रि०) मील्+ञ् । अग्रपुन । म पिलाहुआ ।
 शिबुटाहुआ ।
 मी, बंदहोना । मुदीमवन । भ्या० पर० अक० सेद् । मी-
 वति । अमीवीत ।
 मुट, (पु०) मोचयति शीवान् । स्वये मुच्-ट् । मदेय ।
 महादेव ।
 मुट्, (पु०) मुच्+ट्+ट् । "ब" को "क" । मोक्ष । मुट-
 वारा । उन्मर्ग । त्याग ।
 मुट्ट, (पु०) मटि+उट-ट् । शिरोभूरण । शिरवा डेवर ।
 ताज ।
 मुट्टन्द, (पु०) मुट्टं ददाति । दा+ञ् । ट् । मुम् । मोक्ष
 देना है । विष्णु ।
 मुट्टम्, (अन्-) निर्वाण मोक्ष । निर्विकल्पक समाधि ।
 मुट्टर, (पु०) भक्ति+ करच् । ट् । दर्पण । शीला ।
 बहुत बड़ा । कुण्डलदण्ड (कुण्डलका रथा) । मन्त्रिवा-
 द्य । मालतीका दरत । कर्णौ ।
 मुट्टल, (पु० न०) मटि+उटन-ट् । शोटीकी शिरीरई
 कर्णौ । कर्णौ । शरीर (शिल्प) । आका (कट) ।
 मुट्टलित, (त्रि०) मुट्टल+लच् । शिरीरके शिरीर शिवाक
 कर्णौ हो । कर्णौकला । शिवाय हुआ । आकाबंद (नेत्र) ।
 मुक, (त्रि०) मुक्+ञ् । एक (शीघ्रहुआ) । प्रसंगेक ।
 शिवाय मुट्टवारा हो गया । और आर्श-दण्ड (एका टोपका) ।
 मुक्कामुक, (पु०) मुक्क+कृच् । देन । बह एवं शिरीर
 अथवा कुंज उगार जातीही । एके अर्थसे (उरडे)
 कण्य (त्रि०) ।

मुक्कफण्ट, (त्रि०) मुक्कः कण्यः देन । मुडे गडेवाला ।
 कर्णी भावक (विहाट्ट) । टं (अन्-) निरुद्धकर
 (रोना) कुंभे ।
 मुक्ककर, (त्रि०) मुक्कः करः देन । मुडे हापवत्त । उदर ।
 गुला दित । दानी ।
 मुक्ककेश, (त्रि०) मुक्कः केशाः देन । मुडे बलोरग ।
 मुक्कलज्ज, (त्रि०) मुक्कः लज्जा देन । निर्वेज । लज्जाके
 त्यागनेवाला ।
 मुक्कमद्ग, (त्रि०) मुक्कः एतौ विषयागणिः देन । त्रिगने
 एतन्मूले विषयोका संय छोडरिवा है । परिक्रमक । संन्यटी
 (पु०) ।
 मुक्कहस्त, (त्रि०) मुक्कः (दाताय प्रणयिन्, म बह इति
 यावत्) हस्तो देन । त्रिगने देनेके शिरे हापको देना
 दिया है अर्थात् रोका नहि । बहुदानहीक । बग देने-
 वाला । पदाक ।
 मुक्क, (की०) मुक्+ञ् । शीरीरके निकला एक प्रकारका
 ल । मोटी ।
 मुक्कामन्, (त्रि०) मुक्कः अन्ना यस्य । (पु उच्यते)
 मुडे हुए आयावाला । मोक्षको ग्राम हुआ ।
 मुक्कामर, (की०) मुक्कां प्रणये । प्र+ए+चिच् । ट् ।
 ट्ठिक (शीरी) ।
 मुक्कपाल, (न०) मुक्का कर्त इत् । शीरक । शीरी ।
 लकीकत । शीताकत । बरूर (बरूर) । बंधदेवका
 बनावहुआ भक्तिप्रधान संघर्षरिच ।
 मुक्कपटी, (की०) मुक्कावा अक्षरी (दरभेर) । शीरी-
 शीका हार । श्यावराकका मुटव ग्रन्थ ।
 मुक्कस्फोट, (पु० की०) मुक्कस्ते (विस्फुटते) स्फोटः ।
 मुक्काये स्फोटः । मोटीके शिरे बुरका । ट्ठिक । शीरी
 मुक्ति, (की०) मुक्+चिच् । मोक्षक । एतन् । एतन्के
 अर्थसे रहित होना । कर्णके नेरने " अल्लोच्यु ल-
 निवृत्तिः (एमा दुःखका मुटका कि निर कर्णौ न हो) " ।
 एतन्स्फोटक (अर्थसे निरुद्धकर अर्थात् मुटका कर्ण) ।
 अर्थात् देर और इतिरिक्के संघर्षसे हट्य होना ।
 मुक्क, (न०) मुक्+अच् । मुक्के रहिते " मुक्क " होना है ।
 " प्रत्ययः कर्णः कर्णौ ललाटपुट्टेन मुक्कः " । शरीरका
 आरधर्षरिच (मु) । कर्णकः कर्णः कर्णौकत बरव
 (मु) । एतन्के निकटवेक कर्ण (एतन्) । अरन्ध्र ।
 उदर । कर्णके एक प्रकारकी कर्ण (शिरीरके शीरके
 उरधनि होनी है) । कर्ण (शरीर) । इदम् । एक ।
 कर्णक । और देर ।
 मुक्कज, (पु०) कर्णौ मुक्कः कर्णः । कर्ण-क । कर्णक
 मुक्कके उच्यते है । शिवा । कर्णक । " कर्णकः कर्णः
 मुक्ककट्टि " मुक्ति ।

विद्यारस, (न०) सुरया प्रसवः राशयः बलिन्द-साहसं
 ण्डकं । शानेदोषकारात्समासः । विद्यायद्रसत्वा रसाद्युभा
 षक नाटक.
 विधिपि, (स्त्री०) सुरया विधिः । पांच प्रकारके विरा-
 षेमे एक । उपेके अक्षर.
 वृक्षा, (स्त्री०) सुरैव । शुभा वा शुभा या वृत् । सोने वा
 चांदीका बनाहुआ अंगुलिमें स्थित अंकुके साधन करने-
 ज्ञक एक पदार्थ । मोहर । हय्या.
 व्रेत, (त्रि०) सुभा जगता अस्व+दत्तच् । अश्वकारिण ।
 विद्यादुभा । अंकित । छयादुभा.
 वा, (अन्य०) निष्पा । वृष्ट । वेफायदा । वृषा.
 वे, (पु०) मन्+इन्+ष्ट० उजम् । ऋषि । पवित्रपुरर ।
 संत । मष् । दनि । क्षमहय । मयस । बुद्ध । पाणिनि ।
 " जिसका मन दुःखमें व्याकुल नहीं होना, सुखमें विम-
 बो इच्छा नहीं, वासना, मय, और कोपसे रहित, शिर-
 बुद्धिवाला मुनि होता है" । शिरचित्त और विषयकी वास-
 नासे रहित जन (वे मनु, अपि, विष्णु, हारीत आदि
 हैं) । हास संतया । सातकी भिनती.
 निप्रयम्, (न०) मुनीनां प्रयम् । चीन मुनि (पाणिनि-
 बाल्यायन-पतञ्जलि.
 निपुहय, (पु०) (मुनिषु पुत्रवः=प्रेष्ठः) मुनिओंमें
 भेष्ट प्रसिद्ध बावडा मुनि.
 निमेषज, (न०) मुनीनां निमेषं हर । मुनिओंकी माली
 पदाई है । हरीतकी (हरीत) । अगल्ल मुनि । उच
 न याना.
 निवृत्ति, (त्रि०) मुनीनां वृत्तिः यसा । मुनिओंकी जी-
 विधा । मुनिकी मानित जीवनका विवाह करनेकाला.
 नुनीन्द्र, (पु०) मुनिः इन्द्र इव । मुनि मानो इन्द्र है ।
 बुद्धदेव । ७ त० । ऋषिभेष्ठ । मुनिओंमें बहुत शब्दा.
 नुन्या, (स्त्री०) ताञ्जुर्के प्रसिद्ध जन्मके बर्षसे लेकर एक
 २ वर्ष । लगते एक २ राशिका अन्तर (फरक) इसी
 अर्थमें "सुपहा".
 मुन्यध, (न०) मुनिधोर्म्यं अधम् । मुनिओंके लायक अध ।
 नीवार बन्दारि । खोकेके चावल । बन्द आदि.
 मुमुक्षु, (त्रि०) मोक्षं इच्छुः । मुञ्+छन्+उ । मोक्षकी
 इच्छावाला । जो पैसारेसे छूटना चाहता है । बनि (पु०).
 मुमुक्षान, (पु०) मुञ्+क्षान+ञ्० वीर्यः । मेघ (बादल).
 मुमुक्षु, (त्रि०) मर्षं इच्छुः । मु+यन्+उ । आगलनरण ।
 ओ मरनेकी इच्छासे बर्ता है । जिसकी मौत नजदीक है.
 मुद्र, वेदन । घेरलेना । पु० पर० सक्त० सेद् । मुद्रति । अ-
 भोरीन्.
 मुद्र, (पु०) मुद्र+क । एक देत । वेदन । घेरना । एक
 गन्धद्रव्य । त्रिमां टाप्.

मुद्रज, (पु०) मुद्रान् (वेदनात्) जायते । जन्+ङ ।
 घेरनेसे उपजता है । मुद्रंग । एक प्रकारका बाजा ।
 कुबेरकी स्त्री । (त्रिमां टाप्).
 मुद्रिषु, (पु०) १ त० । मुद्रदेलना कालु । विष्णु । "मुद्ररी"
 "सुरमयन".
 मुद्रला, (स्त्री०) मुद्रे लाति । ला+क । नर्मदा नदी । एक-
 बाजा । मुद्राी । बंतरी.
 मुद्रलीघट, (पु०) मुद्रां घटति । घृ+अच् । धोक्ण ।
 "मुद्रलीघटन".
 मुद्रुत्ते, मोहमूर्च्छित होना । वेमुपहोना । वृद्धि-बदना । मू-
 र्छति । अमूर्च्छीत् । भाये क । मूर् । मूर्च्छिनम्.
 मुद्रुंर, (पु०) मुद्र+क । घृ० द्वित्वम् । गुणामि । तुन (तोह-
 की शाग । कंदर्प । कामदेव । और सूर्यका घोडा.
 मुद्रा(स)ली, (स्त्री०) मुद्र-मुद्र वा अल्लु-ष्ट० "प" बो
 "त" वीच् । तात्त्वमूली, मुगलीदवाई । वृद्धोषिका ।
 टिणकली (निन्) । बलराम (पु०).
 मुद्र, लुञ्ज् (लुटना) । वषा० पर० टिक० सेद् । मु-
 प्पानि । धमोपीत्.
 मुद्र-स-दा-ल, (पु०) मुद्र+कञ् । घृ० । पसवा सः (शः)
 वा । अशोम । जिसके आगे लोहा लगाहुआ होता है ऐसा
 धान आदि कूटनेका साधन । एक पदार्थ । मोहल । मुंण्णी.
 मुद्रित, (त्रि०) मुद्र+क । अपहृतद्रव्यजन । सुरया हुआ ।
 बह जन कि जिसकी बोरी होगई.
 मुद्रक, (पु०) मुद्र+कङ् । पुरयका विद्विशेष । अंशोप ।
 पताक । पण्यपाठलनामी इश । तरकर । चौर । मोटा.
 मुद्रकान्य, (पु०) ३ त० । इषण (पताक) से रदित ।
 रामाओंके अत पुर (जनानराने)का रसकाय । सोमा ।
 नमुंयक.
 मुष्टि, (पु० स्त्री०) मुद्र+क्विच् । बद्धपानि । बंधहुआ हाथ ।
 मुनी । एल (चार लोहे)का परिमाण (मार) किन् ।
 चुराना (स्त्री०).
 मुष्टामुष्टि, (अन्य०) मिथो मुष्टिहारकरणम् । आपसमें
 मुनीओंके लडना.
 मुष्टिक, (पु०) मुष्ट्या कापति । कै+क । कंच रामका एक
 माय (पहिलमान) "मुष्टिभोगं प्रशोजनं धन्य" वन् ।
 चुराना जिसका मतलब है । खर्गकार । मुनार.
 मुष्टिकान्तक, (पु०) १ त० । बद्धदेव (इसका मुष्टि-
 दैलकी मारनेसे ऐसा नाम दे).
 मुष्टिन्धय, (पु०) मुष्टिं धयति । धे+तच् मुन् र । मुनी-
 को पीता है । बालक । बचा.
 मुष्टिबन्ध, (पु०) मुष्टेर्बन्धो बन् । बंधा मुनी बांधी जानी
 है । संमद् । जमा करना । १ त० । " मुष्टिबंधन "
 मुष्टिका बांधना.

मुस-(प-श)-लिन, (५०) मुस (प) (श) ल+अत्त्वयं
इति । बतदेव । बतरन.

मुस, (५०) (श्री०) मुस+अच् । धीवे टाप् । मुसाक ।
मोषा । वृणमुलविशेष.

मुद्, मोह-वैश्वित्य । वेमुष होना । रि० उभ० अक० सेद् ।
मुपसि । अमुदत् । मोहिदा । मोग्धा । मोडा.

मुहिर, (५०) मुह+रिच् । कामदेव । मूर्त्त । बेवदृक.

मुहुन्, (अभ्य०) फेन-पुन्य । बारकार.

मुहने, (५० न०) हुच्+क-धुक्ते "मुद्" का भागम
होता है । बरह शकके मानका समय । दिल्हा पंद्रहवां
मग । विभिन्नयुवाधिक षट्कारुपस्य काल । योडासा कम
वा जिनासा दोपटीका समय । लइजा । योडासा समय ।
सज्जनम निन्दका बल । ज्योतीयी (५०).

मू, सं-सं-पत्ता । म्वा० भा० सक० सेद् । मारते । अमपिट.

मूक, (५०) मू+कच् । मन्थ । मरपी । एक ईल । हीन ।
ओ बोलनेकी शक्तिसे रहित । मूंग (रि०).

मूद, (रि०) मू+क । मूर्त्त । बाल । जड । भोदक ।
बन्ध.

मूर्च्छना, (श्री०) मूर्च्छ+भुच् । " मर (भाग्य) ।
जहाँ मूर्च्छनासे मूर्च्छना हुआ समयको प्राप्त होता है,
वहाँ मूर्च्छनासे मूर्च्छना बड़ी जाती है" । मानेका एक
प्रकार । वेपुन होना.

मूर्च्छा, (श्री०) मूर्च्छ+भ्रा । मोह । विदेशी । जगने-
वाली । मूर्च्छासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे
मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे

मूर्च्छा, (रि०) मूर्च्छ+भ्रायै लप् । मूर्च्छाविशेष ।
मूर्च्छासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे

मूर्च्छित, (रि०) मूर्च्छा जग अण+इत् । मूर्च्छावाला ।
मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे

मूर्च्छ, (रि०) मूर्च्छ+क । मूर्च्छाविन । मूर्च्छावाला ।
मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे मूर्च्छनासे

मूर्च्छि, (श्री०) मूर्च्छ+भ्रिच् । सेद् । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।
(क०) । मूर्च्छि (क०) । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।
मूर्च्छिन्, (५०) मूर्च्छि कर्त्तव्य-मूर्च्छि । मूर्च्छि ।
मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।

मूर्च्छि, (५०) मूर्च्छि-मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।
मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।

मूर्च्छि, (५०) मूर्च्छि-मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।
मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि । मूर्च्छि ।

मूर्धन्य, (रि०) मूर्धं भक्त+भ्यच् । निररु
जात । माथेमें उपजा । "कट, ठ, ड, ड, ड, ड,
वर्ण (५०).

मूर्धन्, (५०) मूर्धं+कनिच्+धुद्व । मूर्धन् ।
मूर्धवेष्टन, (न०) मूर्धां वेष्टते अने+भ्यच् ।
झार (शिर) लपेटा जाता है । पदवी । पद

मूर्धांभिपिक्त, (५०) मूर्धं अभिपिक्त ।
अभिपेक कियाहुआ । राजकीय दिग्दर्शक
राजा । वर्णसेकर । एकजाती । मन्त्रो.

मूर्धा, (श्री०) मूर्ध+अच् । आने बनेने
(पैल).

मूर्ध, प्रतिष्ठा । कायम होना । शिरा होना ।
भ्या० उभ० अक० सेद् । मूर्धा-ने । मूर्धा-ने

मूर्ध, रोपण । लगाना । पुष्प० उभ० अक० सेद् ।
यति से.

मूल, (न०) मूल+क । शिवा (जड) । मूल (रि०)
मिच्छा (वेद्योके दकाहुआ स्थान) । मूल (रि०)
मूलधन (पूंजी) । अग्निक (मूर्च्छि) ।
पाप । शिवालीमूल । टीका शक्तिसे मूलधन
मन्थ । उभोसाती नशय (रि०).

मूलान, (न०) मूल+संज्ञायाम् । एक मूल
(जड) । मूर्धा (शिवाका माथेमें कभी मूलधन)

मूलकर्मन्, (न०) मूलेन (मन्त्रं पदविन) ।
करकारि कर्म । मन्त्र और शिवा (पूंजी)
करनेका काम । पत्तिका काम

मूलकृच्छ्र, (न०) मूलेन (शक्ति शिवासे) ।
प्राप्ति जडको काटनेसे मुच्छिपि है । एक मूलधन
उपगता (रि०).

मूलकृत्वि, (श्री०) मूर्धाभूता (मन्त्रं) ।
मूलके पत्तिका प्रकृति । शिवासे मन्त्रं
मन्त्रं दशाको प्राप्तहुआ, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

मूलविभुज, (पु०) मूर्धासे विभुज । मूर्धासे
है । मन्त्र । मन्त्र । मन्त्र

मूलकृत्वि, (न०) मूर्धाभूता । मन्त्रं मन्त्रं
जड । मन्त्रं मन्त्रं । मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

मूलकृत्वि, (रि०) मूर्धाभूता । मन्त्रं मन्त्रं
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

मूलकृत्वि, (पु०) मूर्धाभूता । मन्त्रं मन्त्रं
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

मूलकृत्वि, (पु०) मूर्धाभूता । मन्त्रं मन्त्रं
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

मूलकृत्वि, (पु०) मूर्धाभूता । मन्त्रं मन्त्रं
मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं

(न०) मृदाय (पठारिकारणतन्त्रादये) इदं+यत् ।
 । हेनेके लिये दिखाया घन । मोल । कीमत । मुद्र ।
 छुटन । छटना । भ्वा० पर० एक० सेट् । मृपति ।
 ह्रीत् ।
 ः, (पु०) (स्त्री०) मृप+ण्युत् । स्त्रीत्वे टाप् । अत
 म् । मृपा । घृआ । कन्दुर ।
 ऋ, (पु०) मृप+णिकन् । कन्दुर । मृपा । घृआ ।
 । (स्त्री०) मृप+शीष् । गोने आदिके पिपलानेका
 ऋ । कुटावी ।
 मृनि-मरना । हु० लट्, लोट्, लृट्, विधिलिट्, लृट्,
 आशीलिङ्गं आत्मनेपद और लकारोंमें परस्मैपद होता
 । शक० अनिट् । प्रियते । अमृत । ममार । मतांति ।
 पीट ।
 मृदु, (पु०) मुनिविशेष । एक मुनिका नाम ।
 । अन्वेषण । तालका करना । और मांगना । घु० आ०
 उक० सेट् । मृगयते । अममृगन ।
 ऋ, (पु०) मृग+क । पशुमात्र । हरिण । एक हाथी ।
 अधिनीचे पाँचवाँ नक्षत्र (तारा) । “ मृग+भावे अच् ”
 अन्वेषण (इँडना-तालाका करना) । मांगना । और एक
 ऋ । कस्तूरी । और मकर राशि (पु०) ।
 मृगामिनी, (स्त्री०) मृग इव गच्छति । गम्+गिति ।
 मृगुत्व्यगमनवती । हरिणके समान जानेहारी ।
 मृगजीवन, (पु०) मृगैः (तन्मांसदिभिः) जीवति ।
 ओ पशुओंके मांस आदिसे जीताहै । व्याघ्र । शिकारी ।
 जीव्+ण्युत् ।
 मृग्या, (स्त्री०) मृग+ण्युच्+टाप् । नटहुए इन्धका खो-
 जना । तालका ।
 मृग्यणा, (स्त्री०) मृग्याणां तृणैव (तृणहेतुत्वात्) ।
 माने हरिणोंकी छालच है (छालचका कारण होनेसे) ।
 तृणकी किरणोंमें अलभ्रान्ति (पानीका खयाल होना) ।
 अलरहित देशमें दूखे तृणकी किरणोंको देख तृण्यासे
 पीडितहुए मृगबलकी भ्रान्तिसे बार २ घूमने हैं परन्तु
 पानी नहीं मिलता । निर्मल देशमें रेतपर गिरीहुई
 किरणमें पानीका खयाल ।
 मृगदंदाक, (पु०) मृगं ददाति । दंस्+ण्युत् । पशुको
 दता है । कुचुर । कुता ।
 मृगधूर्तक, (पु०) मृगेषु धूर्तकः । पशुओंमें धूर्त (स-
 चरा) । मृगाल । विचार । मीदक ।
 मृगनाभि, (पु०) मृगस्य नाभिः (नाभिजन्मः) । हरिण-
 की नाभि (पुत्रीसे उत्पन्न हुआ) । कस्तूरी । एक प्रकार-
 का हरिण ।

मृगनेत्रा, (स्त्री०) मृगः (मृगशिरोनक्षत्रं) नेत्रं इव
 (प्रकाशकं) यत्र (रात्रियु) । जिन रात्रियोंमें मृग-
 शिर तारा आंशकी तरह प्रकाश कर्ता है । मार्गशिरकी
 रात्रियें । हरिणके समान चपल नेत्रोंवाली स्त्री (औरत) ।
 मृगपति, (पु०) १ त० । मृगणां (पशूनां) पतिः ।
 पशुओंका मालिक । सिंह (शेर) । “ मृगेन्द्र ” आदि
 इसी अर्थमें है ।
 मृगयन्धनी, (स्त्री०) मृगो भ्रम्यते अनया । बन्ध+स्युद्-
 शीप् । जिसे पशु बांधिया जाता है । पशुओंको बांध-
 नेका आल ।
 मृगमद, (पु०) मृगस्य मदः (गर्वः) यस्मात् । हरिणको
 जिसे अभिमान होता है । कस्तूरी ।
 मृगया, (स्त्री०) मृगं याति अनया । या+क । जिसे
 पशुवर हावटका है । शिकार । अहेर । आखेटक ।
 मृगयु, (पु०) मृग+अक्षि अर्थे यु । हरिणवाला । मद्रा
 (हरिणके स्वरूपमें इसका शिर काटागया था) । मृगाल
 (मीदक) आदि एक प्रकारका व्यापार । विचार । व्याध ।
 शिकारी ।
 मृगराज, (पु०) मृगणां (पशूनां) राजा । टच् । पशु-
 ओंका राजा । सिंह (शेर) “ मृगेण राजते ” अच् ।
 हरिणसे शोभता है । चन्द्रमा । चांद । “ मृगाश्च ”
 “ शशाश्च ” ।
 मृगलक्षण, (पु०) मृगो लक्षणं यस्य । हरिण जिसका
 लक्षण (निशान) है । चन्द्र । चांद । “ मृगाश्च ” आदि ।
 मृगयधाजीव, (पु०) मृगवधेन आजीवति । जीव्+अच् ।
 पशुओंको मारनेसे जिसका जीवन होना है । व्याध ।
 शिकारी ।
 मृगयाहन, (पु०) मृगो बाहनं यस्य । हरिण जिसकी
 सारी है । बायु । हवा । “ भावन् हरिणपृष्ठस्थ ” इति
 ध्यानम् ।
 मृगवपथ, (न०) मृगान् व्यपते अत्र । जिसमें पशुओंको
 पीडा पहुंचती है । मृगया । शिकार । अहेर ।
 मृगदाय, (पु०) मृगस्य दाय=पोतकः । मृग (हरिण)-
 का बच्चा ।
 मृगशिरस्, (न० पु०) मृगस्य इव शिरः अस्य । जिसका
 शिर हरिणके समान है । अभिनीचे पाँचवाँ तारा ।
 “ मृगशिरा ” “ मृगशीर्षन् ” “ मृगशीर्षं ” एकही अर्थ ।
 मृगधेष्ट, (पु०) मृगेषु धेष्टः । मृगोंमें धेष्ट । सिंह शेर ।
 मृगहन, (पु०) मृगान् हन्ति । मृगोंको मारता है । व्याध
 शिकारी ।
 मृगाशी, (स्त्री०) मृगस्य इव अक्षि (पुत्रं) यस्य ।
 अच् तन्मा० शीष् । जिसका बाल हरिणके समान है ।
 शिकारका । हरिणके समान नेत्रोंवाली स्त्री ।

मेघायिन्, (पु०) मेघा+अस्त्यर्थे विधि । अच्छी अकल-
कला । शुद्धरस्य । तोतापत्नी । मेघावाला (त्रि०) लियां
शौर । " मेघावती " ।

मेघातिथि, (पु०) मनुवंदितान्तर टीका करनेवाला । अरु-
न्धतीका पिता ।

मेघिर, (त्रि०) मेघा+अस्त्यर्थे इच्छ । मेघावाला । अच्छी
बुद्धिवाला ।

मेघिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन मेघवान् । इच्छन् । मतोच्छुं ।
बहुत बुद्धिवाला जन । जिसकी न भूलनेवाली बुद्धि हो ।

मेघ्य, (त्रि०) मेघ्+अत् । पवित्र (पाक) । और शुचि
(साफ) । " मेघाय (यज्ञाय) हितः " जो यज्ञके लिये
उपकारी हो । धर्म (बकरा) । खरिद (खरकी लकड़ी)
और दूध (जौ) (पु०) । केतकी । धरूपुष्पी ।
रोचना (स्त्री०) ।

मेनका, (स्त्री०) मि+नक् । (खर्वेद्याभेद) । एक प्रकारकी
मनकी वेदना (खंजरी) । " मेनैव " इन् । हिमाल-
नदी स्त्री (स्त्री०) ।

मेनकात्मजा, (स्त्री०) १ त० । मेनकाकी लकड़ी । हिमा-
लयकी बच्चा । दुग्धो । पार्वती । " मेनामुता " यही अर्थ ।

मेना, (स्त्री०) मि+न । हिमालयपत्नी । पितरोंकी मनो
कारी बच्चा (लकड़ी) ।

मेघ्नी, (स्त्री०) मे (लम्बीः) इव इण्यते । इण्+घञ् ।
शैव । जो लम्बीकी तरह बगवानी है । (मेघी) वृक्ष ।
दण्डो मन्त्रोने लम्बीके समान साल हाथ हो जातेहैं ।

मेघ, (त्रि०) मे+मि+वा वच् । परिच्छेद्य । मापनेलायक ।
उपेक्षक ।

मेघ, (पु०) मि+इ । सर्वत्रमे उभरका एक परीत
(पदार्थ) । अणुमन्त्रके लक्षणका । फलका बीजविशेष ।
हृत्पत्रमन्त्रमें अणुमन्त्रोंका परी (पाठ) विशेष ।

मेघपूट, (न०) मेघो वृष्टम् । मेघकी पीठ । अर्घ । बहिला ।
प्रकट ।

मेघमाचर्ये, (पु०) चैत्र मनुष्योर्मे म्परात् । एकादशमनु-

मेघद, (त्रि०) मेघदत्तः । मित्र+मि+अन् । मित्राला
है । मित्रद मेघ+अच् । इन् । सग । मेघ ।

मेघा (स्त्री०) मि+मि+अन्+अच् । नीलका वृक्ष ।
अर्घ । अडन । सुनो । मेघ मित्रका ।

मेघावतु (पु०) मेघावः (मन्त्र) अन्तु इव । अर्घीका
मन्त्र एव है । ब्रह्मवत् (दण्ड) ।

मेघ, वेदवाक्य । अ० अ० । उ० । मेघ । मेघो । अर्घीवत् ।

मेघ, (पु०) मि+अच् । (मेघ) एक प्रकारका वस्तु ।
अणुमन्त्रका अणुमन्त्र (मन्त्र) । अर्घीकी अणु
मेघ का अणुमन्त्र एक प्रकारका अणुमन्त्र है । अर्घीकी
अणु

मेघाण्ड, (पु०) मेघस्य अण्ड एव अणु
अंडाही जिसका अण्ड है । इन् (अ०)
नाम होनेपर मेघहीका अंड उठ
(पुराणमें) ।

मेह, (पु०) मिह्+घञ् । प्रसव । देहा ।
विशेष । सुजायाकी बीमारी । " अणु "

मेहघ्नी, (स्त्री०) मेहं हन्ति । इच्छन्ती
(हलकी) । इसकी जड़का पीला रङ्गके रंग
बीमारी दूर हो जाती है यह वैदिकमें ईश्वर

मेहन, (न०) मिघते अनेन । निरभरते
लिंग । " इमेमि स्तुद् " मूत्र (मूत्र) ।
मूत्रोत्सर्ग । मूत्रका छोड़ना । पेशाव कर-

मैत्र, (न०) मित्रो देवता अस्मिन् ।
तस्येदं पुनरणु । गुदाका । विशेषार्थ ।
" मित्रो देवता अस्मिन् " मित्रा बर्षा
अणु " अनुवाचा नष्टम् (न०) अणु नि

मित्रसे पाया । मुहूर्तबन्धी (त्रि०)
अणु । मित्र । और प्राण्य ।

मैत्रायण, (पु०) मित्रय ब्रह्मण । अणु
णयोः अणयं+अणु । मित्र और ब्रह्म दोनों
अणुवाला । पवित्र । इण् । " मैत्राणी "

कल्पभेदो बह उतका पुत्र है (यह पुराणमें)
मैत्री, (स्त्री०) मित्रस्य भाव+अणु शौर ।
दोली " अणु " " मैत्र्यं " इती अर्घी हो

मैत्रेय, मित्रायाः अणयं+इच् । मित्राणी बर्षा
और बुद्धिदेव ।

मैत्रिली, (स्त्री०) मित्रिनाया अणु+अणु ।
उपनी । सीता । " मित्रिनाया उभयवत् "

देशका राजा (पु०) ।

मैत्रुण, (न०) मित्रुणेन (स्त्रीपुण्यो)
स्त्री और पुरुषो पुरुषका । अणुमन्त्र (अणु)
अणु (यज्ञमें गायत्रीका स्त्रीपुण्यवत्)
स्त्री और पुरुषके देवराज गायत्री परी ।

मैत्राक, (पु०) मेनकावाी अणु+अणु । देवता
एव पहाड ।

मैत्रेय, (पु०) मित्राया (देवादेव-स्त्रीपुण्यो)
उ० । मित्रुणेने उभया वा अणुमन्त्रोने
अणय (अणय) ।

मैत्रु, मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मैत्रु, (पु०) मेघावत् अणुमन्त्र अणुमन्त्रोने
अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने अणुमन्त्रोने

मौहर्त, (पु०) मुहूर्त (मन्त्रीपदकं च) तेषां भारीते
 भाग्यम् । मुहूर्तको वारुणिके भाग्यको ज्योतिषा । ज्योति-
 षाको भाग्यभाग । ज्योतिषी । उच । मही भारी है ।

झा, (भाष्याग) वर २ (मन्त्रे) कर्तव्य । शिदभाषी
 धीमता । भ्वा० पर० गृह० मेट् । मन्त्री । भाष्यादि ।

झझ, धीमोजन-जोडना । इच्छा करना । मगाना । मारना ।
 शाक २ बोलना । मंदन आदि लगाना । गु० व० म०
 सेट् । सहायनी से ।

झक्षण, (न०) मघ+स्तुट् । मघोजन (जोडना) ।
 राशीकरण (इच्छा करना) । सेत । और यज्ञका पात्र ।
 (वर्तन) ।

झद्, धीर-भूरा करना-धीमता । भ्वा० आ० गृह० ।
 प्रदत्ते । क्षप्रिष्ट ।

झदिमन्, (पु०) यदोभांघः । यदु+इमनिच् । मरारेणः ।
 यदुत् । कोमलान । मात्रकाना ।

झदिष्ट, (त्रि०) अदिशयेन यदु+इमन्+मरारेणः । बहुत
 कोमल । बहुत मुलायम ।

झियमाण, (त्रि०) य-रिवा० भा+शानच् । मूलचरत् ।
 मराहुभासा । मरनेपर आया ।

झ्लान, (त्रि०) झै+क । मलिन । मैला । म्लानियुक्त ।
 म्लानिवाला । जिवका यीर्य क्षय हो चुका । कुमलाया हुआ ।
 हैरान । विवृण (पकाहुआ) । रूका ।

झ्लानि, (स्त्री०) म्लान+फिन् । कान्तिदाय । मलिन होना ।
 मुरसा जाना ।

झ्लानिः, (स्त्री०) (म्लै+फिन्+नि) कुमलाना । क्षय
 होना । घटना । उदासहोना ।

झ्लावु, (त्रि०) म्लै+भ्रु । कुमलाया हुआ । पतला
 होगया । थक गया ।

झ्लिष्ट, (न०) म्लेच्छ+क । ति० । अविस्पष्ट वाक्य ।
 यह वचन जो साफ नहीं । ऐसे वचनवाला और मुरसा-
 याहुआ (त्रि०) ।

झ्लेच्छ, अपशब्द (बुरा वचन बोलना-साफ न बोलना-जंग-
 लिओंके समान बोलना) वा जु० उभ० पक्षे भ्वा० पर०
 अक० सेट् । म्लेच्छयति-ते । म्लेच्छति ।

झ्लेच्छ, (पु०) म्लेच्छ+घञ् । अपशब्द (बुरा वचन)
 विगरी हुई बोली । "म्लेच्छो ह वा यदपशब्दः" इति
 श्रुतिः । "कर्तेरि अच्" पापरजाति । शीघ्रजाति और बुरा
 काम करनेवाली कौम (पु०) पापरत (गुनाहगार)
 (त्रि०) (किराल, शबर, पुलिदारि) । हिहल (हींग)
 (न०) ।

झ्लेच्छकन्द, (पु०) म्लेच्छप्रियः कन्दः । म्लेच्छोंका
 पियारा कन्द (जड़) । लघुन । लघन । पियाज ।

झ्लेच्छजाति, (स्त्री०) म्लेच्छप्रियः कन्दः । म्लेच्छोंका
 पियारा कन्द । मीठा मीठा कन्द म्लेच्छोंके कन्दके
 झ्लेच्छरेण, (पु०) म्लेच्छरेणो रे । म्लेच्छोंके
 कन्दके कान्ति मन्त्रे कान्ति के कन्दको म्लेच्छ
 गुण

झ्लेच्छमुग, (न०) म्लेच्छमुगं गुणं वा यत्
 म्लेच्छेभ्यो मन्त्रो म्लेच्छैक्येण मुगं है । म्लेच्छोंके
 म्लेच्छैक्येण मुगं । "म्लेच्छमुगं" ।

झ्ले, कान्तिप्रय कान्तिका क्षा मन्त्रेण । इ
 मुगान्, भ्वा० पर० गृह० मनेट् । म्लेच्छोंके
 मीट् । मन्त्री ।

य

य, (पु०) या+ङ । गयु । इग । ग । य
 (जाना) । मेरम (कान्ति कला) । "य सं
 याता (जानेवाला) (त्रि०) ।

यङ्गु, (न०) यं (मयमं) करोति । इच्छे
 मयमं कर्ता है । इच्छि (वाणी) । इच्छे ।
 भाग्य भागिनिष्ठ । दुर्दिनी और मन्त्रके
 यज्ञेहारी एकप्रकारकी बीमारी ।

यद्, पूजा करना । गु० आ० स० सेट् ।
 अययान ।

यद्, (पु०) यदयते (यद्+कर्मणि यत् । यद्
 एक प्रकारका देवता । उक्ता ईश्वर (मलिक)
 इन्द्रका पर ।

यद्कर्म, (पु०) यदप्रियः कर्मः । यद्के
 कर्म । "केमर, कस्तूरी, कपूर, चंद्र की
 समभाग (एक जितना) मिलाहुआ केव
 यद्दत्त, (पु०) यद्दार्ता वासयोयः तत
 निवास करनेलायक वृक्ष । वटवृक्ष । बोडका
 यद्दधूप, (पु०) यद्दे (पूजने) योग्यो धूप
 जो पूजनमें उचित है । सजोरस । पुना । एक
 यद्दराज, (पु०) यद्दार्ता राजा । उच्च सम्राट् ।
 राजा । कुबेर । "यद्देपु राजते" राज-कि
 शोभता है । "यद्दराज" ।

यद्दरात्रि, (त्रि०) यद्दप्रिया रात्रिः । यद्दे
 रात । कार्तिककी पूर्णिमात्रि । कार्तिक (कान्ति)
 पूर्वोंकी रात ।

यद्दवित्त, (पु०) यद्देण वित्तः सदा । यद्दे
 समान है अर्थात् धनका केवल रक्षक (रक्षक)
 परन्तु कमी काममें नहीं लाता ।

यद्दामलक, (न०) यद्दार्ता आमलक इति
 का फल ।

जी, (श्री०) (महास्य पत्नी) यशस्वी श्री । कुबेरकी
 का नाम है । दुर्गाकी सेवामें रहनेवाली कोई श्री ।
 जी, (श्री०) यद्गमणं हन्ति । इन्-टक्-बीप् ।
 जीके रोगको नाश करती है । द्राक्षा । दाख । किरमिरा ।
 जन्, (पु०) यज्+मनिच् । रोगमेद । एक प्रकारकी
 मारी । मिर्गी ।
 ज, देवताकी पूजा करना । दान देना और आदर करना ।
 जा० उभ० अनिद् । यजति-ते । अयाशीद् । अयट् ।
 जि, (पु०) यज्+अनिच् । एक प्रकारका याग
 यज्ञ । "यजतिषु मे यजामहे" इति धुनिः ।
 जन्, (पु०) यज्+स्त्युद् । होता आदिसे मन्त्र पढ़कर
 भूमिमें पी आदि दाखना । यज्ञ । ब्राह्मणके छह कामोंमेंसे
 एक । "देवयजनः" देवताका यज्ञ करनेवाला (त्रि०) ।
 ज्ञान, (पु०) यज्+ज्ञानच् । होता (पुणेहित)
 आदिकी नियोग करनेहार । पूजा करनेवाला । यह
 आदिके करनेवाला ।
 ज्येद, (पु०) यजुषां (ऋत्साममिजानां मन्त्राणां)
 प्रतिपादको वेद । ऋक् और सामसे मिल मन्त्रोंकी
 बतानेहार वेद । यह छुद्र और कृष्णके मेदसे दो
 प्रकारका है ।
 जुस्, (न०) यज्+उति । ऋक् और सामसे मिल पद-
 विभागसे रहित मन्त्रविशेष । यजुर्वेद ।
 ज, (पु०) यज्+भावे न । यह याग । किसी प्रकारकी
 मेदा ।
 जपनु, (पु०) यहका पन्ना (जिसकी यज्ञमें बलि दी
 जाती है) । अथ । घोडा । टाग । बकरा ।
 जपुद्वय, (पु०) यज्ञरूपः पुरयः । यहस्वरूप पुरय ।
 विष्णु ।
 जभूपण, (पु०) यह भूपयति । भूप्+भिच्+स्त्यु ।
 येतदर्थे । चित्रीकृत्वा ।
 जयोग्य, (पु०) यज्ञे योग्यः । उमुम्बरका वृक्ष (इसकी
 लकड़ियें यज्ञमें काम आती हैं) । यहके लायक ।
 जयश्री, (श्री०) यज्ञार्थो बही । यहके लिये बेल ।
 शोमलता ।
 जयराह, (पु०) यहको बराह । यहसम्ब दृष्टर ।
 आदिराह । भगवान्का अवतारविशेष ।
 जयटाट, (पु०) ६ त० । यहस्थान । यहकी जगह ।
 जयत्न, (न०) यज्ञार्थे योग्यं संहरणं वा सुखं । यहके
 लायक । वा यहके लिये संस्कार किया हुआ । उपवीत ।
 यज्ञोपवीत । जनेऊ ।
 जयध्यानु, (पु०) यहस्य ध्यानुः । यहका धंभा ।
 जयज्ञ, (पु०) यहस्य अत्र (साधनत्वेन) अलि अथ
 अथ । उमुम्बर (गूलर) । आदिर (शेरका दारतन), शोमबेल
 (इसकी लकड़ी और पत्तोंसे यह सम्पादन बतें हैं) ।

यज्ञान्त, (पु०) ६ त० । अवश्य । यहकी समामिमें
 ज्ञान (न्दाना) यहका शेष ।
 यज्ञिक, (पु०) यह (यज्ञार्थं) साधनत्वेन अलि अथ
 (टक्) । पलाश । पलाशका दारतन (इसकी लकड़ियें
 यज्ञमें काम आती हैं) ।
 यज्ञिय, (त्रि०) यज्ञाय क्तितः । य । यहके लिये अन्वा ।
 यहके कामके लायक । आपरयुग (पु०) ।
 यज्ञियप्रदेवा, (पु०) कर्ष० । "यज्ञाय काम करनेलायक
 देवा । जिस देशमें खाभाके कृष्णसार (विठ्ठल काज)
 हरिण पियरता है " वह देश ।
 यज्ञेभ्यद, (पु०) यहस्य प्रवर्तयिता ईश्वरः । यहके कर्त्त-
 नेहार विष्णु ।
 यज्ञोपवीत, (न०) यज्ञेन संहरणं उपवीतम् । यज्ञे
 संस्कार कियागया उपवीत । यज्ञयुग । उपनयनसंस्कार-
 रते पवित्र किया हुआ विहरा कंचे किया हुआ कंचे कंचेसे
 दहिनी बुझिकी और छटकरहा एक प्रकारका एटा ।
 जनेऊ ।
 यज्यन्, (पु०) यज्+भूते कतिप् । विधिसे यह करानेवाला ।
 यज्, यज्ञ-कोशिया करना । भ्या० आ० अच० वेद् । निष्ठायां
 अनिद् । यतते । अयतिष्ठ ।
 यत, (त्रि०) यज्+क्थ । नितोष किया गया । रोका गया ।
 तावमें रखा हुआ । आहामें रक्ता गया । बस धिखा
 हुआ ।
 यतर, (अन्व०) यद्+ततिल् । यत्पार । शिले ।
 बयोकि ।
 यतम, (त्रि०) एषां मध्ये यः । यद्+इत्तमच् । इन्मेंसे
 एक ।
 यतमानस, (त्रि०) यतं मानसं येन । यतको बत कर-
 नेवाला ।
 यतप्रत, (त्रि०) यतं वनं येन । नियमका पालन करनेवाला
 मन पालनेवाला । इच्छारापर रहनेवाला ।
 यतट, (त्रि०) अतयोर्मध्ये यः । यतट् । इन दोनोंमेंसे
 एक ।
 यतारमन्, (त्रि०) यतः आत्मा यस्य । अन्वेधे बत
 करनेवाला । इन्द्रियोंको रोहनेवाला ।
 यति, (पु०) यजते योत्सवः । यज्+इत् । शील (अन्वय-
 एणसे एटना)के लिये दत्त कर्मा है । यतिव्रतक ।
 संन्यासी । "इन्द्रदेवे जिदा अत्र, यज्+चित्" कहा जीव
 एक जाती है । इन्द्रोपासनेसे जीवके विद्यायका स्वात ।
 कोशमेंसे लयदका विष्णु (इन्द्र) (श्री०) । (य-
 जनेका टटिण) " यद्+इति " यज्+इत्तमच् । त्रिण् ।
 त्रिपदा (त्रि०) ।

यतिन्, (पु०) यमनं-यतं । यम्+क्त । यतं अनेन । इति ।
 जिघने इन्द्रियोंको दमन किया है । संन्यासी । परिमा-
 जक । विषया (वेवा-रंसी) (स्त्री०) ।
 यत्न, (पु०) यत्+नङ् । आयात् । कोशिश । उद्योग ।
 हिम्मत । वैशेषिकमें एक प्रकारका गुण (जो प्रवृत्ति,
 निवृत्ति और जीवनयोनिमेदसे तीन प्रकारका है) । वह
 " आत्माद्य गुण है " ऐसा नैयायिक कहते हैं ।
 " विज्ञातका गुण है " सांख्य और वेदान्तिओंका मत है ।
 यत्न, (अव्य०) यद्+प्रत् । यस्मिन् । जिसमें । जहां ।
 यत्न, संश्लेषन-निच्छेदना । वा० पु० उभ० पक्षे भ्वा० पर०
 घञ्-सेट् । इतिट् । यत्नप्रति-त्ते । यत्नप्रति ।
 यथा, (अव्य०) यद्+प्रकारे यात् । येन प्रकारेण । जिस
 तरह । जिस प्रकारसे । जैसे ।
 यथाकाम, (अव्य०) कामं अनतिक्रम्य । अव्ययी० ।
 इच्छके अनुगार । साच्छन्त्य । यथेष्टता । मरजीके मुआ-
 किङ्क । जैसा चाहे ।
 यथाक्रम, (अव्य०) क्रमस आनुकूप्यं तस्य अनतिक्रमो
 क । अव्ययी० । क्रमानुगार । मिललिलेवार ।
 यथाजात, (त्रि०) जातं (समयनिरिषेयं) अनतिक्रम्य
 रूपकरणं तद् भाव्य भावि इति क्वप् । जैसा पैदा हुआ
 वैसी ही रहा । मूलं और नीच । यथाकृत् ।
 यथातथा, (अव्य०) तथा अनतिक्रम्य । अनतिवृत्ता
 अव्ययी० । यथायं । टीक ३ । त्रिग बहुधा जैसा रूप होना
 उचित है वैसाही होना । " यथावयम् " इसी अर्थमें ।
 यथावयं, (अव्य०) अर्थ अनतिक्रम्य । अव्ययी० । अर्थके
 अनुगार । टीक ३ । सरता । सचाई । अर्थका न बदलना ।
 यथावयम् । " क्वप् " यत् । यत् (त्रि०) ।
 यथावयं, (अव्य०) अर्थ (योग्यता) अनतिक्रम्य । अव्ययी० ।
 यथावयम् । जैसे काश्चित्+अन् । सत्यमृतपदार्थ (त्रि०) ।
 यथावयं, (पु०) यथावयं (यथायोग्यं) वयोवति ।
 वयो+अन् । जो टीक ३ वयं न कर्ता है । अर । वृत् ।
 यथावयं ।
 यथावयं, (अव्य०) यत्+अनुकूप्यम् । अनुकूप्ये-
 ष्ययी० । काश्चित् अनुगार । तदर्थके मुकारिक ।
 यथावयम्, (अव्य०) यत्+अनुकूप्यम् । अव्ययी० ।
 यथावयम् । काश्चित् अनुगार ।
 यथावयं, (अव्य०) यथा (येन कृतेन) स्वर्तुं योग्यं
 यथावयम् । जैसे यथावयं काश्चित् देना रहा । योग्यता
 अव्ययी० । यथावयं । यथावयं । अन् । यत् । यत्
 (त्रि०) ।
 यथावयं, (अव्य०) इति+अनुकूप्यम् । अव्ययी० ।
 यथावयं व इति । जैसे काश्चित् । यथावयम् ।
 " क्वप् " यथावयं । इच्छके अनुगार । " यथावयं "
 वृत् । अर्थ ।

यथोचित, (अव्य०) उचितस्य अनतिक्रमः ।
 न साधना । औचित्य । यथायोग्य । वा
 (त्रि०) ।
 यद्, (त्रि०) सर्वनाम जो । यस्मात् (त्रि०) ।
 यदा, (अव्य०) यद्+दाच् । यस्मिन् कृते ।
 जब ।
 यदि, (अव्य०) यद्+निच्+इत्-लितो ।
 जो । अगर ।
 यदु, (पु०) ययातिराजाका ब्रह्म पुत्र (जि-
 धीकृष्णजीका अवतार हुआ) । " तस्य रूपं
 बहुषु तस्य लृह् । यदुके वंशमे हुआ रो
 (व० व०) ।
 यदुनाथ, (पु०) यदुनाथः । यदुनाथ
 करनेसे) । धीकृष्णदेव । " यदुपति " को
 यदृच्छा, (स्त्री०) यत्+दृच्छ+अच्-याच् ।
 सारता । अपनी इच्छासे अचानक । तापीन
 यदृच्छासंयाद, (पु०) यदृच्छा संयात् ।
 (अचानक) अचानक (पुन) ।
 यन्तु, (पु०) यम्+न्तुच् । तारापि । लगी
 और हाथीको फालनेवाला । संयमयुक्त (य-
 रानेवाला (त्रि०) ।
 यत्न, (न०) यत्नि+अच् । संयमन (संयम)
 आगमन । उद्योगियकको देखनेका माधन ।
 पदार्थ कला (कल) । एक प्रकारका यत्न
 यत्नगृह, (न०) १ त० । कल्पित । तैत्तिरि-
 पर । सोयुध ।
 यत्नपण, (न०) यत्नि+पण् । नियमन । गोप-
 कचाना और बन्धन (बाधना) । " पुन "
 (स्त्री०) यत् ।
 यत्नित, (त्रि०) यन्+क्त । धिक् । रोप-
 किया हुआ । बाध किया गया । तानना
 नाया लगाया गया ।
 यम्, मिथुन-भोगकरना । भ्वा० पर० घञ्-से
 अवागीट् ।
 यम्, उदारति । इतना । ज्ञा० वा० यत्
 यच्छति । अर्थगीट् ।
 यम्, (पु०) यम्+यच् । अर्थिण, कर्ता
 कर्तव्य (योनि न इतना) अर्थ । जैसे
 संयमन (संयम) " यथावयं " अन् । यत्
 और युरे वृत्ते अनुगार यत्न यथावयं
 यथावयं यत्नि त्रिगोने एक प्रकारका यत्न
 जो यत् (यत्) । यत् न कर्ता यत्न
 (यत्) (त्रि०) । (अर्थिणी)
 यत्नि । यत्नि संयम और यत्न (पु०)

लोडि, (पु० ली०) लंकारे पूर्वकी ओर देवताओंके प्राण कीगई पुंरि.

ड, (त्रि० डि० व०) दमः (एकदा, एकत्र गर्भे सह-रः) वन् जायते । जन्+ङ । एकी वसवमें एक-गर्भमें एक हुए दो) (जंके) .

डुम, (पु०) यमस्य डुमः । यमका वृत्त । यमके दवां-के पास हात्मकी (सिबल) का दरह्य.

द्वितीया, (ली०) ६ त० । कार्तिक (कत्तक) के प्रपञ्चकी द्वितीया (इज) .

दुमि, (पु०) मुनिविशेष । एक प्रकारका मुनि.

घानी, (ली०) यमः दीयते क्षत्याम् । यमका निदान-स्थान । यमकी नगरी.

द, (न०) दम्+दुदृ । बंधन । बांधना और दटना । " यमयति ह्यु " यमराज (पु०) .

राज, (पु०) ६ त० । (बौद्ध) यमोंका राजा । यमोंकी नियमपर चलनेवाला राजा । टब् गमा० । प्रेनोका राजा । धर्मराज । " यमोंमें शोभता है " राज+विष.

दल, (न०) दमं (योगं) क्षाति । श+ङ । युग्म । जोडा । इन्द्रावनके पास एक वृत्त । " यमकाउत्तन " .

दवाहन, (पु०) यमं वाहयति (स्थानात् स्थानान्तरं) भयति । वह+ग्राथे विष्+भ्यु । यमको एक जगहसे दूसरी जगहपर ले जाना है । मक्षिष । भंगा । यमराजकी सहायी.

दानी, (ली०) मच्छति अग्निमान्दं भयना । दम्+करणे ह्युद-भृ० आत्मात् । जो आंगिरी मन्दगाको हर जाता है । अत्रमोदा । यमानिका । अत्रयेन । जयेन.

दुना, (ली०) दम्+उत्तनृ । काठिग्री मटी । जयना मटी । यमकी बहिन । पूर्वकी बन्धा । और दुगां.

दाति, (पु०) दल्य (कायोः दृ) दाति (सर्वत्र) गति . अल्पः । जिगडी हवाके समान गति है । मनुष्यका पुत्र । एक राजा । (हमने दुबकी बन्धा देवदानीको विचरी थी, सबसे छोटे पुत्र वृको पुत्रका देकर एक-दुसर करीब जकाकीके भोग भोगे लौगी तुम यदि हुआ, पीछे विचारी निम्नपर वृको राज देवदानी लपनी हुआ) .

यु, (पु०) दाम+दु-शिवं च । अश्वमेधवराका योग । यमका योग.

य, (पु०) दु+अन् । बी । " वरुणमेव लक्ष्मीके दमे करते हैं । और वसिष्ठके दम कोदरक हुए करते हैं."

यवय, (न०) दन्तं अयं क्षेत्रम् । वर पुत्रक । बी कोदेकरक क्षेत्र.

ययन, (पु०) यु+भ्यु । एकदेश । उय देशके लोग । व० व० । वेग । जोर । बहुत जल्दी चलनेवाला घोडा । गोधूम । आटा । तुल्यक जडि । तुल्यक लोग । वेगवन् (त्रि०) .

ययनप्रिय, (न०) ६ त० । ययनोंका प्रियाग । मरिच । मिरच.

ययनामी, (ली०) ययनामी क्षितिः । टीर-अनुवृत्त । ययनोंकी क्षिति । तुल्यकोका हाथका प्रियाग.

ययनारि, (पु०) ययनस्य अरिः । ययनका दुश्मन । धीरुष्ण.

ययनिका, (ली०) युवग्नि अर्थात् । यु+युद-दीर्-कन् । अक्षी इ । इगमें मिलते हैं । कतन । अरुनिधः

ययनी, (ली०) यु+युद+दीर् । ययनी नाम अंशु । ययनकी श्री.

ययमन्त्र, (न०) ययन्मणि अयं दम् । जंके मन्त्रका विषया मन्त्र है । एक प्रकारका यमका मन्त्र.

ययस, (न०) यु+असन् । पयग । तुग.

ययाम्, (ली०) युयने (मिश्रते) यु+अग् । एतन्म पानीके पकाहुआ एक प्रकारका इष्यदम् । मटी । गिपरी.

ययिष्ठ, (त्रि०) अतिउदेन युवः । युवद+इष्टत् । दन्-देश । बडा अरुन । बनिष्ठ आता । छोटा अरु

यय्य, (न०) ययनां मयनं क्षेत्रं+इष्ट । बी कोदेकरक क्षेत्र । "युगः यय्यो अय" । बडी बरु बी पय मिलते हैं । बरिमास (ययमासायय्यो मटीका) (पु०)

ययापट्ट, (पु०) यया इत्ययं पट्ट । दन्को इत्ययं बरिमासा काका । इका । एक प्रकारका यय

ययादोष, (त्रि०) यया एव दोष अल्पः इत्ययं दृष्ट ही बधी है । एतः ययसाः "दोषोऽयं" इति अर्थमें है.

ययास, (न०) अयु+अयन्-यन्ते युवः । एतन् अयंके उदयक हुआ "ययास" इत इतरे मन्त्रका बरुवे । देक-भायी । मरुटी.

ययास्या, (ली०) ययने इत्यं यया+इष्ट । बीकोटी । क्षिति अयं कोषक । बरुका ययस (त्रि०) .

ययासकम्, (त्रि०) ययन्+अयन्-कम् "कं" से "कं" हो- है । बरुका । "ययि" "ययन्" इति अर्थमें । द्वितीया

ययौह, (पु०) ययने इत्यं । दम्+इष्ट । बरु देक है । बरु । बरु । बरुके देवेकरक (त्रि०) । बरु । अरुलेककी ली (ली०) .

ययौह, (त्रि०) यया इत्यं । ययने इत्यं । बरुको उदयेकरक । अरुलेककी (ली०) .

सुग, (न०) युगं अहंति+यत् । जिसके साथ जुला लगाना चाहिये । वहन । सवारी । यान । "जूलेको उठानेवाला" घोडाआदि ।

सुच्छ, प्रमाद (भूलना) । बेपरवाह होना । भ्वा० पर० सक० सेद । सुच्छति । अयुच्छीत् ।

सुज, संगम-मिलना-जुटना । पु० उभ० पक्षे भ्वा० प० सक० सेद । योजयति-ते । योजति ।

सुज, युति (जुटना) रुधा० उभ० सक० अनिद् । युनक्तिः युद्धे । वयुद्धे । प्रयुद्धे । नियुनक्ति । अयुजत्-अयौक्षीत्-अयुक् ।

सुज, योयु-जुटना और समाधि लगाना । दिवा० अक० अनिद् । युज्यते । अयुक् ।

सुज, (पु०) दि० युज्+क्तिप् । समाधिवाला । युक्-युजौ । रु० युज्+क्तिप् । संयोगवाला । मिलाहुआ (त्रि०) युद्-युजान्, (पु०) युज्+शानच् । योगविशेषवाला । भावनाके साथ सम्पूर्ण पदार्थोंको जाचेहारा । "चिन्तासहकृतोऽपरः" योगविधासे सब कुछ जाचेहारा योगी । रथसारथि । गाडीवान । और विप्र (ब्राह्मण) ।

युत्, (शीति) चमकना । भ्वा० आ० अक० सेद । योतते । अयोतिष्ट ।

युत्, (त्रि०) यु+क् । संयुक्त । मिलाहुआ और न मिलाहुआ ।

युत्फ, (पु०) यु+फ । युत्+फ वा । ततः स्त्रार्थे कन् । संराय । शत्रु । युग । जोडा । छीके कपडेका पल्ला (किनारा) । पोचके भागेका भाग । यौतुकथन । दहेज (दाज) । मैत्रीकरण । दोस्ती लगाना । संयुक्त (मिलाहुआ) (त्रि०) ।

युत्वेध, (पु०) विवाहआदिमें स्थाग देनेलायक चंद्रमाके साथ पापग्रहोंका योग (जुटना) ।

युद्ध, (न०) युद्+क् । शत्रुआदि बलानेका व्यापार (काम) । लड़ाई । संग्राम ।

युद्ध, युद्ध-रुजाई करना । दिवा० आ० गक० अनिद् । युध्यते । अयुद्ध ।

युद्ध-धा, (स्त्री०) युध्+क्तिप् । वा टाप् । युद्ध । जंग । लड़ाई ।

युधान, (पु०) यु+धाजन् । रुद्धनेवाला । शत्रिय ।

युधिष्ठिर, (पु०) युधि (युद्धे) स्थिरः "गमियुधिभ्यां स्थिरः" इति वत्वम् । लड़ाईमें स्थिर (कायम-यद्वा) । पाण्डवोंमें भेद ।

युधिष्ठय, (मिलना) अग्निष्ठय (न मिलाना) । अ० प० न० सेद । यैति । अयुधीत् ।

युधुधान, (पु०) युध्+धाजन् । रुद्ध । शत्रुविनाशी ।

युचखलति, (स्त्री०) युचतिः एव खलति । ता ही खिचकी गंजी है । एक प्रकारके रोगरोगीने "युचरती" इसी अर्थमें है ।

युचति-ती, (स्त्री०) । युचन्+ति दीर्घ वा । स्त्री । जवान औरत । युचन्+टीप् । "युने" ही है ।

युचन्, (त्रि०) यु+कनिद् । थैठ । बहुत बलाबला । जवान । सोलह बरिसतक "बठ" त्तर तरुण अर्थात् "जवान" कहा जाता है ।

युचनाश्व, (पु०) स्युवंतानं हुआ गावटका एक राजा ।

युचराज, (पु०) युवं राजा+इत् सन् । राजा । राजाके लायक कुछ काम करनेवाला ।

(राजकुमार) ।

युष्, भजन (सेवा करना) पर० सक० सेद । अयोपीत् ।

युष्मत्, (त्रि०) युष्+मदिह् । भवताम्के सर्वनाम है । आप । तुम्हारा । यह तीनों ही जैसा है ।

यूक्, (पु० स्त्री०) यू+क्तिप्-कन् । मकुन ।

(स्त्री०) टाप् ।

यूति, (स्त्री०) यु+क्तिन् । नि० । शीर्षः । निमिलाप । मिलाना ।

यूथ, (न०) यु+थक् । पु० । शीर्षः । सखीका एकजातका समूह । समूह ।

यूथनाथ, (पु०) १ त० । बल्यजयपतन । शीर्षः । शीर्षका सदांर । "यूथप" आदि इसी अर्थमें है ।

यूप, (न०) यु+थक् । पु० । शीर्षः । गन्ने के लकड़ी । संस्कार कीगई एक प्रकारकी लकड़ी का संघा । और यह भी समाहित विह (मिलानेके लिये एक संघ) जयसाम्भ । औषध संघ ।

(पु०) ।

यूप, वध (मारना) भ्वा० पर० सक० सेद । अयूपात् ।

योषत्, (न०) युज्यते अनेन । युष्+इत् । युष्पाम । जूलेके साथ हल बांधनेकी लकड़ी ।

योग, (पु०) युज्+भावादीं षम् । संयोग । संघ ।

ना । उपाय । बर्माधिपत्य । प्रियवर्तिका । ध्यान । "योगधित्तातिविरोधः" इति वत्वम् ।

सार साध विषयोंमें मनकी इतिशक्तिसे मिलाने और परस्परका एक होना । युष्पाम । युष्पाम आदि । अयुष्पामयिष्पाम । युष्पाम । शययोग ।

रक्ष, (न०) रक्षाय दुष्टं पित्तं यस्मात् । जिस्ते लोहके
ये पित्त विपद्य जाता है । एक प्रकारका रोग । “रक्षपि-
त् भवेत् वासः” इति वचनम् ।

रक्षण, (न०) १ त० । लोह (लून) का सुदाना ।
धरणावण । लोह वदाना (निवर्णवदाना) ।

रक्षि, (स्त्री०) रक्षयणां यतिः अस्याः । जिगदी लना
बेल) लाल रंगकी हो । मंजिष्टा । मरीठ । “स्वार्थे
नू” यही वार्ध ।

रक्ष, (पु०) रक्षनां वर्गः (समुदायः) । लाल रंगवा-
ला समूह । दाकिम (अनार) । मिष्टुक (केरू) ।
गदा (लाख) , बंधूक, हरिदा (हररी), जवा, पुसुम्भे-
ह पूल, मजिष्टा (मरीठ), और अलकवरूपसमूह ।

रक्षि, (स्त्री०) १ त० । लोहकी वर्ण । देवते किया-
या एक प्रकारका उपद्रव । स्नकी वारिष ।

सरौद्र, (न०) कर्म० । लाल कमल । रक्षपत्र ।

रक्षपत्र, (पु०) कर्म० । लालमरिचों । राजिका । रसी ।

रक्षार, (न०) रक्षा सारः अस्य । लाल सारवाला ।
रक्षचन्दन । लाल चंदन । अम्लवेतस (पु०) अम्लवेत ।

रक्षामन्धिक, (न०) कर्म० । रक्षवर्णबद्धार । लाल
रंगवाला कमल ।

रक्ष, (पु०) रक्षे अक्षिणी यस्य+पच् समा० । जिगदी
लाल आंखें हो । पारावत । मीठी आवाज निकालनेवाला
कव्तर । महिष (भैरा) । चकोर । और सारज । लाल
आंखवाला । कूर (बेरहम) । और जन (त्रि०) दीप् ।
दाह, (न०) रक्षं अक्षं यस्य-यस्मात् । पुत्रुम । केशर ।
मंगलप्रद (पु०) प्रवाल (गुंगा) (पु० न०) । मरीठ
(स्त्री०) ।

रक्षि, (स्त्री०) रक्ष+क्तिन् । प्रमत्त होना । प्यार होना ।
अनुप्राण होना । मनोहरता । आसक्ति । भक्ति । मुदरवत ।
रक्षिका, (स्त्री०) रक्षेव+कन् वत इत्वं । गुप्ता । रसी ।
एकमात्र ।

रक्ष, पालन (रक्षा करना-बचाना) । भ्या० राक्ष० प० छेद० ।
रक्षति । अरक्षीत् ।

रक्षस्त्र, (न०) रक्षणां (रक्षमानां) सभा । रक्षगोंका
समूह ।

रक्षक, (त्रि०) रक्ष+क्युल् । रक्षकर्ता । रक्षाकरनेवाला ।

रक्षस्, (न०) रक्षयते इधिः अस्मात् । रक्ष+अपदानेऽयुन् ।
जिस्ते महका इधिः (पी आदि) बचाया जाता है । रक्षण ।

रक्षा, (स्त्री०) रक्ष+भ-टाप् । रक्षण । बचाना । अनु-
टाप् । जनु (लाख) । और भस्य (गा-नाक) (स्त्री०)
रक्ष+अन् । रक्षक । बचानेवाला (त्रि०) ।

रक्षाकण्डः-वरण्डकं, (पु० १ न०) रक्षायाः कण्डक-कं
रक्षाया कण्डक (गंदा-तरीण) । एक आदूकी टोकी ।

रक्षापत्र, (पु०) रक्षार्थं पत्रं अस्य । जिगका पत्र रक्षाके
लिये हो । भोजपत्रका इक्ष । भूर्जपत्रका ।

रक्षित, (स्त्री०) रक्ष+क्त । रक्षा कियाहुआ । हिफाजत
कियागया ।

रक्षित्, (त्रि०) रक्ष+न्तुच् । रक्षा करनेवाला । बचानेवाला ।

रक्षिवर्ग, (पु०) रक्षिणां वर्गः । सैन्यादिरक्षक । सेना
आदिका रखवार । रखवारोंका समूह । बहुतेके लिपाही ।
बहुत पहिरवाले ।

रक्षोघ्न, (न०) रक्षो इन्ति । हन्+ठक् । रक्षघ्नो मारता
है । काष्ठिक । बाजी और हींग । इनका गंध सूपनेसे
राक्षस भाग जाते हैं । भलातकहूँ । और पिष्टो रक्षिओं
(श्वेतमपंर) (पु०) । ऋग्वेद आदिमें प्रसिद्ध “बृणुष्य-
पाजः” इत्यादि सूक्त (गीत) विशेषः (न०) बचा (स्त्री०) ।
रक्षगोंको घात करनेवाला कोई इव्य (पदार्थ) (त्रि०) ।

रक्षोहन्, (पु०) रक्षो इन्ति । हन्+क्तिप् । गुग्गु (ह्य-
का गंध सूपनेसे राक्षस भाग जाते हैं) और पिष्टो (गोरी)
रक्षिओं । राक्षसको मारनेवाला (त्रि०) । “रक्षोहा बल-
गहन” श्रुतिः ।

रक्ष्, रक्षण (सकृन्वा) । भ्या० प० थ० छेद । रक्षति ।
अरक्षीत्-अराक्षीत् ।

रक्ष्, गति (जाना) । भ्या० आ० छेद । इदित् । रक्षति ।
अरक्षीत् ।

रक्ष्, गति (जाना) । भ्या० आ० राक्ष० वेद । इदित् ।
रक्षते । अरक्षित् ।

रक्षु, (पु०) लप्-उ । “ल” को “र” होता है । सूर्यके
वर्गमें दिनीप राजाका पुत्र । “रपो अपत्यं” अण् (बहुव-
चनमें प्रत्ययका लोप होना है) । रक्षुके वर्गमें अज आदि
क्षत्रिय । ब० ब० । “तान् शपिष्ठ्य वृत्तो प्रन्य+अन्”
उनके पित्रवर्गमें प्रन्य बनायागया । आर्यायिका (अण्का
लोप होता है) । कालिदाससे रचाहुआ उपरोक्त वर्गका महा-
काव्यविशेष (पु०)

रक्षुनन्दन, (पु०) रक्षुन् नन्दयति । नन्द+निच्+स्तु । रक्षु-
शोको प्रगल्भ वर्ता है । दत्तरथका बड़ा पुत्र धीरामचन्द्र ।

रक्षुनाथ, (पु०) रक्षुणां नायः (रक्षवत्त्व-धेत्वात् वा) ।
रक्षुओंका स्वामी (मलिक)-रक्षा करनेसे वा उनमें बहुत
अप्या होनेसे । धीरामचन्द्र । “रक्षुपतिः” ।

रक्षुवर, (पु०) रक्षुवः वरः (धेत्) । रक्षुओंमें बहुत
अप्या । धीरामचन्द्र ।

रक्षुवद, (पु०) रक्षुव उद्वहः (रक्षारिभारधरक) । उद्व-
वह+अच् । रक्षुओंमें रक्षा आदि बोजको उठानेवाला । दत्त-
रथका बड़ा पुत्र (बेटा) । धीरामचन्द्र महाराज ।

रक्षु, (त्रि०) रक्षि+अच् । रक्षण (सूत्र) । और नद (सूत्र) ।

रक्षु, (पु०) रक्षि+उ । गुणविशेष । एक प्रकारका इक्ष

योद्ध, (पु०) युध्+भञ् । युद्धकर्ता । लड़ाई करनेवाला । महादुर.

योध, (पु०) युध्+भञ् । युद्धकारक । जंग करनेवाला । "भावे पम्" । युद्ध लड़ाई । जंग.

योधन, (न०) युध्+भावे लुट् । युद्ध । लड़ाई । जंग । "हरणे लुट्" अन्ध आदि आयुध (औजार) । "कर्तारि लुट्" युद्धकर्ता । लड़ाई करनेवाला । जंगी (पु०).

योधसंराध, (पु०) योधाय (युद्धाय) संराध (आह्वानं) । योधाओंका युद्धके लिये आपसमें बुलावा.

योनि, (पु० ली०) यु+नि । मनिआरिके उपजनेकी जगह । आकर (रान-जान) । कारण (सबब) । जड । त्रि-ओहा अन्धकारण (राग) विद् (विज्ञान) । पुन्य । पूर्वजन्तुकी नाम नशत्र (तारा) । वा बीष्.

योनिज, (न०) योनिस्त्वात् जायते । जन्+उ । योनि-की जगहमें निकलना है । एक प्रकारका शरीर । मनुष्य इत्यादि.

योनिमुद्रा, (स्त्री०) योनिस्त्वात् मुद्रा । तन्त्रमें देवताकी चूर्णका अंग योनिमें वाक्यमें अंगुलिओंको दिखाना.

योय, (स्त्री०) यु+यञ्+ङ् । यी । नारी । औरत.

योयिन्, (स्त्री०) यु+यञ् । नारी । औरत । "योयिता" इति अर्थ.

योयिन्, (वि०) यु+यञ्+ङ्ङक । युयिनिज । दारी-कडे लक्ष । और योय (औरत) । "युष्ठां अधिष्ठतः इति" इत्येतिहा । इती मर्मा ये इत्ये मतीर.

योयिन्, (वि०) योयन् (प्रविशन्वायाम्प्रवृत्तम्) इति लक्ष । यन्तु और प्रवृत्ते अर्थप्रवृत्तयमे मान्यम् इति । यन्तु और प्रवृत्तमे अर्थ प्रवृत्तयमे अर्थही वक्तव्यमेव इति । अर्थ "यन्तु" इति लक्ष "यन्तुनेकते." अर्थ वक्तव्यमेव है । "योयि योयन् इति" योयके लक्षणक.

योयन्, (न०) यु+यञ् (विप्रवृत्तः) अधिष्ठात् । विप्रवृत्ते अन्ध विप्रवृत्तय अन्ध । यन्तुका अन्ध.

योयन्, (न०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध विप्रवृत्तय अन्ध.

योयन्, (पु०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार.

योयन्, (पु०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार.

योयन्, (पु०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार.

योयन्, (पु०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार.

योयन्, (पु०) योय (योयन्) अन्ध अन्धकार । योय-का अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार अन्ध अन्धकार.

योयनकण्टक, (पु० न०) योयन-जवानीका मानों काटेकी नाई निगव फोडा.

योयनदप, (पु०) योयनस दपः । योयन-कर्म । तन्त्र ।

योयनदशा, (स्त्री०) कर्म । तन्त्र । योयनलक्षण, (न०) योयन-कर्म । योयन-कर्म । और सुन्दरता (सुन्दरता) । योयनस्थ, (वि०) योयने स्थिति । युद्ध-होगया । विवाद करदेनेके लक्षण.

योयनाभ्य, (पु०) योयनाभ्य । युद्ध-कर्म । योयराज्य, (न०) योयराज्ये अभिषिक्त । अभिषेक रियायत । योयके अर्थही मिलना । युद्धराजका काम.

योय्याक, (वि०) युष्ठां इति । योय्याकीन, (पु०) युष्ठां इति । युष्ठां इति ।

र, (पु०) र+उ । वरि । अर्थ । उच । ते । देर ही अर्थ.

रहर, (न०) ररि+अणुन् । वेग । तेरे । जायगीत.

रका, (न०) ररि (करी) क । ररि । तेरे । लामा । विदुह । शरीर ही लामा । योयने अर्थ नारी यातु (पु०) "नारी क" एव । और लालय (पु०) । लालयका (वि०) क" अन्धकार । बीडारक (अर्थ ही लालयके) (वि०) । गुणा (रती) (स्त्री०).

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । विदुह । गुणा.

रकाकम्प, (न०) रकी । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (न०) रकी । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका । रकाकम्प, (पु०) रकाकम्प । अर्थ । लालयका.

रत्न, (स्त्री०) (रत्न पुरा) सुन्दरा जम्बा । सुन्दरा रत्न ।
 रत्न, (पु०) रत्नः (शब्दः) ताप्रघरः । द्विषं ।
 ॥ ऐश्वर्यां वत् । उद्वेग । धक्काहट । अनिश्चय ।
 रत्न
 रत्नकूट, (न०) रत्नं एव रत्नकूटम् । सुमुत्सुक । बडा रत्नी जंग
 रत्न, (न०) रत्नम् अत्रं । रत्न (सुन्द) का अत्र (तापन) ।
 ईश्वरी सुन्दरा शब्द । धनुष्यकाय । तरकार ।
 रत्न, (न०) रत्नम् अजिरम् । सुन्दरा अत्रन (ईश्वरी) । सुन्दरी-
 पेन, (त्रि०) रत्नम् अपेत । सुन्दरी काहिर हुआ भाग्यहुआ)
 राधामिन्, (पु०) रत्नः (शिष्यः) (प्रजाहीनत्वात्)
 राधामः अन्ति अन्त्य । सन्तान न होनेसे जिनका आधम
 नेष्कल (वेपयवदा) है । “बालीस का अठनालीस बरषकी
 इमरसे जो क्षीमे सिमुद्ध गया हो” । क्षीमे (४० वा ४६
 रंषकी उमरमें) सिमुद्धा हुआ पुत्र ।
 रत्न, (न०) रत्न+भवे क । रत्न । कौश करना ।
 सोहबत । श्री और पुरुषका संगम (आपगमें मेल-जुटना)
 भयुन । भोग । और । गुण (गौड) । “करीर क”
 अनुपक (प्रीतिमें कमगवा-आसक) (त्रि०)
 रत्न, (स्त्री०) रत्न+किन् । रत्न । प्रीति । सुहृद्वन ।
 गुण । गौड । रत्न । भोग विराम करना । कामदेवकी
 स्त्री ।
 रत्नपति, (पु०) १ त० । रत्निका मालिक । बंदर ।
 कामदेव । “रत्निकान्त” “रत्नप्रिय” “रत्नरमण” एकही
 अर्थ हैं ।
 रत्नपन्थ, (पु०) रत्नस्य पन्थः । रत्न (स्त्री पुरुषकी बीजा)
 का बंध (रचना) । भोगके समय स्त्री पुरुषका परस्पर-
 मिलाप ।
 रत्नरस, (पु०) रत्ने रसः । भोगका स्वाद (मजा) ।
 भोगविलासका सुख ।
 रत्नसर्वस्वम्, (न०) (रत्ने सर्वस्वं) भोगविलासका
 मारा धन (सारा स्वाद) ।
 रत्न, (न०) रत्नते अत्र । रत्न+न (सान्तादेशः) । जहाँ सुरा
 होना है । मामिकय (मन्नि) आरि परधर । अपनी १
 आनिमें धेनु (बहुत अन्धटा) । मानिक और हीरा ।
 रत्नकूट, (पु०) रत्नमयकूटः शृङ्गं अन्त्य । जिनकी चोटी
 रत्नोंकी हो । एक पहाड ।
 रत्नगर्भ, (पु०) रत्नयुक्तं गर्भं मयं यस्य । जिसके बीच
 रत्न हैं । समुद्र । और कुबेर । पृथिवी (जमीन) ।
 अच्छे पुत्रवानी औरत (स्त्री०) ।

रत्नग्रीव, (पु० न०) रत्नमयो ग्रीवः । रत्नोंका शीप (ज-
 जीरा) । तन्त्रमें अंगुलीके समुद्रमें रहनेके कारण यान
 करनेवापक रत्नोंका बनाहुआ अन्तरीप ।
 रत्नपारायण, (न०) रत्नानां पारायणं (साकल्येन स्था-
 नं) । सम्पूर्ण रत्नोंका पूरा १ स्थान । जहाँ सब रत्न
 रहते हैं ।
 रत्नमुत्पत्त्य, (न०) रत्नेषु मुत्पत्त्यं । रत्नोंमें सास (अम्बल) ।
 हीरक । हीरा ।
 रत्नपती, (स्त्री०) रत्नानि सन्ति अस्यां+मत्पत् । “म”
 को “व” होता है । रत्नोंवाली । पृथिवी । जमीन । रत्न-
 वाना (त्रि०) ।
 रत्नसानु, (पु०) रत्नानि सानौ अस्व । जिसकी चोटीपर
 रत्न हैं । सुनेहपरंत । सुनेहका पहाड ।
 रत्नार, (स्त्री०) रत्नानि सृते । सू+किप् । रत्नोंको उत्पन्न
 करती है । पृथिवी ।
 रत्नाकर, (पु०) १ त० । रत्नोंकी रान । समुद्र रत्नोंकी उत्प-
 तिहा स्थान । मणिओंकी रान ।
 रत्नाभरण, (न०) रत्नचटितं आभरणम् । शाक० ।
 रत्नोंसे रचाहुआ भूषण (जेवर) । जडाऊ गहना ।
 रत्नायली, (स्त्री०) १ त० । रत्नोंकी कनार । रत्नोंका
 समुद्र । उनका बनाहुआ द्वार । बत्ताराजकी पत्नी
 “रत्नायली अधिहृत्य इतः प्रन्थः+अण्” आटयाविका
 (जिसमें रत्नावलीका बर्गन है) । एक नाटिका (जिसे
 थीहपने बनाया है) ।
 रत्नि, (पु० स्त्री०) रत्न+त्रिच् । बद्धमुष्टिहस्तारिमाणम् ।
 बंधीहुई मुठ्रीकाले हाथका माप । स्त्रीले वा बीप ।
 रत्न, (पु०) रत्न्यते अनेन । अत्र वा । रत्न+कण् । जिससे
 आनंद उठाते हैं । एक प्रकारकी सवारी । गाड़ी । और
 शरीर (जिस) । “आत्मानं रत्निं विद्धि शरीरं रथ-
 मेव च” इति मुनिः । पाद (पाँव) । जेत ।
 रथकट्या, (स्त्री०) रथानां समूहः । रथ+कट्यञ् । रथों-
 का समूह ।
 रथकार, (पु०) रथं करोति । कृ+अच्-अण् वा । रथ-
 निर्माणकारक वर्णसंस्कारविशेष । गाड़ी बनानेवाला (सूत्र-
 धार) एक प्रकारका दोगल्य । सखान ।
 रथकूयवर्त्, (पु० न०) रथस्य कूयवर्त् । रथ (गाड़ी) का
 पुत्र ।
 रथशोभ (पु०) रथस्य शोभः । गाड़ीका इपर उधर
 हिलना (होये लगना) ।
 रथगुप्ति, (स्त्री०) रथस्य गुप्तिः । रात्रवारणार्थं रथा उप-
 पारान् तत् स्थानम् । रथका बह स्थान कि वहाँ पडे-
 हुए शत्रु (तरवारआरि) को रोकलिया जासक्य है ।
 रथका गुप्त स्थान ।

रथचर्या, (स्त्री०) रथस्य चर्या । गादीदी यात्रा (गन्तर)
 रथन्तर, (त्रि०) रथेन तरति । मृ+नन् मुन् च । रथ-
 नेता । रथ लेजानेवाला । "अग्नि रथा शर" इय प्रथामे
 गाथायथा एक गामवेदका मन्त्र.
 रथयात्रा, (स्त्री०) रथस्य यात्रा । रथस्य यात्रा (चर-
 ना) । आपाड (हाड) के दुःप्रपक्षी द्वितीयाके रिन
 करनेलायक एक उलगव । इसमें मूर्तिको रथमें बैठाकर
 मनुष्य चरते हैं.
 रथाङ्ग, (न०) अङ्गपते (गम्यते) अनेन । अग्नि+करणे
 घम् । ६ त० । चक । पहिया । "रथाङ्गशब्दः वाचछनेन
 अस्ति अस्स+अच्" । रथाङ्गशब्द जिसका वाचक है ।
 चक्रवाक (चक्रवा) (पु०) ।
 रथाङ्गपाणि, (पु०) रथाङ्ग (चक्रं) पाणौ यम् । जिग-
 के हाथमें चक्र है । चक्रधर विष्णु । चक्रको धारण करने-
 वाला, परमेश्वर.
 रथाङ्ग, (पु०) रथ द्व आत्रियते अर्था । आ+ङ्+क ।
 वेतसश्शु । वेतका दरह्वत.
 रथारोहिन, (पु०) रथं आरोहति । आ+हृ+गिति ।
 रथपर चढता है । रथी । रथपर चढाहुआ । और रथ-
 पर युद्ध करनेवाला.
 रथिक, (पु०) रथः (युद्धसाधनाधाररथेन) अस्ति अस्स+
 क्तृ । रथ जिसके युद्ध करनेके लिये साधन है । रथी ।
 रथपर चढकर लड़ाई करनेवाला । "इर" रथिरः "इन्"
 रथिनः । "इनि" रथी । ये सब एकही अर्थमें.
 रथोपस्थ, (न०) रथस्य उपस्थ इव । गादीका मानो उप-
 स्थ है । रथका मध्य (बीच).
 रथ्य, (पु०) रथं वहति+यत् । रथको लेजानेवाला घो-
 डा । "रथस्य इदं" यत् । रथसम्बन्धी (रथका) (त्रि०) ।
 "रथस्य (तद्रमनस्य) योग्या तरणिः" । गादी जानेके
 लायक सडक । प्रशस्तपथ (बहुत अच्छी सडक) । बीच-
 का रास्ता । गली । "रथाना समूहः, यत्" । रथोंका
 समूह (बहुत गाडियों) (स्त्री०) ।
 रद्, उखाट् (उखाडना) खोदना । भ्वा० प० स० सेट् ।
 रदति । अरधीत् । अरधीत्.
 रद्, (पु०) रदति (उखनति) । रद्+अच् । खोदता
 है । टुकडे र कर्ता है । दन्त । दाँत । "भावे अच्"
 उखनन । खोदना.
 रद्च्छद्, (पु०) रदान् छादयति । छद्+णिच् वा ह्रस्वः ।
 दाँतोंको ढाँकता है । ओष्ठ । ओठ । होठ । "रदनच्छद्".
 रदन, (पु०) रद्+ञ्चु । दंत । दाँत । "भावे रपुद्"
 विदारण । फाडना.
 रध्, हिंसन (मारना) । पाक (पकाना) । रि० व० स०
 वेट् । रथति.

रध्, रग (रगत-रुगत इव रण्यः) र-
 (कगणना) अट्० धा० उभ० ऋट् ।
 अरधीत् । अरध "निच्" । "रध्नी" ।
 मारने-पिठार करनेके अर्थमें सो) "रध्नी"
 भावः) होना है.
 रग्निदेव, (पु०) रग्+मूर्ध्नां निङ् । र्ग् ।
 एक राजा और कुण । कुटुर.
 रग्धन, (न०) रग्+घञ् (पकाना) लृट् ।
 पकाना । रीथना.
 रग्ध, (न०) रग्+क्तिच् । पु+क । र्ध० । ति ।
 सुराग । दूग । दोष । ऐव । जोतिवने को
 स्थान.
 रग्, गति (जाता) गक० प० । रुद् इरा । म
 भ्वा० सेट् । इतिच् । रग्धति-ने । अरग्नी-
 रग्, आँसुनय (पिटी बलुके लिये बलुन पक-
 करना । गले मिलना । भ्वा० आ० क०
 रभने । अरग्ध । तिच् । रग्धयति.
 रग्, सन्द करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । लो
 ते । अरग्भिष्ट.
 रग्मस, (पु०) रग्+अघच् । वेग । वेगो ।
 आँसुनय । बड़ी वाह । पहिले और निरुद्ध
 करना.
 रग्, क्रीडा-खेलना । भोगविलास करना । भ्वा० क
 अनिद् । रमते । विरमति । उपरमति । बग
 सीत् "ण" रमः.
 रग्, (पु०) रग्+अच् । कन्त । पिरात ।
 और कामवेद.
 रग्मण, (पु०) रग्मयति । रग्+मिच्+भ्यु ।
 गथा । शृण । महारिष्ट । बड़ी लकड़ी । र्ग
 मातिक । जंबूद्वीपमें "रग्मक" नाम एक र्गो ।
 "रग्+भावे ल्युट्" सूरत क्रीडा । भोगविलास ।
 ल्युट्" । पटोलमूल । नीमकी जड़ । "कृत्" का
 अगला भाग । (न०) । "रग्मते अन्वय" लृ
 जिस्से आनन्द भोगते हैं । नारी । औत्त । बच्
 रग्मणीय, (त्रि०) रग्मते अत्र । रग्+आधारे लृट् ।
 र्ग सूरत.
 रग्मल, (न०) एक प्रकारका ज्योतिःसाध.
 रग्मा, (स्त्री०) रग्मयति । रग्+अच् । कन्ते
 देसी है.
 रग्मापति, (पु०) ६ त० । रग्माका पति ।
 विष्णु । "रग्मानाथ".
 रग्माप्रिय, (न०) ६ त० । लक्ष्मीका पिता । (त
 ल । विष्णु (पु०) .

(पु०) रमि+अच् । रैणु । धूरी । और महिषासुर-
 १ पिता । एक देव । बदली । बेला । एक अणुवा ।
 वा (बंजरी) । गोओंका शब्द (आवाज) । और
 ति (पार्वती) (स्त्री०) ।
 (त्रि०) रम्यते अत्र+यत् । सुंदर । और बलकर
 और करनेवाला । चम्पक (चंका) । और बकूथ ।
 ग्लेग्ल (न०) "संज्ञायां वन्" अम्यूदीपके नी बसोमिमे
 ह ।
 र, (स्त्री०) रम्यते अत्र+यत् । जिसमें स्त्रीका किना
 ला है । रात्रि । रात ।
 गति-जाना । भ्या० आ० सट० सेट् । रम्यते-अरमिष्ट ।
 (पु०) रम्+अच् । वेग । तेजी । और प्रवाह ।
 र, (पु०) रम्+शिल्प् । "म" का लोप होनेपर "रुह्"
 ग+क । कर्म० । एक मृग ।
 र, गति (जाना) भ्या० आ० सट० सेट् । इरिन् ।
 म्यते । अरमिष्ट ।
 (पु०) रन्-वनि-शब्दकरण+अच् । शब्द । आवाज ।
 र, (पु०) रन्+युच् । कोटिल । कोइल । और उह्र ।
 कंट । शब्द करनेवाला । और तीरण । तेज (त्रि०) ।
 र, (पु०) रन्+दन् । सूर्य । सूरज । और अकंठ्य ।
 आकटा वृष ।
 रज, (पु०) रवेर्जायते । जन्+ट् । सूर्यसे उपजता है ।
 शक्ति । साकार्विभक्तु । वैबल्यमयु । सुमीष कानर । यम
 यमुना (स्त्री०) । "रवितनय" आदि-इसी अर्थमें ।
 रनेत्र, (पु०) रविः नेत्रं यम् । सूर्य जिसकी आंख है ।
 विष्णु ।
 रेरस, (न०) रवेः शिवं रजं । सूर्यका पियारा रज ।
 मानक । और तामा ।
 रैलेही, (न०) रवेः शिवं व्यैहं धाम् । सूर्यका पियारा
 धाम । तामा ।
 र, खन (शब्दकरण) । भ्या० ए० अक० सेट् । रवति ।
 राना, (स्त्री०) रम्+स्यु । बाबी । लडागी । और
 जिह्वा । जीम ।
 रम, (पु०) अग्+मि । पालो हट् । रम्+मि वा । फिरण ।
 सोडे आदिकी रस्सी (लगाम) । और पत्र (कमांड) (न०) ।
 र, आत्माद-स्वादलेना । पु० उ० स० सेट् । रमयति-ते ।
 र, (पु०) रम्यते+अच् । आस्वाद्य । स्वादलेनेलायक ।
 रगना (जीम) इन्द्रियमें ग्रहण करनेलायक माधुर्य
 (मिठास) आदि गुणविशेष । वह छह प्रकारका है ।
 मधुर (मीठा) अम्ल (टुरा) लवण (तलेना) कटु
 (कड़वा) तिक्त (सीखा) कषाय (कुरैला) । शरीर-
 में खायेहुए अन्नआदिका पहिला परिणाम (बदलना) ।
 एक प्रकारका धातु । मीठे आदि रखवाला गुह्र आदि ।

पूतनाय मधु (मीठा) । अलंकारसाधनमें संचारी, व्यभि-
 चारी, सहकरणीसे प्रकट होनेलायक, रति आदि स्वाभिभा-
 वताय शब्द आदि । वृष (बिल) । वीर्य । राग (मुह-
 रबत) । इष (बहना) । पारद (पारा) । और जल
 (पानी) । गंधरा (पु० न०) ।
 रसकरपूर, (न०) रसेन करपूर इव । रससे मानों कापूर
 है । एक प्रकारका गंधवाला पदार्थ । करपूररस । पारा ।
 रसका फूल ।
 रसज्ञ, (पु०) रसे (पारदं) हन्ति । हन्+ टह् । पारेको
 मारता है । मुहावा ।
 रसज्ञ, (न०) रसात् (भुक्ताभात्) प्रथमधातोर्जायते ।
 जन्+ट् । खायेहुए अन्नके साररूप पहिली धातुमें उप-
 जना है । रधिर । लोह । मूत । "गमे आदिके इवसे
 उपजता है" गुह्र और मय कीट (शराबका कीड़ा) (पु०) ।
 रसज्ञा, (स्त्री०) रसे जानाति अनया । ज्ञा+ट् ।
 जिससे रसको जानता है । जिह्वा । जीम । रस जाबेका
 साधन । जीमके स्थानवी इन्द्रिय ।
 रसतेजस्, (न०) रसस्य (भुक्ताभासारस्य) तेजः (सारः) ।
 खायेहुए अन्नके सारका तेज । रधिर । लोह । मूत ।
 रसन, (न०) रम्+स्युट् । स्वाद । मन्दा और वनि
 (शब्द) । "करणे स्युट्" । जिह्वा । जीम । "चित्ते-
 न दूते रगने तितापीनि" नैवयम् ।
 रसना, (स्त्री०) रस्यते अनया । रम्+करणे स्युट् । टाप् ।
 जिससे रस लिया जाता है । जिह्वा । जीम । तडगी ।
 और रस्सी ।
 रसंराज, (पु०) रसेपु-रसो वा राजा इव श्रेष्ठत्वात्-राजते ।
 रगमें चमकता है-वा रस मानों राजा है । पारद । पारा ।
 रसयती, (स्त्री०) रस (आस्वाद्यशब्दं) अस्ति अस्यां+
 मनुप् । मस्य वः । जिसमें स्वाद लेनेलायक अन्नादि पदार्थ
 हैं । पाकस्थान । पकानेकी जगह । रगोईराना । महानस ।
 रसशोधन, (न०) रसे (पारदं-द्रवीभूतं द्रव्यं-स्वर्णारि वा)
 शोधयति, शुष्पु+णिच्+स्यु । पारा, बहादुआ पदार्थ, अष-
 वा सोने आदिको जो ताक करदेता है । टंकण । मुहावा ।
 रसा, (स्त्री०) पाकजः रसः (माधुर्यादिरूपः) अस्ति
 अस्यां+अच् । पकाहुआ मीठा आदि रस जिनका है ।
 शृषिणी । दास्य ।
 रसातल, (न०) रसायाः तलं । एक पाला । शृषिणीका
 तला । भूमिके नीचेका सातवां पड्डा ।
 रसाभास, (पु०) रस इव भाभावते । आ+भाग्+अच् ।
 रसकी नाई प्रतीत होता है, वास्तविक नहीं ।
 रसायन, (न०) रसस्य अवनं इव । रसका मानों पर है ।
 लक । लरवी । छ+छ । कटी (कमर) । एक
 हिर । एक औषध (दवाई) । इम
 पर होजाती है ।

रसायनशला, (स्त्री०) रसायनं इव फलं यस्याः । जिग-
का फल रसायनकी नाई हो । हरीतकी । हरीद.
रसाल, (न०) रसं आलाति । आ+ला+क । गिदक ।
एक पृथक्पृथक् चीज । मंथरास । गिरारिणी (एक पीने-
का पदार्थ) । दुर्वा (दूब) । और द्राक्षा (दाम किम-
भिस) (स्त्री०) । आम (आम) । इशु (ईस-गन्ना) ।
पनस । गोधूम । गेहूं । पौंशमन्ना (पु०).
रसास्वादिन्, (पु०) रसं (पुंशरसं) आमादते । आ+
स्वद+णिनि । फूलके रसका स्वाद होता है । अमर ।
भौरा । मधुर (मीठा) का शब्दार्थ आदिका स्वादलेने-
वाला (त्रि०) कियं षीप्.
रसिक, (पु०) रसं वेत्ति (अनुभवति)+उञ् । सारम-
नामी पक्षी । अश्व (घोडा) । और हाथी । रगड ।
रसके जासैवाला और रसवाला (त्रि०).
रसेन्द्र, (पु०) रसः (इवीभूतः) इन्द्र इव श्रेष्ठत्वात् ।
पिपलाहुआ, मानो इन्द्र है (सबमें अच्छा होनेसे) ।
पारद । पारा.
रसोत्तम, (पु०) रस उत्तमो यस्य । जिराका उत्तम स्वाद
है । मुद्ग । मूंगी.
रस्य, (न०) रसात् (भुक्तानपरिणामात्) आगत+यत् ।
खायेहुए अन्नके पाकसे आया । रुधिर । लोहू । "रस्यते
(आस्वायते) रसु+यत्" । आस्वाय (स्वाद लेनेलायक
(त्रि०) "रस्याः क्लिप्याः स्थिरा हवाः" इति गीता.
रहू, गति-जाना । जु० उ० अक० सेट् । रहयति-त्ते । अर-
हत्-त्त.
रहसू, (न०) रह्+असुन् । वेग । तेजी । जोर.
रहू, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदिद् । रह-
ति । अरंषीत्.
रहू, त्याग (छोटना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । रहति ।
अरहीत्.
रहू, त्याग (छोटना) । जु० उ० सक० सेट् । रहयति-त्ते.
रहसू, (न०) रह्+असुन् । निर्जन । एकान्त । अकेले ।
गोप्य । छिपानेलायक । याथाभ्यं । ठीकपन । निर्जन ।
(अव्य०).
रहस्य, (त्रि०) रहसि भवः+यत् । एकान्तमें हुआ ।
गोप्य । छिपानेलायक । पौसीदह.
रहस्यमेद्, (पु०) रहस्यस्य मेदः । गुप्त बातका खोल
देना (प्रकाश करवालेना) । समझमें न आसकनेवाली
बात । अज्ञतमाया.
रहस्याख्यायिन्, (त्रि०) रहस्यं आख्याति । गुप्त बात
(छिपी हुई बात)को कहनेवाला । रहस्यका बक्ता.
रहित, (त्रि०) रह-त्याग । कर्मणि ष्ट । यजित । छोड़-
दियाहुआ.

रा, दान (देना) और दान (देना) ।
रा० शनिद् । रानि । अरागीर.
रा, (स्त्री०) रा+जिप् । कानन (गंगा) ।
देना.
राजा, (स्त्री०) रा+क । प्रतिपदा (दूधन-
पूर्वमासी । पूरे चंद्रमावासी तिथि । एक
जिमे पहिले पहिले रज (पूज) आरंभ है.
राक्षस, (पु०) रक्ष एव+भावे षन् ।
जाति (जो प्राणिजोंकी हिंसा करी है)
मन्त्रीका नाम । एक प्रकारका विकार । जन्म
सजातिकी स्त्री । "राक्षम इदं जन्" उप-
कियां षीप् । दंष्ट्रा । दाड । बण्डका.
राक्षसेन्द्र, (पु०) राक्षस इन्द्र इव श्रेष्ठ-
मानो इन्द्र है । विधवाका बरा पुत्र । एक
राक्षा, (स्त्री०) लक्ष्यते अन्वयात् । ...
वृद्धिः । लक्ष्य रथ । लाखा । लाव.
राखू, शोधन (साफ करना) । मूल्य (खन-
रण (खनाना) । सक० । सामर्थ्य (दाक-
अक० भ्वा० पर० सेट् । राखति । अरखीत्.
राग, (पु०) रञ्+भावे षन् । नि० । एव
वर्णन (बयानकरना) । प्रीति (प्रेम
राग (प्रेमकरना) । राजा । और रज
" करणे षन् " लालरंग । उम रंजनी
" तेन रक्तं रागात् " इति पालिनिमुद्रम्
षन् " बसन्त आदि नामसे प्रसिद्ध सारसि
छद्म राग हैं-भैरव-कांसिक-हिंदोल-श्रीपक
राग । प्रत्येक रागकी छद्म रागिणी हैं) । पु
रागाङ्गी, (स्त्री०) रागयुक्तं अङ्गं यस्या-
अंग लाल है । मंजिष्ठा । मजौठ । ३ त० ।
यही अर्थ (स्त्री०).
रागाक, (त्रि०) राग+आपद । जो दाककी
ताई परन्तु उसे पूर्ण नहीं करता.
रागिणी, (स्त्री०) रागः अस्ति अस्मा+रति
गीतका अंग । एक प्रकारका खर । रावली
सवाली औरत) । गुस्सेवाला । अतुरक (इ
नेवाला) । कामुक (चाहनेवाला) । छिपु
(भोगविलास करनेवाला) (त्रि०).
राघ, (शक्ति)-लायक होना-समर्थ होना ।
सक० सेट् । राघते । अराघिष्ठ.
राघय, (पु०) राघोः गोत्रापत्यं+अण् । राघे
उस कुलमें प्रधान धीमत्तवन्तरी महापुत्र.
राङ्गय, (न०) राङ्गोः अर्थ, विकारो वा+अण् ।
रोग (बालों)से बनायागया एकप्रकारका

राजस, (त्रि०) राज्या निमित्तः+अण् । राजोगुणो उग्र-
हुमा कर्मभ्रिय (वाक्-गानि-पाद-पायु-उग्रण्य) । और
प्रतिदिके लिये कियागया कर्म (काम) ।

राजसभा, (न० स्त्री०) राजा (वृषाणां) गमा । राज-
औरी सभा । वृषगमाज ।

राजस्य, (पु०) राजा स्यते कण्ठतेऽस्मिन् । सू+अण् ।
राजाका करनेलायक एकयज्ञ ।

राजस्य, (न०) राते देयं स्त्रं (करम्पम्) धनम् ।
राजाकी देनेलायक (कर-मसूल-गिराज) धन । इ त० ।
राजाका धन ।

राजहंस, (पु०) हंसानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) । पर० नि० ।
एक हंस (जिसकी चोंच और चरण साल हों और ईग
विद्य हो) । फलहंस । “ राजा हंस इव (सारप्रहणात्) ।
राजा मानों हंस है (सारप्रहण करनेसे) । अच्छा राजा ।

राजावन, (न०) राजा अयने । शब्द । कर्मणि ल्युट् ।
(उसके फल और बीजके लुब्धनाकर) राजामे माला
जाता है । पियालवृक्ष (जिसके फल और बीजमे लुब्ध-
नाकर राजासे राये जाते हैं) । क्षीरिका । और केमु ।

राजाधिकारिन्, (पु०) राजानं अधिकरोति । सर्कारी
अफसर (अधिकारी) न्यायकर्ता । जज । दन्याफ कर-
नेवाला ।

राजाधिष्ठान, (न०) राज्ञः-अधिष्ठानं । राजधानी । राजाके
निवासका नगर ।

राजाध्र, (पु०) आध्रानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) नि० । आध्र-
विनेप ।

राजाम्ल, (पु०) अम्लानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) पर०
नि० । आम्लवेतस । अंबलवेत । खटा बेत ।

राजाह, (न०) राजानं अहति । अह्+अण् । अग्रहचंदन ।
राजाके लायक (त्रि०) । जम्बू (जामन) (स्त्री०) ।

राजि-जी, (स्त्री०) राज्+इत्+वा षीप् । ध्रेणि (वतार)
पंक्ति । रैता (लकीर) । “ राजते ” । राज्+शुल् ।
धेनसर्पप ।

राजिल, (पु०) राज्+इल्च् । डण्डुभ सर्पं । डोंडासांप ।
जलका सांप ।

राजीय, (न०) राजी (दलराजी) अलि अस्य वा ।
कमलहूल । एक हरिण । एक मत्स्य (मच्छ) । हापी ।
और सारस (पु०) ।

राजेन्द्र, (पु०) राजा इन्द्र इव (श्रेष्ठत्वात्) । बहुत
अच्छा होनेसे राजा मानो इन्द्र है (जिसका चार
सोत्रन १६ श्रेष्ठतक अधिकार है उसे राजा-राजासे भी
सौगुण्य अधिकारवाला । मण्डेश्वर-और मण्डेश्वरसे
दशगुण अधिक अधिकारवाला “ राजेन्द्र ” कहाजाता
है) । एक प्रकारका बड़ा राजा ।

राजी, (स्त्री०) राज्+इत्+शीर्च् ।
कनिन्-शीर्च् वा । राजी । राजाकी
राज्य, (न०) राजो माय कर्म वा
शोना वा काम ।

राज्यधुरा, (स्त्री०) इ त० ।
गमा० । प्रजाका पालन आदि ।

राज्याह, (न०) इ त० । राजाका
गुह्य-कीर्त-राष्ट्र-धुर्ग और वन ।

राद, (पु०) रद्+अण्+ए० इवम् ।
“ राजा ” (स्त्री०) ।

रादीय, (त्रि०) राजो निरतः
उत्पन्न हुआ ।

रात्रि-त्री, (स्त्री०) रा+त्रिप् वा
अपने २ देगमें सूर्यमण्डलके न
हरिण । हृषी ।

रात्रिकर, (पु०) रात्रि करोति । इ-
किरणः अस्य वा” । रातको
रातमें होती हैं । चन्द्र । चांद्र और

रात्रि(ञ्)चर, (पु०) रात्रौ चरति
रातमें विचरता है । रात्रस । उज

रात्रिमणि, (पु०) रात्रौ मणिः इव ।
समय मानों मणि है (प्रकाशवाला है)

रात्रिवासस्, (न०) रात्रेवांस इव अ-
(कपडेकी नाई) दाकनेहास । अ-
“ रातके समय पहिरनेलायक कपडा

रात्रिविगम, (पु०) इ त० । रात्रौ
प्रभातसमय ।

रात्रिहास, (पु०) रात्रिहांस इव (रात्रौ
मानो हासा (चिड़-सकेद होनेसे) ।

राज्यन्ध, (त्रि०) रात्रौ अंधः (रात्रौ
जो देख नहीं सका । कोआ आदि-

राद्ध, (त्रि०) राप्+कर्त्तरि-कर्मणि वा
हुआ) । पक (पकाहुआ) ।

रादान्त, (पु०) राद्धः (सिद्धः) अ-
यस्मात् । ५०० । जिसे तबका लि-
सिद्धान्त । नतीजा । संदेह उदाकर का
पदाका निराकरण कर यथार्थ पदाका
बचन । “ वादिप्रतिवादिनिर्णयार्थः ” ।

राष्, सिद्धि-साधना । अक० । निवारण
और पाक (पसाना) सक० खा० और
अनिद् । राशोति । राष्यति । अराशीद् ।

रा, (न०) राप्+स्युट् । साधन (पूरा करना) । पाना ।
 रास होना । "राप्+णिच्+सुच्" । पूजा करना । राप्-
 ; (स्त्री०) राप्+अच् । पार्वती । परमारमाफी एक
 कि । श्रीरामके सापसे कुन्दावनमें उपजी इयभाजुकी कन्या
 रासगोपी । कर्णकी पालन करनेहारी और माता (मा) ।
 रासान्त, (पु०) ६ त० । राधाका कान्त (पियारा)
 कृष्ण "राधावल्लभ" आदि ।
 रातनय, (पु०) ६ त० । राधाका पुत्र । कर्ण । वह
 माती अशस्थानमें सूर्यसे कुन्तीके गर्भमें उपजा । कुन्तीने
 राग करदिया, सूर्यकी पत्नी राधासे पाला ।
 रासमण, (पु०) राधायाः रमणः । राधाके साथ प्यार
 करनेवाला भीकृष्ण ।
 राय, (पु०) राधाया अपत्यम्+इच् । राधाकी सन्तान ।
 हर्ष ।
 रा, (पु०) रम्+कर्त्तरि पच् ण वा । परछुराम । दशरथका
 बड़ा पुत्र भीरुमचन्द्र । और बतराम । मनोहर । एषस्-
 रत । और शुभ (त्रि०) ।
 रागिरि, (पु०) रामाधितः गिरिः । विश्वकूपर्वत
 (बनवासमें गयेहुए रामने इसीका पहिले आधय किया) ।
 मचन्द्र, (पु०) रामचन्द्र इव (आकादकरथाव) । राम
 मानो चन्द्रमा है (आनंद देनेसे) । दशरथका बड़ा पुत्र
 भीराम ।
 रामजननी, (स्त्री०) ६ त० । रामकी माता । बसुदेवकी
 पत्नी (औरत) रोहिणी । जमदग्निकी पत्नी रेणुका ।
 दशरथकी पत्नी कौसल्या ।
 रामणीयक, (न०) रामणीयस्य भावः । रामणीयं एष वा ।
 रामणीय+बुम् । रामणीयत्व । मनोहरपन । मनोहर ।
 रामतटणी, (स्त्री०) रामा (अभिरामा) तरुणीव । सेओ-
 णीकूल । ६ त० । रामकी स्त्री । सीता । और देवती ।
 रामदूत, (पु०) रामस्य दूतः (वार्ताहरः) । हनुमान् (वही
 रामचन्द्रकी बातको लंकामें सीताके पास पहुंचाताहुआ) ।
 रामनयमी, (स्त्री०) रामस्य जन्माधारो नवमी । राम-
 जन्मकी नवमी । चैत्रके शुद्धपक्षकी नवमी ।
 रामभद्र, (पु०) राम एष भद्रः (मङ्गलदायकथाव) ।
 रामही कल्याण वा पियारा है (भलाई करनेसे) । भीराम ।
 रामयज्ञभ, (न०) रामस्य ब्रह्मं (प्रियम्) । रामका
 पियारा । भूषेपत्र (भोजपत्र) वह रामने बनवाताधममें
 पियारा समझकर धारण किया ।
 रामसख, (पु०) ६ त० । टच् । रामका मित्र । सुमीव
 (वानरोंका राजा) ।
 रामा, (स्त्री०) रम्+णिच्+कर्त्तरि पच् । गीतआदि बरगको
 पापेहारी मारी (औरत) । मारी । नदी । हूंग । परकी
 लक्ष्मी । अशोक । गोरोचना । बलागेरी ।

रामानुज, (पु०) प्रसिद्ध धर्मग्रन्थका नाम । येशान्तकी
 एक शाखा (विशिष्टाईय)का प्रवर्तक और भी अनेक
 ग्रंथोंका रचनेहारा ।
 रामायण, (न०) रामका अयन (परितं) अधिकृत्य
 कृतो ग्रन्थोऽय् । रामचन्द्रके चरित्रको प्रतिपादन करनेहारा
 काशीकिमुनिका बनायाहुआ एक प्रकारका महाकाव्य ।
 राय, (पु०) ह+पच् । शब्द । आवाज । बोलना ।
 रायण, (पु०) रवणस्य अपत्यम्+अण् । रावयति शत्रून् ।
 णिच्+स्यु वा । रवणकी सन्तान वा ओ शत्रुओंको रुजता
 है । लंकाका मालिक रावण ।
 रायणगङ्गा, (स्त्री०) रायणनिर्मिता गङ्गा नदी । रावणसे
 बनाईगई गङ्गा नदी । सिहल (लंका-सीलोन) के देशमें
 एक नदी ।
 रायणारि, (पु०) ६ त० । रावणका शत्रु । श्रीरामचन्द्र ।
 "रावणान्तक" आदि ।
 रायणि, (पु०) रावणस्य अपत्यम्+अत इन् । मेघनाद-
 नामी रावणका बड़ा पुत्र ।
 राय्, शब्द-आवाज करना । भ्वा० आ० अक० सेट् ।
 रायतें । अरायित् ।
 रायि, (पु०) अधुते (व्याप्नोति) अस्+दन् । धातुको
 इत्का आगम होता है । धान्य आदिका पुत्र (समृद्ध) ।
 ज्योतिषकका बारहवाँ अंश मेघ आदि । व्यक्त और अ-
 व्यक्त गण । समृद्ध । डेर ।
 रायिचक्र, (न०) रायिपटितं चक्रं (वृत्तम्) । रायि-
 ओंका बनाहुआ चक्र । मेघ आदि बारह रायिवाला,
 गोलकार (गोलस्वरूपवाला), धातुके बारण पूर्वसे पधि-
 मकी और निरन्तर घूमनेवाला ज्योतिरस्वरूप चक्र ।
 रायिभोग, (पु०) रायिनीं सख्यत्वा प्रदंभोगः । भुञ्ज्+
 पच्+कुत्वं । सूर्य आदि ग्रहोंका अपनी ९ गतिके अनुसार
 रायिओंमें जाना ।
 रायी (दि)वृत्त, (पु०) अणशिः रायिः कृत्वा । रायि+
 अभूततद्वावेचि-त्तदर्थे समासो वा । डेरी । पुत्रीकृत ।
 इच्छा कियागया । एक जगह लगामागया ।
 राय्, (न०) राय्+इन् । जनपद । देश । राज्य । उर-
 द्रव । मुर्छीवत ।
 राय्यि, (पु०) राय् भवः । प+नाज्योफिमें राजाका
 इवाल (सावा) ।
 राय्, शब्द-आवाज करना । भ्वा० आ० रा० सेट् । रायते ।
 राय, (पु०) रप्+पच् । रप्+पच् वा । शब्द । अग्नि ।
 आवाज । शंखला (संगणी) बांधकर दो २ के बीचमें
 एक प्रकारकी बीडा (सेत) । धीहृष्यभगवान्की भीष्य ।
 बोधहल । गंगा । रंज (रंज) ।
 रासभ, (पु०) राप्+अभच् । गर्भ । यथा । ओष्ठ ।

रासमण्डल, (न०) रासार्थं मण्डलं मण्डलकारेण प्र-
मणं यत्र । रासके लिये (संगीत बांधकर दो २ के पी-
चमें ठहरेहुए खेलेगें) जहाँ मण्डलाकार (दागरा
बांधकर) गूँथते हैं । रासकी खेल करनेकी जगह । श्री-
कृष्णजीके राग करनेका स्थान । एक प्रकारका मण्डग.
रासेश्वरी, (स्त्री०) ६ त० । रासकी मातृक । राधिका.
रास्ता, (स्त्री०) रस+नप् । इस नामकी एक वेद । रागनयेत.
राहु, (पु०) रह+उण् । त्याग । छोड़ना । छोड़नेवाला ।
ज्योतिषधर्ममें सूर्यकी फिरणोंके न छूनेसे उदात्तदुर्घ्न प्रथिवीकी
छायाका आशय एक ग्रह । सिंहाका बेटा (एक राशत).
राहुदर्शन, (न०) राहोर्दर्शनं यत्र । जिसमें राहुरा दर्शन
होता है । चंद्रमा और सूर्यका उपरागरूप ग्रहण । चंद्रमा
और सूर्यका उपराग होनेपरही वह बीच रास्य दे ।
अन्यथा नहीं.
राहुमूर्धभिद्, (पु०) राहोः (सिंहाकासुतस्य) मूर्धानं
मिनत्ति । भिद्+क्विप् । राहुके माथेको तोड़ता है । विष्णु ।
अमृत पीनेके समय देवताओंकी कतारमें देवत्पद्ये स्थित
होकर अमृत पीतेहुएकी देख विष्णुने उसका सिर तोड़ा.
राहुरत्न, (न०) राहोः प्रियं रत्नम् । एक खास रत्न ।
गोमेदरत्न .
राहुसूतकम्, (न०) राहोः सूतकम् । राहु (दैत्य-सिरके
स्वरूपमें) का जन्म । सूर्य वा चन्द्रमाका ग्रहण.
रिक्त, (त्रि०) रिच्+क्त । शून्य । खाली । सूना । धन । निरर्थक ।
बे फायदा.
रिक्तभाण्ड, (न०) रिक्तं भाण्डम् । तेल आदिसे शून्य
भाँडा (बर्तन).
रिक्तहस्त, (त्रि०) रिक्तो (धनादिशून्यो) हस्तो यस्य ।
जिसका हाथ धनआदिसे शून्य है । खालीहाथ । निर्धन ।
गरीब । बहुत दान आदिसे जिसका धन खर्च होगया.
रिक्ता, (स्त्री०) रिच्+क्त । दोनों पक्षोंकी चतुर्थी । नवमी
और चतुर्दशी तिथियें.
रिषय, (न०) रिच्+यक् । धन । मिताक्षरामें कहाहुआ
अप्रतिबंध (न रुकनेवाला) दाय (बिरसा).
रिषयहारिन्, (त्रि०) रिषयं (आश्रयत्वेन) अस्ति अल्प+
हनि । दायहारि । बिरसालेनेवाला । दायदा । धरीक.
रिख्, (संपणं) सकंन । भ्वा० प० सक० सेट् । इदित् ।
रिखति.
रिग्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट्-इदित् । रिजति ।
अरित्रीत्.
रिज्जण, (न०) रिगि+ज्युट् । स्वजन । धिसकना । रीगना.
रिच्, संपर्क (मिलना) और वियोग (अलग होना) ।
पुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । रेचयति-ते ।
रेचति (अरीरिचत्, त) । अरेचीत्.

रिग्, रिरेव (ऊपर छल करना) । इग् ।
रुभा० उभ० सक० अनिट् । रिगिर्जिं
रिगु, (पु०) रिग्+उ-ट् । शुभ । इन्द्रा
स्थान.
रिपुघातिनी, (स्त्री०) रिपुं हन्ति । हर्ष-
वेत् । शत्रुको मारनेवाला (रि०).
रिपुजय, (त्रि०) रिपुं जयति । विभक्त् ।
नेवाला । एक राजा (पु०).
रिम्क, वष (मारना) । पु० प० म० सेट् ।
रिफक, (पु०) रिप्+अङ्-ट् । छाने का
रिंसा, (स्त्री०) रम्+मन्+ञ् । रन्नेच्छ ।
नेकी चाह (स्वाहिस).
रिच्, कति-जाना । भ्वा० प० म० सेट् । इदित् ।
रिश्, हिंसा (कतलकरना) । पु० पर० सक०
रिश्ति । अरिस्तत्.
रिद्य (प्य), (पु०) रिद्यते । रिम्भन् ।
रिष्ट, (न०) रिष्+क्त । मंगल । और बहुत
पुरा "भावे क्" नाद्य । और पाप (पुन
आदिवाला (त्रि०) । सत्र (तरका) (३०)
रिष्टि, (स्त्री०) रिप्-रिप्-वा+क्विन् । कडुन ।
रका शत्रु (बीजार) । "किच्" ल्य ।
री, क्षरण-बहना । रि० आ० अ० अनिट् । रीते
रीटा, (स्त्री०) री+ठक् (ठल्ल न इवम्) ।
रीटा.
रीटा, (स्त्री०) रिट्+क्त । अजडा । अरतन
माँनी । न माना.
रीण, (त्रि०) री+क्त । क्षरित । छुन । बहना ।
रीति, (स्त्री०) री+क्विन् । पितल । प्रवा
बहना । सीमा । गति । जाना । समाप ।
आदि रचना । तरीक.
रु, ध्वनि (शब्दकरना) वदा० प० अङ् । सेट् ।
रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुक्ः प्रतिक्रिया (प्र
प्रति+कृ+भावे ष । रोग दूर होनेका उपाय ।
रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुक्ः प्रतिक्रिया-उपाय
(रोग-बीमारी) का इलाज.
रुक्म, (न०) रुक्+मन्-नि-ञ्जुलम् । काय
भत्तूर । सोहा । नागकेसर.
रुक्मकारक, (पु०) रुक्मं (तत्रिर्मितमूर्धनं
कृ+ञ्जुल् । सोनेके जेवर बनाना है । हर्षकार
रुक्मिन्, (पु०) रुक्मं विचले अल्प+हनि । रि
सोना है । एकराजा । सोनेका स्वामी (त्रि०).
रुक्मिणी, (स्त्री०) रुक्मिन्+मीप् । विदुषी
भीष्मकी कन्या.

दन्, (न०) दन्ः सप्त । रोगका पर । मल । विष्टा ।
 १.
 द्, (त्रि०) दृ-बन्त घृ० वा रोपेः । अविद्यन ।
 समे विकनार्हे न हो । नि भेद । और कठोर । सक्त ।
 (त्रि०) दृ-क । रोगान्त्रिका । भीमार । रोगवाला ।
 न । डेडा ।
 २. प्रीति (प्रगल्भ होना) । प्रकाश (चमकना) । भ्या०
 १० अक० रोद् । रोचते (अरुचत्-अरोचिष्ट) ।
 ३. द, (न०) दृ-कृ-त् । राज्ञी । सर्जिकादार । अभा-
 रण (घोड़ेवा जेवर) । माला । मुद्रागा । और निमक ।
 ४. और कवृत् (पु०) ।
 ५. द्, (स्त्री०) कृिप् वा टाप् । सीसि । प्रकटा । और
 तोभा ।
 ६. द्, (स्त्री०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । अनुपाय । मुद्रस्वत ।
 तावत्र । दृष्टा (इच्छा) । अभिलाष । किरण । शोभा ।
 मुद्रा । भूल । गोरौचना । एक प्रजापति (पु०) ।
 ७. द्, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । स्वार्थ देनेवाला ।
 देलपसंद ।
 ८. धामन्, (पु०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । प्रकाशका
 र । सूर्य ।
 ९. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । ददाति । दा-क । मनोहर ।
 सुन्दर । और मधुर (मीठा) । दृ-कृ-त् वा कृिप् । देता
 है (पैसा कर्ता है) । बेचर और लिंग (न०) ।
 १०. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त्
 वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 ११. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १२. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १३. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १४. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १५. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १६. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १७. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १८. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 १९. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 २०. द, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।

द्वित्त, (न०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । द्वित्त । द्वित्त ।
 " वर्तित क " कृतरोदन । जो रोया है । रोनेवाला
 (त्रि०) ।
 दृ, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । आवरणविवेष्टित । पश्ये आदिसे
 पैसा हुआ । रोकगया । बंदकिया । दफा हुआ ।
 दृ, (पु०) रोदिति । दृ-कृ-त् वा कृिप् । रोता है । शिवजीकी
 एकमूर्ति : " सोऽरोधीय यदरोधीयत् दृदस्य दृदस्यम् "
 " अत्र एकपाय, " इति श्रुतिः । अद्विष्टुं, विरुपाक्ष,
 सुरेश्वर, जयन्त, बाहुरूप, शंभुक, अपराजित, वैवस्वत,
 सावित्र, हर, और शम्भु इस प्रकार शिवजीकी ग्यारह
 मूर्तिये ।
 दृज, (पु०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । जन्म । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 है । शिवजीके बीससे उत्पन्न हुआ । पारद (पारा) ।
 दृजटा, (स्त्री०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । जटिलता । जटिलता ।
 मानो दृकी जटा है (पीली और जटावाली होनेसे) एक
 प्रकारकी बेल । संकरजटावेल ।
 दृमिया, (स्त्री०) १ त० । दृकी पियासी । हरीतकी ।
 हरीट । और दुर्गा । देवी ।
 दृर्विदाति, (स्त्री०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । विदाति । बह
 बीवी
 जिताका शामी दृ है । प्रथम आदि साठ वर्षोंमेंसे अन्तकी
 बीवी ।
 दृसारापि, (पु०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 दृसारी, (न०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 कर्ते हैं । इमशान । मगान । मरघट ।
 दृसार्, (पु०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 अपने नामवाला पृष्ठ ।
 दृसारी, (स्त्री०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 स्त्री । शिवपत्नी । पार्वती । शिवकी औरत । ग्यारह वरि-
 सकी छद्म ।
 दृसारी, (पु०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 वामदेव ।
 दृसारास, (पु०) १ त० । दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 कैलास । काशी । इमशान (मगान) ।
 दृसारी, (त्रि०) दृ-कृ-त् वा कृिप् । दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 उत्पन्न हुआ । बचपना । (बेदमें) सुत्रिका बचपण
 करना । सुल पशुवाना । यजुर्वेदका एक मन्त्र ।
 दृ, काम (चाहना-माणा) । आ० छक० अनिद् । प्रा-
 हस धानुके साथ अनु उपसर्ग लगता । है । अनुपपत्ते ।
 अन्वय ।
 दृ, आवरण (रोकना-रुकावट) । अनिद् ।
 दृ-कृ-त् वा कृिप् ।
 रघिर, (न०)

रधिरपायिन्, (पु०) रधिरं पिबति । रधिर (लोडु) पीता है । दैत्यः ।

रध्, आङ्गुलीकरण-ध्वराना । विगाडना । (वेद) वसी पीडा साहारना । दि० प० स० सेद् । रधयति । अरधन्-अरोपीत् ।

रधा, (स्त्री०) रध्+कृ । सुग्रीव वानरकी भाय्यां (औरत) । लवण राक्षसका स्थान । एक देश ।

रध, (पु०) रध्+कृ । मृगविशेष । एक प्रकारका हरिण ।

रधु, (पु०) रध्+धु । एरण्डका द्रव्य । “कन्” एरण्ड । “रधु” ।

रधु, हिंसा (कतलकरना मारना) पु० प० स० अनिद् । रधति । अरधत् ।

रध्, (धष) मारना । भ्या० प० सक० सेद् । रोपति । अरोपीत् ।

रध्, क्रोध (गुस्सा करना) । दि० प० अक० सेद् । रधयति । अरधत् अरोपीत् ।

रध्-पा, (स्त्री०) रध्+किप्+वा टाप् । मोघ । क्षोष । गुस्सा ।

रधित, (वि०) रध्+क्त वा इद् । क्रोधयुक्त । गुम्बेवाला । “रध” ।

रध्, उद्भव-उत्पन्न होना । भ्या० प० अ० अनिद् । रोदति । अरधत् ।

रध, (वि०) रध्+कृ । जात । उपजा । उत्पन्नहुआ । दूजं (स्त्री०) अगले पदमें रहनेसे “उसे निकल” अर्थ होना है । जैसे “भूरध” (पृथिवीसे उपजा-पृथु) “वारिध” पानीसे निकला-कमल ।

रध्, परस्पर-सहाहोना-कटोरहोना-और हसाहोना । पु० अ० अक० सेद् । रधयति-ते । अरधन्-अन्त ।

रध, (वि०) रध्+अप् । अविद्यमान । हया । जो विक्रान्त नहिं । और भेदसे रहित । रध (पु०) । दन्तीरध (स्त्री०) ।

रधगन्ध, (पु०) रधो गन्धो यस्य । त्रिगुण गन्ध हया है । गुग्गुलु ।

रध, (वि०) रध्+क्त । जात । उत्पन्नहुआ । निकला । और प्रगिद्ध (मशहूर) । “रधिः अन्ध अग्नि+अप्” त्रिगुणी रधि (प्रगिद्धि) हो । प्रवृत्ति (धातु) और प्रारवके अर्थसे अवेदा न करके समुदायगतिक (सारे शब्दकी एकता से) अगले पदमें रहनेसे “रधः” “गो.” ।

(न०) रधिः अन्ध अग्नि+अप् । जात । उत्पन्नहुआ । निकला । और प्रगिद्ध (मशहूर) । “रधिः अन्ध अग्नि+अप्” त्रिगुणी रधि (प्रगिद्धि) हो । प्रवृत्ति (धातु) और प्रारवके अर्थसे अवेदा न करके समुदायगतिक (सारे शब्दकी एकता से) अगले पदमें रहनेसे “रधः” “गो.” ।

रुद्धिं, (स्त्री०) रुद्+क्तिन् । जन्म । वृत्ति (मशहूरी) । प्रवृत्ति और प्रवृत्ति के अर्थसे विन समुदाय गतिसे अर्थका बोध (“डित्य” ।

रूप, रूपान्वितकरण शकलवाला बदन । पु० सेद् । रूपयति-ते । अरूपन्-त् ।

रूप, (न०) रूप्+कृ । आवे भव् वा । रसाः सौन्दर्यं (मूर्त्तमूर्ती) । पशु । नव । र वृत्ति (प्रत्यक्षी दुबारा पटना) । रसने नाटक आदि । श्लोक । शब्द और पदमें लगानेसे बनाहुआ शब्द । और विद्वान् रयाला (वि०) । “अगले पदमें सदा र “पितृरूपस्तनयः” पिताके समान पुत्र । (गिन्ती) ।

रूपरु, (न०) रूपयति अत्र । रूप्+अन्-त् । प्रदर्शक दृश्यकाव्यप्रमेद । नकल (कल्प दिखानेहारा एक प्रकारका देखनेकरा र अक्षि अस्य युग्” रूपवाला । रू (वि०) । “रूप्+स्वायं कन्” रूपाय (रंग) । आकार (स्वरुप) । एक वर्णकी चीन रसीका माप । चाँदी ।

रूपधारिन्, (वि०) रूपं धारयति । बने-पी वाला । रूपमूर्त । दूसरा वेश धेनेवाला (साग बनानेवाला) ।

रूपवत्, (वि०) रूप+ममुन्-“म” हो “रूपे” चिह्न आदि रूपवाला । सौन्दर्ययुक्त (रूप) (शकल) वाला ।

रूपशालिन्, (वि०) रूपेण शालने । रूपाय गुन्दर ।

रूपसंपद-संपत्ति, (स्त्री०) रूपस्य संपत्ति । पूर्ण गुन्दरना । बही भारी रूपमूर्ती ।

रुपाजीया, (स्त्री०) रूपं (सौन्दर्य) रूपम् रूप मूर्ती लेकर जीवी है । “आ+दी+रुप” कंत्ररी ।

रूप्य, (न०) रूपाय आह्वयने लक्ष्मी+रुप । बनानेके दिने जो गोमा आदि मन्त्र रूपाय अङ्कार (जेवर) आदि बनानेके श्रेष्ठ मन्त्र और चाँदी । “रूप्ये यन्” हाएक प्रकारकी लक्ष्मी और हवा । गुन्दर (पु०) ।

रूप्याध्यक्ष, (पु०) रूप्येयु अध्यक्ष । रूपाय आदि । बोधायन । शकली ।

रूप, (पूर्ण आदिसे विगाडना) । पु० सेद् । रूपयति-ते ।

रुपित, (वि०) रूप्+क्त । पूर्ण बनानेके दिने रूपायुक्त ।

घ

पु०) वा+घ। वायु (हवा)। राहु । सन्ध्या (स-
ह)। सान्त्वन (तस्यत्री)। कल्याण (भलाई)। बल-
ला । समुद्र । व्यग्र (मेडिया)। वमन (वरज)।
र बंदना करना। वरण (पु० न०)। धार्यअर्थमें
, ध्य०) “ मणीवोद्भूत सम्भवेते ” इति।

, वरु+घ। नि० गुम्। पुत्रपौत्रादि सन्तानका समुद्र।
क प्रकारका लृण। वांस। पीठका अथवा (हिस्सा)।
धु (गधा)। और घालघु। एक प्रकारका काम
, क्रियां डीघ्)। “ वंशीकलेन बडिरोन ” इति वृन्दाव-
न्वम्।

घट, (घि०) वंसं करोति। वंस (खानदान) के
बलनेवाला। वंसप्रवर्तक।

कपूर्वरोचना, (क्री०) कपूर्व इव रोचते। क्व+न्वु।
६ त०। वंसरोचना। वंसलोचन। कपूर्वी नाई सुग-
यिवाला।

ज, (पु०) वंसाद् जायते। जन्+घ। वंसके वृक्षों
वपसहुआ जैसे स्वरूपका एक पदार्थ। अच्छे कुलमें
उत्पन्नहुआ (घि०)। वंसरोचना (क्रियां टाप्)।

उत्पण्डुल, (पु०) ६ त०। वंससे उपाजा बाबलोकै
स्वरूपका पदार्थ। वंसके चावल।

घाघर, (घि०) वंसं भरति। वंसको पकड़ना है। कुलको
बलनेवाला। “ वंसवर्धन ” इसी अर्थमें।

घाघर, (क्री०) वंशम् घाघरेव। घाघरी मानो
खीट है। वंसलोचनपदार्थ। तबासीर।

घाघयिल, (न०) बारह अक्षरके पादवाला एक प्रका-
रका छन्द।

घाम, (न०) वंसस्य अमं (मूलं)। वंसकी जड़।
कुलमें पहिला।

घीघर, (पु०) वंशी (वंसंजघार्यं) भरति। घृ+अन्।
बसरीबजनेवाला। धीकृष्णबी।

घ्य, (घि०) वंशे (सत्युले) जात। अच्छे कुलमें
उपजा। खान्दानी।

घ्, कौटिल्य (कुटिल होना)। विपर्यं होना। अह०।
जाना (गति)। घट० भ्रा० आ० सेद्। हरिद।
बहुते। अवैक्य।

घ, (पु०) वकि+अन्। घृ० “ न ” का खेर होना है।
इस नामका पक्षी। बगला। एक फूलोवाला इल। कुबेर।
एक राक्षस (जिसे भीमसेनने मारा था) एक प्रकारकी
दवाई काठनेकी कला। धीहण्णसे माटपया एक दैत्य।

घपञ्चक, (न०) कर्तिक (कतक) के छत्रपक्षी
एकपक्षीके डेकर शंभु त्रिभिर्वे।

घकवृत्ति, (पु०) वक इव सार्धराय वृत्तिवेद्य यस्य।
जिसकी चेष्टा बगडेकी नाई अपने मनबको सिद्ध कर-
नेहारी है। हारेको ठगनेवाला जीव।

घकमतिन्, (क) (पु०) वकमन+अस्त्यर्थे इति ठन् वा।
बगडेके मतको धारण करनेवाला। बकमनधर।

घकुल, (पु०) वकि+कुलच्। नलोपः। इस नामका फूलो-
वाला वृक्ष।

घकू, (गति) जाना। भ्वा० आ० सट० सेद्। वकते।
अवकित्।

घकव्य, (न०) वक्+तव्य। कुलित। निन्दित। हीन।
और कुट। कथनीय। कहनेका वक (घि०) “ भावे क ”
कथन (कहना) (न०)

घकत्, (घि०) उचितं बहु वक्ति। वक्+न्वु। मुनासिब।
बहुत बोलनेवाला।

घकत्र, (न०) वक्ति अनेन+हृन्। जिससे बोलता है। मुख।
मू०। एक प्रकारका कपडा। एक प्रकारका छंद।

घकत्रदोधिन्, (पु०) वक्त्रं दोषयति। द्यु+निच्+
गिति। जम्बीर (नीबू)। मुखको छाप करनेवाला दाम्बूल
(पान) आदि (घि०)

घकत्रासय, (पु०) वक्त्रस्य आसवं इव। मुखका मानो
मय है। अक्षररथ। होटका रथ।

घक, (न०) वकि+अन्। घृ० न लोपः। नदीवह (नदीकी
टेढ़)। शनेधर। शनीधर। मंगलग्रह। रद। त्रिपुर
दैत्य। और निरछामाना। उसवाला (टेढ़ा) (घि०)।
“ राहुवेनु सदा वकी ” इति ज्योतिषम्।

घकानुण्ड, (पु०) टेढे मुखवाला। “ वकं मुखं अस्य ”
गणेशजी।

घकभाय, (पु०) वकः भावः। टेढ़ा भाव (छपठ)।
टेढ़ापन। कुटिलता। छल।

घकान्त, (पु०) वकणि अज्ञानि अस्य। टेढे अंगोवाला।
हंस। कुटिल अवयववाला (घि०)। कर्म०। कुटिल।
टेढ़ा सारी (नन)।

घकिस, (न०) वकस्य भाव+इमनिच्। कौटिल्य। टेढ़ापन।

घकौकि, (क्री०) कर्म०। कुटिलोक्ति। टेढ़ापन (वह
बाक्यका जीवन है)। काव्यका अंग। और काहुकवन।
रमन्। उद्गा।

घकू, रोच (पुनःकारना) भ्वा० पर० गट० सेद्। बलति।
अवशीरु।

घकस, (न०) वरु+असन्+सुट्। इत्य। डरम्। छट्टी।

घकः (श) स्थल (न०) वक्ः स्वके इव। क विस्म-
लोपः। अण्की छट्टी।

घकोज, (पु०) वकति जन्वते। जन्+घ। छट्टीर विक-
ल्पा है। हन। कम्पा। निस्तान। “ वनेवहवाट ”
इत्युक्त्।

वक्षोह, (पु०) वक्षि रोहति । हृत्+क । छातीपर उत्पन्न होता है । स्नान । मग्ना । पिसान ।
 वक्ष्, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेद । इदित् ।
 वहति ।
 वग्गाह, (पु०) अव+गाह्+घञ् । "अव" के अङ्ग लोप-
 विकल्पसे होता है । "अवगाहन" । स्नान । नहाना ।
 वघ्, गति (जाना) । निन्दा करना । और शुरु करना ।
 सक० । जम् (जल्दी जाना) । भक० भ्वा० धा० सेद्
 इदित् । वंघते ।
 वङ्ग, (पु०) वङ्गि+घञ् । नदीवङ्ग । नदीकी 'टेड' । पल्य-
 यन । पलाना । काठीका मोहडा ।
 वङ्ग, (न०) वङ्गि+अच् । एक प्रकारका धातु । रांगा ।
 "रजाकरसे के ब्रह्मपुत्रतक वंगदेश है" । एकदेश ।
 पु० व० व० । चन्द्रवंशी एक राजा (पु०) ।
 वङ्गज, (न०) वंगत् जायते । जन्+ङ । वंगसे उपजा ।
 सिन्दूर । वंगदेशमें उत्पन्न हुआ (त्रि०) ।
 वङ्गशुल्यज, (न०) वंगशुल्वाभ्यां (रंगताभ्यां) जायते ।
 जन्+ङ । रांगा और तामासे मिलाहुआ एक धातु ।
 कांसी,
 वङ्गसेन, (पु०) वङ्गं इव शुभ्रा सेना (पुं०) अस्य ।
 रांगेकी नाई जिसका फूल चिह्न है । वक्त्रक्ष ।
 वङ्गारि, (पु०) ६ त० । हरिताल । यह रांगे धातुको
 जलदेती है ।
 वच्, कहना । भदा० द्विक० पर० अनिद्र । वक्ति । अवे-
 चत् । वषा ।
 वचन, (न०) वच्+स्त्युद् । कथन (कहना) । वाक्य
 फिकर । सौंठ । व्याकरणमें सख्याके अर्थवाला सुप्-
 तिह्ररूप प्रलय ।
 वचनप्राहिन्, (त्रि०) वचनं शुक्ति (तदनुसारेण
 आचरति) प्रहृ+णिनि । जो वचनके अनुसार आचरण
 कर्ता है । वचनमें रहनेवाला । वशीभूत । काबूमें रहने-
 वाला ।
 वचनीय, (त्रि०) वच्+अनीयद् । वचनीय । कहनेके
 लायक । निन्दाके लायक । और लोकापवाद । तोहमत ।
 वचनेस्थित, (त्रि०) वचने (वाक्ये-तदुपरिस्थावारे)
 तिष्ठति । स्था+क् । अलङ्कृ सामा० । वचनपर उदरता
 है । वाक्यका टीक २ पालन करनेवाला । वचने आया
 हुआ ।
 वचस, (न०) वच्+असुन् । वाक्य । वचन ।
 वचसांपति, (पु०) ६ त० । अलङ्कृ सा० । वृहस्पति ।
 देवपुर ।
 वचस्कर, (त्रि०) वचः करोति । कृ+अच् । वचनको
 मन्त्रकृते वचने उच्यते । "वचस्करिणोऽप्युच्यते" ।

वच्चा, (स्त्री०) वच्+अच् । "वक्" इत्य-
 घञ्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेद् ।
 अवाजीत् । धनजीत् ।
 वज्र, (पु० न०) वज्र+अच् । हीरक (ही-
 इन्द्रका एक अन्न । (यह दधीचि मुनिने
 गयाथा) । बालक । एक तोहा ।
 म्म आदि सप्ताईस योगमेंसे एक (न०) ।
 श्रीकृष्णका पदपोता । एकराजा (पु०)
 वज्रचर्मन्, (पु०) वज्रं इव कठिनं चर्म इव
 चर्मडा वज्रकी नाई सहत हो । एकराजा ।
 वज्रदन्त, (पु०) वज्रं इव कठिनो दन्तो इव
 दांत वज्रकी नाई सहत हो । शहर (श-
 मूषिक (मृत्ता) । "वज्रदान" यही अर्थ ।
 वज्रधर, (पु०) वज्रं धरति । वृ+अच् ।
 इत् ।
 वज्रनिघोष, (पु०) ६ त० । वज्रकी अर्थ
 "वज्रनिघोष" ।
 वज्रपाणि, (पु०) वज्रं पाणौ यस्य । त्रि०
 है । इन्द्र । "वज्रहस्त" "वज्रकर" ।
 वज्रपातः-पतनं, (पु० न०) वज्रस्य पातः
 राना । विजलीका गिरना ।
 वज्रपुट, (न०) वज्र इव कठिनं पुटं इव
 पडदा वज्रकी नाई सहत है । औषध (हां-
 पात्र (बर्तन) "औषधीपाचनपात्र" ।
 वज्रमय, (त्रि०) वज्रात्मकं । मयद् । स-
 सहत ।
 वज्रिन्, (पु०) वज्रं अस्ति अस्मिन् ।
 इन्द्र ।
 वज्र, (प्रतारण) ठगना । भ्वा० पर० सक०
 वेद् । वक्षति-अवशीत् ।
 वज्रक, (पु०) वच्+णिच्+गुल् । गुणत (त-
 (नीच) और प्रतारक (ठगनेवाला) । इत् ।
 वज्रन, (न०) वच्+अगुल् । प्रताला । ठगने
 चीजको औरतारहते वर्णन करके धुरीको
 करना (झुलाना) । "वुच्" वचना (स्त्री०)
 वज्रल, (पु०) वच्+अलच् । वृ० । वचः का
 अशोकवृक्ष । वैतमवृक्ष (वैतका इत्) ।
 वक (टेडा) (त्रि०) ।
 वद्, (वैद्यन) धरना । द्विसाकला । पु० इत्
 वदयती-ते ।
 वद्, (विमानन) क्षिप्य करना । पु० इत्
 पर० वद० सेद् । इदित् । वदयती-ते ।
 वदन्त । अवशीत् ।

(बधन) बहना । भ्वा० पर० द्विक० सेद् । इति ।
 यति ।
 (स्तेय) चोरी करना । पर० सक० सेद् । इति ।
 यति ।
 (पु०) बद्+अच् । इस नामका एकपक्ष । सनकी बनी-
 है तात । रस्ती ।
 (पु०) बद्+हुन् । पिठकमेद । बदा ।
 (श्री०) बद्+अच्+दीप् । गोलखरुपका पदार्थ ।
 सी । "साथे बन् हम्" । "बटिका" यही अर्थ ।
 (पु०) बद्+उ । माणवक । बालक । और प्रज्ञानारी ।
 (पु०) बद्+उक । बालक । भैरवविशेष । एक
 तीर्थ ।
 (सामर्थ्य (ताकतवाला होना) । भ्वा० पर० अक० सेद्
 षति । अवाठीन्-अवठीत् ।
 (पु०) बद्+अन् । गृह । बेवहार । और अम्बष्ठ ।
 (प्रप्रारका कर्णसेकर । घाठ । लुधा (त्रि०) ।
 (विभजन) बाँटना । पुण० उभ० सक० सेद् ।
 रित् । कण्ठपनि-से ।
 (घेयन) घेरावेना । भ्वा० आ० सक० सेद् । कण्ठे-
 मि-गी, (श्री०) बन्धने (आरपते) अत्र । बद्+
 अभि वा दीप् । जहाँ चढ़ते हैं । छाया । गृहवृक्ष ।
 बरही चोटी । प्रातादाम्बुगृह । महलके सिसारका पर ।
 डेन, (न०) बद्+इन् । बटि इति । लोक । मच्छि-
 ओको पकड़नेके लिये टेके लोहेके बटिकावा पदार्थ ।
 मरपी पकड़नेवाली पुष्पी ।
 (त्रि०) बद्+रक् । लस क । बुरद । धेष्ट ।
 अष्टा ।
 (पु०) बद्+पम् । साथे बन् । भावे णुत् ।
 विभाजक (बाँटनेवाला) । हिसा करनेवाला ।
 (अन्व०) धारण (बराबरी) ।
 (अन्व०) बन्+फ । खेद (तद्गीक) । अनुकम्पा
 (दया) । एवं (लुजी) । विस्मय (टैरानी) । आनन्दन-
 लण्ड, (पु०) अक्ष+तडि+अच् (एक मुनिके नाम ।
 तैर, (पु०) अक्ष+तंग्+अच् । "अक्ष" के अक्ष लोप ।
 एक बानका भूषण (जेवर) । शेरर (चोटी) । शिरका
 भूषण । इत्येक प्रकारका गहना । बानहूल ।
 लोका, (श्री०) अवगन्त लोके बलाः । "अक्ष" के
 "अ" का लोप । जिनका संगान बुर होयगा । संगान-
 रहित स्त्री ।
 लस, (न०) बग्+भ्वा । बस स्वत (पानी की जगह) । सी आदि-
 का शिशु (बच्चा) । (बछ्वा) और बगर (बरिग)
 (पु०) ।

यत्सक, (न०) बल इव+द्वयार्थे बन् । पुष्पदासीस ।
 हीरा-वसीस । इन्द्रयव (इन्द्रजी) और बल (बछ्वा)
 (पु०) ।
 यत्सतर, (पु० श्री०) धुरः बल+तरच् । धुरवता । छोटा
 बछ्वा । दम्प । छोटा सांड ।
 यत्सनाम, (पु०) बलान् (पशुविद्युत्) नन्वति (हिनसि)
 नभ्+अच् । पशुओंके बच्चोंको मारता है । एक प्रकारका
 विष । । अहिर ।
 यत्सपत्तन, (न०) बलस्य (बागराजस) पत्तनं । बल-
 राजका नगर । उत्तरदेशमें कौशाम्बी नाम नगरी ।
 यत्सपाल, (पु०) बलान् पालयति । पान्+अच् । बछ्मों-
 को पालता है । धीरुष ।
 यत्सर, (पु०) बग्+सरन् । बाह्र महीनेका बल । बरिस ।
 यत्सराज, (पु०) चंद्रवंशका एक राजा ।
 यत्सरान्तक, (पु०) बलारम्य अन्तं करोति । अन्त+
 णिच्+णुल् । बरिसको समाप्त करता है । पाल्पुन
 (पालन) का महीना (बच्चे पैनेके शुरू होना है) ।
 यत्सल, (त्रि०) बलं शक्ति लासक । श्रेष्ठयुक्त । प्यारबाल ।
 पिशाच । "बालसत्वरत" (पु०) । उजबल (त्रि०) ।
 यत्सज्जाला, (श्री०) बालानां जाला । बछ्मोंका पर ।
 गोबादा ।
 यद्, मूल (नाचना) अक० । अभिरादन (एक०) भ्वा०
 आ० सेद् । इति । कण्ठे । अक्षिद्विष्ट ।
 यद्, (बाक्थ) बोलना (संदेशा देना) । भ्वा० उभ०
 सक० सेद् । ब्रति-से । अवाठीत् । अक्षिद्विष्ट ।
 यद् (बाक्थि), बोलना । भ्वा० पर० सक० सेद् । ब्रति ।
 यद्, (त्रि०) ब्रति । बद्+अच् । बच्चा । बोलनेवाला ।
 यद्न, (न०) उदयेऽनेन । बद्+करणे स्तुर् । शिले
 बोलनेवाला है । मुत् । मूं । "भावे स्तुर्" । बधन ।
 बहना (न०) ।
 यदा(इ)न्य, (पु०) बद्+अन्व । इ० का लोपः ।
 भूतिदानशील । बहुत दान देनेवाला । बदा दान ।
 यदास, (न०) बद्+आमन् । एक प्रकारका फल । बदान ।
 यदायद्, (पु०) अलानं ब्रति । बद्+अच् । नि० ।
 बहुत बोलनेवाला ।
 यध्, (श्री०) कण्ठे विभूयैत्य् परिणम् । बद्+क-
 पुबच् । विभके धरते पतिके बरधे पणुंकरं कष्टे है ।
 अन्वो । जेक । और । नई विभकीये डुरही की ।
 बद् । नं ।
 यधूजन, (पु०) बर्नं । नदीजन । कौटोय । श्री । और ।
 यधू(धु)टी, (श्री०) अन्वा यध् ।
 यधी । छोटी उपरवाली श्री ।
 "येवयधूटीपुडुलर्षयम्"

पु० न०) उप्यसेडय । बरं बोया जाता है । दुर्गन्-
 ३ । निरुका नगरादि । बचाबोट । शर्बल । हाईने
 ला गया मशीका टेर । भेन । धूरी । मिनारा । भोर
 ६ (हीरा) । जनक । पिना । प्राचीर (सफील) ।
 प्रयागि (पु०) ।

गति (जाना) । भ्या० पर० गक० घेद् । बभ्रति ।
 रीत,

ग्नार (बमन-ऊपर छल करना) । भ्या० पर० सक०
 । बमति । अचमीद् । "ट्ट" बमपु । "ण" बमः ।

(न०) बम्+त्युद् । मर्दन (मलना) । छर्दन
) । अर्दन (मांगना) । भोर बहुत निकालना ।
 (सन) (पु०) ।

(स्त्री०) बम्+रन् । छर्दन । के । अग्नि (आग)
) । धूर्त (लडा) (वि०) ।

(पु०) बम्+निव+क । क्लोन्नर । जिताने बमन
 । के कीर्णदं ।

(गति) जाना । भ्या० भा० सक० सेद् । वयते ।
 चिष्ट ।

(न०) अम्+अमुन्-वीभावः । विद्यु । परिदद ।
 ने । बालपन आदि अवस्था । उमर । भोर जवानी ।

(ग०) स्व्य (पु०) बवसि सिष्टति । मित्र (दोस्त) ।
 जे०) युवा (जवान) (स्त्री०) "बयस्था" आमला ।
 १६ । मिडोय । छोडी इलायची । सटेवी । जवान
 रत ।

३, (पु०) बयगा मुन्यः+यद् । एक जैसी उमरवाला ।
 मानववरक । सखी । सटेवी । (बियां टार) ।

४, (न०) बय्+उन्नन् । ज्ञान । इलम । दानाई । देव-
 वा मंदिर (पु०) । तपीका । नियम ।

५, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

६, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

७, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

८, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

९, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

१०, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

११, (पु०) बयो यौवनं धत्ते । पा+अमुन् । जवा-
 णिधो धारण छत्ता है । तरण । जवान ।

वरण, (न०) वृ+स्युद् । कन्यादिवादाय जामात्रादेरभ्यर्थ-
 मानुसुलभ्यापारमेदः । कन्याभादि देनेके लिये जावाइको
 एक प्रकारकी प्रार्थना करना । छपेटना (घेउन) । पुरो-
 दितआदिछो किवाभोमें लगानेके लिये एजना । उद्ग
 (छंट) । प्राकार (बोट सफील) । भोर बरणहूर ।
 बनारस (काशी) की उत्तर घीमाही एक नदी (दर्या)
 (स्त्री०) ।

वरण्ड, (पु०) वृ+अण्वच् । एक प्रकारका मूका रोग ।
 हाथिभोंकी लडाईका अवाका ।

वरत्रा, (स्त्री०) वृ+अण्वच् । हृत्किदास्यरञ्जु । हाथीकी
 पेदी । लतामा ।

वरत्यच, (पु०) वरा लया मस्य । जितका छिलका अच्छा
 है । नीमका द्रव्य ।

वरद्, (वि०) वरं ददाति । दा+क । अमीष्टदाता । चाही-
 गई बलुछो देनेद्वारा । भोर प्रसन्न (सुख हो गया) ।
 बन्दा (लटकी) । अधर्गया । भादित्यभजा । दुर्गा (स्त्री०) ।

वरदाचतुर्थी, (स्त्री०) मापके छुद्रपदाकी चतुर्थी ।

वरम्, (अव्य०) वृ+अम् । ईषदवीष्ट । मोटा प्यारा ।
 बहुत अच्छा । बेहतर ।

वररुचि, (वि०) वरा रुचिः यस्य । अच्छी प्रीतिवाला ।
 पाणिनिमुनिके सुत्रोंपर बार्तिक बनानेवाला कालायन
 मुनि । विक्रमादित्यकी समाका एक पण्डित ।

वरलम्घ, (पु०) वरं उत्कर्षे । पुंभेपु लम्घो येन । फूलोंमें
 जितने अच्छापन लाभ किया है । परनि० । चम्पक
 (चंबेवा फूल) । प्राप्तपर । जितने व हासिल किया है
 (वि०) ।

वरपरिणी, (स्त्री०) वरः भेतो वर्णः प्रवेता अस्ति
 अस्याः+इनि । सारीफवाली । उत्तम स्त्री । नेक भोरत ।
 । छाल । हल्दी । रोचना । पार्वतीआदि ।

वरतनु, (स्त्री०) वरा तनुः यस्याः । सुन्दर स्त्री । अच्छे
 शरीरवाली ।

वरपरिणी, (स्त्री०) वरः वर्णः अस्याः । अच्छे रंगवाली स्त्री
 (भोरत) । बहुतही उरुष्ट मुख (बिहरे) वाली स्त्री ।

वराक, (पु०) वृ+वाकन् । पिनी । मुद (न०) ।
 अवर (छोटा) । तोचनीय (बेचारा) (वि०) ।

वराद्ग, (न०) वर्म । मसक (माया) । "त्रियते" आ-
 त्रियते (अच्छाचले) । वृ+अप् । वर्म० । गुण । गुदा ।
 मोनि । पुग । ६ ब० । गज (हाथी) । विष्णु । भोर
 कामदेव (पु०) । अच्छे अंगोंवाला (वि०)
 हाथीनी (न०) हल्दी+बियां शीप् ।

वराश्रिन्, (पु०) वराश्रं अस्ति अस्स+इनि । अच्छे
 अंगवाला । अच्छेपुत्र । अंगलदेत । अच्छे अङ्गवाला (वि०) ।

वराश्रिन्, (पु०) वराश्रं अस्ति अस्स+इनि । अच्छे
 अंगवाला । अच्छेपुत्र । अंगलदेत । अच्छे अङ्गवाला (वि०) ।

वराश्रिन्, (पु०) वराश्रं अस्ति अस्स+इनि । अच्छे
 अंगवाला । अच्छेपुत्र । अंगलदेत । अच्छे अङ्गवाला (वि०) ।

वराश्रिन्, (पु०) वराश्रं अस्ति अस्स+इनि । अच्छे
 अंगवाला । अच्छेपुत्र । अंगलदेत । अच्छे अङ्गवाला (वि०) ।

इ (सी), (स्त्री०) वर्षाणां लेखनसाधनं दृष्टिः, किं लिखनेका साधनरूपं दृष्टिः। लेखनी। बलम+ कन्। वही अर्थ।

ते, (पु० म०) ६ त०। वर्षाणां धर्मः। ब्राह्मणः वर्षाणां अगाधारण (साग) धर्मः। जैसे ब्राह्मणका करना, पशना, हान लेना आदि, शत्रियका ओसा पालन आदि।

कर, (पु०) संकीर्णते। सम्+कृ+अप्। वर्षातः संकरः। हा मेल होगया। मूर्धाभिविक्त आदि जाति। "यते वर्षमंकरः" गीता।

रू, (स्त्री०) वर्षां अक्षरानि अक्षरान्ते अनया। अइ+ रू। जिस्से अक्षरोंके निदान कियेजाते हैं। लेखनी। निम्न।

मन्, (पु०) वर्षं आत्मा स्वप्नं यस्य। अक्षरोंके लेखना। ध्वनिसरूपसे बिलक्षण आकार आदि। रचनाका एक प्रकारका शब्द।

हा, (स्त्री०) वर्षां अक्षरानि लेखनेन सन्ति अस्या+ हा। जिस्से अक्षर लिखे जाते हैं। लेखनी। बलम।

य, (त्रि०) वर्ष+क। स्तुन (सारीक कियागया)। लेन कियागया। और स्थानंतराप्राप्तित (मेघ बदला-गा)।

न्, (पु०) वर्ष- अक्षि अस्य+इनि। रंगवाला। विप्र- र। मूलत लिखनेवाला। लिखनेवाला। और ब्रह्मचारी। "अथर्व वर्षां विदितो महेश्वरः" इति प्रथमः। ब्राह्मण प्रादि जाति। "वर्षिणां हि वयो यत्र" स्थितिः।

रु, (पु०) इ+रु+युद्। एक प्रकारका पक्षी। यारहें। तिक। "वर्षका" इसी अर्थमें। घोड़ेका चुर।

न, (न०) इ+न+युद्। वृत्ति। जीविका। रोकी। "निच् भावे ल्युट्" स्थान (ठिकाना)। "निच् हरणे ल्युट्" जीविकाका उपाय (न०)। "ल्युट्" जीविकावाला। रहनेवाला (त्रि०)। वायस। बीआ। (पु०)।

नी, (स्त्री०) वर्षेति पादौ अत्र। जहाँ पाँव चलने हैं। पीयाना। "इ+निच्+आधारे ल्युट्" पथ। बाट। रास्ता।

मान, (पु०) इ+मानच्। आरम्भपरिष्कारका होहा। हात। मीरुद। शुरु कियाहुआ। जो खनम भरई हुआ।

ति-नी, (स्त्री०) इ+नृ+वा नीच्। लेख-। लिखना। नयनाशन। ओंछका कजल। सारीपर लेप करना। पीपदशा। पीपेकी बत्ती। बत्ती।

तिक, (पु०) इ+ति+कन्। बटेरनामी पक्षी। "इ+ अच् वर्त तत्र साधु" हितो वा टन्"। भार (बोला)।

पतिन्, (त्रि०) इ+पिनि। वर्तनशील (प्रायः समा- यने पीछे रहता है)। रहनेवाला। ठहरनेवाला। साँटनेवाला।

पतिष्णु, (त्रि०) इ+इष्णुच्। वर्तनशील। रहनेवाला। होनेवाला।

पतौल, (त्रि०) इ+उलच्। गोलसहायवाला पदार्थ। गोल। पाजर (न०)।

पतमैन्, (न०) इ+मनिन्। पथ। राह्य। बाट। आचार। तरीका। ओंछका पदार्थ।

पथे, छेदन (काटना)-पूरा करना। पु० उ० त० सेट्। वर्षयति-ते।

पथेक, (पु०) इ+थुल्। ब्राह्मणपथि (शामनहाटी)। पूराकरनेवाला। भरनेवाला। काटनेवाला। छेदक।

पथेकिन्, (पु०) वर्षेका वर्षेः अस्ति अस्य+इनि। तया। बड़ई। तर्जान।

पथेन, (न०) इ+थुल्। काटना। और पूरण (भरना)। इ+पिन्+स्यु। इच्छिकारक। बढानेहारा (त्रि०)। "इ+स्यु"। इच्छियुक्त। बढाहुआ। (त्रि०)। "नी" साहू।

पथेमान, (पु०) इ+मानच्। एरेडका दस्त। इच्छिशील। बढाहुआ (त्रि०)। पारण (प्रकारका महीका पात्र। कुआ)। विवाला। विष्णु। धनिओका एक घर। एक देस। एक नगर। बढाहुआ (त्रि०)।

पथेपन, (न०) वर्षे (छेद) करोति। वर्षे+पिन्+ व्याप्+ननो भावे ल्युट्। नदी काटनेके बंधेका भेग- स्वरूप एक प्रकारका सेतकार। नदीछेदन।

पथेष्णु, (त्रि०) इ+इष्णुच्। इच्छिशील। बढाहुआ।

पथेन्, (न०) इ+मनिन्। बचन। राहाह। संजोह। शत्रियकी उपाधि (पु०) नामके पीछे आता है।

पथेहर, (पु०) वर्षे हरति। इ+अच्। बचन धारण करनेवाला अथवा विशेष। तरुण। जवान।

पथित, (त्रि०) वर्षे करोति। निव+क। जिरह परि- देहुए। शतसहाह। और हिम्मत कियेहुए (उपुञ्ज)।

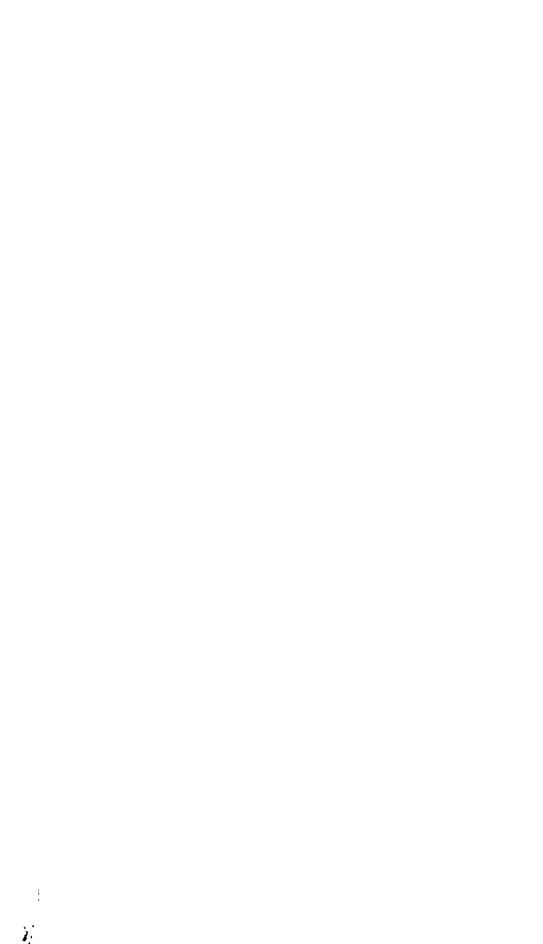
पथेणा, (स्त्री०) वसिति वर्षति सम्भारते अच्। वर २ शब्द करनेवाली एक प्रकारकी मक्की। साह। मक्की।

पथे, (र्) र, (न०) र्व् (र्)+अच्। हीन पीय चदन। और मधुरस। पानर (नीच)। मूषे (त्रि०)। "नक्षत्रमिच्छन्ति वर्षीः" इत्युद्धृतः। एकदेस। बालपु- स्त्री इहत् (पु०)।

पथे, (पु०) इ+अच्। वृत्ति (वर्तना)। जम्बुद्वीपका एक भाग। और जम्बुद्वीप। "वर्षेति अच्" मेघ (बादल)। और बारह महीनेका समय (इच्छ)। बरिस। "प्रभव" आदि साठ वर्षम (पु०)।

विभक्त्यर्थः, (वि०) वि+भक्त (क्) भक्तृच् । प्रकाश-
 र्थम् । चमकनेकात् ।
 विक्रान्त, (स्त्री०) विशेषेण कथ्यते भागी । बद्ध् ।
 कर्त्तव्यः । मर्त्यः ।
 विक्रान्त, (वि०) वि+भक्त (क्) भक्तृच् । प्रकाशपुष्प ।
 शिल्पकृत् ।
 विकार, (पु०) वि+हृ+कम् । प्रत्येकव्यवहारपरिणाम ।
 व्यापकत्वात् शोच्यते इत्यन्तात् । तद्वर्तीनी । बीमारी ।
 रोगः ।
 विकारहेतु, (पु०) विकारम् हेतुः । विकारं विरक्त
 (विगतने) हेतुत्वात् कारण (साधन-सम्बन्ध) ।
 विकारिन्, (वि०) विकार+इति । विहासकालः । बदलने-
 कालः । विगतजानेकत्वात् ।
 विकार्य, (पु०) विरक्तः कालः । विगतशुभा-वगिच्छक
 (देवता और शरीरभारिका नाम न करनेवाला)
 समय । शरीरवाक्यक वेद्यः । शरीरवाक्य समय । दिनेके
 अन्यथा समय । गात्र ।
 विकारा, (म०) विरक्तः कालः । रक्तः । अकेले । प्रकाश ।
 चमक । आकाश । आत्मान । स्वर्ग ।
 विकारिन्, (वि०) वि+भक्त+णिनि । प्रकाशपर्यन्त ।
 चमकनेकालः । विकार्य । विकार्युष्मा ।
 विकारि, (पु०) वि+हृ+कम् । विरक्तः । परितः । और कुर्यात् ।
 "विहीर्यते-क" । विरक्त दूर करनेकेलिये केहीगई
 श्रेयसापेक्ष (और सारिओं) आदि ।
 विकारिण्य, (म०) वि+हृ+कम् । वि० । श्लेषः । फेंकना ।
 विगन । माला । और ज्ञान (जाणा) । आकृष्टा
 वृत्त (पु०) ६ ब० । विरक्तचेरहित (बगैर) (वि०) ।
 विकारिण्य, (वि०) वि+हृ+कम् । विकारिण्य (फेंकना) ।
 फेंकना ।
 विकारि, (पु०) स्वर्गवर्तमें सत्सङ्ग राजाका पुत्र । एक
 पत्नी ।
 विकारिण्य, (वि०) वि+हृ+कम् । हरिके हेतुः । सुखीका
 सब विकार पुत्रकी उदात्ति इत्यादि) से जिसके
 रोयों सके होगये है । विरक्तप्रभ । विगतदरहा
 विकार, (वि०) वि+हृ+कम् । बीमारी । शिवाकाल शो-
 ग्या । मलिनोद्दत । मीठा होगया । और रोगपुष्प ।
 बीमार होगया ।
 विकारि, (पु०) वि+हृ+कम् । रोग । बीमारी ।
 विकार, (पु०) विशेषेण कामनि । बहुत उस्ताह कर्ता है ।
 वि+भक्त+पञ्च-भक्तृच् । विविचम विष्णु (कामनावतार) ।
 विकारिण्य राजा, "भावे घण्ट" कमण । पौं रक्षता ।
 "हरणे घण्ट" द्विः । (पौं) । बहुत बहादुरी
 (शौर्योत्साह) । विकारिण्य (हाकन) । ६० वर्षोंमें
 एक वर्ष । ६ हादद

विभक्त्यादिय, (पु०) विक्रमेण शारित इव । सामर्थ्ये
 मनो र्थम् है । इन नामने प्रसिद्ध एक राजा (इसके
 समयमें शरीरका बहुतती प्रचार था-इसीसे संभव चलता
 है) । "विक्रान्त" दही भाव ।
 विक्रान्ति, (पु०) वि+कम्+णिनि । सिंह (शेर) और
 गिणु । विक्रान्तुष्प (बहादुर) (वि०) ।
 विक्रान्त, (पु०) वि+भक्त+भक्तृच् । मोत छेहर दूगरेके सार-
 (कथने) से प्राप्त करनेवाला व्यापार । घेचना ।
 विक्रान्तानुदाय, (पु०) विक्रयस अनुदानः (पश्चात्तापः) ।
 घेचकर पीछे पडनावा ।
 विक्रान्तिक, (पु०) विक्रयः भाक्ति शस्त्र+कम् । विनेता ।
 घेचनेकालः ।
 विक्रान्ति, (वि०) वि+कम्+णिनि । विक्रयकर्ता । घेच-
 नेकालः ।
 विक्रान्त, (पु०) वि+कम्+कम् । सिंह (शेर) ।
 दूर (बहादुर) । "भावे क" । विक्रम । बहादुरी ।
 विक्रान्ति, (स्त्री०) वि+कम्+कम् । पादविक्षेपणा ।
 पतारना । पतना । घोड़ेकी गति (उड्डना) ।
 बहादुरी । शक्ति । प्रवेश ।
 विक्रान्ति, (स्त्री०) वि+कम्+कम् । विकार । बह
 भासित्यु (और शक्ति) दूरि रही) वक्तु है । अन्यथा
 पत्नीनाम (और तदर्थे बदलना) ।
 विक्रान्त, (पु०) वि+कम्+कम् । विक्रययोग्य पदार्थ । घेच-
 नेकालः ।
 विक्रान्त, (वि०) वि+कम्+कम् । व्याकुलीभाव । पत्रराहट ।
 गत शयाहुभा ।
 विक्रान्त, (वि०) वि+कम्+कम् । आर्द्र (गीला) । शीर्ण
 (टटाहुभा) और जीर्ण (पुराना) ।
 विक्रान्त, (पु०) वि+कम्+कम् । राग (छोडना) ।
 प्रेरण (चलाना) और दूर करना । फेंकना ।
 विक्रान्तिक, (स्त्री०) विक्रयस (दूरीकरणस) जनिका
 शक्तिः । दूर करनेको उत्पन्न करनेवाली शक्ति । पेशान्तमें
 कहीगई एक प्रकारकी लक्षिकी ताकत । वह शक्ति
 जो ब्रह्माण्डको रच देती है ।
 विक्रान्त, (वि०) विगता नास्तिका बलः । सादेशः । गतनाशिक ।
 जिसका नाक दूर होगया । नक्कडा । "व्यादेशः" ।
 "विह्व" शी ।
 विक्रान्त, (वि०) विशेषेण कथ्यतेः (प्रसिद्धः) । बहुत
 मशहूर हुआ ।
 विक्रान्त, (म०) विशेषेण कथ्यते । गण+स्तुच् । बहुत
 गिना । श्रण (कर्ता) चुका देनेके लिये रक्तमय गिना ।
 विगत, (वि०) वि+गम्+कम् । प्रयासरहित । लक्ष्यरहित ।
 विशेषण । बहुत गया । और अगण (दूर गया) ।



विभाषना, (स्त्री०) एक प्रकारका अलंकार (जिसमें वाक्यके विना वाक्योंकी उत्पत्ति प्रतीत होती है) ।
 विभाषयी, (स्त्री०) विभाषावधिपूर्वीपञ्चनोरप् । शक्ति । रात । हल्पी । कुटनी ।
 विभाषयु, (पु०) विभाषयुक्ता वगैरे कर्म्य । जिसकी विरहमें बहुत चमकनेवाली हैं । सूर्य । भाषका इत्ये । भाग । विप्रक दृष्ट । एक शर ।
 विभाष, (पु०) वि+भु+विभ+पण भ (साहित्यशास्त्रमें) शरीर वा मनके स्वरूपको उत्पन्न करनेवाली कोई एक अवस्था (हालत) (आबके तीन मुख्य विभागमेंसे एक)
 विभाषा, (स्त्री०) विरहः भाषा । वि+भाष+भा । विषेण । विभाष । व्याकरणमें एक पद्यमें दोनेवाला विकल्प-विधान । "नयेति विभाषा" । दोनो तरह
 विभिन्न, (वि०) वि+भिद्+क । प्रकाशित । चमकाहुआ । विरहित । विरहाहुआ । विभक्त । बांटाहुआ । सुरा । कल्पहुआ ।
 विभीतय, (पु०) विरोधेण भीत इव । हर्षमें बन् । मानों बहुत डराहुआ है । घरेडेवा इत्ये ।
 विभीषण, (पु०) विरोधेण भीषयते वाक्य । भी+भिष्-सृक् च ल्यु । जो वायुओंको बहुत डराता है । रावणका भाई । राक्षस । मलयुज ।
 विभीषिका, (स्त्री०) वि+भी+भिष्+सृक् च । भाषयतिदिदेते ल्यु । भयप्रदरीन । डर दिताना । डर ।
 विभु, (पु०) वि+भू+ङ । सर्वमूर्तरेणुषु । एक वाक्य-कालीसे निकालाहुआ । प्रभु । मानिक । भाषनवाला । महादेव । और प्रभु ।
 विभूति, (स्त्री०) वि+भू+विभ् । भव्य । वा । वाक्य । भाषना आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य ।
 विभूया, (स्त्री०) वि+भू+अ । शोभा । और भूयण । शमाया । गहना ।
 विभ्रम, (पु०) वि+भ्रम्+पण् । क्लिप्तिके ग्राहकका अर्थ । एक प्रकारकी भ्रम (हर्षत) । बहुत घूमना । रोना । घरेड । और भ्रमण (घूमना) । विभ्रमका विज्ञान ।
 विभ्रान्, (वि०) वि+भ्रान्+विप् । भ्रमण (जेकर मरना) आदिसे चमकयुआ ।
 विमत, (वि०) वि+मन्+क । विरहमयिषुषु । कर्णिकण-एवमया । वैरमयवाला । दुःखक ।
 विमनस्वरह, (वि०) विविशं मनो वक्ष्ये वा+क्यु । विना (विरह) आदिसे मन्+उपेधित (चरतेदेहुर विज्ञानक) ।
 विमर्द, (पु०) विरहदेउमी । वि+मर्द+पण् । कर्णिक-कृषिरहा इत् । "अदे च्" मर्दं । मन्थन । कर्म ।
 विमर्दि, (पु०) वि+मर्द+पण् । चरदरी । रोव । विरह । विमर्द । दूरीत । "चच्" वरी कर्ष (पु०) ।

विमर्ग, (पु०) वि+मर्ग+पण् । विरह । नरकका एक भग ।
 विमल, (वि०) वि+मो मनो यमलत् । विमो मं वृ दुभा । हल्फ (माय) । निर्मल । "विमो मनो यम" । यमलप क्षेत्रमें एक प्रकारकी देवी (स्त्री)
 विमान्, (स्त्री०) विरहा मया । मनुष्यको । मंथी मंथिन । मंथेनी मां ।
 विमान्मू, (पु०) वि+मनु+पणे । जन्+ए । मंथेना मंथी ।
 विमान, (पु० न०) वि+मन्+पण् । वि+मन्+मृदु वा । देवदान । देवनालीकी माती । हृद । कर्णिकका एक पर । चोटा (पु०) हल्फ लक्ष्मी और परीमल (माय) (न०)
 विमानचारिन्, (वि०) (विमाने चरति) । विमल (मंथीकी माती)में घूमनेवाला ।
 विमार्ग, (पु०) विरहो मर्गं । पुण एतत् । पुण । मरुत लक्ष् । विरिहणवार । पुण कानकलन ।
 विमयुक्त, (वि०) विरहं (अन्तमुक्तं) मुक्तं कथं । कथितकथन कथन । दुःखन । विरिमुंय । और विरान (हटयुता) । मुंमोहेदुत् ।
 विमुद्, (वि०) विरहा मुता (मुमुक्षुवत्) इव । जितका बदरोना दारुणा । विरिजि । विरिमुक्त । मोदरिजिन ।
 विरह, (पु० न०) वी+मन्+सृक् लर्म । इरं (हीन-आर्त्तना) मी प्रणीत होयी परछीनका अर्थ । और कानकल । पूर्व कर्षिका कथन (दया) । और इवमया (विरहा) (पु०) । "विमर्दः चर+अन्+लक्ष हृत्" । विरिहणवार ।
 विरह्य, (न०) वि+मन्+विप्+लक्ष् । इत् । कथय । कानकल ।
 विरहहर, (स्त्री०) विरहका मना । कथनकी रंत् । मंथीकी माती । कथनकी ।
 विपात, (वि०) वि+प+क । पट । टि । वैरल । विरंज ।
 विपोग, (पु०) वि+पुन्+पण् । विरहेद । विपेद । १ । २० । प्रविशोत् केर ।
 विपोगिन्, (पु०) वि+पुन्+विप् । कथय । कथनकी । विपेदका (वि०) ।
 विरक्त, (वि०) वि+रक्+क । विरिहण । पुट । और विरान । हटयुता । वेदुलकन ।
 विरिचिन्, (वि०) वि+रिच+क । इत् । विरिचुत् । कथनका । विरिच ।
 विरिजन्, (स्त्री०) विरं इते कथं । विरि इत् । हटयुत् । कानकल की । कथनकी । कथु कथन करणेका ।

विध्र(ध्र)म, (घु०) वि+ध्रम्+ध्र्+का वृद्धिः । विध्रमः । हटना । शाराम । किये बाराहे कामका अवसान (अंत) ।
 विध्रम्भ, (घु०) वि+ध्रम्भ्+घम् । विध्रम्भ (मरोना) । प्रलय । केविकलद (भीमसंबंधी मरणा) । और बध (बतल) ।
 विध्रम्भालाप, (घु०) (विध्रम्भस आलापः) विधावकी बातचीत । सुदमपुत्र संभाषण । विश्रवसे मराहुआ । परसर संभाषण (बातचीत अथवा बातालाप) ।
 विधाय, (घु०) वि+धु+पम् । प्रविधि । और ब्यापि (मराहरी) ।
 विधुत, (घु०) वि+धु+क । विधुत । मराहूर । प्रविद्ध ।
 विनिष्ठ, (घि०) वि+धिष्+क । विधुष (विडमराहुआ-अक-गहुआ) और सिपिल (बीला) ।
 विस्तेप, (घु०) वि+धिष्+पम् । विवोग । विछोडा । और टीलापन ।
 विभ्र, (न०) विष्+भ । जगत् । संसार । दुनियाँ । उगका अग्निमानी जीवात्मा (घु०) । धादके देवताविशेष (घु०-ब०-ब०) । सकल (घाण) (घि०) (इही शर्पमें सर्व-नामसेना होती है) ।
 विभ्रकर्मन्, (घु०) विधेयु कर्म (स्वागरो बस) । जितका काम सब स्थानमें है । सर्व । देवतिली । (देवताओंका कारीगर) एक मुनि । और परमेधर ।
 विभ्रहन्, (घु०) विधं करोति । ह्+किप् । विधको करो है । विधकम् । और परमेधर ।
 विभ्रहेतु, (घु०) विधे हेतवः अस्य । सबके सब जितका हांदा है । अनिदद ।
 विभ्र(प्र)हृत्सेन, (घु०) विष् (घु) भी सेना अस्य । जितकी सेना परिव्र हो (विष्णु) विभ्रंशु बस (भी०) ।
 विभ्र(प्र)हृ, (अव०) विधं अघति । विष् । सर्वतः । बाराँओर । विधायनी (सब ओर जानेवाला) (घि०) ।
 विभ्रघासिणी, (भी०) विधं घासति । घ्+सिनि । वृषिणी ।
 विभ्रघ्नन्, (घु०) विधं घ्नति (भसति) । घ्न+घनिन् । अघ । बगना । देवता विधकम् । और वृषिणी ।
 विभ्रग्भर, (घु०) विधं विभ्रति (घ्+भृ+घ्+घ्) । विधको घाता है । हर और विष्णु । वृषिणी (भी०) ।
 विभ्रहेतर, (घु०) विधं हेतो बस्य । किये संसार उपज बनाना करता है । बर मुपकल्प ब्रह्म ।
 विभ्रवेदन्, (घु०) विधं वेत्ति । विष्+भृ+घ् । संसारको जानना है । हरकरी देवता । और हर कुप बनेरहा ।
 विभ्रहृ, (घु०) विधं हृत्ति । हृ+भृ+घ् । संसारको रचण है । बरमुपकल्प ब्रह्म ।

विभ्रहृ, (घि०) वि+ध्रम्+क । जगदविषय । जितपर भोगा विचारा हो । "विध्रि" विषया श्री (बेवा भीता) (भी०) ।
 विध्यावी, (घी०) विधं अघति । अविध अघत ।
 विध्यान्मन्, (घु०) विधं अघ्ना दम् । अघ्नाया है । विष्णु । बरापन । परामन्ना ।
 विध्यामिन्, (घु०) विधं मित्रं अघ्ना (एहिसे होता है) । संसार जितका मित्र है । एक विधा पुत्र । एक राजा ।
 विध्याराह, (घु०) विधेयु एतदे । ए विधोमें समकता है । विधोका राजा । और ए विध्यापयु, (घु०) विधेयौ णु वन्मन् । विधेय गवोदा एव होता है । एक शर्प ।
 विध्यास, (घु०) वि+ध्रम्+घम् । "एह हरी इतनाह एक विलसि इति । प्रत्यय । घना ।
 विधेदेय, (घु०-ब०-ब०) बर्षी० । अउरुगम पूजेगये एग (अउ बारी) देवता । बर्षी (घु०) ।
 विधेरा, (घु०) ए त० । विधया मरिच "विधेधर" ।
 विध, मरिच (पंजाब) घु०-घ०-ब०-क । विधे विधे । अविधर । अविधरन् ।
 विध, (घ०) विष्+विष् । विष् । ईक । दूर विष् । (न०) विष्+क । बर । बघकरी ए एर । सुगाव (बरकरी हरी) भी विष् । एर (घु०-ब०) ।
 विधकण्ट, (घु०) विधं करोति बस्य । जिहवे ए है । जिहवे ।
 विधम, (घु०) विधं हति । (हृ+घ्) । वि (इहको मरता है) विनीच (बरेन) (बनेरहा हरा) । विधकण्ट । विधोः ए (घि०) ।
 विधन्तर, (घु०) विधं एव अघन्तु अने बर एहि बर्षे प्रणेयो नच बरेदेवता जिहवे है । मरिच । अंत ।
 विधन्त, (ब०) विधेदे बन्तु । एतन् । बर्षी । है ।
 विधन्तक, (घु०) विधं हन्ते बस्य-बर्ष । जिहवे ए है । बर्ष । एतन् ।
 विधकण्ट, (घु०) विधं हन्ते । ए-अघ्ना । बरेन बर्षी है । बर्ष । एतन् । "विधन्तक" इत्ये

विपम, (त्रि०) विगतो विरुद्धो वा यमः । असम । जो बराबर नहीं । अयुग्म (जो जोड़ा नहीं) जैसे तीन-पांच आदि । ऊंचा नीचा । दारण । सहन । सङ्कट । एक प्रकारका पद्य (न०) ।

विपमच्छद, (पु०) विपमाः (अयुग्माः) छदाः यस्य । समच्छद । सतीनेका द्रव्यतः ।

विपमज्वर, (पु०) विपम उग्रो ज्वरः । सह्यबुखार ।

विपमनयन, (पु०) विपमणि (अयुग्मनि) त्रीणि नयनानि अस्य । जिसके तीन नेत्र हैं । महादेव । शिवजी ।

विपमस्थ, (त्रि०) विपमे (उन्नतानते संकटे वा) तिष्ठति । स्था+क । ऊंचे नीचे वा संकटमें ठहिरता है । उप-द्रव्यास । मुसीबतमें पड़ाहुआ । संकटमें आया । और ऊंची नीची जगहपर ठहिराहुआ ।

विपमशिष्ट, (न०) विपमं शिष्टं (शासनं) । अनुचित शासन । ना मुनासिब सजा ।

विपमायुध, (पु०) विपमणि (अयुग्मनि-पद्य) आयुधानि (बाणः) यस्य । जिसके पाँच तीर हैं । कामदेव ।

विपय, (पु०) विपिष्वन्ति (विपिषिणं संब्रम्ति स्वात्मक-तया) वि+पि+अच् । जो अपने स्वरूपसे विपयीको बांध लेते है । इन्द्रियोंसे जानेगये शब्दादि । मजमून । और देस ।

विपयिन्, (न०) विपयः अस्ति अस्य+शि । विपय-वाला । ज्ञान (जाणा) । और इन्द्रिय । विपयासक (विपयोमें फंसाहुआ) (त्रि०) । राजा । कामदेव । और शब्द (पु०) ।

विपलता, (स्त्री०) विपव्यासा इव लता । बेल मानो जहिरते पिरि है । इन्द्रवारणी बेल ।

विपविद्या, (स्त्री०) विपाय (तद्विद्यते) विद्या । जहिर दूर करनेका इत्म । विप दूर करनेके मन्त्रकी जात्रा ।

विपवेद्य, (पु०) विपे (विपापहरे) वेद्यः (विदित-लकः) । विप दूर करनेमें हठीम । विपमश्रविद्यावाला ।

विपाप, (न०) विप+कानच् । पशुका सींग । हाथी वा सूअरका दाँत । कुटीपथ । और क्षीरकाकोपी ।

विपाद, (पु०) वि+पद्+थम् । अवसाद । जड़ता । शिथिल दटना ।

विपान्तक, (पु०) विषय्य अन्तक इव । जहिरका मानो यमराज है । पिशाच । विप दूर करनेवाला (त्रि०) ।

विपारान्ति, (पु०) १ त० । विपका शत्रु । काला धनूरा । हृत्कपुत्र ।

विपाम्य, (पु०) विपं भवत्ये यस्य । जिसके मुगमें जहिर है । मंत्र । शत्रु । “विपमं विपदेदुप सुमपत्य निजशा” । अन्तक ।

विपु, (अन्त्य०) वि+पु । एभ्यः । बटपरी । और कन-दाराज ।

विपुच, (न०) विपु (दिनरात्रयोः साम्यं) वातिक-वद् समय कि जब रात और दिन बराबर हो जात “विपुवत्” यही अर्थ ।

विष्क, (हिंसा) कतलकरना-मारना । जु० आ० स-विष्कयते । दर्शन (देखना) । उभ० । विष्कय अविष्कय-तः ।

विष्कम्भ, (पु०) वि+स्कम्भ्+अच् । सूर्य और च-शोग (मेल) से उत्पन्न हुआ पहिला शोग । वि-फैलाव । प्रतिबंध । रोक । नाटकका एक अंग (मध्यपात्रके द्वारा पीछे और आगेका वृत्तान्त कहलाता है) । योगियोंका एक बंध । वृस । की-कील ।

विष्प, (न०) विष्+कपन्+शुद् च । भुवन । तं जगत् । संसार ।

विष्पच्च, (त्रि०) वि+स्वम्भ्+क । प्रतिरुद्ध । दृढानु-अवहद ।

विष्पिभ्रन्, (त्रि०) वि+स्वम्भ्+पिनि । प्रतिबंध रोहनेहारा । एक रोगको उपजानेहारा ।

विष्पट, (पु०) वि+स्व्+अच् । पर्व । कुशाका बनी एक आसन । हरएक आसन । वृक्ष ।

विष्पटध्वस्, (पु०) विष्पटः (कुशमुष्टिवि) ध्वस् (कर्णौ) अस्य । कुशाकी मुठीके समान जिसके कान विष्णु ।

विष्पि, (स्त्री०) विष्+फिन्-क्विच् वा । बेतन (तनका) के बिना भार आदि उठानेका दुःख । मजदूरी । काम-बर्षण (बर्षना) । प्रेषण । भेजना । सातवाँ करण काम करनेहारा नौकर । मजदूर मजदूरीके बिना करनेवाला (पु०) ।

विष्पि, (स्त्री०) विपिधे तिष्ठति । स्था+क-व्यम् । उपरि-मल । गृह ।

विष्पु, (पु०) विष् (व्यापन-फैलना) मुद् । व्यापन-फैलाहुआ-जो (ताब स्थानमें है) । परमेधर । मंत्र (भाग) । शुद्ध । साफ । धर्मसाधक बनानेहारा । मुनि । वासुदेव ।

विष्पुगुप्त, (पु०) वागवय परिजत । यदि वागवय परित्यक्तमये प्रतिद्व न्यायभाष्यका रचनेवाला है ।

विष्पुनैल, (न०) वेद्यक (विदित्या) में प्रतिद्व एक प्रकारका मेल ।

विष्पुपद्, (न०) विष्णोः पद्मिष (व्यापन-पद्) । व्यापक होनेसे मानो विष्णुका पैर है । आवाज । भाषण ।

विष्पुपदी, (स्त्री०) विष्पुपद्ं वागवतेन आभि भव्यं । शम्भु-पदी । जिसका कारण विष्णुका पैर है । मंत्र । ए-का दू, शिद, शिव और कुशत एदिमें बदलना ।

विष्णुमाया, (स्त्री०) १ त० । विष्णोः (परमेश्वरस्य)
माया । परमेश्वरमायी अपटपटनारदीवरी (जो न बग-
सके उसेशी बना देनेमें बहुतरी चतुर) शक्तियात्मिका ।
उगकी शक्तिशाली (आशय) दुर्गा।

विष्णुरथ, (पु०) विष्णो रथ इव । मानो विष्णुकी गाड़ी
है । गरुड।

विष्णुराज, (पु०) विष्णुना राज, विष्णुकां राजात् जीवन्
शरत्तै । श+क । विष्णुमे रियागया । विष्णुने जिये जीवन
रिया । परीशित नामी राजा (बड़ गर्भेहीमें अध्यात्माके
शयसे उत्पन्न भवयथा, परन्तु विष्णुने फिर जिलाया)
यह क्या महाभारतमें प्रसिद्ध है।

विष्णुकार, (पु०) वि+ष्णु+क+अच् । धनुंष्णुकार-
शब्द । कामावके विष्णु शेषनेका शब्द । टंकार।

विष्णु, (वि०) विष्णु कथ्य । विष्णु+क । जरुमारनेके
शब्द । जदिरसे मार जानेके शब्द । विष्णु+क।

विष्णुपसेन, (पु०) विष्णुवी सेना यस्य । दिव्यी शक्तौ
साह सेना है । विष्णुपर चढेहुएको खानेवाला । और
विष्णुके गणोंमेंसे एक । त्रिंशु (स्त्री०) ।

विष्णुपाण, (न०) वि+ष्णु+पन् । पचकार्ये । भोजन खाना ।
सुराक।

विस्त, (न०) वि+म्पि+क । मृणाल । कमलहूलकी टण्डी ।

विस्त, उन्मर्ग (उोजना) । विवा- पर- राक- सेट् । विस्तति ।
शवेसीद।

विस्तंयाद, (पु०) वि+स्त+य+अच्+पन् । विप्रलम्भ । बयन ।
टगना । किसी वदार्थके विषयमें उल्टा बहना।

विस्तकुसुम, (न०) विस्तकुं कुसुमं । कमलहूलकी
शक्तीवाला फूल । पद्म।

विस्तद्वट, (पु०) विस्थि संकटो यस्मात् । ५ व० ।
जिससे बड़ा संकट होता है । सिंह । सेर । हनुयीका हट्।

विस्तनाभि, (स्त्री०) विष्णु नामी यस्य । जिसकी नाभिमें
विष्णु है । पवित्री और पदोका समूह।

विस्तर, (पु०) वि+स्त+अच् । समूह । और विस्तार ।
फैलाव।

विस्तरग, (पु०) वि+स्त+अच् । दान देना । त्याग ।
छोड़ना । जलका त्याग । मोक्ष (तुटकारा) और प्रत्येक।

विस्तरजन, (न०) वि+स्त+जन् । दान । देना । त्याग ।
छोड़ना । वि+स्त+जि+अच् । प्रेरण । भेजना।

विस्तरपण, (न०) वि+स्त+अच् । प्रसार । फैलाव ।
संचना । भगवाना।

विस्तिनी, (स्त्री०) विस्तानां समूहः । तपुषो देशो वा+
इति । बनलोकका समूह । और पद्मजना (बैज)।

विस्तृचिका, (स्त्री०) विस्तिनां स्त्रीषु । इत्यर्थे कन् ।
मानो बरी सूई है । एक प्रकारका रोग । टैजा।

विस्तृत, (वि०) वि+स्त+क । विस्तारणं । फैलाहुआ।

विस्तृघर, (वि०) वि+स्त+घरप् । विस्तारणील । फैल
वाला । (शिवो बीप्)।

विस्तृमर, (वि०) वि+स्त+मरप् । विस्तारणील । फैल
वाला।

विस्तृष्ट, (वि०) विस्तृ+क । प्रेरित । भेजाहुआ
छोडाहुआ । शिस्त । फेंककरना।

विस्त, (पु० न०) विस्तृ-उत्तरं (छोड़ना) क । नि
न इह । सर्गकर्म । सोनेकी मोहर । अस्ती रत्नोंका प
माण (मार)।

विस्तार, (पु०) वि+स्तृ+उत्तरां कर्त्तरि षन् । विटप
द्वय । सासामोका फैलाव । “भावे पन्” अस्तीर्ण
(फैलावट) । और समासके वाच्यमें पदोका समूह।

विस्तीर्ण, (वि०) वि+स्तृ+क । विपुल । फैला हुआ
विस्तार । संवा।

विस्तृलिङ्ग, (पु०) विस्तृरति । वि+स्तृ+ङ्ग वा यः त
ङ्गि अन्व । चमकनेवाले मिशालद्वारा । बहिरुप
आगका कतरा । एक प्रकारका पिय।

विस्तोट, (पु०) विस्तृरति । वि+स्तृ+ट्+अच् । बहु
कृतता है (विपकोडा) पदार्थ । “सार्थे कन्” ए
प्रकारका फोडा।

विस्त्वय, (पु०) वि+म्पि+अच् । आश्चर्यं । अद्भुत
अजीब । एक रस।

विस्त्वापन, (पु०) वि+म्पि+अच्+अच्+आत् लु
जो इरान करते । दुहक । इन्द्रजालका तमासा । नी
कामदेव । गंधर्वोंका पुत्र (न०) “विस्त्वापनम्” यही
अर्थ।

विस्त्वित, (वि०) वि+म्पि+क । विस्त्वयुक्त । हेरानहुआ।

विस्त्वृत्, (वि०) वि+स्तृ+क । स्वरणाभय । भूलगया।

विस्त्वृत्ति, (स्त्री०) वि+स्तृ+क्तिन् । स्वरणाभाव । भूलना।

विस्त, (न०) विस्तृ+क । आननगिष । कथा गंध ।
शयगंध।

विस्तृगन्धि, (पु०) विस्तृ इव गन्धः अस्त्वः । जिसका
गंध कथे गंधके समान है । “इव शमा” इतितात् ।
हस्तात्।

विस्तृम्भ, (पु०) वि+स्तृम्भ+पन् । विधाय । प्रत्येक ।
परिचय।

विस्तृमिन्, (वि०) वि+स्तृम्+मिने । विधाकरना ।
सुदरबटी।

विस्तृसा, (स्त्री०) वि+स्तृन्+क । यय । बुद्धेया
विद्वय, (पु०) विद्वृरति ।
यही परिद्वय।

शुद्धिजीवन, (त्रि०) शुद्धिः जीवनं यस्य वा शृष्ट्या जीवनि-
जीवन्त्युपान । वर्षांसे पालागया वा आर्रं (गीला)
होगया (नगर) । जलमे पूर्णं होगया । जलसे पलने-
वाला । जिसका जीवन जल है । चातक । पपीहा नामसे
प्रसिद्ध पक्षी ।

शुद्धिभू, (पु०) शृष्टीं (तदुपलक्षिते काले) भवति । वर्षा-
से पहिचानेहुए समय (बसांत) में होता है । मेरु ।
मेडक । वर्षा में हुआ (त्रि०) ।

शुद्धिसंपात, (पु०) शृष्टेः संपातः । शृष्टिसा गिरना ।
पानीका धाराप्रवाह बरसना ।

शुद्धिष्णि, (पु०) शृष्टिः । यादवोका वंश । श्रीकृष्ण । और
बादल ।

शुद्धिगर्भ, (पु०) शृष्टिः (यादवकुल) गर्भे यस्य ।
त्रिसके गर्भमें यादवोका कुल है । धीकृष्णमहाराज ।

शुद्धिष्ण, (त्रि०) शृष्टिः । धाराप्रवाह बरसनेके योग्य ।
शिवदेवियके सखियो बडा नेकाला । धात्रीकरण ।

शुद्धि, ईनि (बनचना) पु० उम० तक० पक्षे भ्या० पर०
इति । शृष्टिने । अर्थात् शृष्टि । शृष्टि । अर्थात् शृष्टि ।

शुद्धि, धनि (आकाशकरना) और शृद्धि (बडना) । भ्या०
पर० गद० मेद० । अर्थात् । अर्थात् । अर्थात् ।

शुद्धि, (त्रि०) शृष्टिः । महर । बडा । श्रियो वीप् ।

शुद्धि, (त्रि०) वरी को । बान् । आनाज । कष्टना-
शिका । शृष्टिकारी । नौ अर्थोंके पादका एक छन्द ।
ऊपरका अर्थ ।

शुद्धिज्ञान, (पु०) शृष्टि भावः किणो यस्य । बडे-
शिरसका । शृष्टि । विरक्त शृष्टि ।

शुद्धिप्रथ, (पु०) शृष्टि रथः भव्य । बडेरथवाला ।
इद । बडा एक पत्र (वर्तन) । सामनेरका एक
भव्य ।

शुद्धिप्रति, (पु०) शृष्टिः (काव) प्रति । पु० नि० ।
वर्णना प्रति । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

शुद्धि, (पु०) शृष्टिः । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि । शृष्टि ।

वेणि-णी, (स्त्री०) वेणु+शृङ्गा वीप् । ए
केशोकी रचना । गुप्त । जलका सन्ध । जल
देवदारका द्रव्य । एक नदी । बहु स्थान कि
यमुना और सरस्वती मिलजाती हैं ।

वेणीर, (पु०) वेणु+ईरन् । अरिष्टश । नौन
वेणीसंहार, (पु०) (वेण्याः संहारः) गु
चूडा (बालों) बांधना ।

वेणु, (पु०) वेणु+उन् । वंश (वांस) । वंस
वंशी (एक प्रकारका बाजा) । वंजनी ।

वेणुज, (पु०) वेणुनो जायते । जन्+उ । वं
जोके स्वरूपका कावत ।

वेणुष्म, (पु०) वेणुं (वशी) घमति । म
यादक । वंशीबजानेवाला ।

वेणुवाद, (त्रि०) वेणुं यादयति । वद
वेणुवादक । वंशी बजानेवाला । वंशी बजा
येतन, (न०) अन्+तनन्+वीभाषः । शिष्ये
मन्त्रद्वी ।

वेतनजीयिन्, (पु०) (वेतनेन जीयति)
(मन्त्रद्वी) पर जीनेवाला ।

वेतनादान, (न०) १ त० । कर्मद्विणा (म
तेना । एक प्रकारका व्याहार ।

वेतर, (पु०) अन्+अणुन्+वृहन्+वीभाषः ।
एक शृष्टि ।

वेतस्यन्, (त्रि०) वेतनः अति भाग्य
वेतकाया देव ।

वेताल, (पु०) अन्+विप्+वीभाषः । तत्र
एक प्रकारका पक्षिवाहन (मन्त्र) । वद मुर्दा
भूतने प्रवेश किया है (भूतपिण्डिण का)
एक अनुवर (नौकर) । द्वायवाक । द्वायवाक ।

वेणु, (त्रि०) विष्+वृष् । शान्ता । जायेहाता ।
हासिन करनेवाला ।

वेण, (पु०) अन्+वृष्+वीभाषः । वे । वेण
वेणघार, (पु०) वेणुं धारति । पू+भष् । वे
द्वायवाक । द्वायवाक । वेणुकी सोडा पकडनेवाला

वेण(वा)गनी, (स्त्री०) वेणुः वाणुणेन अति
मनुः मया वः । वा वीर्षे । वायव्येति
"वायव्येति वेणुगनी" इति द्वायवाक

वेणामन, (न०) वेणुनिधिः आनन्द । वे
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेण, (पु०) [वृ+अणुन्+वृहन्+वीभाषः]
आनन्द । मन् । पुनी अर्थात् ।

वेदार्थ, (पु०) वेदो गमं यस्य । श्रिके भीतर वेद है । सम्पूर्ण वेदको स्मरण करनेवाला शिष्यगर्भ ।

वेदन, (न०) विद्+भ्युद् । हन (जाका) । गुण दुःख आदिका अनुभव करना । और विवाह पुत्र "वेदना" (स्त्री०) ।

वेदपात्रा, (पु०) वेदानां पात्रं (अन्नं घीमां) गच्छति यम्+इ । वेदोद्गी हीमात्क पशुचगया । सारे वेदोको आभेदारा । समस्तवेदानित ।

वेदमातृ, (स्त्री०) १ त० । वेदोद्गी माता । मायत्रीमहा-मन्त्र (वेदोको बचानेसे) ।

वेद्विद्, (पु०) वेदं वेत्ति । विद्+विप् । वेदको जानना है । विष्णु । वेदको आभेदारा (त्रि०) ।

वेद्विहित, (त्रि०) (वेदेन विहितः) । वेदने विधान (आशा) किया गया ।

वेदव्यास, (पु०) वेदान् व्यसति (भिभिप्रसागात्वेन प्रवृत्त करोति) वि+भ्यु+भ्यु । भिभ्र भिभ्र दागात्प्रयोगे वेदोको छटा १ वर्ता है । पराशरका पुत्र । सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न एक मुनि ।

वेदर, (पु०) विद्+भ्युन् । वेत्ता । आभेदारा ।

वेदाङ्ग, (न०) वेदस्य अङ्गं इव । मानो वेदका अंग है (उतका अर्थ प्रकाश करनेके) । शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषरूप छ अङ्ग ।

वेदादि, (पु०) वेदस्य आदिदिक् । मानो वेदका आदि है (उतका पाठ करनेके समय पढ़िउे उच्चारण किया जाने-से) । प्रणव । ओंकार ।

वेदागत, (पु०) १ त० । वेदका अन्न । वेदका शिरोभाग (शिरा) । प्रणवो प्रतिपादन करनेवाला उपनिषद् रूप मन्थविशेष । उतका उपचार करनेवाला पौरीषिक एवका भाग्य आदि ।

वेदाधिप, (पु०) १ त० । वेदका अधिक । ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदका शुक्र, सामवेदका मंगल और अथर्ववेदका स्यामी सारिख (बुध) है । और विष्णु

वेदान्तिन्, (त्रि०) वेदानो हेतु-वेन अग्नि अयम्+हनि । जिसे वेद-गणनासे आभेद-उत्पन्न है । वेद-गणनाके आभेदारा । वेदान्ताशास्त्राभिज्ञ ।

वेदाभ्यास, (पु०) १ त० । वेदका पठना, शिखरन-अभ्यास करना, जप करना और हन (पठना-आदि) । बार १ वेदान्तके शास्त्री प्रीति करना ।

वेदि, (स्त्री०) वा हीप् । पशु-भूमि । तीर्थवार (मन्त्र) चीगई इतिदी । पशुधन (पु०)

वेदिजा, (स्त्री०) वेदा जयते । जन्+इ । होमकी वेदीसे उत्पत्ती । ईपत्ती ।

वेदिष्, (त्रि०) विद्+भ्यु+इत् । जन् । आभेदारा

वेदिन्, (पु०) विद्+मिति । पशुधन और शिखरगमं । आभेदारा (त्रि०) ।

वेध, (पु०) विष्+भ्युन् । वेधन । बीधना । महत्प्रकृतिने स्वागत्या एवमकारका योग (जिसे विषय आदिसे रागना उचित है) ।

वेधक, (न०) विष्+भ्युन् । बहू । बहू । पशुनां । वेधकानां (वेधनेवाला) (त्रि०) । शिखर समनेवन्त ।

वेधर, (पु०) वि+धा+भ्युन् गुण । शिखरगमं । जगन्का रचनेवाला । विष्णु । पूर्व । और पशुधन । प्रजा । ब्रह्मनिर्वाला ।

वेधिन, (पु०) वेधः जग्न अस्म । तर० इन् । वेद-गया (विद्) । छिद्रिन (मृगण विन्दुका) ।

वेधिनी, (स्त्री०) विष्+मिति । जनेका । ओंकार ।

वेधू, बान्ता । अन्+आ+अह+हैट् । वेदने । अवेदिन् ।

वेधु, (पु०) वेष्+भ्युन् । बन् । बांयना । बन् ।

वेधन, (न०) वेष्+भ्युन् । बन् । बांयना । शिखर ।

वेम, (पु०) वे+मन् । वायव्य । बुनेका बन्त ।

वेम्, वातन (शिखर) । अन्+प+अह+हैट् । वेत्ति । अवेदीन् ।

वेम्, (न०) वेष्+भ्यु । बन् । बांयना । बन् । अन् । और वायव्यका वृत्त (शिखर) (स्त्री०) । "वेत्तामूने विभक्तरी" अर्थात् ।

वेम्, (वातन) शिखर । अन्+प+अह+हैट् । वेत्ति । अवेदीन् ।

वेम्, (पु०) वेष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (न०) वेष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (न०) वेष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (पु०) विष्+भ्यु । अन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (पु०) वेष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (स्त्री०) वेष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वेम्, (पु०) विष्+भ्यु । जन्+इ । शिखर । और वेम् ।

वैश्यास, (पु०) वैश्यास वागः । वैश्यासोऽस्य निवास-
स्थान (रहनेकी जगह) ।

वैशमन्, (न०) विश्+मनिन् । शूद्र । घर ।

वैशमभू, (स्त्री०) १ त० । घर करनेलायक जगह ।
शूद्रकरणार्हं स्थान ।

वैशय, (न०) विश्+यत् । वैश्याय दितं वा+यत् ।
वैशके लायक । वैश्यालय (कंचनीका घर) और श्यावार-
योपित् (मोलकी औरत-कंजरी) (स्त्री०) ।

वैशेन, (न०) वैश्+रयुद् । कर्णशम्भुली । कानका पोलाड ।
उष्णीष (पगडी-साका) । कृष्णाण्ड (पेड़ा) और प्राचीर
(राफील) । राहुरपनाह । घेरा (पु०) ।

वैष्टित, (त्रि०) वैश्+त् । प्राचीर (शहरपानाह-मफील)
आदिसे घिराहुआ । और रुद्र । रुद्राहुआ । रोमाहुआ ।

वैस्, (गति) जाना । भ्या० पर० सक० सेट् । वैसति ।
अवैसीत् ।

वैसन, (न०) वैस्+स्युद् । द्विदल । छोले । छोलांका चू।

वैहार, (पु०) वि+हृ+यम् । घृ० । इस नामका एक देश ।

वै, (अव्य०) वा+ङे । पादको पूरण कर्ता है । अनुनय ।
प्रार्थना । निश्चय और संबोधन (बुलाना) ।

वैकक्ष, (न०) विशेषेण कक्षति (व्याप्नोति)+अण् । बहु-
तही फैलता है । एक प्रकारका हार । जिसे टेढाकरके
काँस (कच्छ) की ओर छटकाते हैं "बुनु" । छातीपर
यज्ञोपवीत (जनेऊ) के स्वरूपसे धारण कियाहुआ एक
प्रकारका हार ।

वैकङ्कत, (पु०) विकङ्कत+स्वार्थेऽण् । एक प्रकारका द्रव्य ।
"विकङ्कतका" (त्रि०) ।

वैकल्पिक, (त्रि०) विकल्पेन प्राप्तः भवो वा+ठक् । पक्षसे
प्राप्त । सुस्तारी । चाहे वह दूधरा । दोनोमिसे एक ।

वैकल्य, (न०) विकलस्य भाव+अप्यम् । विकलता ।
पचराहट ।

वैकुण्ठ, (पु०) विकुण्ठे भवः+अण् । विविधा कुण्ठा माया
यस्य । स्वार्थे अण् । "विकुण्ठमें हुआ वा जिसकी माया कई
तरहसे कुण्ठा (खुंदी) है" । विष्णु । गहड़ । इन्द्र ।

वैकृत, (न०) विकृतस्य भाव+अण् । विकार । बदलना ।

वैखरी, (स्त्री०) विशेषेण खं राति । रा+क । स्वार्थे
अण् । अर्थको जतानेहारा कण्ठ (गला) आदि स्थानमें
उच्चारण कियागया अक्षरोंका बनाहुआ शब्द ।

वैखानस, (पु०) वि+खन्+ञ । अन-असु । कर्म० । स्वार्थे
अण् । वानप्रस्थ (तीसरे आश्रममें दाखिल हुआ) । एक
तपस्वी ।

वैगुण्य, (न०) विगतो विददो वा गुणोऽस्य । तस्य भावः+
अण् । "जहाँ जो बाहिये" उससे और स्वरूपमें बना
देना । विगाटना । अन्यायत्व (बेदनाफी) । अगमप्रत्य
पूर न होना ।

वैजिज्य, (न०) विजिज्य भाव+अण् ।
कई शक्यपन । विजयगता । अजीबना । वि

वैजयन्त, (पु०) विजयने । वि+जि+ठक् ।
इन्द्रका प्राणाद (मद्दल) । और एक
(सगरी) । जयन्तीइन्द्र (स्त्री०) ।

वैजिक, (न०) बीजेन निर्गम+ठक् । शिपु (शिपु)
का तेल । "बीजके लिये हितकारी" । काल
ठक्" कारण । बीजहा (त्रि०) ।

वैज्ञानिक, (पु०) विज्ञानाय साधु+ठक् । शिपु
आर । "विज्ञानकी बाधन बनायागया ग्रन्थ
शास्त्र । उसे पढ़नेहारा (त्रि०) ।

वैजालयत, (न०) विजालय इदं+अण् । तदि
विलेके समभाववाला मन । "जिसमें धर्मके दृष्टिको
ध्वजाके समान सदा कंचे रखना है और जिस
कर्ता है" प्रकट होकर धर्मका आचरण और नि
करना ।

वैणच, (न०) वेणुनां फलम्+अण् । बांसका फल
(त्रि०) ।

वैणविक, (त्रि०) वेणोर्विकारः+अण् । वैगवं (वैगवं)
शिल्पं अस्ति अस्य+उत् । बांसरी वाजेका काम
वंशीवादक (बांसरी बजानेवाला) ।

वैणिक, (त्रि०) वेणो-तद्वादनं-शिल्पं अस्य+अण् ।
बजानेवाला ।

वैण्य-न्य, (पु०) वेण (न)स्य अपत्यं+अण् । वेणु
पृथुनामी राजा ।

वैतंसिक, (त्रि०) वितंसेन (मृगपश्यादिवन्धनं
चरति+ठक् । जो पशुपक्षियोंको फंसाकर जीव
मांस बेचकर जीनेवाला शिकारी (व्याध) ।

वैतनिक, (त्रि०) वैतनेन जीवति+ठक् । मजदूरी
वाला । काम करनेवाला मूल्य (नौकर) आदि ।

वैतरणि-णी, (स्त्री०) वितरणेन (दानेन) लप्यं
धीप् वा घृ० ह्रस्वः । जिसे दानसे लाभ सके हैं
जके दवांजेके पासकी नहीं (दया) । "यमशरे
तप्ता वैतरणी नदी" इति पुराणम् ।

वैतानिक, (पु०) वितानस्य अर्थ+ठक् । वेदकी
अभिका स्थापन करना ।

वैतालिक, (त्रि०) विविधः तालः (मङ्गलगीतादि
वेन व्यवहरति+ठक् । मंगलको उत्सव करनेहारी
राजाओंको जगानेहारा मागध (भाट) आदि ।

वैतालीय, (पु०) एक प्रकारका मागधम् ।

वैदग्ध्य, (न०) (स्त्री०) विदग्ध्यस्य (चतुरस्य) भावः
त्रिणां धीप् । चतुर्यं । चतुराई । हुसियायी ।
ग्यं" भी ।

वेदम, (पु०) विदमार्णां (जनपदानां) राजा+अण् । विद-
 मंदेशका राजा । एक प्रकारकी वास्तुशिल्पना (श्री०) ।
 "विदमं भवा" +अण् । मल्लाखादीं श्रीं दमयन्ती (श्री०) ।
 वेदिक, (पु०) वेदं वेत्ति-आपीठे वा+ठन् । वेदको जन्म-
 दारा साधन । "वेदेषु विदिन" +ठन् । वेदमें बहानुभा ।
 (वि०) श्रियां ङीप् ।
 वेदुष्य, (म०) विदुषो भावः । विदुषु+भ्यम् । विदुषुणा
 होना । पाणिपल । शयकपन ।
 वेदुर्य, (न०) विदुरे भव+भ्यम् । एक प्रकारका मयि ।
 त्रिपदा रंग बाला और पीला है । विदिही आँसुके समान
 होता है । मूला ।
 वेदेह, (पु०) विदोपेण देहः (उपवयः) दम्भ । स्वर्षेऽ-
 ण् । त्रिपदी बहुत बद्धि होती है । दम्भिकन ।
 श्यापारी आदमी । बनिआं । छत्रके वेदपत्रादिही छत्रमें
 उभरी एक जाति । "उर" "वेदेदिकाः" बनिआं ।
 "विदेहानां राजा" +अण् । राजाजनक ।
 वेदेही, (श्री०) विदेहेषु (सिधिकादेशेषु) भवा+अण् ।
 सिधिकामें हुई । पीता । जनककी बन्धा । हरी । मय ।
 बनियागी ।
 वेद्य, (पु०) विद्या ज्ञानि अत्य+अण् । जितो विद्या हो ।
 पण्डित । भिषज् । हकीम । कापटर ।
 वेद्यक, (म०) वेदं (विहितकं) अधिष्ठन् हुनो प्रथ +
 क्त । हकीमकी साधिर बतमायया प्रथ । आमुवेद ।
 हम्हकीमी ।
 वेद्यनाथ, (पु०) वेदानां नाथ । वेदो (हकीमो) वा
 नाथ (स्वामी) भगवन्तीतीवा नाम ।
 वेद्युत, (वि०) ती+भी विद्युत इव+अण् । विद्युत् (विजयी)-
 वा । विजयीकाल । विजयीके समय हुआ ।
 वेध, (वि०) विधिना आगत +अण् । विधियों प्रविष्टक
 विद्याहुआ । विधन विद्याहुआ ।
 वेधाय, (पु०) विधायु अपत्ये+अण् । मरकी सन्तान ।
 सन्तानकर आदि सुनिमित्त ।
 वेधुति, (पु०) विद्या पूर्ति । कल्पन् । पु० इति । श्री-
 राजहित । विधायन आदिमें सक्ते विद्या होय ।
 वेधेय, (वि०) विधीयते आत् । विधाय+अण् । ल-
 कायें अण् । दूर्य । वेधुत् ।
 वेधर्म, (म०) विदः धर्म इत्य । लय भव +अण् ।
 विदः (वेदिकम्) धर्मः होना । श्रीं लय । विधाय ।
 वेधाय, (म०) विधायः भव +अण् । वेधन । श्रीं
 लया । लयित विदः (विदोत्) ।
 वेधनेय, (पु०) विधायः अपत्ये+अण् । विधाय-
 काय । लय । श्रीं लय ।

वेधनयिक, (वि०) विनये रत्न +अण् । लयके इन कालके
 हकीम ।
 वेधनाशिक, (पु०) विधायं अधिष्ठन् हुनो मन्त्र +अण् ।
 लयकी शयमंगुला (जिमामें इतलन) को बन्धा-
 नेहारा वेधनाश । उये जनेदय (वि०) ।
 वेधरीत्य, (म०) विधीयमान भव +अण् । उतलन ।
 विरयय ।
 वेधय, (म०) विधीयते +अण् । विद्युत् । विदुः ।
 लयय । जलात् ।
 वेध्याज, (म०) विधाय इदं+अण् । देव-कोट एव वा-
 वेद्युष्य, (म०) विद्युष्यम् भव +अण् । विद्युष्यम् । वे-
 धोना । सु मोहयेत् ।
 वेध्याज, (पु०) विद्युः अपत्ये+अण् । वेधेना इदं
 मन्त्र । शयकपना । वेधेना इदं । वेधेना इदं
 (बनि) की ।
 वेध्याज, (पु०) विद्युः अपत्ये+अण् । वेधेना इदं
 बनि । श्रीं ।
 वेध्याकरण, (वि०) विधायः इति कालेन वा+अण् ।
 विधायन कालेहारा । शयकपना ।
 वेध्याय, (पु०) विद्युष्यम् अपत्ये+अण् । वेधेना
 इदं कालेन इदं हुनि । "वेध्यायः" इति श्री-
 मर्षयम् ।
 वेध्याय, (म०) विद्युष्यम् भव +अण् । वेधेना इदं
 विधेना । वेधेना ।
 वेध्यायरी, (पु०) विद्युष्यम् अपत्ये+अण् । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन ।
 वेध्यायरी, (श्री०) वेधेना इदं कालेन इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन ।
 वेध, (म०) वेधः भव +अण् । वेधुः । विधेना
 इदं कालेन ।
 वेधकर, (वि०) वेधेना इदं कालेन इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन ।
 वेधक, (म०) वेधः भव +अण् । वेधुः । विधेना
 इदं कालेन इदं कालेन ।
 वेधिकीय, (म०) वेधः (वेधेना इदं कालेन) इ-
 दं कालेन इदं कालेन इदं कालेन । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन ।
 वेधाय, (म०) विद्युष्यम् भव +अण् । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन इदं कालेन ।
 वेधाय, (पु०) विद्युष्यम् अपत्ये+अण् । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन इदं कालेन ।
 वेधाय, (पु०) विद्युष्यम् अपत्ये+अण् । वेधेना इदं कालेन
 इदं कालेन इदं कालेन इदं कालेन ।

शाली, (स्त्री०) शाल्+अच् ङीप् । काला जीरा.

शालीन, (त्रि०) शालं अर्हति । ख । ष्ट (ढीठ) ।

वैशरम.

शालु, (न०) शाल्+ङ् । शालुक । कसैला पदार्थ ।
मेरु (मेटक) (पु०).

शालूट, (पु०) शाल्+ऊर्त् । मेरु । मेटक । डू.

शालोत्तरीय, (पु०) शालोत्तरे (प्राग्) भवः । शालो-
त्तर गाँवमें उपजा । पाणिनिमुनि.

शाल्मल, (पु०) शाल्+मलन् । शिबलका द्रव्य । उसके
निसानवाला एक द्वीप (जजीरा).

शाल्य, (पु०) शाल्+व । एक देश.

शाय, (पु०) शव्+थम् । शिशु । बधा+शायं कन् ।
“शवका” मुद्रिका.

शायर, (पु०) शाययति (विकारयति) शय्+यिच्+
शान् । निगाहदेना है । पय । अपराध । पुनाह । और
शेषका शान् । “शायसे कहाहुआ+अण्” शायसे किया-
हुआ भीमांगारा भाव्य । “शायरका” (त्रि०).

शायरी, (स्त्री०) शायर्य शिया+अण् । भीतनी । शुक-
टिम्पी । एक प्रकारकी शिया (इम).

शाभ्यत, (त्रि०) शय् मव्+अण् । शयनुआ । शान्त ।
शिय । हुमेगका.

शाभ्, आभ्या (लीटकरना) । भ्या० आ० श० शेट् ।
कतःवेद् । अकार । इस धातुके गाथ “शाभ्” रहता है ।
आभंभने । आभंभित.

शाभ्, आभंभे देना । आ० आ० मड० शेट्+अन्नाशेट् ।
अकार इमके पड़िजे “शाभ्” रहता है । आभारने ।
आभंभित.

शाभ्, आभन (आभ कलना) शेट् आ० पर० शिङ्-
कन् शेट् । आभ् । आभयन्.

शाभन, (न०) शाभ्+अणुद । छोटिको शिवाभनमें
अभन । आभेय कन्या । अकदेना । हुकमदेना

शाभनहृत्, (पु०) शाभन हृत्ति । इ+अण् । आकाको
देअनेहृत् । हृत् । कल्पित

शाभिनृत्, (त्रि०) शाभ्+अणुच् श् । शाभनहृत्को
हुकमदेनेहृत् । अक देनेहृत्.

शाभ्, (न०) शिभने अनेम । शाभ्+अण् । शिभ् आ-
हृत् अनेहृत् । अक । हुकम.

शाभ्, (त्रि०) शाभ् को शेट् । अकमें अण् शिभ्
शित् । अकके अनेहृत् । अक शिभ्.

शाभ्, (त्रि०) अकम् कण् । अकका देव अक-
कण् । अकके अनेहृत् । अक अनेहृत् । अकके अनेहृत् ।

शाभ्, (त्रि०) अक शिभ् । अकके अनेहृत् । अकके अनेहृत् । अकके अनेहृत् ।

शाख्यव्युत्पत्ति, (स्त्री०) शाख्य व्युत्पत्ति
चतुस्रै । वेदादि शाखीकी चमकदार समस्त

शाखिन, (त्रि०) शाखं वेति-अधीते वा-
जामेहाय.

शाखीय, (त्रि०) शाखेण विहितः+छ । शा-
धर्मआदि.

शाख्य, (त्रि०) शाग्+यत् । उपदेशकरने
आदि.

शि, छेदन-काटना । भ्या० उभ० शक० अति-
शिनुते । असीपीत् । असीट.

शिशापा, (स्त्री०) शिवं पाति । पा+कृष्ट् । ट

शि(सि)कथ, (न०) शिच्+थक्-कुह्व । शि-
को “श” विह्वलसे । मोम । मपूठिउत्
हठन । “शायें कन्.”

शिक्य, (न० स्त्री०) शिक+यत्, शि+यत्-ऊह्
रसीका बनाहुआ पदार्थ.

शिक्रियत, (त्रि०) शिक्रयं (शिक्रयन्)
शिक्रय+शिक्र-कर्मणि क । छिक्रेके आगरेय
पदार्थ । छिक्रेय रकवाहुआ.

शिश, अभ्यात करना । भ्या० आ० श० शेट् ।
अशिक्षित.

शिश, (स्त्री०) शिश+भ । पय । शान्ता ।
सीस । अश्याय । अशरीके उचारणकी शि-
वेरका एक भाग । मंत्रशिरोव । “शिश कपो शि-
ह्वी । शिया । इम.

शिशामुद, (पु०) श० श० । शिया देनेहाय । इम
नेहाय.

शिशिन, (त्रि०) शिशा ज्ञाना अम+इण् । शि-
वा । अश्यायी । शिगने अश्याय शिया है ।
होशियार । शमशाया । शीमाकुआ.

शिश(शा)ण्ड, (पु०) शिशा अमनी । अम-
त० । मोरका शिच्छ । श्या । श्यायी । श्येरी.

शिशण्डक, (पु०) शिशण्ड इव+अण् । शीशका पर
शिशण्डक, (पु०) शिशण्ड अणि अण+अण् । शि-
ण्डक.

शिशण्डित, (पु०) शिशण्ड अणि अण+अण् । शि-
ण्डक । अण् । शीश । शिशण्डक एक पुत्र । शीश

शिशण, (न०) शिश अणि अण+अण् । शि-
ण्डक । अण् । शीश । शिशण्डक

शिशणित, (पु०) शिशण्ड अणि अण+अण् । शि-
ण्डक । अण् । शीश । शिशण्डक

शिशण, (स्त्री०) शीशण्डक । अण् । शीशण्डक

शिशण, (स्त्री०) शीशण्डक । अण् । शीशण्डक

द्वारक, (न०) शत्रुं इव वेदं (अन्वयः) दग्ध । शिवका
निगमं शीघ्रं समानं है । अदरक । शीत । रामचन्द्रके
निम्नं द्वारकान्तिका पुर (नगर) ।

द्वारकाट, (पु०) शत्रुं (प्रथमम्) अरति । अद्+अण् ।
उत्पत्तिशोर एव एवम् । अणुपण्य । चौरादा । राज्य-
संभव ।

द्वारका, (पु०) शत्रुं (शान्तेयं) अणुपण्य शानेन । अद्+
अण् । अणुपण्य काम बधना है । अटकमें एक रम । शीघ्र ।
शिवुर । शेर वृत्ता । अदरक । जेवर ।

द्वारकाशिव, (पु०) शत्रुं अणुपण्येन अति अण्य+इति ।
शिवके शान्तेये अणुपण्य काम बधना है । एव । शिवी ।
शेर हाथी (गज) । अणुपण्य शैवाक पहिनेहुए (पुत्रेण)
(वि०) ।

द्वारकाशिव, (पु०) शत्रुं अति अण्य+इति । शीघ्रकाम्य ।
शेष (शेष) । भारतवर्षका एक हीमायवेन । पहाड ।
एक इति । शेर वृत्त (इत्यं) शीघ्रकाम्य (वि०) ।

द्वार, (वि०) शत्रुं । पत्र । पत्राहुआ ।

द्वार, अणुपण्यद्वार माता । अन्वा० आ० एर-एर-सरमें
उभ० अट-उट्ट । कला धट्ट । शपंते । अण्यद्वार ।
राप्तिपत्ते ।

द्वार, टेहन (बाटना) अन्वा० उभ० अट-उट्ट । कलावेड्ट ।
राप्तिपत्ते ।

द्वारक, (पु०) शिवि-जाना+अरार् । पु० । शिवा ।
शेरी । सुटके ऊपरका पृक । शरानेकी जड । काज ।

द्वारक, (पु० न०) शी+अण् । शिव । शिव । शी+अधि-
पृक् ।

द्वारकालिक, (श्री०) शेरते इति शेषा अलये यद्+
अण् । जहाँ शेर शेरते हैं । पूलदार इष्ट । शरानेका
जग ।

द्वारुणी(शरी), (श्री०) शी+विच् । शेर (मोहः) तं मुष्णति
शुष्+क । जो मोह (म-मेरा) को जुर लेती है । मुदि
अक्षर ।

द्वार, (पु०) शी+अण् । पुराणा विह । शिव । शिव ।

द्वारपथि, (पु०) शेर (शनारिमोह) तस्य अरपथिः । शीघ्रतके
मोहकी शीमा । पद्यभादि नो प्रकारका विधि (राजाना) ।
द्वाराल, (न०) शेरते+विच् । बलने-पण् । शेराल । शेर-
काल । शिवाल । शान्तेके ऊपर काका र होता है ।

द्वार, (पु०) शिव्+अण् । अनन्त । शीघ्रका राजा । एक
शाप । शकी ।

द्वारनाथिन्, (पु०) (शेरते शेरते) शेषनाथर शयन-
(शाने) काला । शिव् ।

द्वार्या, (श्री०) शिव्+अण् । शिवालय मास्वभारि देवनाथर
शरीरुई मालाभादि । "शेषामिष" शीघ्र-
काजी नकी । जहाँ

द्वार्याश्रम, (न०) शेरं शत्रुम् । कवा हुआ अश्रम ।
शैश, (पु०) शिवा (तत्प्राप्तप्रथमं) शकीने विलि वा-
अण् । शिवा (शरका शिव) प्रथको पदता वा
जानता है । "श्व" । शिवक रही शर्थ ।

द्वार्याक, (पु०) शिवरे शर+अण् । शीघ्रर हुआ ।
शरका शिव । अशामार्ग ।

द्वार्या, (न०) शीघ्रस्य भाव+अण् । शीतकामा । शरी ।
उत्पत्ति । उन्मान ।

द्वार्याशिव, (न०) शिविलस्य भाव+अण् । शीतलस्य ।
(शरदसंयोग) ।

द्वार्याशिव, (पु०) शिवेगोप्राप्तल+अण् । शरदकाम नाम यादव ।

द्वार्या, (न०) शिवायो भव+अण् । परशुमें उजवा गण-
द्वय । "शिवः शान्ति अण्य+अण्" शिलोका । पहाड
(पु०) ।

द्वार्या, (न०) शैले (पर्वते) जायते । जन्+उ । पर्व-
समें जन्म होता है । एक प्रकारका गंधद्रव्य । गजपिपली
शेर दुर्गा (श्री०) ।

द्वार्याशर, (पु०) शैलं (गोवर्धनपर्वतं) धरति । श्व+अण् ।
गोवर्धन पहाडको उटाला है । शीघ्रदेवत्री ।

द्वार्याशिव, (पु०) शैलं शिवति । शिव्+अण् । शर-
काशनेका शीघ्र ।

द्वार्याशिव, (पु०) शैलानां शिवः । श्व+अण् । पहाडोंका राजा ।
शिवालय ।

द्वार्याशिव, (न०) शैलानां शिविरं इव । पहाडोंकी
मानो छावनी है । समुद्र । समुंदर ।

द्वार्याशिव, (श्री०) ६ त० । पहाडकी लडकी । शार्वती ।

द्वार्याशिव, (न०) शैलस्य शिवम् । पहाडकी शीरी ।

द्वार्याशिव, (पु०) शैलं अरति । अद्+अण् । पहाडमें घूमता
है । शेर । शील । शिव । शिव ।

द्वार्याशिव, (पु०) शिवालिना मुनिना श्रेष्ठं (नटसूर्यं)
अधीश्वर+शिवि । शिवालिमुनिसे कहेहुए नटोंके शिवमीनो
पदते हैं । शैल्य । नट ।

द्वार्याशिव, (श्री०) शैलं एव+शार्थे अण् शीप् । शारिष ।
शिवम । शी ।

द्वार्याशिव, (पु०) शिवालस्य शाल+अण् । नट । शिवका
शरत । धूर्त । शरदनेहारा ।

द्वार्याशिव, (न०) शिवं शिवित्वं ज्ञाने प्रथम+अण् । वेदव्या-
सका शनयाहुआ शिवकीके प्रभावको वर्णन करनेहारा महा-
पुराणविशेष । "शिवो देवना अण्य+अण्" । शिवकीका
मण्ड (वि०) । "शिवेदं अण्" शिवका (वि०) ।

द्वार्याशिव, (श्री०) शैलानि शान्ति अण्य । शैल-
काजी नकी । जहाँ

शैवाल, (न०) शी+वालन्+स्वायें अण् । शेवाल । पानीमें उपजा पदार्थविशेष । "कृष्णदेवका एक घोडा" । घोडा.
 शैव्य, (पु०) शिवेर्गोत्रापत्यं+यम् । शिविके गोत्रमें उपजा एक राजा.
 शैशय, (न०) शिशोर्भावं+अण् । बचपन । शिशुमाल । बालअवस्था.
 शैशिर, (पु०) शिशिरं प्रियं यस्य+अण् । कालीविडिआ । सर्दीमें छुद्य रहती है । "शिशिरे भवः" +अण् । शीत-कालमें हुआ (त्रि०).
 शो, तीक्ष्णीकरण (तेजकरना) । दि० प० स० अनिच् । श्यति । अशास्त्र-शशासीत्.
 शोक, (पु०) शृच्+धष् । पियारेके विरहसे हुआ दुःख-रूप एकप्रकारका चित्तवा व्यापार । अपसोस.
 शोकारि, (पु०) ६ त० । शोकका शत्रु । कदम्बका वृक्ष । कदम्बका द्रव्य.
 शोकाविष्ट, उपहृत । विह्वल, (त्रि०) शोकेन आविष्टः । शोकसे भराहुआ । शोकमें पडा हुआ.
 शोचिष्केश, (पु०) शोचिः केश इव यस्य । जिसकी चमक (तेज) बालोंके समान है । वहि (आग) । चिप्रकश्च.
 शोचिस, (न०) शृच्+इति । प्रभा । प्रकाश । चमक । रोचिः.
 शोच्य, (त्रि०) शृच्+थय । धुद । कमीना । छोटा । दयाके लायक । अपसोसके लायक । बेचारा । गरीब.
 शोण, गति (जाना) । सक० । वर्ण रंगना । अक० भ्या० प० सेट् । शोणति-अशोणीत्.
 शोण, (न०) शोण्+अण् । सिन्दूर (सिंधूर) । और रधिर (लोह) । लालगन्ना । मंगलग्रह । आग (पु०).
 शोणित, (न०) शोण्+इत्च् । (रधिर । लोह).
 शोणितपुर, (न०) शोणित इव रणं पुरम् । लोहकी नाई शहर । भाग्यपुरका नगर (मुक्त).
 शोणोपल, (पु०) कर्म० । शालग्रामर । माणिक्य (माणक) मणि.
 शोथ, (पु०) शृ+थन् । हाथ पों आदिसे फुलनेहेरार रोग.
 शोथम्री, (स्त्री०) शोथं इति । हन्+च् । शालग्राम । शोथ हर करनेवाली दवाई (त्रि०).
 शोथन, (न०) शृथ्+निष्+ण्युट् । शोथ । सड़ाई । चिन्ता (मूँट) । मलभारि छोडना । शोथ हटाना । और बर्षे उन्मत्ता । "शृथन्ति अनया+करणे ण्युट् शीत्" इत्यमरंटी (वृत्ती) (स्त्री०).
 शोथित, (त्रि०) शृथ्+निष्+थ । मलभारि हटाने के लिये चिन्तना । मर्त्तिन । शब्द चिन्तन.

शोफ, (पु०) शृ+फन् । शोथ । रोग.
 शोभन, (न०) शोभते । शुभ्+यु । कनक पांचवां योग (पु०) । शोभावाला (त्रि०).
 शोभा, (स्त्री०) शुभ+ञ । शीति । चमक । प्रकाश.
 शोभाञ्जन, (पु०) शोभायै अञ्जते । लघु+ण्युट् । नेत्रा द्रव्य.
 शोष, (पु०) शृप्+थन् । हवा आदिसे पानीको कठिन करना । सुखना । "सुखा देता है" । शीतली.
 शोषण, (न०) शृप्+ण्युट् । चूसकर रख पीन सुखाना । कामदेव । एक तीर.
 शौक, (न०) शुक्यां समूह+अण् । शुकसमुदाय । शोते.
 शौकर, (न०) शूकरस्य इदं+अण् । एक तीर.
 शौक्तिकेय, (न०) शुकिकायां भवम् । शीतली । सुखा । मोती.
 शौक्य, (पु०) शुकस्य भावः+अण् । श्वेता । शिव चिह्नरूप.
 शौच, (न०) शृचेर्भावं+अण् । शुद्धि (सफाई) । प्रता । पाकीजगी "न खानेलायक चीजको न खानिदितोके साथ संग न करना और अपने धर्ममें शौच कहलाता है".
 शौटीर, (पु०) शौट् (अर्द्धकारकरना) +ईत् । लगी । रंग और यदादुर । अर्द्धकारवाला (त्रि०).
 शौह, गर्व-मगहरहोना । भ्या० प० सक० केट् । शौही अशोषीत्.
 शौण्ड, (त्रि०) शृण्वायां (सुरायां) अभिरत्न+अण् । शराबमें लगाहुआ । मत्त (मत्तवार) और दश (बुरा)
 शौण्डिक, (पु०) शृण्वा (सुरा) पत्यं अण्+अण् । शृणु भवेचनेहारा । कलालकी एक जाति.
 शौण्डिक, (पु०) शृण्वा (गर्वः) अलि अस+ईत् । स्वायेंण् । कलाल । अर्द्धकारवाला (त्रि०).
 शोद्र, (पु०) शृश्रायां भव +अण् । शृश्रासे उगलहुआ रोग.
 शौद्धोदनि, (पु०) शुद्धोदत्तस्य आत्वं+अण् । शौद्धोदिते रोग । शुद्धोदनी सन्तान.
 शौनक, (पु०) शृनकस्य आत्वं+अण् । शृनकही सन्तान । एक मुनि । "शृनयः शौनकादयः" भा. पु०.
 शौनिक, (पु०) शृना (श्रानिचधत्तानं) प्रशोचनं अण् । शौनिके मानेका कामचलेकला । मत्त देनी हाग । बघाई । शृणुकीक । पिकारी.
 शौभिक, (त्रि०) शोभा दिनां अल+अण् । हाथमर्त्तिन मरारी.

शौरि, (पु०) शरस गोपारम्भम् । सादरविशेष । समुद्र
वा सूक्ष्म पुत्र । विष्णु । धीकृष्ण । और शनिधर ।

शौर्य, (म०) शरस भावः+अण् । बहादुरी । वीर्यं ।
और शक्ति ।

शौलिकक, (पु०) शुक्रे अभिष्टम्+ठक् । करलेनेका
काम करनेहार । महाशुक्ति । तहलीलदार ।

शौचस्तिक, (दि०) शः (परदिने) भव । शम्+ठक्-
शुच् । आनेवाले दिनमें रहनेहार पदार्थ । कलश ।

शौचकल, (पु०) शुकलं (शुभमांसं) एष्यं अण्+अण् ।
शुके मांसका सौदाकरनेवाला । शुके मांसको भेचनेहार ।
“शुके मांसको खानेहार” (दि०) ।

शुन्, शरण (बहना) भ्वा० पर० अक० सेट् । शोतति ।
अधुतन्-अधोतीव ।

शुश्रु, शरण (बहना) भ्वा० पर० अक० लीचनानाक० सेट् ।
शोतति । अध्युत्तन्-अधरोतीव ।

श्रयोत, (पु०) समन्तात् शेषन । चारोंओर लीचन ।
ध्रुव+पण् ।

श्मदान, (म०) श्मानः (रावाः) शेरते अण् । शी+आ-
मण् । “श्मन् शब्दसे शव-दान (भी होता है)” शव
(मुर्दे) के जलानेका स्थान । मसान । मुर्दा जलानेकी
जगह ।

श्मदानपासिन्, (पु०) श्मदाने वसति । वण्+णिनि ।
मसानमें रहता है । महादेव । और बटुक भेरव । मसा-
निआं (चाणक्य) आदि (दि०) ।

श्मधु, (म०) श्म (सुंमुखं) श्रुयते (लक्ष्यते) अनेन ।
धु+ङ् । पुररक्षा धुं शिले पश्चिन्ना जाता है । दाही ।

श्मधुमुखी, (स्त्री०) श्मधु श्रुते वक्ष्या । जिसके मुखपर
दाही है । दाही । पुररक्षे लक्षणकारी पोटापुरणी ।

श्मधुल, (पु०) श्मधु श्रियते अस्+लण् । दाहीवाला ।
पाकिया ।

श्मधुवर्धक, (पु०) श्मधु वर्धयति (तिजति) । धृ+
लण् । दाही काटना है । नापित । धुरधर्मधारक । उल-
रहे कामकरनेहार । माई ।

श्मान, (वि०) श्वै+अक । बहुल निद्रुण्यया । गन्डा होमदा ।
सूक्ष्मता । “पथथाःशानवर्धमान्” रघु ।

श्मान, (पु०) श्वै+अक । इन्द्राकृष्ण । प्रदण्डके
लीचका बोड (बट) । नीला । बाला ।

श्मानक, (पु०) श्वामेव+इत्थं वण् । एवप्रकारका धन ।

श्मानकण्ड, (पु०) श्वाम इत्थं अस् । जितका मला
काम है । मयूर (मोर) । टिच । नीलकण्ड । एवप्र-
कारका पत्नी ।

श्मानकर्म, (पु०) श्वाम कर्मः कर्म । काले कर्मका ।
अधमेव (बट)के उपलोकी (काममें अनेकाम) धेनू ।

श्मानक, (पु०) श्वामकर्मं काति । का+क । विप्लव । काले
रंगवाला (वि०) ।

श्मानलता, (स्त्री०) कर्म० । एक वेल । कालारन ।
कालक । कालरंग । हाररंग ।

श्मानशायली, (पु०) शिववन (श्वामी शकलं च) श्वाम
(काले) और शकल (विचित्र-कण्ठकम्बा) । यमराजके
द्वारके एक (रथकारे) दो पुते । चार आँसवाने
चमके पुते ।

श्मानसुन्दर, (पु०) श्वामः अपि सुन्दरः । काग होकर
भी सुन्दर है । धीकृष्ण । “श्मानसुन्दर ! ते दण्य-”
इति भागवतम् ।

श्माना, (स्त्री०) श्वै+अण् । एकभाषण (दारां) । बट
श्री जो शमी प्रणव नदीद्वई । वयुवा । एति (राग) ।
गिले । गुग्गल । नील । हस्ती । विपल । मय । गुण्ठी ।
छाया । शिवासा (दानीका इला) । पी । एक पत्नी ।
एकप्रकारकी शीतल (शीतकालमें जिनके अंग गरम हो
और गरमीमें शमावटीसे शीतल हो, एग गोनेके
समान हो) ।

श्मानाङ्ग, (पु०) श्वामं (हरिदूर्णं) अङ्गं अस् । जिनका
शरीर हरिरेणका हो । पुष्पद । कालेशरीरका (वि०)
श्रियां शीर् ।

श्माल, (पु०) श्वै+आणन् । पत्नीप्रजा । स्त्रीका भाई ।
साथ । “श्मालिक” भी ।

श्माप, (पु०) श्वै+अण् । कालापीय रंग । उटकाण ।
(वि०) ।

श्मापदन्, (वि०) श्वयो दन्तो वस । दन्तदण । काले-
रंगके दाँववाला ।

श्मापदन्त, (पु०) कर्म० । सप्तपत्नीसे जिनके काले दाँव
हैं । ६ त० । कर् । कालेदाँववाला (वि०) । “दण्डः
श्मापदन्तक” श्रुतिः ।

श्मेत, (पु०) श्वै+अण् । उरवर्णं (शिशु-वर्णैरेण) ।
उलकाला (वि०) । श्रियां शीर् । “ए” को “अ” होना
है । श्वेती ।

श्मेत, (पु०) श्वै+अण् । एवप्रकारका काले (काल) ।
काले रंग । उलकाला (वि०) ।

श्मै, गति (अण्) । भ्वा० क्+अण् । श्वै+इत् । श्वै+इत् ।
अरवाला ।

श्मैक्यपाता, (स्त्री०) श्वैक्य जाने वण्+अण् । मुन् व ।
बड़ा काल गिराव काल है । श्वैक्य । शिवाण । अर
अण्, श्व (देन) । भ्वा० व० क० सेट् । अण्ति ।
अधमोन्-अधमोन् ।

अण्, देन । पु० व० क० सेट् । अधमोन्ति । अधि-
वर्ण ।

श्रीशिवमदेव, (पु०) शब्द-जाना+भक्तृ रि+ञञ् ।
सम्पूर्ण विद्याभोके पर जनेबला एक मुनि । जैनोंका
पहिला तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) ।

श्रीजजिननाथ, (पु०) जि+ज (न० त०) य चागो
नाथः । मातृ+ञञ् (अ) । सिटीवेगो न पीता जा
सबनेहाए स्वामी (माणिक) । जैनोंका दुगला तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसंभयनाथ, (पु०) सम्+भू+भार (अ) तस्य मायः ।
गृष्टिमायार आत्मा बलनेबाला । जैनोंका तीसरा तीर्थ-
ंकर अर्थात् (अवतार) ।

श्रीसभिनन्दन, (पु०) सभि+नन्द+अन । सभिनन्द-
ननि (समीरबर्जिनम्) । भारने भर्तोंको गर्वया क्षोहर-
हित करनेवाला । जैनोंका चौथा तीर्थंकर (अवतार) ।

श्रीसुमतिनाथ, (पु०) सु+मन्+तिन् (ति) । सुपु
मतिः यस्य (ब० मी०) तेषां मायः । अष्टमी (निर्मल)
पुष्टिबालोंकी रक्षा करनेवाला । जैनोंका पांचवां तीर्थंकर
अर्थात् (अवतार) ।

श्रीसुप्रभु, (पु०) सु+प्र+भू+इ (ऊ) । सान्पूर्ण
धन अथवा शरीरवी सब माणिकोंपर आत्मा बलनेबाला
योगिताम । जैनोंका छठा तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) ।

श्रीसुधाश्विनाथ, (पु०) सु+श्व+श्व+भू+इ (ऊ) । सुधाश्वि
नाथः । बहुत पाप रहनेहारा नाथ (स्वामी) । अन्न-
राजा । जैनोंका सातवां तीर्थंकर (अवतार) ।

श्रीसुप्रभु, (पु०) सु+प्र+भू+इ (ऊ) । सान्पूर्ण
धन अथवा शरीरवी आनन्द उपक्रानेहारा स्वामी । सुन्दर-
नाथ । जैनोंका आठवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) विशेष

श्रीसुविधिनाथ, (पु०) सु+वि+धि+नि (ति) । तेषां नाथः ।
सम्पूर्ण नियमों (बान्नों) पर आत्मा बलनेबाला ।
जैनोंका नववां (नावां) तीर्थंकर (अवतार) ।

श्रीसुविल्लास, (पु०) सु+वि+ल्ला+स (अ) । सुविल्लास
नाथि । शीत अग्नि अन्न+ल्लू का । सान्पूर्ण स्वभाव-
बालोंका एक नाथ अथवा । जैनोंका दसवां तीर्थंकर अर्थात्
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

श्रीसुवर्षनाथ, (पु०) सु+वर्ष+नाथ (अ) । सुवर्ष
नाथः । शेरनाथ-स चागो नाथ । शिवर, शम्भु, शंभु
अदि मुनीके पूर्ण स्वामी । जैनोंका इगारवां तीर्थंकर
(अवतार) ।

पडशीति, (शी०) पडधिका अशीतिः । छ ऊपर अरसी । छियासी, सूर्यका एक प्रकारका संकमण ।

पडशीतिमुख, (न०) पडशीतेः मुखम् । पडशीति नाम संक्रान्तिका मुख ।

पडानन, (पु०) पद् आननानि यस्य । जिसके छ मुख हैं । कार्तिकेय । स्वामिकार्तिक ।

पड्भि, (पु०) पद् कर्मयः (ऐश्वर्याणि) यस्य । छ ऐश्वर्यावाला परमेश्वर ।

पड्गव, (त्रि०) पड्भिः गोभिः आयुक्तः शकटः हलो वा । अच् समा० । छ बैलवाला छकडा वा छ बैलोंसे खेंका गया हल । "पण्णां गवां समाहारः" द्विगुः । छ गौएं (न०) ।

पड्गुण, (पु०) पड्भिः (गुणिताः) गुणाः । शाक० । राजाओंके सन्धिआदि छ गुण ।

पड्प्रन्थि, (न०) पद् प्रन्थयः अस्य । छ गांठवाला । पिप्पलीमूल (मष) । छ पर्व (गांठ) वाला (त्रि०) ।

पड्ज, (पु०) पड्भ्यो नासादिस्थानेभ्यो जायते । जन्+ञ् । नासाआदि छ स्थानोंसे निकलता है (नासा, गला, छाती, ताल, जीभ और दांत) एक स्वर । "पड्जघंघादिनी केका" इति रघुः ।

पड्दीर्घ, (पु०) पड्भिर्गुणिता दीर्घाः । तक्षमें आ, ई, ऊ, ऐ, औ, अः इस प्रकार छ दीर्घ ।

पड्धा, (अव्य०) पप्+प्रकारे धात् । पद्प्रकार । छ तरहसे ।

पड्हरस, (पु०) पण्णां रसानां समाहारः । छ रस (मधुर-मीठा, उबन-सख्खना, तिख-तीखा, कपाय-कमैला, अम्ल-खटा और कटु-कडवा) ।

पड्द्वर्ग, (पु०) १ त० । छभौका वर्ग (समूह) । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (दूसरेके छुमसे वैर करना) "व्यजेष्ट पड्द्वर्ग" इति भट्टिः । ज्योतिषमें क्षेत्र, शोण, देहाण, नवांश, द्वादशक, त्रिंशत्सक ।

पण, दान (देना) । तना० उभ० स० सेद । सनोति । सनुते ।

प (दा) षड्, (पु०) पप्+ड-ष्ट० । ष्ट । (षल) । नपुंसक (हीजडा) । पषड्भदिका समूह (पु० न०) ।

पषट्, (पु०) पप्+ड-ष्ट० । नपुंसक (हीजडा) ।

पण्मुख, (पु०) पद् मुखानि यस्य । छ मुखवा । स्वामिकार्तिक ।

पद्, विवाद (रिहका इटना-अप्रसोग करना) । अष्ट० । हिंस-भारवा और गति-जाना । स० पु० प० अनिद् । हींदति । अष्टरद् ।

पड, ण्य (निटना) भ्वा० प० ण० अनिद् । सप्तति । अष्टरद् ।

पड्, (त्रि० व० व०) । पो+डिद्-ष्ट० । छ छि रोख्या (निजरी) । ण्य अष्ट ।

पष्टि, (शी०) पड्गुणिता दशतिः । नि० । ४ पुंनुर दशके साय । साठकी संख्या (गिनती) । उभ सक्र+व ।

पष्टितम, (त्रि०) पष्टेः पूरणः+तमद् । त्रिने षडे संख्या पूरी होजाय । त्रियां षीप् । साठनी । छत्रं ।

पष्टिसंघटसर, (पु० व० व०) पष्टिगुणिका संघटः । ज्योतिषमें प्रविष्ट प्रभव आदि साठ वरिस (वं) ।

पष्ट, (त्रि०) पण्णां पूरणः । पप्+ष्ट-सुहृच् । त्रिने षडे संख्या पूरी हो । छटा । त्रियां षीप् । छत्री ।

पष्टक, (त्रि०) पष्टो भाग+भक्त । छटा हिस्सा ।

पष्टांश, (पु०) कर्म० । रक्षा करनेके बड़े प्रयत्न सेनेलायक उत्पन्नहुए दस्य (सेवी) का छटा दस्य राजाका कर (मासूल) ।

पष्टान्न, (त्रि०) पष्टो दिवसस्य पष्टः काल । बन्न-नं जनस्य वा कालो यस्य । दिनके छडे भागमें भोजन नैहारा ।

पष्टी, (शी०) पण्णां पूरणी-उद्-सुद्-दीर् । छटा। सेवी होने स्वामिकार्तिककी स्त्रीरूप एक प्रकारकी मातृका (मय) ।

पस्, स्वप्न (सोना) । अदा० प० अठ० वेद (से) आता है) सत्ति ।

पस्त्र, (संप्रग) फैलना-सरकना । भ्वा० प० ष० हे । सञ्चति ।

पह, क्षमा (सहारना) । भ्वा० वा० सक० सेट् । हर्ते । असहीत् ।

पाइगुण्य, (न०) पद् गुणा एव+भ्यन् । एकजोडे होने आदि छ उपाय ।

पापमातुर, (पु०) पण्णां मातृणां अपत्यं+भृत्-उरार्ते रपरः । छ माताओंका बेटा । कार्तिकेय (शरीर ही कृत्तिका, गंगा, पृथिवी, और पार्वती इन प्रजा माता हैं) ।

पापमासिक, (न०) पष्टे मासे भव+ठन् । मरेपुत्रे ही एक दिन कम छडे महीनेमें करनेलायक एक प्रजा धाद (वैदिक धन्नासे कियागया कर्म) ।

पाप्, सिद्धि । हासिल होना । स्वा० और रिश० पर० भा० अनिद् । साप्नोति । साप्पति । असाप्रीत् ।

पान्त्व, सामयुक्त सामादन (दिवासादेना) । पु० प० स० सेद । सान्त्वयति-ने ।

पि, बंध (बांधना) स्वा० षवा० उ० स० अनिद् । हिंसे विजुते । सिनाति-सिनीते । अगैशीत्-अपेष्ट ।

पिट्, अनार (बेइजत करना) भ्वा० प० ष० हे । छंटति ।

पिद्ग, (पु०) पिद्-गन् । ष्ट० । रिद् । पूं । हर् । सम्पट । चागी ।

पिष्, गति (जाना) भ्वा० प० ष० सेट् । हेते । अगैशीत् ।

पिव्, तन्मुक्तिपर (तान फैलाना-सीना) दि० प० स० सेद् । हीव्यति ।
 पु, सोमरसाचा निष्कालना और मयना । खा० उ० स० । नदाना । अक० अनिद् । छवि पर० सेद् । मुनेति-मुनुवे । असावीत्-असोष्ट ।
 पू, प्रगव-उत्पन्न होना (पैदाहोना) । अदा० था० सक० सेद् । सूते । अक्षयिष्ठ ।
 पू, प्रगव (पैदाहोना) । दि० था० सक० सेद् । सूयते । अक्षयिष्ठ-असोष्ट ।
 पू, सोप (फेंकना) । तु० प० सक० वेद् । सुवति । असा-वीत् ।
 पूद्, निवारण (हटाना) । भ्वा० था० सक० सेद् । सूरते । अमृदिष्ट ।
 पेव्, आरण्य (सेवाकरना) । उवभोगे (राशी करना) । और आसरादेना (आभय) । भ्वा० उ० स० सेद् । सेवति-ने ।
 पो, नासरोना । अक० दि० पर० अनिद् । स्मि । असाप-असावीत् ।
 पोड्, (पु०) वद् दन्ता यस्य । दन्तको द्न् आदेश होना है । नि० । छ दाँतके लायक उमरवाला बाल आदि ।
 पोडना, (पु०) पोडनानां पूरण +उद् । जिस्से सोलहकी घंट्या भरया । सोलहवा । चन्द्रमाकी कल्प (सोलहवा भाग) । त्रिपुरसुन्दरी (श्री०) ।
 पोडशाक, (न०) पोडश परिमाणं अण्य+कन् । पोडश संख्या वस्तु । सोलह चीजे । प्रेकके लिये रीगई १६ ह चीजे-जैसे घृषिकी, आसन, जल, वस्त्र, दीपक, अन्न, ताम्बूल (पान), छत्र (छाता), गंध, माला, फल, घण्ट्या (छेज-बलंग), पाडुका (पोंकी-खड्ग), गौ, सोसा (कंचन), और चाँडी । पितरोंके कृत्यमें दान करनेलायक स्वर्ण आदि सोलह ।
 पोडशान्, (वि० ब० व०) पश्चिमा दश । नि० । छ ऊपर दश । सोलहकी संख्या । उस संतशाबाल ।
 पोडशमातृकर, (श्री०) पोडश संख्या मातरः । सोलह माएं । सोलह दुर्गा-जैसे-गौरी, वामा, राक्षी, मेघ, मा-वित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वादा, माना, लोकमाना, शान्ति, पुष्टि, धृति और सुष्टि ।
 पोडशाद्, (पु०) पोडश द्रव्याणि अद्गानि अम् । गुग्गुल आदि सोलह चीजोंका बनहुआ धूप ।
 पोडशाङ्गि, (पु०) पोडश अक्षयः (घरणाः) यस्य । सोलह पीववाला । ककैट (केकडा) ।
 पोडशाट, (न०) पोडश आरणि (कोणाः) आस्य । सोलह कोनवाला । सोलह पत्तोवाला कमल । एक बंज ।
 पोडशिन, (पु०) पोडश कला धियन्ते आस्य+इति । सोलह कलाकला । चन्द्रमा । सोमरस बालनेका पात्र ।

पोडशोपचार, (पु० ब० व०) पोडश संख्याना उप-चारः । पूजारी सोलह चीजे । जैसे-आसन, स्वागत (भलेआये), पाद, अर्घ्य, आचमनीयक, धूपपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और वंदन ।
 पोडा, (अण्य०) वद् प्रकार+धाच् । नि० । छ प्रकार । छ तरहवे ।
 पोडान्यास, (पु०) पोडा (वद् प्रकारः) न्यासः । तन्त्रमें छ प्रकारका न्यासविशेष ।
 पु, स्तुति-बडाई करना-सारीक करना । अदा० उभ० सक० अनिद् । स्तुति-स्तवीति । स्तुते ।
 पुयै, घेठन-सपेटना-पैरादेना । सक० । हीति-नमकना । अक० भ्वा० पर० अनिद् । स्थायति ।
 पुग्, संवरण-छिपाना । भ्वा० प० स० सेद् । स्थगति । अस्थगीत् ।
 पुा, गति-निश्चि (ठहरना) । भ्वा० प० अक० अनिद् । तिष्ठति । अस्थान् ।
 पुिव्, निरास (मुससे श्लेष्मआदिका निष्कालना) धूकना । भ्वा० पर० सक० सेद् । घीवति । अघेवीत् । घीवनम् । "घ्रीष्वालि" भी होता है ।
 पुवत्, (वि०) पुिव्+फ । निरला (मूक्यया) । और वांत (वमनकेयाहुआ) ।
 पुा, शोधन (साफ करना-नहाना) । स्मि । अभावीत् ।
 पुिणह्, प्रीति (प्यारकरना) । दि० प० स० वेद् । प्रिप्रति ।
 पुिम, ईषदास्य (पोडा हसना-मुक्कडाना) । भ्वा० था० अक० अनिद् । मयते । अस्मेष्ट ।
 पुव्, प्यारकरना और चाटना । भ्वा० था० गक० सेद् । स्वरते । अस्वदिष्ट ।
 पुव्, आलिनन (गलेमिलना) । भ्वा० था० स० अनिद् । स्वजेते । अस्वन्त ।
 पुव्, रासन (सोना) । अदा० प० अ० अनिद् । सपिति । असावीत् ।
 पुव्, वायप्रशरण (नहाना) । दि० पर० व० अनिद् । सिद्यति । अक्षिदत् ।
 सु
 सु, (पु०) सो+उ । विष्णु । राँ (राँप) । ईश्वर । सिह्य (परिवार-पत्नी) । यह सन्तुष्टे पहिले सम्-गम-गुल्-सह-नदराके अर्थमें लगाया जाता है । जैसे-सुपुत्र-गार्द-सन्तु-गम-आदि ।
 संश्लेष (पु०) सम्+शिप्+पम् । बहुवचने अर्थमें छोटे वाक्य आदिसे प्रकाश करना । मुक्तयित् ।
 संश्लोम, (पु०) सम्+श्लु+पम् । वाक्यम् । बंजकण्य । श्लोम । परपट्ट ।

संप्राहिन, (पु०) सम्+प्रह्+णिनि । कुटज नाम द्रव्य ।
संघयकारक (अमा करनेहारा-इकड़ा करनेवाला) (त्रि०) ।
संघ, (पु०) सम्+हन्+ङ नि० । समूह । बहुतमे जीव ।
पन् । पक्कामेल (पु०) ।
संघर्ष, (पु०) सम्+घृ+धञ् । अन्योन्यदृढसंयोग ।
आपसकी रगड़ । आपसमें पक्का मेल ।
संश, (न०) सम्+शा+ङ् । एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य ।
सम्+शा+अद् । चेतना (होश) । बुद्धि (अकल) ।
आस्था (नाम) । हाथ आदिके अर्थको जतलाना
(इशारा) । गायत्री । गौर सूर्यकी स्त्री (जोर) (स्त्री०) ।
संश (शा) पन, (न०) सम्+शा+णिच्+पुक् (मारनेके
अर्थमें) हल हो जाता है । ल्युट् । मारण (मारना)
(दूसरे अर्थमें हल नहीं होता) । शान (जाना) । जतलाना
(इतितहार) किन् । "संशसिः" इसी अर्थमें है (स्त्री०) ।
संशासुत, (पु०) संश्याः (सूर्यपत्न्याः) सुतः । सूर्यकी
स्त्रीका बेटा । शनिधर । शनि ।
संशु, (त्रि०) संहते जानुनी यस्य ("जानु" के स्थान
"शुः" का आदेश होता है) । संहतजासुक । घुटने-
(गोड़े) टेकेहुए ।
संश्वर, (पु०) सम्+श्वर+अप् । अग्नि (आग) से
उपना ताप । सेक ।
संमर्द, (पु०) सम्+मृद्+धञ् । आपसकी रगड़ (एकपर
एकका मिरना) ।
संयत, (स्त्री०) संयम्यतेऽत्र । सम्+यम्+क्रिप्+लुक् च ।
जहां बंध जाता है । मुद (लडाई-जंग) ।
संयत, (त्रि०) सम्+यम्+ङ् । बद्ध (बंधाहुआ) ।
त्रिगने शास्त्रका नियम पालन किया है ।
संयताश, (त्रि०) संयते अक्षिणी यस्य । बरा कीगई
आंखोंवाला । बंद कीगई आंखोंवाला ।
संयताञ्जलि, (त्रि०) संयतः अञ्जलिः यस्य । प्रार्थनाके
समय जोड़े गये दोनों हाथोंवाला ।
संयतात्मन्, (त्रि०) संयतः आत्मा येन । त्रितेन्द्रियः ।
त्रिगने अपने मनको बरा कर लिया है । त्रिनात्मा ।
बशीरुचिना ।
संयताहार, (त्रि०) संयतः आहारः यस्य । संयमपूर्वक
खानेवाला । परिमित (मितहुआ) आहार (खाना)
खानेवाला ।
संयतप्राण, (त्रि०) संयतः प्राणः येन । प्राणोंको बरा
रिचे हुए ।
संयतशाय, (त्रि०) संयतः शयः येन । त्रिगने अपनी
बत्ती को बरा रिया है । मितशयी ।
संयन्त, (त्रि०) संयच्छति । सम्+यम्+ट् । टेकने-
हुए । मितन्तः । मितकार करनेहुए ।

सं(य) याम, (पु०) सम्+यम्+पन् वा रुदि ।
प्रकारका नियम, जो वनका अंग होनेसे एक दिन
कियाजाता है । इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियोंके रोक
बंधन । बांधना ।
संयमन, (न०) सम्+यम्+ल्युट् । बंधन (बांध
मन । चतुःशालग्रह (चौखणीवाला धर) ।
संयमनी, (स्त्री०) संयम्यते अत्र । जहां बांध जा
सम्+यम्+ल्युट् । यमाधिष्ठनपुरी । यमकी नगरी ।
संयमिन्, (पु०) सम्+यम्+णिनि-न रुदि । एक
इन्द्रियोंको रोकनेहार (त्रि०) ।
संयाच, (पु०) सम्यक् घृतादिभिः युजते (मित
गोधूमचूर्णोदि अत्र । जहां आदिआदिके साथ
आदि भलीभांति मिलायाजाता है । सम्+यु+पन् ।
आदिसे पकाहुआ गोधूमचूर्ण (आटाआदि) । कडाई
संयुज, (त्रि०) सम्यक् युजति । सम्+यु+ञिच्
अच्छीतरह जोड़ता है । गुणोंसे बराहुआ । उगड़
संयुक्त ।
संयुक्त, (त्रि०) सम्+यु+ङ् । संयोगवाला वस्तु
मिलाहुआ ।
संयुग, (न०) संयुज्यतेऽत्र । सम्+यु+ङ् । इ
जसे ग । जहां जोड़ाजाता है । मिश्रण है) । उ
लडाई । जंग ।
संयुत, (त्रि०) सम्+यु+ङ् । संयुक्त । उगड़
मिलाहुआ ।
संयोग, (पु०) सम्+यु+धञ् । मेलन । मेल
जोड़ना । क्रियासे उत्पन्नहुआ द्रव्यके आपसमेंमेल
युग । सम्बन्धमात्र । मेल ।
संयोजित, (त्रि०) सम्+यु+ञिच्+ङ् । इउने
मिलायाहुआ । त्रिगी दूसरे पदार्थके जोड़ाहुआ पदार्थ ।
संरम्म (पु०) सम्+रम्+यन्+मुप् । कोर (गुला)
आकरोर (निन्दा) । उखाह (रिस्ती) वेग (जोर) ।
संराधन, (न०) सम्+रा+ध्+ल्युट् । सम्यक् धर
भलीभांति सेवाकरना । सम्यक् भिन्नन । अज्ञान
सोचना ।
संराध, (पु०) सम्+र+धञ् । सम् । अज्ञान ।
संरुद्ध, (त्रि०) सम्+रु+ङ् । श्रेष्ठ (मरत हुआ)
जाताहुए । त्रिगना अंडर निरुद्धाया । पैरु
जमगवा ।
संरोध, (पु०) सम्+रु+पञ् । रोपन (रोपन)
अर रोप (रोपना) ।
संरुद्र, (त्रि०) सम्+रु+ङ् । त्रिगि । त्रिगु
अज्ञान ।

संन्यास, (न०) संवीर्यते । सम्+व्येञ्+कर्मणि ल्युट् । उत्तरीय वस्त्र (ऊपर ओढनेका कपडा) । हरएक कपडा ।

संशसक, (पु०) सम्यक् शसं (अङ्गीकारः) यस्य+कप् । प्रतिज्ञा करके संश्रमसे न छोटनेहारा सेनाका पुरुष ।

संशय, (पु०) सम्+शी+शच् । सम्देह (शक) । एक धर्ममें होना और न होना । विरुद्ध दो धर्मोंका संदेह । “जैसे पर्वत बहियाला है या नहीं” “यह स्यात् (शाखा-दिविहीन वृक्ष-ठोठ) है वा पुरुष” ।

संशयच्छेदिन्, (त्रि०) संशयं छिनत्ति । संशय (शक) -को काटनेवाला । हर तरहके शकको दूर करनेवाला ।

संशयस्थ, (त्रि०) संशये तिष्ठति । स्था+क । संशययुक्त । शकमें पडाहुआ ।

संशयात्मन्, (पु०) संशय आत्मनि यस्य । जिसको “अपनेमें” संदेह है । संदिग्धान्तःकरण । “संशयात्मा विनश्यति” इति गीता । संदेह करनेहारा ।

संशयालु, (त्रि०) संशय+अस्ति अर्थे आलुच् । संशय-वाला । शकी । जिसे संदेह रहता है ।

संशयित्, (त्रि०) सम्+शी+तृच् । संशय करनेहारा । संदेहकर्ता ।

संशरण, (न०) संशयंतेऽनेन । सम्+शृ+शुट् । जिसे बहुत डरता है । रणारम्भ । युद्धका प्रारम्भ (शुरु) । हमला ।

संशित, (त्रि०) सम्+शी+क । सम्पादित प्रतविषयक यज्ञ । किसी प्रतको पूरा करनेका यज्ञ करनेहारा । तेज प्रिया हुआ । मजीमति पूरा कियाहुआ । निर्णय कियाहुआ ।

संशितप्रत, (त्रि०) संशितं (सम्पत् सम्पादितं) प्रतं अनेन । मजीमति प्रतको पूरा करनेहारा । जिगने अपना नियम पूरा किया ।

संशुद्धि, (स्त्री०) सम्+शु+क्किन् । सम्यक् शोधन । अच्छी सफाई । देहादिमार्जन । शरीरआदिकी सफाई ।

संश्रयान, (त्रि०) सम्+श्र+य+क । शीत आदिसे छिडकानेहुआ ।

संश्रय, (पु०) सम्+श्रि+अच् । आश्रय । आगरा । रहनेकी जगह । निवासस्थान ।

संश्रय, (पु०) सम्+श्रु+अच् । अङ्गीकार । इच्छार । अ-च्छी तरह सुना । सुबख्शा । “पञ्च” “संश्रय” यही अर्थ ।

संश्रुत, (त्रि०) सम्+श्रु+क । अङ्गीकृत । इच्छार किया-हुआ ।

संश्रुष्ट, (त्रि०) सम्+श्रि+कृ+क । आश्रित । निवा-हुआ । अच्छी तरह संरक्षित ।

संश्रव, (पु०) सम्+श्र+अच् । आश्रित । निवृत्त । सं-

संसक्त, (त्रि०) सम्+गञ्+क । मिलित । निरुद्ध । बंधाहुआ । बहुत निरुद्ध (नजरीक) ।

संसक्तमनस्, (त्रि०) संसक्तं मनः यस्य । बने हुए मन-वाला । जिगने अपना मन किसी जगह लग रहा है ।

संसद्, (स्त्री०) संसीदति अस्मात् । सम्+सद्+शि । जिसमें भलीभांति बैठता है । सभा । कमेटी । समिति ।

संसारण, (न०) सम्+सृ+ल्युट् । अपने अट (री और पुण्य) से बंधाहुआ देहका अङ्गीकार कलम संसार । बहना । गमन । चलना । युद्धका आरम्भ । हल-

संसर्ग, (पु०) सम्+सृज्+घञ् । सम्बन्ध । मेल । ईश्वरके अनन्तर “जो तेरा धन है वह मेरा है” इस प्रकारसे एकही स्थानमें इकट्ठा रहनाहुआ सम्बन्ध (मेल) ।

संसर्गभाव, (पु०) संसर्गस्य अभावः । मेलका न होना । ध्वंस, प्रागभाव और अत्यन्ताभावरूप-मेरसे निवृत्त बने (न होना) ।

संसार, (पु०) संसरति अस्मात् । सम्+सृ+घञ् । चला है इत्से । सिध्याज्ञानसे अपनी संस्काररूप बानना । दोष आरम्भ करनेहारा अदृष्टविशेष । “आधारे घञ्” शि । दुनिया । “भावे घञ्” सगति । मिलना ।

संसारचक्रं(न), (संसारस्य चक्रं) संसारका चक्र । जन्म-मरणका प्रवाह ।

संसारमार्ग, (पु०) ६ त० । संसारका पथ (रास्ता) । मोनिद्वार (मोनिहीसे बाहिर निकलनेपर मार्ग मोहपना है) ।

संसारमोक्ष, (पु०) (संसारान् मोक्षः) संसार (जन्म-मरणप्रवाह) से छुटकारा । अन्तिम छुटकारा । मुक्ति ।

संसारिन्, (त्रि०) संसरति (अदृष्टमेरे देहेन वा संयुज्यते) । सम्+सृ+णिनि । किसी पुण्यपापके कारण शरीरके साथ जुडता है । शरीरका अभिमानी जीवन्त ।

संसिद्ध, (त्रि०) सम्पत्क सम्पत्तेन वा सिद्धः । सम्+सि+क । स्वभावहीमे बनगया । मजीमति बनगुआ ।

संसृति, (स्त्री०) सम्+सृ+क्किन् । संसारका प्रायः संगति । मेल ।

संसृष्ट, (पु०) सम्+सृ+क । विभागके अनन्तर प्र-प्रताने फिर अपने २ धर्मोंमें संबंध रखनेहारा मजीमति “संसृष्टस्य तु संसृष्टिः” इति रघुः । बसने (बैठने) का कृत्य । और मिलाहुआ । “भावे क” मेल ।

संसृष्टिन्, (पु०) संसृष्टं अनेन+इतिः । मजीमति की आदि ।

संसृष्टक, (पु०) सम्+सृ+कृ+कृ+क । संसारका मेल । संसारके अन्तरे । संसारके अन्तरे । संसारके अन्तरे । संसारके अन्तरे । संसारके अन्तरे ।

संस्कार, (प्र०) सम्+ह+पम्+सुट् च । शुद्धकारना ।
 एतिका कारण अनुभवने उपजा आत्माका एक गुण ।
 पृथिवीआदि कारोमें रहनेदाहा " वेग " नामी गुण ।
 रात्रके आत्मापसे उत्पन्नहुआ इन्द्र (तिआकत) । ध्या-
 करणकी रीतिसे सम्बन्ध साधनप्रकार (बनानेका ढङ्ग) ।
 प्राङ्गणआदिवा वेदमें कहेहुए कर्मोंकी योग्यताका साधन,
 गर्भाधानआदि क्रियाओंका समूह । पाक (पकना-रगोरे) ।
 विवाहादि दम प्रकारका धर्म

संस्कारपूत, (वि०) (संस्कारेण पूतः) वैदिक रीतिसे
 पवित्र किया गया । विधाने शुद्ध किया हुआ।

संस्मृत, (वि०) सम्+ह+क+सुट् च । संस्मृत (शाक)
 कियाहुआ पदार्थ । व्याकरणआदि कृत्योंके आधीन साधन-
 वाला शब्द । पचाहुआ । गजहुआ । और घोषित (शाक
 कियाहुआ) ।

संस्मृतोक्ति, (स्त्री०) (संस्मृता उक्तिः) संस्मृत किया
 गया वचन । शाक कीगई वाणी (बोली) ।

संस्तर, (प्र०) सम्+स्त्रु+अप् । यज्ञ । शब्दा (छेज-
 पलेग) । पत्तोंकी बनीहुई शब्दा (पलेग) । विश्वास

संस्त्व, (प्र०) सम्+स्त्रु+अप् । परिचय (बाकपीपत)
 शब्दीतरह प्रयोग कियाहुआ।

संस्त्याय, (प्र०) सम्+स्त्ये+अप् । मंत्राल । गड ।
 कैलाश । पर।

संस्त्य, (वि०) सम्+स्त्या+ङ् । अवस्थित (टिकाहुआ)
 और मृत (मरगया) ।

संस्थित, (वि०) सम्+स्था+ङ् । मृत । (मराहुआ) ।
 शब्दीतरह टराहुआ

संस्तुट्, (वि०) सम्+स्तुट्+ङ् । विचनित । पिलाहुआ।

संस्तोड, (प्र०) सम्+स्तुट्+अप् । बुद्ध । जंग । समई।

संहत, (वि०) सम्+हन्+ङ् । हट (पडा) । मिराहुआ ।
 दूगरेके साथ मिलाहुआ । "संहतपर्यायलाव" ही संद्वयम्।

संहतजानु, (वि०) (संहतो जानु यस्य) । मिलेहुए
 (जुटेहुए) घुटनोंवाला।

संहतस्तनी, (स्त्री०) (संहतो स्तनी यस्याः) । एक दूगरेसे
 मिलेहुए स्तनोंवाली स्त्री । पनस्तनी।

संहति, (स्त्री०) सन्+हन्+फिन् । समूह (बहुतया मेल) ।
 सम्मग्न हनन । अकीर्णति चोड हलाना।

संहनन, (न०) संहन्यते (पठ्यं संश्रयते) । सम्+
 हन्+स्युट् । देह । शरीर । संधान (समूह) । और बध
 (मारना) ।

संहर्ष, (प्र०) सम्+हृप् । सम्+हृप्+अप् । आनन्द
 (सुखी) । "सहृष्यति अनेन" प्रसन्न होता है इत्ये ।
 बाधु (दवा) ।

संहार, (प्र०) सम्+हृ+अप् । प्रलय । नाश (तब
 एक नरक।

संहिता, (स्त्री०) सम्+हृ+ङिन् (प्रतिपाद्यं) यस्या
 शब्दी बतवके वर्णन करती है । मनु आदिसे क
 धर्मशास्त्र । पुराण । इतिहास (शारीर आदि) । ।
 षडो प्रतिपादन करनेदाहा वेदका भाग।

संहृति, (स्त्री०) सम्+हृ+फिन् । बहुताये मुख्यया

संहृदिन्, (वि०) सम्+हृ+ङिनि । शब्द करनेदाहा

सकण्ठ, (वि०) सह कर्णेन । श्रुतिशील । सुने
 बानशाल।

सकर्मक, (वि०) सह कर्मणा+कप् । व्याकरणमें कर्म
 क्रियाको जतलानेदाहा धातु (जिसका फल क
 पडा है) ।

सकल, (वि०) सह कलया । "सह" को "स" का
 होना है । सम्पूर्ण (सारा) । कलासहित । हुमरकामे

सकारण, (वि०) सह कारणेन । कारणके साथ
 जैसे मंत्रीका कार्य "सहा" है।

सकारा, (प्र०) सह+अप् । सह कारणेन । अग्नि
 समीप । पान।

सकुल्य, (वि०) समाने कुले भव+अप् । एकही
 हुआ । अपनेसे ऊंचे वा नीचे आठवीं पीढीतक पुर
 समूह । दायभाग (विरसा) देनेमें अपनेसे ऊपर
 नीचेकी पांचवीं पीढीमें कोई पुरय । जातभार।

सकृत्, (अन्व०) एकवार।

सकृत्प्रज, (प्र०) सकृत् (एकवार) प्रजायते । प्र+
 ङ् । एकवार उत्पन्न होता है । कीआ । काक । ए
 पंदाहुए घन्जानवाला (वि०) ।

सकृत्प्रला(ली), (स्त्री०) सकृत् फलति । फल+
 एकवार फलता है । कदलीश (केलेला इस्त) ।

सक्त, (वि०) सम्+ङ् । आसक्त (फंदाहुआ) । अग्नि
 लगाहुआ।

सक्त, (प्र०) सम्+सुट् । श्रयवदिपूर्ण (मुनेहुए
 (आदिक पूरा) सत्तु।

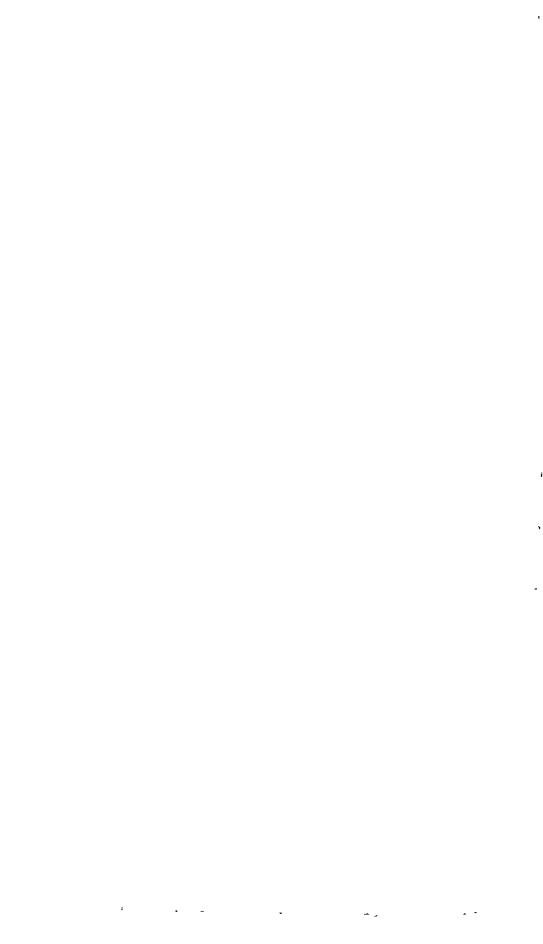
सक्थि, (न०) सम्+थिन् । ऊह (पर) । बाइय
 गायीका ओर।

सक्ति, (वि०) सह (समान) श्यायते । क्वा+भृन्-
 शौरादेवक (प्रेमगहित) । गमानशीतिकरनेदाहा।

सखी, (स्त्री०) सखि+ङीप् । सहचरी (साथिन) । बन्
 सहेवी।

सख्य, (न०) सख्युर्भाव+अप् । मित्रका होना । मित्रता । दो

सखर, (प्र०) सह कारणेन (मित्रेण) क्त । मित्र (जदि
 के साथ उरया । सर्वसंसाका एक राजा । "सखरन् या
 जन " ही पुराणम् । मित्रता (वि०)



सङ्गम, (पु०) सम्+गम्+पञ्चन वृद्धि । संगति (मेल) । स्त्री और पुद्बद्धा संभोग । नदीआदिका नद (बहा दयां) आदिके साथ मिलनेका स्थान । "गंगासागर-सङ्गमः" इति पुगणम्.

सङ्गर, (पु०) संगीयंते । सम्+गृ+अप् । आपद् (मुची-वत्) । युद्ध (जंग-लडाई) । प्रतिरा (इकर) । कामकरनेहार । विष (जहिर) शमीका वृक्ष.

सङ्गय, (पु०) संगता गावो दोहनाय अत्र काले नि० । जिस समय गौएं खोनेके लिये इकट्ठी होती हैं । प्रातः-कालके धनन्तरके तीन मुहूर्त (छ पडियें) .

सङ्गिन्, (त्रि०) सङ्ग+पिपुण् । संगयुक्त । संगवाला । साथी । भोगी । शहवती । जिनां पीप्.

सङ्गीत, (न०) सम्+गी+क । दर्शनके लिये नाच, गीत, वाद्यनिक । नाचना गाना-बजाना-गीतों । उन तीनोंको प्रतिपादन (वर्णन) करनेहारा मंत्र । "कर्मणि क्" । सम्बन्ध गीत । भलीभांति गायाहुआ (त्रि०) .

सङ्गीर्ष, (त्रि०) सम्+गृ+क । स्वीकृत । मानाहुआ.

सङ्गह, (पु०) सम्+प्रह+अप् । ग्रहण । इकट्ठा । संक्षेप । योग्या । बहुत अर्थवाले वाक्योंको एक स्थानमें जोड़ना.

सङ्गहणी, (स्त्री०) संविता मद्रणी । इस नामका एक रोग । कन्जी.

सङ्गाम, (पु०) संगमान-लडाई करना+अप् । युद्ध । जंग । लडाई.

सङ्गामपट्ट, (पु०) १ त० । युद्धका धाजा । रणवाच-विशेष.

सङ्गादिन्, (पु०) सम्बन्ध गृह्णाति मत्तं । सम्+प्रह+णिनि । भलीभांति मलको डेला है । घुटजत्रस । मलको रोक्-नेवाला (मलावटम्भक) । संग्रह (इकट्ठा) करनेहार (त्रि०) .

सङ्ग, (पु०) सम्+द्वय+अप् । राजातीसमूह । एकजातिवा-लोंका मेल । समूह । बहुतसे इकट्ठे रहनेवाले लोग.

सङ्गट, (पु०) सम्+घट्+अप् । परस्परसंपर्षण । आपसमें रगड़ना । मीठ । गठन । गांठना । चक् । पहिया.

सङ्गर्ष, (पु०) सम्+घर्ष+अप् । परस्परपर्षण । आपसमें रगड़ना । पीटना । आपसमें टक्करना । रसों । हराद.

सङ्गदात्, (अर्थ०) संप+शीघ्रार्थे सम् । भूरिग । बड़े टोकर । बहुतही समूह.

सङ्गात, (पु०) सम्+द्वय+अप् । समूह । एक नरक । सम्बन्ध हुनन (अगुठीतरह बोट लगाना) । टटरीबोध । पका मेल । और बफ.

सञ्चि(षी), (स्त्री०) सञ्च+इन्+का षीप् । इन्दाणी । इन्दी की.

सञ्चिय, (पु०) सञ्च+इन् । वासक । सहाय (मदनकरने-हार) । मंत्री । वकीर.

सञ्चेतन, (त्रि०) सह चेतनया । विविष्टज्ञानयुक्त । निरोप-हानवाला । अच्छीसमझवाला । चेतनाके साथ । होसके साथ । होशियार.

सञ्चेष्ट, (पु०) सञ्चते-सञ्च+अच् । तथाभूतः गन् इष्टः । आस । आम (अंब) । "सह चेट्या" चेटान्वित । चालक (त्रि०) .

सञ्चिदानन्द, (पु०) सत् (निला) चिन् (चैतन्यं) धानन्दः (मुदस्वरं) त्रिपद् । कर्म० । निदान और सुखस्वरूप मद्र । परमात्मा.

सञ्च्युद्, (पु०) कर्म० । अच्छा शूर । गोर (गणल) । गूर । और मापित । नार्द.

सञ्जाति, (पु०) समाना जाति. अर्थ । एकजातिवाय । समान वर्णसे समान वर्णवाली कन्यामें उपरज दियाहुआ पुत्र । समानजातिवाला (त्रि०) .

सञ्जातीय, (त्रि०) समानां जातिं धर्षति । उ (ईय) । समानधर्मवाला । धर्मजातिवा.

सञ्जु(ज्)स्, (अर्थ०) सहायें । साथके अर्थमें.

सञ्ज, (त्रि०) सञ्ज+अच् । वयुक्त । सहाहुआ । संनद । "सजा" अयोजन (लगाना-जोड़ना) । विर (सजाहुआ) । "सतो आयते-ञ्ज+अ" । गण्यु (मते) में उपजाहुआ । अथवा सगुने हुआ (त्रि०) .

सञ्जान, (त्रि०) सञ्ज+विच+अप् । रसके लिये ऐक्यका स्थापन । समूज+अप् । आयोजन (जोड़ना) । सन् जन. । भला मातृप । अगुठी कुलमें दापयहुआ (पु०) । राजाआदिके बदनके लिये हाथीका सजाय.

सञ्जय, (पु०) सम्+वि+अच् । सगूर । और संपद (इकट्ठा) .

सञ्जयिन्, (पु०) सम्+वि+इनि । संपदकारक । जन्म-करनेहार.

सञ्जहार, (पु०) सञ्चरति अनेन । सम्+चर्+अच् अर्थमें "क" वा अच् । सेपु (पुल) । देद (दर्दर) । आ-आदिका इतरी दारिद्रि जाना । "अने क" । अनेजाति जाना.

सञ्जारिन्, (पु०) सम्+चर्+णिनि । सपु (सप) । अलंकारमें नगरसञ्चारिक अनुगरी अर्थात्सेव । चक्र-वेष्टा (त्रि०) .

सञ्जित, (त्रि०) सम्+वि+क । सञ्चित । इकट्ठिकर-हुआ.

सञ्जयन, (व०) सम्+ञ्+अप् । अगुठमें एक दुगरेके साथसे बनगुआ चटु-रत्नकर (बंकीरका वा) .

सन्ध्यानिट्, (पु०) सन्ध्यायां नटति । नट्+णिनि ।
- संध्याके समय नाचता है । शिव । शंकर.

सन्ध्याघ्न, (न०) सन्ध्याकालिकं अन्नं इव । मानो संध्या-
समयका बादल है । सुवर्ण । गेरी । सांझका बादल.

सन्ध्याराग, (न०) सन्ध्याया इव रागः अस्य । संध्याकी
नाई जिसका रङ्ग है । सिन्दूर । सँधूर.

सन्ध्याराम, (पु०) सन्ध्यायां रमते । रम्+घञ् । जो
सन्ध्यानाम स्त्रीमें रमण करता है । मझां.

सन्न, (पु०) घीदति । सद्+क् । पियालका वृक्ष । भवसज
(निबल-कमजोर-घटाहुआ-दुखीहुआ) (त्रि०) । "स्वाये
घ्न" सर्वे । वामन । वौना.

सन्नत, (त्रि०) सम्+नम्+क्तं । प्रणत (झुकाहुआ) ।
शब्द करनेवाला.

सन्नह, (त्रि०) सम्+नह्+क्तं । कृतसन्नाह । संजोह
पहिरेंदुए । तयारहुआ । बंधाहुआ । उत्पन्नहुआ.

सन्धय, (पु०) सम्+नी+अच् । समूह । बहुतरा.

सन्नहन, (न०) सम्+नह्+ल्युट् । धर्मग्रहण । संजोह
पहिरना । उद्योग । हिम्मत । पूरा बंधन.

सन्नाह, (पु०) सन्नघ्रते । सम्+नह्+घञ् । संजोया ।
धर्म । अच्छीतरह बांधाजाता है.

सन्निकर्ष, (पु०) सम्+नि+कृप्+घञ् । सान्निष्य । निक-
टता । पागरोना । "सङ्गतानिकर्षो हि क्षणार्धमपि शस्यते"
पुराणम् । विषय और इन्द्रियका सम्बन्ध (स्यापार ।
व्यापमर्गमें इनसंशय सामान्य संशय और योगजधर्मवि-
शेष सत्य अलौकिक प्रत्यक्षका साधन एक उपाय.

सन्निकर्षण, (न०) सम्+नि+कृप्+ल्युट् । सन्निधान ।
निष्कट होना । नजदीक होना.

सन्निधान, (न०) सम्+नि+धा+ल्युट् । नैक्य । सामी-
प्यहोना । पासहोना.

सन्निधि, (पु०) सम्+नि+धा+क्ति । सामीप्य । पाग-
होना । "कर्मणि धि" इन्द्रियका विषय । कर्म० । अच्छा
सज्जना.

सन्निधित्त, (त्रि०) सम्+नि+घञ्+क्तं । मिलाहुआ ।
एकितहुआ । मरगदा.

सन्निधान, (पु०) सम्+नि+घञ्+घञ् । मेहन । मिलना ।
जंभे मिला । इच्छे होकर । हठकर । मिटना ।
सुधूर । एक प्रकारका ज्वर (बुध्वा-रोग) त्रिपरी
सर्वरसे कीसे कष्ट (कान्तिग-हृद) निरुद्ध विषय
कर्म-रु कदा कदाचित् सुखदा विनाशक वैश्वरूप
विशेष विदित है । अथ । उत्पत्ति (वंशधर) ।
सन्निधान । अथवा अथवा अथवा (अथ)

सन्निपातनुद्, (पु०) सन्निपातं (विशेषरसेत्)
नुवति । नुद्+क्लिप् । जो तीन दोषोंमें उत्तमदुःख
रको दूर करता है । नेपाउनिम्ब । नेपाउरेरु
(निम्ब).

सन्निवन्धन, (न०) सम्यक् निवन्धनम् । प्र० ।
तरह बांधना । मक्का बांधना । कई स्थानोंमें मिला
वाक्योंको एक स्थानपर संकलन (इकट्ठाकरना) ।
तदुपयोगी (उस कामको पूरा करनेवाला) संशय
७ व० । अच्छी जीविकावाला (त्रि०).

सन्निभ, (त्रि०) सम्+नि+भा+क्तं । मत्ता । सन्
एक जैसा.

सन्निवेश, (पु०) सम्+विश्+आधारे ष् । पुरे
हिरका देश । भावे ष् । सम्प्रस्थिति । मर्ग
ठहरना । रावा । अखाडा.

सन्निहित, (त्रि०) सम्+नि+धा+क्तं । निष्ठस्य ।
ठहिराहुआ । नजदीक । "कर्मोन्निहितं नैवेति" नीति
और भरीभांति स्थापित (रक्तागया) । "कर्मो
नैक्य (नजदीकहोना) (न०).

सन्निहितापाय, (त्रि०) सन्निहितः अपायः नाश कर्म
निकट नाशवाला । जिसका नाश तयारही है ।
दूर । विनश्वर । असार.

सन्धयस्त, (त्रि०) सम्+नि+अम्+क्तं । निष्पि
रक्तागया । डालागया । अच्छीतरह साधन
जुगहुआ । अर्पित (दियागया).

सन्ध्यास, (पु०) सम्+नि+अम्+घञ् । "सन्ध्या
कर्मो न्यायं संध्यासं करयो विदुः" ही मरण
अथल भक्तिरूप कलको छोड़ केवल सांगति विरत
कामनासे क्रियेगये कर्मोंका त्यागदेनाही सन्ध्यास है ।
काव्यकर्मपरत्याग ही सन्ध्यासका लक्षण है ।
निधान क्रियेदुए कर्मोंका रिधान (रीति). ही
भांति त्याग करना । उगदे योग्य योग्य अथवा
(पैत्र) में करनेवालाक पुराणमें प्रसिद्ध विधा है ।
प्रतिशेय.

सन्ध्यातिन, (पु०) सम्+नि+अम्+णिनि । सन्ध्या
नेके आधमकला । नेत्रमें कर्मोंके टिनना ।

सन्ध्याद, (पु०) सन्ध्याः पशुः । प्र० । गण्य और
सोने रहकर, गौरी भाग और धूपका एक
पशु है । परशुना । अग्नीहोत्रके सोपाने ।
(त्रि०).

सन्ध्याकरण, (न०) मट वनेम (वनेम) सन्ध्या
क्रिये । सन्ध्या+करण+ल्युट् । सन्ध्या
के लगेही ही कीटा । "कर्मणि क्" पाठ
उप पशु कीटा वदुःकथना (त्रि०)

सपत्न, (पु०) गृह एवायं पति (पत्ने) पत्न्य-
" गृह " को " ग " । एषही अर्थमें साय पत्न कर्ता
है । एकके लक्षमें अपना लक्ष करना आस्ता है ।
पयु-पुपन.

सपत्नी, (स्त्री०) गमानः पतिः यस्याः " हीप् " और
" न " होता है । गमान (उगी) पतिवाची । एक
अर्थवाची स्त्री (जिगरी दूसरी पिरोचिनी-भौतिकनी
है) । सै-तिन-द्वारी और । एकही स्वामीवाली भूमि-
आदि (एक अर्थमें " गपति " भी होता है) .

सपदि, (अन्व०) गृह पदते । पद-इत् " गृह " को
" ग " । गायत्री पदता है । तत्साय । उगी समय ।
हार.

सपद, पूजा करना (इज्जत करना)-कण्ठादि० पर० गङ्-
मेद् । गपयति । अगपदीत्.

सपयी, (स्त्री०) गवर+यप्+अटाप् । पूजा । आदर ।
" सौहं गपयामिधिमात्रनेन " इति रघुः.

सपाद्, (स्त्री०) गृह पादेन (बरमेन-चतुर्पादेन वा) ।
पाद (पाँव) गहिन पावकाला चतुर्पाद (चौबेहिसरे)
वाला.

सपिण्ड, (वि०) गमानः पिण्डः (सदेहात्मकदेह)
यस्य । एषही देशमें आरम्भ होनेयोग्य देहवाप्य प्राति-
पिण्ये । बरादरी । सिन्दरदार । जातिमें काशाद-परम्परा-
अतिपरम्परये एषही देहात्म्य (वरीरथे जल्म होने-
लायक) है इतीक्षिये " सपिण्ड्य " है । एकसम्बन्धी
जिगका पितरोंको प्रेतिपिण्ड देनेमें किसी न किसी प्रकारये
सम्बन्ध रहे । दाय (विरसा) केनेछ अधिपारि.

सपिण्डीकरण, (न०) एह पिण्डेन-ततः अभूतद्रव्ये
चि+इ+स्युद् । पिण्डके साय कियामया । मित्ययागया ।
प्रेतपन तुशनेके लिये प्रेतके उरथये करनेलायक पिता-
आदिके पिण्डका समन्वय । एषही स्थानमें मिलनेदारा
थादपिण्येव.

सपिण्डीकृत, (वि०) साद पिण्डः (पित्रादिपिण्डः)
सपिण्डः ततः चि+इ+स्युद् क । जिगके लिये " स-
पिण्डीकरण " थाद किया है वह शक (मराहुआ)
जन (कोई हो) । " ये सपिण्डीकृताः प्रेताः " इति
रघुतिः.

सपीति, (स्त्री०) पा+किन् । पीति (पानं) । गृह
एष प्र पीतिः । प्राति (जात बरादरी) के साय मिलकर
भोजन (खाना) .

सप्तक, (न०) सप्तानां अवपव-कन् । सप्तकी संख्या
(गिन्ती) । " सप्त प्रमां अस्-कन् " । सप्तकी संख्या-
वाला (वि०) .

सप्तकी, (स्त्री०) सप्तभिः (सैः) इव कायति (सप्तर-
यते) के+क । सप्त सुरोंके समान शब्द कर्ता है ।
मेराल । तडागी.

सप्तचार्यारिणात्, (स्त्री०) सप्तारिणां चार्यारिणात् ।
साक० । सात ऊपर काटीस । रीताली । उस-संख्यावाला
(वि०) .

सप्तच्छद, (पु०) सात सात छदाः (प्रतिपत्र) यस्य । वि-
सके इरएक पत्तेके साय सात २ पत्ते हों । सतीनेत्र इरत.

सप्तजिह्व, (पु०) गृह जिह्वा इव (आस्तादसाधनामि)
अर्थयो यस्य । जिह्वकी सातज्योके जिह्वाओंके समान है ।
बहि । आग.

सप्तज्वाल, (पु०) सप्त " ज्वाली " इत्यादयः ज्वाला यस्य ।
" ज्वाली " " क्वाली " प्रथति जिह्वकी सात ज्योके हैं ।
अग्नि । आग.

सप्तज्जु, (पु०) सप्तभिः " भू " आदिभिः (महाब्धा-
हृतिभिः) कन्वते । तन्+जुन् । " भू " आदि सात
महाब्धाहृतिओंये जिगका विस्तार क्रियाजाता है । यह ।
आग.

सप्तति, (स्त्री०) सप्तगुणिता दशतिः वि० । सप्तरकी
संख्या । उस संख्यावाला.

सप्ततित्तम, (वि०) सप्ततेः पूरण+तत्तर । जिस्से " गतर "-
की संख्या भरजाती है । गतरका.

सप्तद्वार, (वि०) सप्तद्वारानां पूरण+इद् । सप्तरवां ।
जिसे सप्तरकी संख्या पूरी होती है.

सप्तद्वीपा, (स्त्री०) सप्त (अन्वूप्रथमः) द्वीपा यस्याः ।
" अन्वू " आदि सात द्वीप (ज्वीरे) वाली पृथिवी.

सप्तधा, (अन्व०) सप्त+प्रकारे धाच् । सात प्रकार ।
सात तरहये.

सप्तधातु, (पु० ब० व०) सप्तगुणिता धातवः । रन,
अप, मोष्ठ, मेद्, अथि, मवा और शुक् (वीये) इव
सप्तरकी सात धातुः.

सप्तान्, (पु० वि०) सप्त+अनिन् । सात । सातयेदसातया.

सप्तपदी, (स्त्री०) सप्तानां पदानां समाहारः । बीर ।
विवाहके समयकी सात फेरियें । सात पाँव । सात शब्द.

सप्तपर्ण, (पु०) सप्त सात पर्णानि अस्व । जिसके प्रति
पत्तेके साय सात २ पत्ते हों । सतीनेका इश । छपिय.

सप्तपावाट, (न०) सप्ताहारद्विगुः । पात्रादि । " अतठ "-
आदि पृथिवीके बीये सात लोह.

सप्तप्रवृत्ति, (स्त्री० ब० व०) सप्त संख्यानाः प्रवृत्तयः ।
सौदमे प्रविद् " महत्तम् " आदि सात प्रवृत्तियें । शोल्द
पदापोंका हेतु होनेके " प्रवृत्तिपत्र " और प्रवृत्तिका कर्त्त
होनेके इन्हें (सात प्रवृत्तियोंके) " विहृतिपत्र " भी
है । " स्वामी " आदि राजाके भाग अर्थ । सात समान.

सम्पूनी, (स्त्री०) सम्पूयतेऽनया । जो इकड़ा बरलेवी है । शाहू । पुतारी । " भावे स्तुद् " सम्मानन । पौठना (न०)

सम्पूना, (पु०) सम्पूकर+ण्यत् । यहियाणि । यहरी भाष्य ।

सम्पूक, (द्वि०) सम्पूक् ऋद्धिः । ऋध्+ण । बहुत सम्पू-
दाभला । अतिहृद्ध । बहुत पूडा ।

सम्पूद्धि, (स्त्री०) सम्पूक् ऋद्धिः । सम्पू+ऋध्+णित् ।
बहुत-गम्यदा । दौलत ।

सम्पेत, (द्वि०) सम्पू+आ+इण्+क । समागत । आया-
हुआ । और संगत । मिलाहुआ ।

सम्पेधित, (द्वि०) सम्पू+एध्+णित्+क । संवर्धित ।

सम्पेदक, (न०) सम्पे (अर्धभागन) तुभ्ये उदकं यत् ।
आध्यापनी मिलाकर मये (रिद्धे) हुए दरीसे उरगत
हुआ तबयिमेव (छाउ-प्यसी) । "सह मोदकेन"
जिसके पास लु है (मोदकसहित) (द्वि०)

सम्पसि, (स्त्री०) सम्पू+पद्+णित् । अतिविभव । बहुत
ऐभ्यं । बरी दौलत । जिते विद्या बाहिदे उगका विवाही
होना । धन ।

सम्पद, (स्त्री०) सम्पू+पद्+णित् । विभार । सम्पति ।
दौलत । हयमत ।

सम्पन्न, (द्वि०) सम्पू+पद्+क । तापित । सापित किया
हुआ । सम्पदावाला ।

सम्पदाय, (पु०) सम्पू+पदा+इण्+अच् । युद्ध । जंग ।
छाई । आपदा ।

सम्परायिक, (न०) सम्परायाय (आपदे) हितम् ।
तन् (इक्) । आपातिके त्रिये हितकारी । युद्ध । जंग ।
छाई । " सम्परायिक " भी ।

सम्पर्क, (पु०) सम्पू+पृक्+पम् । सम्बन्ध । मेल ।

सम्पर्किन्, (द्वि०) सम्पू+पृक्+णित् । सम्बन्धवाला ।
मेलवाला ।

सम्पा, (स्त्री०) सम्पूक् (अर्धनिर्ण) पतति । पत्+ट ।
अचानकही गिरती है । बिगुद्ध । विजयी ।

सम्पाक, (पु०) सम्पूक् पावो यस्मात् । जिससे भली-
भांति पाक होता है । आरवष इक्ष । इसके खानेसे
सायाहुआ अन्न आदि भलीभांति पच सकता है ।

सम्पात, (पु०) सम्पू+पत्+पम् । एक प्रकारका पशी
(परिदा) की गति (बाल) । अघ्नी तरह गिरना ।

सम्पाति, (पु०) सम्पू+पत्+णित्+ण् । जदायु (जर्जर-
पशी) का बसा भाई । "साथे बन्" बरी अर्थ ।

सम्पुट, (पु०) सम्पू+पुट्+क । डुरबक इक्ष । जो दोनों
ओरसे भलीभांति पुट (पत्रदा होनेकी दृष्टत) के समान
हो । मिलाहुआ । एकजातिका पदार्थ निश्चयितकालके
पक्ष दोनोंओरसे ब्याप्त होकर भिन्न होरहा (द्वि०)
"सकामेः सम्पुटो जाय" इति तन्त्रम् ।

सम्पुटक, (पु०) सम्पुटयति । सम्पू+पुट्+अच्+साथे पुन् ।
(अठ्) । सम्पुटक । संक्क । मजूका । पिटाही । लुना-
हुआ ।

सम्पूर्ण, (द्वि०) सम्पू+पूर्+क । परिपूर्ण । चारोंओरसे
भराहुआ । पूरा । सम्पन्न । सारा । एक प्रकारकी एका-
दशी (स्त्री०) टाप् ।

सम्पूत, (द्वि०) सम्पू+पृक्+क । मिथित । मिलाहुआ ।
बंधाहुआ ।

सम्प्रति, (अन्त्य०) सम्पू+प्रति । समाहारद्वयः । इरानीम् ।
बायुना अर्थ ।

सम्प्रतिपत्ति, (स्त्री०) सम्पे प्रतिपद्यते+णित् । वारीसे
कहेहुए अर्थको स्वीकार करना (माया) । एक प्रकारका
उत्तर ।

सम्प्रदाय, (द्वि०) सम्पू+प्र+दा+ण्यत् । दान कर्ता । देने-
वाला ।

सम्प्रदान, (न०) सम्पू+प्र+दा+भावे स्तुद् । सम्पूक् ।
प्रदान । मलीभांति देना । "सम्प्रदायते अर्थम् स्तुद्"
जिते दिवाजाय । "कर्मणा यममिषैति य सम्प्रदाने"
इति पामिनिः । दानकर्मोद्देश्य ।

सम्प्रधारणा, (स्त्री०) सम्पू+प्र+ध्+णित्+ण्यत् (अन्) ।
योग्य वा अयोग्यका विचार करके अर्थका निश्चय करना ।
निश्चय ।

सम्प्रयोग, (पु०) सम्पू+प्र+युक्+पम् । वृद्धिआदि कामकी
दृष्टकसे धनआदिका विनियोग (लगना) । मेल ।
सम्बन्ध । निययतुलके त्रिये मेल । इकड़ाहोना । जनी-
भांति जोडना ।

सम्प्रसाद, (पु०) सम्पू+प्र+सद्+पम् । योगआदि काममें
चित्तकी निर्मलता (सफाई) को पूरा करनेहात एषप्रधा-
रणा यत् । "भावे पन्" अघ्नी प्रगल्भा (सारी) ।

सम्प्रसाधन, (न०) सम्पू+प्र+साध्+णित्+अच् स्तुद् ।
बटक (करा-बुद्धी) आदि भूग्न (जैरर) । "भावे
पन्" भूग्नकिंसा (सजाना) ।

सम्प्रसारण, (न०) सम्पू+प्र+सार्+णित्+स्तुद् । सम्पू
मिलारना । अघ्नी तरह फैलाना । साधारणमें "पन्"
के स्थानमें जायमान "इक्" सेह जाता है ।

सम्प्रहाट, (पु०) सम्पू+हृ+णित् अन्त्य । सम्पू+प्र+हृ+पम् ।
युद्ध । जंग । "भावे पन्" अघ्नी तरह थोड लगना ।
जाना ।

सम्प्राप्ति, (स्त्री०) सम्पू+प्र+अप्+णित् ।
पना । ईददपत्रमें सेगकी एक आकाशिका । दगा ।

सम्प्रिय, (पु०) सम्पू+प्र+इण्+अच् । सम्पू+प्र+इण्+अच् ।
हुमान ।

संपराज, (पु०) सर्पाणां राजा (टच् सम०) । सांपोंका राजा । वायुकी । एक सांप ।
 सर्पसत्रिन्, (पु०) सर्पाणां सत्रं अस्ति अस्य । सांपोंका यज्ञकरनेवाला । राजा जन्मेजयका नाम (इसी राजाने "संपेंद्रि" नाम यज्ञ कियाथा) ।
 सर्पाशन, (पु०) सर्पं अश्नाति । अस्+शुत् । सांपको खाता है । मयूर । मोर । और गहड़ ।
 सर्पिणी, (स्त्री०) सर्प+णिनि । सांपकी स्त्री । सप्पनी । जानेवाला (त्रि०) ।
 सर्पिंस, (न०) सर्प+इत् । साफ किया हुआ मक्खन । एक प्रकारका पी ।
 सर्पेष्ट, (न०) सर्पाणां इष्टः । सांपोंका पियारा । चंद्रनका वृक्ष ।
 सर्पे, सर्पण (जाना-फैलना) । भ्वा० प० स० सेट् । सर्पति । असर्वाद् ।
 सर्पे, (पु०) सर्पे+अच् । शिव । और विष्णु । सम्पूर्ण (सारा-सब) । सकल (त्रि०) ।
 सर्पसहस्रा, (स्त्री०) सर्पं सहस्रे । सच्-सुम् च । सारो सहस्राती है । पृथिवी । भूमि । जमीन । सबउछ सहस्रानेवाली (त्रि०) ।
 सर्पकर्तृ, (पु०) सर्पं करोति । कृ+कर्त् । सबको बनाता है । सारमुलवाला मन्ना । और परमेभर ।
 सर्पकर्माण, (त्रि०) सर्पकर्माभ्यः अलं । रा-(ईन) । सबकाम करनेहार । जो सबउछ करसत्ता है ।
 सर्पेहार, (पु०) सर्पैः क्षारमयः । सार सारा । साबन नामसे प्रसिद्ध पत्थर ।
 सर्पेग, (न०) सर्पे गच्छति । गम्+ट । जल (पानी) । टिकरी, परमेभर, वायु (हवा) और आत्मा (पु०) । सबउछ जानेहार (त्रि०) ।
 सर्पेद्रुय, (पु०) सर्पं द्रुयति । द्रु+भृच्-सुम् च । सारको द्रवण है । सार । सारसे बडजानेहार (त्रि०) ।
 सर्पेद्रवीनि, (त्रि०) सर्पेद्रवेणु विरिज् । स (ईन) । सबउछ प्रसिद्ध । सर्पेद्रु विरिज् । सबकाहिली ।
 सर्पेद्र, (पु०) सर्पं द्रुयति । द्रु+ट । सबको जानना है । टिकरी । बुद्धदेव । और परमेभर । सब उछ जानेहार । (त्रि०) । दुर्ग (स्त्री०) ।
 सर्पेद्रम्, (अन्त्य०) सर्पे+द्रुयति । गन्तव्यः । जायेऔर । पदगन्त ।
 सर्पेद्रोमन्त्र, (पु० प०) सर्पेनी मन्त्रिणि (सुगन्धि) यन्म । बरसे और अष्टो सुगन्धोऽस्ति । बर सर्पांकीने बुद्धका सबस । प्रसिद्धाहिलीने द्रुय करनेकरके देव-स्योका एक मन्त्र । सर्पेद्रवेणु यो अस्मिन्पे कर्केके त्रिवे द्रुय-कर । "सर्पे-द्रुयि अस्मि" को मन्त्ररूपे द्रुयि करने है । सर्प (त्रिज) का इष्ट (पु०) ।

सर्पेतोमुख, (न०) सर्पेनः मुखं अस्ति । बरसेकेमुखावाला । जल । आकाश । शिवजी । मन्ना । फलेप । आत्मा । ब्राह्मण । और अग्नि (पु०) ।
 सर्पेय, (अव्य०) सर्पे+यच् । सर्पस्मिन् काले । सरस्मिन् । हरवक्त । हरदेशमें । सब दिशाओंमें । सबव्य-
 सर्पेयगामिन्, (पु०) सर्पेय गच्छति । गम्+ग । सबउछ जाने जाता है । वायु (हवा) । सब स्थानमें जाने । (त्रि०)
 सर्पेया, (अव्य०) सर्पेप्रकार-थाच् । गबरारह । हर तरहसे ।
 सर्पेद्रमन, (पु०) सर्पांन् दमयति । दम्+मिच्-भृच् । सबको दमन (बदा-काबमें) करना है । दुग्धकरके भरतराजा । सर्पे दमन कर्ता (सबको काटू करेहै) (त्रि०) ।
 सर्पेदर्शिन, (पु०) सर्पं समभावेन पश्यति । दृ+श्ते । सबको एकही भावसे देरता है । बुद्ध । और पत्नी । सर्पेद्रुया (सबको देखनेहार) (त्रि०)
 सर्पेद्रा, (अव्य०) सर्पे+दाच् । सब समन, देरा, और देना । सदा । हमेशा ।
 सर्पेधुरीण, (त्रि०) सर्पां धुरं वहति । स (रि०) सारा घोसा (भार) उठानेहार । सपारी (बैचारी) सबके आगेहुआ ।
 सर्पेनाम, (पु०) सर्पेणां नाम (सर्पका नाम) । रणमें कार्यविशेषके लिये कीगई (इग) संज्ञा "स" आदि शब्दमेद ।
 सर्पेभक्ष, (स्त्री०) भक्ष+अच् । उच० । भक्ष । सब उछ खानेहार (त्रि०) ।
 सर्पेभङ्गला, (स्त्री०) सर्पाणि मङ्गलाणि अन्त्य । मंगल (सुग) होते हैं इस्में । ५ व० । दुर्गा । सब सर्पेभय, (त्रि०) सर्पात्मकः । मयर् । सबका सब परमेभर (पु०) ।
 सर्पेरसोक्ष्म, (पु०) सर्पेषु रेषु उच्यते । री० अन्त्य । सबस रस । नोनका रस ।
 सर्पेरात्र, (पु०) सर्पां रात्रिः । अन्त्य नामा० । सर्पेण सकल रात्रि ।
 सर्पेरी, (स्त्री०) सर्पेभ्यो री० "र" च । सर्पेण । सर्पेन्द्रिद्रिन्, (पु०) सर्पां री० त्रि० त्रि० सर्पेण समाने सब विन्तोऽयं । वेदके विद्वद् आचारके री० सब विद्वत् । पातकी ।
 सर्पेद्रि, (पु०) सर्पे वेद्रि । वि०, रि० । सर्पेद्रुय है । परमेभर । सब उछेहार (त्रि०) ।
 सर्पेवेद, (पु०) सर्पे वेदो अस्ति । सर्पे वेदो अस्ति । सर्पेद्रुय करनेहार । वि०, रि० । सर्पेद्रुय करनेहार (त्रि०) ।

सर्ववेद्यन्, (पु०) सर्वानि (धनादि) वेद्यन्ते (स्वाम-
यते) प्राणाय इदानी । मिदु+स्वमवरणा+मिच्+अनि ।
एव धनोरो प्राणके तर्ह देता है । सर्वव्यदक्षिणक (भारे
धनकी दक्षिणासाय) यत् । "विभक्ति" नामक यत्
करनेदारा।

सर्ववैशिन, (पु०) सर्वेषां वैशिनः (धार्क्येन) अन्वि
अस्य । जो सब भोग बनाता है । मट (मकल करनेदारा)

सर्वसम्पन्न, (न०) सर्वेषां सम्पन्नं (युद्धार्थं गजोद्धरण)
यत् । जहाँ कडाईके लिये सबको तयार किया जाता है ।
भाषि सेनाको तयार करके युद्धकी यात्रा करना।

सर्वसद, (पु०) सर्वं सद्गते+अच् । गुण्युत् । सबहुउ गहा-
रनेदारा (वि०)।

सर्वसिद्धि, (पु०) सर्वेषां सिद्धिः अस्मात् । सबकी सिद्धि
इसके होती है । धीकल विव्वका इत् ।

सर्वस्य, (न०) सर्वस्य सारलपन । साधारण।

सर्वद्विज, (न०) सर्वेषां द्विजं । मरिच । ५ व० । जिगमे
द्विज (उपधार) होता है (वि०)।

सर्वोद्गीण, (वि०) सर्वोद्गीणि व्याजोति । स (ईन) ।
सब अन्तमें फैलजानेदारा (सर्वोद्गीणव्यापक) । "सर्वोद्गीणे
सर्वेषां" अर्थः।

सर्वोद्गीण, (वि०) सर्वेषां अर्थं (सर्वं अर्थं) वा भुञ्जे+
स (ईन) । सबके अर्थ वा सब अर्थको खाता है । सर्वो-
द्गीणव्यापक।

सर्वोपसिद्ध, (पु०) सर्वेषु अर्थेषु सिद्धः । सब अर्थोंमें
सिद्ध (समसाध) । बुद्धदेव । सम्पूर्ण पारिवर्षी सिद्धि-
काण्य (वि०)।

सर्वोद्गी, (पु०) सर्वं अर्थः । उच् समा० क्रादेश । सर्वं ।
साधारण।

सर्वेष, (पु०) ए+अप्+सुर्वच् । गरिगो । गरसो । सब-
सर्वेद।

सर्वसिद्ध, (न०) सर्वसिद्धञ्च । जन् । पानी।

सर्व, (पु०) सर्वते । सु+अच् । वत् । और सारलपन ।
"अच्" सर्वं । और सर्वव्यदक्षिण (सर्वका इत्)।

सर्वान, (न०) सु+अच् । उच्च वा अक्षय्य कान् । रोम
निशालनेका व्यापार । सोववा सीमा । दम् । और प्रणव

सर्वपर, (वि०) समानं सर्वो दस्य । समानको "सर्व"
का क्रादेश । एक जैसी उमरकावा । बसन् । एता । और

सर्वेष, (पु०) समानो सर्वो दस्य । बराबर देवकाय । ए-
ज्जित्वा एतान् । एतान् और प्रदत्तये वाक्वर अन्तः ।
जैसे "क" का क्रादेशो मुल्य "क"का"दि" इदम् एतान्को
"क" का "क" अन्ति । सर्वसिद्धि (वि०) एव सर्वेदः।

सर्वसारा, (वि०) सर्वं सारात् । सबदेके सार । जो सब
सर्वदेके सार एता है । सर्वस्य । वैषयक

सर्विकल्पक, (न०) सर्व-विकल्पेन+अच् । विकल्पके सार ।
वेदान्तमें "इत्या, इत्, हेतुकी नेदोदि कल्पना मन्दिप
एक प्रकारका स्यात् है ।" स्याये "सर्व सर्वमें एताके
सर्वकल्पको धारणान् करनेदारा इत्यन्तिदेव" । इत् स्यात्
आदि कि जिगमिं त्रिपुरी कनीये।

सर्विकान, (वि०) सर्व विकल्पेनः । प्रकल्पके सार ।
प्रनुत् । अन्तर्गतत्वात् पुन्युत् । विवसिप । गिग्युत् ।

सर्विकर्त-सर्विकर्म, (वि०) सर्विकर्त सर्विकर्मन् । वि० ।
कंठे सार । सोवनेकावा । सर्विकर्त । सर्विकर्मन् ।
विश्वकावा।

सर्विष्ट, (पु०) सर्वस्य । अन्तर्गत सर्वेषां । अन्तर्दे
बनानेदारा परमात्मा । "सर्वविष्टुर्विष्टं" इति सुप्ति । सर्वे
स्यं।

सर्विध, (वि०) सर्व विधयः । वि० । "सर्व" को
"स" । सार बीषण है । सिद्ध (दम्)।

सर्विसम्य, (वि०) सर्विसम्येत् । विवसिपके सार । वि० ।
सारल । सारलपुत्रः।

सर्वोद्गी, (वि०) सर्व विकल्पेन अर्थः । "देव" का अर्थः । सर्व-
वैशिनः । सिद्ध । मट्टीव (एता) । देव (देव) सर्वे

सर्व, (वि०) सर्वेषां+अच् । वत् (सर्व) । सर्वेष
और (दक्षिण) । सर्वेषु (सिद्ध) । और (स्यु) (पु०)

सर्व्यसाराधि, (पु०) सर्वोद्गी (सर्वोद्गी) एता । सर्वो
मिति । सर्वोद्गी सर्वो वर्त है । अन्तः

सर्वोद्गी, (पु०) सर्वो (सर्व) । सर्वो । सर्वो
कई और एता है । सर्वो । सर्वो (सर्व)

सर्वसारा, (वि०) सर्व सारोत् । सर्वो (सर्व) । सर्वो
औ । सर्वो (सर्व) (वि०)।

सर्वसन्, (न०) सर्व सारोत् । सर्वो (सर्व) । सर्वो
सर्वोत् ।

सर्व, (न०) सर्वो+अच् । वत् । सर्वो (सर्व) । सर्वो
सर्वोत् ।

सर्व, (अन्तः) सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो
सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व)

सर्व, (पु०) सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व)

सर्व, (पु०) सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व)

सर्व, (वि०) सर्व (सर्वो) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व) । सर्वो (सर्व)

सहोक्ति, (स्त्री०) सह उक्तिः । साथ कहना । जहाँ "सह" शब्दही उक्ति हो । एक अर्थसंबंधी अलंकार ।

सहोदज, (पु० न०) सहते आतपादि अत्र । सह+अन्-कर्म० । जहाँ पूज आदि सहारता है । मुनिओंकी पत्नी-पाला । पत्नीकी इतिअत् ।

सहोद, (पु०) सह उदा येन । साथ विवाही है जिस-ने । गर्भवाली स्त्रीके साथ विवाह करनेके अनन्तर उठके जो पुत्र उत्पन्न होता है "सहोदज" भी ।

सहोदर, (पु०) सह (समान) उदरे यस्य । एक पेट-काटा । एवही गर्भमें उपजा भाई । सगा भाई । बहिन । (स्त्री०) ।

सहा, (न०) सहायस्य भाव+यत् । नि० । सहाय्य । सहायपन । सहारनेत्ययम् । (त्रि०) । पडात् (पु०) ।

सा, (स्त्री०) सो+ट् । गौरी । उन्मी । बह ।

सांकर्ये, (न०) संकरस्य भाव+भ्यम् । न्यायमें जातिगत बाधक (रोकनेहार) एक दोष । एकमें दूसरेका मिल-जाना ।

सांख्य, (न०) संख्यायते अत्र । संख्या (सम्बन्धु ज्ञानम्) सा अस्ति अत्र+अण् । जिसमें गिनाजाता है । जिसमें ठीक ज्ञान होता है । "एवा वैजमिहिता साख्ये" गीता । मूलप्रकृति आदि पदार्थोंकी गिनती होती है इसमें । अण् । कपिलका रचाहुआ दर्शनशास्त्र । (जिसमें प्रकृति पुरुष और तत्त्वोंका वर्णन है) । साख्यका योग (पु०) ।

साङ्ग, (त्रि०) सह अत्रेन । अंगयुक्त । अंगगहित । पूरा न ।

सांभ्रासिक, (त्रि०) संप्रामात्र प्रभवति+अण् । युद्धके लिये समर्थ होता है । सेनापति । सेनाका नाटिक । बसान । युद्धके उपयोगी रथ आदि ।

सांघातिक, (त्रि०) संपाताय हितं+अण् । संपातवारक । इच्छा करनेहार । ज्योतिषमें जन्मनक्षत्रपञ्च सोढवां नक्षत्र ।

सांघातिक, (पु०) सम्बन्धु यात्रायै अर्लं+अण् । जहाज (पोत) से व्यापार करनेहार । व्यापारी ।

सांयुगीन, (त्रि०) संयुगे सगु+यत् (ईत्) । रण (जंग) में युद्ध (पालाक) ।

सांघत्सर, (पु०) संवत्सरं वेत्ति अर्पीते वा+अण् । वर्ष-संबंधी शत्रुको प्रयास करनेहारो यात्राको जापे वा करने-हार । ज्योति-यात्राको जापेहार । वणक । ज्योतिषी ।

सांघादिक, (पु०) सम्बन्धु बादाय अर्लं+अण् । जो भीभाति आश्रय करणका है । वैवाहिक । न्यायशास्त्रके ज्ञानेहार ।

सांशयिक, (त्रि०) संशयं आश्रय+अण् । उदिरहाव । सन्देहमें पडाहुआ । शर्ही । संशयबाल्य ।

सांसारिक, (त्रि०) संसाराय हितं+यत् भक्तौ वा+अण् । संसारका हितकारी पदार्थ आशय संसारमें उत्पन्न हुआ । संघारी ।

सांसिद्धिक, (त्रि०) संसिद्धिः (सम्भावसिद्धिः) तथा निरुत्सा+अण् । सम्भावसिद्ध । सम्भाविक । जो आपसे आपही बना हो । सुदरतन ।

साकम्, (अभ्य०) सह अकति । साहिल । साथ (तृ-तीया विभक्तिके साथ होता है) ।

साकल्य, (न०) सकलस्य भाव+भ्यम् । समुदाय । साहसी । "साथे भ्यम्" । साथ । होमके लिये मिठेहुए तिल आदि द्रव्य ।

साकाहू, (त्रि०) सह आवाहुया । सामिलाय । ह्ण-उहित । चाहके साथ । शाब्दबोधके उपयोगी आहोसा-वाला पदविशेष ।

साकार, (त्रि०) सह आचारेण (मूर्त्या) मूर्तिविशिष्ट । मूर्तिवाला । हाकलाला । गंगोवाल । सावयन ।

साकेत, (न०) आकित्यते आक्रेतः । सह आक्रेतेन । अयोध्यापुर । "जनस्य साकेतनिवायिनः" इति रघुः । अयोध्यानगरी ।

साक्षरान्, (अभ्य०) सह अक्षरि । अक्षु+अक्षि-नादेयः । प्रलक्ष । आँसोंके सामने । और उधका पिप (जो सामने हीय सखा है) । "वत् साक्षर अरोपेण्डु मन्त्र" इति धृति ।

साक्षरत्कार, (पु०) साक्षर+त्+पञ् । प्रत्यय । सामने ।

साक्षिन्, (त्रि०) सह अक्षि+इति । साक्षर इत्य इति वा नि० । सामने देखनेहार । "अिदां बोधु" परमेश्वर (पु०) । "साक्षी येन केचनो निर्गुणश्च" इति धृतिः । (यही साक्षी वैतन्यसम्बन्धे वैतन्यरि-भाषामें माना है) ।

साक्ष्य, (न०) साक्षिणो भावः कर्म वा+भ्यम् । गवाहका नाम । गवाही । "य साक्ष्यमवृत्तं बदेत्" इति रघुः ।

सागर, (पु०) सागरेण निर्गतं+अण् । गगनसे बन्द । समुद्र । एकसेहवा ।

सागरगामिनी, (स्त्री०) सागरे गच्छति । गम्+गिनि । न गन्वम् । समुद्रसे जाती है । गम्+गिन कश्चम् । नदी । दसों । छोटी समुद्री ।

सागरमेखला, (स्त्री०) सागरे मेखलेश बन्धः । समुद्र मानो जिसकी लकड़ी है । झुपिरी । जर्जर ।

सागरपालय, (पु०) सागर आलयः दम्ब । समुद्र त्रिपथ पर है । बरनदेशका । पत्नीकी देखका ।

सागराम्बरा, (स्त्री०) सागरः सम्बरं बन्धः । समुद्र त्रिपथका बन्ध है । झुपिरी ।

साग्निक, (पु०) सर अग्नि-अग्निदेनेच वा+अण् । अंत (बेदेकी) और स्वर्ग (पदेदेकी) आकर्षण । अग्निदेय (अग्निच रोम) करनेहार अन्वय ।

साथी, (स्त्री०) साथी टीप् । पतिव्रता स्त्री (जो पतिके साथ छायाके समान रहती है) । भजे

सानन्द, (त्रि०) सह आनन्देन । आनन्दसहित । सुख।

सानु, (पु० न०) सन्+उच् । पर्यंतकी थोड़ी (प्रस्थ) । बन । पथ । आगे।

सानुज, (न०) सानी जायते । अनु+उ । प्रणीतरीक ।
दुम्भुररस (पु०) । सहानुजेन । अनुजगहित (भाईके साथ) (त्रि०) ।

सानुमत्, (पु०) साथ अस्ति अस्+मत् । थोड़ीवान् । परंत । पहाड।

सान्त्पन, (न०) सन्तापयति । सम्+तप्+णिच्+ल्युट्+सार्धेऽच् । अच्छीतरह तपाता है । दो दिनोंमें निद्र होने-
हार प्रतियोगे।

सान्त्तर, (न०) सह अन्तरेण । सादेस । विरल्य । फरक (व्यवधान) के साथ।

सान्त्तानिक, (त्रि०) सन्तान प्रयोजन अस्+उक् । सन्तानका साधन विधानविशेष । जिससे सन्तान होती है इस प्रकारका विधान।

सान्त्वन, (न०) सान्त्वं+ल्युट् । आनुकूल्यकरण । अच्छी र भाँते सुनाकर झोपको दूर करना । ठण्डा करना । खान और मनको प्रसन्न करनेहारा वचन । प्यार।

सान्दीपनि, (पु०) सन्दीपनस्य अपत्यं+इच् । सन्दीपनकी सन्तान । बलराम और कृष्णजीका आचार्य । अवन्तिपुरमें निवासकरनेहारा एक मुनि।

सान्द्र, (त्रि०) आदि+रक् । सह अन्द्रेण । निविड । गाढा । घुट्ट । घोल । गरम । क्रिय । चिन्ता । और (मनोहर) । बन (जंगल) (न०) ।

सान्ध्य, (त्रि०) सन्ध्यायां भव+अच् । संध्याकालिक । सांशके समयका

सान्धिय, (न०) सन्धियारेव+अच् । नैकञ्च । समीपता । पासपन । पासहीना । पास

साक्षिपातिक, (त्रि०) साक्षिपातात् (प्रियोरभिपारात्) आगतः । सेन निर्दूतो वा+उक् । तीन दोगोंके विगडनेके आया का हुआ । साक्षिपतने उपमा रोग । "सिद्धरे साक्षिपातिके" कुमाराः।

सापद्वय, (पु०) सापत्र एव+सार्धे ध्वय् । सापु (दुप्यन) । "सपद्वया भवः । तस्या अपत्यं वा+अच् ।" सापत्री (सै वि-
न) पर पुत्र । "सापत्र"।

सापिण्ड्य, (न०) सापिण्डस्य भावः+अच् । सपिण्ड्या (एकजातपत्न्या) । दाय (विरला) और अरौच्य (अविप्रता) स्त्रीद्वार करनेके उपयोगी जात्रिका धर्म । "सापिण्ड्यं सातर्पाण्यं" इति इक्षुतिः।

सातपदीन, (न०) सातभिः पदैः (उषारितैः) निर्दूतं+अच् । सात पदोंके बोलनेसे बनी । सत्य । मि-
त्रता । साहार्द । प्रेम।

सातर्पाण्य, (त्रि०) सप्त पुराणान् स्यात्प्रोक्ति+अच् । सात पुराणोंके फलता है । सातपुराणव्यापक।

साफल्य, (न०) सफलस्य भावः+अच् । पूरा होना । सा-
र्थक्य । अर्थके निद्र करनेवाला होना । सम्पूर्णता । एक-
लता।

साम्, सान्त्वन (सान्त करना) पु० उ० स० सेट् । सा-
मयति-वे । अक्षतामन्-स।

सामग, (पु०) साम (तद् वेदं) सायति । सामवेदके गाने का पढ़नेहारा।

सामग्री, (स्त्री० न०) सामप्रस्य भावः (पूरा होना) ।
+अच् । सामस्ता (पारयन) (स्त्री०) । धारणामूर् ।
और इष्य (स्त्री) ।

सामञ्जस्य, (न०) समप्रसस्य भावः+अच् । शीथिल ।
आच्छादन । सुनार्थिक होना।

सामन्, (न०) सो+मनिन् । "अग्निं दत्तं वृणीमहे" इत्या-
दि वेदविशेष । राजाओंके निये सानुको बरा करनेका उपा-
यविशेष । और प्यारे बचन आदिसे सान्त करना । पशुकी
पांशनेकी रस्सी । स्त्री० स्त्री

सामन्त, (पु०) संक्षिप्तः सन्तः (एकरेण) यस्य सम-
स्तः । तस्य ईश्वरः+अच् । अपने देसके पाग रहनेहारे दे-
सका सानी राजा । पर राजा कि जो बडे राजको पर
(सिरात्र) देता है । बरदास्य । टका मनेदराग राजा।

सामयिक, (त्रि०) सामये भावः उचितो वा+उच् (इह)
समय (बज) पर हुआ । और समयके उचित (योग्य)

सामयोजि, (पु०) साम योजि (उपांतस्थानं) इत्य ।
सामसे उपपन्नहुआ । इक्षी ("एक बर ब्रह्मणे स्वर्के
दोनों बण्डकपालोंको हाथमें लेकर सान सामो (स्त्री०)
को लाया-तब हाथी निरे") । दत्ता । बहुसुत्र।

सामर्थ्य, (न०) सामर्थस्य भावः+अच् । तादृक् । सातर्का
बल (और) । शक्ति । योग्यता । संवत्सरं । वर्षका
टीक जुद्धन।

सामवेदिन्, (पु०) साम वेदित्+विद्+निनि । सामवेदके
अभेदात्प्रायः प्रकृत्य।

सामाजिक, (पु०) सामाज्यः प्रयोजनं इत्य । सामाज्य-
नकरना जिसका अर्थ है । सन्त्य । सन्ध्या केसर ।
सामान्

सामान्यिकरणम्, (न०) सामान्यं अविश्वसं इत्य तस्य
भावः । एकरी पर पर होनाका होना । एकरी अन्तरका
होना । सामान्य (बगबर) अविश्वस । किसी बगबर
समान संबंध होगा जिसे मूल और बर्तका परतने साम-
न्यिकरण है।

सारस्वत, (पु०) सारस्वती देवता अस्य । सारस्वता इदं वा-अण् । जिसकी देवी सारस्वती है वा सारस्वतीका यह । विद्वान् इत्यादि । एकदेश । पर्व गोंडोंमेंसे एकप्रकारका भाषण । सारस्वतीसे पाठन कियाहुआ एकमुनि । ब्रह्माका दिनरूप कल्पविशेष । सारस्वतीवाला (त्रि०) ।

सारस्वतकल्प, (पु०) कर्म० । तन्त्रमें सारस्वतीकी उपासनाके लिये एक प्रकार । इस नामका ब्रह्माका दिन-

सारिन्दी, (पु० श्री०) स+इन् । वा वीप् । पातक । पास्ता-

सारिका, (श्री०) सारति (गच्छति) स+ञ्जुल् । एक पक्षी (मैना) ।

सार्य, (पु०) स+यम्+सार्येङ् । समूह । जीवोंका समूह । "सह अर्थेन" धनसहित । बनिओका समूह । धनी (दौलतमंठी) (त्रि०)+कन् । "सार्यक" सार्य-

सार्यघाट, (पु०) सार्य वहति । बह+अण् । व्यापारी । बणिरजन-

सार्य, (त्रि०) सह आर्षेण । आर्षतायुक्त । गीलेरनके भाष । गीला-

सार्य, (अव्य०) साहिल । साथ । "सह अर्थेन" सार्य । आर्थके साथ (त्रि०) ।

सार्य, (न०) सार्य देवता अस्य+अण् । जिसका देवता सार्य है । आश्लेषा नक्षत्र (सारा) ।

सार्यिक, (त्रि०) सार्यिका संरक्षत्+अण् (इक) । धीमें संस्कार कियागया व्यजन (नास्ता) आदि-

सार्यजनीन, (त्रि०) सार्येणु कनेषु विदितः+अण् (ईन) द्विपदरुदिः । सबकर्मोंमें जानाहुआ । सार्योक्षप्रतिष्ठ-

सार्यत्रिक, (त्रि०) सार्यत्र भर्ष+अण् (इक) । सब समयमें हुआ-

सार्यधानुक, (न०) सार्यधानु व्यप्रोति+अण् । व्याघरमें सट् । लोट् । छट् । विधिच्छि । इन चारोंके प्रत्यय-

सार्यभौतिक, (त्रि०) सार्यभि भूगणि व्यप्रोति+अण् । "दोनों पक्षोंको हडि होती है" । सब जीवोंमें फैलनेवाला । सार्यभूतव्यापक-

सार्यभूमि, (पु०) सर्वस्वा भूमेः ईश्वर । सर्वानु भूमिषु विदितो वा+अण् । सारी पृथिवीका भाषिक । वा सार पृथिवी (नगरों)में जानाहुआ । बकरणी हावा । सार्य-घाट । उत्तर दिशाका हावी-

सार्यलौकिक, (त्रि०) सार्येणु लोकेषु विदितः+अण् । द्विपद-रुदिः । सब लोकोंमें जानाहुआ । "स सार्य सार्यलौकिक" इति भाषि-

सार्यभित्तिक, (त्रि०) सार्यं भित्तियु । सार्ये भर्ष+अण् (इक) । सब विभिन्नियोंके अर्थमें विधान विद्वत्पदा "सहित" आदि प्रत्यय-

सार्य, (त्रि०) सार्यंय विकारः+अण् । सरसोका बनहुवा सेलआदि । "अदुष्टं सार्यं तं" इति स्थितिः-

साल, (पु०) गल्+यम् । हरएक वृक्ष । इस नामका वृक्ष । प्रकार । पहिरनाह-

सालनिर्वास, (पु०) १ त० । सर्वत्रय । पुना । एत-

सालमञ्जिका, (श्री०) सालं मञ्जि । मञ्जु+अण् । लक्ष्मी आदिका बनाहुआ बनावटी सेलका साधन । पुनरिष्ट । पुनरी । शुभी । वेदया । कंजरी-

सालूट, (पु०) सल्+करञ्+निच् । भेट । कट्टक । भेटक । वृ-

सालोपय, (न०) समानः श्लेषः अयम् । सम भर्ष+अण् । पंच प्रकारकी मुक्तिमें आने इत्यादि देवताके साथ एकी श्लेषमें बणकरनाम मुक्तिविशेष-

साल्य, (पु०) व० व० शोमदेश । उग्र देशका राजा । अण-

सायधान, (त्रि०) सह अर्थेनयनः । जो विनाको एह वर्ण है । सत्येन होदिहार । मनोद्विन्दितेयुक्त । अकारार-

सायन, (न०) सार्यं (सोमदाग्रां अर्थे) सत्ये+अण् । वह दिन कि जब सोमदाग्रा अर्थ काज विद्वत्प्रमाण है । यज्ञका अन्त । पूरे तीर्थ दिवका मण (कर्तव्य) । बरन-

सा(दा)यट, (पु०) सार्येण भिर्यं+अण् । एत (पुनर्य) अर्थवाद । बलंब-

सायर्ष, (पु०) सार्यर्षो भव+अण् । सर्वे श्री वीं देवीके सभेसे उपास्य आठवीं मनु+अण् । "सर्व"-

सायिज, (पु०) सार्यिजा देवता अस्य+अण् । जिसका देवता सार्य है । त्रिप्र । आठम । सार्येण (एकप्रकार) । श्री० वीप् । सार्यी । सार्यवन्दी श्री० । सार्य देवताका "सर्व" आदि (त्रि०) । सार्येण (व०) । सार्यी अण् । सार्यं । सत्ये+अण् । सार्येण । सयु (पु०)-

सायिजीपतिता-विरिष्ट, (पु०) सार्येण विदितः । सार्यके विदित हुआ । सार्य विदित अर्थका ही सार्यके विदित अर्थका सार्यके सार्येण ही हुआ । ऐसे सत्येण "सत्य" ही सार्ये है-

सायिजीपति, (व०) सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु (सार्ये) के सार्येणु ही सार्येणु-

साय्या, (श्री०) सार्य+अण् । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु-

साय्य, (त्रि०) सार्य अर्थेण । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु-

साय्य, (व०) सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु । सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु सार्येणु-

सिद्धपीठ, (पु० न०) कर्म० । सिद्धोंका स्थान (जहाँ साधारण बलिदान किया गया है, श्रोत्रवार होम और महा-विद्याका मन्त्र अपागया हो) ।

सिद्धपुर, (न०) कर्म० लंकाके नीचे एक पुर है ।

सिद्धविद्या, (स्त्री०) सिद्धा विद्या (मन्त्रः) यस्याः । जि-
षया मन्त्र सिद्ध है । “काली” आदि दस महाविद्या ।

सिद्धसाधन, (न०) सिद्धस्य (निधितस्य) साधनं (अनु-
मानम्) । न्यायमें एकप्रकारका दोष जिसमें उस बलुका
अनुमान किया जाता है जिसका पहिलेके निश्चय हो रहा है ।

सिद्धान्त, (पु०) सिद्धः (निधितः) अन्तः यस्मात् ।
जिसे अन्त (असली बात) का निश्चय होता है । प्रमाण
आदि देकर पूर्वपक्ष (पहिले कीगई दलील) को तोड़कर
असली पक्षको स्थापन करनेद्वारा वाक्यसमूह । वाची और
प्रतिवाचीसे निश्चय कियाहुआ अर्थ । ज्योति शास्त्रविशेष ।

सिद्धार्थ-क, (पु०) सिद्ध अर्थ यस्मात् । जिसे प्रयो-
जन सिद्ध होता है । ५ व० वा कप् । श्वेतवर्ण (चित्तो
सरसो) । वही इन्द्र । ६ व० । प्रसिद्ध अर्थ (त्रि०) ।
जिनविशेष ।

सिद्धि, (स्त्री०) सिद्ध+क्तिन् । ऋदिनाम औपध । योगवि-
शेष । अन्तर्धान (छिपना) । निर्वृति (एक कामका
पूराहोना) । पाक (पकना-रसोई) । पाबुका (खजूर) ।
मोक्ष । सम्पदा । “अणिमा” आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य ।
बुद्धि । “प्रभाव” आदि तीन शक्तियें ।

सिद्धिद्व, (पु०) सिद्धि ददाति । दा+क । बटुकभैरव ।
सिद्धिके देनेद्वारा (त्रि०) ।

सिद्धियोग, (पु०) सिद्धिहेतुयोगः । सिद्धिकारण योग ।
ज्योतिषमें शुक्रआदि चारगणित “नन्दा” आदि ।

सिद्धमल, (त्रि०) सिद्धम्+अस्त्यर्थे लच् । शिलास्य योगवाला ।
बोहरी ।

सिर्नीयाली, (स्त्री०) सिनी (श्वेत) चन्द्रबलां बली
(धारयति) अणु-बीष् । बगुर्नीयाली अमावासा ।

सिन्दु(न्धु)पाद, (पु०) सिन्धुं (यजमर्दं) धारयति ।
वृ+अण् । सिन्धुपादः । “सुषुक्लस्यपीठसिन्दुपादम्” इति
कुमारः (इसमें बहुत गंध होता है । पूज्य चिहं है ।)

सिन्दूद, (न०) सिन्दु+ऊरन् । सम्प्रसारणम् । सात रूपका
पूर्णविशेष । सिंधूर । सिंधूर । इतिविशेष (पु०) ।

सिन्धु, (पु०) सिन्दु+उ । सम्प्रसारण । “द” को “प”
होता है । समुद्र । एक नदी (दक्षी) । इर । एक टाप ।
एक देश । और मरुका जल (दक्षी की मरुती) । उष
देशका वासी । (पु० व० व०)

सिन्धुद, (पु०) सिन्धुः (मरुतमें सात अक्षिः । २ । मरुतीके
पानीवाला । दक्षी । दक्षी ।

सिन्धुराज, (पु०) सिन्धुनां राजा+उच् । नरिसौम्य राजा ।
समुद्र ।

सिन्धुवार, (पु०) अर्घ्यो जायता घोडा । सिन्धु का पर्वो-
आका घोडा । पारसी घोडा ।

सिन्धुसंगम, (पु०) सिन्धोः (नदीः) नदीसमुद्रयोः
वा संगमः । दो नदियों का नदी और समुद्रका मिल । “वः
यम्” वह जहाँ हो (त्रि०) ।

सिम, (पु०) सि+उच् । १० । एक ताकड़ (सरोवर) ।
चन्द्रमा । गर्माका पानी । और पर्व (पर्वीना) । उच्च-
विनी नगरीके पास एक नदी (दक्षी) (स्त्री०) “सि-
आलकानिलकम्पितायु” इति श्वुः ।

सिम, (पु०) सि+मन् । सर्वे । मरु । इस अर्थमें गौतम है,
सीकू, सेचन-नीचन । म्या० भा० एव० सेद् । सीधो ।
सरोविष्ट ।

सीकर, (पु०) सीकवते (सिच्छते) अनेन । सी+कम् ।
जलकण । पानीकी बणी (बगुण) ।

सीता, (स्त्री०) सि+त । १० । सीधे । लक्ष्मणदक्षि । इतना
फाल । इतनालक्ष्मी दक्षी । अन्तराष्ट्रीय कन्या ।

सीतापति, (पु०) १० । सीताम । सीताका पति ।

सीतायाः पति, (पु०) १० । अर्द्ध गमय । सी-
तामन्त्र ।

सीत्कार, (पु०) “सीत्” इति अन्वयस्य कार । सी+उच्
+पच् । अनुराग (प्रेम-सुदृढवत्) से इच्छा हुआ एक ।
सी २ करना ।

सीधु, (पु०) सिधु+उ । १० । मरु । इतना (मरुके परे-
हुए इससे इतना हुआ मरुविशेष) ।

सीधुरस, (पु०) सीधोरिष रसः सात्वत् अन्न । त्रिकण
साद् (मज्जा) एतद्वही भाति हो । अक्षयक इव । अक्ष-
यक इतना ।

सीमन्त, (पु०) सीमः अन्तः । एव० । केरोंके सीम
मार्गके समान बनगुल । सीधरी । मरुके छेदे क अर्द्धके
मरुतीके बरनेलाइक एक सीधर ।

सीमन्तिनी, (स्त्री०) सीमन्त+अर्द्ध अर्थे इति । सीमन्त-
बली । सेविद् । मरुती । सी । सेवन् ।

सीमन्तोपपन्न, (न०) सीमन्तस्य (एतन्तरेणस्य) उप-
पन्न (उद्भवत्) अन्न । जिसके सीमन्त (अन्तरेणस्य)
नमी यहाँके सीधर प्रकृत होत है । एतन्तरेणस्य
उद्भवितेव ।

सीमन्, (स्त्री०) सि+मन्ति । सर्वेण । इत् । अक्षयके
(पणउ) । “सीधे सुषुक्लस्ये इत्” इति । सि । सी ।

सीमा, (स्त्री०) सी+मा+उच् । सर्वेण (एतन्तरेणस्य) ।
सीध अर्द्धका अन्त अन्त (एत) ।

माधिप, (पु०) सीमायाः अधिपः । सीमाके पासका राजा । पड़ोसी राजा ।

मान्त, (पु०) सीमायाः अन्तः । सीमाका भवसान (इह) । सीमाका कोन ।

माविवाद, (पु०) सीमायां विवादः । अठारह प्रकारके विवादोंमेंसे "सीमा" के विषयमें झगडा ।

मासन्धि, (पु०) सीमायाः संधिः । दो सीमाओं(हदों)-का मेल ।

र, (पु०) सिम्बरक् । पू० । सूर्य । आकका वृक्ष । और हल ।

रध्वज (पु०) सीरः (हल-तचिहितः) ध्वजः यस्य । जिसके झंडेपर हलका चिन्ह (नशान) है । जनकराजा ।

रपाणि, (पु०) सीरः (हलः) पाणी यस्य । जिसके हाथमें हल है । बलदेव । बलराम ।

रिन्, (पु०) सीरः (हलः) अस्ति अस्य आयुधत्वेन । जिसका शस्त्र हल है । बलराम । बलमद्र ।

(से)वन, (न०) सिव्+स्युट् । नि० वा दीर्घः । सीवन । तन्मुसन्तान । तांतफैलाना । सीना ।

(अच्य०) पूजा । अच्छा । अतिशय (बहुत) ।

करा, (स्त्री०) मुखेन क्रियते दुह्यते वा । सु+कृ+उल् । सुसीला गौ (जिसे सहजहीसे चो लेते हैं) । जो मुखसे हो (त्रि०) ।

कल, (पु०) सुपु कल्पते (ह्यायते) अस्ती । सु+कल् +पच् । बहू जन जो "दाता" "भोक्ता" आदि गुणोंसे प्रविद्ध हैं । बहू शब्द जो सुकर, मधुर, और व्यक्त हो ।

कर्मन्, (पु०) सुपु कर्म० यस्मात् । जिसे अच्छा काम होता है । विष्कम्भ आदिमें सातवां योग । अच्छे काम-वाला (त्रि०) । अच्छा काम (न०) ।

काण्ट, (पु०) सुपु काण्टः अस्य । अच्छी शाखावाला वृक्ष ।

कामा, (स्त्री०) सुपु काम्यते अस्ती । सु+कम्+पच् । प्रायमाण्य लना । अच्छी कामनावाला (त्रि०) ।

कुमार्या, (स्त्री०) सु+कुमार+अच्+पच् वा । जातिवृक्ष । नवमाउडिका । कदली (केला) । और मालती । बहुत धोमल (नाजक) । सुन्दर कुमारभवस्थावाला (त्रि०) (स्त्री०) शीर्ष ।

कृत्, (त्रि०) सु+कृ+क्तिप् । पुण्य करनेहारा । धार्मिक जन ।

कृत्, (न०) सु+कृ+त् । पुण्य । धर्म । और । सुम । अच्छा बन (न०) ।

कृत्, (स्त्री०) सु+कृ+क्तिप् । पुण्य । मंगल । अच्छा काम ।

कृत्, (त्रि०) कृत् अनेक । इतिः । पुण्यवाला । मन्तः ईश्वर । अच्छे काममें भरपूरता ।

सुख, (न०) सुख+धन् । पुण्यसे उत्पन्नहुआ सुखविशेष आनन्द । "वैयायिक आदि" इसे आत्माका धर्म मानते हैं । सांख्य आदि "चित्त" का । "सुखं अस्य अस्ति+अच् वा" सुखी (त्रि०) ।

सुखजात, (त्रि०) जातं सुखं अस्य । परिपातः । जातानन्द (जिसे आनन्द प्राप्त हुआ है) । "सुखजातः सुखपीतः" इति भट्टिः ।

सुखमाज्, (त्रि०) सुखं भजते । भञ्+ञि । सुखवाला ।

सुखरात्रिका, (स्त्री०) सुखा रात्रिः यस्याः । ५ व० कृ । जिसे सुखकी रात होती है । अधिनमास (अस्) की दीपान्विता (जिस रात्रिमें दीपकोंका प्रकाश किमकता है-दीवाली) अमावास्या (इनमें छत्तीस पूजन कर्ते हैं) ।

सुखधव-श्रुति, (त्रि०) सुपु धव-ध्रवर्ण यस्य । सुपुमें मधुर (मीठा) ।

सुखाधार, (पु०) सुखानां आधारः । सुखोंका आधार खणं । कर्म० सुखदेनेवाला निवामस्थान ।

सुखावह, (त्रि०) सुखं आवहति (जनयति) । आम्बद् अच् । सुखजनक । सुखको उपगनेहार ।

सुखोत्सव, (पु०) सुखकर उत्सवो यस्मात् । २ व० जिसं सुखदेनेद्वारा उत्सव होता है । पति (माणिक) । कर्म० आनन्द करनेहारा उत्सव (पु०) ।

सुगत, सुपु गच्छति (जानाति) । गम्+कर्त्तरि क् । बहु अच्छा जानता है । बुद्धदेव (बहू "निर्वाण" को शान्ति मानता है)

सुगन्ध, (न०) सुपु गन्धः अस्य । इत् नई होगा । गन्ध तैल । छोटाजीरा । कमल । चन्दन । सुगन्धधारणशील दुकान (त्रि०) ।

सुगन्धि, (पु०) सुपु गन्धः । इत्तमाम् । इत्तगन्ध । पाई गई सुगन्धि । सुरभि । "सुपु गन्धः अस्य" । सुगन्धवाला (त्रि०) । सुगन्धदार ।

सुगृहीतनामन्, (पु०) सुगृहीतं (प्राणः स्यात्) नाम यस्य । त्रिगुणा नाम प्राप्तकाउ सरपटका बाशिरे । पवित्रयज्ञवाला जन ।

सुप्रान्धि, (पु०) सुपु प्रान्धिः यस्य । अच्छी गांजा । चोरकनामी वृक्ष (त्रि०) ।

सुप्रीय, (पु०) सुपु मीषा अस्य । अच्छे कूट (धर्म) । बाला । धीरुष्का घोडा । सर्वका पुत्र । और कनोडा यज्ञ । सुन्दर मीषावाला (त्रि०) ।

सुवशुस्, (पु०) सुपु वशुः इत् कर्म अच्य । शीतसे नई त्रिगुणा अच्छा पठ है । इत्तम् । सुन्दर वैश-वाला (त्रि०) । प्र० । अच्छी भाव (न०)

शुभिका, (स्त्री०) सुष्ठु चरित्रं यस्याः । अत्ये चरित्रवाणी
 लेखः स्त्री । अच्यौ चालवादा (त्रि०) । प्रा० । सप्त-
 दश । कच्चा चरित्र (न०) ।
 शुभिर, (अन्व०) प्रा० बहुत चिरका समय । बहुत
 इच्छा (त्रि०) ।
 शुभित्युत्सव, (पुं०) सुष्ठुचरित्रे (बहुवचनिके अणुः) यत् ।
 निम्नी बहुत देवत्व उमर हो । देवता । बहुत समयतक
 संस्कार (त्रि०) ।
 शुभित्, (पुं०) प्रा० । सुमनस्य (महीन कर्म) । "सुष्ठु
 चरित्रं कल्पे" महीन कल्पे धारण किमनुभा (त्रि०) ।
 शुभित्, (न०) शोभनं जलं यस्मात् । जिससे अच्छा पानी
 है । १५०० । कमलका फूल । प्रा० सुन्दरत्व (न०) ।
 शुभ, (पुं०) सु+क । पुत्र । कच्चा (स्त्री०) दापु । निम्नी-
 रित । निजोदयया (त्रि०) ।
 शुभित्क, (न०) सु (स्) भावे कः । सु (स्) तं
 (अन्व०) तस्मात् सागतम् । उत्पत्ति (बालक आदिके
 कर्म) होनेसे आना+कम् । जननका अशौच (अपवि-
 त्त) । हरएक प्रकारका अशौच । "सुनके सुनके तथा"
 "सुन सुनके तस्मात्" इति सूत्रिः ।
 शुभित्, (पुं० स्त्री०) सुष्ठु तत्तु यस्या वा ऊरु ।
 हाथे परीकाही । नारी । शीत ।
 शुभित्, (पुं०) सुष्ठु तपति । सु+तप+अभि । बहुत
 तप है । सुन (सुत्र) । "सुष्ठु तप अस" । अच्यौ
 तप्यताम् । मुनि (पुं०) सुन्दर तपसात् (त्रि०) ।
 प्रा० सुन्दर तपसा (न०) ।
 शुभित्, (अन्व०) सु+अविद्या" के अर्थमें अणु
 दापु । निषय निषेद्ध अर्थका बहुत उचित होना (बहु-
 दापु) । "शिव्या तद्व्यापिनकागदासा निरीशमका सुगा-
 दापुः" रूपः । यहाँ धेनुने एकको जब कातरणी (पद-
 त्तंष्टु वेत्रवाणी) देया तो बहुत दयाजन एकके
 धिने उचितहुआ ।
 शुभित्, (पुं० न०) सुष्ठु तत्तं यत् । अत्ये तपसात् ।
 कपातविशेष ।
 शुभित्, (पुं०) प्रा० पर्यट (पाप) । बहुत लीला
 (त्रि०) शीम (पुं०) ।
 शुभित्, (त्रि०) सुप्त अर्थ. अति अल्प । पुत्र
 (अन्व०) की इच्छा करनेवाला ।
 शुभित्, (पुं०) सुप्त अर्थकः । पुत्रा पुत्र । पुत्रे-
 (त्रि०) शीम (पुं०) ।
 शुभित्, (स्त्री०) सु+अभि+अन् । पुत्रवती । पुत्रवती
 शीम, (पुं०) प्रा० सु+अभि+अन् । सुष्ठुचरित्रे ।
 सुष्ठुचरित्र (त्रि०)

सुष्ठु, (पुं०) प्रा० नारीकेलापु । नारी इत्य । बहुत
 कंचा (त्रि०) ।
 सुष्ठु, (पुं०) सुष्ठु अन्वये । सु+अभि+अन् ।
 (पुं०) । नारीकी बकाप है । इत्य । देवताकीय एवम् ।
 सुष्ठु, (पुं०) सु+अभि+अन् । यदके अन्वय क्वन करने-
 हात् । मोरलके पीनेवाला । मोरल निजोदयया ।
 सुष्ठु, (पुं०) सुष्ठु दापु यस्यात् । १५०० । जिससे अच्छा
 पानी (पानी वा मोती) कच्चा है । बीज । देव ।
 सुष्ठु, (पुं०) सुष्ठु दापु अन्वय ("सुष्ठु-अन्वय-अन्वय"
 इस अर्थमें "सुष्ठु" अन्वय होता है) । अणुके अन्वय-
 अन्वयके अर्थ अणुय अन्वय । सुष्ठुकी स्त्री (अन्वय शीम)
 दापु । "अन्वयके अन्वय अर्थमें "सुष्ठु" स्त्री होता
 है (अच्छा दापु) ।
 सुष्ठु, (न०) पुं० सुष्ठु दापु+सुष्ठु (अन्वय) । अन्वय
 रिताईदेव है । निम्नीका बह । शीमरही सुष्ठु । (स्त्री०) ।
 सुष्ठु, (पुं०) सुष्ठु दापु । सु+अभि+अन् । कच्चा होता
 है । मंच (बदल) । एवम् । सुष्ठु अन्वय (अन्वय) ।
 सुष्ठु, देवता दापु । शीम । शीमका अन्वय एव
 कच्चा । शीम अच्छा देवता । (त्रि०) । १५०० स्त्री ।
 (स्त्री०) शीम ।
 सुष्ठु, (अन्व०) सुष्ठु शीम । सु+अभि+अन् । एवम् ।
 बंदरक पगवाला ।
 सुष्ठु, (न०) अन्वय । अणुय रिता । कच्चा दापु ।
 अच्छा । (त्रि०) ।
 सुष्ठु, (न०) । शीम (अणुय अन्वय) एवम् ।
 अणुय रिता । बहुत अच्छा रिता ।
 सुष्ठु, (त्रि०) प्रा० अणुय । बहुत दा ।
 सुष्ठु, (पुं०) देवता सुष्ठु पुत्र । अणुय अणुय (१५००) ।
 सुष्ठु, (त्रि०) सुष्ठु अणुय । अणुय । अणुय अणुय
 अणुय अणुय अणुय । शीम अणुय (अणुय) अणुय अणुय
 शीम अणुय अणुय है । एवम् एवम् । अणुय अणुय । शीम
 अणुय (पुं०) ।
 सुष्ठु, (स्त्री०) सु+अभि+अन् । देवताकी देवता ।
 सुष्ठु, (पुं०) सु+अभि+अन् । देवताकी देवता ।
 सुष्ठु, (स्त्री०) सु+अभि+अन् । देवताकी देवता ।
 सुष्ठु, (पुं०) सु+अभि+अन् । देवताकी देवता ।
 सुष्ठु, (स्त्री०) सु+अभि+अन् । देवताकी देवता ।

जाजीविन्, (पु०) सुधा (लेपनद्रव्यं) आजीवति ।
 जो कली सूते आदिका काम करके जीता है । पलगण्ड ।
 उज । क्षीरगर्ग ।
 जाविधि, (पु०) सुधा निधीयते अत्र । नि+धा+धि ।
 अमृत रक्ताजाता है यहाँ । चन्द्रमा । और काशूर (कपूर) ।
 जाहर, (पु०) सुधा हरति । इ+अच् । अमृतको हरण-
 कर्ता है । गण्ड । "सुधाहारक" ।
 जाही, (पु०) सुधु धीः यस्य । जिसकी अच्छी (अफिल)
 है । पण्डित । "सुधु धीः" । अच्छी अफिल (सी०)
 "सुधु ध्यावति" सु+धै+क्तिम् । नि० । अच्छी बुद्धि-
 वाला (त्रि०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधया सह उद्भवति । उद्+भू+अच् ।
 अमृतके साथ निकलता है । धन्वंतरी नामा वैद्योक्ता
 बदा हकीम । ५ त० । हरीड (छी०) ।
 जाह्व, (न०) सुधु मन्दयति । सु+मन्द+अच् । अच्छी
 रह आनन्द कर्ता है । बतरामका सुगल (मोहला) ।
 जाह्वणके पास रहनेहार (साया वा सेवक) । एक
 क्षरका राजाका पर । आनन्द उरजानेहार (त्रि०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु मन्वे यम् । जिगद्भी अग्ने (नेत्र)
 मन्ते हो । मृग । हरिण । नारी (छी०) । अच्छी
 विचारता (त्रि०) ।
 जाहीरीर, (पु०) सुधु काहीरः (अग्रमैत्र्यं) यस्य ।
 जाहीर अग्ने जानेहावी सेना बहुत अच्छी है । इन्द्र ।
 जाओका राजा ।
 जाह्व, (त्रि०) सु+विष्+भृ+भृ+अन् । आन्तोषित
 हुन चमकानुभा । बहुत तापानुभा ।
 जाह्वि, (छी०) सुधु नीतिः यस्याः । जिसकी अच्छी
 वि है । सुब (अष्ट) की मन्त्रा । सुन्दरनीति (छी०) ।
 जाह्व, (न०) प्रा० । एक मणि (नीलग) । सविम
 अक्षर) और सुन्दर लोका विग । (पु०) अक्षरी ।
 जाह्विजा (छी०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रस । और सुधुवन् (बंदा) ।
 जाह्व, (त्रि०) सु+उद्+अच् । उक्त् । मनेहर ।
 बन्दा । "अग्ने रीतु" । उष्ण को । और विष्णु-
 रसो देते । बन्देर (पु०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रसयते स्म । पय+अ (उक्त्को "ब") ।
 एत अत्र (रोगरुच) । नदी कानि वदन्तुभा (त्रि०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रसयते । प्रा० अच् एत० । अच्छा
 रस (रस) । और सुधुवन् (अष्टा बलकल्प) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रसयते । सुधुवन्वन्ता (त्रि०) ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रस (पानक) रस । जिसका
 रस रस अमृत है । सुधु । सुधुवन्वन्ता ।
 जाह्व, (पु०) सुधु रसयते (पु०) ।

सुपर्णकेतु, (पु०) सुपर्णः (गण्डः) केतुः यस्य । जिसके
 झण्डेपर गण्डका चिन्ह है । विष्णु ।
 सुपर्णन्, (पु०) सुधुः पर्यं यस्य । अच्छे परेवाला । देवता ।
 बाण । बाँध । और धूर्ता । प्रा० सुन्दर पर्यं (न०) ।
 सुपोत, (न०) प्रा० गवर् (गावर) । सुन्दर पीलावंग ।
 (पु०) । उसवाला (त्रि०) ।
 सुपुण्ड, (न०) प्रा० लैगका फूल । एल (हरे) और
 लीओका रस (जो महीनेके पीछे होताहै) ।
 सुपु, (छी०) व्याकरणमे "सु" "ओ" "जम्" प्रथमी प्रत्य-
 सुप्त, (न०) स्वप्नभावे ऋ-सम्प्रसारणम् । निद्रा (नीद) ।
 और शयन (सोना) । "कर्तारि ऋ" सोयाहुभा (त्रि०) ।
 सुप्ति, (छी०) स्वप्न+क्तिन् । शयन (सोना) । निद्रा
 (नीद) । और सुप्ता ।
 सुप्रतिभा, (छी०) सुधु प्रतिभा यस्याः । ५ व० ।
 जिसके कोई प्रकारकी चमकीली बुद्धि उत्पन्न होती है ।
 सुता । (शराव) । उजाल (चमकीली) बुद्धि । ६ व० ।
 उसवाला (त्रि०) ।
 सुप्रभा, (छी०) सुधु प्रभा यस्याः । जिसके अच्छी चमक
 होती है । अमिजिज्ञाशु । सुन्दर पीति (अच्छीचमक)
 वाला (त्रि०) प्रा० अच्छी पीति (छी०) ।
 सुप्रभात, (न०) प्रा० । सुभ (भलाई) को सुवन
 (जतलना) करनेद्वारा प्रातः (सुबेर) का समय । और
 उगममय पत्रनेत्रायक मंगलपत्रन ।
 सुप्रयुक्तदार, (पु०) सुप्रयुक्तः शरीरं येन । शीघ्रगन् ।
 जिसका हाथ मूत्र चलता है (तीर चलनेमे) । बाण
 चलनेके अन्त्यागी चतुराईवन्ता ।
 सुप्रयत्न, (पु०) सु+प्र+लृ+अच् । सुचन । अच्छा चवन ।
 सुप्रयत्न, (पु०) सु+प्र+लृ+अच् । सुचर । बहुतयत्न हुआ ।
 सुप्रयत्न, (छी०) सु+प्र+लृ+अच् । सुचन । अच्छा चवन ।
 सुप्रयत्न, (छी०) सु+प्र+लृ+अच् । प्रयातिकी (के तीरुई)
 लया । केलाहुभा (त्रि०) ।
 सुप्रयत्न, (पु०) सुमेन (अनायासेन) प्रयातः यत्नः ।
 जो सुदरहीमे प्रयत्न हो जाता है । निरवी । प्रा० सुन्दर
 प्रयत्न । अच्छी सुरी ।
 सुप्रयत्न, (पु०) सुधु रस अयम् । जिसका अच्छा रस है ।
 सुप्रयत्न (अक्षर) । बेर । मूत्र । चनेर । और रसिण्य ।
 सुन्दर चकला (त्रि०) ।
 सुप्रयत्न, (पु०) सुधु रसः (अक्षरयत्न) यत्नः । जिसकी
 चमकी अति अच्छी है । चमक (चमक) । अक्षर ।
 और सुधु (सुधु) । देवनेके अक्षर । सुन्दर ।
 निरवी । और सुधु रसयते (त्रि०) ।

सुमयासुत, (पु०) सुमगायाः सुतः । सुमगा (पतिव्री
रिचरती) का पुत्र । शंभोगिनेयः ।
सुमङ्ग, (पु०) सुभेन भज्यते । जो सहजसे दृढवाना है ।
मङ्गपत्न्यु । मारिचैलपुत्र । मरेलका दरलतः ।
सुमट, (पु०) प्रा० । सुन्दर बोझा । अच्छा शूरवीर (बहादुर) ।
सुमद्र, (पु०) सुपु भद्र बन्मात् । जिसे अच्छे कल्याण
होता है । विष्णु । ६ ब० । अच्छे मंगलवाला (त्रि०) ।
रुमलजा । धीहृष्याक्षी भगिनी (बहिन) (स्त्री) ।
सुमद्रोरा, (पु०) ६ त० । अर्जुन । "सुमद्रापति" आदि भी ।
सुमिरा, (त्रि०) सुलेन कम्पा मिश्रा यत्र । बहुत अन्नवाला
समय (जब मीख सहजसे मिलसकते हैं) । सुमाल ।
सुभृति, (पु०) सुपु भवति । सुभृत्+किच् । एक पण्डित ।
प्रा० । सुन्दर देखने । (स्त्री०) । ६ ब० । उतवाला ।
(त्रि०) । विश्वका कृश (पु०) ।
सुभृदा, (न०) सुपु भृदात् । बहुतही रस (पत्र) उत्स-
रख (त्रि०) ।
सुसु, (स्त्री०) सुपु भूः यस्याः+वा ऊङ् । अच्छे भौ-
रजी । नारी । औरत । अच्छे भौवाला (त्रि०) ।
सुमदन, (पु०) सुपु मदयति कौकिल्यन् । मङ्गणिक्यु+प्लु ।
जो कोहलेशोकी मलीमानी मला करता है । आम । आम ।
सुमधुर, (न०) प्रा० । बहुत पियास वचन । और
कान्ठवन वाक्य (शान्तिकरानेका वचन) । बड़े मीठे
सुखवाला (त्रि०) ।
सुमनस, (न०) सुपु मनो यस्मात् । जिसे अच्छा मन
होता है । सुख । फूल । "कई इसे बहुवचन मानते
हैं" । अच्छे पित्तवाला (त्रि०) । प्रा० । अच्छा मन (न०) ।
सुमित्रा, (स्त्री०) सुमित्रायाः माता । दूरपथकी एक स्त्री ।
सुमुख, (पु०) सुपु मुखं अस्मात्-अभ्य वा । जिसका सेवन
करनेसे अच्छा मुख होता है वा जिगसा अच्छा मुख है ।
गणेशजी । पण्डित । अच्छे मुखवाला (त्रि०) ।
सुमेखल, (पु०) सुपु मेखला यस्मात् । २ ब० । जिसे
अच्छी लकड़ी बनती है । सुजडा कृश । ६ ब० । सुन्दर
लकड़ीवाला (त्रि०) ।
सुमेघस, (स्त्री०) सुपु मेघा अस्याः । ५ ब० । अविच् ।
जिसे अच्छी मुद्रि हो जाती है । ज्योतिष्मती लता ।
६ ब० । सुन्दर मेघासुक्त (अच्छी मुद्रिकावाला) (त्रि०) ।
सुमेद, (पु०) प्रा० एक पर्वत (पहाड़) । जपमालाके
निरका मोटा दाना ।
सुख-सुख, (पु०) एकदेसका नाम । उसके वासी (पु०)
६ ब० ।
सुयामुन, (पु०) यमुनाया इदम् । सुपु यामुनं त्रिकलेन
कान्ति अस्वभञ्ज । यमुनाका स्थान जिसे पियास है ।
विष्णु । कलापज । एक महल । एक पहाड़ । और बारूक ।

सुयोधन, (पु०) सुतेन युष्यते आसी । सु+युष्+भुच् ।
धृतराष्ट्र राजका पुत्र दुर्योधन ।
सुर, (पु०) सुपु राशि (ददाति अनीष्टम्) । सु+रा+क ।
अच्छी तरह अभिलाषा पूरी करता है । देवता । सूर्य ।
और पंडित ।
सुरयुध, (पु०) ९ त० । पृहस्पति । देवताओंका सुर ।
सुरङ्ग, (न०) सुपु रङ्गो यस्मात् । ५ ब० । हींग । प्रा० ।
सुरंग । एक प्रकारका दवा ।
सुरज्येष्ठ, (पु०) ५ त० । देवताओंमें बड़ा । चार सुग-
वाला ब्रह्मा ।
सुरत, (न०) सु+रम्+भावे क् । स्त्रीपुरुषका मंगमह्य
(आपसमें इच्छाहोना) एक प्रकारकी खेल । "कनरि क्"
बहुत रस (पियासमें आया) (त्रि०) ।
सुरथ, (पु०) सुपु रथ अस्य । शंभुकी एक राधा । "सुपे
नाम राजाभूत्" इति षष्ठी । सुन्दर रथवाला (त्रि०) ।
सुरदाद, (न०) सुरपियं (सुरलोचपयन्तं उच्छिष्टं वा) दाद ।
देवताओंका पियास वा लगतक ऊंचा रस । देवदारु ।
सुरदीर्घिका, (स्त्री०) सुरणां दीर्घिकेव । मानों देवताओंकी
बावनी है । गंगा । "सुरवासी" ।
सुरद्विप, (पु०) सुरान् द्वेपि । द्विपु+क्विप् । देवताओंके गात्र
विरोध करता है । असुर । देव । देवद्वेष । दानव (त्रि०) ।
सुरधनुस्, (न०) ६ त० । देवताओंकी बमन । इन्द्रधनु-
सुरपति, (पु०) ६ त० । इन्द्र । देवताओंका मार्ग ।
सुरपथ, (पु०) सुरणां पन्था यत्र । अच् समा० । जहां
देवताओंका मार्ग है । आकार । आत्मान ।
सुरपादप, (पु०) ६ त० । देवताओंका रस । पायास ।
सुरपुत्री, (स्त्री०) ६ त० । देवताओंकी पुत्री । अमरावती ।
सुरभि, (न०) सु+रम्+इत् । सनै (गोष्ठा) । और
सुन्दर । चण्डक (चम्बा) । अरुणकलाश । बगल कटु ।
सुगंध । श्वेतका महीना । और पण्डित (पु०) । रजकटा ।
एक देवी । गां । सुरा । सुखी । और पृथिवी । (स्त्री०)
पीर । अच्छे गंधवाला । मनोहर । और प्रसन्न (त्रि०) ।
सुरार्थि, (पु०) सुरार्थिनः ऋषिः । देवताओंका पियास
ऋषि । नारदभारि ऋषि ।
सुरलोक, (पु०) सुरणां लोकाः । देवताओंका लोक
(विहाय करनेका स्थान) । स्वर्ग । "सुरसुरन" भी ।
सुरवर्मेन्, (न०) सुरणां वर्मेन् दन् । जहां देवताओंका
मार्ग है । अक्षय ।
सुरवर्ती, (स्त्री०) सुरार्थिका बन्ती । देवताओंकी निरुपे
बेल । सुखी ।
सुरवैरिन्, (स्त्री०) ६ त० । असुर (देव) । देवता-
ओंका विरोधी (त्रि०) ।

सुरसम्बन्ध, (न०) (सुरणां सम्) देवताओंका पर । स्वर्ग । बहिरत्न ।

सुरसत्तित्, (स्त्री०) सुरणां सत्तित् । देवताओंकी नदी । यन्त्रा ।

सुरस्थानम्, (न०) सुरणां स्थानम् । देवताओंका स्थान । देवनीरित् ।

सुरसुन्दरी, (स्त्री०) सुरप्रिया सुन्दरी । देवताओंकी प्रियारी सुन्दरी । मेनका आदि अप्सरा । एक योगिनी ।

सुरा, (स्त्री०) सुर+क+सु+रक् वा । मद्य । दारुष ।

सुराजन्, (पु०) सुपु (पूजितः) राजा (दृक् नहि होता) । सुन्दर राजा (अन्धा राजा) । १ ब० । बह देस कि जिसका स्वामी सुन्दर राजा है (त्रि०) ।

सुराजीविन्, (पु०) सुरां आजीवति । आजीव+निनि । जिसकी जीविका सुरावर है । सौमित्रक । कलाल ।

सुराप, (त्रि०) सुरां पिबति । पा+क । मद्यपान करनेहारा ।

सुरापया, (स्त्री०) १ त० । देवताओंकी नदी । गंगा ।

सुरापान, (न०) सुरा पीयते अनेन । "पा+करणे स्तुद्" जिस माद्यपने दारुष पी जाती है । अप्सरा । शङ्गी । "अने स्तुद्" दारुषका पीना । सुरायाः पानं देयां पानं । जो दारुष पीते हैं । पूर्व देसके लोग (पु०) ।

सुरार्ह, (न०) सुरान् (देवन्) अर्हति । अर्ह+भण् । जो देवताओंके लायक है । हरिचंद्रन ।

सुरारु, (पु०) १ ब० । एहरेच (सुर) ।

सुररूप, (न०) सुन्दर रंग भण्य । सुन्दर रंग है जिसका । एव (रं) । सुन्दर भावार्थ । (त्रि०) । परिश्रम । (पु०) । प्रा० । सुन्दर रंग (न०) ।

सुरेण्य, (पु०) सुरां इत्यने (पुत्रये) । बह्+कवप्-१ त० । जो देवताओंके पुत्र बना है । बृहस्पति । सुश्री (स्त्री०) ।

सुरेन्द्र, (पु०) सुरणां इन्द्रः (भेदः राजा वा) । देवोंमें अच्छा वा राजा । इन्द्र । "सुराज" सी ।

सुरेश्वर, (पु०) (सुराया ईश्वरः) । देवताओंका ईश्वर । एव (मार्देश) । और इन्द्र । स्वर्गकी गंगा (स्त्री०) ।

सुरोत्तम, (पु०) सुरेषु उत्तमः । देवताओंमें उत्तम । एव सुरोत्तम, (पु०) सुरा इव उत्तमं भव्य (उदरशरीरम्) । जिसका उदर सुरा (दारुष) के समान है । सुरासुन्दर

सुरात्म, (त्रि०) सुरेण उत्तरे । सु+त्म+न्त् । उत्तमने ईश्वरका है । अन्तःसुन्दर । सुन्दर ।

सुरोत्तम, (पु०) सुरा उत्तमं भव्य । अत्यन्त उत्तम । उत्तम । सुन्दर देवताका (त्रि०) ।

सुरोत्तम, (क०) सुरा उत्तमि अन्ति अन्तः+उ । अन्ते उत्तमि । उत्तम इव । सुरोत्तम । अन्ते उत्तम (त्रि०) ।

सुरावन्, (त्रि०) सुरा वन् भव्य । जिसका स्वर्ग अत्यन्त है । अन्तः । जो अत्यन्त उत्तम है

सुवर्ण, (न०) सुपु वर्णः अस्व । अच्छेरेगङ्गा । इ नामका धातु (सोप्ता) । "सुपु वर्णः (स्वर्ण-असुरं वा अस्व" । सुन्दररूप (सकल) बाला और सुन्दर आर्य पाता (त्रि०) । "न सुवर्णमयी तपुः परं ननु सा वायुपि तावथी तथा" नैषधम् ।

सुवर्णकार, (पु०) सुवर्णं (सुवर्णनयभूयगादि) करोति । कृ+अच् । सोमेका भूयग (गङ्गा) आदि बनानेहारा । सुवर्ण । सुनिआरा । सुनिआरा । स्वर्णकार जातिभेद ।

सुवर्णपृष्ठ, (त्रि०) सुवर्णं पृष्ठे यस्य । जिसकी पीठपर सोना है । कोट किया हुआ । सोनेके पिस्तुकाका ।

सुवर्णदेतस्, (पु०) सुवर्णं देतः यस्य । सोनेके दानकर्ता । शिवजी ।

सुवयस्, (स्त्री०) सुपु वयः अस्याः । अच्छी उमरवापी । प्रौढा (भरजोवन) (स्त्री०) ।

सुवास, (पु०) सुपु वासः । अच्छी मन्थ (सुवास्) । और सुराका निवास । अच्छी मन्थवाला । और अच्छे निवासवाला (सामिकासाविन्) (त्रि०) ।

सुवासिनी, (स्त्री०) सुभेन वसती । सु+वग्+सीति । गुणमे बसाती है । चिरकालतक पिताके कुतमि बग बरनेहारी (स्त्री०) ।

सुविद्, (पु०) सुपु वेति । सिद्+किप् । अच्छी तरह जानता है । परिश्रम । "सुपु सिद्यते (सम्पन्ने) । सिद्+साम+किप्" । अच्छी भिक्वी है । गुणमे भगिपुर् श्री (गुणाया स्त्री०) ।

सुविद्, (पु०) सुविद् (गुणायां त्रिं) भाति । गुणोंवाली स्त्रीको पाता है । अर्+किप् । पू । राजा ।

सुविनीता, (स्त्री०) सु+वि+नी+क । सुजीया गी । अमील गी । अच्छी नयनवाला (हमीम) (त्रि०) ।

सुवीर, (पु०) सुपु वीर्ये भाति । वीर्य+क । (अवसाय) एक इव । १ ब० सुन्दर वीरकाका (त्रि०) (प्रा०) । सुन्दर वीर (वी) (व०) ।

सुवीर्य, (न०) सुपु वीर्यं वस्यत् । अच्छा वीर्य होता है जिसे । बर्हिष्कल (वेर) ।

सुवृष्, (पु०) सुपु वर्णं वषा । अच्छे वर्ण-रस (वष) वन्थ (त्रि०) १ ब० ।

सुवृष्ट, (पु०) सुवृष् विषा (सुवृष्ण) वेन । सुवृष्ण विषा वपुष अस्या वस्यत् है जिसे । सुवृष्ट वीर । "सुपु वेत्य (वर्णान्-विश्रि) वषा" । अच्छी निरक-वाक । उत्तम । जो उत्तम (सुवृष्ण) (त्रि०) ।

सुवृष्ट, (पु०) सुवृष्ट विषने (सुवृष्ण) वे । सु+वृष्+वष । सुवृष्टे वीरका वन्थ है (सुवृष्ण है) । वे+पु (विष् वष) सुवृष् विषाका (त्रि०) ।

सूना, (स्त्री०) सू+क (उभे "न" होता है) प्राणी-
वपस्थान । जीवोके मारनेकी जगह । "पशुमृता एव-
स्यस्य" इति मनुः । सनया (लक्ष्मी) । हाथीकी सूंड ।
मांसका घेवना ।

सूनु, (पु०) सू+नु । पुत्र । अनुज (छोटाभाई) ।
सूयं । आकका वृक्ष । लक्ष्मी (कन्या) स्त्री० वा ऊरु,

सूनुत, (न०) सूनुत्सि अनेन । सू+नुत्+क । अर्थात्तरह
भावता है इत्से । सभा और विचारो वचन । और
मंगल । उपावाला (त्रि)

सूप, (पु०) सुणेन पीयते । सू+पा+क । पू० । सुगन्धे
पीया जाता है । अन्नविशेष । एक प्रकारका नास्ता ।
दाल । रसोहै ।

सूपकाद, (पु०) सूयं करोति । कृ+अण् । पाकक । रसोहवा ।

सूपान्न, (न०) सूपस्य (तालेरकारकं) अन्नं । उपकरण ।
दाल आदि मालेको साक करनेद्वारा पापन । हीन । दिष्ट-

सूर, (पु०) सवति (प्रेरयति) करोति लोकात् । सू+
वन् । लोकोको काममें लगाता है । सूयं । और अर्क
(आक) का वृक्ष । सूर+क । पण्डित । दाना ।

सूरत, (त्रि०) सू+सूत्+क । पू० दयालु । मिहबान । उपाळ-

सूरसूत, (पु०) ६ त० । सूयंका सारयि । अरण । गह-
रका चमामाई ।

सूरि, (पु०) सू+सिन् । सूयं । आकका वृक्ष । एक वादक ।
और पण्डित । "सदा पदमनित सूरयो" इति भुक्ति-

सूरिन्, (पु०) सूर+सि । पण्डित । चतुर । दाना ।

सूर्येणस्ता, (स्त्री०) सूर्यं इव नया अस्ताः । पू० । छात्र-
की तरह जिनके नया (मसू-मर्क) हैं । शरयकी
बहिन (भगिनी) ।

सूर्ये, (पु०) सू+वयम् । सि० वीर्यं । दिवाकर । सूरज ।
आकका वृक्ष । एक देव ।

सूर्यकान्त, (पु०) सूर्यस्य कान्तः (शिबः) । सूर्यका
विद्यार । एकटिक मणि । विश्वीकी मणि । विश्वैर । वरु
मणि सि जो सूर्यकी किरणोंका सम्बन्ध पाकर जाता है ।
आगवी स्त्रीका ।

सूर्यमण्डण, (न०) सूर्यस्य (राहुका तदाकालाभ्युदयका)
मण्डणम् (आकमण्डणम्) । सूरजका राहुसे (राहुमें आई-
हूँ प्रविष्टीकी कथासे) एककाकाला । अस्तित्वमें राहुमें
प्रविष्ट (आगई) हूँ प्रविष्टीकी कथासे सूर्यमण्डणका
आकमण्डण (एककाकाला) अण । सूर्यका मण्डण ।

सूर्येज, (पु०) सूर्यंज कावते । कन्+क । सूर्यके कण्ठ
होना है । क्षतिग्रह । समताका वैश्वान मनु । और दुर्गा
बनर । "सूर्येजुज" आदि श्री । वसुका वटी (स्त्री०) ।

सूर्या, (स्त्री०) सूर्यस्य आर्षी । कण् । उपावाकाली सूर्यकी
श्री (अम्बुपी) । (अम्बुपी) कुण्ठी (वीर) । स्त्री ।

सूर्याचन्द्रौ-सूर्याचन्द्रमसौ, (पु०) दिवसत (सूर्यः
चन्द्रय-चन्द्रमाव) सूर्यं और चन्द्रमा-

सूर्यालोक, (पु०) ६ त० । सूर्यका प्रकाश । आन ।
पूर । रीद । तेज-

सूर्यादमन्, (पु०) सूर्यप्रियाः अन्ना । सूर्यका प्रिया
पत्नर । सूर्यकान्तमणि-

सूर्योद, (पु०) सूर्येण (सूर्यालोकालेन) कः (प्रदिगः) ।
वद+क । सूर्ये उदयेके समय सूर्यका हुआ अतिथि-

सूर्यज, (न०) सूर्य+जन्+कामिन् वा । अहमन्मयन ।
दोशके पावका दिग्गा । पत्नरका । "सूर्यनी एवेके
दि च" सूत्रि-

सूर्याल, (पु०) सू+यालन् । जम्बू (वीरव) । एक देव-

सूरि, (पु०) सू+सिन् । सनु । अंगु (अंगुग) कण्ठ ।
(स्त्री०) वा वीर । "सूरि" सूर्यी-

सूरि, (स्त्री०) सू+भावे सिन् । मयन (मयन) ।
"कल्पमें" पय (सान्ना)-

सूर्यर, (त्रि०) सू+वर्ण । मयनकनी । कर्मेत्यन् ।
श्रीमें वीरु होना है (तब इगका अर्थ "मय" है)

सूरु, गति (आना) अन्+प० ग० अतिर । अति । अण्+पु-

सूरु, (पु०) सू+वमर्ण् । सूरिर्ण् । अनेकान् (त्रि०)

सूरु, (त्रि०) सू+वम् । निर्दिष्ट (एकदुष्) । कर्ण-
हुका । सुदुष्का । शिष्य मिदुष्का । एकदुष्का ।
और छोटादुष्का-

सूरि, (स्त्री०) सू+सिन् । शिबं (एककाकालः) ।
संगारकी रचना । और लभय । "सूरिसे सिन्" सूर्यर
(एकदुष्का) । "सूरि सूरु" सूरु-मय

सेक, (पु०) सिन्+अवे । सेक (सीकन) । कर्ण अनेके
सीक करमा-

सेकपाव, (न०) सिन्+अवे । "सिन्+अवे" सेक ।
जिसे सीकते हैं । सूर्यसेक । दोष । कर्ण । सेक

सेक, (पु०) सिन्+अवे । सिन्+अवे । सीकने
है । सिन् (सीकी-अवे) । सेक (सीकने) (त्रि०)

सेकन, (न०) सिन्+अवे सिन् । कर्ण अनेके सीक
करना । सीकन "सूर्ये सूरु" सिन् । अण्+पु-
सीकनेका अर्थ । अण् । अ-अण्

सेडु, (पु०) सिन्+अवे । एक अण्+अण् इत् (एण्)

सेडु, (पु०) सिन्+अवे । सेन अनेके कर्णसे सूर्यके
सिन्से अण् । पुत्र । कर्णान् । अण्+अण् (अण्)
सूर्य कण्ठ

सेनुकण्ठ, (पु०) ६ त० । सेनसे अनेके सिन् अण्+
कण्ठसे सिन्+अवे पुत्र अण्+अण्+अण् अण्+अण्+अण्
पुत्र । सेन अनेका अण्+अण्

सेतुमेदिन, (त्रि०) सेतुं मिनति । पुलको तोडनेवाला ।
दंती वृक्ष (पु०) ।

सेत्र, (न०) सि+धृन् । बेदी । निगड । हथकडी ।

सेना, (स्त्री०) सि+न । सह इनेन (प्रभुणा वा) । स्वामी
वा प्रभुके साथ । सैन्यं । यन् । फौज ।

सेनाङ्ग, (न०) ६ त० । हाथी, घोडा, रथ और पैदलका
समूह । और सेनाका उपकरण (साधन) ।

सेनाचर, (पु०) सेनायां चरति । चर+ट । सेनागामी ।
सेनामें जानेवाला । "सेनाचरीभवादिभान" इति मैषधम् ।

सेनानी, (पु०) सेनां (देवसेनां वा) नयति । नी०
किप् । सेना वा देवताओंकी सेनाको लेजाता है ।
कार्तिकेय (सेनापति) । महादेवका बड़ा पुत्र ।

सेनापति, (पु०) ६ त० । कार्तिकेय सेनाका पति । कप्तान् ।

सेनामुख, (न०) ६ त० सैन्याम् । सेनाका मुख
(आगा) । हाथी घोडा आदिकी विशेषसंख्या ।

सेनारक्ष, (पु०) सेनां रक्षति । रक्ष्+अण् । सेनाकी
रक्षा करनेहार । पहरुआ ।

सेफ, (पु०) सि+फ । सेफ । पुरुषका विशेष चिन्ह । लिंग ।

सेवक, (पु०) सिव+ण्वल् । चीवनकर्ता । चीनेहार ।
दरजी । "सिव+ण्वल्" । श्ल (नौकर) । दास
(गुलाम) । ओ अनुचर (त्रि०) ।

सेवधि, (पु०) सेवं दधाति । धा+क्ति । जिसकी सेना
करनी पडती है । शंख आदि निधि । सजाना ।

सेवन, (न०) सिव्+सेव वा स्युद् । सूर्य आदिके कपडे
आदिका जोडना । सीना । आसरालेना । भोगना ।
बांधना । पूजना । "सीव्यते अनया" भस्युद् । सूची
(सूर्य) (स्त्री०) दीप् ।

सेवा, (स्त्री०) सेव्+अ । मजन आरुपन । भोगना ।
आसरालेना । नाचनी ।

सेवित, (त्रि०) सेव+क् । पूजागया । सेवाकियाहुआ ।
आसराडियागया । और भोगगया ।

सेव्य, (न०) सेव+ण्वत् । अपत्य (पीपल) । सेवाके
सायक (त्रि०) ।

सैहिकेय, (पु०) सिहिक्यायं भवः+उट् । सिहिका (रा-
हासी) में हुआ । राहु । "उगका अपत्य (गन्तान)
इह (एय)" "सैहिकेय" यही अर्थ है ।

सैकत, (न०) सिक्ताः सन्नि अत्र+अण् । जहां रेत
है । बहुत काउडा (रेत) बढा नदी आदिका तट
(किनारा) । बहुत रेतकी जगह (त्रि०) ।

सैदान्तिक, (न०) सिदान्तं वेति+उट् (इट्) । सिदान्त
(अक्षरीबन) के काभेराहा । सिदान्त्यामिह ।

सैनपत्य, (न०) सेनापतेः अण् । धर्म० वा यन् ।

सेनापति । फौजका मालिक (कप्तान) का धर्म (काम
"सेनापत्यमुपेत्य वः" कुमारः ।

सैनिक, (पु०) सेनायां समवेति+उट् । सेनामें मिलाहुआ
हाथी घोडा आदि । फौजी ।

सैन्धव, (न०) सिन्धुनदीसमीपे देशे भवं+अण् । सिन्धु
नदीके निकट देशमें उपजा । एक प्रकारका लवण (खन-
नोन) । सैधानोन । "सिन्धुके निकटहुआ" अण् ।
घोटक । घोडा (वह सिन्धुदेश (समुद्र) के निकट
अरब देशमें उपजा है) ।

सैन्धवधन, (पु०) सैन्धवमिव धनः । सैन्धवशिल
(सैधानोनकी शिल) के समान चारों ओरसे एकरस
स्वरूप । विदानन्द (चैतन्य और आनन्द) स्वरूप परनेभर ।

सैन्य, (पु०) सेनायां समवेति । ज्य । सेनामें मिला
है । मिलाहुआ हाथी घोडा आदि । "सेनाका समूह"
ष्यन् (न०) ।

सैरन्त्री, (स्त्री०) सीरं (हलं) धरति । धृ+क-मुम्ब ।
सीरन्ध्रः (कृपकः) तस्येदं शिल्पकर्म । अण् । तन्
अस्य अक्षि+अच् । बीष । हलजोतनेवाले (किसान)-
के कामवाली । इसरंके परमे रहनेहारि स्वामीना
(अपनी इच्छापर चलनेवाली) शिल्पकारिणी (कारिगर)
स्त्री (औरत) । " (सैरन्त्री)" भी होताहै ।

सैरिम, (पु०) सीरे (हले-उद्गते) इम इव शरः ।
+स्त्रायं अण् । हलके उठानेमें हाथीकी नाई बहापुर है ।
महिय । मैसा । "सेवे सैरिभमदिनीमिह महालक्ष्मी"मिति
महालक्ष्मीप्यानम् ।

सेवाल, (न०) सेवाये (मीनापीनं उपमोगाय) अगति
(पर्याप्तोति)+अच् । सेवालः । तन +स्त्रायं अण् ।
ओ मच्छी आदिके भोगनेके लिये बहुत है । सेवाल ।
(पानीका जंगाल) । स्त्रायं कन् । यही अर्थ है ।

सोड, (त्रि०) सह+सुच्+वा इद अनाव । क्षान्त । सह-
रागया । क्षमाशील । कर्तारि क (त्रि०) ।

सोड, (त्रि०) सह+सुच् (विकृण्ये इद नई होता) ।
सहनकर्ता । सहारनेहार । क्षमाशील ।

सोत्कण्ठ, (त्रि०) गह उच्छ्रय्या । बहुतसी इच्छाके
साथ । प्यारी बलुके मिल्नेकी इच्छामें मिलाव (रेगी)
को न सहारनेहार ।

सोत्प्राप्त, (न०) उद्+प्र+अण्+यण् । गह उगगोन ।
पियारे बचनके साथ । दूसरे अर्थसे उच्छ्रयिणी
औरही अर्थमें क्षयना करके बोलना । पियारा बचन ।
सोत्पृष्टन । सत्सव्हास्य (बहुतअर्थे इगना) (पु०) ।

सोदय, (त्रि०) गह उदयेन (प्रभुभवेन प्रया वा) ।
उदयहुआ । ऊपरहुआ । बगहुआ । काभरण ।
उदयके साथ रहा ।

सोदर, (पु०) सह (समानं) उदरे बन्धु । एक पेटकाला । एक ही पेटमें हुआ । भाई (स्याभाई) । भगिनी (बहिन) (स्त्री०) ।

सोदर्ये, (पु०) सह (समाने) उदरे जान-भयम् । सादेरा । एक पेटमें गोनेकाला । भ्राता । (स्याभाई) । भगिनी (बहिन) (स्त्री०) ।

सोन्माद, (पु०) सह उन्मादेन । पाण्डुराजनेके साथ । उन्मात् (पाण्डु) । उन्मत्सिन्धु । भदोमें पूर रहनेवाला ।

सोपमय, (पु०) सह उपमनेन । बड़ी श्रित्तिये दबाया गया । राष्ट्र वा चंद्रमाकी छायासे पच्छा हुआ । रात्रुओंसे दबाया हुआ ।

सोपाधि(क), (म०) सह उपाधिना । वा क्यु । उपाधिके साथ । प्रतिनाम (उलटकरपाना) की आवागे दिया गया दानभादि । किरीधिसोप गुणको धारण करनेवाला । आवश्यक (जम्बी) (दि०)

सोपान, (म०) उप+अन+भावे षण् । सह श्रित्तिये उपातः (उपश्रित्तियः) अनेन । श्रित्तिये ऊपर जासके हैं । चढ़नेका साधन लकड़ी आदिवा बनावुआ पराई । पाँच साँग । पाँची ।

सोम, (पु०) सु+मन् । चन्द्रमा । वायु (वायु) । कुबेर । यमराज । वायु (दबा) । वयु (एक प्रकारका देवता) । देवता । जल (पानी) । गोमलता (बैल) भी-पथ । उराका रज । वायुत । और किरण । "सह उग-या" पार्वतीके साथ । शिवकी । वाजपेयीका ज्ञानी शुभ्र ।

सोमगर्भ, (पु०) सोमस्य गर्भः (स्थातम्) । चन्द्रगर्भक अक्षुण्णवक्ष मोक्षका स्थान । शिष्यु । मातृवय ।

सोमज, (म०) सोमात् प्रायते । जन्+ज । सोमराजे कीनेसे उदरजा है । पुत्र (पुत्र) । चन्द्रगर्भी उपजा (दि०) । पुत्र (पु०) ।

सोमतीर्थ, (म०) सोमेन तपः साक्षा कृतं तीर्थम् । चन्द्रगर्भे तपसा प्राप्ते किले तीर्थे ब्रह्मदा । प्रथमगर्भे ।

सोमप, (पु०) सोमं (सह) श्रित्तिये । वाच+व । सहमें सोम-रहके कीनेहवा । "वा+श्रित्" । "सोमप" । बड़ी अर्थ ।

सोमपीति(धि)ञ्, (पु०) सोमं अनेन+धि । सोमपीत् । पु० । वा "त" को "व" होना है । सहमें सोमराजे कीनेहवा । "वा+श्रित्" सोमपी । बड़ी अर्थ ।

सोमवयु, (पु०) सोमस्य वयुः । सोम-वायु अर्थ वा । चन्द्रगर्भक वयु वा चन्द्रस्य शिष्यक वयु है । एवं । चन्द्रगर्भका बैल पुत्र । पु० । वायु (वयु) (म०)

सोमधू, (पु०) सोमं एव धू (उपश्रित्तियः) दत्त । चन्द्रगर्भी श्रित्तिये उदरकोई काट है । पुत्रवत् । चन्द्र-वर्णी इतिवत् ।

सोमयाग, (पु०) सोमो दत्तः । सोम वाचं सोमं होने-वाया सोमस्य पयस्सुह (श्रित्तिये सोमस्य पयस्सुह वाचं है) वापश्रित्तिये ।

सोमयाजिन्, (पु०) सोमं यजेते । उदर+जि । सोम-रहमें यज करनेहवा । सोमयजकर्म ।

सोमलता, (स्त्री०) सु+मन् । बदे० । सह चन्द्रकी लता (बैल) ।

सोममंडल, (पु०) सोमस्य मंडलम् । चन्द्रगर्भक मंडल । सह चंद्रमें उपात्त इतिवत् ।

सोमपार, (पु०) सोमपारिक कर्म । सह सोम श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये । चन्द्रगर्भक श्रित्तिये । सोमपार । सोमपार । सोमपार ।

सोमविश्रयिन्, (पु०) सोमं विश्रयति । श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये । सोमपार । सोमपार । सोमपार ।

सोमविश्रयण, (पु०) सोमं विश्रयति । चन्द्रगर्भक श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये । सोमपार । सोमपार । सोमपार ।

सोमवयु, (पु०) सोमं वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । सह चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवयुता, (स्त्री०) सोमं वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । सह चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृक्ष, (म०) सोमस्य (वृक्ष) एक वृक्ष इत्यर्थः । पानी श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये श्रित्तिये । सोमपार । सोमपार । सोमपार ।

सोमवृष्ट, (वि०) सह चन्द्रगर्भक वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृष्टक, (म०) सह चन्द्रगर्भक वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृष्टि, (म०) सह चन्द्रगर्भक वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृष्टिनिधि, (वि०) सोमं विश्रयति । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृष्टि, (म०) सह चन्द्रगर्भक वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सोमवृष्टि, (म०) सह चन्द्रगर्भक वयुः । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु । चन्द्रगर्भक वयु ।

सौचिक, (पु०) सूची (सत्कर्म जीवनं) उपजीवति+ठन् । सूईका काम करके जीता है । सीनेवाला । दरजी.

सौजन्य, (न०) सुजनस्य भावः+भ्यन् । भलेमायुषका होना । सुजनता । भलमानसी । और अच्छा व्यवहार ।
“सौजन्यं यज्ञ” इत्युद्धृतः.

सौत्र, पाणिन्यादिभिः सूत्रेण (कर्मविशेषाय) पठितः+अण् । पाणिनीयादि मुनिओंसे किसीविशेष कामके लिये सूत्रद्वारा पढाहुआ । श्वादिविशेष दसगणोंमें होनेवालोंसे भिन्न केवल सूत्रमें पढे हुए धातु.

सौत्रामणी, (स्त्री०) सुत्रामा (इन्द्रः) देवता अस्व+अण् । जिसका देवता इन्द्र है । एक प्रकारका यज्ञ इसीमें ब्राह्मणोंकोभी सुरापान-शराबका पीना विहित (विद्वंमं कहा हुआ) है । “सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्” इति श्रुतिः.

सौदामनी, (स्त्री०) सुदामा (पर्वतमेदः) तत्प्रान्तभवत्वात्+अण् । विद्युत् (विजली) । यह बिहारके सुदामा नाम पर्वतके एक देशमें उत्पन्न हुई । और एक अप्सरा । ऐरावतहाथीकी स्त्री । “सौदाम्नी” (त्रि०)

सौदायिक, (न०) सुदायात् (बन्धुकृत्वात्) भागतः+ठण् । बन्धुकृत् (माता-पिता-भाई+पति) से आया । एक प्रकारका स्त्रीपण (जो पति आदिसे पाया है).

सौदास, (पु०) चन्द्रवंशी कल्पापवाद नामक राजा.

सौध, (पु० न०) सुधया (लेपनद्रव्येण) रक्म+अण् । राजसदनमेद । एक प्रकारका राजाका महल । सुधा-सम्बन्धी (अधृतका) (त्रि०).

सौनिक, (पु०) सुना (व्यवस्थाने)-तदुपलक्षितमांसादि पण्यं अस्व+ठण् । घातकरनेकी जगह (उसमें पहिचाना गया मांसआदि) है सौदा-व्यापार जिसका । मांस (माघ) को क्रयविक्रय (मोल देना और बेचना सरीद फरोल) करके जीनेहार । व्याप (शकारी) । कणार्ध.

सौन्दर्य, (न०) सुन्दरस्य भावः+भ्यन् । चारता । मनोहरता । सुन्दरता । नूब सूरती । अंगोंकी ठीक रचना.

सौपर्ण, (न०) सुप्तृ पर्णानि-तद्रूपं अर्हति+अण् । अच्छे पत्तोंके रंगवाली । मरकतमणि । पत्ता.

सौपर्णेषु, (पु०) सुपर्ण्याः (विजयायाः) अण्वल्गु+ठण् । विजयाकी सन्तान घरद.

सौप्तिक, (त्रि०) सुप्तिकृते (शय्नी) भवं+ठण् । रातमें हुआ । रातकी लडाई । सोयेहुओंके नियममें ठिय्याहुआ अन्य । महाभारतका एकपर्व (द्विष्ट्या).

सौप्त, (न०) सुप्तु सर्वत्र कोके मर्ति । आ+ठ । साथें अण् । मन्त्रीमर्ति सब सोइमें प्रकल्पित है । राजा हरि-धन्वका बर । कामकाई नगर.

सौप्त, (पु०) सुप्तशर्वा भवः+अण् । सुप्तशका पुत्र । अनिमन्तु.

सौभरि, (पु०) एक मुनि (जिसे मच्छिओंकी झीठ पर मोह होगया था)

सौभागिन्य, (सुभगाया अपत्यं+ठण्-इनादेशः) । होने पदोंको शुद्ध होती है । सुभगा (पत्तिकी पियाती स्त्री) का पुत्र । उसकी कन्या । (स्त्री०) शीप्.

सौभाग्य, (न०) सुभगस्य भावः+भ्यन् । त्रिपदवृद्धिः प्रियत्वे+स्वाथें भ्यन् । सिन्धूर । टहन (सुहागा) विष्कम्मादिमें चौथा योग । पु० । अच्छी किस्मत (न०).

सौमिक, (पु०) सौमं कामचारिपुर-तस्मिन् (सिंह) अस्व+ठण् । कामचारिपुर (अपनी इच्छासे बिचरनेहार नगर) को रचना करनेके व्यापारको जातेद्वारा । ऐन्द्र-जालिक । मदारी.

सौमनस्य, (न०) सुमनसो भावः+भ्यन् । अच्छे मनका होना । प्रशस्तचित्ता । धाड़का पिण्ड देनेके पीछे ब्राह्मणके हाथमें फूल देनेका मन्त्र.

सौमित्र, (त्रि०) पु० सुमित्रायां भवः+अण्+इन् वा । सुमित्रामें हुआ । लक्ष्मण.

सौम्य, (त्रि०) सोमो देवता अस्व+अण् । सोम (चन्द्रमा) देवतावाला (जिसका देवता चन्द्रमा है) । “सोम-इत-नः । स्वाथें अण् । चन्द्रमाके समान । मनोहर । सुन्दर । (त्रि०) । सुध । (पु०) । शुभग्रह । वृष आदि सप्तराशि । सोमरस पीनेवाला ब्राह्मण (पु०).

सौम्यग्रह, (पु०) कर्म० ज्योतिषमें चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र-रूप शुभग्रह.

सौम्यनामन्, (त्रि०) सौम्यं नाम यस्य । सुमदायक वा प्यारे नामवाला.

सौर, (पु०) सूरस्य इदम् । सूरों देवता अस्व+अण् वा । सूर्यका पुत्र । शनैश्वर । यमराज । सूर्यदेवतावाला । (त्रि०) । शिवां शीप् । “सौरी”.

सौरभ, (न०) सुरभेर्भाषः । अच्छागन्ध । सुगन्धीभाव । अण् । अण् वा । केसर (न०).

सौरभेय, (पु०) सुरभेरपत्यं+ठण् (एय) । गौ । स्त्रीमें शीप् । “तस्या इदं ढण्” “सुरभिसम्बन्धी” (गौषा) (त्रि०).

सौरलोक, (पु०) सौरः शोकः । सूर्यका शोक (सूर्यकी बुनियां) ।

सौराष्ट्र, (पु०) सुप्तु राष्ट्रं अय्य अग्नि+अण् । त्रिपदा अच्छा राज है । एकदेश (राज) । “सुराष्ट्रे भा” अण् । सुराष्ट्रदेशमें हुआ । (त्रि०) । एकदिन (न०).

सौरन्यिक, (त्रि०) सूर्यं (तापमानदि निर्माणं) विना अस्व+ठण् । त्रिपदा काम तापवेद करने बनना है । तापमय पात्र निर्माण करना । कथेरा.

सौरपत्निक, (पु०) सौरिपत्नये कृष्ण+ठण् । मया करनेमें बपुर । पुरोहित (सदा मन्त्रों का रण है).

स्त्रीलिङ्ग, (पु०) स्त्रिया इव लिङ्गं (तत्कार्यं) इत्य् ।
 कृष्णिमये विधान विभागमा व्याकरणमें बहुदुष् संस्कारकाल,
 इच्छादिभेद । १ त० । स्त्रीका बिन्दु (मसान) (म०).
 स्त्रीयदा, (पु०) १ त० । स्त्रीवस्तीभूत । स्त्रीके आधीन हुआ।
 स्त्रीविधेय, (पु०) १ त० । स्त्रीके भगमें रहनेद्वारा।
 स्त्रीर्यप्रदण, (म०) विद्या संमरणं इत्य् । एक प्रकारका
 विद्या (शास्त्र), जिसमें दुगरेदी स्त्रीको दण्ड दिया
 जाता है । स्त्रीका पदचक्रना।
 स्त्रीयम, (म०) स्त्रीका समा क्षिप्रभं (न्युत्पन्न होजा
 है) । स्त्रीकोका समाज।
 स्त्रीसेवा, (स्त्री०) १ त० । स्त्रीका संभोग । भोगके द्वारा
 स्त्रीकी सेवा।
 स्त्रीण, (न०) स्त्रिया इदं+अण् । मन् । स्त्रीका स्वभाव । और
 स्त्रीकोका समूह (शृङ्ग) । स्त्रीकी अज्ञानमें रहनेद्वारा । और
 स्त्रीका (त्रि०) ।
 स्व, (त्रि०) स्वा+क । स्थितीहीन । उदरनेवाला । (प्रायः
 यह स्त्रीकी पदके पीछेही लगना है) जैसे-पदस्व । मार्गस्व ।
 निष्कटस्व । पदस्व।
 स्वार्, संभरण (दांपत्या) भ्या० पर० सङ्० सेद् । स्वगती ।
 अस्थायीय।
 स्वगान, (न०) स्वगुं+स्वगुद् । आच्छादन । दांपत्या।
 स्वगित, (त्रि०) स्वगुं+क । आगुन । निरोद्धित । संघा-
 हुआ । शिवाहुला।
 स्वगती, (स्त्री०) स्वगते अनया । "यम्" के अर्थमें "इ"
 शीर्ष । दांपत्याका है इत्ये । ताम्बूल (पान)का पान ।
 पानका इच्छा।
 स्वण्डिल, (न०) स्वल+इल्लुक्-नुक् । "ल" को "ड" होता
 है । चत्वर । घातका अंगन । यज्ञ (जो चारोकोरको
 समान हो) । "निषेदुषी स्वण्डिल एव केवले" इति कुमार ।
 यहके लिये संस्कार दिया हुआ स्थान । और होमके लिये
 पुण्डके प्रतिनिधि (उसकी जगह) स्वर्णके बालुघ (रेत)
 आदिसे करनेलायक मण्डलविशेष । "निरु और नैमित्तिक
 कर्म स्वण्डिलपरही करना चाहिये, यह एक हाथपर रेतका
 बनाये" यह तन्त्रका सिद्धान्त है।
 स्वण्डिलशास्त्रियन्, (पु०) स्वण्डिले (चत्वर) सेवे
 (मन्त्रचक्राद्)+मिनि । मन्त्रके लिये चत्वर (घातकाभागन
 चारोओरसे शुची जगह) पर सोनेकाल । धकेपर सोनेकाल।
 स्वण्डिलेशाय, (पु०) स्वण्डिले सेवे । अन्-अल्लुक् समा० ।
 मन्त्रके लिये चत्वरपर सोनेकाल।
 स्वपति, (पु०) स्वा+क । उठका पति । बम्बुकी (अन्त-
 पुरमें रहनेद्वारा बूटा आक्षण) । मिलिनेद् । एकप्रकार-
 का करीगर । राजा । कुबेर । अधीश (मालिक) । "बृ-
 शस्तिगन्ध" नामक यज्ञके करनेद्वारा । बहुत अच्छा ।
 (त्रि०) ।

स्वयुट, (त्रि०) लिटि । स्वा+क । स्वं पुटं यत् । विषयो-
 क्तप्रदेश । देखी और उंची जगह । "स्वयुटगतमपि कन्य-
 मन्मममति" इति मालतीमाधवम् । कठिन स्थानमें विचर-
 नेद्वारा जीव (पु०) ।
 स्वल्, स्थान (उदरना) भ्या० प० अक० सेद् । स्थलति ।
 अस्थायीय।
 स्वल्, (न० स्त्री०) स्वल्+अच् । जलसे रदित अष्टमिय
 (जो बनावटी मट्टि स्वाभाविक) पृथिवीका भाग । स्त्रील-
 पक्षमें स्त्री । "बनस्थली मर्मपत्रमोक्षा" इति कुमारः ।
 माल । बनावटी भूभाग (न०) ।
 स्वलयत्तर्मन्, (न०) स्वलयत्तर्मा । यत् (पृथिवी-जमीन)-
 का मार्ग (रास्ता) ।
 स्वलारविन्दुम्-कमलं-कमलिनी, (न०) स्वलय अरवि-
 न्दुम् । यत् (पृथिवीपर उदयन हुआ)का कमलद्वल।
 स्वलेशय, (पु०) स्वले सेवे । स्त्री+अच् । अल्लुक् समा० ।
 बराह (श्वर) और दह (एक) प्रकारका हरिण) आदि
 पशु । बलपर सोनेकाल (त्रि०) ।
 स्वयिर, (न०) स्वा+किरच् । "स्व" का आदेश । शैलेय-
 नामी गन्धर्वन् । चार मुखवाला मन्त्रा (पु०) । अनल ।
 स्थिर । न दिखनेवाला और बूटा (त्रि०) । महाभावणी
 (स्त्री०) ।
 स्वयिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन स्वल्+इष्टन् । "ठ"का शेष
 होनेपर पुण हुआ । अतिशुद्ध । बहुत बूटा । "ईयम्"
 होनेपर "स्वयीमान्" नी इसी अर्थमें है (स्त्री०) स्त्रीप् ।
 स्थानु, (पु०) स्थानु । पु० णतम् । शिवनी । और शारदा
 (जानी) से रहितरस (ठोंट) । बूटा (त्रि०) ।
 स्थान, (पु०) स्थान+स्वुद् । स्थिति (उदरना) । समानता ।
 अथद्वारा (जगह) । बराति (रहना) । मन्त्रकी रानिध ।
 भाजन (बर्तन) । निकट (पास) । व्याकरणमें प्रसंग
 (आदिरयमान "मण्" आदिवा कारण स्वल्प "इक्"
 आदि) जगह।
 स्थानाभ्यक्ष, (पु०) स्थानस्य भाष्यः । स्थानका स्थानी
 (मालिक) । निरीक्षक । पुस्तिकाका अधिपति।
 स्थानिक, (त्रि०) स्थाने अधिष्ठत+इक् । स्थानाभ्यक्ष ।
 स्थानाधिपति । स्थानका मालिक।
 स्थानिन्, (त्रि०) स्थानं अस्य अस्ति स्वरायेन । स्थान-
 रक्षक । स्थान (जगह) की रक्षा करनेद्वारा । स्थानं
 (प्रसंगः) । अस्ति अर्थे इति । व्याकरणमें आदिरयमान
 "यन्" आदिवा कारण "इक्" आदि । "स्थानिबरादेष्टोऽ-
 नात्किर्षा" इति पाणिनिः।
 स्थानीय, (न०) स्त्रीवते अस्मिन् । स्वा+आपारे अनीवर् ।
 जहाँ रहते हैं । नगर (मुक) । "स्थानं (वाय.) अ-
 ईति स्थानस्य इदं वा उ" । निवास करनेलायक देश ।
 स्थानवाय (त्रि०) ।

स्याने, (अव्य०) स्या+न । योग्यता । और औचित्य (मु-
नासिबपन) । ठीक है । सल । परावर्ती ।
स्यापन, (न०) स्या+निच्+स्युद् । टिकाना । आरोपण ।
बदना (ब्ययमकरना) । और "सुसवन" नाम गर्भका
संस्कार-शुच् । "स्यापना" यही अर्थ । रक्षना ।
स्यापित, (वि०) स्या+निच्+क् । निश्चित पडा । निवे-
दित (टीकाबाहुआ-रक्षणाग्या) । और म्यस्त ।
स्यामन्, (न०) स्या+मनिच् । ताकि । ताकन । स्थिरता ।
पकिआर् ।
स्यायिन्, (त्रि०) स्या+निनि । स्थितिशील । रहनेवाला ।
अलंकारमें रखके अनुसूक्त "रति" आदिभाव (पु०) ।
स्यायुक्, (त्रि०) स्या+उक्त् । स्थितिशील (ठहरनेवाला) ।
एक प्रामाथियष्टन (एक गांवका मालिक) (पु०) ।
स्याल, (न०) स्यलरि (लिटि) अभावि अत्र । जिगमें
अत्र आदि रक्था जाता है । घाल (अन्नपात्र) । पाक-
पात्र (देवका-दाही) । घाली । धीन् ।
स्यायीपुलाक, (पु०) स्यायीसाः पुलाकाः (तण्डुलाः)
रानि अत्र+अच् । घालीके चारल जिगमें है । एक
प्रकारका म्याय जैसे देवके-दाहीमें एकचालका पाक देस-
कर गारे चबलके पाकका अनुमान होजाता है । यदि
बदलेदिमें एकदना मलमला तो सारेही गेठुए समाने,
बलोदि सबको आगका संयोग एकही समयपर हुआ है ।
स्यापर, (वि०) स्या+वरच् । अवयव (जो हिलता नहि) ।
स्थिर (एक जगह कायम) । इध (द्रष्टव्य) आदि ।
पुटिरीःअर्चि परैद (पु०) । मनुष्य विद्या (न०) ।
स्यापित, (न०) स्थिरता भाव+अच् । व्यापन । व्याप्या ।
बदल । बर सन्धि । (सगर) बरिय चीनपर होता है ।
स्यापक, (पु०) स्या+क् । सापें कन् । अलंकार (महना-
लेपर) । पनीही बूंद ।
स्याष्ट, (त्रि०) स्या+क् । स्थितिशील । टहिराट्या ।
टहिराट्या ।
स्थान, (वि०) स्था+क् । स्थित । टहिराट्या । सगडुआ ।
स्थित । न हिलटुआ । स्थितकथा ।
स्थानक, (वि०) स्थान कथा यन् । टहरी हुई अकिल-
बन्ना । स्थिर (अवत) सुसवसा ।
स्थानि, (त्रि०) स्था+निच् । मर्कटा (नियम) । मन्व-
वर् (इन्द्रावर्क कथा) पर स्थिर होना । और स्थान
(टहिराट) ।
स्थिर, (पु०) स्था+थिच् । परैद (बहद) । देवना ।
हुद । एता । अन्वर्क । इन्द्र । मन्व । उर्वरिचये हुद,
सिद्ध, हुदिक ही कुन स्थिति । स्थिति । (मर्कटा) । और
न हिलनेवाला (वि०) । स्था+क् (ति-क्) । पुटिरी ।
स्थिरम्, (त्रि०) स्थिरनेय स्थिर मन्व । अन्व-
स्थिर । इन्द्रावर्क । इन्द्र (पु०) ।

स्थिरधी, (त्रि०) स्थिर धीः यस्य । अवल (न हिलने
वाली-पके निययवाली) पुटिवाला ।
स्थिरमति, (त्रि०) स्थिर मतिः । पकी अकिल । ६ ब० ।
स्थिरचित्त । पके दिलवाला । स्थिरपुटिवाला (त्रि०) ।
"अनिकेतः स्थिरमतिः" इति गीता ।
स्थिरयौवन, (न०) स्थिर यौवनं (पकी जतानी) । बहुत
देतक । रहनेवाला जीवन । "स्थिर यौवनं अस्" पकी
जवानीवाला । विद्याधर आदि (एक प्रकारकी देवता) ।
देतक रहनेवाले यौवन (जीवन) माल (वि०) ।
स्थिरायुस्, (पु०) स्थिर आयुः यस्य । देतक स्थायी
(कायम) रहनेवाले पकी उमरवाला । बाल्यगी (गिबल)-
का द्रवत ।
स्थूल, बृंहण (बढना) पु० उभ० गह० मेद् । स्थूलगी-ने
स्थूल, (त्रि०) स्थूल+अच् । पीवर । मोश और समूह ।
स्थेय, (पु०) स्थेयते (विशदनिर्णयकथा) भागी ।
स्था+अच् । जिते किसी विवाद (झगडे) को मिटानेके
जिते स्थिर (कायम) किया जाता है । विशदमें संसारका
निर्णय करनेद्वारा । जूरी । और पुरोहित । स्थिर (त्रि०)-
स्थेयस्, (त्रि०) अनिश्चयने स्थिर । ईयम् । स्तादेसः ।
बहुत पका ।
स्थैर्यं, (न०) स्थिरस्य भाव+अच् । स्थिरता । पकिपारी ।
मजबूती ।
स्थौल्य, (ग०) स्थौल्य भाव+अच् । पीवरता । मोशरी ।
मोटापन ।
स्वपन, (न०) स्वा+णिच्+पुक्+स्युद् । जठ आदिमें भावितेक
करना । न्दाना । मान ।
स्वय, (पु०) स्व+अच् । स्वय । दारण । बहना घुना ।
स्वातक, (पु०) स्वा+भावे क । स्वानं अण्य अणि+क्त् ।
वेद पत्रनेके अनन्तर यहस्थाधममें सोइनेके जिते अंगभूत
मान (न्दाना) करनेद्वारा । पुरके पाग विद्या समाप्त
करके परमें आनेके जिते मान करनेकाल ।
स्वातकप्रत, (न०) ६ त० । स्वातकके जानेबावक एक
प्रकारका मन् । "अलामे येन कथ्यावा स्वातकप्रतपरैर"
स्थिः ।
स्वान, (न०) स्वा+स्युद् । सोपन (गधारी) । आगदर ।
नटना ।
स्वानीय, (त्रि०) स्वानीय शिवायुष्ठ । स्वनेके ही शि-
वारी (साधन) वेद । इन्द्रावर्क (बढना) अर्क
स्थायु, (त्रि०) स्था+थि (स्थायी) शेष अन्तः । स्था+अच् ।
स्थायिने शेष मन्व इन्द्रावर्क है । स्थायी कन् (इन्द्र) ये
उर्वरिचये ही एद मती । एव ।
स्वाम्य, (त्रि०) स्वाम्य । स्वाम्य (शिवायुष्ठ)
विदना । स्वाम्य (स्वाम्य विन) । स्वाम्य (पु०) ।
वेत । वारी (अ०)

विभङ्गता, (स्त्री०) विभङ्ग भवः । भेद । विभङ्ग ।
विभङ्गः ।

कुम्भ, (पु०) कुम्भक । क्षरित । बहा हुआ जलआदि ।

कुम्भा, (स्त्री०) कुम्भार् । पुत्रकूप । पुत्रकी स्त्री । बहू । कुं-

खेट, (पु०) मिह्+घञ् । प्रेम (विदार) । तेलआदि

रसविशेष । म्याचने गुणविशेष (जिससे एक पदार्थ जल्दी

जलता है) ।

कुम्भ, (न०) मिह्+विच्+स्फुट् । तेल आदिवा मलना ।

कुम्भ, (स्त्री०) १ त० श्लेष (बलागम) नामी शरीरका

भङ्गुरविशेष । कुम्भका पात्र । प्रेमका स्थान ।

कुम्भ, (पु०) मिह्+गिति । बपस (मित्र) । बंधु । कुम्भ-

बाल्य (वि०)

स्फुट्, ईष्यन् (घोडागा बापना) । भ्वा० आ० अक०

सेट् । इति (स्फुटते) । अस्फुटित् ।

स्फुट्, (पु०) स्फुट्+घञ् । ईष्यन् । घोडागा हिलना ।

घोडागा बापना । एक प्रकारकी क्रिया । आँसुका फटक-

नाआदि ।

स्फुट्, (सं०) संहर्ष, बहुत प्रसन्न होना । (परामिभवेच्छा ।

दुमरेको दकनेकी इच्छा करना) । भ्वा० आ० सक०

सेट् । संप्रिते । अस्फुटित् ।

स्फुट्, (स्त्री०) स्फुट्+अ । संहर्ष । सुती । दुमरेको

दकनेकी इच्छा । साम्य । बराबरी । उन्नति । तरकी ।

स्फुट्, प्रहण (पकडना) । और स्त्रेय (चुराना) । उ०

उ० सक० सेट् । स्यंयति-से । अस्फुटित्-न ।

स्फुट्, (पु०) स्फुट्+स्फुट् अच् पच् वा । म्याचमें स्फुटिन्द्रिय-

प्रहण (तबका चमडा इन्द्रियसे जिसका प्रत्यक्ष होना है)

गुणविशेष । पकडना रोग । युद्ध (जग) । गुणवर छिपा

हुआ दत्त । और उपपातक (छोटा पातक) वापु (हवा)

(पु०) स्फुट्+वाल् (वि०) "क" से ले "म" तकवर्ण (पु०) ।

स्फुट्, प्रत्य (गाँठना) और बांधना भ्वा० उभ० सक०

सेट् । स्फुटित्-से ।

स्फुट्, (पु०) स्फुट्+अच् । चर । दत्त । युद्ध (लंग) ।

गुणवर (जासूद) ।

स्फुट्, (वि०) स्फुट्+क । नि० । व्यक । प्रवृत्त । स्फुट । ताक ।

स्फुट्, (वि०) स्फुट्+क । इन्द्रसंघ । स्फुट्+हुआ "भावे

क" घृणा (न०) ।

स्फुट्+स्फुट्, (न०) स्फुट्+भावे क । नम्+स्फुट्+किन् ।

स्फुटिष्ठ अस्फुटिष्ठ द्वयोः समाहार । सर्वांसंघ । घृणा और

न घृणा ।

स्फुट्, इच्छा (चाहना) । उ० उ० सक० सेट् । स्फुटि-

त् । अस्फुटित्-त ।

स्फुट्+गीय, (वि०) स्फुट्+अनीयर् । वाञ्छनीय (चाहने-

लायक) और श्लाघ्य (मराहनेलायक) । " अतो बतानि

स्फुट्+गीयवीर्यः " इति कुमारः ।

स्फुट्+वाल्, (वि०) स्फुट्+आडच् । स्फुट्+गीय । चाहनेवाला ।

स्फुट्, (स्त्री०) स्फुट्+आर् । इच्छा (चाह) । " मियुने स्फुट्-

वती " कुमारः ।

स्फुट्, (वि०) स्फुट्+यत् । वाञ्छनीय । चाहनेलायक ।

स्फुट्, विशीघ्रता (फटना) अक० भ्वा० पर० सेट् । स्फु-

टति । अस्फुटित् । अस्फुटित् ।

स्फुटि (टी) क, (पु०) स्फुटिरी (टी) व । इषाये कन् ।

इषनामकी मणि सूर्यकान्तमणि (आनशीवीरसा) । विद्यार ।

स्वाये अच् । " स्फुटिक " वही अर्थ (न) ।

स्फुटिकाचल, (पु०) स्फुटिक इष शुभ्र. अचल । विद्यारके

गमान चिह्न पर्वत । कैलासपर्वत (पहाड) । विद्यारका पहाड ।

स्फुट्, इदि (बडना) भ्वा० आ० अक० सेट् । स्फुयति ।

अस्फुयति । अस्फुयित् । स्फुयित् ।

स्फुयति (स्त्री०) स्फुय्+किन् । इदि (बडना) ।

स्फुय, (पु०) स्फुय्+रक् । स्वर्गयुद्ध । सोनेका बुलबुला ।

और विपुल (चौडा) । चमकाहुआ । और बहुत (वि०) ।

स्फुयण, (न०) स्फुय्+विच् (स्फुयणेश) स्फुय् । विष्णु-

शन-सिलना ।

स्फुय, (वि०) स्फुय्+डिच् । कटिदेश । नितम्ब । चूत ।

स्फुय, (वि०) स्फुय्+किरक् । प्रचुर (बहुत) । और

विस्तृत । बडाहुआ ।

स्फुट्, विराग (सिलना) । तुदा० अक० सेट् । स्फुटति ।

अस्फुटित् । पुस्फुट ।

स्फुट्, (वि०) स्फुट्+क । विकणित । सिलाहुआ । व्यक

(जाहिर) । मित्र (टटयवा) । और चिह्न । ज्योतिषमें

मेघआदि राशिओंके अशुभविशेषोंमें स्थित हो रहे सूर्यो-

ग्रह (पु०) सांपका फल (स्त्री०) ।

स्फुटन, (न०) स्फुट्+स्फुट् । निकफन (सिलना) । फूट-

ना । विदलीभाव । फटकर निकलना ।

स्फुट्, स्फूर्ति (फुरना) । उ० प० अ० सेट् । स्फुटति ।

अस्फुटित् । पुस्फुट ।

स्फुरण, (न०) स्फुट्+स्फुट् । ईष्य स्फुटन । घोडागा बां-

पना+युच् । (स्त्री०) वही अर्थ ।

स्फुर्त्त, मन्त्रशब्द (बादले गात्रनेकी आवाज करना) । भ्वा०

प० अक० सेट् । स्फुर्त्तति । अस्फुर्त्तित् ।

स्फुल, (न०) स्फुल् । हिलना-बांधना+क । बरदेस चर ।

तन्व ।

स्फुलिङ्ग, (पु० स्त्री०) स्फुल्+ङ्गच् । " स्फुल् " यह पीनी

आवाज निकलती है जिससे स्फुलि+घञ् । घृ० वा । आग-

की कली ।

स्फुर्जयु, (पु०) स्फुर्ज्+अयु । बज्रपातमान् । बज्र गिरने-

की आवाज ।

स्फूर्ति, (स्त्री०) स्फुर्ज्+स्फुट् वा किन् । फुरना । विष्णु-

ना । चमकनेवाली अमित्र प्रतिभा ।

स्फूर्तिमत, (पु०) स्फूर्तिः अस्ति अस्व+मनुप् । पापुपत नामी एक प्रकारका शिवमक्ष प्रतिभावाला । कुर्तिवाला । और खिलाहुआ (त्रि०)

स्फेयस्, (त्रि०) अतिशयेन स्फिरः । ईयसु । स्फादेशः । अतिप्रचुर । बहुतही । स्त्री० में स्त्रीप् । ईष्टन् । “स्फेष्टः” यही अर्थ.

स्फोट, (पु०) स्फुटति अर्थः यस्मात् । स्फुट्+घञ् । जिस्से अर्थ फूटता (निकलता) है । अर्थको जतलानेहारा अधरोंसे पहिचानागया पूरा शब्दविशेष । ब्राह्मणविशेष । फोडा.

स्फोटक, (पु०) स्फुट्+क्वल् । मणविशेष (फोडा) । और विदारक (फाडनेहारा) फोडनेवाला.

स्फोटन, (न०) स्फुट्+न्त्यु । विदारण (फाडना) । और विकाराण (खिलाना) । मणिको वेधनकरनेका एक प्रकारका यन्त्र (स्त्री०).

स्फोटायन, (पु०) स्फोट एव अयनं यस्य । व्याकरणके जाभेहारा एक मुनि (जो शब्दके अर्थकी प्रणीतिमें “स्फोट” हीको स्वीकार कर्ता है) । “अवद् स्फोटायनस्य” इति पाणिनिः.

स्फ्य, (न०) स्फा+यत् । नि० । खड्ग (तवारंके खरूपमें एक प्रकारका यज्ञके लिये काष्ठ (लकड़ी).

स्म, (अन्व०) सि+ङ् । अतीत (पीतगया) । पादका पूरा करना.

स्मय, (पु०) सि+अच् । गर्व । अहंकार (मगरूरी) । और अद्भुत (आश्चर्य).

स्मर, (पु०) स्मरति प्रियं अनेन । स्मृ+अच् । स्मरणकर्ता है पियारको इस्से । कामदेव । “भावे अच्” याद करना.

स्मरष्ट, (न०) स्मरस्य शृङ् इव । कामदेवका मानों पर है । स्त्रीका एक प्रकारका विशेष चिन्ह । स्मरमन्दिर । योनि । कुस । मग.

स्मरण, (न०) स्मृ+स्त्युट् । एक प्रकारका ज्ञान जो जानी-हुई वस्तुके अनुभवापीन संस्कारसे उत्पन्न होता है अर्थात् उद्बोधक सहकारसे उपजा) । याद करना । सोचना.

स्मरदद्या, (स्त्री०) स्मरकृता दद्या । कामिओंकी कामदेवसे धीगई “ नयनप्रीति ” (आखका पियार आदि दसदद्या (हावत).

स्मरपहृम, (पु०) स्मरस्य वडमः । कामदेवका प्यारा । बसन्त ऋतु.

स्मरहृद, स्मरे हरति (नासायति) । हृ+अच् । कामदेवको नाश कर्ता है । महादेव “स्मरमर्दन” भी.

स्मराकुल, श्वातुर-अति-उत्पुङ्ग, (त्रि०) स्मरणे आकुलः । कामदेवसे आकुल (चषपया) हुआ.

स्मराकुला, (पु०) स्मरस्य अद्भुत इव । कामदेवका मानों अद्भुत है (उतंत्रक होनेसे) । नख (नाखून-नहँ) । जानाँ नखके आयात (फोट) से खिओंका काम भडकना है.

स्मरासच, (पु०) स्मरोदीपक आसचः । कामको भडकने-हारा मद्य) एक प्रकारका जो आगपर (नहि चडाया गया) । लाला (मुखकी लार) । कामिओंका उसके पीनेसे काम बडा चमता है.

स्मार्त, (त्रि०) स्मृतां विहितः । स्मृति वेत्ति-अपीते वा +अच् । धर्मशास्त्रमें विधान किया हुआ श्रातआदि । स्मृति तिसास्त्रके जाभे वा पढनेहारा.

स्मि अनादर-और विस्मय (हैरान होना) (पु० आ० सं० सेट्) । स्माययते । अतिस्मयत । दूसरेसे विस्मय होनेपर “स्माययति” ऐसाही होता है । यह भ्वादिमेंनी होता है और अनिद् है । स्मयते । अस्मेष्ट.

स्मित, (न०) स्मि+क्त । ईपदास्य । भोडासा हसना । विक्र-सित । खिलाहुआ । और हैरान हुआ (विस्मित) (त्रि०).

स्मृ-स्मरण, (याद करना) । भ्वा० प० सक० अनिद्.

स्मृत, (त्रि०) स्मृ+क्त । कृतस्मरण । याद किया हुआ । स्मृतिविषय.

स्मृति, (स्त्री०) स्मृ+क्तिन् । अनुभव कीहुई वस्तुका उद्बोधसहकार (उस चीजको जागदेनेहारा कारण) से संस्कारके आपीन ज्ञानविशेष । यादकारी । याददान । “स्मर्यते वेदधर्मः अनेन” करणे किन् । स्मरण किया-जाता है वेदका धर्म जिस्से । धर्मका उपदेश करनेहारा शास्त्र । वेदसम्बन्धी अर्थके अनुभवसे उत्पन्न हुआ । वेदके अर्थको अनुवाद (कहेहुए अर्थको फिर कहना किसी दूसरी भाषा में) करनेहारा मुनिओंसे रचाहुआ वाच्यरूप शास्त्र । “वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्” मनु.

स्मृतिहेतु, (पु०) स्मृतिका कारण । संस्कार । वासनारूप गुणविशेष.

स्मेर, (त्रि०) स्मि+रन् । विक्रमित । खिलाहुआ । भोडा-सा हसरहा । “महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति” कुमारः.

स्मृ, (पु०) स्मन्द+क्त । वेग । जोर.

स्मन्द, स्मवण (बहना) । भ्वा० आ० सृट् सृट्-सृम् में उभ० अक० वेट् । स्मन्दते । अस्मन्दन्+अस्मन्दित्-अस्मन्तः.

स्मन्द, (पु०) स्मन्द+घञ् । क्षरण । बहाना । चूना । बगना. स्मन्दन, (न०) स्मन्द+भावे ल्युट् । क्षरण । बहना । “कर्तृ ल्यु” । जल (पानी) न० । रष । और तिसिप्तसृष्ट (पु०).

स्मन्दनारोह, (पु०) स्मन्दनं आरोहति (युदायै) । आ+हृ+अच् । रषपर चडकर लडाई करनेहारा.

स्मन्दिन्, (त्रि०) स्मन्द+गिनि प्रयवी । बढनेवाला । लाला (लार) भीप्.

स्मन्, (त्रि०) स्मन्द+क्त । द्यत । बहाहुआ (पानी आदि).

स्मत्, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । स्ममति । अ-स्मपीय.

स्ममन्तक, (पु०) स्मम् हाव्-कट् । भीष्मकीके हावपी एक मणि (उसके बहुतही गुण से).

स्वधा, (अञ्०) स्वद्+आं+ष्ट० । "ह" को "ध" होता है । पितर-देवताओंके उद्देश (प्रयोजन) से हवि (घी-आदि) का देना । स्वेन धयति । धे+क आप् । एक दुर्ग (श्री०) "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति पितृगाथा ।

स्वधाप्रिय, (पु०) स्वधाशिनां प्रियः । शाक० । स्वधाको खानेवालोंका पियारा । कृष्णतिल (कालेतिल) । "स्वधा" इस शब्दसे उपलक्षित (पहिचानेहुए) श्राद्धआदिका पियारा पिताआदि ।

स्वधाभुञ्ज, (पु०) स्वधा इत्यनेन त्यक्तद्रव्यं भुङ्के भुञ्ज्+किप् । "स्वधा" इस शब्दसे छोटेहुए पदार्थको खाताहै । पितृगण । पितरोंका समूह । और देवता ।

स्वधिति(ती), (श्री०) । स्वेन धीयते । धा+किच् वा दीप् । कुठार । कुहवा । कुहाडा । परश्वध "स्वधितिः" ।

स्वन्, शब्द (आवाजकरना) । जु० उ० स० सेट् । स्वन्ति अस्वनीत् अस्वानीत् ।

स्वन, (त्रि०) स्वन्+अप् । शब्द (आवाज) ।

स्वनित, (त्रि०) स्वन्+कर्त्तरि क्त । शब्दित । आवाज-कियाहुआ । "भावे क्त" । शब्द । आवाज । और वाद-लका गर्जन (गर्जना) (न०) ।

स्वपन, (न०) स्वप्+न्सुद् । शयन । सोना । नींद । निद्रा ।

स्वप्न, (पु०) स्वप्+न्सुद् । नींद । सोना । सोयेहुएका मनका ज्ञानविशेष । सुप्ना ।

स्वभाव, (पु०) स्वस्य भावः । नितसर्ग । अपना धर्म । मित्राज । शील ।

स्वभावोक्ति, (श्री०) स्वभावस्य उक्तिः अत्र । स्वभावका कथन है इसमें । अर्थसम्बन्धी अलंकारविशेष । ६ त० । स्वभावका कथन (कहना) ।

स्वभू, (पु०) स्वेनैव भवति । भू+किप् । आपहीसे होता-है । ब्रह्मा । विष्णु । शिवजी । और कामदेव ।

स्वयंपर, (पु०) स्वयं (आत्मना) वरः (वरणम्) । आपही वरना । सभामें कन्याका शापही अपने पतिको करनेना । "स्वयं वृणुते पतिम्" वृ+अच् । आपही पतिको करनेवाली लडकी (श्री०) ।

स्वयंहेतु, (पु०) स्वयं (आत्मना) कृतः । आप बनाया । कृत्रिमपुत्र । बनावटी लडका । भाग किया (त्रि०) ।

स्वयंदत्त, (पु०) स्वयं (आत्मनैव) नतु पितृमानृम्यां दत्तः । वह लडका कि जिनमें अपनेको आपही दियाहै (पिता वा मातासे नहिँ दियागया) । "दत्ताप्या तु स्वयं दत्तः" इति सृष्टिः ।

स्वयम्, (अञ्०) स्व+अप्+असु । आत्मना । आपही । आप ।

स्वयम्भु, (पु०) स्वयम्+भु+सु । आपहुआ । ब्रह्मा ।

स्वत्, (अञ्०) स्व+विच् । स्वर्ग । वह स्थान कि जहाँ दुःख नहिँ । परलोक । देवताओंका निवासस्थान । और शच्छा ।

स्वर, (पु०) स्वर्+अच् । स्व+अप् वा । उदात्त (ऊँचा) अनुदात्त (मीचा) और स्वरित (मिलाहुआ) रूप अक्षरके उच्चारण करनेका यन्त्रविशेष । तन्त्रमें प्राणभा वायुका व्यापारविशेष । गानेकी आवाज ।

स्वरभङ्ग, (पु०) स्वरस्य भङ्गः यस्मात् । जिससे आवाज टुक जाती है । एकप्रकारका रोग । ६ त० । स्वरका टूटन ।

स्वरस, (पु०) मस्य रसः (रसः) । अपना अमित्रा (आशय) । अपना मतलब । वाक्यमें एकप्रकारकी रचना ।

स्वराज्, (पु०) स्वैर्नैव राजते । राज्+किप् । आपही प्रकाशित होताहै (चमकता है) । ईश्वर । "अयँवस्मिन् स्वराट्" इति भागवतम् । वेदका एक छन्द ।

स्वरापगा, (श्री०) स्वः (स्वर्गस्य) आपगा । स्वर्गकी नदी । गंगा ।

स्वरित, (पु०) स्वरः जातः अस्व+इत्त् । एक स्वर । जो उदात्त और अनुदात्तके मेलसे उत्पन्न होता है स्वरबाला (त्रि०) ।

स्वरु, (पु०) स्वरु+उ । वज्र । वृष (यज्ञका खंभा) वा टुकड़ा । तीर । सूर्यकी किरण । एकप्रकारका विच्छु ।

स्वरुचि, (त्रि०) स्वस्यैव रुचिः (प्रवर्तिका) स्वहृत्स्ये यस्य । अपने काममें जिसकी अपनीही इच्छा है । स्वातन्त्र्य । आजाद । ६ त० । अपनी अभिलाषा (इच्छा) (श्री०) ।

स्वरूप, (न०) स्वस्य रूपम् । अपना रूप । स्वभाव "स्वमेव रूपम्" । अपना पदार्थ । "स्व" यथास्वै रूपयति । रूप+अप् । यथास्वरूप (जितका जिसका जैसा स्वरूप है) जाबेहारा । पण्डित (पु०) । "स्वेन (स्वभावैर्नैव) रूपं अस्य" । जो स्वभावहीसे रूपवाला है । मनोह (मनोहर) (त्रि०) ।

स्वरूपसम्बन्ध, (पु०) स्वरूपं सम्बन्धः । स्वरूपोंका संबन्ध । न्यायमें अपना सम्बन्ध (जिसका संबंध अपनेही साथ है) । ६ पदार्थोंसे निश्चयपदार्थविशेष । जैसे नियन्त्र और प्रतियोगित्व । अपने रूपका सम्बन्ध ।

स्वरोद्भव, (पु०) स्वराणां उदयः यत्र । जहाँ स्वरों (भाग-विशेषों) से श्रुत वा अश्रुतका ज्ञान होता है । तन्त्रशास्त्रविशेष ।

स्वर्ग, (पु०) स्वरिति (गीयते) । वे+क । सु+कृ+पन् वा । दुःखमें न मिलाहुआ सुनसमूह । देवताओंका निवासस्थान । बड़े सुखकी जगह ।

स्वर्गनाथ, (पु०) ६ त० । स्वर्गका स्वामी । इन्द्र । "स्वयंपति" श्री ।

स्वर्गयधू, (श्री०) ६ त० । स्वर्गकी श्री । आपत ।

स्वर्गाच्छल, (पु०) स्वर्गोत्थश्च आपतः । स्वर्गोत्थका पहाड । सुयेंदरवत ।

सागिन, (पु०) स्वर्ग अस्ति अथ्य भोगत्वेन+इति: । स्वर्ग
जिसका भोगनेलायक है । देवता । स्वर्गवासी (वि०) ।

सागोक्त, (पु०) स्वर्ग जोको यत्न । स्वर्ग है स्थान
जिसका । देवता ।

सागो, (न०) सुगु अर्ण (वर्ण) यत्न । जिसका अच्छा रंग
है । कांचन । गोसा । धरता । नामवेगर । चिहैरंगका घात ।

सागोकार, (पु०) स्वर्ण इव (पीतः) कायः अस्य ।
सोपेकी नई जिसका पीला रंगीर है । गच्छ ।

सागोकार, (पु०) स्वर्ण (स्वर्णमयं अलंकारादि) करोति ।
छुनअर्थ । सोपेका भूय-जेवर-गहना आदि बनाया है ।
मुनार । एक जाती ।

सागोदी, (स्त्री०) ६ त० । स्वर्गकी नदी । गंगा ।

सागोनु, (पु०) स्व (स्वर्ग) भानुः । (वीरिः) अस्य ।
स्वर्गमें है अमक इराकी । राहु ।

सागोळ, (पु०) स्व एव लोकाः (भुवनम्) । स्वर्गलोक ।
स्वर्ग । बहिरत । ६ त० । स्वर्गका लोक ।

सागोपी, (स्त्री०) स्व (स्वर्गस्य) वारीव । स्वर्गकी मानो
वारीवी है । गंगा ।

सागोदया, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) वेद्या । स्वर्गकी
कंत्री । मेनका आदि अपारा ।

सागु, (वि०) सुगु अल्पम् । प्रा० । बहुत थोडा । सुगु । छोटा ।

सागुसिनी, (स्त्री०) सास्त्रम् (पित्रालये) वसति । वगु+
सिनि । सिलाके परमें रहती है । खिरबालक पिताके परमें
रहनेवासी स्त्री (काहे विसाहीदुई हो अपका पुयाही हो) ।

सागु, (स्त्री०) सु+अवु+कन् । सविनी । बहिन

सासुति, (स्त्री०) सु+अवु+सिन् । क्षेम । आशुति ।
कल्याण । और पुण्यआदि भीकाराचन (अंगीकाराचन) ।

सासुतिक, (पु० न०) सासि (ह्यभाव) हिन+उत् ।
कल्याणदेनेवाला । एकप्रकारका घर । एकप्रकारका अगम
(बेंटा) । एकप्रकारका इत्य ।

सासुतियाचन, (न०) सासि (ह्यभाव) विप्रश्रात वाचनम् ।
ब्राह्मणके द्वारा मंगलवाट करना । वाचके प्रारम्भमें विप्र
(वराहट) की सासुतिकके विधि ब्राह्मणशास्त्रा करनेलायक
वाचोका करवाण कहाना । मंगलवाट करना

सासुतियाचनिक, (वि०) सासिवाचनार्थ हिनं (तत्र
आगतं तत्र भाव वा+उत् । मंगलवाटका साचन । मंगलवाट
करनेके ब्राह्मणका पुत्र पदार्थ (सगु देण करि) डसका ।

सासुतियन, (न०) सासि (ह्यभाव) अवनं (अभा)
वसाह । ह्य (अन्ते) वा काल होय है जिसके ।
ह्यके विधि विनायका बेदरिमें बह्राह्मण करवाय करि ।

सासुत, (वि०) स्व (परलोके) सिद्धि, स्वर्ग (लभने-
मुनेन वा सिद्धि) । स्वर्गमें रहनेवाला । लभनेमें राहुका ।
मुन (लक्ष्मणके पिता) से सिद्धका । "सासुत अन्त
मदि जीवति धर्मात्" ब००० । सासुत

सासुतीय, (पु०) स्वगु अवनं (ईव) । बहिनका बेटा ।
भगिनेव । भगिनीमुन । बहिनकी लहरी (स्त्री०) ।

सासुगत, (न०) सुनेन सागमम् । सु+आ+अन्+उत् । सुगने
आना । भलेआना । "तद् अथ्य अग्नि-अवु" सुगने ।

सासुतिनी, (पु० स्त्री०) स्वर्गमें अगति । बहिनके
पदार्थका ठाण । मूर्खकी एक स्त्री ।

सासु, (स्त्री०) प्रयच्छेना । सासुदेना । और बहना ।
सासुते । असासुति ।

सासु, (पु०) सासु+उत् । सासुत । सासुत । सासुत ।
सासुदेना । प्रयच्छेना । और बहना ।

सासु, (पु०) सासु+उत् । मीत्र एव । और पुत्र । इव
(अभा-भावा) । मीत्र । और कनैर (वि०) । विप
वा दीव ।

सासुपीन, (वि०) स्वयं असीन । सासुत । सासुत ।
सासुत । अरने सासुपीन

सासुपीनपतिता, (स्त्री०) सासुपीन एति स्वयं+उत् ।
जिसका पति सासुपीन है । एकप्रकारकी बहिन (स्त्री०) ।
"सासुपीनमर्ग" (सिंगण पति कर्में है) ।

सासुत, (न०) सासु+उत् । स्व (वि०) । सासुत (कान) ।

सासुत, (पु०) सासु+उत् । लोकाः सिद्धि । और सासुत ।

सासुतये, (न०) सासु (चान्त) एति । सासुतं इत् ।
पतके सासुतीका बहु । पत । ईक

सासुतयिक, (वि०) सासुत इव सासुतं इव (इव) ।
लभनेके आदा । लभनेके इव । लभनेके लभनेके ।
"सासुतं दीव" सासुतं दीव ।

सासुति, (वि०) सासुतं गत्वे सिद्धे सिद्धे । पत
काला । अरने सासुत । सासुतं । सासुतं । सासुतं ।
स्त्रीमें दीव । सासुतं । सासुतं । सासुतं । सासुतं ।
दसमुनि । सासुतं । सासुतं (पु०)

सासुतमुय, (पु०) सासुतं मुय इव । सासुतं इव ।
उत् । सासुतं मुय इव । सासुतं इव । सासुतं इव ।
दीव । सासुतं इव । सासुतं इव । सासुतं इव ।
"अथ सासुतं इव" सुगने ।

सासुत, (पु०) सा (लोके) राते । सासुतं इव ।
स्वर्गमें रहनेवाला है (बहनेका है) । इव (बहनेके
उत्) ।

सासुतय, (न०) सासुतं इव इव । सासुतं इव ।
इव । सासुतं इव । इव ।

सासुतविक, (पु०) सिद्धे इव । सुगने इव ।
सिद्धे इव इव इव इव ।

सासुत, (पु०) सासुतं इव । सासुतं इव ।
सासुतं इव । सासुतं इव । सासुतं इव ।
सासुतं इव । सासुतं इव । सासुतं इव । सासुतं इव ।

स्वाधिक, (वि०) स्वार्थे विहित+ङ् (इङ्) । व्याकर-
णमें कहाहुआ स्वार्थ (धनना अर्थ) में विधान किया-
हुआ प्रत्यय ।

स्वास्थ्य, (म०) स्वास्थ्य भाव+भ्यम् । आरोग्य ।
आराम । सन्तोष (प्रसन्नता) । और मुख ।

स्वाहा, (भव०) सु+आ+ङ्+वा+ति । देवताके उद्देश
(प्रयोजन) से इति (पीआरि) का स्वागता (छोडना) ।
अग्निदेवताकी स्त्री "स्वाहायै इविभुंजम्" इति श्रुः । और
एक दुर्गा (स्त्री०) । "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति
विष्णुस्मृति ।

स्वाहामिय, (पु०) ६ त० । स्वाहाका प्रियारा । अग्नि ।
भाग ।

स्वाहामुज्ज, (पु०) "स्वाहा" इति मन्त्रेण स्वस्वरभ्यं मुञ्जे ।
मुञ्ज+क्तिर् । "स्वाहा" इय मन्त्रसे छोडेगये पदार्थको
जाता है । देव । देवता ।

स्विद्, (भव०) स्विद्+क्तिर् । प्रथ (गवाल) । पारशुराम ।

स्विन्न, (वि०) स्विन्+ङ् । परमयुक्त । पसीनेवाला ।

स्वीकार, (पु०) अगस्त मालकारः (करणं) । स्व+क्ति+
ङ्+पम् । न धरनेको धरना करना । अंगीकार । मान्य ।
कबूलकरना ।

स्वीय, (वि०) स्वय इत् (ईय) । ६ त० । स्वगन्धर्वी ।
अरुण । एकप्रकारकी नदिवा (स्त्री०) ।

स्वय, स्व (अर्थन करना) । अङ्० भ्या० प० वेद ।
स्वपि । अस्वरीय-अस्वरीय ।

स्वेच्छा, (स्त्री०) स्वय इच्छा । अपनी अभिलाषा (चाह) ।

स्वेच्छामृत्यु, (पु०) स्वेच्छया मृत्युः स्वय । अपनी
इच्छाने शिखरी मृत है । मीन्य । अपनी इच्छाने
मरणका (वि०) ।

स्वेद, (पु०) सेद्विद् वा दम् । घर्षे । पसीना । गर्मी ।

स्वेदज, (पु०) सेद्विद्वान्ते । पसीनेसे उत्पन्न है ।
बनती मक्खीआरि । पसीनेसे हुआ (वि०) ।

स्वेदनी, (स्त्री०) अग्निने (पचने) अन्नका । निद्+
न्वृद् । सेदेका पत्र । टमा । बटागी । मूलेका पात्र
(टमाकनी) ।

स्वेद, (व०) स्वय ईत् । ईद्व+अन्+ईद्व । अपनी इच्छा ।
टमाक (वि०) ।

स्वेदित्, (वि०) सेदेत् ईद्विद्वं स्त्रीके अन्व । ईद्व+क्ति
इत् । सेद्विद्वान्ते । अरुण इच्छाने शिखरीके म-
न्त्र । अङ्कद्वयस्वेदित् (स्वस्वय) ईद्वत् । (स्त्री०) ।

स्वेदित्, (वि०) सेद्विद्वान्ते । अन्व अन्वये शिखरी ।
अन्व अन्वयका स्व अन्व ।

स्वेदित्, (व०) स्व अन्व । ईद्व+अन्+ईद्व (स्त्री) ।
स्वयत् । (वद स्वस्वय को स्वय होवेकाल है) ।

ह

ह, (अन्व०) हा+ङ् । पादको पूरा करनेके लिये । सन्तोषन
(सुखना) । और प्रसिद्ध (मशहूर) । विष्णी । जड ।
शय्य । मंगल (पु०) ।

हंस, (पु०) हन्+अच् । पु० । इस नामका एक पक्षी
(परिदा) । यह राजा जिसके शरीरपर कोईभी रोग
नहीं । विष्णु । सूर्य । परमात्मा "हंसं तनो सतिदिनं
चरन्तम्" नैपथम् । मत्सर (दारोका छाम देना न सकना) ।
एकप्रकारका मति (सन्यासी) । एकप्रकारका मन्त्र ।
एकप्रकारकी शरीरमें वायुकी चेष्टा (हकेंउठिना) ।
एकप्रकारका घोडा । सुमेरु पर्वत (पहाड) । सिन्धी ।
श्रेष्ठ । बहुतुष्ट । अन्नरामकके अक्षर । "हंस" से
बाहिर जाता और "सकार" से फिर प्रवेश करता है ।
"हंस" यह मन्त्र जीव निरन्तर जना रहता है ।

हंसक, (पु०) हंस इत् कायति (शय्यायते) । वे+ङ् ।
हंसकी नाई शय्य कर्ता है । पारकट्ट (पीना का
पजेव) । मूपुर (शास्त्र) । कठिर्जा ।

हंसगामिनी, (स्त्री०) हंस इत् (यत्) गच्छति । गम्+
गिति । हंसकी नाई कोमल आती है । पीरे २ भउनेरणी
स्त्री । "हंसेन गच्छति" हंसके साथ (उभार वाहर)
आती है+गिति । बीर् । ब्रह्मणी । एक शक्ति ।

हंसनादिनी, (स्त्री०) हंसके समान शय्य करी है ।
हामीकी गति (बाल) । तृती (मन्त्रमंगलानी) ।
कोइली मति आलाप (बीजना), और निम्न
(गुण) भारी (सुविणी) इय प्रकारसे लक्षणकी
(स्त्री०) ।

हंसमाता, (स्त्री०) ६ त० । पंक्ति (बजार) के लगाने
दियन होइका हामीका ममूर । हंसकी बजार ।

हंसयुवन्, (पु०) हंस युवा । अन्न हंस । छोटा हंस

हंसरथ, (पु०) हंस रथ (चारुन रथ) । हंस शिखरी
रथ (गारी) है । चतुर्भुज (चारभुजाका) ब्रह्मा ।
"हंसरथ" आरिणी ।

हंसराज, (पु०) हंसानी राजा+ङ् । हंसोंका राजा ।

हंसकट, (पु०) हंस काष्ठ । का+ङ्+ङ् । हंस
काष्ठका । ब्रह्मा । उभरी शक्ति । ब्रह्मणी (स्त्री०)

हंसी, (स्त्री०) हंसका स्त्री । स्त्री । हंसकी स्त्री । स्त्री
अन्वये चरनाका स्त्रीकेर ।

हंसो, (भव०) हंस+ङ् । सन्तोषन (पुष्पका) ।
अन्वये । प्रत् (लक्षण)

हंसो, (भव०) हंस+ङ् । सन्तोषन (पुष्पका) ।
(वेदिका कास्वयन)

हंस, (व०) स्व अन्व । ईद्व+अन्+ईद्व । हंस ।
स्वयत् । (वद स्वस्वय को स्वय होवेकाल है)

दृष्ट, (पु०) दृष्ट् । अर्थविक्रयस्थान (मोलखेने और पचनेकी जगह) । "प्रतिदृष्टपये पराज्जात्" इति नैपथम् ।
 दृष्टचौरक, (पु०) दृष्टे (प्रवाधिके स्थाने) एव चौरः ।
 स्वर्षे क्त् । पुरी जगदपर चोरीकरनेवाला । दृष्टका चोर ।
 दृष्ट, (पु०) दृष्ट्+अच् । बलात्कार । ओरकरना । जोरबरी ।
 दृष्टयोग, (पु०) दृष्टत्कारेण योगः । दृष्टकरके परमात्माके साथ जुड़ना । प्राणायाम (प्राणोक्त रोडना) आदि क्रियाके अन्त्यासने उत्पन्न हुआ राजयोगके बिनाही परमात्माका साक्षात्काररूप वितर्की वृत्तिका रोडना ।
 दृष्ट, (न०) दृष्ट्+उ । दृ० । अस्थि । दृष्टी (हाउ-दृष्ट) । क्त् । एक भाति ।
 दृष्टा, (धी०) दृष्ट्+अ । बडा मटोका पात्र (बर्तन) ।
 दृष्टी । "दृष्टे" नाटकमें नीचका सम्बोधन (नीचको बुलाना) ।
 दृष्ट, (त्रि०) दृष्ट्+क । नाडित । नाराहुआ । प्रविष्ट । भागमया । बांधाहुआ । आधासे रहित । और गुणाहुआ । "भावे क्" । मारना । और गुणना (न०) ।
 दृष्टक, (त्रि०) दृष्ट इव (नट्यायत्ताव) क्त् । मानों मराहुआ है । दृष्टाहुआ । गयागुजरा ।
 दृष्टसाध्यस्त, (त्रि०) दृष्टः साध्यस्तः यस्य । दृष्ट होगया है मय जिगका । निर्भय । भयसे रहित । निडर ।
 दृष्टासा, (त्रि०) दृष्टा आसा यस्व । जिसकी आसा जाती रही । आसाशय्य । दयारहित । और निगुन (पुगलखोर) ।
 दृष्टि, (धी०) दृष्ट्+णिच् । हनन (मारना) । और गुणना ।
 दृष्ट्या, (त्री०) दृष्ट्+क्वप् । मारना (बध) । प्राणविधो-
 गालुबुद्ध्यापर (प्राणोत्ते विद्योदनेका काम) । फिरीही प्राणोत्ते जुदाकरना । "ब्रह्महत्या मृत्युपन्नं" स्पृति..
 दृष्ट्, (विश्लेषार्थं) मलजोडना (हणना) । भ्वा० आ० ।
 दृष्टे । अहरिष्ट ।
 दृष्ट्, बध (मारना) । गति (जाना) अदा० पर० स० अविद् । हन्ति । अर्थात् । "दुष्टं हन्ति शुशोदीर्" इत्यादिमें अर्थवारणाप्रके जाभेहारे । "गति" अर्थमें जानते हैं (इसीको निरुत्तार्यता-अश्वली अर्थका दृष्टना चरते हैं) ।
 दृष्ट्(नृ)मत्, (पु०) दृष्ट् (नृ)+अधि अर्थे मत्पु ।
 टोरीवाल । रामचन्द्रजीका अनुचर (सेवक) । अज्ञाके गर्भसे उत्पन्नहुआ वायु (इवा) का पुत्र । एक विशेष वातर ।
 दृष्ट, (अध०) दृष्ट्+अ । दृष्टे (सुदी) । दवा । विषाद (मनका दृष्टना) । आर्ति (पीडा) । फिरी वाक्यका आरम्भ । सेद् ।
 दृष्टकार, (पु०) दृष्ट (दृष्टस्य) कारः (करणम्) ।
 "दृष्ट" इत्यस्य कारः (उच्चारणम्) वा । दृ+णम् ।
 सुशीका करना । वा "दृष्ट" (सुशी) इव शब्दका उच्चारण करना । अधिविरो देनेलायक अक्ष । (दंठो) ।
 और दृष्टसाध्यका प्रयोग ।

दृष्ट्, (त्रि०) दृष्ट्+वृच् । हननकर्ता । मारनेवाला । जिसका बनाव दृष्टके मारनेका परगया है । शीमें दीप् । हृष्टी ।
 दृष्ट, (त्रि०) दृष्ट्+क । जिसने मलसाग किया है । कृत-
 पुरीयोत्तानं ।
 दृष्ट्मा(म्मा), (त्री०) दृष्ट्+भा । दृष्ट्+भृद् वा । गौमौकी ध्वनि (आवाज) । दृ० । "दृष्ट्मा" मी ।
 दृष्ट्, गति (जाना) । दृ० अक० भ्वा० प० सेद् । हन्ति ।
 अदृष्टीत् ।
 दृष्ट्, (पु०) दृष्ट्-दिवा अच् । घोटक । घोडा ।
 दृष्ट्मीय, (पु०) दृष्टस्य इव दीर्घां मीना अस्व । जोडेही नाई जिसकी लंबी गर्दन है । निगुना एक श्वतार । और एक दैव । "दृष्ट्मीयधोपेतं तद्भै भागवतं विदुः" इति पुराणम् । दुर्गा (त्री०) ।
 दृष्ट्, (पु०) दृष्ट्+अच् । दृ । अधि (आग) । गर्भम् (गया) । और विभाजक (बाँटनेवाला) । दृष्ट्+भाये अच् । इरण (हेजाना) । और विभाजन (बाँटना) ।
 दृष्ट्ण, (न०) दृष्ट्+भाये ल्युट् । स्थानान्तरकरण । दुर्गा जगद्वर सेजाना । और विभाजन (बाँटना) । "कर्मणि ल्युट्" शीतकारि (राज-दृष्टे) में देनेलायक घन ।
 दृष्ट्गौरी, (त्री०) दृष्टदेहादृष्ट गौरी । महादेवके अर्थे देहकी ऐनेहारी पार्वती । अर्धनारीधररूप शिवजी और पार्वतीका मूर्तिविशेष । दृष्ट्० । शिवपार्वती । द्वि० ब० ।
 दृष्टेजस्त, (न०) दृष्टे । महादेवका सेज । पारद (पार) और शिवजीका धीर्ष । "दृष्टेज" अर्थात् इती अर्थमें ।
 दृष्टोत्तर, (धी०) दृष्टस्य सेपरे आक्रमणेन अग्नि अस्याः+अच् । महादेवका विर जिसका विनाशस्थान है । गंगा ।
 दृष्टि, (पु०) दृष्ट् । निगु । गिर (टेर) । सर्ग (सोर) । वातर (बंदर) । मेक (मैटक-दृष्ट) । कन्द (बाँद) । सुर्षे । वायु (इवा) । लभ (घोडा) । दन्-
 राज । महादेव । दृष्टा । दृष्टा । विरय । जी सर्वेदेवे एक । मत्तू (मोर) । कोष्ठिक (कोदल) । इव । दृष्ट (तोता) । मर्दृष्टिनमक वाक्यपटीयकारि प्रवर्षा बननेवाला पवित्र । दृष्ट् । पीड (पीडा) । और इण रंग । उषवाला (त्रि०) । "दृष्टि विरिन्व दृष्टिभ्य कश्चिभिः" इति श्यु ।
 दृष्टिकेना, (पु०) दृष्टः (विप्लवः) केना अस्व । सीडे केमोमाला । विर । विरय मय एक दृष्ट (दृष्टदृष्टका देवता) ।
 दृष्टिचन्द्रन, (न०) दृष्टे (स्वप्न) त्रिं चन्द्रम् ।
 इन्द्रका चित्ता चन्द्रन । देवताकी एक दृष्ट । निगुना चित्ता चंद्रन । चोटीपैतवट अजडे एरदरेमें टपक हुआ शैदर्शनेय । केशर ।

हरिण, (पु०) हृन्मदन । इस नामका पशु । हिरन । वि० । विष्णु । हंस । विश्व रंग । उग्रकाल (वि०) ।

हरिणहृदय, (पु०) हरिणस्य हृदय मीतं हृदयं धरा । जिसका हृदय हिरनकी नाईं भरता है । भीरु । दरपोक । डरने-वाला ।

हरिणार्क्षी, (श्री०) हरिणस्य हृदय आशिषी यस्याः भयं समानार्थः । जिसके नेत्र हिरनके समान हैं ऐसी स्त्री । हरिणके समान नेशोंवाली (वि०) । इन्द्रविलिनी नाम गंधवाला इव ।

हरिणाङ्ग, (पु०) हरिणः (शशनामकः मृगः) अङ्गः (वि०) अङ्ग्रे (जोड़े) वा यस्य । शशनामी हरिणके चिह्नवा-ला । वा जिसकी गोदमें हरिण है । चन्द्र (चांद) । चन्द्रमा ।

हरित, (पु०) हृन्मति । नीला और पीला रंग मिला हुआ । और पत्तोंका रंग उग्रकाल (वि०) सूर्यका भोज । मृग । शेर (सिंह) सूर्य । और विष्णु (पु०) ।

हरिताल, (न०) हरिचर्म (पीतवर्णस्य) तालः (प्रविष्टा) यत्र । जहाँ हरेरंगके प्रविष्टा है । पीले रंगका एक प्रकारका उग्रकाल । हरिताल ।

हरिताण्डिका, (श्री०) हरेः शालः (हृन्मत्तः) यस्याः रूपः । मरुके पुत्रवशी मृगीया ।

हरिहार, (न०) हरेः (तत्राभिः) द्वारं (शेरनाम्) । हरिके किलबेका दरवाजा (सेवा करनेके) इस नामका तीर्थ ।

हरिनामन्, (न०) हरेर्नामं तद्व्यक्तये वा । हरिका नाम । वा उगदी प्रविष्टि । "हरिकी नाईं जिसका नाम है" मृग (पु०) ।

हरिनेत्र, (न०) हरेः नेत्र इव । मनों हरिकी आंख है । नेत्रस्य । विश्व समस्तक । ९ त० । विष्णुकी आंख । शेरकी नाईं जिसका नेत्र है (लंका हनेने) । वेचक (उ०) (पु०) ।

हरिणमणि, (पु०) हरिणस्य मणिः । हरे रंगकी मणि । मरुकरुचि ।

हरिणस्य, (वि०) हरे (विष्णो) मणः । विष्णुके मण्ड (बुद्धके देवके मण्डलका प्रेमचन्द्रेण) । विष्णुकी मणि करनेवाला । " एव हनेने हरेकी मणि मण्डलकर विष्णुकी मणि का है जिसका हरेकी मणिमें क्या हरेनेवाला " । ९ त० । हरेके मण्डलके हरेका मण्डल करनेवाला (पु०) ।

हरिणस्य, (पु०) हरे (मने) मणि । मृग+हरि । मण्ड- ९ त० । मण्डल ।

हरिणस्य, (पु०) हरे (मने) मणि । मृग+हरि । मण्ड- ९ त० । मण्डल ।

हरिणस्य, (पु०) हरे (मने) मणि । मृग+हरि । मण्ड- ९ त० । मण्डल ।

हरिचासुर, (न०) हरिप्रिये वासुरे । हरिका पिताका एकदशीका दिन । और द्वादशीका पहिला पाद (दि-

हरिचाहन, (न०) हरिं वाहयति (स्थानान्तरे नय- यद्+गिच्+स्यु । हरिकी दूसरे स्थानपर ले जाता है) । सवारी । गहड । ९ त० ।

हरिवीज, (न०) हरेः बीजं (उत्पत्तिधारणत्वेन) अस्य+अच् । हरिके बीजके उत्पन्नहुआ । हरिताल- ताक । "हरितालं हरेर्बीजं लक्ष्म्या बीजं मन-सिञ्ज" वैशम्प ।

हरिशापन, (न०) हरेः शयनं (निद्रा) । विष्णुकी न- हरेः शयनं यत्र तदुपलक्षित- कातः । वह समय कि- हरि योगनिद्रामें सोते हैं । आश्वत्थी पुत्रद्वाराकीले कार्तिकेशुद्र द्वादशीतक चार महिनोका समय ।

हरिचन्द्र, (पु०) हरिः चन्द्र इव (ऋषिअर्थमें मृद्- है) । हरि मनों चन्द्रमा है । सूर्यवामें पितृकुण्ड पु- एक रात्रा (ऋषिके भिन्न अर्थमें मृद्- नहीं होता) । चन्द्र ।

हरिसंकीर्तन, (न०) हरेः (हरिनाम्) संकीर्तनं (क- नम्) । श्रीविष्णुका नाम उच्चारण करना । हरिनाम के " सकेले निष्कले राजन् हरिमोर्तिन विना " पुताम ।

हरिहय, (पु०) हरिकण- हयः यस्य । जिसका घोडा हरे रंगका है । इन्द्र । "हरिं सिञ्जति हरिभिर्वा बर्जिभि- रसु- ।

हरिहर, (पु०) हरिवृको हरः । एकप्रकारकी मूर्ति । जिसका एक आधा हरि और दूसरा आधा हर है । वि० । विष्णु- नारायण ।

हरिहरक्षेत्र, (न०) हरिहरयोः त्रिषु क्षेत्रम् । हरि और हरका पिताका स्थान । वह स्थान कि जहाँ वेला और लक्ष्मी कीका योगम होता है । पञ्चविषुव (पटना)के उत्तरके ओर एक तीर्थ ।

हरिहरी, (श्री०) हरि (पीतवर्णं केशुण्ड इवा (प्रजा- द्वा+क । मंगलाका कर्तृशेष । इस नामका एक पुत्र (शिव- का कर्तृ पीला होता है) । हरिहरीका मत " कर्णविरु- म- पिता मया नोदरथा हरिहरी " वेदाङ्ग ।

हरि, (वि०) हरेण । पुत्रवैशाखा मंग । श्री मूर्ति (पु०) ।

हरि, (न०) हरेण+सुप्र । यनिमोका हरेणिये (हरे- प्रवर्णका वा) । मङ्गल ।

हरि, (पु०) हरि (विष्णु) अथ मन्मथ- मन्मथ । श्रीके आश्रयवा । वि० (वि०) । श्री कृते ।

हरि, (पु०) हरेण- अथ अथ । जिसका नाम हरे- रंगका है । इन्द्र ।

हरि, (पु०) हरेण- अथ । श्रीके श्री कर्णके कर्णेन- ९ त० ।

हर्षणा, (पु०) हर्षणी (अनीकान्तर) । हर्षणित्+पु० ।
घृणी देना है (अदीर्घं दगुधे देनेने) । विष्णुमन्त्र-
में श्रीर्षा योग । हर्षणवेदाय (वि०) । "हर्षणमुद्र"
हर्ष (म०) ।

हर्षमाण, (पु०) हर्षमाण्णीये धारण । एक धारणा
देवता । हर्षणित (त्रिगुणा विग प्रणय है) (वि०) ।

हर्षिणी, (स्त्री०) हर्षणित्+णिनि-बीपु । त्रिगुणा (सुधी-
देनेदायी) । अंग । हर्षणारक (सुधीदेनेदाय) (वि०) ।

हर्षित, (वि०) हर्षः जगः शम्भुः इत्यत्र । जगत्तर । जग-
दुभा ।

हर्ष, विवेक (संयम) आ० १० । पद० ३६ । हर्षः ।
अदायीपु ।

हर्ष, (म०) हर्षणे (हर्षणे) अनेग । हर्षणपदं अर्षयं
इ । पत्रक । हर्ष ।

हर्षाघर, (पु०) हर्षं घाति (आयुधवेन) धूम्रग ।
हर्षो वायुमन्त्रे धरण करो है । बहाम । हर्षण
(गेनीववेदाय) । विगाय (वि०)

हर्षभूमि, (स्त्री०) हर्षेन (हर्षणया) भूमि । हर्ष का
कर विद्युद्दे जीरिवा ।

हर्षा, (स्त्री०) हेति तीयते । जगत्सिधेयं शमीवा शो
धन । शमा (शोणी) । श्रुतिर्वा । श्री जल (पानी)

हर्षायुध, (पु०) हर्षेन वायुध्वनि । आ० गुण० ४ । हर्षा
जगई बरणा है । पत्रकेव ।

हर्षाहर्ष, (पु०) हर्षेन हर्ष आहर्षति (विविधति) ।
हर्षके सामान संघना है । आ० हर्षण० ४ । एवप्रकारका
तिर (अतिर)

हर्षित, (पु०) हर्ष अति शाल आयुध वेनहर्षि । त्रि
गुणा हर्ष शक है । बहाम । हर्षण (विगाय) (वि०)

हर्ष्य, (वि०) हर्ष (हर्षवर्ण) अर्षति । लक्ष हर्ष का
दर । हर्षो विबन्धुना शोणजर्षि । श्री हर्षण । "हर्षो
शमूद्र" वर (स्त्री०)

हर्ष, (पु०) हर्षण । हर्षण । हर्षण । हर्षण । हर्षण ।
(हर्षण) । हर्षण । श्री शालन (मुद्रक) ।

हर्षण, (म०) हर्षणुद । हर्षण । हर्षण । हर्षण । हर्षण ।
अन्तरांतर बर्षि (अत) श्री श्री अर्षिकः ५०००

हर्षणी, (स्त्री०) हर्षणे अन्ता । हर्षणुः । श्री शालन
है हर्षणे । हर्षणः हर्षण

हर्षनीय, (वि०) हर्षणीय करोत्यु । हर्षणा वरार्थ
हर्षिणाथ, (म०) हर्षण । हर्षण । हर्षण । हर्षण । हर्षण ।
हर्षण ।

हर्षित, (म०) हर्षणे । हर्षणति अन्त । हर्षणित्+पु०
है (श्री) । हर्षणवेदक २६ । १० वरक

हर्ष, (म०) हर्षणति वरु । हर्षणव शक ५०००

हर्षणारक, (पु०) हर्षणं करोत्यु । हर्षण
शकं पण हर्षणे वरार्थे वरुणा है ।

हर्षण-राग, (रागा) आ० १० । म० ३६ ।
हर्ष । (हर्ष वेदतर हर्षणकति वरार्थे)

ह (हा) षण, (पु०) हर्षणं करोत्यु । हर्षण
मुद्रक विद्युत् (विद्युत्) ।

हर्षण, (म०) हर्षणुद । हर्षणित्+पु० ।
अर्षिक विगाय (विगाय) । हर्षण । हर्षण

हर्षणी, (स्त्री०) हर्षणा शीत । अर्षण शीत
हर्षणैव (वि०) । श्रुतिर्वा

हर्षण, (म०) हर्षणवे क । हर्षण । हर्षण ।
श । श्री हर्षण है । विगायक ।

हर्षण, (पु०) हर्षणुद । हर्षणित्+पु० ।
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणामरक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
पुत्रक वरार्थे क । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (पु०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (पु०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (पु०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हर्षणिक, (म०) हर्षणित्+पु० । हर्षण
हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० । हर्षणित्+पु० ।

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+स्यु-नि० । मोहि । धान । (भावे) जहाति । बरसर (बरिस) । आगकी लट (ली०) ।

हार, (पु०) ह+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तारि+घञ्" । बौटनेहार । भाजक ।

हारक, (पु०) ह+शुभ्र् । चोर- धूर्त् । सचय । भाजक अंक । सुरानेशार (त्रि०) ।

हारपत्नी, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नार्द कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शङ्कारहारपत्नी" इति गंगास्तव । पुरपोत्तमका बनायाहुवा एक कोप ।

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्ता+अण् । कदम्ब (कदम्ब) का द्रव्य, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हरीचै रंगाहुआ (त्रि०) ।

हारिन्, (त्रि०) हारः असि अस्+इनि । ह+णिनि वा । हारक (सुरानेशार) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर) ।

हारीत, (पु०) ह+निच्-दत्त् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनाने- हारा । एक पत्नी (मैना) । और कितव (धूर्त्तचर) ।

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । भेद (पियार) । प्रेम । "हरि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा जागामया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०) ।

हार्य, (पु०) हियतेऽणौ । ह+भ्यच् । विगीतक पृथ (बहेज) हारीय (ऐत्रानेलायक) (त्रि०) ।

हाल, (पु०) हलः भस्मि अस्+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल ।

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नया) । तातरसदी । पाराव ।

हालाहल, (पु० न०) हालेन हलति । हल्+अण् । एक- प्रकारका विष (जहिर) । एक बीजा । मर्च (स्त्री०) टीन् ।

हालिक, (त्रि०) हलेन सनति (हलमे खोदता है) । हलदर्दह (हलमेबनेहार) । किमान । "हला प्रहरणं अस्मि" हल त्रिषका चय है । हलमे हृदयनेहार । "हलम्य इन् वा टक्-उच्" हलका ।

हाय, (पु०) हे+घञ् । त्रि० । आकृन् (बुलाना) । त्रिषो- की शङ्कारावले उपकी शेष ।

हास्तिक, (न०) हस्तिना मूह+उण् । हविषोंका मूह ।

हास्तिन, (न०) हस्तिना (वृषेण) सिद्धिं नगरे (अण्) । हस्तिनगरे बनायेका । (हस्तिनपुर) त्रिषो ।

हास्य, (न०) हस+भ्यच् । हसना । अनेकार्थक मर्मविषय ।

हाहाकार, (पु०) हा हा हास्य कर्तः । ह+उण् । हाहा- कर्त । पुनः (हाहा) का कर्त्त । हाहा ही भावार्थ ।

हा, बला और लज्जा । अ० वा० म० अण् । सिद्धि । सिद्धि । अर्द्धेत् ।

हा, (अव्य०) हा-हि वा+ङि । हेतु (सबब) । अवधारण- (निश्चय) विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (कयो- कि) । शोक । श्लोका पूराकरना ।

हांसक, (पु०) हांस+ग्वुल् । व्याघ्र (भेड़िया) आदि हांसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हांसकरने- हार (त्रि०) ।

हासा, (स्त्री०) हांस+अ । घष (मारना) । पातन (कतल- करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिका काम ।

हास्य, (त्रि०) हास्य+र । हासाशील । मारनेवाला । घोर (टरायना) ।

हास्य, शम्भकरना । मूकना । भा० उ० अ० सेद् । हिङ्- ति से ।

हास्य, हासा (मारना) । जु० वा० स० सेद् । हिङ्गते । अञ्जिह्वकत ।

हासा, (स्त्री०) हास्य+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी) ।

हास्य, (न०) हिंसं गच्छति । गम्+उ । नि । हीद् । राम- देशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होता है) ।

हास्य, गति (जाना) । धूमना । भा० आ० स० सेद् । शिव् । हिण्टते ।

हास्यम्य, (पु०) एक राशय (बहू गीमसेनेने मारागया) । म्या । उस राशयकी भगिनी (बहिन) (त्रिषो टाप्) ।

हास्य, (त्रि०) हा+क । हांसक वा । गत (बीतगया) । पश्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई) ।

हास्यकारिन्, (त्रि०) हांसं करोति । कृ+णिनि । हांस- कारक । भलाईकरनेहार । हितकरनेहार ।

हास्यपिन्, (त्रि०) हांसं इच्छति । इप्+णिनि । हांसकी इच्छा (चाह) करनेहार । हितेच्छाकारी ।

हास्योपदेश, (पु०) हास्य उपदेशः । मलादेश उपदेश । हितके किये उपदेश । विष्णुनामोंका रत्नाहुआ गीतिविषय- की प्रतिपादनकरनेहार प्रथ ।

हास्योल, (पु०) हांस्यो+अण् । पु० । शोचन । हलना । आनन (आननमहीना) के सुहास्यमें विधान कियाहुआ अन्वये भगवन्का सुधानाएव एकप्रकारका जगण । एक रासका नाम ।

हास्य, (न०) हांस्यत् । आकाशमे गिराहुआ पानीका बल (कतर) । हीनपणन (हसा हुआ) । उपायका (त्रि०) । छोटी इच्छा । मायामोषा (स्त्री०) । अथवाय (माया) और पं. (पं.) लपकट्ट (मंथन) । बेलका हसन । अथ (पं.) और कतर (पु०) ।

हास्यकर, (पु०) हास्यः कर्त्तः (हास्य) गत । त्रिषो- हसन करे है । हास्यत् । कर्त्त (पं.) । और कतर ।

हिमगिरि, (पु०) हिमको गिरि। हिमप्रधानी वा शिखर।
बर्फवा पहाड। वा जहाँ बहुत बर्फ है। हिमाचलका
पहाड।

हिमप्रस्थ, (पु०) हिम प्रस्थः यम्। शीतल घोटियाला।
हिमालयका पर्वत (पहाड)।

हिमघन, (पु०) हिमानी (घाबुने) अग्नि अच-
मनुष्य। "म" को "व" होना है। जहाँ बहुत बर्फ होती
है। हिमालय पर्वत।

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमगमूह। बरफका देर।

हिमानु, (पु०) हिमाः भंगवा अस्। शीतलशिरणों-
वाला। बंदर। बाँद। और बाँद। बाइर

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यम्। जगमें बरफ
आती है। अमरावणी (मगर) और पाँच (पुं)
सम्बन्ध से मरीचोका ऋतु (मौसिम)।

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रि जायते। जन्म। हिमा-
लयमें उत्पन्न होती है। शीरिणी। पार्वती। और गंगा।

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमाचलकी पुत्री।
दुर्गा। पार्वती।

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिमानीय-आगुचक।
हिमगमूह। बरफका देर। "आगमना वा जरेव हिमानी"
सुन्दर।

हिमाखाति, (पु०) ६ त०। बरफका रागु। गू।
आकवा रास। आग।

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः। बरफोका घर।
एक पहाड।

हिमाञ्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्म। शीतल सातव
उपजाता है। कल्पत। कमलवृत्त।

हिरण्यमय, (त्रि०) हिरण्यमयकंमयम्। त्रि०। लालका
बनारूपा। शिवां स्त्री। "हिरण्यमी हीमप्रतिष्ठितं"
उत्तराखण्डवर्तितम्। मो बसोमिसे एक (न०)। तब-
काउलमें रहनेवाला परम ब्रह्म। "व एक हिरण्यमयं पुत्री
रतने हिरण्यमय" छन्दोगसूत्रम्

हिरण्य, (न०) हिरण्यैव (सर्पे) इव। सुवर्ण। सोना।
पदार्थ। धन।

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक देव (बहू बरतको हिरण्य
दुआ)।

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+शिपुः। ६ त०। हिर-
ण्यकशिपुको मारनेवाला। शिशु

हिरण्यवर्ग, (पु०) हिरण्य (वर्ण) इव। ६ त०। (२४
वर्ण) अर्थ। लोहेके अतिसे निकल। बालक
बाल ब्रह्म (बहू लोहेके अतिसे निकल)। ६ त०।
बालपुत्रीकेव

हिरण्यवरेण, (पु०) हिरण्य वेण इव। शिवां स्त्री।
लोहा है। बहू (बाल)। और हिरण्यवरेण।

हिरण्यवर्ण (न०) हिरण्य वर्णी (वर्णी)
मार्ग। ६ त०। लोहा लुण्ठना है। "हिरण्यवर्ण
बालक"। लोहेकी बुराई करनेवाला हिरण्य
वर्ण (वर्ण) है। लोहा। लोहाको एक वर्ण
(वर्ण)।

हिरण्यवर्ण, (पु०) बालक पुत्र। एक देव।

हिरण्य, (न०) हिरण्यमय इव। ब्रह्म (देव)।
लगा। ६ त०।

हिरण्य, (स्त्री०) (पु०) पु० ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिरण्य, (पु०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिरण्य, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हिर, (न०) (पु०) ३०। व० ३०। ६ त०।
वर्ण।

हार्यन, (पु०) जहानि (अम्बु) । हा+स्यु-नि० । मीदि ।
 धान । (भावं) जहानि । वतार (वरिग) । धागरी लट
 (ली०) ।

हार, (पु०) ह+कर्मणि पन् । एकप्रकारकी मोतिओंकी
 माला । माला । "कर्तारि+पन्" । कौटनेहार । भागक ।

हारक, (पु०) ह+शुल् । चोर- धूर्त । सचरा । भागक
 अंक । चुरानेहार (त्रि०) ।

हारपायली, (स्त्री०) हार इव धावनी । हारकी नाई कमार ।
 मुक्तायली (मोतिओंका हार) । "भ्रतारहारपली" इति
 गंगासावः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोप ।

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्षा+अण् । कदम्ब (कदम्ब) का
 द्रव्य, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे
 रंगाहुआ (त्रि०) ।

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । ह+गिति वा ।
 हारक (चुरानेहार) । हारवाला और मनोहारी (मुन्दर) ।

हारीत, (पु०) ह+णिच्-दत्त् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनाने-
 हारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तसचरा) ।

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता
 है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भयः विहितो वा
 अण्" । हृदयसे हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें
 जानाहुआ (त्रि०) ।

हार्य, (पु०) हियतेऽसौ । ह+भ्यत् । विभीतक वृक्ष
 (बहेरा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०) ।

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् ।
 हलवाला । बलराम । और हल ।

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसनी
 । चराव ।

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अण् । एक-
 प्रकारका विष (जहिर) । एक कीड़ा । मयः (स्त्री०)
 बीज ।

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) ।
 हलकर्मक (हलखेचनेहार) । किसान । "हलः प्रदरणं
 अस्य" इत्यजिसका शास्त्र है । हलसे शुद्धकरनेहार ।
 "हलस्य इदं वा ठक्-ठन्" हलका ।

हाय, (पु०) ह्ये+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियों-
 की भ्रतारभावसे अपनी चेष्टा ।

हास्तिक, (न०) हस्तिना समूह+ठण् । हाथियोंका समूह ।

हास्तिन, (न०) हस्तिना (वृषेण) निर्दंतं नगरे (अण्) ।
 हस्तिनजासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली ।

हास्य, (न०) हस्य+भ्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष ।

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः । कृ+घञ् । हाहा-
 करना । बुद्ध (लडाईं) का शब्द । शोककी भावना ।

टि, बटना और जाना । स्वा० प० सक० भविद् । हिगोति ।
 अटैपीट् ।

टि, (अथ०) हा-दि वा+टि । हेतु (गय) । अवापारण
 (निधय) विनेय । प्रथ (गवान) हेतुका अर्थ (कर्म
 टि) । शोक । श्लोका प्रारम्भ ।

हिंसक, (पु०) हिम्+शुल् । व्याघ्र (नेडिया) आदि हिंसा
 (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसा करने
 हारा (त्रि०) ।

हिंसा, (स्त्री०) हिम्+अ । वध (मारना) । घानन (कत्त-
 करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिक
 काम ।

हिंस्र, (त्रि०) हिम्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर
 (टरावना) ।

हिम्, शम्भकरना । कृकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिम्-
 तिते ।

हिम्, हिंसा (मारना) । जु० आ० स० सेट् । हिम्बते ।
 अजिह्विकृत ।

हिंसा, (स्त्री०) हिम्+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी) ।

हिम्, (न०) हिम् गच्छति । गम्+ङ् । नि । हीट् । रामठ-
 देगका वृक्ष (जिसका रस हिम् होता है) ।

हिम्, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् ।
 इदित् । हिण्टते ।

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (बह मीमंसेनने मारागया) ।
 भ्वा । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (त्रिधां टप्) ।

हित, (त्रि०) धा+क् । हि+क् वा । गत (नीतगया) ।
 पम्प (हितकारी) । और मंगल (भलाई) ।

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । ह+गिति । शुभ-
 कारक । भलाईकरनेहार । हितकरनेहार ।

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इप्+गिति । हितकी
 इच्छा (चाह) करनेहार । हितेच्छाकारी ।

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश ।
 हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषय-
 को प्रतिपादनकरनेहार ग्रंथ ।

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल+घञ् । १० । दोलन । झूलना ।
 भावण (सावनमहीना) के शुद्धपक्षमें विधान कियाहुआ
 झूलनेसे भगवान्का शुभानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक
 रागका नाम ।

हिम्, (न०) हिम्+क् । आकाशासे गिराहुआ पानीका
 कण (कतरा) । शीतलस्यर्थ (ठण्डा हुआ) । उगवाला
 (त्रि०) । छोटी इलाची । नागरमोथा (स्त्री०) ।
 अम्रहायण (मग्गर) और पौष (पोह) स्वरूपशत्रु
 (मौसिम) । चंद्रका द्रव्य । चन्द्र (चाँद) और
 काष्ठ (पु०) ।

हिमकर, (पु०) हिमः करः (फिरणः) यस्य । जिसकी
 फिरण बर्फ है । कृ+घञ् । चन्द्र (चाँद) । और काष्ठ ।

हिमगिरि, (पु०) हिममयो गिरिः । हिमप्रधानो पा गिरिः ।
बर्फका पहाड । वा जहाँ बहुत बर्फ है । हिमालयका
पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः मस्य । शीतल चोडीकाज ।
हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमपत्, (पु०) हिमानी (प्राबुण) अस्ति अत्र+
मनुप् । "म" को "व" होता है । जहाँ बहुत बर्फ होती
है । हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त० । हिमगमूह । बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः शस्य । शीतलकिरणों-
वाला । बंदमा । बौद । और बर्फ । बर्फार.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र । जितमें बरफ
आती है । अमरहायणी (मगर) और पीप (पूत)
स्वरूप दो महीनोंका अनु (मौसम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते । जन्+ड । हिमा-
लयमें उत्पन्न होती है । शीतणी । पार्वती । और गंग.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त० । हिमालयकी पुत्री ।
दुर्गा । पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां सहति । हिम+धीप्+आनुक्च ।
हिमगमूह । बरफका ढेर । "आगता बत जरेव हिमानी"
लुङ्गत.

हिमारारति, (पु०) ६ त० । बरफका अनु । सूयं ।
आफका वृक्ष । क्षाम.

हिमाख्य, (पु०) हिमानां आख्यः । बरफोंका घर ।
एक पहाड.

हिमाञ्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड । शीतके समय
उत्पन्नता है । जयल । कमलकूल.

हिरण्यमय, (पि०) हिरण्यमयं+मयद् । नि० । गोत्रेका
बनाहुआ । त्रिपां बीप् । "हिरण्यमी सीताप्रतिदृष्टि"
उत्तररामचरितम् । नौ वर्षोंमें एक (न०) । सर्व-
मंडलमें रहनेवाला परम मन्त्र । "य एष हिरण्यमः पुत्रवो
दश्यते हिरण्यमः" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरण्यमेव (स्वयं) यत् । सुवर्ण । सोना ।
धनता । धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक देव (बहु करवणने रितिमें
हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+किप् । ६ त० । हिर-
ण्यकशिपुको मारनेवाला । विष्णु

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्य (स्वर्णभाण्डं) गर्भं (उच्य-
तित्स्थानं) अण्य । सोनेके अंडेसे निकला । पारम्य-
वाला मन्त्रा (बहु सोनेके अंडेसे निकला वा) । छान्द-
ोग्यममूर्तिविशेष.

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्यं रेत दस्य । जितवा बीवं
सोना है । बहि (आग) । और मित्रकहण.

हिरण्यवर्ण (पु०) हिरण्यं वाहयति (प्राययति)
मयति । नि० । सोना पहुंचाना है । "हिरण्यवर्णोः
वाहयित्वा तः प्राययत्" । गोपनी भुजाके समान जितके
तरंगों (मयि) है । महादेव । शोणनामी एक नद
(बंधार्या).

हिरण्यवर्ण, (पु०) कश्यपका पुत्र । एक देव.

हिरण्य, (स्त्री०) हि०+उक्च+इत् च । वर्जन (रोचना) ।
क्षाम ।

दिलोल, (स्त्री०) (हृत्पत्ना) पु० उ०+स० सेट् । हिरो-
ल्ययति-ते.

दिलोल, (पु०) हिरोल+अच् । तरंग (लहर)+पन् ।
झुलका-तः ।

दिव, प्रीणन (प्रीणनकरता) स्त्रा० प०+स० सेट् । इति ।
हिन्यति । अग्निदेवी

दिवुक्, (न०) रिभि+उक्च । नि० । ज्योतिषमें छात्रों
कोपा मारः ।

दिस, कथ (गाल) वा पु० उ०+रधा० प०+सक० सेट् ।
इति+उक्चि+वि+वि+मयि-ते । अहिपीड । अत्रिहितवत्.

दी, (धन०) दि+धी । विभय (डरानी) । इत् ।
विवाद (लड़ाई इत्यादि) । और शोक.

दीन, (पि०) दी+ण । "त" को "न" होता है । ऊन
(कम) । निन्दाके लायक । और अधम (नीच).

दीनयादिन्, (पु०) कर्म० । पूर्ववाद (पहिला छगम)-
को, दोहुर, को किसी भीका अलम्बन करना है ।
अपनी मर्यादा छोड़ कर किसी दूसरे नियममें धार-
नेवाला । अनुपचारका बापी (दुर्ग) धर्मघायल.

दीनाह, (पु०) दीनें धारं यन् । स्वभावसे न्यून (कम)-
अंगवाला । अंग । छंगम । छलाआदि । धिर्वा वा बीप्.

दीर, (न०) दी+र । नि० । वज्र । और हीरा । विज ।
शौर । हार । और मिह (घेर) (पु०) । स्वयं हन् ।
हीराहरी एक मणि.

दु, दोमुहरना (अणुमें धीअरिवा बालना) । लुहो-प०-
सक० सेट् । डेरनी । अहीनीव.

दुहाड, (पु०) हृदयकथन कारः । हु+पन् ।
उप० । प्रियेवामुक (रोहको अन्तर्देहा)
कायको अन्तर्देहा । "अन्तर्देवं महाकर्मं दुहाडकारि
नयति" ।

दुह, शरीरको (अन्तर्देहा) म्वा० भा०+स० सेट् ।
इति । दुहण.

दुह, (पु०) दुह्ये । मेष (बकर) । चोरको रोहनेके
निये दुहिके । दाहणुआ छोटेका कील (मेष).

दुह, (स्त्री०) दुह्ये । देवताके देहमें मन्त्रारोहण
कर्मके विशेष । शीतल । दोमकियतुआ "अन्तर्देहं"
हीन (न०).

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+न्यु-नि० । मोहि । धान । (भावं) जहाति । वरसर (वरिस) । भागरी लट (ली०) ।

हार, (पु०) ह+कर्मणि घन् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तारि+घञ्" । यौटनेहारा । भाजक ।

हारक, (पु०) ह+भ्युल् । चोर- धूर्त । खचरा । भाजक अंक । सुरानेहारा (त्रि०) ।

हारवली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाई कनार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शङ्कारहारवली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका यनायाहुवा एक कोप ।

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रप्ता+अण् । कदम्ब (कदम) का द्रव्य, (इलाक फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रंगाहुआ (त्रि०) ।

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्+इति । ह+गिति वा । हारक (सुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर) ।

हारीत, (पु०) ह+णित्-इत् । एक मुनि धर्मशास्त्र धनाने- हारा । एक पत्नी (मैना) । और कितव (धूर्तखचरा) ।

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । मेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०) ।

हार्य, (पु०) हियतेऽसौ । ह+ण्यत् । विभीतक इक्ष (बहेरा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०) ।

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । यलराम । और हल ।

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । हातरसकी चराच ।

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अण् । एक- प्रकारका पिय (जहिर) । एक बीजा । मय (स्त्री०) चीप् ।

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्मक (हलसेखनेहारा) । किरान । "हलः प्रहरणं धर्म्य" हल जिसका शय है । हलसे सुद्धकरनेहारा । "हलम्य हर्दं वा ट्-ठम्" हलका ।

हाप, (पु०) हे+पम् । नि० । आह्वान (बुलाना) । श्रियों- की शङ्कारभावसे उपजी वेश ।

हास्तिक, (न०) हस्तिना समूहः+ठण् । हाथियोंका समूह । हास्तिक, (न०) हस्तिना (वृषेण) निर्दलं नगरं (अण्) । हस्तिराजके बनावगया । (हस्तिनापुर) शरीर ।

हास्य, (न०) हस्य+घञ् । हसना । अलंकारका रसविशेष ।

हाहाकार, (पु०) हा हा हस्य कारः । ह+घञ् । हाहा- करना । पुनः (हमारे) का शब्द । शोककी आवाज ।

हा, (न०) और जाना । हा० १० हक० अत्रिद् । क्षिणीति । अदेकीः ।

हा, (अव्य०) हा-हि वा+ङि । हेतु (गजन) । अवधारण- (निधय) विशेष । प्रथ (गयल) हेतुका उपदेश (क्यों- कि) । शोक । श्लोकका पूराकरना ।

हासक, (पु०) हिं+भ्युल् । व्याघ्र (मेडिया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुर्जन) । हिंसाकरने- हारा (त्रि०) ।

हासा, (स्त्री०) हिं+अ । घघ (मारना) । घातन (कतल- करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआरिफा काम ।

हास्र, (त्रि०) हिं+र । हासाशील । मारनेवाला । घोर (बराबना) ।

हास्य, शम्भकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिंस्र- त्तिने ।

हास्य, हासा (मारना) । पु० वा० स० सेट् । हिंस्रयते । अजिहिकत ।

हासा, (स्त्री०) । हिंस्र+अ । एकप्रकारका रोग (हिंस्रकी) ।

हास्य, (न०) हिंसं गच्छति । गम्+उ । नि । हीर् । रावट- देतका इक्ष (जिताका रस हिंस्र होता है) ।

हास, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । इति । हिंस्रते ।

हासिन्व, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनमें मारागया) । भ्वा । उस राक्षसकी भगिनी (यद्दिन) (त्रिपों टाप्) ।

हास, (त्रि०) घा+क्त । हिं+क्त वा । गत (भीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई) ।

हासकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । ह+गिति । शुभ- कारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा ।

हासिपिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इप्+गिति । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छाकारी ।

हासोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेश । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषय- की प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ ।

हास्योल, (पु०) हिन्दोल+पम् । पु० । दोहन । हलना । भावण (सादनमहीना) के सुद्धशर्म विधान कियाहुआ हलनेमें भगवान्का मुलानारूप एकप्रकारका उलगन । एक रागका नाम ।

हास, (न०) हिं+भृक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलमय (ठण्डा हुआ) । उगवाला (त्रि०) । छोटी इलाची । नागरमोथा (धी०) ।

हासहास्य (नागर) और पौध (पोह) अक्षयकटु (भीमिग) । अंदनका द्रव्य । चन्द (चाँद) और चाँदर (पु०) ।

हासकर, (पु०) हिंस्रः बसः (हिरण) गयः । त्रिगणो हिरण बसं है । ह+अण् । चन्द (चाँद) । और चाँदर ।

शायन, (पु०) जहाति (अम्) । हा+ल्यु-नि० । नीति । भान । (भाव) जहाति । कगर (बरिस) । आगरी लट (ली०) ।
 शार, (पु०) ह+शर्मणि पन् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्नरि+पन्" । कौटनेहारा । भाजक ।
 शारफ, (पु०) ह+शुल् । चोर- धूर्त । राज्य । भाजक अंक । सुरानेहारा (त्रि०) ।
 शारायली, (स्त्री०) शार इर थायनी । शारकी नई फतार । मुकामवादी (मोतिओंका शार) । "शजारशारायली" इति गंगाशब्दः । पुरपोतनका बनायाहुआ एक कोष ।
 शारिद्र, (पु०) हृदिद्या रक्षा+अण् । कदम्ब (कदम) का द्रव्य, (हृदयका फूल बहुत पीला होता है) । हृदीसे रंगाहुआ (त्रि०) ।
 शारिन्, (त्रि०) शारः अस्ति अस्मि+इति । ह+ग्निनि वा । हारक (सुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (मुन्दर) ।
 शारीत, (पु०) ह+शिल्+इत् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनाने- हारा । एक पत्नी (मैना) । और कितव (धूर्तधर) ।
 शार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । मेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुवा वा जलानया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०) ।
 शार्य, (पु०) हियतेऽसौ । ह+ण्यत् । विमीत्रक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०) ।
 शाल, (पु०) हलः अस्ति अस्मि+अण् । हल एव शान्+अण् । हलवाला । बलराम । और हल ।
 शाला, (स्त्री०) हल्+पन् । मद (नशा) । तालरसकी शरव ।
 शालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अण् । एक- प्रकारका विष (जहिर) । एक कीड़ा । मया, (स्त्री०) लीप् ।
 शालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्षक (हलखेचनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्मि" हल जिसका चाल है । हलसे शुद्धकरनेहारा । "हलस्य हर्दं वा ट्-ट्" हलका ।
 शाय, (पु०) ह्ये+पन् । नि० । आहान (मुलाना) । शियोंकी श्रजारभावसे उपजी चेष्टा ।
 शास्तिक, (न०) हस्तिना समूह+उण् । हापिओंका समूह ।
 शास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्दूतं नगरं (अण्) । हस्तिराजसे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली ।
 शास्य, (न०) ह्य्+ण्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष ।
 शाहाकार, (पु०) हा हा हलस्य कारः । ह्य्+पन् । हाहा- करना । बुद्ध (लडाई) का शब्द । शोककी आवाज ।
 हि, बटना और जाना । स्त० प० सक० अत्रिद् । द्विनोति । अर्देपीद ।

हि, (अज०) हा-दि वा+डि । हेतु (यथर) । कर्त्तरत्न- (निधन) निमित्त । प्रथ (यत्न) हेतुका उदाम (कर्त्त- कि) । शोक । शोका पूजा करना ।
 हिम्क, (पु०) हिं+ण्+लुत् । व्याज (मेडिया) शरीर हिंसा (मारनेवाला) पन् । और शत्रु (दुःमन) । हिंसाकर्त्त- हारा (त्रि०) ।
 हिंसा, (स्त्री०) हिं+अ । वध (मारना) । घानन (कर्त्त- करना) । किसीको प्राणोंमें अलग करना और जोरआदिका काम ।
 हिंस्त्र, (त्रि०) हिं+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (धारना) ।
 हिंस्त्र, शब्दकरना । कूटना । भ्या० उ० अ० सेट् । हिं- स्त्रिते ।
 हिंस्त्र, हिंसा (मारना) । जु० आ० स० सेट् । हिंस्त्रते । अजिह्वित ।
 हिंसा, (स्त्री०) हिं+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी) ।
 हिंहु, (न०) हिंमं गच्छति । गम्+उ । नि । हीट् । रामउ- देसका वृक्ष (जिसका रस हिं हुंसा होता है) ।
 हिंहु, गति (जाना) । घूमना । भ्या० आ० स० सेट् । इति । हिंहुते ।
 हिंहुम्ब, (पु०) एक राक्षस (बह मीमसेनले मारगया) । भ्या । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (त्रिपं टाप) ।
 हित, (त्रि०) धा+क । हि+क वा । गत (बीतगया) । पम्ब (हितकारी) । और मंगल (भलाई) ।
 हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । ह+णिति । शुभ- कारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा ।
 हितैपिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इप्+णिति । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छकारी ।
 हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषय- को प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ ।
 हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+पन् । पु० । दोलन । झूलना । श्रावण (सावनमहीना) के शुद्धपक्षमें पिधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक राक्षस नाम ।
 हिम, (न०) हिं+भक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलस्य (ठण्डा छूना) । उसवाला (त्रि०) । छोटी इलाकी । नागरमोथा (स्त्री०) । अप्रहायण (मगर) और पौष (पोह) स्वरूपकतु (मौसिम) । चंदनका द्रव्य । चन्द्र (चांद) और काशूर (पु०) ।
 हिमकर, (पु०) हिमः करः (हिरणः) यस्य । जिसकी हिरण बर्फ है । ह्य्+णत् । चन्द्र (चांद) । और काशूर ।

हायन, (पु०) जहाति (अम्नु) । हा+यु-नि० । मोहि । धान । (भावं) जहाति । वन्तर (वरित) । आगदी लट (स्त्री०) ।

हार, (पु०) ह+कर्मणि पन् । एकप्रकारकी मोनिओंकी माला । माला । "कर्त्तरि+पन्" । कौटनेहारा । भाजक ।

हारक, (पु०) ह+ग्युल् । चोर- धूर्त । लचर । भाजक अंक । शुरानेहारा (त्रि०) ।

हारपत्नी, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाई कतार । मुक्तावली (मोनिओंका हार) । "शृङ्गारहारवली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका पनायाहुया एक कोप ।

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्ता+अण् । कदम्ब (कदम) का द्रव्य, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हरतीचे रंगाहुआ (त्रि०) ।

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । ह+मिनि वा । हारक (शुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर) ।

हारीत, (पु०) ह+णिच्-इत्च् । एक मुनि धर्मशास्त्र पनाने- हारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्त्तचर) ।

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०) ।

हार्प, (पु०) हियतेऽसौ । ह+प्यात् । विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०) ।

हल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल ।

ह्ला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसकी चराव ।

ह्लाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अञ् । एक- प्रकारका विप (जहिर) । एक कीड़ा । मर्षा (स्त्री०) दीप ।

हलिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्मक (हलसेचनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्व" हल जिसका शल है । हलसे शुद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा उच्छ्रयम्" हलका ।

ह्र, (पु०) ह्रे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलना) । त्रिषो- णी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा ।

हस्तक, (न०) हस्तिनां समूह+ठण् । हाथिओंका समूह । हस्तन, (न०) हस्तिना (रूपेण) निर्दलं नगरं (अण्) । हस्तिनकासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली ।

ह्र, (न०) ह्रम्+प्यत् । ह्रमना । अलंकारका रसविशेष ।

हकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः । ह्र+घञ् । हाहा- रना । युद्ध (लड़ाई) का शब्द । शोककी आर्वाज ।

ह्रटना और जाना । हा० प० सक० अनिद् । हिनोति । हैपीत् ।

हि, (अत्र०) हा-दि वा+ङि । हेतु (गन्व) । अन्वयण- (निधय) विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उत्तरेण (कर्त्त- कि) । शोक । श्लोठका पूराकरना ।

हिंसक, (पु०) हिंम्+ग्युल् । व्याघ्र (भेडिया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसकरने- हारा (त्रि०) ।

हिंसा, (स्त्री०) हिंम्+अ । घब (मारना) । घातन (कत्त- करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिका काम ।

हिंस, (त्रि०) हिंम्+र । हिंगाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना) ।

हिङ्, शब्दकरना । कूकना । भ्या० उ० अ० सेट् । हिङ्- ति-ते ।

हिङ्, हिंघा (मारना) । जु० आ० स० सेट् । हिङ्घते । अजिह्वित ।

हिङ्का, (स्त्री०) । हिङ्+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी) ।

हिङ्गु, (न०) हिंमं गच्छति । गम्+ङ् । नि । हीद् । रामउ- देवका वृक्ष (जिसका रस हिङ्गु होता है) ।

हिङ्, गति (जाना) । घूमना । भ्या० आ० स० सेट् । इति । हिङ्गते ।

हिङ्गिभ्य, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया) । भ्या । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (त्रियां थाप्) ।

हित, (त्रि०) धा+क् । हि+क् वा । गत (नीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई) ।

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभ- कारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा ।

हितैपिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इप्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छाकारी ।

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुसर्माका रचाहुआ नीतिविषय- को प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ ।

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल+घञ् । पू० । दोलन । झुलना । धावण (सावनमहीना) के शुक्रवर्षमें विधान कियाहुआ झुलनेसे भगवान्का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम ।

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलस्यो (इग्ना घृना) । उसवाला (त्रि०) । छोटी इलाची । नागरमोदका (स्त्री०) । अम्रहावण (ममर) और पौष (पोह) स्वरूपकतु (मौसिम) । चंद्रका द्रवत । चन्द्र (चाँद) और काहूर (पु०) ।

हिमकर, (पु०) हिमः करः (छिरणः) यन्म । जिसकी छिरण बर्त है । कृ+अञ् । चन्द्र (चाँद) । और काहूर ।

दिग्गिरि, (पु०) दिग्गमनो गिरिः । दिग्गमनो वा गिरिः ।
बर्फ का पहाड़ । वा जहाँ बहुत बर्फ है । हिमालय का
पहाड़.

दिग्गमस्थ, (पु०) दिग्ग प्रस्थः बस्य । शीतल चोटीवाला ।
हिमालयका पर्वत (पहाड़).

दिग्गवत्, (पु०) हिमानी (प्रायुष्येण) अस्ति अग्र-
मनुष्य । "म" को "व" होता है । जहाँ बहुत बर्फ होती
है । हिमालय पर्वत.

दिग्गसंहति, (स्त्री०) १ त० । दिग्गमगृह । बरफका ढेर.

दिग्गानु, (पु०) दिग्गाः अंशवः अस्य । शीतलकिरणों-
वाला । चंद्रमा । चांद । और कपूर । काहूर.

दिग्गगम, (पु०) दिग्गस्य आगमः यत्र । जगमें बरफ
आती है । अग्रहायणी (मंगर) और पौष (पूस)
क्षरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसम).

दिग्गाद्रिजा, (स्त्री०) हिमानी जायते । जन्+उ । दिग्गा-
रूपमें उत्पन्न होती है । शीरिणी । पार्वती । और गंगा.

दिग्गाद्रितनया, (स्त्री०) १ त० । हिमालयकी पुत्री ।
दुर्गा । पार्वती.

दिग्गानी, (स्त्री०) हिमानी सद्भिः । दिग्गनीय-आतुक्च ।
दिग्गगृह । बरफका ढेर । "आगता बत जरेव हिमानी"
दुइइतः.

दिग्गावाति, (पु०) १ त० । बरफका धनु । धूप ।
आकृष्य प्रथ । आग.

दिग्गाव्य, (पु०) हिमानी आलयः । बरफकोष पर ।
एक पहाड़.

दिग्गाञ्ज, (न०) दिग्गवाले जायते जन्+उ । शीतके समान
उपजाता है । उपल । कमलफूल.

दिग्गमय, (त्रि०) दिग्ग्यात्मकं+मयत् । नि० । सोनेका
बना हुआ । त्रिधा धीप । "दिग्ग्यादी चीनाप्रतिरिति."
उत्तररामचरितम् । नौ वर्षोंमें एक (न०) । धर्म-
मण्डलमें रहनेवाला परम ब्रह्म । "म एव दिग्गमयः पुरतो
दृश्यते दिग्ग्यादाः" छन्दोग्यम्.

दिग्गपय, (न०) दिग्गमेव (साथे) बह । धरने । सोना ।
धन.

दिग्गप्यकशिपु, (पु०) एक देव (बह करणसे विभिन्न
हुआ).

दिग्गप्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+शिप् । १ त० । दिग्ग-
प्यकशिपुको मारनेवाला । शिपु.

दिग्गप्यवर्ग, (पु०) दिग्गपं (स्वर्गभाण्डं) वर्गः । (स्वर्ग-
लोकानं) अस्य । सोनेके अड्डे निकला । पारशुर-
वाला ब्रह्मा (बह सोनेके अड्डे निकला था) । पाल-
प्राम्मुत्तिसिद्धेय.

दिग्गप्यरेतस्, (पु०) दिग्गपं रेतः बस्य । त्रिधा कीर्ण
सोना है । बहि (आग) । और विश्वहर.

दिग्गप्यवर्ग, (पु०) दिग्गपं वाद्ययि (प्रणययि)
भक्त्ये (नि०) सोना पहुंचाया है । "दिग्गप्यवर्गः
"वाद्ययि तस्य यन्" । सोनेकी धुनाके समान त्रिधाके
तरंग (स्वर) हैं । "महादेव । शोणनामी एक नद
(बलारव)

दिग्गप्योक्त, (पु०) कल्पका पुत्र । एक देव.

दिग्गक, (अ० पु०) दिग्ग-उक्ति-रुद् च । वर्जन (रोचना) ।
स्वायं । निःस्वः

दिग्गोत्, (स्त्री०) दिग्गोत् (शूलना) पु० उ० स० सेद् । दिग्गो-
त्सविते.

दिग्गोत्, (स्त्री०) दिग्गोत्+अन् । तरंग (लहर)+अन् ।
धुमनात्

दिग्ग, शीघ्र (प्रतीककला) म्+प० स० सेद् । हरित ।
दिग्ग्या । अश्विनी.

दिग्ग्यक, (न०) दिग्गि+उक्त् । नि० । ज्योतिषमें सम्ये
-सोपा म्+प०

दिग्ग, वध (मारना) वा पु० उ० दधा० प० गक० सेद् ।
द्विप । दिग्गि । उ० दिग्गविते । अश्विनी । अश्विनिव्य-उ.

दी, (अ० पु०) दिग्गी । विम्वय (देशनी) । दुःख ।
विषाद (मनाह रचना) । और सोद.

दीन, (नि०) दी+क । "त" को "न" होगा है । जन
(कम) । विन्नाके समक । और अथम (नीच).

दीनवादिह, (पु०) द्ये-० । पूर्वहार (पहिला धरणा)-
को द्योत्कृष्ट । जो फिरी और अश्वत्थन कर्ता है ।
अगली म्यदकी छोड़ कर फिरी द्वारा विरदमें धन-
नेवाला । पृथ्वीपरका बारी (सुरें) पदोकायने.

दीनार्द्र, (स्त्री०) दीनं अर्द्रं बन्ध । सभाके मूल (कम)-
अंगका । अर्द्रा । संगता । दृढाअदि । शिवा वा शीत्.

दीर, (न०) दी+उ । नि० । दक्ष । और दीर । दिग्ग ।
सौर । बह । दीर मिह (दीर) (पु०) । साथे बन् ।
दीरकरी एव अर्द्र.

दु, होमकार (दुर्गाकी चीभरिच बालना) । दुर्गे० प०
सक० से बने हुये । अश्विनी.

दुहारा, (पु०) दुग्गमकय बरः । दुग्गम् ।
उप० । दिग्ग्यात्क (रोडको अर्धनेप)
वाग्ग्यात्क । "मन्त्रां मारुतं दुहारीकदि
नृत्तं"

दुह, सारि (दुग्गोत्तम) म्+प० आ० ग० सेद् ।
हरित । लक्ष्मी.

दुह, (पु०) दुग्ग (कन्द) । सोरको लंबके
सिधे धुपि । दुग्गा सोरका दीन (देव).

दुह, (स्त्री०) दुग्गाके देवताके उरुसे अश्वत्थर
अर्द्धके धुपि । "दुग्गाके देवताके उरुसे अश्वत्थर
होम (न०)

दिग्मण्डि, (पु०) दिग्मण्डो विधिः दिग्मण्डानो वा विधिः ।
पर्वतः पहाड । वा जहाँ बहुत पर्व है । दिग्मण्डक
पहाड.

दिग्मण्डस्य, (पु०) दिग्मः प्रथमः यस्य । शीतल चोटीवाला ।
दिग्मण्डक पर्वत (पहाड).

दिग्मण्डन्, (पु०) दिग्मानी (प्राबुर्वेण) अस्ति अग्र+
मण्डप् । "म" को "ब" होता है । जहाँ बहुत पर्व होती
है । दिग्मण्ड पर्वत.

दिग्मसंहति, (स्त्री०) ६ त० । दिग्मण्डस्य । बरफका ढेर.

दिग्मिन्नु, (पु०) दिग्माः अंशवः आस्य । शीतलचिह्नो-
वाला । चरमा । बोट । और कूट । काट.

दिग्मिन्नु, (पु०) दिग्मिन्नु अंगमः यत्र । जिसमें बरफ
आती है । अग्रहाणणी (भगवर) और पीव (पूव)
स्वरूप दो मरीनोंका जनु (मौसिम).

दिग्मिन्नु, (स्त्री०) दिग्मिन्नु जायते । जन्+उ । दिग्म-
ण्डमें उत्पन्न होती है । शीरिणी । पार्वती । और गंग.

दिग्मिन्नु, (स्त्री०) ६ त० । दिग्मण्डस्यी पुत्री ।
दुर्गा । पार्वती.

दिग्मिन्नी, (स्त्री०) दिग्मिन्नु संहतिः । दिग्मिन्नु-आवृत्त ।
दिग्मण्डस्य । बरफका ढेर । "अमता बन जरेव दिग्मिन्नी"
पुस्तकः.

दिग्मिन्नी, (पु०) ६ त० । बरफका घनु । सुयं ।
आकाका इक्ष । आग.

दिग्मिन्नी, (पु०) दिग्मिन्नु आडवः । बरफोटा पर ।
एक पहाड.

दिग्मिन्नी, (न०) दिग्मण्डले जायते जन्+उ । शीतके समय
वज्रता है । उत्पल । कमलफूल.

दिग्मिन्नी, (त्रि०) दिग्मण्डलस्य । नि० । सोमेका
बनाहुआ । शिवो शीप् । "दिग्मिन्नी शीताप्रतिष्ठा" ।
उत्तररामचरितम् । नौ वर्षोंमेंछे एक (न०) । सुयं-
मण्डलमें रहनेहाए परम ब्रह्म । "य एव दिग्मण्ड" पुराणो
हस्यते दिग्मण्ड." छन्दोगम्.

दिग्मिन्नी, (न०) दिग्मण्डस्य (सार्थं) यत्र । मुर्गण । सोमा ।
पहाड । धन.

दिग्मिन्नी, (पु०) एक ढेल (बहु बरफके दिग्मिन्नी
हुआ) ।

दिग्मिन्नी, (पु०) दिग्मिन्नी । ६ त० । दिग्-
मण्डस्यो मारवेहाए । विष्णु.

दिग्मिन्नी, (पु०) दिग्मण्ड (सर्वांगस्य) गर्भं (उत्प-
त्तिस्थानं) अस्य । सोमेके अंडेके निचला । आगुल-
वाला ब्रह्मा (बहु सोमेके अंडेके निचला वा) । उत्प-
त्तिस्थानविशेष.

दिग्मिन्नी, (पु०) दिग्मण्ड रेत. यस्य । त्रिवेदा शीवं
सोमा है । बहि (आग) । और त्रिवेदाए.

दिग्मण्डस्य (पु०) दिग्मण्ड काहयति (प्रावयति)
अमण्डलं । सोमा पहुंचाता है । "दिग्मण्डस्यः
-काहयति तस्य यन्" । सोमेकी भुजाके समान त्रिवेदे
-तरीके (कर्) है । अमण्डल । सोमनामी एक नद
- (पर्वत) ।

दिग्मण्डस्य (पु०) काहयति पुत्र । एक ढेल.

दिग्मण्ड, (स्त्री०) दिग्मण्डस्य च । बर्जन (रोडना) ।
- हलाः ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्ड (पुर्वानां) पु० उ० स० सेट् । दिग्म-
ण्डस्यति-वे.

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । तरंग (लहर) मण्ड ।
मुलनाः ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । स्या० ए० त० सेट् । हरित ।
दिग्मण्ड । शीतली.

दिग्मण्ड, (न०) दिग्मण्डस्य । नि० । उपोत्थितमें छमडे
- जोपा सारः.

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । पु० उ० स्या० ए० मक० सेट् ।
हरित । दिग्मण्ड । दिग्मण्डस्ये । अर्द्धीय । अर्द्धीयस्य.

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्ड (दिग्मण्ड) । पुत्र ।
विषाद (मनाका रुदन) । और शोक.

दिग्मण्ड, (त्रि०) दिग्मण्डस्य । "त" को "न" होता है । ऊन
(कम) । निग्मण्डस्य । और अधम (नीच).

दिग्मण्डस्य, (पु०) दिग्मण्डस्य । पुर्ववाट (पहिली शय्या)-
को शीतल, जो शिवी औरका अवलम्बन कर्ता है ।
आमकी शीतलको छोट कर शिवी हूरे निचलेमें पग-
नेहाए । अमण्डस्य काटी (मुर्द) परमात्मने.

दिग्मण्डस्य, (त्रि०) दिग्मण्डस्य । स्यामावे न्यून (कम)-
अंगवाट । अण्ड । संगडा । छलजति । शिवो वा शीप्.

दिग्मण्ड, (न०) दिग्मण्डस्य । नि० । बह । और हीट । त्रि ।
सोप । ह । और त्रि (सेट) (पु०) । सार्थं कन् ।
हीटस्येति-वे.

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य (सार्थं) मारवेहाए । मुर्दो० ए०
सक० सेट् । अर्द्धीय । अर्द्धीयस्य.

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । ह । ह । ह ।
उप० । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
सार्थं । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।

दिग्मण्ड, (पु०) दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।
दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य । दिग्मण्डस्य ।

हायन, (पु०) जहाति (अशु) । हा+लु+नि० । मोहि ।
 धान । (भायं) जहाति । बत्तर (बरिय) । आगरी डाट
 (खी०) ।

हार, (पु०) ह+रन्नि पन् । एकप्रकारकी मोतियोंकी
 माला । माला । "कर्तारि+पन्" । कौटनेहार । भाजक ।

हारक, (पु०) ह+रन्वुट् । चोर- धूर्त । राचर । भाजक
 अंक । चुपनेहार (वि०) ।

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नार्द कगार ।
 मुञ्चवली (मोतियोंका हार) । "शृङ्गारहारावली" इति
 गंगाधरः । पुरुषोत्तमका बनायाहुवा एक कोष ।

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्षा+अण् । कदम्ब (कदम) का
 द्रव्य, (हृगका फूल बहुत पीला होता है) । हरीये
 रंगहुआ (वि०) ।

हारिन्, (नि०) हारः अस्ति अस्य+इति । ह+मिनि वा ।
 हारक (चुपनेहार) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर) ।

हारीत, (पु०) ह+मिन्-दन्त् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनाने-
 हारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तगणरा) ।

हार्द, (न०) हृदयस्य बर्मे अण् । "हृद्" का आदेश होता
 है । हेर (हिमर) । द्रमः । "हरि भरः रिदितो वा
 अण्" । हृदयमें हुना वा जलागया । हृदयका वा हृदयमें
 जानाहुआ (वि०) ।

हार्य, (पु०) हिरयेऽणौ । ह+र्यत् । शिमीलक वृक्ष
 (बहेरा) हारीत (ऐजनेरायक) (वि०) ।

हार्य, (पु०) हरः अग्नि अस्म+अण् । हल एव वा+अण् ।
 हलकाला । बहरण । और हल ।

हार्य, (स्त्री०) हल+पण् । मर (मरा) । कागसपक्षी
 । पाराव ।

हार्यादर, (पु० न०) हलैव इत्येति । हल+अन । एक-
 प्रकारका विर (बरि) । एक बीजा । मय (स्त्री०)
 कोत् ।

हारिन्, (वि०) हलैव सवति (हलमें सोदण है) ।
 हलवैव (हलमेंबनेहार) । किरान । "हृत्प्र प्रदायं
 अस्म" इव विपद्या एव है । हलमें हुदकनेहार ।
 "हल्य हर् वा टक-टन्" इत्यम् ।

हार्य, (पु०) हृ+पण् । वि० । अण्डन (बुडना) । विपौ-
 की ग्यारगणके टारी कोत् ।

हारिन्, (न०) हरिनां मन्दर+अण् । हरिओंका मन्दर ।
 हारिन्, (न०) हल्लज (कृतेव) निर्दिमं वरं (अण्) ।
 हल्लजके वरगणरा । (हरिन् वर) वि० ।

हार्य, (न०) हल+अण् । हल्लज । अर्धेहल्लज सम्भिजेत् ।

हार्यहार, (पु०) हल हल्य वरः । हल्लज । हल्लज-
 वरः । हुर् (हुर्) प्र हल्लज । कोटरी काटक ।

ह्रि, बल्लजि टक । ह० व० ह० अण् । ह्रिनेति ।
 बरेट् ।

हि, (अथ०) हा-हि वा+डि । हेतु (सबब) । अवधारण-
 (निधय) विनेय । प्रभ (सबाल) हेतुका उपदेश (क्यो-
 कि) । शोक । श्रीरुका पूराकरना ।

हिसक, (पु०) हि+ए+शुलृ । व्याघ्र (भेडिया)आदि हिसक
 (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरने-
 हारा (वि०) ।

हिंसा, (स्त्री०) हिंम्+अ । घष (मारना) । पातन (बतल-
 करना) । किसीको प्राणसे अलग करना और जोरआरिफा
 काम ।

हिंस, (वि०) हिंम्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर
 (बरायना)

हिक्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हि-
 ति ते ।

हिक्, हिंसा (मारना) । पु० आ० स० सेट् । हिक्वते ।
 अविहित्त ।

हिफा, (स्त्री०) । हिक्+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी) ।

हिह्, (न०) हिमं गच्छति । गम्+उ । नि । हीर् । रामउ-
 दयाका वृष (जिराहा राम हिम होताहै) ।

हि, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् ।
 हरित् । हिक्वते ।

हिचिम्ब, (पु०) एक राक्षस (बहु भीमसेनेमें मारागया) ।
 भ्वा । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (त्रिषां टाप्) ।

हित, (वि०) धा+क् । हि+क् वा । गत (पीतगया) ।
 पश्य (हितकारी) । और मंगल (मकार) ।

हितकारिन्, (वि०) हितं करोति । ह+मिनि । हृष्-
 कारक । मलाईकरनेहार । हितकरनेहार ।

हितपिन्, (वि०) हितं इच्छति । हृ+मिनि । हितमें
 इच्छा (चाह)करनेहार । हितेच्छाकारी ।

हितोपदेश, (पु०) हितम् उपदेशः । मन्त्रोंका उपदेश ।
 हितके विषे उपदेश । विष्णुसामोंका रचानुआ भीरीपियव
 को प्रांगानदकरनेहार भव ।

हिन्दोल्, (पु०) हिन्दोल्+अण् । हु० । सोडन । हलना ।
 अथवा (सावनमहीना)के हृद्वाचमें हलान रचानुआ
 प्रकृतेमें मयानुहा शुभभाकर एवकारका उगना । एक
 रागका मय ।

हिम, (न०) हि+अण् । आकाशमें विरानुआ पानीका
 बल (बरसा) । हीनवर्णों (बसा हुना) । उमरका
 (वि०) । छोटी इलदही । भावभोग्या (स्त्री०) ।
 अथवा (मय) और वेंव (फेह) मयकाहु
 (मैंगम) । बरनाका इगन । अर (अर्) और
 कुर (पु०) ।

हिमकर, (पु०) हृ+व । (हल) वल । विपरी
 गणन बर है । हु+अण् । वर (वर) । और बरट् ।

